Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

S-5

श्रीशुक्लयजुर्वेदस्य ब्रह्मभाष्यम

VOL: 1

Acc. No. 22913 A

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१३
(ह०)
पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
३२९१२

वर्ग संख्या.....
आगत संख्या .....

पुस्तक-विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३० वे दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब-दण्ड लगेगा।

28 FEB 2006

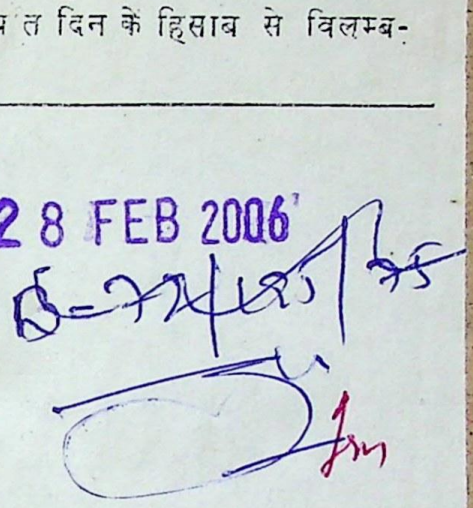

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीशुक्लयजुर्वेदस्य ब्रह्मभाष्यम्

श्रीमज्ज्वाला प्रसाद भार्गव शर्म्मणा नि
र्मितम् संस्कृतार्य भाषाभ्यां सम
न्वितम्

भारतवर्षे कन्याद्वीपान्तर्गतार्यावर्ते अर्गल
पुरे सत्य प्रकाश यन्त्रालये श्रीमद्वैदिक
सद्धर्म सभा सज्जन सम्मत्या
ब्रह्म वेदाङ्क चन्द्र संख्यान्विते श्री विक्रमा
दित्याब्दे वसन्त ऋतौ मुद्रयितु
मारब्धम् संवत १९८४

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

करने वा
ड हूं॥१७॥
वन हूं श स्त्र धा
राम मेंही हूं,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं श्री गणेशाय नमो नमः ओं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नर ना
का है उस से उत्पन्न आकाशादि कार्य नारा कहलाते हैं जो परमा
आकाशादि को कारण रूप से व्याप्त करता है उस को नारायण
अथवा आकाशादि तत्व प्रलय काल पर जिस में प्रवेश होते हैं
नारायण कहते हैं ऐसे नारायण को नमस्कार करके और जीवा
में श्रेष्ठ समष्टि जीवात्मा को नमस्कार करके और वागाधिष्ठात्री दे
स्वती को और वेदों के आचार्य व्यास महर्षि को नमस्कार करके ज
वेद को उच्चारण करे ॥ १ ॥ वेदों के पढ़ने और धारण करने से स
को जय करता है उस कारण वेदों का नाम जय है। तथा वेदों में के
साकार और निराकार ईश्वर के स्तुति रूप मंत्र ही हैं इस कारण
नाम ब्रह्म और शब्द ब्रह्म है। कि ऐसे बहुत प्रकार के यज्ञ ब्रह्म
में लिखे हैं। तथा यह सब ब्रह्म है इ सम्श्रुति के अनुसार, इन्द्र
ग्नि, जल, प्रजापति, सूर्य आदि देवता ब्रह्म की विभूति हैं जिस प्र
ति कहती है यह ब्राह्मण और क्षत्रीजाति और ये लोक, देवता, त
यह सब जो कुछ है आत्मा ही है (श० काण्ड १४ अध्याय ५ ब्रा
काण्ड का ६) ब्रह्म ही इन सब नाम रूप और कर्मों को धारण कर
(श० १४।४।४।१।२।३ श्रीभगवान ने गीता में भी कहा है, हे अर्जु
से श्रेष्ठ तर दूसरा कोई नहीं है यह सब ब्रह्माण्ड मुझ में पुरोया हु
से सूत्र में मणियों का समूह ॥ १ ॥ हे अर्जुन मैं जलों में रस हूं, सूर्य
मा में प्रकाश हूं, सब वेदों में ओंकार हूं, आकाश में शब्द हूं, मनुष्यों
२ ॥ पृथ्वी में पवित्र ग
हूं, और अग्नि में तेज हूं सब प्राणियों
तियों में तप
॥ हे अर्जुन मुझ को सब प्राणियों
हैं बुद्धि
, तेजस्वियों में तेज हूं, ॥ ४

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

य ॥ नरना
ईं जो परमा
नारायण
ए होते हैं
और जीवा
धिष्ठात्री दे
र करके ज
करने से स
ग वेदों में के
इस कारण
यज्ञ ब्रह्म
सार, इन्द्र
हैं जिस प्र
देवता, त
गय ५ ब्र
धारण कर
है, हे अर्जु
पुरोया इ
स हूं, सूर्य
हूं, मनुष्यो
द प्राणि
प्राणियों
ज हूं, ॥ ४

ो में जो बल काम राग से रहित है वह मैंही हूं, हे भरत श्रेष्ठ जो काम
में धर्म से विरुद्ध नहीं है वह मैंही हूं, ॥५॥ मैं संकल्प हूं, मैं यज्ञ हूं
हूं, मैं औषधि हूं, मैं मंत्र हूं, मैं आज्य (घृत) हूं, मैं अग्नि हूं, मैं हो
आहवि हूं, ॥६॥ हे अर्जुन सब प्राणियों के हार्दाकाश में स्थित आत्मा
हूं, और मैंही प्राणियों का आदि मध्य और अंत हूं ॥७॥ आदिति के पुत्रों
विष्णु अर्थात् (वामनावतार) है मैंही हूं, प्रकाशकों में किरणों का
सूर्य हूं, मरुत गणों में मरीचि हूं, नक्षत्रों में चन्द्रमा मैं हूं, ॥८॥ वेदों
में वेद हूं, देवताओं में इन्द्र हूं, इन्द्रियों में मन हूं, और प्राणियों में ज्ञा
नधी वृत्ति हूं, ॥९॥ रुद्रों में शङ्कर हूं, और यक्ष राक्षसों में कुवेर हूं,
में अग्नि हूं, और पर्वतों में मेरु मैंही हूं, ॥१०॥ हे अर्जुन राज पुरोहितों
में बृहस्पति को मुझे जानो मैं सेना पतियों के मध्य कार्तिकेय हूं,
खातजलाशयों में सागर हूं ॥११॥ महर्षियों में भृगु मैं ही हूं॥
वचनों में एकाक्षर प्रणव हूं, यज्ञों मे जप यज्ञ हूं, स्थित मानों
लय पर्वत हूं ॥१२॥ सब वृक्षों में पीपल हूं, देवऋषियों में नारद
र्वों में चित्ररथ हूं, सिद्धों में कपिल मुनि हूं ॥१३॥ घोड़ों में उच्चै
जो कि अमृत मथन समय उत्पन्न हुआ और गजराजों में ऐराव
र मनुष्यों में राजा को मुझे जानो ॥१४॥ आयुधों में वज्र मैं हूं गौ
काम धेनु हूं, सन्तान उत्पन्न करने वाला काम मैंही हूं, और सर्पों के
वासुकि हूं ॥१५॥ नाग नाम सर्पों के मध्य शेष हूं, जलचारी जीवों का
रुण मैंही हूं, पितरों में पितृराज अर्यमा हूं और संयमन करने वा
राज मैंही हूं ॥१६॥ दैत्यों में प्रह्लाद हूं, और गणना करने वा
काल मैंही हूं, मृगों में सिंह मैं हूं, और पक्षियों में गरुड हूं ॥१७॥
करने वाले वायु गवानों मे पवन हूं शस्त्र धारियों में राम मैंही हूं,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मत्स्य आदि में मगर हूं, और नदियों में गंगा हूं ॥१८॥ हे अर्जुन भो। तेक
प्राणियों का आदि, मध्य और अंत मैं ही हूं, विद्याओं में अध्यात्म वि हूं।
वाद कर्त्ता जिज्ञासुओं में तत्व निर्णय सम्बंधी वाद मैं ही हूं ॥१९॥ अ
में अकार हूं और समास समूह के मध्य द्वंद समास वा ज्ञानी गु ति
समूह का निश्चित रहस्य अर्थ मेंही हूं क्षय हीन क्षण आदि का य
हा काल रूप परमेश्वर मैं ही हूं, मैं कर्म फल दाता विश्व रूप हूं ॥२०॥
सब का नाश करने वाला मृत्यु और कल्याण प्राप्ति योग्य पुरुषों का ऐश्व-
र्योत्कर्ष मेंही हूं और दिव्य स्त्रियों के मध्य कीर्त्ति, लक्ष्मी, कान्ति, शो भा, वा
णी, सरस्वती, स्मरण शक्ति, ग्रंथ धारण शक्ति, धीरज, क्षमा मैं ही हूं ॥
॥२१॥ तथा साम वेद की ऋचाओं में वृहत् साम ऋचा और छन्दों में य
त्री मैं हूं, महीनों में मार्ग शीर्ष, ऋतुओं में बसन्त मैं हूं ॥२२॥ छलियों में
अक्ष खेल आदि हूं तेजस्वियों में प्रभाव वा अप्रतिहत आत्मा मैं हूं
वा उत्कर्षा हूं, निश्चय वा फल हेतु उद्यम हूं सात्विक पुरुषों का सत्व अ-
ज्ञान आदि हूं ॥२३॥ यादवों में वासु देव हूं, पांडवों में अर्जुन हूं मन और
ल सर्वज्ञ ऋषियों में भी व्यास हूं और क्रान्त दर्शियों के मध्य क्रान्त द्रष्टा ४
क मैंही हूं ॥२४॥ दंड दाताओं में दंड हूं, जयेच्छुओं में नीति हूं, गुप्त है
स्तुओं में मौन और ज्ञानियों में ज्ञान मैंही हूं ॥२५॥ हे अर्जुन सब भूत
यों का जो प्ररोह कारण है वह भी मैं हूं और वह चर अचर जीव नहीं है जो
मेरे बिना हो ॥२६॥ जो २ प्राणी ऐश्वर्य मान लक्ष्मी, शोभा या उत्साह से यु-
क्त वा अति बली है तुम उस २ को ही मेरे चित शक्ति के अंश वा एक अंश
तेज या प्रकाश से उत्पन्न जानो ॥२७॥ सूर्य में विद्यमान जो तेज सब
जगत को प्रकाशित करता है, जो तेज चन्द्रमा में है और जो तेज अग्नि में
है वह तेज मेरा जानो ॥२८॥ मैं पृथिवी में प्रवेश हो कर बल से प्रा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यों को धारण करता हूं और जलात्मक चंद्रमा होकर सब औषधियों को पुष्ट, सरस करता हूं॥२९॥ मैं वैश्वानर जाठराग्नि होकर प्राणियों के देह में प्रविष्ट वा स्थित दोनों उद्दीपित प्राण अपाण से युक्त वा दोनों से उद्दीपित हुआ चार प्रकार के अन्न को पकाता हूं॥३०॥ और मैं सब के हृदय में भले प्रकार स्थित हूं, मुझ से स्मृति, ज्ञान और उन का दूर होना है और मैंही सब वेदों से जानने योग्य हूं वेदार्थ संप्रदाय का कर्त्ता और वेद ज्ञाता मैंही हूं॥३१॥ मेंही इस जगत का जनक, जननी कर्म फल दाता, पिता मह, ज्ञेय वस्तु, शोधक, प्रणव और तीनों वेद हूं॥३२॥ प्राप्ति, योग्य, कर्म फल के दान से पोषक, स्वामी, अंतर्यामी, शुभाशुभ कर्म का द्रष्टा, प्राणियों का वास स्थान, शरणागत रक्षक, विना अपेक्षा प्रत्युपकार के उपकारी उत्पत्ति स्थान, लय स्थान, वास स्थान, कर्म फल समर्पण का स्थान, प्ररोह कारण और अविनाशी हूं॥३३॥ सूर्य रूप में तपाता हूं, मैं वर्षा को आकर्षण करता हूं और छोड़ता हूं हे अर्जुन मैंही जीवन और मृत्यु और कार्य कारण भी हूं॥३४॥ और मैंही सब यज्ञों का भोगने वाला और स्वामी हूं, मुझ को तत्व पूर्वक नहीं जानते हैं इस कारण वे च्युत होते हैं॥३५॥ जीव ब्रह्म के एकत्व में स्थित जो पुरुष सब प्राणियों में स्थित मुझ को भजता है वह योगी सब प्रकार से व्यवहार करता भी मुझ में ही वर्त्तता है॥३६॥ परन्तु इस काल में प्राकृत मनुष्य उन संबोधनों को जोकि वैदिक मंत्रों में वायु अग्नि वरुण आदि देवताओं के अर्थ हैं सेना पति, सभा पति, महाराज आदि मनुष्यों के सम्बोधन में कल्पना करते हैं उस का प्रमाण निघण्टु निरुक्ति आदि में कहीं भी दृष्टि नहीं पड़ता। तथा- व्यत्ययो बहुलम् इस सूत्र से वेदों में सहेतुक व्यत्यय होता है नकि अपनी इच्छा के अनुसार।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक मनुष्य तो हेतु रहित व्यत्यय को अपनी इच्छा के अनुसार स
र्व्व कल्पना करते हैं और सब मनुष्यों को अंध प्राय जानते हैं। तथा वै
दिक कर्म कांड का सारभूत यह भगवत बचन है। जिस के द्वारा अर्पण
किया जाय वह यज्ञ पात्र ब्रह्म है, हवि भी ब्रह्म है, ब्रह्म रूप अग्नि में ब्र
ह्म रूप यज मान से होमा गया उस कारण ब्रह्म कर्म समाधि के द्वारा
ब्रह्मही प्राप्त होने के योग्य है। वे प्राकृत मनुष्य उस का निरादर कर
विपरीत कहते हैं कि स्वर्ग नरक, नहीं हैं पितर और देवता नहीं हैं इत्या
दि मिथ्या भाषण से नास्तिकता को स्वीकार करते हैं। तथा यज्ञ अवश्य
करने योग्य हैं और वह चार प्रकार का है हवियज्ञ १ पशु यज्ञ २ जपय
ज्ञ ३ ज्ञान यज्ञ ४ उनके अधिकारी तीनों वर्ण हैं जैसा स्मृति कहती
है। क्षत्री का यज्ञ पशु यज्ञ है, वैश्यों का यज्ञ हवियज्ञ है, शूद्र का यज्ञ
तीनों वर्ण की सेवा है और ब्राह्मण का यज्ञ जप यज्ञ है। हवियज्ञ नित्य
नैमित्तक काम्य कर्मों में अवश्य करना चाहिये कलि युग में विधि सि
द्धि के न होने से पशु यज्ञ असंभव है। जप यज्ञ और ज्ञान यज्ञ श्रेष्ठ और
सदा करने योग्य हैं। श्रुति कहती है। देवताओं के अर्थ यह पय की आ
हुति हैं जो ऋग् वेद की ऋचा हैं जो विद्वान प्रति दिन स्वाध्याय को पढ़
ता है वह पय की आहुतियों से ही देवताओं को तृप्त करता है वे तृप्त दे
वता योग (अलभ्य लाभ) क्षेम, (लभ्य का परिरक्षण) प्राण, वीर्य, स
र्वात्मा और सम्पूर्ण पवित्र संपत्तियों से इस को तृप्त करते हैं और घृत,
मधु की नदी पित्रों के समीप स्वधा को प्राप्त करती हैं। देवताओं के अ
र्थ यह घृत की आहुति हैं जोकि यजुर्वेद की ऋचा हैं जो विद्वान प्रति
दिन स्वाध्याय को पढ़ता है वह घृत की आहुतियों से देवताओं को
तृप्त करता है वे तृप्त देवता योग क्षेम प्राण वीर्य सर्वात्मा और सम्पू

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र्ण पवित्र संपत्तियों से इस को तृप्त करते हैं और घृत मधु की नदियां पि
त्रों के समीप स्वधा को प्राप्त करती हैं। देवताओं के अर्थ यह सोम की
आहुति हैं जोकि साम वेद की ऋचा हैं, जो विद्वान प्रति दिन स्वाध्या
य साम मंत्रों को पढ़ता है वह सोम की आहुतियों सेही देवताओं को
तृप्त करता है वे तृप्त देवता योग क्षेम प्राण वीर्य सर्वात्मा और सम्पूर्ण
पवित्र संपत्तियों से इस को तृप्त करते हैं और घृत मधु की नदियां पि
तरों के समीप स्वधा को प्राप्त करती हैं (श० ११।५।६।४। ५।६)
तथा श्री भगवान ने भी कहा है—हे परम तप अर्जुन यज्ञों में जप यज्ञ-
मैंही हूं, द्रव्य यज्ञ से ज्ञान यज्ञ श्रेष्ठ है सम्पूर्ण कर्म ज्ञान में समाप्ति
को पाते हैं—स्मृति में भी लिखा है—जो चार पाक यज्ञ विधि यज्ञ से यु
क्त हैं वे सब जप यज्ञ की सोलहवीं कला के तुल्य नहीं हैं ॥ १ ॥ ब्रा-
ह्मण जप सेही सिद्ध होवे इसमें संशय नहीं, दूसरा कर्म करै वा न क
रै क्योंकि ब्राह्मण मैत्र (सब का मित्र) कहाता है ॥ २ ॥ द्विजोत्तम
तप को तपता सदा वेद काही अभ्यास करै इस लोक में वेदाभ्यास
विप्र का परम तप कहाता है ॥ ३ ॥ आलस्य रहित समयानुसार नि-
त्य वेद काही अभ्यास करै उसी को इस का परम धर्म कहा दूसरा उप
धर्म कहाता है ॥ ४ ॥ जल, अन्न, गौ, पृथिवी, वस्त्र, तिल, सुवर्ण, और घृ
त का जो दान है उन सब दानों में वेद दान विशेष कहाता है ॥ ५ ॥ वे
दही पितृ, देवता और मनुष्यों का सनातन चक्षु है वेद शास्त्र अशक्य
(संशय रहित) और अप्रमेय (श्रुति भिन्न दूसरे अनुमान प्रमाणों
से असाध्य) है यह मर्यादा है ॥ ६ ॥ चारों वर्ण, तीनों लोक, पृथक् २
चारों आश्रम, भूत, वर्त्तमान और भविष्य ये सब वेद सेही सिद्धि होते
हैं ॥ ७ ॥ सनातन वेद शास्त्र सब प्राणियों को धारण पोषण करता है

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस कारण इस को श्रेष्ठ मानते हैं जो कि इस जीव का साधन है ॥ ८॥ जो वेद शास्त्र के अर्थ तत्व का ज्ञाता है वह जिस तिस आश्रम में वास करता इसी लोक में स्थित ब्रह्म भाव के योग होता है ॥ ९॥ जैसे बलवान अग्नि गीले वृक्षों को भी दग्ध करता है तैसेही वेद का ज्ञाता अपने कर्मज दोष को भस्म करता है ॥ १०॥ जैसे बड़े ह्रद में डाला हुआ मिट्टी का डेला सब नष्ट हो जाता है इसी प्रकार तीनों वेद जीवात्मा के किये हुए पाप को भस्म करते हैं ॥ ११॥ वेद बल का आश्रय करके पाप कर्म में प्रीति करने वाला न हो वे क्यों कि अज्ञान और प्रमाद से किया हुआ कर्म भस्म होता है नकि दूसरा ॥ १२॥ मूल फल का खाने वाला जो मुनि बन में तप करता है, और जो दूसरा एक चरचा काजप करता है वह और वेबन सेवनादि उस एक फल वाले हैं। १३। यथा शक्ति वेदाभ्यास महा यज्ञ की क्रिया में सामर्थ्य शीघ्र महा पातक से उत्पन्न पापों को भी नाश करते हैं ॥ १४॥ प्राकृत मनुष्य तो उस कर्म कांड और उपासना काण्ड को मिथ्या अर्थ से बिख्यात करते हैं। उन असद्वचनों के पढ़ने से वहुधा मूढ़ मनुष्य तीर्थ स्नान, तर्पण, श्राद्ध, श्री राम कृष्णादि की भक्ति आदि कर्मों में शिथिली होते हैं। तथा वे कहते हैं, ब्राह्मण बेद से भिन्न हैं अर्थात् वेद नहीं हैं इति- सो नहीं श्रुति कहती है, जैसी चरचा ते सा ब्राह्मण (श० १२·५·२·४) तिस कारण वैदिक धर्म की रक्षा के लिये सरल ब्रह्मभाष्य बनाया जाता है। जो सर्वज्ञ समदर्शी हैं वे हमारे ऊपर कृपा करके इस भाष्य को मध्यस्थ रूप दृष्टि से देखो, तथा जो श्री शिव, भृगु, च्यवन, परशु राम नाम हमारे कुल देवता हैं वे भगवती कुल देवी के साथ हमारी रक्षा करो। हे तात श्री महादेवजी के वरुण रूप धारण करते समय सब लिंग शरीर अग्नि से प्रकट हुए ॥ १॥ उस अजन्मा, आद्य, आदि कर्त्ता, सब प्राणियों के ईश्वर प्रभु, सनातन कुल देवता को हाथ जोड़ कर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नमस्कार करता हूं ॥२॥ सृष्टि की आदि में वरुण शरीर धारण करते समय उस महात्मा देव श्रेष्ठ के यज्ञ में अग्नि से जो उत्पन्न हुआ ॥३॥ उस ब्रह्मरूप सर्वज्ञ, कुलदेव, कुलोद्भव, अग्नि स्वरूप श्री भृगुजी को सच्चे भाव से नमस्कार करता हूं ॥४॥ जिन भृगुजी से महा तेजस्वी, बर दाताओं में श्रेष्ठ महर्षियों में बड़ी प्रभा वाले श्रीच्यवनजी ने जन्म लिया, जोकि बड़े विघ्नों के विनाश करने वाले हैं ॥५॥ अनंत गुण से श्लाघा योग्य उन भृगुनंदन च्यवनजी को हाथ जोड़ कर भक्ति भाव से वारंवार नमस्कार करता हूं ॥६॥ जब ब्राह्मण पुकारे, हे भार्गव परशुरामजी दौड़ो, उन बचनों को नहीं सहा जोकि उन से वारंवार कहे गये ॥७॥ भार्गव परशुरामजी ने सब १८ द्वीपों को बश में करके पृथिवी को चोर रहित करके फिर श्रेष्ठ इष्ट जनों से व्याप्त पृथिवी को ॥८॥ महा यज्ञ अश्व मेध में कश्यप ऋषि को दान किया, और पर्वतों में श्रेष्ठ वायु की उपमा करने वाले महेन्द्र पर्वत पर वास किया ॥९॥ इस प्रकार अनंत गुणों से युक्त भार्गवों की कीर्ति बढ़ाने वाले महात्मा श्री परशुरामजी को सिर से प्रणाम करता हूं ॥१०॥ जिस महायशस्वी प्रभु ने मुझ को बड़ा कष्ट प्राप्त होने पर स्वप्नांत में दर्शन दिया और बर भी दिया ॥११॥ जो देवी भगवती विद्याओं में ब्रह्म विद्या है, और देहाभिमानी पुरुषों में महा निद्रा रूप है उस को हाथ जोड़ कर शुद्ध भाव से प्रणाम करता हूं ॥१२॥ मैंने सम्बत् १९४१ चैत्र शुक्ला ९ भृगु वार के दिन भाष्य रचने का आरंभ किया ॥१३॥ जोकि मैं अग्नि ज्वाला रूप श्री भृगुजी के बंश में उन की कृपा से उत्पन्न हुआ उस दिव्य हेतु से ज्वाला प्रसाद नाम हूं ॥१४॥ हे श्रेष्ठ पुरुषो, धर्म, काम, अर्थ, मोक्ष की सिद्धि के लिये ईश्वर के अनुग्रह से ही ब्रह्म भाष्य प्रकाशित होता है ॥१५॥ पूर्ण विद्या वाले ऋषियों का जो सनातन अर्थ है अब उस को विचार कर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे द्वारा मंत्रार्थ लिखे जाते हैं॥१६॥ सत्यार्थ रूप सूर्य के द्वारा तीनों लोक का दुख दाता असत्यार्थ स्वरूप अंधकार सब प्रकार से नाश को प्राप्त करै ॥१७॥ और सद् भाष्य का अर्थ पृथिवी तल पर भले प्रकार विख्याति को पाओ श्री नारायण की कृपा से यह प्रयत्न सिद्धि को प्राप्त करो॥१८॥ अत्रि ऋषि का बचन है कि वेद को इतिहास पुराणों से भले प्रकार विस्तृत करे क्योंकि वेद थोड़ा शास्त्र जानने वाले से डरता है कि यह मुझ को अन्य था अर्थ से उपदेश करेगा॥१॥ उस कारण हम इस भाष्य को इतिहास, स्मृति और पुराणों की व्याख्या से अच्छा भूषित करेंगे क्योंकि वे ब्रह्म के ही श्वास हैं। जैसा श्रुति कहती है। जिस प्रकार गीले ईंधन वाले स्थापित अग्नि से नाना प्रकार के धूम निकलते हैं इसी प्रकार ये जो ऋग वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्व वेद, इतिहास, पुराण, विद्या, उपनिषद, श्लोक, सूत्र, अनुव्याख्या और व्याख्यान हैं ये सब इस महा भूत परमेश्वर की श्वास हैं (श० १४।५।४।१०) तथा वेदों में तीन अर्थ का संभव है अधिभूत, १ अधिदैव २ अध्यात्म ३ उन में अधिभूत अर्थ अज्ञान से कल्पित और श्रुति व्याकरण से विरुद्ध है प्राकृत मनुष्य जिस की करते हैं। अधिदैव और अध्यात्म नाम वाले दोनों अर्थ श्रुति, स्मृति व्याकरण आदि शास्त्रों से सिद्ध हैं। उन में अधिदैव अर्थ कर्म उपासना का द्योतक है॥ और अध्यात्म अर्थ ज्ञान योग का प्रकाशक है हम इन दोनों अर्थ को प्रमाण से सयुक्त बर्णन करेंगे, वे दोनों किन गुणों से युक्त हैं उस पर श्रुति कहती है। आत्म याजी श्रेष्ठ है वा देव याजी इस प्रश्न का उत्तर यह कि आत्म याजी श्रेष्ठ है, ऐसा कहना चाहिये, निदान आत्म याजी वह है जिस को यह ज्ञान हो कि इस मंत्र से मेरा यह अंग संस्कार किया जाता है, और इस मंत्र से मेरा यह अङ्ग आत्मा में धारण किया जाता है जिस प्रकार सर्प त्वचा (कांचली) से छूट जाता है इसी प्रकार वह आत्म याजी इस मृत्यु

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रस्त शरीर और पाप से मुक्त होजाता है, वह ऋङ्मय, यजुर्मय, साममय और आहुति मय होकर स्वर्ग लोक (आनंद स्वरूप ब्रह्म) को प्राप्त करता है, गीता में श्री भगवान ने भी कहा है, हे अर्जुन जैसे काष्ठों से वृद्धि पाने वाला अग्नि भस्म करता है तैसे ही ज्ञान रूप अग्नि सब कर्मों को भस्म करता है॥१॥ इस लोक में ज्ञान के समान पवित्र विद्यमान नहीं है योग से भले प्रकार सिद्ध पुरुष समय पर उस ज्ञान को आप आत्मा में पाता है॥ ॥२॥ फिर श्रुति कहती है देव याजी वह है, जो जानता है मैं देवताओं को ही आहुति देता हूं, देवताओं को पूजता हूं, जैसे नीच मनुष्य श्रेष्ठ पुरुष को भेट देवै वा वैश्य राजा को भेट देवै इसी प्रकार वह देव याजी देवताओं को देता है, वह उतने लोक को नहीं जीतता है, जितने को दूसरा अर्थात् आत्म याजी जय करता है (श॰ ११·२·६·१४) श्री वेदव्यासजी ने भविष्य काल में मनुष्यों की [illegible] बुद्धि विचार कर अनुग्रह दृष्टि से वेद को जोकि ब्रह्म परंपरा से [illegible] आ था चार भाग करके, ऋग्, यजु, साम, अथर्व नाम चारों वेद [illegible] ल, वैशंपायन, जैमिन, सुमन्त के अर्थ उपदेश किया और उन्हों ने अपने शिष्यों को पढ़ाया। वह वेद ऐसी परंपरा से अनंत शाखा वाला हुआ। तहां व्यास जी के शिष्य वैशंपायन ने यजुर्वेद अपने शिष्य याज्ञ वल्क्य आदि को पढ़ाया, दैव इच्छा और बुद्धि की मलिनता से वे यजुर्वेद के मंत्र अशुद्ध होगये। तदनंतर दुःखित याज्ञ वल्क्य ने सूर्य का आराधन कर दूसरे शुद्ध यजु मंत्रों को प्राप्त किया। और वे मंत्र जा वाल, गौधेय, काण्व, मध्यान्दिन आदि पंद्रह शिष्यों को पढ़ाए, इसमें श्रुति प्रमाण है, कि सूर्य से पढित ये शुक्ल (शुद्ध) यजु मंत्र याज्ञ वल्क्य से जोकि वह अन्न दाता सूर्य का शिष्य है, शिष्यों को उपदेश किये जाते हैं। वहां मध्यान्दिन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि को प्राप्त होने वाला यजुर्वेद शाखा विशेष माध्यन्दिन नाम ब्रह्मा य
द्यपि याज्ञ वल्क्य ने बहुत शिष्यों को उपदेश किया, तौभी ईश्वर की कृ
पा से मध्यन्दिन सम्बंध से लोक में विख्यात है। उस माध्यन्दिन वेद
को जो पढ़ते हैं, वा जानते हैं शिष्य परंपरा से वर्त्तमान वे भी माध्यन्दिन
कहाते हैं। इसी कारण अपना स्वाध्याय पढ़ना चाहिये (शा० ११.५.६.७) इ
स श्रुति के प्रमाण से अपनी शाखा का पढ़ना विशेष हित कारी है। और वह पाठ
प्रत्येक मंत्र में ऋषि, छंद, देवता के विनि योग और अर्थ ज्ञान के साथ
करना चाहिये। क्योंकि दूसरे प्रकार दोष सुना जाता है, जैसे। जो पुरुष
इन विनि योग आदि को न जान कर वेद को पढ़ता है, पढ़ाता है, जप करता है
होम करता है, यज्ञ करता है वा कराता है उस का वेद निर्वीय और जीर्ण
होता है यह कात्यायनजी का वचन है। और ऋषि आदि के ज्ञान में फ
ल सुना जाता है। यथा जो पुरुष सब ऋषि आदि को जान कर पढ़ता है
उस का वेद वीर्य वान होता है और पुरुष अर्थ का ज्ञाता है उस का
वेद वीर्य वत्तर होता है, जप करके हल्पि करके, यज्ञ करके उस के फल
से युक्त होता है। उस कारण वेद मंत्रों के ऋषि आदि का ज्ञान और अ
र्थ ज्ञान आवश्यक है, इसके विपरीत निष्फल है। यह सब ब्रह्म है इस
श्रुति के अनु सार अपरा प्रकृति के विकार भूत शाखा, पय, स्रुक, यूप
आदि में चैतन्य आत्मा विद्य मान है, उस कारण जड़ रूप होने में भी
उनके अभि मानी देवताओं के व्याप्त होने से शाखा आदि का देवता रूप
होना निश्चित है। वैदिक यज्ञ की विधि श्री याज्ञक देव कृत का त्याय
न सूत्र पद्धति में विस्तार के साथ वर्त्तमान है उस कारण इस भाष्य
में विस्तार भय से नहीं कही जाती है, किंतु दिङ् मात्र आवश्यक
सूत्र सङ्केत सहित कहेंगे॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं श्री यजुर्वेदाय नमो नमः

ओं श्री यज्ञ पुरुषाय नमो नमः

ओं श्री व्यासादि महर्षिभ्यो नमो नमः

हे विष्णु [1] दृषे गगण मंडल से अमृत वृष्टि के अर्थ, [2] त्वा, गगण मंडलस्थ सहस्र दल कमल में विराज मान तुम को, नमस्कार करता हूं, [3] ऊर्ज्जे, ज्ञाना मृत रस के लाभार्थ जोकि श्रुति अर्थ से चारों ओर से प्राप्त होने वाला ज्योतिरूप रस अविनाशी ब्रह्म और भू, भुव, स्वः और प्रणव रूप है॥ [4] त्वा, योग से प्राप्त होने वाले तुम को, प्रार्थना करता हूं हे प्राणो तुम, [5] वायवः, ब्रह्म में प्राप्त होने वाले (श० १·७·२·७) [6] स्थ, हो, अधि भूत, अधि देव, अध्यात्म भेद से तीन रूप वाली हे बुद्धि यो, [7] देवः सब का प्रकाशक ज्योतिस्वरूप, [8] सविता, सब का प्रेरक परमात्मा, [9] श्रेष्ठतमाय, [10] कर्मणे, ज्ञान यज्ञ के लिये (श० १·७·१·१५) [11] वः, तुम को [12] प्रार्पयतु, ब्रह्मा लय हार्दाकाश में प्राप्त करो, [13] अध्न्या, भक्ति ज्ञान योग का साधन करने से अवध्य हे बुद्धि ओ, [14] इन्द्राय, परमेश्वर के लिये, [15] भागं, जीव रूप अंश को जोकि श्रुति में देवताओं का अमृत रूप हवि (श० १·२·१·२०) और स्मृति में ईश्वर का अंश लिखा है, [16] प्रप्यायध्वम्, ब्रह्म ज्ञान द्वारा चारों ओर से वृद्धि युक्त करो, [17] स्तेनः, काम जिस को गीता में रजो गुण से उत्पन्न क्रोध रूप बड़ा भोगी बड़ा पापी वैरी ज्ञानी के ज्ञान का ढकने वाला इन्द्रिय मन बुद्धि में रहने वाला जीवात्मा को मोहित करने वाला दुष्पूराग्नि कहा है। [18] प्रजावतीः, शम दम आदि पुत्र वाली, [19] अनमीवाः, अज्ञानादि रोग रहित, [20] अयक्ष्माः, मोह कामादि से मुक्त, [21] वह्वीः, शम दम प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि आदि गुणों से बहुविध, [22] वः, तुम्हारे हरने को, [23] मा, [24] ईशत, समर्थ मत हो, [25] अघशंसः

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधर्म, मा[२६], समर्थ मत हो, अस्मिन्[२७], इस, गोपतौ[२८], आत्मा रूप यजमान के पास (श० ९।५।२।१६), ध्रुवा[२९]; निश्चल, स्यात[३०], हाजिये जैसा भगवद्गीता में कहा है, हे अर्जुन जब मन में विद्यमान सब कामनाओं को त्याग करता है, आत्मा द्वारा आत्मा में ही संतुष्ट है, तब स्थिर बुद्धि कहाता है॥ १॥ दुःखों में उद्वेग रहित मन, सुखों में इच्छा हीन, स्नेह भय और क्रोध से शून्य मुनि स्थिर बुद्धि कहाता है॥२॥ जो सब में स्नेह रहित उस२ शुभ अशुभ को पाकर प्रशंसा नहीं करता है, निन्दा नहीं करता है, उस की बुद्धि स्थिर है॥३॥ जब यह सब प्रकार से इंद्रियों को उनके विषयों से खेंच लेता है, जैसे कछुआ अंगों को, उस की बुद्धि स्थिर है॥४॥ हे परमेश्वर, यजमानस्य[३१], योगी के, पशून्[३२], इन्द्रियों को, (श० १३।३।४।३), पाहि[३३], संसार से रक्षा करो॥ ६॥ इस कण्डिका में दो प्रश्न का संभव है पहिले और दूसरे गर्भित मंत्र में सम्बोधन और क्रिया पद कैसे संयुक्त नहीं किया॥१॥ दूसरे गर्भित मंत्रों में क्रिया पद किस कारण से युक्त किया॥२॥ उत्तर, ये ब्राह्मण, क्षत्री, लोक, देवता, पंच, तत्व आदि ये सब आत्माही हैं, (श० १४।५।४।६) ब्रह्मचारों और से प्राप्त होने वाला है (श० ४।१।४।१) सनातन अक्षर ब्रह्म मन से ही प्राप्ति योग्य है यहां बहुत प्रकार का कुछ नहीं (श० १४।७।२।२१) उस कारण से सम्बोधन पद युक्त नहीं किया ब्राह्मण ब्रह्म ही है, (श० १३।१।५।३) जिस अवस्था में इस के ज्ञान में सब आत्मा निश्चित हुआ तब किस इन्द्री के द्वारा किस्से बात करे (श० १४।५।४।१६) उस कारण क्रिया पद युक्त नहीं किया॥१॥ पहले और दूसरे मंत्र में सिद्धांत को दर्शाते व्यवहार में अगले मंत्रों के साथ क्रिया पद युक्त किये हैं॥२॥ अथाधिदैवम्॥ अथ दर्श पौर्णमास मंत्राः, तहां पहिली कण्डिका में पांच गर्भित मंत्र हैं, पहिला पलाश शाखा काटने का मंत्र, कात्यायन सूत्र २ अ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्याय १ कण्डिका,३ सूत्र,दूसरा पलाश शाखा के शोधन करने का मंत्र,(का० ४।२।१३) तीसरा पलाश शाखा से बछड़े के अलग करने का मंत्र, का० ४।२।७। चौथा उक्त शाखा से गौ स्पर्श करने का मंत्र का० ४।२।९।१०। पांचवां अग्न्यागार में शाखा के उपगूहन का मंत्र, का० ४।२।११। ओं इषे त्वेति परमेष्ठी प्रजापति ऋषि दैव्यनुष्टप् छन्दः शाखा देवता पलाश शाखा छेदने विनियोगः॥१॥ एव मूर्ज्जे त्वेति॥२॥ वायवस्थ इति दैवी बृहती छन्दो वायुर्देवता॥३॥ देवो व इति यजुषी इन्द्रो देवता॥४॥ यजमानस्येति यजुषी बृहती छन्दः शाखा देवता, अथ मंत्रार्थः हे पलाश शाखाभिमानी देवता,(श० ५।२।४।१८) इषे, वृष्टि के अर्थ, त्वा, तेरे प्रादुर्भाव के लिये तुझ से प्रार्थना करता हूं, ऊर्ज्जे, सब देवता मनुष्य पशु पक्षी आदि का उत्पन्न और पुष्ट करने वाला जो वर्षा जल है उस रस की प्राप्ति के लिये, त्वा, तुझ देव शरीर रूप शाखा को ग्रहण करता हूं, हे बत्सा ओ तुम, वायवः प्राण रूप वा गमन शील, स्थ, हो अर्थात् वत्स के जन्म से दुग्ध उत्पन्न होता है उस क्षीरोत्पत्ति के कारण बछड़ा जीवन हेतु है और माताओं के साथ जाने में सायं काल पर गो दोहन लब्ध नहीं होता, इस अभिप्राय के कारण बछड़ों से अन्यत्र जाने की प्रार्थना करते है, गौओं में काम धेनु हूं इस भगवत बचन के प्रमाण से हे ईश्वर विभूति रूप गौओ देवः; सब का प्रकाशक ज्योति स्वरूप सविता, इन्द्रियों को उनके व्यापार में प्रेरणा करने वाला सब का अंतर्यामी परमेश्वर श्रेष्ठ, तमाय, कर्म्मणे, यज्ञ के लिये, वः, तुम को, प्रार्पयतु, बहुत तृण युक्त बन में प्राप्त करो, अघ्न्याः; हे अवध्या गौओ, इन्द्राय, ईश्वर के लिये, भागं, क्षीर रूप हवि को, आप्यायध्वं, भले प्रकार बढ़ाओ, स्तेनः; चोर मनुष्य, प्रजावतीः बहुत संतान वाली, अनमीवाः

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृमि व्याधि छोटे रोगों से रहित, अयक्ष्माः[२०], प्रबल रोगों से रहित, ब
ह्वीः[२१] बहुत प्रकार की, वः[२२], तुम को अर्थात् तुम्हारे हरने को, मा[२३], ईश
त[२४], समर्थ मत हो, अघशंसः[२५], तीव्र पाप भक्षण आदि से मारने वाला
व्याघ्र आदि, मा[२६], मारने को समर्थ मत हो, अस्मिन्[२७], गोपतौ[२८], इस य
ज मान के पास, ध्रुवाः[२९]; निरंतर बास करने वाली, स्थ[३०], हाजियै, हे
शाखाभिमानी देवता, यजमानस्य[३१], यज मान के, पशुभ्यः[३२], को,
पाहि[३३], रक्षा करो ॥ १ ॥ यहां अग्रोक्त प्रश्नों का संभव है, क्रिया पद के
न लगाने में क्या कारण है, बछड़ों के प्राण रूप होने में क्या प्रमाण है
२ गौ किस गुण वा फल से अवध्य कहाती हैं, ३, उन्हों के उत्तर, बे
द में द्वैत अहङ्कार का निषेध है जैसा श्रुति कहती है ॥ दूसरे से निश्चय
भय होता है (श० १४।४।२।३) जो दूसरे देवता की उपासना करता है कि
यह दूसरा है और मैं दूसरा हूं वह पशु की तुल्य अज्ञानी है, वह देवताओं
का पशु है। १४।४।२।२२।उस कारण ब्रह्म भूत पुरुष को वैदिक कर्म क
रना चाहिये, क्योंकि उस कर्म में दोष नहीं है, जैसा श्रुति कहती है, ब्रह्म
ज्ञानी की यह सनातन महिमा है कि कर्म करने से न बढ़ता है न घटता
है उस त्वं पदार्थ के पद (तत्पदार्थ भूत ब्रह्म) का ज्ञाता होवै उस स्वरूप-
को जान कर पाप कर्म से लिप्त नहीं होता है (श० १४।७।२।२५ इस-
कारण सिद्धांत को दर्शा कर क्रिया पद युक्त किया। अथवा यह सब ब्रह्म
है इस श्रुति के अनुसार द्वैत अवस्था के मध्य वृक्ष आदि के छेदन में पाप
है द्वैत अहंकार के अभाव में वेदोक्त विधि से छेदन आदि में दोष नहीं है
जैसा गीता में भगवद्वचन है। जिस को अहंकार नहीं है और जिस की
बुद्धि लिप्त नहीं होती वह पिंड ब्रह्मांड का अभिमान त्यागने से इन लो-
कों को मार कर भी न मारता है न बन्धन पाता है अर्थात् देहाभिमान के-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्याग से आत्मा अकर्त्ता है और अकृतत्व में पाप का संभव नहीं- इस कारण है तानिषेध के प्रकाशार्थ क्रिया पद की योजना नहीं है॥ तथा शत पथ ब्राह्मण में छेदन ऋजूकरण शब्द बिधि द्योतक हैं मंत्र में योजना के लिये- नहीं हैं इस कारण प्रार्थना ग्रहण द्योतक क्रिया पद युक्त किये गये ब्रह्मवादियों को विचारना चाहिये ॥१॥ महाभारत में लिखा है कि जो गौओं का पति बैल है यह मूर्त्ति मान स्वर्ग है जो पुरुष उसे गुण वान वेद पाठी को दान करै वह स्वर्ग लोक में प्रतिष्ठित होता है। हे भरत श्रेष्ठ ये (बछड़े) निश्चय प्राणियों के प्राण कहे जाते हैं उस कारण जो पुरुष गौ को दान करता है यह प्राणों को देता है॥ इस प्रमाण से वत्स प्राण रूप हैं (२) भविष्य पुराण में ब्रह्माजी का बचन है यह सूर्य की पुत्री गौ पृथिवी रूप कही- है सब लोकों के कल्याणार्थ और यज्ञ सिद्धि के लिये उत्पन्न हुई १ एक ही कुल दो रूप वाला किया गया जोकि ब्राह्मण और गौ हैं एक में मंत्र- स्थित हैं एक में हवि स्थिति है॥२॥ गौओं से यज्ञ प्रवृत्त होते हैं गौओं से देवता भले प्रकार वृद्धि युक्ति हैं और छ अंग पद क्रम सहित चारों वेद गौं के द्वारा भले प्रकार उदय वा उन्नति को प्राप्त हैं ३ ब्रह्मा और बिष्णु सदा गौं के शृंग मूल में भले प्रकार आश्रित हैं अचर (क्षेत्रादि) और चर गंगा आदि सब तीर्थ शृंगाग्र पर स्थित हैं ४ सर्वभूतमय महादेवजी शिर के मध्य स्थित हैं देवी पार्वती ललाटाग्र पर और कार्तिकेयजी नासावंशपर स्थित हैं ५ कम्बल, और अश्वतर नाम नाग नासा पुट से अच्छे रक्षित हैं अश्विनी कुमार देवता दोनों कान में और सूर्य चन्द्रमा दोनों नेत्र में स्थित हैं- ६ सब वायु दांतों में स्थित हैं वरुण देवता जिव्हा में स्थित हैं ङकार में सरस्वती और दोनों गण्ड स्थल में यम कुबेर स्थित हैं ७ दोनों ओष्ठ में दोनों संध्या और ग्रीवा में इन्द्र देवता भले प्रकार आश्रित है कक्ष देश में रुद्र

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षस और वक्षस्थल पर साध्य देवता संस्थित हैं ८ चारचरन रखने वाला संपूर्ण धर्म स्वायं जंघाओं में स्थित है खुर के मध्य गंधर्व और खुर के अग्र पर पन्नग स्थित हैं ९ और खुरों के पश्चिमाग्रों पर अप्सराओं के गण स्थित हैं पृष्ठ पर ११ रुद्र और सब संधियों में वसु देवता स्थित हैं १० पितर श्रोणी तट पर स्थित हैं सोम लाङ्गूल (पूंछ) पर आश्रित है सूर्य की पिण्डी रूप किरण बाल (केश) पर व्यवस्थित हैं ११ गो मूत्र में साक्षात गंगा और गोवर में यमुना स्थित है दुग्ध में सरस्वती देवी और दही में नर्मदा संस्थित है १२ ब्राह्मणों का परम गुरु अग्नि देवता स्वयं घृत रूप है अट्ठाईस कोटि देवता रोमों में संस्थित हैं १३ पर्वत, वन, कानन सहित पृथिवी उदर में जाननी चाहिये गौओं के अंग में जो पयोधर हैं वे चारों पूर्ण सागर हैं १४ हे देव श्रेष्ठ देवता असुर मनुष्य सहित यह सब जगत जिस प्रकार गौओं में प्रतिष्ठित है यह सब वर्णन किया १५ स्कंद पुराण में लिखा है वन में बसती हैं अरक्षित तृण और जलों को खाती पीती हैं दूध देती हैं बैल सवारी में काम देते हैं पाप को दूर करती हैं यह जीव लोक गौओं के रस से जीवता है १६ संतुष्ट गौ पाप को दूर करती हैं दान की हुई गौ स्वर्ग में पहुंचाती हैं भले प्रकार रक्षित धन को प्राप्त कराती हैं गौओं के तुल्य कोई धन नहीं है १७ तृण घास को खाती है और नित्य पाप नाश और मित्रों की विशेष वृद्धि को देती है वही आर्य पुरुषों से भोगी जाती है गौओं के तुल्य कोई धन नहीं है १८ शुष्क तृणों को वन में चर कर और अरक्षित जलों को पीकर अमृत को देती हैं और जिन के गोवर आदि लोक को पवित्र करते हैं गौओं के तुल्य कोई धन नहीं है १९ हारीत ऋषि का वचन है जो पुरुष वहुत दूध देने वाली गौ ब्राह्मण को दान करै वह आप को और कोटि नाना के सात २ कुल को स्वर्ग में वास देवै २० महाभारत में लि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खा है प्रताप वान राजा अम्बरीष अर्बुद गौ ब्राह्मणों के अर्थ दान करके देश सहित स्वर्ग को गया २१ महा तेजस्वी राजा प्रसेन जित वछड़ा सहित एक लक्ष गौओं का दान करके अति उत्तम लोकों को गया २२ जिस लोक में सुनहरी महल हैं और शय्या रत्नों से जटित वा प्रकाशित हैं तथा जहां श्रेष्ठ अप्सरा हैं वहां गो दान कर्त्ता जाते हैं २३ हे राजन् गो दान करने वाला पुरुष गौ माता से उत्पन्न दुग्ध रूप जल को पी कर नरक को नहीं जाता है और सूर्य वर्ण विमान द्वारा स्वर्ग में विराजता है २४ दिव्य आभरण से भूषित सुंदर वेष वाली सुश्रोणी सैकड़ों श्रेष्ठ स्त्रियां उस विमानस्थ पुरुष को क्रीड़ा कराती हैं २५ और वेणु वल्लकी नाम, वाजे और हरिणाक्षी स्त्रियों के हास तथा नुपूर शब्दों से सोता हुआ जागता है २६ गौ के जितने रोम होते हैं उतने वर्ष तक स्वर्ग में प्रतिष्ठित होता है जो वह कर्म फल द्वारा स्वर्ग से च्युत हुआ तदनंतर वह लोक में गो मान पुरुषों के कुल में जन्म लेता है ॥२७॥ तिसी कारण से गौ अवध्य हैं- पहिले मंत्र का भाष्य समाप्त हुआ-

दूसरे मंत्र का भाष्य अध्यात्मम्

हे प्राणो दान ध्यान रूप पवित्र (श० १.१.३.२+३) तूवसोः ज्ञान यज्ञ का (श० १.७.१.९) पवित्रं, शोधक असि, है- हे मानस कमल वा मानस सूर्य वा यज्ञ के व्यष्टि शिर तुम (श० ६.५.३.८ वा ६.२.२.२४ वा ६.५.३.४) द्यौः, स्वर्ग रूप वा यज्ञ पुरुष का शिर सूर्य रूप (श० ९.३.१.६) असि, हो, पृथिवी, इन्द्रिय मन बुद्धि का आधार सब लोकों में श्रेष्ठ योग भूमि (श० २.१.४.३०) असि, है, मातरिश्वनः, प्राण वायु का, घर्मः दीपक मानस सूर्य (श० ९.४.२.१९) असि, है, विश्वधा, अपने तेज से सब देह वा ब्रह्मांड का धारक असि, है, हे मानस कमल, परमेण, धाम्ना, इन्द्रिय शक्ति रूप आत्म किरण से, दृंहस्व,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृद्धिपाओ, मा, ह्वा; योग से ऊर्ध्व मुख होकर कुटिल मत हो ते, तेरा यज्ञपतिः, आत्मा (श० १·७·१·११ तथा ९·५·२·१६) मा, ह्वार्षीत्, योग क्रिया में कुटिल मत हो॥२॥ अथाधिदैवम्-

इस दूसरी कण्डिका में तीन मंत्र हैं पलाश शाखा में पवित्र बांधने का मंत्र का० ४·२·१५·१६ दूध धारण केलिये उखा ग्रहण करने का मंत्र का० ४·२·१९ चूल्हे पर चढ़ाने का मंत्र का० ४·२·२० ओं वसो पवित्र मिति प्रजापति र्ऋषिर्यजुषी उष्णिक् छन्दो वायु देवता १ द्यौरसीति दैवी जगती छन्द उखा देवता २ मातरिश्वन इति प्र० ऋ० जगती छन्द उखा देवता॥३॥ मन्त्रार्थः॥ पूर्व मंत्र द्वारा हवि इन्द्र और महेन्द्र के योग्य होकर विश्व धारण में समर्थ हुआ उस दुग्ध धारण के अर्थ उखा अर्थात् हांडी को विश्व तेज से वृद्धि देते हैं हे पवित्राभिमानी देव वायु तुम (श० १·७·१·१२) वसोः, ईश्वर निवास भूत विश्व धारक क्षीर रूप हवि के, पवित्रं, शोधक, आसिः, हो हे उखाभिमानी देवता, तुम, द्यौः, जल वृष्टि कारक स्वर्ग लोक रूप आसि, हो, पृथिवी, विश्व तृप्ति हेतु भूत दुग्ध के धारण करने से सर्वाधार पृथिवी रूप, आसि; हो, हे उखाभिमानी देवता, तुम, मातरिश्वनः, वायु के, घर्मः, संचार स्थान अन्तरिक्ष लोक रूप, आसि, हो, विश्वधा, हवि द्वारा विश्व धारण करने वाले, आसि, हो, परमेण धाम्ना, ईश्वर सम्बंधी तेज से, दृंहस्व, वृद्धि युक्त हो, मा, ह्वाः कुटिल मत हो अर्थात् क्षीर को भले प्रकार धारण कर, ते, तेरा, यज्ञपतिः यज मान, मा, ह्वार्षीत्, क्रिया में कुटिल मत हो॥२

प्रश्न — विराट् अन्न है (श० १२·२·४·५) और अन्न हवि है तो पवित्र रूप वायु ब्रह्मांड और पिंड में किस प्रकार वर्तमान है— उत्तर—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाभारत शान्ति पर्व मोक्षधर्म के उत्तरार्ध में व्यासजी का बचन है वायु सब ओर से प्राणियों की पृथक्२ चेष्टा को वर्त्तमान करता है और प्राणियों के (प्राणान्) जीवन देने से प्राण कहाता है जो प्रवह नाम पहिला वायु है वह प्रथम मार्ग में धूम्र और उष्म से उत्पन्न अभ्र समूहों को प्रेरणा करता है बर्षा काल को पाकर वही विद्युत रूपों से बड़ा तेजस्वी होता है २ जो दूसरा वायु गरजता हुआ चलता है और जो निरन्तर चन्द्र आदि ज्योतिष पदार्थों का उदय करता है वह आवह नाम वायु है ज्ञानी पुरुष जिस को देह के मध्य उदान कहते हैं और जो वायु चारों समुद्र से जल को धारण करता है और उठा कर आकाश में जीमूत नाम वादलों को देता है ४ और जो जीमूतों को जल से युक्त करके पर्जन्य देवता को देता है वह तीसरा बड़ा वायु उद्वह नाम है (५) जिस से उद्वह मान और एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाये हुए वादल पृथक्२ होते हैं और वर्षारंभ करने वाले वादल घन (भरे) अघन (रीते) होते हैं (६) जिस वायु से मिले हुए वादल पृथक्२ होते हैं इस कारण उन गरजने बालों के नाम नद होते हैं रक्षण के लिये प्रकट वेभी मेघ नाम को पाते हैं अर्थात् रसहीन फल की समान नाश को नहीं पाते (७) जो यह वायु देवताओं के विमानों को आकाश मार्ग में चलाता है वह गिरि मर्दक चौथा वायु संवह नाम है (८) वृक्ष पर्वतों को तोड़ने वाले रूखे वेग वान जिस वायु से खंडित मेघ उस के साथी होते हैं वे वलाहक कहाते हैं ॥९॥ लोक नाश दर्शाने वाले धूम केतु सम्वर्त आदि मेघ जो उत्पात हैं उन की जिस से गति है वह गरजने वाला बड़ा वेग वान पांचवां वायु विवह नाम है ॥ १० ॥ जिस वायु में दिव्य ऊपर की ओर गिरने वाले जल आकाश मार्ग से चलते हैं और जो आकाश गंगा के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पवित्र जल को आकाश में थाम कर स्थित है ११ एक किरण रखने वाला सूर्य दूर सेही जिस वायु में प्रति हत होकर अनंत किरणों के उत्पत्ति का कारण होता है और जिस से पृथिवी प्रकाशित होतीहै १२ क्षीण चंद्रमा जिस वायु से वृद्धि पाता है अर्थात् सम्पूर्ण मंडल होता है वह जय मानों में श्रेष्ठ छूटा वायु परि वह नाम है १३ जो वायु कल्पांत काल पर सब प्राणियों के प्राण को निकाल डालता है दोनों यम राज और मृत्यु जिसके अनु गामी हैं १४ हे ब्रह्म विद्या का विचार करने वालो तुम शांति बुद्धि के द्वारा भले प्रकार उस वायु का साक्षात्कार करो जोकि ध्यान और अभ्यास में रमने वाले योगियों की मोक्ष के लिये समर्थ होता है १५ दक्ष प्रजा पति के दश सहस्र पुत्रों ने जिस वायु को पाकर वेग से ब्रह्मांड के अंत को पाया १६ जिस वायु से स्पर्श किया हुआ प्राणी परम रूप हुआ ब्रह्म को प्राप्त करता है फिर नहीं लौटता है वह दुरति क्रम श्रेष्ठ वायु परा वह नाम है १७ स्थूल वायु का वर्णन समाप्त हुआ अब देह स्थ सूक्ष्म वायु को कहते हैं प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान, नाग, कूर्म, कृकर देवदत्त, धनंजय ये दश प्राण हैं १ मनुष्यों का स्वामी प्रभु प्राण वायु तो पहिला है प्राणियों के हृदय में स्थित वह प्राण सदा सब को शुद्ध करता है २ जीव में भले प्रकार आश्रित प्राण वायु निश्वास, उच्छ्वास, का कारण इन्द्रिय विस्तार का संकोच करने वाला जीवात्मा का उद्धारक है ३ जीव धारण करने वाला प्राण प्राणियों के ऐसे कर्म को करता है जिस कारण प्राणियों को जीवन देता है उस कारण प्राण कहा गया ४ प्राणही भगवान ईश है प्राण विष्णु और ब्रह्मा है लोक प्राण से धारण किया जाता है सब जगत प्रा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ण रूप है ५ जब तक प्राण वायु हृदय में है तब तक इन्द्रियां प्रवृत्त रहती हैं प्राण के लोप होने पर सब नहीं दीखता है तिस कारण प्राण की रक्षा करे ६ जिस कारण अधम वायु मनुष्यों के मूत्र विष्ठा आदि को देह से दूर करता वीर्य मूत्र के ब्रज में स्थित है तिस कारण से अपान कहा गया ७ समान नाम वायु खाये पीये सूंघे को और रुधिर पित्त कफ, वात, को गात्रों में समान पहुंचाता है ८ समान वायु कोष्ठ में अग्नि के समीप स्थित है और सब ओर से गति करता है अन्न को ग्रहण करता है पकाता है मल आदि को निकालता है और छोड़ता है ९ नेत्र गात्र में अति कोप बढ़ाने वाला उदान वायु ओष्ठ मुख को चलित करता है मर्मों को कम्पित करता है १० व्यान अंग को विनमन करता है व्यान व्याधि को प्रकोपित करता है यह प्रीति का विनाशक और तीन प्रकार से बुढ़ापे का उत्पन्न करने वाला है ११ सिर से नासिका के अग्रान्त तक उदान का स्थान कहाता है नाभि से पाद तल तक अपान का स्थान कहा १२ व्यान वायु देह व्यापक है प्राण सब का प्रधान है उद्गार (कै) में नाग नाम वायु कहा और नेत्रादि के खोलने में कूर्म वायु स्थित है १३ छींक में कृकर और जम्हाई में देवदत्त स्थित है लिंग में धनंजय स्थित है वह मृत देह को भी नहीं त्यागता है ॥ १४ ॥ अथाध्यात्मम्

हे प्राण उदान व्यान रूप पवित्र तुम वसोः, आत्म निवास भूत देह रूप हवि के शत धारं, (शं) आनद (तं) अमृत आनंद अमृत की धारा रखने वाला, पवित्रं, शोधक, असि, हौ वसोः, ईश्वर निवास भूत ब्रह्मांड रूप हवि के (श० १ २ २ ४ ५) सहस्रधारं, रकार परा शक्ति सहस ज्योति = परा नाम ब्रह्म शक्ति की धा-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रा रखने वाला पवित्रं, शोधक, असि, हो, हे ज्ञान इन्द्रिय समूह देवः, इन्द्रियों का प्रकाशक, सविता, मन (श० ४·४·१·१) शतधारेण, आनंदामृत धारा वाले, सुप्वा, अच्छे पवित्र कारक, वसोः, ज्ञान यज्ञ के, पवित्रेण, प्राण उदान व्यान रूप पवित्र से, त्वा, तुमको, पुनातु, पवित्र करो मन रूप अध्वर्यु (श०१·५·१·२१) पूछता है हे दूध दोहने वाले जीवात्मा वा योगी आधिभूत, आधिदैव, अध्यात्म सम्बंधी बुद्धि रूप गौओं के मध्य तुमने कां, किस बुद्धि रूप गौ को, अधुक्षः दोहा है ॥३॥

अथाधिदैवम्॥ तीसरी कण्डिका में तीन मंत्र है- उखा में पवित्र स्थापन का मंत्र का० ४·२·२१ दूध के पवित्र करने का मंत्र का० ४·२·२३ किस गौ को दोहा यह प्रश्न का० ४·२·१४— ओं वसो पवित्र मसीति प्र० ऋ० यजुषी वायुर्देवता १ देवस्त्वेति प्र० ऋ० साम्नी त्रिष्टुप् छन्दः पयो देवता२ कामधुक्ष इति प्र० ऋ० दैवी बृहती छन्दः प्रश्नो देवता॥३॥ हे शाखा पवित्राभिमानी देवता तू वसोः यज्ञ का, शतधारं, (शं) प्रजा पति (तं) अमृत = प्रजापति सम्बंधी अमृत की धारा रखने वाला, पवित्रं, शोधक, असि, है तथा वसोः, प्रजा पति निवास हेतु दुग्ध का, सहस्र धारं, (सहस्र) ज्योति (र) दाता = ब्रह्म ज्योति दाता अमृत की धारा रखने वाला, पवित्रं, शोधक, असि, है, हे क्षीर, सविता, जगत का उत्पन्न करने वाला, देवः, परमात्मा, शतधारेण, प्रजा पति सम्बंधी अमृत की धारा रखने वाले, सुप्वा, अच्छे शोधक, वसोः यज्ञ सम्बंधी, पवित्रेण, पवित्र से, त्वा, तुझे, पुनातु, पवित्र करो, अध्वर्यु तीन बार पूछे हे दूध दोहने वाले तुमने, काम, काम,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामभक्ति,ज्ञान प्राप्ति हेतु भूतकिस गौ को अधुक्षु; दोहा है॥३॥ अथाध्यात्मम्- इस गौ को दोहा इस प्रकार दोग्धा से कहे जाने पर मन अध्वर्यु कहता है सा, वह अधिभौतिका बुद्धि विश्वायु; जगत स्थित का कारण है (सा) वह अधिदैविका बुद्धि (विश्व कर्मा,) जगत उत्पन्न करने वाली है (सा) वह अध्यात्म का बुद्धि (विश्वधायाः) सब की धारण करने वाली है, हे इन्द्रिय समूह (इन्द्रस्य) यजमान के (श० ५.२.५.७) भागं, अंशत्वा, तुम को सोमेन, प्राण से (श० ७.३.१.४५) आतनाचि, दृढ निश्चल करता हूं विष्णो, हे यज्ञ पुरुष- (श० १.१.२.१३) हव्यं, जीवात्मा को (श० १.२.१.२०) रक्ष, संसार बंधन से रक्षा करो॥ ४॥ अथाधिदैवम्॥

चौथी कंडिका में पांच मंत्र हैं प्रथम प्रश्न के उत्तर वाला, का० ४.२.२५ द्वितीय प्रश्न के उत्तर वाला का० ४.२.२६ तृतीय प्रश्न के उत्तर वाला का ४।२।२५। दही जमाने का मंत्र, का० ४।२।३३। विष्णु से प्रार्थना करने का मंत्र, का० ४।२।३४। ओं सविश्वा युरिति प्रजा० ऋषि र्दैवी बृहती छन्दो गो देवता १ साविश्व कर्मेति प्रजा० ऋषिर्दैवी पंक्ति छन्दो गो देवता २ साविश्वधाया इति प्रजा० ऋषि उक्त छन्दः पयो देवता ३ इन्द्रस्यत्वेति प्रजा० ऋषिर्याजुषी जगती छन्द इन्द्रोदेवता ४ विष्णो हव्य मिति प्रजाः ऋषि र्याजुषी गायत्री छन्दः पयो देवता॥ अथ मंत्रार्थः पूर्वोक्त प्रश्न के उत्तर में (इस गौ को दोहा) दोहने वाले से कहे जाने पर अध्वर्यु उत्तर देवे, सा, वह कामना की सिद्धि देने वाली गौ, विश्वायु, जगत स्थित की कारण है सा, वह भक्ति प्राप्ति की कारण गौ विश्व कर्मा, आज्य रूप हवि देने से यज्ञ फल रूप वृष्टि के द्वारा सृष्टि रचना करने वाली है सा, वह ज्ञान दाता गौ विश्वधायाः, ब्रह्माण्ड रू

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प हवि यजमान को पान कराने वाली है (श० १२।२।४।५) हे क्षीर, इंद्रस्य, ईश्वर के भागं, भाग, त्वा, तुझे, सोमेन, प्रातःकालीन होम से बचे हुए दही के द्वारा, आतनच्मि, दही के लिये कड़ा करता हूं, बिष्णो, हे यज्ञ पुरुष, हव्यं, हवि को, रक्ष, रक्षा करो॥ अथाध्यात्मम्॥ व्रतपते, हे ज्ञानयज्ञ के स्वामी अग्ने, सायुज्य मोक्ष में हव्य रूप जीव को अपनी आत्मा में लय करने वाले हे बिष्णु, व्रतं, ज्ञान यज्ञ के अनुष्ठान को, चरिष्यामि, करूंगा, तत्, शकेयं, उसके करने को समर्थ होऊं, तत्, वह, मे, मेरा ज्ञान यज्ञ, राध्यतां, निर्विघ्न होता फल प्राप्ति तक सिद्ध हो, इदं, अहं, यह मैं यजमान, अनृतात्, संसार से, सत्यं, ब्रह्म को श० १४।८।५।१ उपैमि, प्राप्त करूं॥५॥ अथाधिदैवम्॥ पांचवीं कंडिका में कर्म के अनुष्ठान की प्रतिज्ञा है, का० २।१।११ ओं अग्ने इति प्रजा० ऋषि आर्षी उष्णिक् छन्दोऽग्निर्देवता १ इदमहमिति प्र० ऋ० साम्नी गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता २॥ अथ मंत्रार्थः॥ व्रतपते, हे अनुष्ठेय यज्ञ के स्वामी अग्ने, विष्णु व्रतं, हविर्यज्ञ के अनुष्ठान को चरिष्यामि, करूंगा, तत्, शकेयं, उसे, कर सकूं, तत्, वह, मे, मेरा यज्ञ, राध्यतां, निर्विघ्न होता फल पर्यंत सिद्ध हो, इदं, यह, अहं, मैं, अनृतात्, मनुष्य भाव से, सत्यं, देव भाव को (श० १।१।१।४) वा सायुज्य मोक्ष को, उपैमि, प्राप्त करूं॥५॥ अथाध्यात्मम्॥ ब्रह्मज्योति रस अमृत रूप जल को धारण करने वाले हे पात्र हृदय, त्वा, तुझे, कः, कौन युनक्ति, स्थापन करता है, सः, वह प्रजापति ब्रह्म (श० १३।६।२।८) त्वा, तुझको युनक्ति, स्थापन करता है, कस्मै, किस प्रयोजन के लिये, त्वा, तुझ को युनक्ति, स्थापन करता है, तस्मै, तत्पदार्थ रूप ब्रह्म की प्राप्ति के लिये, त्वा, तुझको युनक्ति, स्थापन करता है हे मन हे बुद्धि, त्वा, तुम दोनों को, कर्म्मणे, ज्ञान यज्ञ की सिद्धि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये ग्रहण करता हूं त्वौ, तुम दोनों को वेषाय, विष्णु भाव प्राप्ति के लिये ग्रहण करता हूं॥६॥ देह रूप शकट से इन्द्रिय रूप हवि का प्रथक् करना और प्रोक्षण के लिये ज्योति रस रूप जल का धारण इत्यादि मन का व्यापार है। उस हवि भाग का धारण और हार्दान्तरिक्ष रूप (श०७।५।१।२६) उलूखल में डालना फिर उठाना इत्यादि बुद्धि के व्यापार हैं अथाधिदैवम्॥ छठी कंडिका में दो मंत्र हैं पहले में जल का प्रणयन और आहवनी याग्नि के उत्तर प्रदेश में धारण है का० २।३।२३। दूसरे में भूर्प और अग्नि होत्र हवणि का ग्रहण (का० २।३।१०)- ओं कस्त्वा युनक्तीति प्र० ऋ० साम्नी त्रिष्टुप् छन्दः प्रजापतिर्देवता १ कर्म्मणे वामिति प्र० ऋ० प्राजापत्या गायत्री छन्दः स्रुक् भूर्पौ देवते २ अथ मंत्रार्थः अध्वर्यु यज्ञारंभ कर्म में अपने कर्त्तापान को दूर कर के प्रजा पति के यज्ञ कर्तृत्व को प्रश्नोत्तर रूप मंत्र वाक्यों से सिद्ध करता है- हे प्रणीत जलों के धारण करने वाले पात्र त्वा, तुझे कः कौन युनक्ति, आहवनीय के उत्तर भाग में स्थापन करता है सः, वह प्रजापति ब्रह्म (श० १३।६।२।८) त्वा, तुझे युनक्ति, स्थापन करता है कस्मै, किस प्रयोजन के लिये त्वा, तुझे, युनक्ति, स्थापन करता है॥ तस्मै, उस प्रजा पति की प्रीति के लिये- त्वा, तुझ को युनक्ति, स्थापन करता है- जैसे भगवद्वाक्य है हे अर्जुन तू जो करता है जो खाता है जो होम करता है जो दान करता है जो तप करता है उस को मेरे अर्पण कर १ शुभ अशुभ फल रूप कर्म बन्धनों से छूट जायगा माया के त्याग और जीव ईश्वर के एकत्व से युक्तात्मा तू विमुक्त हुआ सुख को प्राप्त करेगा २ हे अग्नि होत्र हवणि हे भूर्प वौ, तुम दोनों को कर्म्मणे, हविर्यज्ञ के लिये, युनक्ति, स्थापन करता है त्वौ, तुम दोनों को वेषाय, सूचित क-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मि में व्याप्ति के लिये स्थापन करता हूं- शकट में स्थित सतुष तण्डुल को हवि के लिये पृथक् करना और प्रोक्षण के लिये जल का धारण करना इत्यादि अग्निहोत्र हवणि के व्यापार हैं। और तण्डुल भाग का धारण करना उलूखल में डालना फिर उठाना इत्यादि शूर्प के व्यापार हैं॥६

अथाध्यात्मम् मन और बुद्धि के संस्कार से, रक्षः, अज्ञान, प्रत्युष्टम्, दग्ध हुआ, अरातयः, कामादि शत्रु प्रत्युष्टाः, दग्ध हुए, रक्षः, बुद्धि आदि में भरा हुआ मोह रूप राक्षस, निष्टप्तं, सम्पूर्ण सन्तप्त हुआ, अरातयः, ज्ञान यज्ञ के प्रति बन्धक क्रोध आदि, निष्टप्ताः, निःशेष संतप्त हुए, उरु, विस्तीर्ण, अन्तरिक्षं, मानस कमल को (श० १४।४।३।११।), अन्वेमि, अनुसरण करके जाता हूं॥ यहां दो प्रश्न हैं कि योग सिद्धि से पूर्व क्या प्रयत्न है १ योग सिद्धि में क्या अवस्था है॥२ उत्तर योग यज्ञ का विस्तार देनेवाले जो देवता (इन्द्रियां) हैं उन्हों ने असुर राक्षसों (अज्ञान कामादि) के आसंग (कर्तृत्वाभिमान) से बहुत भय किया उस कारण विघ्न करने से नाशक इस असुर समूह को नष्ट किया इसी कारण अध्वर्य और योगी जन भी राक्षसों को यज्ञ मुख से ही नष्ट करते हैं (श० १।१।२।३) दूसरा उत्तर- जो इस प्रकार जानता है कि मैं ब्रह्म हूं वह यह सब होता है उस के देवता पृथक् नहीं हैं और वे देवता इस की अभूति (सर्वात्मक ब्रह्म भावन होने) के लिये समर्थ नहीं होते हैं क्योंकि वह योगी इन्हों का आत्मा ही होता है १४।४।२।२२।- अथाधिदैवम्॥

सातवीं कण्डिका में दो मंत्र हैं- अग्नि होत्र हवणि और शूर्प के तपाने से राक्षसों के जलाने का मंत्र का० २।३।११। अन्तरिक्ष में चलने का मंत्र का २।३।१२। ओं प्रत्युष्टं रक्ष इति प्र० ऋ० आसुरी बृहती छन्दो रक्षो देवता १ उर्वन्तरिक्ष मिति प्र० ऋ० प्रा० गायत्री छन्दो ब्रह्म रक्षो घ्नो देवता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ मंत्रार्थः अग्नि होत्र हवणि और भूर्प के तपाने से इनमें स्थित रक्षः, राक्षसजाति प्रत्युष्ट ७ दग्ध हुई अरातयः यज्ञ में विघ्न करने वाले शत्रु प्रत्युष्टाः दग्ध हुए और भूर्प आदि में छिपे हुए रक्षः ब्रह्म राक्षस निष्टप्त ७, निःशेष संतप्त हुए अरातयः यज्ञ सिद्धि में विघ्न कारक शत्रु निष्टप्ताः निःशेष सन्तप्त हुए उरु, विस्तीर्ण अन्तरिक्षं अवकाश को अन्वेमि, प्राप्त करता हूं ॥ ७ ॥ अथाध्यात्मम् ॥ हे प्राणाग्नि (श० १०.२.६.१८) तुम धूः हिंसक असि हो धूर्वन्तं, मारने वाले शत्रु वाह्य वृत्ति को धूर्व, मारो यः जो काम अस्मान्, हम योगीजनों को धूर्वति, मारता है अर्थात् समाधि में विघ्न करता है तं, उसको धूर्व, मार वयं, हम यं, जिस अज्ञान के धूर्वामः, मारने को उद्यत हुए तं, उसको धूर्व, नाश करो - हे देह रूप शकट तुम देवानां इन्द्रियों के श० १२.९.१.१४ + १६ वह्नितम ७ अतिशय हवि के प्रापक सस्नितमं अतिशय शुद्ध प्रप्रितमं हवि से अतिशय पूरित जुष्टतमं, इन्द्रियों के अतिशय प्रिय देवहूतमं, इन्द्रियों के अतिशय आह्वान करने वाले असि, हो ॥ ८ अथाधिदेवम् ॥ शकट में स्थित अग्नि के अतिक्रमण का अपराध दूर करने को शकट धुर के स्पर्श का मंत्र का० २.३.१३ ईषाग्र का भूमि स्पर्श न होने के लिये उपस्तम्भन के स्पर्श का मंत्र का० २.३.१४ ओं धूरसीति प्र० ऋ० यजुषी धूर्देवता १ ओं देवानामित्यारभ्य ह्यार्षीदित्यन्तस्य प्र० ऋ० यजुषी धूर्देवता ॥ २ मंत्रार्थः — हे शकट में स्थित अग्नि तुम धूः हिंसक, असि, हो, धूर्वन्तं, मारने वाले पाप को, धूर्व, विनाश करो, यः, जो, राक्षसजातिः अस्मान्, हम अध्वर्यु यजमान आदि को धूर्वति, यज्ञ विघ्न से मारने को उद्योगी हुआ, तं, उसको, धूर्व, मारो वयं, यज्ञ का अनुष्ठान करने वाले हम, यं, जिस क्रोध आदि रूप बैरी के, धूर्वामः, मारने को उद्यत हुए, तं, उसको, धूर्व, मारो - हे श

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कटाभिमानी देवता तुम देवानां, इन्द्र आदि देवताओं के वन्हितमं, तण्डुल रूप हवि के अतिशय प्रापक सान्निनमं, अतिशय शुद्ध, पप्रितमं, हवि से अतिशय पूरित जुष्टतमं, देवताओं के अतिशय प्रिय देवहूतमं, देवताओं के अतिशय आह्वान करने वाले आसि, हो क्योंकि तण्डुल पूर्ण शकट को देख कर देवता बुलाये से शीघ्र आते हैं ॥ ८॥

अथाध्यात्मम् ॥ हे देह रूप शकट तुम अद्भुतमं, अकुटिल हविर्धानमं, इन्द्रियजीव रूप हवि के धारक पोषक आसि, हो दृंहस्व विराट रूप से वृद्धि को पाओ मा ह्वाः, टेढा मत हो, ते, तेरा, यज्ञपतिः, आत्मा, मा, ह्वा ऋषीत् समाधि में कुटिल मत हो विष्णो योगी त्वा, देह रूप शकट तुम को क्रमतां, आरोहण करो, इस में श्रुति प्रमाण है, इन देवताओं ने विष्णु रूप होकर इन लोकों को आक्रमण किया, उसी प्रकार यह यजमान विष्णु रूप होकर इन लोकों को आक्रमण करता है (श० ६।७।२।१०) वातोऽसि, प्राणो वा यज्ञ केलिये (श० १।१।२।१४) और (श० ३।१।३।२६) उरु, विस्तार वान हो रक्षः, अज्ञान, अपहतं, निरादर किया गया पञ्च, पञ्चज्ञानेंद्रियों को जोकि प्राण और अन्न रूप हैं ॥ ताण्ड्य ब्राह्मण (श० १।१५ २ श० ३।८।३।८) यच्छन्तां, निग्रह करो ॥ प्रश्न १ (श० १।१।२।१६) में पंच शब्द का अर्थ पांच अंगुली लिखा है वह कैसे है उत्तर अंग में ही लय जिन का वे विषयासक्त इन्द्रियां पंचाङ्गुली कहाती हैं दूसरा प्रश्न इन्द्रिय ज्ञान के अर्थ अति गूढ़ शब्द क्यों कहा उसके उत्तर में श्रुति प्रमाण है कि ब्रह्मज्ञान प्राप्ति के पश्चात् इन्द्र मखवान अर्थात् ज्ञान यज्ञ का अधिकारी हुआ उसको परोक्ष में मघवान कहते हैं क्योंकि देवता ब्रह्मज्ञान को परोक्ष चाहने वाले हैं ॥ ९॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाधिदैवम्, इस कण्डिका में ४ मंत्र हैं, शकट पर चढ़ने का मंत्र
का० २।३।१५। हवि के देखने का मंत्र, का० २।३।१६। तृण आदि को निकालकर हवि के स्पर्श का मंत्र, का० २।३।१७।१८ हवि ग्रहण करने का मंत्र
का० २।३।१९। ओं विष्णु स्त्वेति, प्र० ऋ० याजुषी गायत्री छन्दो हविर्देवता ॥१॥ उरुवाता येति प्र० ऋ० दैवी पंक्ति श्छन्दो हविर्देवता ॥२॥ अपहत मिति प्र० ऋ० याजुषी गायत्री छन्दो रक्षो देवता ॥३॥ यच्छन्ता मिति प्र० ऋ० दैवी पंक्ति छन्दो हविर्देवता ॥४॥ मंत्रार्थः अहुतमं, अकुटिल हविर्धानं, व्रीहि रूप हवि का धारण और पोषण करने वाला असि, है, दृंहस्व, वृद्धि को प्राप्त हो, मा, ह्वाः टेढ़ा मत हो, ते, तेरा यज्ञपतिः, यजमान, मा, ह्वा ऋषीत्, यज्ञ क्रिया में कुटिल मत हो, हे शकट, विष्णुः मेरे देह में स्थित आत्मा रूप विष्णु त्वा, तुझपर क्रमतां, आरोहण करो, हे शकट, वाताय, सब के जीवन रूप समष्टि प्राण के अर्थ उरु, विस्तीर्ण हो, वायु रूप प्राण के प्रवेश से, हवि को मंत्र द्वारा प्राण युक्त किया जाता है जिस कारण रक्षः, यज्ञ विघातक राक्षस अपहतम्, नष्ट किया गया उस कारण पञ्च, पांच अंगुली (श० १।१।२।१६) यच्छन्ताम्, हवि ग्रहण के अर्थ दृढ़ मिलालो

अथाध्यात्मम् ॥ हे इन्द्रिय समूह सवितुः प्रेरक वा द्वितीय जन्म दाता गुरु, देवस्य, देवता की प्रसवे, प्रेरणा वा आज्ञा होने पर अग्नये, ब्रह्म के अर्थ (श० ५।३।५।३२) जुष्टं, प्रिय, त्वा, तुझे अश्विनोः, प्राण उदान की (श० ४।१।५।१६ तथा श० ४।३।१।२२) बाहुभ्यां, ग्रहण शक्तियों से पूष्णो, मन की १४।४।३।१९ हस्ताभ्यां, ग्रहण शक्तियों से गृह्णामि, ग्रहण करता हूं, अग्नीषोमाभ्याम्, प्रकृति पुरुष के अर्थ १०।४।१।६ तथा ११।१।६।१९ तथा १२।२।४।५ जुष्टं, प्रिय, तुझ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को, गृह्णामि[१४], ग्रहण करता हूं (व्या०) श्रुति में अश्विनी कुमारों का अर्थ द्यावा पृथिवी लिखा है अश्विनी कुमार पुष्कर माला धारी हैं सो पृथिवी का पुष्कर अग्नि और स्वर्ग का पुष्कर सूर्य है और द्यावा पृथिवी का अर्थ श्रुति में प्राण उदान लिखा है पूषा का अर्थ सूर्य है और मन और सूर्य एक हैं ॥१०॥ अथाधिदैवम्॥

इस कण्डिका में हवि ग्रहण का मंत्र है का० २।३।२०।२२। ओं देवस्य त्वेति प्र० ऋ० प्राजापत्या बृहती छन्दः सविता देवता १ अग्नये जुष्टमिति प्र० ऋ० प्राजापत्या गायत्री छन्दो लिङ्गोक्त देवता २ अग्नीषोमाभ्यामिति प्र० ऋ० याजुषी पङ्क्तिश्छन्दो लिङ्गोक्त देवता ॥३॥

अथ मंत्रार्थः – हे हवि, सवितुः[१], प्रेरक, देवस्य[२], परमेश्वर की, प्रसवे[३], प्रेरणा होने पर, अग्नये[४], अग्नि के अर्थ, जुष्टं[५], प्रिय तुझ को, अश्विनोः[६], देवताओं के अध्वर्यु अश्विनी कुमार के भाव को प्राप्त अपनी, बाहुभ्यां[७], भुजाओं से, पूष्णः[८], देवताओं का भाग समीप धारण करने वाले पूषा देवता के भाव को प्राप्त अपने, हस्ताभ्याम्[९], हाथों से, गृह्णामि[१०], ग्रहण करता हूं तथा, अग्नीषोमाभ्यां[११], अग्नि सोम देवताओं के अर्थ, जुष्टं[१२], प्रिय तुम को गृह्णामि[१३], ग्रहण करता हूं। अभिप्राय यह कि देवताओं का नाम लेकर हवि का ग्रहण उचित है। और श्रुति के अनुसार देवताओं के सत्य रूप होने से उन की स्मृति के साथ हवि का ग्रहण फल पर्यवसायित्व से सत्यस फल और निर्विघ्न होता है॥ १०॥

गुरू के लक्षण आदि-- माता पिता से शुद्ध, शुद्ध चित्त, जितेन्द्रिय, सब आगमों के तत्व का ज्ञाता, सब शास्त्रों के अर्थ और सिद्धान्त का जानने वाला १ दूसरे के उपकार में निरन्तर प्रीति मान, जप पूजा आदि में तत्पर, सफल वचन वाला, शान्त, वेद और वेदों के अंग का पार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गामी, योग मार्ग का विचारने वाला देवता का प्रिय २ वेदों का पार गामी आचार्य उस शिष्य के जिस जन्म को शास्त्र विधि से गायत्री उपदेश द्वारा उत्पादन करता है वह सत्य है वह अजर अमर है ३ वहां इस का जो वेद सम्बंधी जन्म मौञ्जी बन्धन से चिन्हित है उस में इस की माता गायत्री और पिता गुरु कहाता है॥ ४॥

अथाध्यात्मम्

हे पुण्य पाप रूप हविशेष (भूताय)[१] मित्र शत्रु रूप प्राणियों वा देहाभिमानियों के भोग के लिये (त्वो)[२] तुझे शेष छोड़ता हूं (ने)[३] नकि (अरातये)[४] पुनर्जन्म भय से अदान के लिये- में (स्वः)[५] ज्ञान यज्ञ को (श० १।१२।२३) वा भ्रकुटि अथवा गगन मण्डल को (श० २।१।४।११)[६] (अभि विख्येषं) विख्यात करूं वा देखूं (पृथिव्यां)[७] देह में वर्त्तमान (दुर्य्याः)[८] मानस आदि कमल रूप ग्रह (दृढं हन्तां)[९] दृढ हो जो, में (उरु)[१०] विस्तीर्ण (अंतरिक्षं)[११] मानस कमल को (श० १४।४।३।११) (अन्वोमि)[१२] जाता हूं- हे इंद्रिय समूह (पृथिव्या)[१३] मानस कमल के (नाभौ)[१४] मध्य में जो कि अभय है (श० १।१।२।२३) (अदित्या)[१५] जीव रूप परा प्रकृति के जो कि सब की योनि है और जिस से यह सब प्रजा उत्पन्न हुए (श० ४।१।२।९) और जिस का प्रमाण भगवद्गीता में भी है (उपस्थे)[१६] गोद में (त्वा)[१७] तुझ को (सादयामि)[१८] स्थापन करता हूं (अग्ने)[१९] हे आत्मा रूप अग्नि (श० ६।७।१।२०) (हव्यं)[२०] इन्द्रिय समूह रूप हवि को (रक्ष)[२१] रक्षा कर॥ ११॥

अथाधिदैवम्॥ इस कण्डिका में पांच मंत्र हैं व्रीहि शेष के विचार का मंत्र का० २।३।२३॥ पूर्वाभि मुख होकर यज्ञ भूमि के देखने का मंत्र (का० २।३।२४) शकट से उतरने का मंत्र (का० २।३।२५) अन्तरिक्ष में चलने का मंत्र (का० २।३।२६) हवि के रखने का मंत्र (का० २।३।२७) ओं भूताय त्वेति प्र० ऋ० प्राजापत्या गायत्री छन्दो हविर्देवता १ स्वरभी-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ति प्र० ऋ० यानुषी गायत्री छन्दः सूर्य्योदेवता २ दृंहन्ता मिति प्र० ऋ० प्रा
जा पत्या गायत्री छन्दो गृहदेवता ३ उर्वन्तरिक्ष मिति प्र० ऋ० उष्णिक् छन्दः
शकटोदेवता ४ पृथिव्यास्त्वेति प्र० ऋ० साम्नी पङ्क्तिश्छन्दो हविर्देवता ५-
मंत्रार्थः—हे शकट में स्थित व्रीहि शेष (त्वा) तुझ को (भूतये) ब्राह्मण
रूप व्यष्टि अग्नि की तृप्ति के लिये शेष छोड़ता हूं (ने) नाकि (अरातये) अ
दान के लिये, में (त्वः) यज्ञ को (अभिविख्येयं) देखूं (पृथिव्यां) पृथवी
पर (दुर्य्याः) गृह स्थान (दृंहन्तां) दृढ़ होंसंस्कृत हवि लेकर उतरते ब्रह्म भा
व को प्राप्त अध्वर्यु के भार से गृह क्षोभ का संभव है वह इस मंत्र से निवार
ण किया जाता है (उरु) विस्तीर्ण (अन्तरिक्षं) अव काश को (अन्वेमि)
जाता हूं हे हवि (त्वा) तुझे (पृथिव्या) पृथिवी के (नाभौ) मध्य में (आदित्या
भूम्यधिष्ठात देवता के (उपस्थे) गोद में (सादयामि) स्थापन करता हूं
(अग्ने) हे अग्नि देवता (हव्यं) हवि को (रक्षे) रक्षा करो॥

अथाध्यात्मम्

हे प्राण उदान रूप वा हे प्राण, उदान व्यान रूप (पवित्रे) शोधक
तुम (वैष्णव्यौ) ब्रह्म यज्ञ सम्बंधी (श० १।१।३।१) (स्थः) हो हे इन्द्रिय समू
ह (सवितुः) गुरु की (प्रसवे) प्रेरणा होने पर (वः) तुम को (अच्छिद्रेण)
छिद्र हीन (पवित्रेण) प्राण रूप पवित्र से (श० १।८।१।४४ और (श० ३।१
३।२०) (सूर्यस्य) मानस सूर्य की (रश्मिभिः) किरणों से (उत्पुनामि) अ
तिशय शुद्ध करता हूं (हे देवीः) प्रकाशमान (अग्ने गुवः) श्रेष्ठ ब्रह्म में गमण
शील (अग्ने युवः) ब्रह्म में वर्त्तमान वा सूर्य्याग्नि को पान करने वाले (आपः)
ज्योति रस अमृत ब्रह्म रूप जल (अद्य) अब तुम (इमं) इस (यज्ञं) ज्ञान
यज्ञ को (अग्ने) श्रेष्ठ ब्रह्म में (नयत) प्राप्त करो (सुधातुं) देह आदि के धार
ण करने वाले (यज्ञपतिं) ज्ञानयज्ञ के रक्षक (देवयुवं) परमात्मा के चाहने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाले अथवा आप को ब्रह्म में युक्त करने वाले (यज्ञपतिं) आत्मा को (श० दी
५।३।१६) (अग्ने) ब्रह्म में प्राप्त करो ॥ १२॥ अथाधिदैवम् ॥ इस क
ण्डिका में ३ मंत्र हैं, पवित्री छेदन का मंत्र, (का० २।३।३२) अति शय ज
ल के पवित्र करने का मंत्र (का० २।३।३३) अति शय पवित्र जल से पूर्ण
अग्नि होत्र हवणी के ऊपर चलाने का मंत्र (का० २।३।३५) उं पवित्रे इति
प्र० ऋ० देवी वृहती छन्दो लिङ्गोक्त देवता, १, सवि तुर्व इति प्र० ऋ० प्राजा
पत्या पंक्ति श्छन्द आपो देवता, २, देवी राप इत्यारभ्य वृत्रतूर्य इत्यन्त-
स्य प्र० ऋ० यजुषीउक्त देवता, ३, मन्त्रार्थः ॥ हे कुशद्व
य वा कुशात्रिय रूप (पवित्रे) शोधक तुम (वैष्णव्यौ) यज्ञ सम्बंधी (स्थः)
हो हे जल (सवितुः) प्रेरक परमेश्वर की (श० १।१।३।६।५) (प्रसवे) प्रेर
णा होने पर (वः) तुम को (अच्छिद्रेण) छिद्र हीन (पवित्रेण) वायु रूप
पवित्र से (श० १।१।३।६) तथा (सूर्यस्य) सूर्य की (रश्मिभिः) शुद्ध क
रने वाली किरणों से (उत्पुनामि) अति शय पवित्र करता हूं (श० १।१।३।६)
(हे देवीः) प्रकाश मान (अग्ने गुवः) समुद्र में गमण शील (श० १।१।३।७)
(अग्ने पुवः) प्रथम सोम रस का पान करने वाले (श० १।१।३।७) (आपः)
जलो (अद्य) अब तुम (इमं) इस (यज्ञे) हवियज्ञ को (अग्ने) यज्ञ पुरु
ष में (नयत) प्राप्त करो (सुधातु) देह आदि के धारण करने वाले (यज्ञप
ति) यज्ञ के पालन करने वाले (देवयुवं) ईश्वर के चाहने वाले (यज्ञपति)
यज मान को (अग्ने) ईश्वर में प्राप्त करो ॥ १२॥ अथाध्यात्मम् ॥
हे पूर्व मंत्र काथित जलो (इन्द्रः) यज मान ने (श० ५।२।५।३) (वृत्रतूर्ये)
पाप वध के लिये (श० ११।१।५।७) (युष्माः) तुम को (अवृणीत) प्रा
र्थना किया (यूयं) तुम भी (वृत्रतूर्ये) पाप वध के निमित्त (इन्द्रम्)
यज मान को (वृणीध्वम्) चाहो, हे जल तुम ब्रह्म ज्योति रूप होने से

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(प्रोक्षताः) स्वयं प्रोक्षित (स्थ) हो हे इन्द्रिय समूह (अग्नये) ब्रह्म के अर्थ (जुष्टं) प्रिय (त्वा) तुझ को (प्रोक्षामि) प्रोक्षण करता हूं (अग्नीषोमाभ्याम्) प्रकृति पुरुष के अर्थ (जुष्टम्) प्रिय (त्वा) तुझ को (प्रोक्षामि) प्रोक्षण करता हूं हे इन्द्रियालय रूप यज्ञ पात्र तुम दैव्याय) इन्द्रिय सम्बंधी (कर्म्मणे) समाधि आदि में (देवयज्यायै) योगेन्द्र के ज्ञान यज्ञार्थ (शुन्धध्वम्) शुद्ध होजाओ (अशुद्धाः) काम क्रोध आदि ने (वः) तुम्हारे (यत्) जिस अङ्ग को (पराजघ्नुः) पीडित किया (तत्) उस (इदं) इस (वः) तुम्हारे अङ्ग को (शुन्धामि) प्रोक्षण से शुद्ध करता हूं ॥१३॥ **अथाधिदैवम्** ॥ इस कंडिका में ४ मंत्र हैं, जलों के प्रोक्षण करने का मंत्र (का०२।३।३९) देवोच्चारण सहित हवि के प्रोक्षण का मंत्र (का०२।३।३७।३८) यज्ञ पात्रों के प्रोक्षण का मंत्र (का०२।३।३९) ओं प्रोक्षिता स्थेति प्रजा०ऋषिर्दैवी बृहती छन्द आपो देवता १ अग्नये त्वेति प्र०ऋ० याजुषी बृहती छन्दो लिङ्गोक्त देवता २ अग्नीषोमाभ्यामिति प्रा०ऋ० याजुषी त्रिष्टुप छन्दो लिङ्गोक्त देवता ३ दैव्याय येति प्र० ऋ० यजुषी प्रात्र देवता ॥ ४ ॥ **मन्त्रार्थः** ॥ हे जलो (इन्द्रः) इन्द्र देवता ने (वृत्रतूर्ये) वृत्रासुर वध के निमित्त (युष्मान्) तुमको (अवृणीत) सहायता के लिये चाहा (यूयं) तुम भी (वृत्रतूर्ये) पाप वध के निमित्त (इन्द्रं) यजमान को (वृणीध्वम्) चाहो हे जलो तुम (प्रोक्षताः) प्रोक्षण किये हुए (स्थः) हो क्योंकि असंस्कृत वस्तु दूसरे के संस्कार में समर्थ नहीं होती है हे हवि (अग्नये) अग्नि के अर्थ (जुष्टं) प्रिय (त्वा) तुझ को, प्रोक्षामि, प्रोक्षण करता हूं (अग्नीषोमाभ्याम्) अग्नि सोम देवता के लिये (जुष्टं) प्रिय (त्वा) तुझ को (प्रोक्षामि) प्रोक्षण करता हूं, हे कृष्णाजिन उलूखल आदि यज्ञ पात्र तुम (दैव्याय) ईश्वर सम्बंधी (कर्मणे) कर्म (देवयज्यायै) देव सम्बंधी याग क्रिया के लिये (शुन्धध्वम्) शुद्ध हो जाओ (अशुद्धाः) नीच जाति बढ़ई आदि ने (वः) तुम्हारे (यत्)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस अङ्ग को (पराजुघ्रुः) छीलने आदि के समय अपने हस्त स्पर्श से अपवित्र किया (तत्) उस, (इदं) इस (वः) तुम्हारे अंग को (शुन्धामि) प्रोक्षण से शुद्ध करता हूं ॥ अथाध्यात्मम् ॥ हे हृदय तुम (शर्म्म) आनंद स्वरूप (असि) हो (रक्षः) अज्ञान (अवधूतं) निरादर किया गया (अरातयः) कामादि शत्रु (अवधूताः) निरादर किये गये हे हृदय तुम (अदित्याः) परा प्रकृति रूप अखंडित ज्योति के (त्वक्) आवरण (असि) हो, (अदितिः) परा प्रकृति (त्वा) तुझ को (प्रतिवेत्तु) अपना ही जानों हे हृदय के अन्तरिक्ष (श० ७।५।१।३६) तुम (वानस्पत्यः) देह वृक्ष में प्रादुर्भूत (अद्रिः) ज्योति की बाहुल्यता से सूर्य रूप (असि) हो (पृथुबुध्नः) विष्णु को मूल रखने वाला बावड़ा अन्तरिक्ष (ग्रावः) दृढ़ (असि) है (अदित्याः) ब्रह्म की अखंड ज्योति का (त्वक्) आवरण जो हृदय है वह (त्वा) तुझ को अपना ही जानों ॥ १४॥ अथाधिदैवम् ॥ इस कंडिका में ४ मंत्र हैं, मृगचर्म ग्रहण करने का मंत्र (का० २।४।१) राक्षस आदि के दूर करने का मंत्र (का० २।४।२) मृगचर्म पर उलूखल के रखने का मंत्र (का० २।४।४ ५) ओं शर्मासीति प्रजा० ऋ० दैवी अनुष्टुप छन्दः कृष्णाजिनो देवता १ अवधूतमिति प्रजा० ऋ० आसुरी अनुष्टुप छन्दो रक्षो देवता २ अदित्या इति प्र० ऋ० उष्णिक् छन्दः कृष्णाजिनो देवता ३ अद्रिरसीति प्र० ऋ० याजुषी अनुष्टुप छन्द उलूखलो देवता ॥ ४॥ ग्रावासीति प्र० ऋ० आसुरी गायत्री छन्द उष्णिक् देवता ॥ ५॥ मन्त्रार्थः हे कृष्णाजिन तू उलूखल के धारण के लिये (शर्म्म) सुख का कारण, (असि) है (रक्षः) कृष्णाजिन में छिपा हुआ राक्षस (अवधूतं) कृष्णाजिन के कंपन से भूमि में गिराया (अरातयः) यज्ञ में विघ्न करने वाले शत्रु (अवधूताः) तिरस्कार किये हे कृष्णाजिन तू (अदित्याः) भूमि देवता का (त्वक्) त्वचा रूप (असि) है

मृगचर्म को बिछाने का मंत्र (का० २।४।३)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अदितिः) भूमिदेवता (त्वा) तुझको (प्रति वेत्तु) ग्रहण करके अपना ही जाने अर्थात् अपनी त्वचा जान कर चैतन्य करै, हे उलूखल तू यद्यपि, वानस्पत्यः लकड़ी का है तौभी दृढ़ होने से (अद्रिः) पाषाण तुल्य (असि) है (प्रथुबुध्नः) स्थूल जड़ वाला है क्योंकि मुसल घात के उपद्रव से चलित नहीं होता (ग्रावः) दृढ़ता से पाषाण तुल्य (असि) है (अदित्याः) भूमि देवता की (त्वक्) कृष्णाजिन रूप त्वचा (त्वा) तुझे (प्रति वेत्तु) अपना करि के जाने अर्थात् अपने अङ्ग के अभिमान से चैतन्य करै॥१४

अथाध्यात्मम्॥ हे जीवात्मा तुम (अग्नेयः) ब्रह्म के (श० ५।३।५।३२) (तनूः) शरीर क्योंकि ब्रह्म में युक्त जीव ब्रह्म ही होता है (वाचो विसर्ज्जनं) तत्वमसि, इस महा वाक्य के विसर्जन का कारण (असि) हो (देववीतये) परमात्मा की प्राप्ति के अर्थ (त्वा) तुझको (गृह्णामि) समाधि स्थ करता हूं, हे प्राण तुम (वानस्पत्यः) देहवृक्ष पर स्थित भी-

(ब्रह्मद्ग्रावा) ब्रह्मांड का प्राण (श० १४।२।२।३३) (असि) हो (सः) वह (त्वम्) तुम (ददे) इस (हविः) जीव को जोकि अमर नाम देवताओं का अमृत रूप हवि है (श० १।२।१।२०) (देवेभ्यः) ब्रह्मनरनारायण के अर्थ (शमीष्व) शान्त करो (शमि) हे शान्तांतःकरण (सुशमीष्व) भीतरस्थित मलिनता के दूर करने से अच्छा शान्त करो (हविष्कृत्) हे वाक् (श० १।१।४।११) (एहि) यहां आओ (हविष्कृत्) हे महा वाक् (एहि) आओ (हविष्कृत्) हे अनाहत शब्द (एहि) प्राप्त हो॥१५॥

अथाधिदैवम्॥ इस कंडिका में ४ मंत्र हैं (ओखली में हवि डालने का मंत्र (का० २।४।६) मूसल लेने का मंत्र (का० २।४।११) मुसल धारण का मंत्र (का० २।४।१२) हविष्कृत् के बुलाने का मंत्र (का० २।४।१३) ओं अग्नेस्तनूरिति प्र० ऋ० आर्षी उष्णिक् छन्दो हविर्देवता १ ब्रह्मद्ग्रा-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वासीति प्र० ऋ० आसुरीजगती छन्दो मुसलो देवता २ सद्दामिति प्र० ऋ० यजुषीमुसलो देवता ३ हविष्कृदेहीति प्र० ऋ० याजुषी पंक्तिश्छन्दः आधिदैवतं वागाधियज्ञं पत्नी देवता ॥४॥ अथ मंत्रार्थः हे हवि तुम (अग्नेः) आहवनीय अग्नि के (तनूः) शरीर हो क्योंकि उस में डाला हुआ हवि अग्निरूप होजाता है (वाचो विसर्ज्जनं) जल के प्रणयन समय जो वाणी नियमित हुई उस का विसर्ज्जन उलूखल में हवि डालने के समय होता है तिस कारण हे हवि तू वाचो विसर्जनु नाम (असि) है (देववीतये) ईश्वर की प्राप्ति के लिये (त्वा) तुझे (गृह्णामि) उलूखल में डालने के लिये ग्रहण करता हूं हे मुसल तू (वानस्पत्यः) लकड़ी का बना हुआ (दृढ़ह्वावा) दृढ़ तर (असि) है (सः) वह तुम (इदं) (हविः) इस व्रीहि रूप हवि को (देवेभ्यः) देवताओं के अर्थ (शमीष्व) भक्षण विरोधी भूसी के दूर करने से शान्त करो हे (शमि) शान्त रूप मुसल तुम इस हवि को (सुशमीष्व) अच्छा शान्त करो वहां शान्ति दो प्रकार की है बाहर की भुसी दूर करने से पहिली कुटाई पर होती है भीतर स्थित मलिनता को दूर करने से दूसरी शांति है वह फली करने से होती है उस दो प्रकार के संस्कार को करो यजमान पत्नी वा दूसरा जो तंडुलों को कूटता है उस को सम्बोधन करके कहते हैं (हविष्कृत्) हे हवि संस्कार करने वाले (एहि) यहां आओ (हे हविष्कृत्) (आओ) (हे हविष्कृत्) (एहि) आओ तीन बार कहे हुए अर्थ को देवता मान्ते हैं इस लिये तीन वार बुलाना कहा ॥ २५ ॥ अथाध्यात्मम् ॥ हे महावाक् तुम (कुक्कुटः) काम आदि असुर कहां २ हैं इस प्रकार उन को मारना चाहता जो सब जगह जाता है वह कुक्कुट है (मधुजिह्वः) ब्रह्म वा ब्रह्म ज्ञान भाषिणी जिह्वा रखने वाला (श० १४।५।५।१४ तथा १४।५।५।१७) (असि) है (इषे) अमृत वृष्टि को तथा (उर्ज्जे) ज्ञान रस ब्रह्म को (आवदे) तत्व म-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिमहावाक्को कहो (वयं) ज्ञानयज्ञ का अनुष्ठान करने वाले हम लोग (त्वया) तेरे द्वारा (सिद्धातं) काम आदि के समूह को तथा (सङ्घातं) अज्ञानआदि के समूह को (जेष्म) जीतें हे ब्रह्मज्ञान तुम (वर्षवृद्ध) योगी द्वारा वृद्धि युक्त (असि) हो, हे जीव रूप हवि (वर्षवृद्धं) ब्रह्मज्ञान (त्वा) तुझ को (प्रति वेत्तु) अपना जानों (रक्षः) अज्ञान (परापूत) निरादर किया गया (अरातयः) काम आदि शत्रु (परापूताः) निरादर किये गये (रक्षः) अज्ञान (अपहतं) नाश किया गया हे इन्द्रिय समूह (वायुः) प्राण (७।१२।७) (वः) तुम को (विविनक्तु) अपने अंग के अभिमान द्वारा इन्द्रियालयों से पृथक् करे (हिरण्यपाणिः) ज्योति रूप हाथ रखने वाला (देवः) ज्योति रूप (सविता) मानस सूर्य (अच्छिद्रेण) प्राण रूप (पाणिना) हाथ से (वः) तुम को (प्रति गृभ्णातु) स्वीकार करे॥ १६॥ अथाधिदैवम्।

इस कंडिका में सात मंत्र हैं- हवि के कूटने का मंत्र (का० २।४।१५) भूर्षे के लेने का मंत्र (का० २।४।१६) हवि के उठाने का मंत्र (का० २।४।१७) भुसी को नीचे डालने का मंत्र (का० २।४।१८) मृगचर्म से भुसी के हटाने का मंत्र (का० २।४।१९) भुसी मिले और भुसी रहित हवि के पृथक् करने का मंत्र (का० २।४।२०) पात्री में डाल कर अभिमंत्रण का मंत्र (का० २।४।२१) ओं कुक्कुटो सीति प्र० ऋ० आर्षी त्रिष्टुप् छन्दो वाग्देवता १ वर्षवृद्धमसीति प्र० ऋ० याजुषी गायत्री छन्दः भूर्षे देवता २ प्रति त्वेति प्र० ऋ० याजुषी बृहती छन्दो हविर्देवता ३ परापूरामिति प्र० ऋ० आसुरी उष्णिक छन्दो रक्षो देवता ४ अपहतमिति प्र० ऋ० याजुषी गायत्री छन्दो रक्षो देवता ५ वायुर्वइति० प्र० ऋ० याजुषी उष्णिक् छन्दः तण्डुलो देवता ६ देवो वइति प्र० ऋ० साम्नी त्रिष्टुप् छन्दस्तण्डुलो देवता॥ ७॥

अथ मन्त्रार्थः॥ हे शम्या रूप यज्ञायुध के अधिष्ठाता देवता तुम (कुक्कुटः)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(कुक्कुटः)[१] (मधुजिह्वः)[२] (असि)[३] (दृषं)[४] (ऊर्ज्जम्)[५] (आवृद)[६] (वयं)[७] (त्वया)[८] (सङ्घातथं)[९] (सङ्घातं)[१०] (जेष्म)[११] (वर्षवृद्धं)[१२] (असि)[१३] (वर्षवृद्धं)[१४] (त्वा)[१५] (प्रति वेत्तु)[१६] (रक्षः)[१७] (परापूतं)[१८] (अरातयः)[१९] (परापूता)[२०] (रक्षः)[२१] (अपहतथं)[२२] (वायुः)[२३] (वः)[२४] (विविनक्तु)[२५] (हिरण्यपाणिः)[२६] (सविता)[२७] (देवः)[२८] (अच्छिद्रेण)[२९] (पाणिना)[३०] (वः)[३१] (प्रति गृभ्णातु)[३२] ॥१६॥

पदार्थः — हे शम्या रूप यन्त्रा युध के अधिष्ठाता देवता तुम १ असुरों के मारने के इच्छा मान सर्वत्र घूमने वाले २ मधुर भाषिणी जिह्वा वाले ३ हो ४ अन्न को ५ और रस को ६ शब्द द्वारा प्राप्त करा ओ अर्थात् जैसे अन्न और रस प्राप्त होवे वैसाही शब्द करो ७ यज्ञ करने वाले हम लोग ८ तेरे द्वारा ९, १० प्रत्येक असुर समूह को ११ जीतें हे शूर्प (सूप) तू १२ वर्षा के जल से वृद्धि पाने वाला १३ है, क्योंकि वर्षा से वृद्धि पाने वाली वेणु शलाकाओं से शूर्प बनाया जाता है हे हवि वह १४ शूर्प १५ तुझ को १६ अपना कर के जानों, क्योंकि जल वर्षा से वृद्धि पाने के कारण चांवल और शूर्प का भ्रातृत्व है १७ राक्षस १८ निरादर किया गया अर्थात् शूर्प से भुसी दूर करने पर उनमें छिपा हुआ राक्षस भुसी के साथ भूमि पर गिराया गया १९ हवि के प्रतिकूल आलस्य आदि शत्रु २० निरादर किये गये २१ राक्षस २२ दूर लेजा कर मारा भूमि पर पटका-उस भुसी को दूर पटक देवै, हे चांवलो २३ वायु देवता २४ तुम को २५ सूक्ष्म कणों के द्वारा पृथक करे, हे तण्डुलो २६ ज्योति रूप हाथ रखने वाला २७ सूर्य मध्य वर्त्तमान परमात्मा २८ ज्योति स्वरूप २९ अपने वायु रूप ३० हाथ से ३१ तुमको ३२ स्वीकार करे- पात्री में डालने के समय राक्षस का भय मत हो, इस लिये सविता से हवि का ग्रहण होना चाहते हैं॥ १६॥

+ पत्थर का मूसल जिस से यज्ञ में चांवल कूटते हैं॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्ने। (धृष्टिः) (असि) (मादम्) (आमादम्) (अपाजहि) (अपजहि) (क्रव्यादꣳ) (निःषेध) (देवयजं) (अग्निम्) (आवह) (ध्रुवम्) (असि) (पृथिवीं) (दृꣳह) (ब्रह्मवनि) (क्षत्रवनि) (सजातवनि) (त्वा) (भ्रातृव्यस्य) (वधाय) (उपदधामि) १७

अथाध्यात्मम्—१ हे महा वाक् रूप अग्नि तुम २ धर्म्म वेद वाक्य और अष्ट अनाहत् शब्द के लिये ईप्सित ३ हो ४ माया रचित हवि के भक्षण करने वाले अग्नि को जोकि द्वैत यज्ञ सम्बंधी है ५ परित्याग करो क्योंकि उस में हिंसा का संभव है ६ शव दाह में मांस भक्षण करने वाले चिताग्नि को ७ निश्शेष दूर करो क्योंकि उस अग्नि के पुनर्जन्म साधक होने से परम हंसों की देह का अग्नि संस्कार नहीं है ८ आत्म यज्ञ के योग्य ९ ब्रह्माग्नि को १० चारों ओर से प्राप्त करा ओ हे ज्ञान रूप अग्नि तुम ११ अचल १२ हो १३ मानस कमल को १४ दृढ़ करो १५ मन से स्वीकार योग्य १६ प्राण से स्वीकार योग्य १७ जीवात्मा से स्वीकार योग्य १८ तुझ को १९ काम वा पाप के २० बध के लिये २१ अपरोक्ष करता हूं॥ १७॥

आथाधिदैवम्— इस कंडिका में चार मंत्र हैं- पलाश की लकड़ी से हाथ के सदृश बना हुआ जो यज्ञ पात्र है उस के ग्रहण का मंत्र १ गार्हपत्य नाम अग्नि से उपवेष द्वारा अङ्गारों के अलग करने का मंत्र २ एक अंगारे के लेने का मंत्र ३ अंगारे को लाकर कपाल से ढकने का मंत्र ४

(धृष्टिः) (असि) (अग्ने) शेषं पूर्ववत्— पदार्थः—हे उपवेश अधिष्ठाता देवता तुम १ तीव्र अंगारों के इधर उधर हटाने में समर्थ होने से प्रगल्भ २ हो ३ हे गार्हपत्य नाम अग्नि तुम ४ अपक्व (कच्चा) भक्षक लौकिक अग्नि के रूप को ५ त्याग करो ६ चिताग्नि रूप को भी ७ त्याग करो ८ देवताओं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के यज्ञ योग्य ९ अग्नि रूप को १० हमारे समीप प्राप्त करो हे कपाल (मिट्टी का कूंडा) तुम ११ स्थिर १२ हो क्योंकि अंगार के ऊपर वर्त्तमान भी इधर उधर नहीं गिरते हो १३ भूमि रूप अपने शरीर को १४ दृढ़ करो और १५ हवि सिद्धि के लिये ब्राह्मण से स्वीकार योग्य १६ क्षत्री से स्वीकार योग्य १७ यजमान के ज्ञातिजनों से स्वीकार योग्य १८ तुझ को १९ शत्रु असुर वा पाप की २० हिंसा के लिये २१ अंगारे पर स्थापन करता हूं॥ १७॥

(ब्रह्माग्ने)[१] (गृभ्णीष्व)[२] (धरुणं)[३] (असि)[४] (अन्तरिक्षं)[५] (दृंह)[६] (ब्रह्मवनि)[७] (क्षत्रवनि)[८] (सजातवनि)[९] (त्वा)[१०] (भ्रातृव्यस्य)[११] (वधाय)[१२] (उपदधामि)[१३] (धर्त्रम्)[१४] (असि)[१५] (दिवं)[१६] (दृंह)[१७] (ब्रह्मवनि)[१८] (क्षत्रवनि)[१९] (सजातवनि)[२०] (त्वा)[२१] (भ्रातृव्यस्य)[२२] (वधाय)[२३] (उपदधामि)[२४] (विष्वाभ्यः)[२५] (आशाभ्यः)[२६] (त्वा)[२७] (उपदधामि)[२८] (चितः)[२९] (ऊर्द्ध्वचितः)[३०] (स्थ)[३१] (भृगूणाम्)[३२] (अङ्गिरसाम्)[३३] (तपसा)[३४] (तप्यध्वम्)[३५] १८

अथाध्यात्मम्- पदार्थः-१ हे ब्रह्माग्नि २ मोक्षदान से अनुग्रह करो हे ज्ञानाग्नि तुम ३ जीव रूप हवि के धारण करने वाले ४ हो ५ हार्दाकाश को ६ दृढ़ करो ७ ब्रह्मर्षियों से स्वीकार योग्य ८ राजर्षियों से स्वीकार योग्य ९ परम हंसों से स्वीकार योग्य १० तुझ को ११ अज्ञान के १२ नाश के लिये १३ अपरोक्ष करता हूं हे ज्ञानाग्नि तुम १४ ईश के धारण करने वाले १५ हो १६ भृकुटी को १७ दृढ़ करो १८ + समष्टि मन से स्वीकार योग्य १९ समष्टि प्राण से स्वीकार योग्य २० नर से स्वीकार योग्य २१ तुझ को २२ संसार भ्रांति के २३ नाशार्थ २४ अपरोक्ष करता हूं हे ज्ञानाग्नि २५ सब २६ इन्द्रियों के अर्थ अर्थात् उन की दृढ़ता के लिये २७ तुझ को २८ अपरोक्ष करता हूं २९ हे चैतन्य अंतः कर्णो तुम ३०

+ जीवों का मन व्यष्टि और विराट पुरुषों का मन समष्टि कहाता है

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्म द्वारा चैतन्य ३१ हो ३२ ब्रह्माग्नि के ज्वाला रूप नर नारायण जीवात्मा और ३३ प्राणों के ३४ ज्ञान से ३५ योग की ईश्वरता को प्राप्त करो ॥ १८ ॥

अथाधिदैवम्— इस कंडिका में ६ मंत्र हैं, अंगार के रखने का मंत्र, १ मध्यम कपाल के पीछे दूसरे कपाल के रखने का मंत्र २ प्रथम कपाल के पूर्व भाग में तीसरे कपाल के रखने का मंत्र ३ प्रथम कपाल के दक्षिण में चौथे कपाल के रखने का मंत्र, ४ आग्नेय पुरोडाश (हवि) के आठ कपाल होने और ४ कपाल के स्थापित हो जाने से शेष चार में दो २ दक्षिण उत्तर ओर रखने चाहियें उन के स्थापण का मंत्र, ५ गार्हपत्य अग्नि के अंगारों को कपालों से ढकने का मंत्र, ६ ॥ पदार्थः— १ हे ब्रह्माग्नि २ राक्षसों का नाश करने से अनुग्रह करो हे द्वितीय कपाल के अधिष्ठाता देवता तुम ३ पुरोडाश के धारण करने वाले ४ हो ५ हवि रक्षा के लिये अपने अन्तरिक्ष को ६ दृढ़ करो ७ मन से स्वीकार योग्य ८ प्राण से स्वीकार योग्य ९ जीव से स्वीकार योग्य १० तुम को ११ अज्ञान के १२ नाश के लिये १३ अंगारे पर स्थापण करता हूं हे कपाल तू १४ धारण करने वाला १५ है १६ स्वर्ग रूप अपने आत्मा को १७ दृढ़ कर १८ ब्रह्म से स्वीकार योग्य १९ ईश से स्वीकार योग्य २० नर से स्वीकार योग्य २१ तुझ को २२ संसार के २३ मिथ्याज्ञानार्थ २४ अंगारे पर स्थापण करता हूं हे चौथे कपाल २५ सब २६ दिशाओं की भावना के लिये २७ तुझे २८ स्थापण करता हूं कपालों में लोक आदि की भावना करने से उन में विद्यमान ब्रह्मभाव को प्राप्त पुरोडाश देवताओं की तृप्ति के लिये समर्थ होता है हे कपालविशेषो तुम २९ प्रथम कपाल के समीपस्थित होने वाले ३० और पीछे स्थापित द्वितीय आदि कपालों के उपकारी ३१ हो हे कपालो तुम ३२ भार्गव ३३ और आङ्गिरस नाम देव ऋषियों के ३४ तप रूप अग्नि द्वारा ३५ तृप्ति हूजिये ॥ १८ ॥

(शर्म्म)[1] (असि)[2] (रक्षः)[3] (अवधूतं)[4] (अरातयः)[5]

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अवधूतोः)[६] (अदित्याः)[७] (त्वक्)[८] (असि)[९] (अदितिः)[१०] (त्वा)[११] (प्रति वेत्तु)[१२] (पर्वती)[१३] (धिषणा)[१४] (असि)[१५] (अदित्याः)[१६] (त्वक्)[१७] (त्वा)[१८] (प्रति वेत्तु)[१९] (र)[२०] (दिवः)[२१] (स्कम्भनी)[२२] (असि)[२३] (धिषणा)[२४] (पार्वतेयी)[२५] (असि)[२६] (पर्वती)[२७] (त्वा)[२८] (प्रति वेत्तु)[२९] ॥ १९ ॥

अथाध्यात्मम्- हे हृदय तुम, १ ब्रह्म का स्थान होने से आनंद स्वरूप २ हो ३ अज्ञान ४ निरादर किया गया ५ काम आदि शत्रु ६ निरादर किये गये हे हृदय तुम ७ परा नाम ब्रह्म शक्ति के ८ आवरण ९ हो १० परा शक्तिः ११ तुझे १२ अपना करके जानों हे परा शक्तिः तुम १३ त्रिदेव रूपधारी महानारायण की शक्ति १४ सब का आधार १५ हो १६ तेरा १७ आवरण हृदय १८, १९ तेरी स्थिति को जानों २० हे हार्दान्तरिक्ष के अधिष्ठाता देवता तुम २१ स्वर्ग की २२ स्तंभन करने वाली २३ हो हे बुद्धि तू २४ इन्द्रिय रूप हवि की धारण करने वाली २५ परा शक्ति की पुत्री २६ है २७ परा शक्ति २८ तुझे २९ अपनी करके मानो ॥ १९ ॥ अथाधिदैवम्- इस कंडिका में ६ मंत्र हैं, मृगचर्म के ग्रहण का मंत्र १ शत्रु वा राक्षसों के हटाने का मंत्र २ मृगचर्म के बिछाने का मंत्र, १, २, ३, मृगचर्म पर शिला रखने का मंत्र, ४ शिला के पिछले भाग में नीचे से शम्या रखने का मंत्र, ५ उपला अर्थात् ऊपरी पाट के ग्रहण का मंत्र; ६

पदार्थः- हे मृगचर्म के अधिष्ठाता देवता तुम १ आनंद स्वरूप २ हो ३ मृगचर्म में छिपा हुआ राक्षस ४ निरादर किया गया ५ शत्रु ६ निरादर किये गये हे मृगचर्म तुम ७ भूमि देवता के ८ त्वचा रूप ९ हो १० भूमि देवता ११ तुझको १२ अपना करके जानो हे शिलाभिमानी देवता तुम १३ पर्वत की पुत्री हो क्योंकि उस से उत्पन्न हुई १४ हवि की आधार रूप १५ हो १६ भूमि की १७ त्वचा अर्थात् मृगचर्म १८ तेरी १९ स्थिति को जानों २० हे शम्याधिष्ठाता दे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वता तुम २१ स्वर्ग लोक की २२ स्तंभन करने वाली २३ हो क्योंकि अन्तरिक्ष में ही पृथ्वी और स्वर्ग स्थित हैं हे ऊपर की शिला तुम २४ पेषण व्यापार की धारण करने वाली २५ और नीचली शिला की पुत्री २६ हो २७ माता की समान नीचली शिला २८ तुझ को २९ पुत्री भाव से जानो ॥ १९ ॥

(धान्यम्)[१] (असि)[२] (देवान्)[३] (धिनुहि)[४] (त्वा)[५] (प्राणाय)[६] (त्वा)[७] (उदानाय)[८] (त्वा)[९] (व्यानाय)[१०] (दीर्घाम्)[११] (प्रसितिम्)[१२] (अनु)[१३] (आयुषे)[१४] (त्वा)[१५] (धां)[१६] (हिरण्यपाणिः)[१७] (देवः)[१८] (सविता)[१९] (अच्छिद्रेण)[२०] (पाणिना)[२१] (वः)[२२] (प्रतिगृभ्णातु)[२३] (चक्षुषे)[२४] (त्वा)[२५] (महीनां)[२६] (पयः)[२७] (असि)[२८] ॥२०॥ अथाध्यात्मम्-

पदार्थः- हे इन्द्रिय समूह तुम १ तृप्त करने वाले २ हो ३ नर नारायण जी वनाम देवताओं को ४ तृप्त करो हे इन्द्रिय समूह ५ तुझ को ६ प्राण के लिये निग्रह करता हूं ७ तुझे ८ उदान के लिये निग्रह करता हूं ९ तुझे १० व्यान के लिये निग्रह करता हूं तथा ११ बहुत बड़े १२ कर्म बन्धन को १३ विचारकर १४ मृत्युनिवृत्ति अर्थात् मोक्ष के लिये १५ तुझे १६ हार्दाकाश में धारण करता हूं १७ ज्योति रूप हाथ रखने वाला १८ देवता १९ मन २० प्राण रूप २१ हाथ से २२ तुम को २३ ग्रहण करो तथा २४ मानस सूर्य के लिये जोकि श्रुतिप्रमाण से आकाशस्थ सूर्य के साथ एकता रखता है २५ तुझे निग्रह करता हूं हे शक्ति समूह तुम २६ इन्द्रियों की २७ प्राण शक्ति २८ हो ॥ २० ॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में ७ मंत्र हैं. शिला पर चांवल रखने का मंत्र, १ चांवल पीसने के मंत्र, २, ३, ४, मृग चर्म पर पिष्ट गिराने का मंत्र, ५ पिष्ट देखने का मंत्र, ६ पिसे हुए चांवलों में घृत डालने का मंत्र ॥ ७

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदार्थः — हे हवितुम १ देवताओं के तृप्त करने वाले २ हो इस कारण ३ ईश्वर के अंश रूप देवताओं को ४ तृप्त करो ५ तुझे ६ समष्टि प्राण के अर्थ पीसता हूं ७ तुझे ८ समष्टि उदान के अर्थ पीसता हूं ९ तुझे १० समष्टि व्यान के लिये पीसता हूं इन मंत्रों के द्वारा प्राण आदि के देने से हवि सजीव किया जाता है हे हवि ११ वहुत वड़ी १२ कर्म सन्तति वा कर्म वंधन को १३ विचार कर १४ मृत्यु निवृत्ति वासा युज्य आदि मोक्ष प्राप्ति के लिये १५ तुझ को १६ मृग चर्म पर रखता हूं १७ ज्योति रूप हाथ रखने वाला १८ देवता १९ सविता २० वायु रूप २१ हाथ से २२ तुम को २३ गिरने से रक्षा करो हे हवि २४ चक्षु आदि वाह्य इन्द्री देने के लिये २५ तुझे देखता हूं क्योंकि श्रुति प्रमाण से अवि नाशी जीव ही अवि नाशी देवताओं का हवि होता है हे आज्य तू २६ गोओं का २७ घृत २८ है ॥ २० ॥ (सवितुः)[१] (देवस्य)[२] (प्रसवे)[३] (अश्विनोः)[४] (वाहुभ्यां)[५] (पूष्णः)[६] (हस्ताभ्यांम्)[७] (त्वा)[८] (संवपामि)[९] (आपः)[१०] (ओषधीभिः)[११] (संपृच्यन्तांम्)[१२] (ओषधयः)[१३] (रसेन)[१४] (सं)[१५] (रेवतीः)[१६] (जगतीभिः)[१७] (संपृच्यन्तांम्)[१८] (मधुमतीः)[१९] (मधुमतीभिः)[२०] (संपृच्यन्तांम्)[२१] ॥ २१ ॥ अथाध्यात्मम् ॥

पदार्थः — हे इंद्रिय समूह १ गुरु २ देवता की ३ प्रेरणा होने पर ४ प्राण उदान की ५ वाहु और ६ मन के ७ हाथों से ८ तुझे ९ मन के कमल में भले प्रकार डालता हूं १० जीव रूप हवि ११ इन्द्रियों की शक्तियों के साथ १२ भले प्रकार मिल कर एक हो जाओ और १३ इन्द्रियों की शक्ति १४ आत्मा के साथ १५ भले प्रकार योग को पाओ और १६ वाणी १७ इन्द्रियों की शक्ति के साथ १८ भले प्रकार मिल कर एक हो जाओ १९ अनुशासन विद्या इतिहास पुराण आदि ज्ञान वाली जो इन्द्रियों की शक्ति हैं वे २० ऋग् वेद

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की श्रुति रूप वाणी के साथ २१ भले प्रकार संगति को पाओ ॥२१॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में ३ मंत्र हैं, पवित्रायुक्त पात्री में पिसे चांवलों के डालने का मंत्र १ अग्नीध्र से उप सर्जनी जल का लाना और अध्वर्यु से पवित्रा सहित ग्रहण करना तिसके मंत्र २ ३ पदार्थः हे पिसे चांवल सब के प्रेरक परमात्मा २ देवता की ३ प्रेरणा होने पर ४ अश्विनी कुमार की भुजा के भाव को प्राप्त ५ अपनी भुजाओं से ६ और पूषा देवता के हस्त भाव को प्राप्त ७ अपने हाथों से ८ तुझ को पात्री में भले प्रकार डालता हूं १० पिष्ट में डालने योग्य उप सर्जनी नाम जो जल है वह ११ पिसी औषधी के साथ १२ भले प्रकार मिल जाओ १३ पूर्वोक्त औषधी १४ उप सर्जनी रूप जल के साथ १५ भले प्रकार एकत्व को पाओ १६ पूर्वोक्त जल १७ पिष्ट औषधी के साथ १८ भले प्रकार मिलाप को पाओ १९ मधुरता से युक्त जल २० माधुर्यता से युक्त औषधियों के साथ २१ भले प्रकार एकत्व को पाओ ॥२१॥

(त्वा)[१] (जनयत्यै)[२] (संयौमि)[३] (इदं)[४] (अग्नेः)[५] (इदम्)[६] (अग्नीषोमयोः)[७] (इषे)[८] (त्वा)[९] (घर्म्मः)[१०] (विश्वायुः)[११] (उरुप्रथाः)[१२] (असि)[१३] (उरुप्रथस्व)[१४] (ते)[१५] (यज्ञपतिः)[१६] (उरुप्रथताम्)[१७] (अग्निः)[१८] (ते)[१९] (त्वचं)[२०] (मा)[२१] (हिंसीत्)[२२] (देवः)[२३] (सविता)[२४] (त्वा)[२५] (वर्षिष्ठे)[२६] (नाके)[२७] (अधि अपयतु)[२८] ॥२२॥ अथाध्यात्मम् ॥ पदार्थः- हे इन्द्रिय सहजीवात्म १ तुम को २ ज्ञान वा मोक्ष की प्राप्ति के लिये ३ भले प्रकार मिलाता हूं ४ यह भाग ५ ब्रह्माग्नि का है ६ यह भाग ७ प्रकृति पुरुष का है हे इन्द्रिय शक्ति समूह ८ अमृत वर्षा के लिये ९ तुझ को मानस सूर्य में स्थापण करता हूं हे जीवात्म १० मानस सूर्य तुम ११ सब की आयु १२ देह व्यापन शील १३ हो १४ ब्रह्माण्ड भाव को प्राप्त करो १५ तेरा १६ आत्मा १७

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्म भाव को प्राप्त करो हे जीवात्म १८ ब्रह्माग्नि १९ तेरी २० आवरण कारण देह को २१,२२ प्रारब्ध भोग की समाप्ति तक नाश मत करो, हे जीवात्म २३,२४ इन्द्रियों का स्वामी मन २५ तुझ को २६ अत्यंत वृद्ध २७, दुःख रहित आनंद स्वरूप ब्रह्माग्नि में २८ पक्व होम योग्य करो ॥२२॥ अथाधिदेवम्- इस कंडिका में ८ मंत्र हैं, जल और पिष्ट मिलाने का मंत्र १ दो पिंड बना कर उनके स्पर्श करने के मंत्र, २,३ घृत ताने का मंत्र ४ पुरोडाश के चढ़ाने का मंत्र ५ पुरोडाश को विस्तार देने का मंत्र ६ जल से प्रोडाश के स्पर्श का मंत्र ७ पुरोडाश के पकाने का मंत्र ८॥

पदार्थः- हे जल पिष्ट रूप दो पदार्थ का समूह १ तुझ को २ धन पुत्र आदि कामना की सिद्धि के लिये वा चारों मोक्ष की प्राप्ति के अर्थ अथवा सर्वोपकारक वृष्टि के लिये ३ भले प्रकार मिलाता हूं ४ यह पहिला पिंड ५ अग्नि का है ६ यह दूसरा पिण्ड ७ अग्नि सोम नाम दोनों देवता का है हे आज्य ८ जल वर्षा के लिये ९ तुझे अग्नि पर तावता हूं हे पुरोडाश तुम १० यज्ञ स्वरूप हो क्योंकि उसी से उत्पन्न और उसी के अर्पण होता है ११ ब्रह्मांड की स्थिति का कारण १२ ब्रह्मांड व्यापन शील १३ हो १४ ब्रह्मांड रूप विख्यात हो १५ तेरा १६ यजमान १७ धन पुत्र पशु आदि से प्रख्यात हो वासा युज्य मुक्ति को प्राप्त करो हे पुरोडाश १८ पकाने के लिये प्रवृत्त अग्नि १९,२०, तेरे त्वचा समान ऊपरी भाग को २१,२२ अति दाह से मत जलाओ हे पुरोडाश २३ सब का प्रेरक २४ देवता २५ तुझ को २६ अत्यंत वृद्ध २७ दुःख रहित ब्रह्म प्राप्ति कारण अग्नि पर २८ चढ़ा कर पकाओ ॥२२॥ ॥ मा। भेः। मो। संवि कथाः। यज्ञः। अत मेरुः। भूयात्। यजमानस्य। यजा। अत मेरुः। त्वो। चितोय। त्वो। द्वितोय। त्वो। एक तोय ॥२२॥ अथाध्यात्मम् ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदार्थः– हे भूतात्मा तुम १,२ भय मत करो ३,४ कंपित मत हो जो ५ यजमान ६ ज्ञान यज्ञ के अनुष्ठान में ग्लानि रहित ७ होवे और ८ उस ज्ञान यज्ञ के अनुष्ठान करने वाले यजमान के ९ शमआदि अष्टांग योग भी १० योग साधन में ग्लानि रहित हों हे भूतात्मा में ११ तुझ को १२ उस पुरुष के वास्ते जोकि जीव ब्रह्म माया को नित्य मान कर निश्चय रखता है कि यह जीव बंध मोक्ष अवस्था में सदैव लक्ष्मी नारायण का दास है त्याग करता है १३ तुझ को १४ उस पुरुष के लिये जिस का ऐसा निश्चय है कि प्रकृति पुरुष नित्य हैं और जीव उन की सायुज्यता को पाता है त्याग करता हूं १५ तुझ को १६ उस पुरुष के लिये जोकि एक ब्रह्म को नित्य मानता है और कहता है कि मैं ब्रह्म हूं त्याग करता हूं अर्थात् अहंकार होने से तीनों देहाभिमानी कहाते हैं ॥२३॥

अथाधिदैवम्– इस कंडिका में ५ मंत्र हैं, पके हवि के ज्ञानार्थ उसके स्पर्श का मंत्र १ विना पके को परिपक्व होने के लिये भस्म से ढकने का मंत्र २ पात्री और अंगुलियों के धोने का जो जल है उसे आप्त पुरुषों के लिये देने के मंत्र ३,४,५ पदार्थः ॥ हे पुरोडाश तुम १,२ भय मत करो ३,४ कंपित मत हो जो मानुष में अमानुष तुम को स्पर्श करता हूं ५ यजमान ६ यज्ञ क्रिया में ग्लानि रहित ७ हो ८ यजमान के ९ पुत्र पौत्र प्रपौत्र आदि १० यज्ञ क्रिया में ग्लानि रहित होवें हे पात्री और अंगुलियों के धोने के जल ११ तुम को १२ त्रित नाम देवता के अर्थ त्याग करता हूं १३ तुझे १४ द्वित नाम देवता के लिये त्याग करता हूं १५ तुझे १६ एकत देवता के अर्थ त्याग करता हूं पूर्व काल में किसी हेतु से भय युक्त अग्नि देवता जल में प्रविष्ट हुए तदनंतर देवताओं ने उस जल में प्रविष्ट अग्नि को जान कर ग्रहण किया तब अग्नि ने अपने वीर्य को जल में छोड़ा उससे त्रित द्वित एकत नाम आप्त पुरुष उत्पन्न हुए देवताओं के साथ विचरते उन तीनों ने यज्ञ में पात्री-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रक्षालनजलनाम भाग को प्राप्त किया यह श्रुति कथा यहां योजना योग्य है अध्यात्म अर्थ में अग्नि को ब्रह्माग्नि और जल को ज्योति रस और वीर्य को प्रधान जान्ना चाहिये ॥२३॥

१ २ ३ ४ ५ ६
। सवितुः। देवस्य। प्रसवे। देवेभ्यः। अध्वरकृतम्। त्वा।
७ ८ ९ १० ११ १२
अश्विनोः। बाहुभ्यां। पूष्णः। हस्ताभ्यां। आददे। सहस्रभृ
१३ १४ १५ १६ १७
ष्टिः। शततेजाः। वायुः। असि। इन्द्रस्य। तिग्मतेजाः। द्विष
१८ १९ २० २१
तो वधः। दक्षिणः। बाहुः। असि ॥२४॥ अथाध्यात्मम्-

पदार्थः- हे ज्ञान रूप वज्र १ गुरु २ देवता की ३ प्रेरणा होने पर ४ ब्रह्म नर नारायण नाम देवताओं के लिये ५ यज्ञ करने वाले ६ तुम को ७

हार्दाकाश और मानसाकाश की ८ भुजा अर्थात् ग्रहण शक्तियों से और ९ मन के १० हाथों अर्थात् ग्रहण शक्तियों से ११ ग्रहण करता हूं हे ज्ञान रूप वज्र तुम १२ ब्रह्म से परिपक्व १३ ब्रह्म शक्ति के तेज से युक्त १४ और निवृत आत्मा के अमर होने का कारण १५ हो तथा १६ यजमान की १७ तीक्ष्ण तेज वाली १८ ज्ञान यज्ञ द्वेषी कामादि की नाश करने वाली १९ यजमान की इच्छा के अनुसार वर्तने वाली २० बाहु अर्थात् कार्य साधक २१ है ॥२४॥ अथाधिदैवम्- इस कंडिका में अग्रोक्त मंत्र हैं, सविता की प्रेरणा का मंत्र १ स्फ्य नामक यज्ञ शस्त्र के ग्रहण का मंत्र २ पवित्रा सहित स्फ्य को बावें हाथ से लेकर दाहने हाथ से स्पर्श करके जप करने का मंत्र ३॥ पदार्थः- हे वज्र रूप स्फ्य १ सब के प्रेरक २ परमात्मा की ३ प्रेरणा होने पर ४ देवताओं के उपकारार्थ ५ वेदी खोदने से यज्ञ करने वाले ६ तुझको ७ अश्विनी कुमार के बाहु भाव को प्राप्त ८ अपनी भुजाओं ९ और पूषा देवता के हस्त भाव को प्राप्त १० अपने हाथों से ११ ग्रहण करता हूं हे स्फ्य तु

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म१२ राक्षसों के भस्म करने वाले १३ वज्रतप्रकार से दीप्यमान१४ वायु की समान वेग युक्त१५ हो १६ तथा यजमान की १७ तीक्ष्ण तेज वाली १८ कर्म द्वेषी असुरों की नाश करने वाली १९ अभिप्राय के अनुसार वर्तने वाली२० भुजा२१ है २४॥

॥ देवयजनि१। पृथिवि२। ते३। ओषध्याः४। मूलम५। मो६। हि७। षं८। सिषम९। गोष्ठानम१०। व्रजम११। गच्छ१२। ते१३। द्यौः१४। वर्षतु१५। देव१६। सवितः१७। यः१८। अस्मान्१९। द्वेष्टि२०। चा२१। वयम२२। यमो२३। द्विष्मः२४। तं२५। शतेन२६। पाशैः२७। परमस्याम२८। पृथिव्याम२९। वधान३०। तमसः३१। मो३२। मोक॥ अथाधिदैवम्— इस कंडिका में ४ मंत्र हैं, वेदी में तृण रखने आदि का मंत्र १ स्फ्य से खोदी हुई मिट्टी के ग्रहण करने का मंत्र २ वेदी देखने का मंत्र ३ उत्कर नाम स्थान में मिट्टी फेंकने का मंत्र ॥४॥

मन्त्रार्थः— १ हे देवयजन स्थान २ पृथिवी ३ तेरी ४ तृण रूप ओषधियों की ५ जड़ को मैं ६,७ नाश नहीं करूं स्फ्य के प्रहार से उत्पन्न हे मिट्टी तुम८ गौओं के स्थान ९ गो शाला को १० जाओ हे वेदी ११ तेरे लिये १२ स्वर्ग लोक का अभिमानी देवता १३ जल वर्षा करे और उस के द्वारा खोदने से उत्पन्न दुख की शान्ति हो १४ हे देवता १५ सविता १६ जो १७ हम से १८ द्वेष करता है १९ और२० हम २१ जिस शत्रु से २२ द्वेष करते हैं २३ उस दो प्रकार के शत्रु को २४ शत संख्या वाली २५ पाशों से २६,२७ यन लोक रूप पृथिवी पर २८ बांध करके क़ैद करो २९ और यम राज के नगर से ३०,३१ मत छोड़ो॥२५॥ अथाध्यात्मम्— १ परमात्मा के यजन का स्थान २ हे हृदय मन रूप वेदी ३ तेरी ४ इन्द्रिय शक्ति समूह के ५ मूल अर्थात् आत्म प्रतिबिंब को ६,७ प्रारब्ध की समाप्ति तक में नाश नहीं करूं हे काम आदि शत्रुओं की देह रूप मिट्टी तुम ८ इन्द्रियों के स्थान ९ देहाभिमानी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुषों के समूह में,१० जाओ हे वेदी ११ तेरे लिये १२ गगण मंडल १३ अमृत की वर्षा करो १४,१५ हे मन देवता १६ जो काम आदि १७ हम से १८ द्वेष करता है १९ और २० हम २१ जिस मोह आदि शत्रु से २२ द्वेष करते हैं २३ उस दोनों प्रकार के शत्रु को २४ ब्रह्म और परा शक्ति के प्रभाव तथा २५ गायत्री विष्णु और अंतःकरण के निरोध द्वारा २६।२७, मूल प्रकृति में २८ युक्त करो २९ तम प्रधान प्रकृति से ३०,३१ मुक्त मत करो क्योंकि भगवद्गीता के वचनानुसार सब विकार कामादि प्रकृति से उत्पन्न होते हैं॥२५॥

१ ए। २ पृथिव्याः। ३ देवयजनात्। ४ अररुम्। ५ अपवध्यामि। ६ गोष्ठानं। ७ व्रजम्। ८ गच्छ। ९ ते। १० द्यौः। ११ वर्षतु। १२ हे देव। १३ सवितः। १४ यः। १५ अस्मान्। १६ द्वेष्टि। १७ च। १८ वयं। १९ यं। २० द्विष्मः। २१ तं। २२ शतेन। २३ पाशैः। २४ परमस्याम्। २५ पृथिव्याः। २६ वधानं। २७ तमसः। २८ मा। २९ मोक्। ३० अररो। ३१ दिवं। ३२ मा। ३३ पप्तः। ३४ ते। ३५ द्रप्सः। ३६ द्यां। ३७ मा। ३८ स्कन्। ३९ गोष्ठानं। ४० व्रजम्। ४१ गच्छ। ४२ ते। ४३ द्यौः। ४४ वर्षतु। ४५ देव। ४६ सवितः। ४७ यः। ४८ अस्मान्। ४९ द्वेष्टि। ५० च। ५१ वयं। ५२ यं। ५३ द्विष्मः। ५४ तं। ५५ शतेन। ५६ पाशैः। ५७ परमस्याम्। ५८ पृथिव्याः। ५९ वधानं। ६० तमसः। ६१ मा। ६२ मोक्॥२६॥

अथाधिदेवम्॥ इस कंडिका में तीन मंत्र हैं उन को कहते हैं दूसरी वार उत्कर नाम स्थान में मिट्टी फेंकने का मंत्र १ हाथों से उत्कर के अवधन का मंत्र १ तीसरी वार उत्कर में मिट्टी फेंकने का मंत्र ३॥

मंत्रार्थः १ हे यज्ञ लक्ष्मि २ देवताओं के यजन स्थान ३ वेदी रूप पृथिवी से ४ अररु नाम असुर को ५ निकाल कर वध करूं हे मृत्तिका तू ६ गौओं के स्थान ७ व्रज में ८ जाओ हे वेदी ९ तुझ पर १० स्वर्गाभिमानी देव

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ता ११ वर्षा करो १२ हे देवता १३ सविता १४ जो १५ हमसे १६ द्वेष करता है १७ और १८ हम १९ जिस से २० द्वेष करते हैं २१ उस दो प्रकार के शत्रु को २२ शत संख्यावाली २३ फांसियों से २४,२५ यम लोक रूप पृथिवी पर २६ बंधन करो २७ यमराज के नगर से २८,२९ मत छोड़ो ३० हे अररु नाम असुर ३१ स्वर्ग को ३२, ३३ मत जा हे वेदी देवता ३४ तेरा ३५ उपजीवन योग्य रस अर्थात् भोग ३६ स्वर्ग लोक में ३७,३८ मत जाओ हे स्फ्य प्रहार से उत्पन्न मिट्टी तुम ३९ गौओं के स्थान ४० व्रज में ४१ जाओ हे वेदी ४२ तुझ पर ४३ स्वर्गाभिमानी देवता ४४ जल वर्षा करो ४५ हे देव ४६ सविता ४७ जो ४८ हमसे ४९ द्वेष करता है ५० और ५१ हम ५२ जिस से ५३ द्वेष करते हैं ५४ उस शत्रु को ५५ शत संख्या वाली ५६ फांसियों से ५७,५८ यम लोक रूप पृथिवी पर ५९ बंधन करो ६० यमराज के नगर से ६१,६२ मत छोड़ो ॥२६॥

अथाध्यात्मम्— १ हे यज्ञ लक्ष्मी देवी २,३ मन और हृदय रूप वेदी के स्थान से ४ लोभासुर को ५ दूर लेजा कर वध करूं हे लोभासुर की देह रूप मिट्टी ६ इन्द्रियों के स्थान ७ देहाभिमानी पुरुषों के समूह में ८ जाओ हे मन हृदय रूप वेदी ९ तेरे अर्थ १० गगण मंडल ११ अमृत की वर्षा करो १२,१३ हे देवता मन १४ जो काम आदि १५ हम से १६ द्वेष करता है १७ और १८ हम १९ जिससे २० द्वेष करते हैं २१ उस दो प्रकार के शत्रु को २२ परा शक्ति युक्त ब्रह्म २३ तथा गायत्री, विष्णु और अंतः करण के निरोध द्वारा २४,२५ कारण रूप मूल प्रकृति में २६ बंधन करो २७ तम प्रधान प्रकृति से २८,२९ मत छुड़ाओ ३० हे लोभासुर ३१ भ्रकुटी रूप स्वर्ग में ३२,३३ मत जाओ हे हृदय रूप वेदी ३४ तेरा ३५ उपजीव्य रस अर्थात् भोग ३६ भ्रकुटि रूप स्वर्ग में ३७ ३८ मत जाओ हे क्रोधासुर की देह रूप मिट्टी ३९ इन्द्रियों के स्थान ४० देहाभिमानी पुरुषों के समूह में ४१ जाओ हे मन हृदय रूप वेदी ४२ तेरे अर्थ ४३

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गगण मंडल ४४ अमृत की बर्षा करो ४५,४६ हे देवता मन ४७ जो काम आदि ४८ हमसे ४९ द्वेष करता है ५० और ५१ हम ५२ जिस से ५३ द्वेष करते हैं ५४ उस दोप्रकार के शत्रु को ५५ परा शक्तियुक्त ब्रह्म ५६ तथा गायत्री विष्णु और अंतः करण के निरोध द्वारा ५७,५८ कारण रूप मूल प्रकृति में ५९ बंधन करो ६० तमप्रधान प्रकृति से ६१,६२ मत छुड़ाओ ॥ १९ ॥

त्वा। गायत्रेण। छन्दसा। परिगृह्णामि। त्वा। त्रैष्टुभेन। छन्दसा। परिगृह्णामि। त्वा। जागतेन। छन्दसा। परिगृह्णामि। च। सुक्ष्मा। असि। च। शिवा। असि। च। स्योना। असि। च। सुषदा। असि। च। ऊर्जस्वती। असि॥ २७॥

अथाधिदैवम्– इस कंडिका में ६ मंत्र हैं उन को कहते हैं, वेदी खोदने से पहिले स्फ्य से तीन रेखा करने के मंत्र १,२,३, वेदी खोदने के पीछे स्फ्य से तीन रेखा करने के मंत्र ४,५,६, **मंत्रार्थः** हे यज्ञ पुरुष विष्णु १ तुझ अंतर्धान को २ गायत्री ३ छन्द द्वारा ४ दृष्टि गोचर करता हूं ५ तुझ को ६ त्रैष्टुभ ७ छन्द द्वारा ८ दृष्टि गोचर करता हूं ९ तुझे १० जागत ११ छन्द द्वारा दृष्टि गोचर करता हूं १२ जिस वेदी पर विष्णु का आव्हान तथा प्रादुर्भाव हुआ उस के गुणों को कहते हैं १३ हे वेदी तुम १४ ईश्वर के तेज से युक्त होने के कारण सुन्दर भूमि १५ हो १६ और १७ उग्र असुर के निकालने तथा विष्णु का स्थान होने से शान्त रूप १८ हो १९ और २० सुख रूप २१ हो २२ और २३ देवताओं की सुखासन २४ हो २५ और अन्न का रस जो घृत है उस से युक्त २७ हो श्रुति में बहुत कथा हैं उन का अर्थ अत्यंत कठिन है उस कारण से संहिता के अंत में उनके सत्य अर्थ को कहेंगे ॥ २७ ॥ **अथाध्यात्मम्** हे देह व्यापी आत्मा रूप विष्णु १ तुझे २,३ प्राण के द्वारा ४ ग्रहण करता हूं हे आत्मा रूप विष्णु ५

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुझे ६,७ उदान के द्वारा ८ ग्रहण करता हूं ९ तुझे १०,११ अपान के द्वारा १२ ग्रहण करता हूं १३ हे हृदय रूप वेदी तुम १४ विष्णु और योगी रूप शिव की भूमि १५ हो १६ और १७ मंगल रूप अथवा काम मोह आदि से रहित शान्त रूप १८ हो १९ और २० ब्रह्मानंद से युक्त २१ हो २२ और २३ नरनारायण जीव की सुखासन २४ हो २५ और २६ ज्योतिरस अमृत ब्रह्म से युक्त २७ हो॥२७

विरपशिन[१]। कूरस्य[२]। विस्रपः[३]। पुरा[४]। याम्[५]। जीवदानुम्[६]। पृथिवीं[७]। स्वधाभिः[८]। उदादाय[९]। चन्द्रमसि[१०]। ऐरयन्[११]। धीरासः[१२]। ताम्[१३]। उ[१४]। अनुदिश्य[१५]। यजन्ते[१६]। प्रोक्षणीः[१७]। आसादय[१८]। द्विषतः[१९]। वधः[२०]। असि[२१]॥२८॥ अथाधिदैवम्- इस कंडिका में ३ मंत्र हैं उन को कहते हैं, वेदी के समान और शुद्ध करने का मंत्र १ प्रोक्षणी पात्र को स्थापण करने का मंत्र २ स्फ्य को ऊपर उठाने का मंत्र ३- मंत्रार्थः- इस मंत्र से यह कथा सम्बंध रखती है किसी समय देवताओं का युद्ध असुरों के साथ उपस्थित हुआ तब देवताओं ने परस्पर मंत्र किया कि इस भूमि का जो देव यजन नाम उत्तम स्थल है उस को चन्द्रमा में स्थापण करके युद्ध करें यदि हमारी पराजय हो तब देव यजन स्थल में यज्ञ करके फिर दैत्यों को जीतेंगे यह मंत्र करिके भूमि के सार भाग देव यजन को चन्द्रमा में स्थापण किया वह कृष्ण वर्ण अब भी दीखता है इसी आख्यान को यह मंत्र कहता है॥ १ हे विष्णु २ असुर समूह के ३ युद्ध से ४ पहले ५ जिस जीवों की धात्री ७ पृथिवी के आत्मा को ८ वेदों के साथ ९ ऊंचा उठा कर १० चन्द्रमा में ११ स्थापण किया १२ ज्ञानी भक्तजन १३,१४ उसी पृथिवी को १५ शास्त्र उपदेश द्वारा सिद्ध करके अर्थात् वही सार भूत भूमि इस वेदी में विद्यमान हैं ऐसी भावना करके १६ यज्ञ करते हैं, अध्वर्यु कहाता है, हे अग्नीध्र १७ प्रोक्षण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के जलों को १८ वेदी पर स्थापन करो हे स्फ्य तुम १९ शत्रु के २० हिंसक २१ हो ॥२८॥ **अथाध्यात्मम्** १ हे वेदों के वक्ता विष्णु २ काम वेग के ३ युद्ध से ४ पहले ५ जिस ६ नित्य जीवन देने वाली ७ योग भूमि को ८ मनोवृत्ति के भोगों के साथ ९ उत्कर्ष से ग्रहण कर १० मानस कमल में ११ स्थापन किया १२ ज्ञानी पुरुष १३, १४, उसी योग भूमि को १५ गुरु शास्त्र द्वारा जान कर १६ ज्ञान यज्ञ को करते हैं हे हार्दान्तरिक्ष १७ ब्रह्म ज्योति रस रूप अमृत को १८ अपने मध्य स्थापन करो हे ज्ञान रूप वज्र तुम १९ काम के २० हिंसक २१ हो ॥२८॥

१ रक्षः। २ प्रत्युष्टꣳ। ३ अरातयः। ४ प्रत्युष्टाः। ५ रक्षः। ६ निष्टप्तं। ७ अरातयः। ८ निष्टप्ताः। ९ अनिशितः। १० सपत्नक्षित्। ११ असि। १२ वाजिनं। १३ त्वा। १४ वाजे ध्यायै। १५ सम्मार्ज्मि। १६ रक्षः। १७ प्रत्युष्टꣳ। १८ अरातयः। १९ प्रत्युष्टाः। २० रक्षः। २१ निष्टप्तं। २२ अरातयः। २३ निष्टप्ताः। २४ अनिशिता। २५ सपत्नक्षित। २६ असि। २७ वाजिनीम्। २८ त्वा। २९ वाजे ध्यायै। ३० सम्मार्ज्मि ॥२९॥ **अथाधिदैवम्** इस कंडिका में स्रुवा आदि के मार्जन अ तपन और समर्पण के ६ मंत्र हैं॥ **मंत्रार्थः** १ राक्षस २ दग्ध किया गया ३ शत्रु ४ दग्ध किये गये ५ राक्षस ६ निःशेष तप्त किया गया ७ शत्रु ८ निश्शेष तप्त किये गये हे स्रुव तुम ९ तीक्ष्णता रहित उपद्रव न करने वाले १० शत्रुओं के मारने वाले ११ हो इसी कारण १२ यज्ञ द्वारा अन्न का हेतु होने से अन्न वान वा यज्ञ रूप अन्न से युक्त अथवा यज्ञ नाम अन्न के योग्य १३ तुम को १४ यज्ञ प्रकाश के लिये १५ भले प्रकार शोधन करता हूं क्योंकि शोधित स्रुव में आज्य के ग्रहण करने और होम ने से अग्नि-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवता प्रज्वलित होता है उस की दीप्ति से आहुति फल रूप अन्न प्रकाशित होता है हे जुहू हे उपभृत हे ध्रुव १६ राक्षस १७ दग्ध किया गया १८ शत्रु १९ दग्ध किये गये २० राक्षस २१ निश्शेष तप्त किया गया २२ शत्रु २३ निश्शेष तप्त किये गये तुम २४ तीक्ष्णता रहित उपद्रव न करने वाले २५ शत्रुओं के मारने वाले २६ हो इसी कारण २७ यज्ञ द्वारा अन्न का हेतु होने से अन्न वान वा यज्ञ रूप अन्न से युक्त अथवा यज्ञ नाम अन्न के योग्य २८ तुम को २९ यज्ञ प्रकाश के लिये ३० भले प्रकार शोधन करता हूं ॥ २९ ॥ **अथाध्यात्मम्**— १ अज्ञान २ दग्ध किया गया ३ काम आदि शत्रु ४ दग्ध किये गये ५ अज्ञान ६ निश्शेषतप्त हुआ ७ काम आदि शत्रु ८ निःशेष तप्त हुए हे बुद्धि वा प्राण वायु रूप स्रुव तुम ९ योग मार्ग में उपद्रव न करने वाले १० काम आदि शत्रुओं के नाशक ११ हो १२ ज्ञान यज्ञ वाले १३ तुम को १४ यज्ञ प्रकाश के लिये १५ भले प्रकार शोधन करता हूं प्राण के शोधन और इन्द्रिय शक्तियों के ग्रहण और होम से ब्रह्माग्नि प्रज्वलित होता है और उस की दीप्ति से आहुति फल रूप मोक्ष प्राप्त होता है, हे चक्षु मनजीवात्म सहित वाणी १६ अज्ञान १७ दग्ध किया गया १८ कामादि शत्रु १९ दग्ध किये गये २० अज्ञान २१ निश्शेष तप्त हुआ २२ कामादि शत्रु २३ निश्शेष तप्त हुए २४ तुम योग मार्ग में उपद्रव करने वाले २५ काम आदि शत्रुओं के नाशक २६ हो २७ ज्ञान यज्ञ वाले २८ तुम को २९ यज्ञ प्रकाश के लिये ३० भले प्रकार शोधन करता हूं ॥ २९ ॥

१ ए। २ अदित्याः। ३ रास्नाः। ४ असि। ५ विष्णोः। ६ वेष्यः। ७ असि। ८ त्वा। ९ ऊर्जे। १० अदब्धेन। ११ चक्षुषा। १२ त्वा। १३ अव पश्यामि। १४ अग्नेः। १५ जिह्वा। १६ देवेभ्यः। १७ सुहूः। १८ असि। १९ मे। २० धाम्ने। २१ धाम्ने। २२ यजुषे। २३ यजुषे २४ भव॥ ३० ॥ **अथाधिदैवम्**— इस कंडिका में ४ मंत्र हैं उन को

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहते हैं, तीन लपेट वाली मूंज की रस्सी से यजमान की पत्नी को कमर में युक्त करने का मंत्र १ लपेटी हुई रस्सी के दाहिनी ओर के पाश को उत्तर की ओर कमर में लगाने का मंत्र २ घृत की थाली को गार्हपत्य अग्नि से उतारने का मंत्र ३ पत्नी से घृत के देखे जाने का मंत्र ४॥ **मंत्रार्थः** ॥१ हे योक्त्राभिमानी देवता तुम २ भूमि की ३ लता ४ हो हे दक्षिण पाशतू ५ यज्ञ का ६ व्यापक ७ है हे आज्य ८ तुझे ९ उत्तम रस के लाभार्थ अग्नि से उतारता हूं पत्नी कहती है हे आज्य १० उपहिंसा रहित ११ नेत्र से १२ तुझे १३ अधो मुखी होकर देखती हूं हे घृत तुम १४ अग्नि की १५ जिव्हा हो क्योंकि जब घृत अग्नि में होमा जाता है तब जिव्हा की समान ज्वाला उत्पन्न होती है १६ और देवताओं के लिये १७ आव्हान का कारण १८ है क्योंकि ज्वाला को देख कर देवता आते हैं इस कारण १९ मेरे २०,२१ प्रत्येक याग फल जनित भोग स्थान की सिद्धि के लिये अथवा साकार निराकार ब्रह्म की प्राप्ति के अर्थ २२,२३ प्रत्येक याग सिद्धि के लिये २४ योग्य वा समर्थ हो यहां अग्रोक्त प्रश्नों का सम्भव है, पत्नी को मूंज की रस्सी से क्यों उक्त करते हैं १ पाश को कमर में लगा कर गांठ न बांधने का क्या कारण है २ आज्य देखने में पत्नी का अधिकार कैसे है ३ उन के उत्तर श्रुति देती है, पत्नी का जो अंग नाभि से नीचे है वह अपवित्र है जब आज्य के देखने को उद्यत होती है तब इस के उस अंग को योक्त्र (रस्सी) से ढक देते हैं, तिस कारण पत्नी को योक्त्र से युक्त करते हैं १ गांठ वरुण सम्बंधी है, वरुण पत्नी को ग्रहण करे जो ग्रंथि देवे, इसी कारण गांठ नहीं देते हैं २ पत्नी स्त्री है, और आज्य वीर्य है इस लिये यज्ञ फल का देने वाला यह मिथुन (जोड़ा) किया जाता है इसी कारण पत्नी आज्य को देखती है ३॥ ३०॥ **अथाध्यात्मम्-** १ हे बुद्धि का संस्कार करने वाली आत्म शक्ति तुम २ परा प्रकृति की ३ लता वा जिव्हा ४ हो ५ विष्णु की ६ सर्व व्यापी शक्ति ७ हो हे इन्द्रिय शक्ति समूह ८

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुझे ९ ज्ञानामृत रूप रस के लाभार्थ आत्म रूपी अग्नि से उतारता हूं अब बुद्धि क हती है, हे इन्द्रिय शक्ति समूह १० पूर्ण ब्रह्म ज्ञान रूप ११ नेत्र से १२ तुझे १३ निश्चय पूर्वक देखती हूं हे इन्द्रिय शक्ति समूह तुम १४ आत्मा रूप अग्नि की १५ जिह्वा अर्थात् भोग साधन हो १६ इन्द्रियों के जो देवता हैं उन के लिये १७ आह्वान का कारण १८ हो इस कारण १९ मेरे २०, २१, प्रत्येक कमल (मन आदि) २२, २३, और प्रत्येक ज्ञान यज्ञ के लिये २४ योगैश्वर्य से सम्पन्न हूजिये॥ ३०॥

सवितुः१। प्रसवे२। त्वा३। अच्छिद्रेण४। पवित्रेण५। सूर्यस्य६। रश्मिभिः७। उत्पुनामि८। सवितुः९। प्रसवे१०। वः११। अच्छिद्रेण१२। पवित्रेण१३। सूर्यस्य१४। रश्मिभिः१५। उत्पुनामि१६। तेजः१७। असि१८। शुक्रं१९। असि२०। अमृतम्२१। असि२२। धाम२३। नाम२४। देवानां२५। प्रियं२६। असि२७। अनाधृष्टम्२८। देवयजनम्२९। असि३०॥ ३१॥ अथाधिदैवम्-

इस कण्डिका में ४ मंत्र हैं उन को कहते हैं, घृत के शोधने का मंत्र १ प्रोक्षण के जल को शोधने का मंत्र २ घृत के देखने का मंत्र ३ स्रुवा से घृत लेने का मंत्र ४॥ **मंत्रार्थः**- हे आज्य १ प्रेरक परमेश्वर की २ प्रेरणा होने पर ३ तुझ को ४, ५ वायु रूप पवित्रा और ६ सूर्य की ७ किरणों से ८ शोधन करता हूं हे प्रोक्षण के जल ९ प्रेरक परमेश्वर की १० प्रेरणा होने पर ११ तुम को १२ वायु रूप १३ पवित्रा और १४ सूर्य की १५ किरणों से १६ शोधन करता हूं हे आज्य तुम १७ शरीर की कांति बढ़ाने से तेज रूप अथवा भगवद् गीता के वचनानुसार भगवत्स्वरूप १८ हो १९ वर्षा अन्न आदि की उत्पत्ति के कारण होने से वीर्य रूप २० हो २१ देवताओं के तृप्त करने वाले अमृत २२ हो हे आज्य तुम २३ देवताओं की चित्त वृत्ति धारण होने के स्थान २४ सब प्राणि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यों को अपनी ओर झुकाने वाले २५ हो क्योंकि सब प्राणी घृत को देख कर उसके खाने को झुकते हैं २६ तथा देवताओं के २७ प्रिय २८ तिरस्कार रहित २९ देवताओं के याग का साधन ३० हो इस कारण तुझ को ग्रहण करता हूं ॥ ३१ ॥

अथाध्यात्मम् हे इन्द्रिय शक्ति समूह १ प्रेरक परमेश्वर वा गुरू की २ प्रेरणा होने पर ३ तुझे ४ प्राण रूप ५ पवित्रा से तथा ६ मानस सूर्य की ७ किरणों से ८ शुद्ध करता हूं हे गगणा मृत ९ गुरू की १० प्रेरणा होने पर ११ तुम को १२ वायु रूप १३ पवित्रा से १४ तथा परमात्मा की १५ किरणों से १६ शुद्ध करता हूं हे इन्द्रिय शक्ति समूह तुम १७ आत्म तेज १८ हो १९ शुद्ध और ब्रह्माग्नि में हवण योग्य २० हो २१ आत्मा का प्रकाश होने से नाश रहित २२ हो २३, २४ ज्योति नाम तुम २५ ब्रह्म नर नारायण नाम देवताओं के २६ प्रिय २७ हो २८ तिरस्कार रहित २९ और ज्ञान यज्ञ के साधन ३० हो ॥ ३१ ॥

इति श्री भृगु वंशावतंस श्री नाथू राम सूनु ज्वाला प्रसाद भार्गव शर्म्म कृते शुक्ल यजुर्वेदीय ब्रह्म भाष्ये शाखा द्वाज्य ग्रहान्तः वा करणादीनां संस्कार कथनं नाम प्रथमोध्यायः ॥ १ ॥ अथ द्वितीयोध्यायः ॥

कृष्णाः[१]। आखरेष्ठः[२]। असि[३]। अग्नये[४]। जुष्टम्[५]। त्वा[६]। प्रोक्षामि[७]। वेदिः[८]। असि[९]। वर्हिषे[१०]। जुष्टम्[११]। त्वा[१२]। प्रोक्षामि[१३]। वर्हिः[१४]। असि[१५]। स्रुग्भ्यः[१६]। जुष्टम्[१७]। त्वा[१८]। प्रोक्षामि[१९] ॥ १ ॥

अथाधिदेवम् – इस कंडिका में ३ मंत्र हैं उन को कहते हैं, इध्म (ईंधन) के प्रोक्षण का मंत्र १ वेदी प्रोक्षण का मंत्र २ दर्भ (कुशा) प्रोक्षण का मंत्र ३ ॥ **मंत्रार्थः** हे इध्म तुम १ प्रोक्षण से पहले असंस्कृत अथवा कृष्ण मृग रूप यज्ञ २ कठिन वृक्ष पर स्थित अथवा स्वर्ग दाता आ-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हवनीय अग्नि में चारों ओर से स्थित ३ हो ४ अग्नि के अर्थ ५ प्रिय ६ तुझ को ७ शुद्धि के लिये जल से प्रोक्षण करता हूं हे वेदी तुम ८ असुरों से देवताओं को प्राप्त होने के कारण वेदी नाम ९ हो १० कुशा धारण में उपयोगी होने के कारण ११ प्रिय १२ तुझ को १३ प्रोक्षण करता हूं क्योंकि पृथिवी रूप वेदी से प्रजा रूप कुशा का धारण करना योग्य है हे दर्भ तुम १४ वहुत होने से वेदी की वृद्धि करने को समर्थ १५ हो स्रुचों के धारणार्थ १७ प्रिय १८ तुझ को १९ प्रोक्षण करता हूं॥ १॥ **अथाध्यात्मम्**- हे प्राण तुम १ विष्णु रूप २ देह वृक्ष पर स्थित अथवा ब्रह्मानंद दाता हृदाकाश में चारों ओर से स्थित ३ हो ४ आत्म रूप अग्नि के लिये ५ प्रिय ६ तुझ को ७ प्रोक्षण करता हूं हे मन तुम ८ कामादि असुरों से जीवात्मा की प्राप्ति होने के कारण वेदी नाम ९ हो १० मनुष्य लोक के लिये ११ प्रिय १२ तुझे १३ प्रोक्षण करता हूं हे इन्द्रिय समूह तुम १४ आत्मा की प्रजा १५ हो १६ वाणी आदि के लिये १७ प्रिय १८ तुझे १९ प्रोक्षण करता हूं॥ १॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
ए। अदित्याः। व्युन्दन्दूम्। असि। विष्णोः। स्तुपः। असि।
८ ९ १० ११ १२
ऊर्णा मृदसम्। देवेभ्यः। त्वास स्थाम्। त्वा। स्तृणामि। भु
१३ १४ १५ १६ १७ १८ १९
व पतये। स्वाहा। भुवन पतये। स्वाहा। भूतानाम्। पतये। स्वाहा

॥२॥ **अथाधिदैवम्**- इस कंडिका में ६ मंत्र हैं उन को कहते हैं, प्रोक्षण से वचे जल को कुशाओं के पूला की जड़ पर डालने का मंत्र १ कुशा के पूला को खोल कर पूर्व भाग से प्रस्तर के ग्रहण का मंत्र २ वेदी को कुशा से आच्छादन करने का मंत्र ३ वेदी से वाहर जो हवि गिरे उस के अभिमर्शन का मंत्र, ४,५,६, **मंत्रार्थः** १ हे प्रोक्षण से वचे जल के अभिमानी देवता तुम २ भूमि को ३ विशेष आर्द्र (गीला) करने वाले ४ हो हे दर्भ तु

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ष्टिरूपप्रस्तरतुम ५ यज्ञकी ६ शिखा ७ हो हे वेदी ८ ऊन की समान अति कोम ल ९ देवताओं के लिये १० सुखा सन रूप ११ तुझ को १२ कुशाओं से आच्छा दन करता हूं १३ अग्नि के प्रथम भाई भुव पति के अर्थ १४ होम किया गया १५ अग्नि के दूसरे भाई भुवनपति के लिये १६ होम किया गया १७,१८ अग्नि के तीसरे भाई भूत पति के लिये १९ हवि दिया गया ॥२॥

अथाध्यात्मम्— १ हे गगण मंडल के अमृत वा ज्योति रस रूप अमृत नाम प्रोक्षण से बचे जल के अभिमानी देवता तुम २ जीव रूप परा शक्ति के ३ विशेष आर्द्र करने वाले ४ हो हे यज मान के आत्मा तुम ५ विष्णु के ६ तेज समूह ७ हो, हे हृदय रूप वेदी ८ कृष्ण मृग चर्म रूप होने से अत्यंत कोमल ९ नर नारायण जीव नाम देवताओं के लिये १० सुखा सन रूप ११ तुझ को १२ इन्द्रिय रूप कुशा से आच्छा दन करता हूं शुद्ध आत्म तत्व ब्रह्माग्नि में होम करना चाहिये इस के सिवाय अग्रोक्त देवताओं को अर्पण करना योग्य है जैसे १३ जीव के अर्थ १४ हवि दिया १५ नरोत्त मन र के अर्थ १६ हवि दिया १७,१८ नारायण के अर्थ १९ हवि दिया श्रुति में लिखा है, पूर्व काल में ब्रह्माग्नि के भाई नर नारायण जीव नाम हवि दान के भय से अपने कारण ब्रह्म में प्रवेश हुए उस दुःख से ब्रह्माग्नि भी ज्योति रस अमृत जल में प्रवेश हुए तदनंतर देवताओं ने ब्रह्माग्नि को अपने ज्ञान में प्रत्यक्ष किया शक्ति दान नाम अपने अधिकार पर स्थापित ब्रह्माग्नि ने कहा मुझ को मेरे इन भाइयों के साथ स्थापण करो और उन का यज्ञ भाग नियत करो, इसके पीछे वे ब्रह्माग्नि के भाई परिधि जाने गए और ब्रह्माग्नि की आहुति से गिरा हुआ अन्न उन का भाग नियत हुआ ॥२॥

विश्वावसुः। गन्धर्वः। विश्वस्य। अरिष्ट्यै। त्वा। परि दधातु
इडः। ईडितः। अग्निः। यजमानस्य। परिधिः। असि। वि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्वस्य[१३]। अरिष्ट्यै[१४]। इन्द्रस्य[१५]। दक्षिणः[१६]। बाहुः[१७]। असि[१८]। इडः[१९]। ईडितः[२०]। अग्निः[२१]। यजमानस्य[२२]। परिधिः[२३]। असि[२४]। मित्रावरुणौ[२५]। विश्वस्य[२६]। अरिष्ट्यै[२७]। ध्रुवेण[२८]। धर्म्मणा[२९]। त्वा[३०]। उत्तरतः[३१]। परिधत्ताम्[३२]। इडः[३३]। ईडितः[३४]। अग्निः[३५]। यजमानस्य[३६]। परिधिः[३७]। असि[३८]॥३॥ अथाधिदेवम्॥ इस कंडिका में मध्यम, दक्षिण, उत्तर परिधियों के ३ मंत्र हैं, **मंत्रार्थः** हे पश्चिम परिधि १ सर्व व्यापी २ धरणी धर परमेश्वर ३ सम्पूर्ण असुर समूह जनित ४ हिंसा के परिहार वा विघ्न शान्ति के लिये ५ तुझ को ६ आहवनीय के पश्चिम ओर स्थापन करो ७ स्तुति योग्य ८ होता आदि से स्तुति किये हुए ९ आहवनीय के प्रथम भ्राता भुवपति नाम अग्नि तुम १० यजमान के ११ चारों ओर से रक्षक १२ हो हे दूसरी परिधि तुम १३ सब १४ विघ्न शान्ति के लिये १५ ईश्वर की १६ दाहिनी १७ भुजा अर्थात् रक्षण में समर्थ १८ हो स्तुति योग्य २० होता आदि से स्तुत २१ और अग्नि के दूसरे भाई भुवन पति नाम अग्नि तुम २२ यजमान के २३ चारों ओर से रक्षक २४ हो, हे तीसरे परिधि २५ वायु सूर्य देवता २६ सर्व २७ विघ्नों की शान्ति के लिये २८ निश्चल २९ कर्म वा धारण से ३० तुम को ३१ उत्तर दिशा में ३२ स्थापन करो ३३ स्तुति योग्य ३४ स्तुत ३५ अग्नि के तीसरे भाई भूतपति अग्नि तुम ३६ यजमान के ३७ चारों ओर से रक्षक ३८ हो॥३॥

अथाध्यात्मम्-हे जीवरूप परिधि १ सब शरीरों में वास करने वाला २ ज्योति स्वरूप परमात्मा ३ सब ४ काम आदि असुरों से उत्पन्न हिंसा वा विघ्नों की शान्ति के लिये ५ तुझे ६ पश्चिम दिशा में स्थापन करो ७ स्तुति योग्य ८ वाणी आदि से स्तुत ९ आत्माग्नि तुम १० भूतात्मा रूप य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जमान के ११ चारों ओर से रक्षक १२ हो हे नर तुम १३ सब १४ अज्ञान आदि से उत्पन्न हिंसा के रोकने के लिये १५ ब्रह्म की १६ दाहिनी १७ भुजा अर्थात् रक्षा का साधन १८ हो १९ स्तुति योग्य २० स्तुति किये हुए २१ नर नाम अग्नि तुम २२ जीवात्मा रूप यज मान के २३ चारों ओर से रक्षक २४ हो हे नारायण रूप परिधि २५ ज्ञानी उपासक पुरुष २६ सब २७ विघ्न शान्ति के लिये २८ निश्चल २९ धर्म्म योग और भक्ति नाम से ३० तुम को ३१ उत्तर दिशा में ३२ स्थापन करो ३३ स्तुति योग्य ३४ स्तुति किये हुए ३५ नारायण नाम अग्नि तुम ३६ ज्ञान निष्ठ वा भक्त के ३७ चारों ओर से रक्षक ३८ हो ॥३॥

कवे। अग्ने। अध्वरे। वीतिहोत्र॥ द्युमन्तं। बृहन्तम्। त्वा। समिधीमहि॥४॥ अथाधिदैवम् पहिली परिधि को समिधसे स्पर्श करके उस समिध को आहवनीय अग्नि में छोड़ने का मंत्र।१। १ हे क्रांत दर्शी भूत भविष्य के ज्ञाता २ अग्नि देवता ३ यज्ञ में ४ होम से ईश्वर प्राप्त कराने वाले ५ स्वयंप्रकाश ६ महान् ७ तुम को ८ इस इध्म काष्ट से प्रज्वलित करता हूं॥४॥ अथाध्यात्मम्- १ हे मेधावी २ जीवात्मन् ३ ज्ञान यज्ञ में ४ ब्रह्म प्राप्ति कारक होम वाले ५ ब्रह्म तेज से युक्त ६ धारणा से विराट् भाव को प्राप्त ७ तुझे ८ प्राण रूप समिध से भले प्रकार प्रज्वलित करते हैं॥४॥

ए। समिद्। असि। सूर्यः। पुरस्तात्। कस्याश्चित्। अभिशस्त्याः। त्वा। पातु। सवितुः। बाहू। स्थः। देवेभ्यः। स्वासस्थं। ऊर्णम्रदसम्। त्वा। स्तृणामि। वसवः। रुद्राः। आदित्याः। त्वा। आसदन्तु॥५॥ अथाधिदैवम्- इस कंडिका में ५

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्र हैं, स्पर्श न करके दूसरी समिध को आहवनीय अग्नि में छोड़ने का मंत्र१ आहवनीय को देखते जप करने का मंत्र२ आहवनीय अग्नि के पश्चिम प्रदेश में कुशा के दो तृण उत्तर ग्रस्थापन करने का मंत्र३ उन कुशाओं पर प्रस्तर के स्थापन करने का मंत्र४ ॥ प्रस्तर पर दोनों हाथ रखने का मंत्र॥५॥

मंत्रार्थः हे इध्म के अभिमानी देवता तुम२ अग्नि के प्रज्वलित करने वाले३ हो हे आहवनीय४ सूर्य देवता ५ पूर्व दिशा में ६,७ सब हिंसाओं से ८ तुम को ९ रक्षा करो क्योंकि तीनों दिशा में तीनों परिधि रक्षक हैं इस लिये पूर्व दिशा में सूर्य को रक्षक कहा है कुशा के दोनों तृण तुम दोनों १० सूर्य की११ भुजा १२ हो क्योंकि प्रस्तर को धारण करते हो १३ ऊन की समान कोमल १४ देवताओं के लिये १५ सुखासन रूप १६ तुम को १७ वेदी पर स्थापन करता हूं १८ अष्ट वसु १९ ग्यारह रुद्र२० बारह आदित्य तीनों सवन के अभिमानी तीनों देवता २१ तुम को २२ फैलाओ, प्रश्न, दूसरी तीसरी समिध को अग्नि में डालने से क्या फल है (उत्तर) श्रुति कहती है जिस दूसरी समिध को अग्नि में डालता है उस से वसंत ऋतु को वृद्धि देता है, वृद्धि पाने वाला वसंत दूसरी ऋतुओं को वृद्धि देता है, वृद्धि पाने वाली षट् ऋतु प्रजा को उत्पन्न और औषधियों को परिपक्व करती हैं, फिर जिस तीसरी समिधि को अग्नि में डालता है उस से अनुयाजों के मध्य ब्राह्मण को ही वृद्धि देता है, वह वृद्धि पाने वाला ब्राह्मण देवताओं को यज्ञ प्राप्त कराता है (प्रश्न) २-पूर्व दिशा में सूर्य को रक्षक करने का क्या कारण है (उ०) सूर्य ही राक्षसों का नाशक है इस लिये रक्षक कहा॥५॥ **अथाध्यात्मम्** १ हे प्राण के अधिष्ठाता देवता तुम२ आत्माग्नि को प्रज्वलित करने वाले ३ हो हे ब्रह्माग्नि४ ज्ञानचक्षु ५ पूर्व दिशा में ६,७ सब हिंसाओं से ८ तुम को ९ रक्षा करो हे इडा पिंगला नाम नाड़ियो तुम दोनों १० ईश्वर की ११ भुजा अर्थात् कार्य साधक १२ हो, हे यजमान रूप प्रस्तर १३ परा नर नारायण नाम देवताओं के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये १४ सुखासन रूप १५ मृग चर्म के समान कोमल १६ तुझको १७ विछाता हूं १८ पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश, अहंकार महत् प्रधान नाम भगवद्गीता कथित अपरा प्रकृति १९ दस प्राण ग्यारह वां प्रति विंव २० दश इन्द्री मन बुद्धि २१ तुझ यज मान रूप प्रस्तर को २२ प्राप्त करो ॥ प्रश्न, ज्ञान चक्षु को ब्रह्माग्नि का रक्षक कहा इसमें क्या कारण है (उत्तर) ब्रह्म माया से रहित अनंत निर्विकार है उस की जो अनन्त ज्योति है भगवान श्री कृष्ण ब्रह्मांड से बाहर निकल कर और उसी ज्योति में प्रवेश हो कर ब्राह्मण के बालक को लाये थे, उसी ब्रह्म ज्योति को महा नारायण और महा विष्णु भी कहते हैं, वह ब्रह्माग्नि माया सम्बंधी हवि को ग्रहण नहीं करते, ब्रह्माग्नि का अंश जो जीवात्मा है वही उस का हवि है, श्रुति में ब्रह्माग्नि का वचन है कि मैं हवि दान रूप वज्र से डरता हूं कि वह मुझ को स्वरूप से च्युत न करै इन तीनों परिधियों के साथ मुझ को स्थापन करो इस में स्वरूप च्युति नहीं है, देवताओं ने तथा स्तु कह कर ब्रह्माग्नि को तीनों परिधियों के साथ स्थापन किया, तीन परिधि का स्थापन ब्रह्माग्नि का कवच है, परिधि नाम अग्नियों ने कहा हम को यज्ञ में युक्त करो, और हमारा यज्ञ भाग कल्पना करो, देवता बोले, कि जो परिधि से बाहर गिरैगा वह तुम में होम होगा, और जो तुम्हारे ऊपर होम होगा वह भी तुम्हारा भाग है, और जो अग्नि में होम होगा वह भी तुम्हारी ही रक्षा करैगा, अर्थात् माया सम्बंधी हवि तुम्हारा ही भाग है ५

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
नाम्ना। जुहूः। घृताची। असि। सा। प्रियेण। धाम्ना। इदम्
९ १० ११ १२ १३ १४ १५
प्रियꣳ सदः। आसीद। नाम्ना। उपभृत्। घृताची। असि
१६ १७ १८ १९ २० २१ २२
सा। प्रियेण। धाम्ना। इदम्। प्रियꣳ सदः। आसीद।
२३ २४ २५ २६ २७ २८ २९
नाम्ना। ध्रुवा। घृताची। असि। सा। प्रियेण। धाम्ना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३० ३१ ३२ ३४ ३४ ३५ ३६
इदम्। प्रियꣳ। सदः। आसीद। प्रियेण। धाम्ना। प्रियꣳ। स
३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४
दः। आसीद। ध्रुवः। ऋतस्य। योनौ। असदन्। विष्णो। ता।
४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२
पाहि। यज्ञं। पाहि। यज्ञपतिं। पाहि। मां। यज्ञन्यम्। पाहि
॥६॥ अथाधिदैवम् - इस कंडिका में ६ मंत्र हैं जुहू को प्रस्तर पर रखने का मंत्र १ उपभृत् को प्रस्तर पर स्थापन करने का मंत्र २ ध्रुवा को प्रस्तर पर रखने का मंत्र ३ हवियों को वेदी के निकट स्थापन करके सब के स्पर्श करने का मंत्र ४,५ हृदय को हाथ से स्पर्श करने का मंत्र ६॥ मंत्रार्थः हे जुहू तुम १ जुहू नाम हो अर्थात् जिस से होमा जाता है वह जुहू है तुम २ घृत से पूर्ण ४ हो ५ वह तुम ६ देवताओं के प्रिय ७ घृत रूप तेज के साथ ८ इस ९ प्रिय १० प्रस्तर नाम आसन पर ११ बैठो हे उपभृत् तुम १२,१३ उपभृत् नाम इस लिये हो कि समीप स्थित होकर घृत को धारण करते हो तुम १४ घृत से पूर्ण १५ हो १६ सो तुम १७ देवताओं के प्रिय १८ घृत रूप तेज के साथ १९ इस २० प्रिय २१ प्रस्तर नाम आसन पर २२ बैठो हे ध्रुवा तुम अचल होने के कारण २३,२४ ध्रुवा नाम हो तुम २५ घृत से पूर्ण २६ हो २७ सो तुम २८ देवताओं के प्रिय २९ घृत रूप तेज के साथ ३० इस ३१ प्रिय ३२ प्रस्तर नाम आसन पर ३३ बैठो हे हवि ३४ देवताओं के प्रिय ३५ घृत के साथ ३६ प्रिय ३७ प्रस्तर नाम आसन पर ३८ बैठो इस प्रकार प्रत्येक हवि को सम्बोधन कर कहना चाहिये ३९ अवश्य मिलने वाले फल से युक्त होने के कारण सत्य नाम ४० यज्ञ में ४१ ध्रुव नाम हवि ४२ स्थित हुए ४३ हे विष्णु अर्थात् व्यापक यज्ञ पुरुष ४४ उन हवियों को ४५ रक्षा करो ४६ यज्ञ को ४७ रक्षा करो ४८ यजमान को ४९ रक्षा करो ५० मुझ ५१ अध्वर्यु को ५२ रक्षा करो॥ ६॥ अथाध्यात्मम्। हे हृदय वा वागभिमानी देवता तुम १,२ जुहू नाम हो तुम ३ इन्द्रियों की शक्ति से युक्त ४ हो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५ सो तुम ६ देहाभिमानियों की प्रिय ७ इन्द्रियों की शक्ति के साथ ८ इस ९ प्रिय १० जीवात्मा में ११ स्थित हो हे मानस अंतरिक्ष के अभिमानी देवता तुम १२,१३ मन नाम हो तुम १४ इन्द्रियों की शक्ति से युक्त १५ हो १६ सो तुम १७ १८ प्रिय इन्द्रिय शक्ति समूह के साथ १९ इस २० प्रिय २१ आत्मा में २२ स्थित हूजिये हे सानचक्षु वा आत्माभिमानी देवता तुम २३,२४ ध्रुवनाम अर्थात् अचल हो तुम २५ इंद्रियों की शक्ति से पूर्ण २६ हो २७ सो तुम २८ परानर नारायण नाम देवताओं के प्रिय २९ इन्द्रियों की शक्ति के साथ ३० इस ३१ प्रिय ३२ आसन यजमान नाम पर ३३ बैठो, हे आत्म प्रतिबिंब तुम ३४ देवताओं के प्रिय ३५ इन्द्रियों की शक्ति के साथ ३६,३७ प्रिय आसन यजमान नाम पर ३८ बैठो ३९ आत्मभाव को प्राप्त इन्द्री मन बुद्धि प्रतिबिंब ४०,४१ ब्रह्म के स्थान हार्दाकाश में ४२ स्थित हुए ४३ हे विष्णु ४४ उनको ४५ रक्षा करो ४६ ज्ञान यज्ञ वा योग यज्ञ को ४७ रक्षा करो ४८ यजमान को ४९ रक्षा करो ५० मुझ ५१ योगाचार्य को ५२ रक्षा करो॥६॥

वाजजित्। अग्ने। वाजम्। सरिष्यन्तम्। वाजजितम्। त्वा। सम्मार्ज्मि। देवेभ्यः। नमः। पितृभ्यः। स्वधा। मे। सुयमे। भूयास्तम्। अद्य। अस्कन्नम्॥७॥ अथाधिदैवम्॥

इस कंडिका में ४ मंत्र हैं, इध्म बंधन के तृणों से दक्षिण पश्चिम उत्तर की परिधियों के समीप तीन २ बार आहवनीय अग्नि के मार्जन का मंत्र १ परिक्रमा करके आहवनीय के ऊपर मध्यप्रदेश में तीन वार मार्जन करने का मंत्र २ अञ्जली करने का मंत्र ३- जुहू आदि को लेकर यजति स्थान में जाने का मंत्र ४॥

मंत्रार्थः ॥ १ हे ब्रह्मांड रूप अन्न के जय करने वाले २ अग्नि ३ ब्रह्मांड को उद्दश्य करके ४ चलने वाले अर्थात् ब्रह्मांड की जय में प्रवृत्त ५ ब्रह्मांड की

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जय को प्राप्त ६ तुझे ७ शोधन करता हूं ८ ब्रह्मांड में जो देवता हैं उन के अर्थ ९ नमस्कार १० जो पितर अर्थात् पालक हैं उन के अर्थ ११ अमृत हे जुहू उप १२ मेरे लिये १३ अच्छा सावधान १४ हूजियै १५ अब इस अनुष्ठान में जिस प्रकार तुम दोनों में स्थित घृत १६ पतित न होवै॥७॥

अथाध्यात्मम्- १ हे प्राण को जीतने वाले २ आत्माग्नि ३, ४ प्राण जय में प्रवृत्त ५ प्राणायाम करने वाले ६ तुझ को ७ भले प्रकार शोधन करता हूं ८ वेदों के जो महावाक हैं उनके अर्थ अथवा परा नर नारायण के लिये ९ नमस्कार १० मन की जो वृत्तियां हैं, उनके लिये ११ इन्द्रिय शक्ति रूप अन्न अर्पण हो हे हृदय मन तुम दोनों १२ मेरे लिये १३ अच्छे सावधान १४ हूजियै १५ अब इस समय जिस प्रकार उन दोनों में स्थित इन्द्रिय शक्ति समूह १६ पतनन हो॥७॥

१ २ ३ ४ ५ ६
अद्य। देवेभ्यः। आज्यम्। अस्कन्नम्। सम्भ्रियासम्। विष्णो।
७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४
अङ्घ्रिणा। त्वा। मा। अवक्रमिषम्। हे अग्ने। ते। वसुमतीम्। छाय
१५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२
म्। उपस्थेषं। विष्णोः। स्थानम्। असि। इन्द्रः। इतः। वीर्यं। अक
२३ २४ २५
रोत्। अध्वरः। ऊर्ध्वः। आस्थात्॥८॥ अथाधिदैवम्॥

इस कंडिका में ३ मंत्र हैं, यजति देश में जाने और वहां से लौटने का मंत्र १ यजति देश में ईशान दिशा की ओर मुख करके बैठने का मंत्र २ घृत के होम का मंत्र ३- हे जुहू उपभृत १ अब अनुष्ठान के समय २ देवोपकार के लिये ३ तुम दोनों में स्थित घृत ४ जिस प्रकार भूमि पर न गिरै, तैसेही ५ भले प्रकार धारण करो हे व्यापक यज्ञ पुरुष मैं ७ पांव से ८ तुम को ९, १० उलंघन न करूं अर्थात् पांव से उलंघन करने का दोष मुझ को न होवे ११ हे अग्नि १२ तेरी १३ आश्रय रूप १४ यज्ञ सम्बंधी भूमि को १५ सेवन करूं उसी सेवा प्रकार को कहते हैं हे यज्ञ भूमि तुम १६ यज्ञ का १७ स्थान १८ हो १९ देवताओं के इन्द्र ने २०

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी देव यजन स्थान से उद्योगी होकर २१ राक्षस वध रूपी वीर कर्म को २२ किया इसी कारण से २३ यज्ञ २४ ऊंचा २५ स्थित हुआ, अर्थात् श्रेष्ठ ठहरा ॥ ८ ॥

अथाध्यात्मम्— हे हृदय मन तुम दोनों १ इस ब्रह्म यज्ञ में २ परानरनारायण नाम देवताओं के लिये ३ तुम दोनों में स्थित इन्द्रिय शक्ति समूह ४ जैसे मोक्ष अवस्था से च्युत न होते से ही ५ भले प्रकार धारण पोषण करें ६ हे परमात्मा में ७ देह वृक्ष की जड़ काम से ८ तुम को ९, १० उलंघन करूं अर्थात् काम से अतिक्रम दोष मुझ को नहो ११ हे ब्रह्माग्नि १२ तेरी १३ योग लक्ष्मी से युक्त १४ आश्रय रूप ज्ञान यज्ञ क्रिया को १५ सेवन करूं हे हृदय की भूमि तुम १६ सर्वव्यापी ब्रह्म का १७ स्थान १८ हो १९ यज मान ने २० इसी देव यजन स्थान से २१ काम शत्रु वध रूपी वीर कर्म को २२ किया इसी कारण २३ ज्ञान यज्ञ २४ ऊंचा २५ स्थित हुआ ॥ ८ ॥

अग्ने१। होत्रं२। वेः३ दूत्यं४। वेः५ त्वा६। द्यावा७ पृथिवी८। अवताम्९। त्वं१०। द्यावा पृथिवी११। अव१२। इन्द्रः१३। आज्येन१४। हविषा१५। देवेभ्यः१६। स्विष्टकृत्१७। अभूत्१८। स्वाहा१९। ज्योतिः२०। ज्योतिषा२१। सं। ॥ ९ ॥

अथाधिदैवम्— जुहू के घृत को ध्रुवा के घृत में गिराने का मंत्र १ हे अग्नि २ होता के कर्म को ३ जान ४ दूत के कर्म को ५ जान ६ तुझ को ७ पृथिवी स्वर्ग लोक के अभिमानी देवता ८ रक्षा करो ९ हे अग्नि तुम भी १० पृथिवी स्वर्ग लोक के अभिमानी देवताओं को ११ रक्षा करो इस प्रकार परस्पर पालन होने पर १२ यज्ञ का देवता इन्द्र हमारे दिये हुए १३ घृत नाम १४ हवि से १५ देवताओं के लिये १६ श्रेष्ठ यज्ञ का कर्त्ता १७ हुआ १८ श्रेष्ठ होम हो १९ जुहू से सींची हुई घृत रूप ज्योति २० ध्रुवा में स्थित घृत रूप ज्योति के साथ २१ भले प्रकार मिलाप को पाओ ॥ ९ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाध्यात्मम्- प्राण कहते हैं १ हे आत्माग्नि २ होता के कर्म को ३ जानो ४ दूत के कर्म को ५ जानो अर्थात् श्रुति के अनुसार दोनों तुम्हारे ही कर्म हैं ऐसे ६ तुम को ७ हृदय और मन ८ अपने आत्मा रूप से रक्षा करो हे आत्माग्नि ९ तुम भी १० हृदय और मन को ११ रक्षा करो १२ वाक् १३ इन्द्रिय शक्ति रूप १४ हवि के द्वारा १५ परा नरनारायण के लिये १६ श्रेष्ठ यज्ञ का करने वाला १७ हुआ १८ श्रेष्ठ होम हो १९ इन्द्रियों की ज्योति २० आत्म ज्योति के साथ २१ योग को पाओ २२

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
इन्द्रः। इदम्। इन्द्रियं। मयि। दधातु। रायः। मघवानः। सचन्ता
९ १० ११ १२ १३ १४ १५
म्। अस्माकं। आशिषः। सत्याः। सन्तु। नः। आशिषाः। सन्तु।
१६ १७ १८ १९ २० २१ २२
माता। पृथिवी। उपहूता। माता। पृथिवी। माम्। उपह्वयतो
२३ २४+२५ २५+२४
म्। अग्नीध्रात्। स्वाहा॥ अग्निः॥ १०॥ अथाधिदैवम्- इस कंडिका में दो मंत्र हैं, आशिष चाहने का मंत्र १ भाग आशन का मंत्र २- यजमान जप करता है १ यज्ञ का देवता परमेश्वर २ मेरे अपेक्षित इस ३ बल को ४ मुझ में ५ स्थापन करो ६ और दैव मानुष दो प्रकार वाले धनों को ७ विद्या धन वाले हमारे पुत्र पौत्र आदि ८ सेवन करो और ९ यज्ञ मानों को दी हुई हमारी आशीर्वादें १० अभीष्ट प्रयोजन की कहने वाली ११ हों और पुत्र आदि के लिये दी हुई १२ हमारी १३ आशीर्वादें १४ सत्य १५ हों १६ जगत का निर्म्माण करने वाली १७ पृथिवी मुझ से १८ आह्वान की गई १९ माता भाव करके संभावित २० पृथिवी २१ मुझ को २२ हवि शेष भक्षण की आज्ञा दो और मैं २३ अग्नि स्थापक रूप से २४ अग्नि रूप होता उस भाग को भक्षण करता हूं २५ जठराग्नि में श्रेष्ठ होम हो॥ १०॥ अथाध्यात्मम्- यजमान कहता है कि १ परमेश्वर २ इस ३ योग बल को ४ मुझ यजमान में ५ स्थापन करो और ६ योग के ऐश्वर्य को ७ शम दम आदि धन वाले हमारे शिष्य ८ सेवन-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करो और ९ हमारी कही हुई १० आशीर्वादें ११ सत्य १२ हौं और १३ गुरू की कही हुई हमारी १४ आशीर्वादें १५ विद्यमान हौं, भूमि की धारणाको कहते हैं १६ जगत का निर्म्माण करने वाली १७ पृथिवी देवी मुझ से १८ आव्हान की गई १९ जगतधात्री २० पृथिवी २१ मुझ को २२ आव्हान करो जब दो का परस्पर आव्हान है तब मिलाप होता है और जब मिलाप हुआ तब उपाधि का लय होने से एकत्व होता है उसी कारण में २३ ब्रह्माग्नि का स्थापन करने वाले यजमान रूप से २४ महा वाक प्रभाव द्वारा २५ ब्रह्माग्नि ही हूं॥ १०॥

पिता। द्यौः। उपहूतः। पिता। द्यौः। माम्। उपव्हयताम्।
स्वाहा। अग्नीध्रात्। अग्निः। सवितुः। देवस्य। प्रसवे।
अश्विनोः। बाहुभ्यां। पूष्णः। हस्ताभ्यां। त्वा। प्रतिगृह्णामि। अग्नेः। आस्येन। त्वा। प्राश्नामि॥ ११॥

अथाधिदैवम्॥ इस कंडिका में ४ मंत्र हैं स्वर्ग और यजमान के परस्पर आव्हान के मंत्र १,२ ब्रह्मा भाग को ग्रहण करता है उस का मंत्र ३ दांतों के स्पर्श विना भाग के भक्षण का मंत्र ४— **मंत्रार्थः**— १ जगत का पालन करने वाला २ स्वर्ग ३ आव्हान किया गया ४ पितृभाव से संभावित ५ स्वर्ग ६ मुझ को ७ आव्हान करो में ८ अग्नि स्थापक रूप से ९ अग्नि रूप होता उस भाग को भक्षण करता हूं १० अच्छा होम हो यहां से लेकर (ओम् प्रतिष्ठ) यहां तक ब्रह्मत्व है ११ सविता १२ देवता की १३ प्रेरणा होने पर १४,१५ अश्विनी कुमार के बाहु भाव को प्राप्त अपनी भुजाओं और १६,१७ पूषा देवता के हस्त भाव को प्राप्त अपने हाथों से १८ तुझ प्राशित्र को १९ स्वीकार करता हूं हे प्राशित्र २० अग्नि देवता के २१ मुख से २२ तुझे २३ भक्षण करता हूं। ११॥ **अथाध्यात्मम्**— स्वर्ग की धारणा को कहते हैं १ जगत का

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पालन करने वाला ५ स्वर्गाभिमानी देवता ४ मेरा ७ आव्हान करो, जिसका रण परस्पर आव्हान से धारणा सिद्ध हुई इस कारण ८ मैं महा वाक् द्वारा ९ ब्रह्माग्नि का स्थापन करने वाले यजमान रूप से १० ब्रह्माग्नि ही हूं पृथिवी सूर्य के मध्य जो कुछ है वह सब आत्मा में निश्चय होता है हे ब्रह्मांड रूप उपाधि ११ गुरु १२ देवता की १३ प्रेरणा होने पर १४ मन और हृदय के अंतरिक्ष की १५ भुजाओं और १६ मन के १७ हाथों से १८ तुझे १९ स्वीकार करता हूं हे ब्रह्मांड रूप उपाधि २० ब्रह्माग्नि के २१ मुख से अर्थात् मैं ब्रह्म हूं, इस निश्चय से २२ तुझ को २३ अपनी आत्मा में लय करता हूं ॥ ११ ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
देव। सवितः। एतम्। यज्ञम्। ते। बृहस्पतये। ब्रह्मणे। प्रा
८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६
हुः। तेन। यज्ञम्। अव। तेन। यज्ञपतिम्। तेन। माम्। अव। १२

अथाधिदैवम्— इस कंडिका में ईश्वर प्रार्थना का मंत्र है, **पदार्थः** ब्रह्मा प्रार्थना करता है, १ हे दान आदि गुण से युक्त २ सब के प्रेरक जगदीश्वर वेदों ने ३ इस ४ द्रव्य यज्ञ को ५ तुझ ६ ब्रह्माण्ड पति ७ ब्रह्म के लिये ८ कहा ९ तिस हेतु से १० यज्ञ को ११ रक्षा करो अर्थात् निर्विघ्न करो १२ उसी हेतु से १३ यजमान को रक्षा करो ॥ १४ और उसी हेतु से १५ मुझ ब्रह्मा को १६ रक्षा करो ॥ १२ ॥ **अथाध्यात्मम्**— श्रुति में लिखा है कि योग यज्ञ का ब्रह्मा हृदय है सो हृदय रूप ब्रह्मा कहता है १ हे मोक्ष दानादि गुण से युक्त २ सब के प्रेरक परमेश्वर वेदों ने ३ इस ४ योग यज्ञ को ५ तुझ ६ वेदों के स्वामी ७ ब्रह्म के लिये ८ कहा ९ उस हेतु से १० योग यज्ञ को ११ रक्षा करो अर्थात् सिद्ध करो १२ उसी हेतु से १३ योगी को रक्षा करो अर्थात् योग सिद्ध को दो १४ उसी हेतु से १५ मुझ हृदय रूप ब्रह्मा को १६ संसार से रक्षा करो ॥ १२ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१ २ ३ ४ ५ ६
मनः। जूतिः। आज्यस्य। जुषताम्। बृहस्पतिः। इमम्। यज्ञ
७ ८ ९ १० ११ १२ १३
म्। तनोतु। इमम्। यज्ञम्। अरिष्टम्। सन्दधातु। विश्वे।
१४ १५ १६ १७ १८
देवासः। इह। मादयन्ताम्। ओं। प्रतिष्ठ॥ १३॥

अथाधिदैवम्- इस कण्डिका में ब्रह्मा की अनुज्ञा का मंत्र है, ब्रह्मा प्रार्थना करता है, सविता देवता का १ मन और २ ब्रह्मांड के जन्म रक्षा और मुक्ति को चाहनी वाली बुद्धि ३ घृत का ४ सेवन करो और ५ देवताओं के ब्रह्मा बृहस्पति जी ६ इस ७ यज्ञ को ८ ब्रह्मा होने से विस्तार दो तदनंतर ९ इस १० यज्ञ को ११ निर्विघ्न १२ धारण करो आशय यह है कि मध्य में इड़ा अर्थात् अपना भाग भक्षण करने से यज्ञ विच्छिन्न हुआ है इस लिये ऐसा कहते हैं और १३ सब १४ देवता १५ इस यज्ञ कर्म में १६ तृप्त हों १७ तैसाही हो १८ प्रयाण करो ऐसी प्रार्थना के पीछे ब्रह्मा समिधाओं के ग्रहण समय यजमान के इच्छित प्रयाण को जान कर अङ्गीकार करके प्रयाण में प्रेरणा करता है॥ १३॥ अथाध्यात्मम्- हृदय रूप ब्रह्मा कहता है १ मन २ और ब्रह्मा विष्णु महेश रूप धारी नारायण को चाहने वाली बुद्धि ३ इन्द्रिय शक्ति समूह का ४ सेवन करो और ५ प्राण ६ इस ७ ज्ञान यज्ञ वा योग यज्ञ को ८ विस्तार दो ९ इस १० योगानुष्ठान को ११ निर्विघ्न १२ धारण करो और १३ सब १४ देवता परा नर नारायण नाम १५ इस ज्ञान यज्ञ में १६ तृप्ति को पाओ १७ तैसाही हो १८ प्रयाण करो इस प्रकार हृदय रूप ब्रह्मा से आज्ञा पाने वाले प्राण उदान नाम अध्वर्यु मन में स्थित इन्द्रियों की शक्ति को हृदय में धारण करके वैदिक छन्द रूप अनुयाजों के साथ जाते हैं १३

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
अग्ने। एषा। ते। समित्। च। तया। समिधा वर्धस्व। च।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप्यायस्व। च। वयं। च। आप्यासिषीमहि। वाजजित। अ-
ग्ने। वाजं। सस्टवा ँ सं। वाजजितं। त्वा। सम्मार्ज्मि॥ १४॥

अथाधिदैवम्— इस कण्डिका में २ मंत्र हैं, होता द्वारा समिध के अनुमंत्रण का मंत्र १ अग्नि के मार्जन का मंत्र २ पदार्थः १ हे अग्नि २ यह ३ तेरे ४ प्रज्वलित होने का कारण काष्ठ विशेष ५ है ६ उस से ७ वृद्धि को पा ओ ८ और हम को भी ९ सब ओर से वृद्धि दो १० और ११ हम १२ वृद्धि को प्राप्त करें १३ और अपने पुत्र पशु आदि को १४ सब ओर से वृद्धि दें १५ हे अन्न को जीतने वाले १६ अग्नि देवता १७ अन्न को १८ संपादन करने वाले १९ अन्न को जीतने वाले २० तुझ को २१ भले प्रकार शोधन करता हूं॥ १४॥ अथाध्यात्मम्- वाक् रूप होता कहता है १ हे आत्माग्नि २ ये प्राण ३ तेरे ४ प्रज्वलित होने का कारण ५ हैं ६ उस प्राण रूप समिध से ७ वृद्धि पाओ ८ हम को भी ९ सब ओर से वृद्धि दो कारण यह कि यज्ञ के अनुष्ठान से वेदों का प्रचार है १० और ११ हम १२ वृद्धि को पावें कारण यह कि योग यज्ञ से ही सर्व गत होता है १३ और अपनी इन्द्रियों को १४ यज्ञ कर्म में सब ओर से वृद्धि दें १५ हे प्राण जयकारक १६ आत्माग्नि १७, १८ प्राण की ओर चलने वाले १९ और प्राण को जीतने वाले २० तुझे २१ भले प्रकार शोधन करता हूं॥ १४॥

अग्नीषोमयोः। उज्जितिम्। अनु। उज्जेषम्। मा। वाजस्य।
प्रसवेन। प्रोहामि। यः। अस्मान्। द्वेष्टि। च। वयं। यं।
द्विष्मः। तं। अग्नीषोमौ। अपनुदताम्। एनं। वाजस्य। प्र-
सवेन। अपोहामि। इन्द्राग्न्योः। ऊर्ज्जितं। अनु। उज्जेषम्

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३
मा। वाजस्य। प्रसवेन। प्रोहामि। यः। अस्मान्। द्वेष्टि।
३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१
च। वयं। यं। द्विष्मः। तम्। इन्द्राग्नी। अपनुदताम्। ए
४२ ४३ ४४
नं। वाजस्य। प्रसवेन। अपोहामि॥१५॥ अथाधिदैवम्-

इस कण्डिका में ३ मंत्र हैं, यजमान जुहू और उपभृत् को अपने स्थान से उठा कर वेदी के पश्चिम भाग में आकर पूर्व में जुहू को और पश्चिम दिशा में उपभृत् को स्थापन करता है उसके मंत्र १, २, शत्रु नाशन मंत्र ३॥

पदार्थः॥ १ द्वितीय पुरोडाश के देवता जो अग्नि सोम हैं तिन के २ विघ्न रहित हवि स्वीकार करने से जो उत्कृष्ट विजय है तिस को ३ अनुसरण करके ४ उत्कृष्ट जय को प्राप्त हूं ५ पुरोडाश आदि अन्न की ६ प्रेरणा से ७ मुझ जुहू रूप धारी यजमान को ८ उत्साह देता हूं ९ जो शत्रु असुरादि १० हमसे ११ द्वेष करता है अर्थात् हमारे यज्ञ को विगाड़ना चाहता है १२ और १३ हम १४ जिस अनुष्ठान विरोधी शत्रु से १५ द्वेष करते हैं अर्थात् विनाश के लिये उद्योग करते हैं १६ उस दो प्रकार के शत्रु को १७ अग्नि सोम नाम देवता १८ निरादर करो और मैं भी १९ इस दो प्रकार के शत्रु को २० पुरोडाश देवता की २१ आज्ञा से २२ निरादर करता हूं अगले दोनों मंत्र दर्श देवता विषयक और समान अर्थ वाले हैं, केवल इतना भेद है कि अग्नीषोम की जगह इन्द्राग्नि कहना चाहिये॥ १५॥ अथाध्यात्मम्- १ भोक्ता भोग की २ उत्कृष्ट जय के ३ पीछे ४ उत्कृष्ट जय संसार जय नाम मोक्ष को प्राप्त करूं ५ माया को ६ ज्ञान यज्ञ के ७ फल से ८ देशान्तर में प्राप्त करता हूं ९ जो काम १० हमसे ११ द्वेष करता है अर्थात् मोक्ष लाभ में विघ्न कारक होता है १२ और १३ हम १४ जिस अज्ञान से १५ द्वेष करते हैं १६ उस दो प्रकार के शत्रु को १७ प्रकृति पुरुष १८ निरादर करें मैं भी १९ इस दो प्रकार के शत्रु को २०

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानयज्ञके२१ फल से २२ निरादर करूं २३ योगी और योगेश्वर की २४ जो उत्कृष्ट जय योग सिद्धि है उसके २५ पश्चात् २६ उत्कृष्ट जय को पाऊं अर्थात् समाधि को प्राप्त करूं २७ महा माया को २८ ज्ञान यज्ञ के २९ फल से ३० देशान्तर में प्राप्त करता हूं ३१ जो कर्त्ता पन का अभिमान ३२ हमसे ३३ द्वेष करता है ३४ और ३५ हम ३६ जिस देहाभिमान से ३७ द्वेष करते हैं ३८ उस दोप्रकार के शत्रु को ३९ नरनारायण देवता ४० निरादर करें ४१ इस कर्त्ता पन को ४२ ज्ञान यज्ञ के ४३ फल से ४४ दूर कर्त्ता हूं (प्रश्न) कर्त्ता पन का त्याग कैसे है (उत्तर) श्री भगवान ने भगवद्गीता में कहा है, जो पुरुष योग से युक्त शुद्ध चित्त राग द्वेष से रहित इन्द्रियों को जीतने वाला सब प्राणियों का आत्मा रूप है वह कर्म कर्त्ता भी लिप्त नहीं होता है + तत्व का ज्ञाता, सावधान बुद्धि पुरुष देखता, सुनता, स्पर्श करता, सूंघता, खाता, चलता, सोता, श्वास लेता, बोलता, मूत्र विष्टा करता, पकड़ता, नेत्र खोलता, पलक मारता भी (इन्द्रियां अपने विषयों में वर्तती हैं) इस प्रकार निश्चय करता मानता है कि मैं कुछ नहीं करता हूं + जो पुरुष ज्ञान चक्षु से देखता है कि सब कर्म प्रकृति से किये जाते हैं आत्मा अकर्त्ता है वही द्रष्टा है ॥१५॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
वसुभ्यः। त्वा। रुद्रेभ्यः। त्वा। आदित्येभ्यः। त्वा। द्यावापृ
८ ९ १० ११ १२
थिवी। सञ्जानाथाम्। मित्रावरुणौ। तृप्ता। त्वा। अव
१३ १४ १५ १६ १७ १८
ताम्। अक्तः। रिहाणाः। वयः। व्यन्तु। मरुतः। पृषतीः।
१९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६
गच्छ। वशा। पृश्निः। भूत्वा। दिवं। गच्छ। ततः। नः।
२७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४
वृष्टिं। आनय। अग्ने। चक्षुष्पाः। असि। मे। चक्षुः। पाहि।१६

अथाधिदैवम्—इस कंडिका में ७ मंत्र हैं, जुहू को हाथ में लेकर उससे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिधि के मार्जन का मंत्र १,२,३ हाथ से प्रस्तर के ग्रहण का मंत्र ४ ग्रहण किये हुए प्रस्तर के अग्र मध्य मूल भागों को क्रम से जुहू उपभृत् ध्रुवास्थ घृत में लिप्त करने का मंत्र ५ एक तृण को प्रस्तर से पृथक करके फिर प्रस्तर को उठा कर अग्नि में डालने का मंत्र ६ अध्वर्यु प्रस्तर से लिये हुए तृण को आहवनीय अग्नि में डाल कर आत्मा को हृदय देश पर स्पर्श करके आचमन करता है उस का मंत्र ७ ॥ **पदार्थः**-हे मध्यम परिधि १ वसु देवताओं की प्रीति के लिये २ तुझे मार्जन करता हूं हे दक्षिण परिधि ३ रुद्र देवताओं की प्रीति के अर्थ ४ तुझे मार्जन करता हूं हे उत्तर परिधि ५ आदित्य नाम देवताओं की प्रीति के अर्थ ६ तुझे मार्जन करता हूं तीनों परिधि के मार्जन से तीनों सवन के देवता तृप्त होते हैं यह भाव है ७ हे पृथिवी स्वर्ग के अभिमानी देवता तुम दोनों ८ ग्रहण किये हुए प्रस्तर को अच्छे प्रकार जानों और हे प्रस्तर ९ वायु और सूर्य देवता १० जल वर्षा से ११ तुझे १२ रक्षा करो १३ घृत लिप्त प्रस्तर को १४ चाटते हुए १५ पक्षी रूप गायत्री आदि छन्द १६ जाओ हे प्रस्तर तुम १७ मरुत नाम देवताओं के १८ वाहन को १९ प्राप्त करो अर्थात् वायु वाहन की समान वेग से अन्तरिक्ष को जाओ तथा २० स्वाधीन २१ आदित्य रूप अथवा सूक्ष्म देह धारी गौ कामधेनु की समान तृप्त करने वाली २२ होकर २३ स्वर्ग को २४ जाओ २५ स्वर्ग प्राप्ति के पीछे २६ हमारे लिये भूलोक में २७ वर्षा को २८ लाओ अर्थात् अंतरिक्ष में जाकर वहां वाहन सहित मरुत गणों को तृप्त करके फिर स्वर्ग में जाकर देवताओं को तृप्त करके पृथिवी पर वर्षा करो यह आहुति का परिणाम जतलाया यह भाव है, हे २९ अग्नि तुम ३० अपनी ज्वाला से नेत्र के रक्षा करने वाले ३१ हो ३२ मेरे ३३ नेत्र को ३४ रक्षा करो अर्थात् प्रस्तर की तीव्र ज्वाला से नेत्रों का उपद्रव न हो (प्रश्न) १ किस कारण एक तृण को प्रस्तर से निकाल लेते हैं (उ०) श्रुति के अनुसार- यजमान प्र

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्तर रूप है जो सम्पूर्ण प्रस्तर को अग्नि में डालदे, तो यज मान शीघ्र ही पर लोक को चला जावे, इस लिये एक तृण के निकालने से अपनी पूर्ण आयु तक जीता है, प्रश्न २ किस कारण एक मुहूर्त्त तृण को धारण करके पीछे अग्नि में डालते हैं (उत्तर) श्रुति से जहां इस का दूसरा आत्मा प्रस्तर रूप गया वहाहीं इसको पहुंचाते हैं यदि तृण को न डालें तो यज मान को वहां न पहुंचावे इस लिये इस तृण को भी उक्त अग्नि में डाल देते हैं ॥ १६॥

अथाध्यात्मम्— हे जीव रूप परिधि १ अपरा प्रकृति के विकार रूप देवता ओं के अर्थ २ तुझे मार्जन करता हूं हे नर रूप परिधि ३ परा प्रकृति के विकार रूप देवता ओं के अर्थ ४ तुझे मार्जन करता हूं हे नारायण रूप परिधि ५ ब्रह्मा रूप देवता ओं के अर्थ ६ तुझे मार्जन करता हूं ७ हृदय और मन ८ यजमान रूप प्रस्तर तुझ को भले प्रकार जानों और हे यजमान ९ प्राण और उदान १० अमृत वर्षा से ११ तुझे १२ रक्षा करो १३ इन्द्रिय शक्ति युक्त आत्मा को १४ आस्वादन करते १५ पक्षी रूप गायत्री छंद १६ यज मान को ले कर जाओ हे यजमान तुम १७ प्राणों की १८ वाहन सुषुम्ना नाड़ी को १९ प्राप्त करो, हे जीव रूप परा शक्ति तुम प्राण में शयन करने वाली सूर्य रूप २२ हो कर २३ गगण मंडल को २४ जाओ २५ तदनंतर २६ हम योगियों के लिये २७ अमृत वर्षा को २८ लाओ २९ हे ब्रह्माग्नि तुम ३० ज्ञान चक्षु के रक्षक ३१ हो ३२ मेरी ३३ ज्ञान चक्षु को ३४ रक्षा करो ॥ प्रश्न— गायत्री आदि छंद यज मान को स्वर्ग में ले जाते हैं, तो गायत्री देवी के गुण और फल क्या हैं (उ०) ब्राह्मण सर्वस्व विष्णुधर्मोत्तर में कहा है, कर्मेन्द्रियां ५ ज्ञानेन्द्रियां ५ ज्ञानेन्द्रियों के विषय ५ पञ्चभूत, मन, बुद्धि, आत्मा, अव्यक्त ये २४ गायत्री के २४ अक्षर हैं, और पच्चीसवां जो प्रणव है उस को सर्व व्यापी पुरुष जानों, योगी याज्ञवल्क्य ने कहा है कि मैं अक्षरों के देवता ओं को कहूंगा (तत्) शब्द का देवता अग्नि है (स) का

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवता वायु है (वि) का देवता सूर्य है) (तु:) का देवता विद्युत् है (व) का देवता यम है (रे) का देवता वरुण है (ण) का देवता बृहस्पति है (यम्) का देवता पर्जन्य है (भ) का देवता इन्द्र है (र्गः) का देवता गन्धर्व है (दे) का देवता पूषा है (व) का देवता मित्रावरुण है (स्य) का देवता त्वष्टा है (धी) के देवता वसु हैं (म) का देवता मरुत् है (हि) का देवता सोम है (धि) का देवता अङ्गिरा है (यः) के देवता विश्वेदेवा हैं (यः) के देवता अश्विनी कुमार हैं (नः) का देवता प्रजापति है (प्र) के देवता सब देवता हैं (चो) के देवता रुद्र हैं (द) के देवता ब्रह्मा हैं (यात्) के देवता विष्णु हैं, अक्षरों के ये २४ देवता हुए जप के समय इन्हों का स्मरण करके इन की सायुज्यता को पावे १८ विद्याओं में मीमांसा शास्त्र उत्तम है, उस्से उत्तम तर्क शास्त्र, उस्से उत्तम पुराण हैं, पुराणों से उत्तम धर्म शास्त्र हैं, धर्म शास्त्रों से उत्तम श्रुति है उस्से भी उत्तम उपनिषद हैं, उपनिषदों से उत्तम गायत्री है, प्रणव से युक्त गायत्री सब मंत्रों में दुर्लभ है, तीनों वेदों में गायत्री से अधिक कुछ विद्यमान नहीं है- गायत्री वेदों की माता है, गायत्री ब्राह्मणों की माता है, जप कर्त्ता की रक्षा करती है इस कारण गायत्री कही जाती है गायत्री और सविता दोनों का वाच्य वाचक सम्बन्ध है यह सविता साक्षात् वाच्य है, और परा रूप गायत्री वाचिका है, कुशिक के पुत्र जितेन्द्री विश्वामित्र क्षत्री ने गायत्री के प्रभाव से ही राज ऋषि भाव को त्याग कर ब्रह्म ऋषि पद को पाया, और दूसरे भुवन के उत्पन्न करने में बहुत बड़ी सामर्थ्य पाई भले प्रकार उपासना की हुई गायत्री क्या २ न देवै अर्थात् सब कुछ देवै, वेद पाठ और शास्त्र पढ़ने से भी ब्राह्मण नहीं है, तीनों काल पर गायत्री देवी के जप से ही ब्राह्मण होवै, नहीं तो द्विज मात्र है, जिस कारण गायत्री ही त्रिवेद स्वरूप है उस कारण गायत्री

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही परम विष्णु है, गायत्री ही परम शिव, और गायत्री ही ब्रह्मा है, मनु-
जी कहते हैं ब्रह्मा जी ने अकार, उकार, मकार और भूर्भुवः स्वः को तीनों
वेद से निकाला और तीनों वेदों से ही तीनों पाद गायत्री को निकाला-
मनु, यम और वशिष्ठ का वाक्य है कि ओंकार सहित तीनों महा व्याहृ-
ति और त्रिपदा गायत्री को ब्रह्म का मुख जान्ना चाहिये, याज्ञवल्क्य ऋ-
षि ने कहा है कि गायत्री और वेदों को तराजू में तोला एक ओर अङ्ग स
हित चारों वेद और एक ओर गायत्री स्थिति हुई अर्थात् दोनों समान-
हुए, वेदों के सार उपनिषद् माने गये हैं उन्हों का सार गायत्री तथा ती
नों व्याहृति हैं जो ब्रह्मचारी ओंकार और तीनों व्याहृति सहित गायत्री-
को गुरु से प्राप्त करता है वही श्रोत्रिय कहाता है इस गायत्री के ज्ञा-
न से सब शास्त्र विदित होवें, और उस पुरुष को विराट् पुरुष की उपा-
सना सिद्ध होवे, जो पुरुष इस प्रकार गायत्री को अर्थ सहित जानता है
वही ब्राह्मण है नहीं तो वेदों का पारगामी भी शूद्र धर्म वाला होवे, गा-
यत्री को न जान कर ब्राह्मण वर्ण से च्युत होता है और श्रुति के दृष्टांत से
निंदा से संयुक्त होवे, व्यासजी का वचन है कि यह गायत्री प्रातः काल-
पर गायत्री नाम है, मध्यान्ह पर सावित्री नाम है और सायं काल पर स
रस्वती नाम है वही तीनों काल पर संध्या कही गयी है, गायत्री सदैव दा
न दोष और अन्न दोष पातक और उपपातक से जप कर्त्ता को रक्षा कर-
ती है उस कारण गायत्री कहाती है, सविता (ईश्वर) के प्रकाशित क-
रने से वही सावित्री कही गई, जगत की प्रेरणा करने और वाचक रूप हो-
ने से सरस्वती कही गई, ऋष्य शृङ्ग का वचन है, जो देवी गायत्री स-
र्वात्मा से सब प्राणियों में भले प्रकार स्थित है वह मोक्ष का कारण है
वह मोक्ष का स्थान निर्विकार ब्रह्म स्वरूप है, कूर्म पुराण का वचन है

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गायत्री वेदों की माता है, गायत्री लोक को पवित्र करने वाली है, गायत्री से परे दूसरा मंत्र और विज्ञान नहीं कहाता है, याज्ञवल्क्य जी का वचन है, गायत्री वेदों की माता है, गायत्री पापों का नाश करने वाली है इस लोक और स्वर्ग लोक में गायत्री से श्रेष्ठ पवित्र करने वाला नहीं है, जो नरक रूप समुद्र में पड़े हैं उन को यह देवी हाथ से निकालने वाली है उस कारण पवित्र ब्राह्मण सदा प्रातः काल पर उस का जप करे, जो ब्राह्मण गायत्री के जप में निरंतर प्रीति मान है उस को देवताओं के अर्चन यज्ञ आदि और पितृश्राद्ध में नियुक्त करे उस में पाप नहीं ठहरता है जैसे जल की बूंद कमल पर, गायत्री का आधा पद आधी ऋचा वा एक ऋचा उनसब पापों को शुद्ध करती है जोकि ब्रह्म हत्या, सुरा पान, गुरुस्त्री सङ्गम और जो दूसरे पाप हैं ऐसा मनुजी ने कहा है, यज्ञ, दान में प्रीतिमान साङ्ग वेद का पढ़ने वाला विद्वान मनुष्य उस पुरुष की सोलहवीं कला के भी समान नहीं है जोकि गायत्री के ध्यान से पवित्र है, वृहत् विष्णु स्मृति का वचन है ब्राह्मण, क्षत्री और वैश्य की जाति जो कि समय पर गायत्री और निज क्रिया से हीन हो साधुओं में निन्दा योग्य होती है, अग्निपुराण में लिखा है, जो ब्राह्मण सदा दोनों काल पर गायत्री को जपता है वह नीच से दान लेने वाला भी परम गति को पाता है ॥ १६॥

यम् परिधिम्पर्यधत्था अग्ने देव पणिभिर्गुह्यमानः। तन्त एतमनुजोषम्भरामि येषनेत्वदपचेतयाताअग्नेः प्रियम्पाथो पीतम् ॥ १७

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
अग्ने। देव। पणिभिः। गुह्यमानः। यं। परिधिं। पर्यधत्थाः
८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५
ते। जोषं। तम्। एतम्। अनुभरामि। एषः। त्वत्। न।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६ १७ १९ २० २१ २२ २३
इत्। अपचेतयातै। अपि। अग्नेः। प्रियं। पाथः। इतम्॥ १७॥

अथाधिदैवम्— इस कंडिका में दो मंत्र हैं, पहिली परिधि को अग्नि में डालने का मंत्र १ दक्षिण उत्तर परिधि को अग्नि में डालने का मंत्र २ यं परिधि मिति (देवल ऋषिः-विराट रूपा त्रिष्टु० छं०— अग्नि र्देवता) १ अग्नेरिति तथा याजुषी तथा) २

पदार्थः॥ १ हे आहवनीय अग्नि २ देवता ३ असुरों से ४ घिरे हुए तुम ने ५ जिस ६ परिधि को असुरों का उपद्रव निवारण करने के लिये पश्चिम दिशा में ७ स्थापित किया ८ आप की ९ प्रिय १० उस ११ इस परिधि को १२ अग्नि में डालता हूं हे अग्न्याभिमानी देवता १३ यह परिधि १४ तुम से १५,१६,१७ वियोग को मत जानो तुम मैंही स्थिति रहो, हे दक्षिण उत्तर परिधि तुम १८ भी १९ आहवनीय अग्नि के २० प्रिय २१ अन्न भाव को २२ प्राप्त करो॥ १७

अथाध्यात्मम्—१ हे ब्रह्माग्नि २ ज्योतिः स्वरूप ३ काम आदि असुरों से ४ घिरे हुए तुमने ५ जिस ६ जीव नाम परिधि को काम आदि का उपद्रव निवारण करने के लिये पश्चिम दिशा में ७ स्थापन किया है ८ आप की ९ प्रिय १० उस ११ इस परिधि को १२ आप के मध्य डालता हूं अर्थात् आप का अंश जानता हूं हे ब्रह्म ज्योतिः परा शक्ति १३ यह जीव रूप परिधि १४ तुम से १५,१६,१७ वियोग मत मानो अर्थात् तुम मेंही ठहरो हे नर नारायण रूप दक्षिणोत्तर परिधि तुम दोनों १८ भी १९ ब्रह्माग्नि के २० प्रिय २१ अन्न भाव को २२ प्राप्त करो॥ १७॥

सꣳ स्रवभागा स्थेषा बृहन्तः प्रस्तरेष्ठाः परिधेया अ देवाः। इमां वाचमभि विश्वे गृणान्त आसद्यास्मिन्बर्हिषि मादयध्वं स्वाहा वाट् १८

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वे देवाः। संस्रवभागाः। इषः। बृहन्तः। प्रस्तरेष्ठाः। च। परिधेयाः। स्थ। अस्मिन्। वर्हिषि। आसद्ये। इमाम्। वाचम्। स्वाहा। वाट्। अभि गृणन्तः। मादयध्वम्॥ १८॥

अथाधिदैवम्— इस कंडिका में दो मंत्र हैं, अध्वर्यु जुहू उपभृत् को दोनों हाथ से पकड़ कर उनके द्वारा संस्रव भागों को होम करता है तिसका मंत्र १ उसके होम का मंत्र २॥

संस्रवभागा इति (सोम श्रुष्म ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः- विश्वे देवा देवता) १
स्वाहा वाडिति (तथा याजुषी तथा) २

पदार्थः १ हे विश्वे देवा तुम २ ताए हुए घृत के भागी ३ और घृत युक्त अन्न के द्वारा ४ महान् ५ प्रस्तर पर स्थित ६ और ७ परिधि से प्रादुर्भूत ८ हो ९ इस १० वाणी को ११ वैदिक मंत्र से १२ हवि दिया १३ कहते हुए १४ इस १५ यज्ञ में १६ बैठ कर १७ तृप्त हूजिये॥ १८॥

अथाध्यात्मम्- १ हे परानरनारायणो २ तुम इन्द्रिय रूप हवि के भागी ३ प्राण रूप अन्न से ४ ब्रह्मांड रूप ५ यजमान में प्रतिष्ठित ६ और ७ ज्ञान यज्ञ में ब्रह्माग्नि के परिधि रूप ८ हो ९ इस १० हार्दाकाश में ११ प्रवेश होकर १२ इस १३ वाणी को १४ कि महावाक्य से १५ हवि दिया १६ कहते हुए १७ आनंद वा तृप्ति को प्राप्त कीजिये॥ १८॥

घृताची स्थो धुर्यौ पातꣳ सुम्ने स्थः सुम्ने माधत्तम्। यज्ञनमश्च त उपच यज्ञस्य शिवे सन्तिष्ठस्व स्विष्टे मे सन्तिष्ठस्व॥ १९॥

घृताची। स्थः। धुर्यौ। पातं। सुम्ने। स्थः। मा। सुम्ने। धत्तं। यज्ञं। ते। नमः। च। उप। च। यज्ञस्य। शिवे। संतिष्ठस्व। मे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्विष्ट। सन्निष्ठस्व॥१९॥ अथाधिदैवम्- इस कंडिका में दो मंत्र हैं, अध्वर्यु शकट की धुरी पर जुहू उपभृत् को स्थापन करता है उस का मंत्र १ वेदी के स्पर्श का मंत्र॥२॥

घृताची इति (प्रजापति ऋषिः- अनुष्टुप् छन्दः- स्रुक् स्रुचौ-देवते) १

यज्ञनमश्च उत इति (भूर्पादि ऋषयः-याजुषी- यज्ञो देवता) २

पदार्थः- हे जुहू हे उपभृत् तुम दोनों १ घृत को प्राप्त करने वाली २ हो सो तुम ३ शकट के दोनों बैलों को ४ रक्षा करो तुम ५ सुख रूप ६ हो उस कारण ७ मुझ को ८ सुख में ९ स्थापन करो १० हे यज्ञ पुरुष ११ तुम्हारे लिये १२ नमस्कार १३ और १४ न्यून क्रिया की वृद्धि हो १५ हे चैतन्य १६ यज्ञ के १७ कल्याण में १८ तत्पर हूजिये अर्थात् यज्ञ को न्यून और अधिकता दोष से शुद्ध कीजिये १९ और मुझ को २० श्रेष्ठ यज्ञ की २१ प्राप्ति कराइये॥१९॥ अथाध्यात्मम्- हे वाणी मन तुम दोनों १ इन्द्रिय शक्ति समूह को प्राप्त करने वाले २ हो ३ कर्मेन्द्रिय और ज्ञानेंद्रिय को ४ रक्षा करो तुम दोनों ५ आनंद स्वरूप ६ हो ७ मुझ यजमान को ८ ब्रह्मानंद में ९ स्थापन करो १० हे विष्णु ११ तुम्हारे अर्थ १२ नमस्कार १३ और १४ उपासना १५ हे विद्वान् १६ ज्ञान यज्ञ के १७ कल्याण वा सिद्धि में १८ तत्पर हूजिये १९ मेरी २० मोक्ष में प्रवृत्त हूजिये॥१९॥

अग्नेदब्धायो शीतम पाहि मा दिद्योः पाहि प्रसित्यै पाहि दुरिष्ट्यै पाहि दुरदभन्याय विषन्नः पितु कृणु सुषदा योनौ स्वाहा वाड्ग्नये संवेशपतये स्वाहा सरस्वत्यै यशोभगिन्यै स्वाहा॥२०॥

अदब्धायो। अशीतम। अग्ने। मा। दिद्योः। पाहि। ए। प्र

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिच्याः। पाहि। ऐं। दुरिष्ट्याः। पाहि। ऐं। दुरद्मन्याः। पाहि। सुषद्योनौ। नः। पितम्। अविषम्। आकृणु। स्वाहा। अग्नये वाते। संवेशपतये। स्वाहा। यशो भगिन्यै। सरस्वत्यै। स्वाहा ॥२०॥ अथाधिदैवम्- इसकंडिका में ३ मंत्र हैं उन को कहते हैं, अध्वर्यु होम के लिये स्रुक् और स्रुव को ग्रहण करता है उसका मंत्र १ दक्षिणाग्नि में होम करता है उसके मंत्र २,३—

अग्ने दब्धायो इति	(प्रजापति ऋषिः	याजुषी छं०	- गार्हपत्याग्नि देवता) १
अग्नये इति	(तथा	याजुषी त्रिष्टुप् छं०	- दक्षिणाग्नि देवता) २
सरस्वत्या इति	(तथा	तथा	- लिङ्गोक्त देवता) ३

पदार्थः— १ हे अहिंसक यजमान वाले २ बहुत बड़े भोक्ता अथवा बहुत बड़े व्यापक ३ गार्हपत्य नाम अग्नि ४ मुझ को ५ शत्रु के चलाये हुए वज्र समान शस्त्र से ६ रक्षा करो ७ हे यज्ञ लक्ष्मी ८ बंधन करने वाले जाल से ९ रक्षा करो १० हे वेदाभिमानी देवता ११ शास्त्र विरुद्ध यज्ञ से १२ मुझे रक्षा करो १३ हे धर्म शास्त्राभिमानी देवता १४ दुष्ट भोजन से १५ मुझको रक्षा करो १६ भले प्रकार ठहरने योग्य घर में १७ हमारे १८ हवि अन्न को १९ विष रहित २०,२१ वैदिक मंत्र के द्वारा करो २२ सायुज्य मोक्ष के स्वामी २३ विष्णु रूप अग्नि के अर्थ २४ हवि दिया २५ यश की वहन वाणी रूप २६ सरस्वती के अर्थ २७ वैदिक मंत्र से २८ हवि दिया॥ २०॥

अथाध्यात्मम्— १ हे अहिंसित यजमान वाले २ व्यापक तम ३ ब्रह्माग्नि ४ मुझ यजमान को ५ अज्ञान रूप वज्र से ६ रक्षा करो ७ हे परा शक्ति तुम ८ संसार रूप जाल से ९ रक्षा करो १० हे वेदाभिमानी देवता ११ शास्त्र विरुद्ध यज्ञ से १२ रक्षा करो १३ हे धर्म शास्त्राभिमानी देवता १४ दुष्ट भोजन से १५ रक्षा करो १६ जिसमे सुख से वास करते हैं उस

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हार्दाकाश में १७ हम योगियों के १८ प्राण रूप अन्न को १९,२०,२१ महा वाक् द्वारा बंधन बिष से रहित करो २२ आत्मा रूप अग्नि के लिये २३ हवि दिया २४ योगेश्वर नारायण के अर्थ २५ अच्छा होम हो २६,२७ महा वागाभिमानिनी सरस्वती देवी के अर्थ २८ अच्छा होम हो— प्रश्न- दुष्ट यज्ञ क्या है १ दुष्ट भोजन क्या है २ श्रेष्ठ यज्ञ क्या है ३ श्रेष्ठ भोजन क्या है ४—उन्हीं के उत्तर में येभगवद्वाक्य हैं, हे अर्जुन फल को संकल्प करके जो यजन किया जाता है और जो यजन धार्मिकत्व विख्यात करने के लिये है उस यज्ञ को राजसी जानो १ जो यज्ञ शास्त्रोक्त विधि से हीन अन्न दान से रहित मंत्र स्वर वर्ण से हीन दक्षिणा से रहित, श्रद्धा से शून्य है उस को तामसी कहते हैं २ पहले प्रश्न का उत्तर समाप्त हुआ— जो आहार अत्यंत कड़वे, खारी, ऊष्ण, चर्परे, रूखे, दाह कारक, दुःख शोक रोग के दाता हैं वे राजसी पुरुषों के प्रिय हैं ३ जो भोजन एक पहर का बना हुआ शीतल, अधपका, रस हीन दुर्गंध युक्त बासा, दूसरे का झूंठा और यज्ञ के अयोग्य अपवित्र भी है वह तामसी पुरुष का प्रिय है, दूसरे प्रश्न का उत्तर समाप्त हुआ ४— यज्ञ स्वरूप प्राप्ति के लिये यज्ञ करने योग्य ही है इस प्रकार मन को समाहित करके फल इच्छा रहित पुरुषों से जो शास्त्रोक्त यज्ञ अनुष्ठान किया जाता है वह सात्विक है ५ तीसरे प्रश्न का उत्तर समाप्त हुआ— जो आहार, जीवन, उत्साह, शक्ति, आरोग्यता, चित्त की प्रसन्नता और अभि रुचि के बढ़ाने वाले हैं, और रस से युक्त, घृत आदि से युक्त, देह में चिर काल ठहरने वाले और हृदय के प्रिय हैं वे सात्विकी पुरुषों के प्यारे हैं ६ भगवद्गीता अध्याय १७ चौथे प्रश्न का उत्तर समाप्त हुआ॥ २०॥

वेदोसियेनत्वन्देव वेद देवेभ्यो वेदोऽभवस्ते

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नमह्यं वेदो भूयाः। देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित। मनस्पत इमं देव यज्ञं स्वाहा वाते धाः २१

देव। वेद। वेदः। असि। देवेभ्यः। वेदः। अभवः। तेन। मह्यम्। वेदः। भूयाः। गातुविदः। देवाः। गातुं। वित्वा। गातुं। इत। मनस्पते। देव। इमम्। देव यज्ञं। स्वाहा। वाते। धाः॥२१

अथाधिदेवम्— इस कंडिका में दो मंत्र हैं, उनको कहते हैं, यजमान की पत्नी मुष्टि परिमित दर्भ पूलक की ग्रंथि को खोलती है, और अध्वर्यु वेदी तक दर्भों को फैलाता है और यहांही कमर से बंधे हुए मुञ्जयोक्त्र काभी विसर्जन होता है उस का मंत्र १ ध्रुवा में स्थित आज्य को होमता है उसका मंत्र २

वेदो सीति (प्रजापति ऋषिः— याजुषी छन्दः — वेदा देवता) १
देवा गातुविद इति (मनस्पति ऋषिः— त्रिपदा विराट् छंदः— वातो देवता) २

पदार्थः—१ हे कुश मुष्टि से प्रादुर्भूत वेद २ देवता तुम ३ ऋग् आदि रूप वाले अथवा ज्ञाता ४ हो ५ तुम देवताओं के अर्थ ६ ज्ञापक ७ हुए ८ उस कारण ९ मेरे अर्थ १० ज्ञापक ११ हूजियै १२ हे यज्ञ के ज्ञाता १३ देवताओ १४ यज्ञ को १५ जान कर १६ यज्ञ में १७ आओ अथवा हमारे यज्ञ से संतुष्ट हुए अपने लोकों को जाओ इस प्रकार देवताओं को विसर्जन कर परमेश्वर से कहते हैं १८ हे मन के प्रवर्त्तक १९ परमेश्वर २० इस २१ यज्ञ को २२ वेदोक्त विधि से २३ यज्ञ पुरुष में २४ स्थापन करो॥ २१॥

अथाध्यात्मम्— १ हे द्योतनात्मक २ शब्दब्रह्म वा महा वाक्य ३ वेद रूप अथवा ज्ञाता ४ हो ५ इन्द्रियों के अर्थ ६ ज्ञापक ७ हुए ८ उस कारण ९ मेरे लिये १० ज्ञापक ११ हूजियै १२ हे ज्ञान यज्ञ के ज्ञाता १३ परा नरनारायण नाम देवताओ १४ ज्ञान यज्ञ को १५ जानकर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६ ज्ञान यज्ञ में १७ प्रगट हूजिये १८ हे जितेन्द्रिय १९ योगी तुम २० इ
स २१ जीव रूप हवि को २२ महा वाक् द्वारा २३ सर्व व्यापी ब्रह्म में २४
स्थापन करो ॥ २१ ॥

सम्बर्हिरङ्क्ताꣳ हविषा घृतेन समादि
त्यैर्वसुभिः संमरुद्भिः। समिन्द्रो विश्वदेवे
भिरङ्क्तां दिव्यन्नभो गच्छतु यत्स्वाहा। २२

इन्द्रः। यत्। वर्हिः। घृतेन। हविषा। समङ्क्ताम्। आ
दित्यैः। सं। वसुभिः। सं। मरुद्भिः। सं। विश्वे देवेभिः॥
समङ्क्ताम्। दिव्यं। नभः। गच्छतु। स्वाहा॥ २२॥

अथाधिदैवम्— इस कंडिका में जुहू से कुशा का होम है १
सम्बर्हिरिति (प्रजापतिऋषिः— विराट् रूपा त्रिष्टुप् छं०— लिङ्गोक्तदेवता) १
पदार्थः— १ इन्द्र देवता २ जो ३ कुशा है उस को ४ घृत रूप ५ हवि से ६
भले प्रकार लिप्त करो ७ मरुद्गणों के साथ होकर ८ लिप्त करो ९ अष्ट व
सुओं के साथ होकर १० लिप्त करो ११ द्वादश आदित्यों के साथ १२ लिप्त
करो १३ विश्वे देवाओं के साथ १४ लिप्त करो प्राण प्रतिष्ठा से युक्त वह
कुशा यजमान को सायुज्य मोक्ष प्राप्त कराने के लिये १५ स्वर्ग में प्रकट १६
सूर्य रूप ज्योति में १७ जाओ १८ अच्छा होम हो ॥ २२ ॥

अथाध्यात्मम्— १ यजमान २,३ मानस ज्योति को ४ इन्द्रिय श
क्ति रूप ५ हवि से ६ भले प्रकार युक्त करो ७ इन्द्रियों के देवताओं से ८
लिप्त करो ९ अपरा का विकार जो देह है उस में जो आत्मा की किरण वि
द्यमान हैं उनसे १० संयुक्त करो ११ प्राणों से १२ लिप्त करो १३ परान
रनारायण नाम सब देवताओं से १४ संयुक्त करो वह मानस सूर्य १५
स्वर्ग में प्रादुर्भूत १६ सूर्य ज्योति को १७ प्राप्त करो १८ श्रेष्ठ होम हो। २२

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कस्त्वा विमुञ्चति सत्वा विमुञ्चति कस्मैत्वा विमुञ्चति तस्मैत्वा विमुञ्चति। पोषाय रक्षसाम्भागोऽसि॥२३॥

त्वा। कः। विमुञ्चति। स। त्वा। विमुञ्चति। कस्मै। त्वा। विमुञ्चति। तस्मै। पोषाय। त्वा। विमुञ्चति। रक्ष सा म्। भागः। असि॥२३॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में दो मंत्र हैं, अध्वर्यु आप आहवनीय की परिक्रमा देकर वेदी के दक्षिण भाग में उत्तराभिमुख बैठ कर प्रणीता पात्र को ले के वेदी के मध्य में स्थापन करके किसी स्थान पर पलट देवे१ प्रथम पुरोडाश के कपाल से ओदन कणों को निकाल कर कृष्णाजिन के समीप स्थान पर उत्कर में डालता है उसका मंत्र२

कस्त्वेति (प्रजापति ऋषिः- याजुषी छंदः- प्रजापति र्देवता) १

रक्षसामिति (तथा याजुषी गायत्री- रक्षो देवता) २

पदार्थः - हे प्रणीता पात्र१ कौन२ तुझ को३ त्याग करता है४ प्रजापति५ तुझ को ६ त्याग करता है७ किस प्रयोजन के लिये ८ तुझ को ९ त्याग करता है १० उस यजमान को पुत्रादि से पुष्ट करने के लिये११ तुझ को १२ त्याग करता है क्योंकि यज्ञ को करके प्रणीता पात्र का विसर्जन न करने से यजमान को अप्रतिष्ठा की प्राप्ति है इस लिये विसर्जन अवश्य करना चाहिये यह श्रुति की आज्ञा है, हे कण समूह तुम १४ राक्षसों के १५ भाग १६ हो॥२३॥

अथाध्यात्मम्- हे आत्म प्रतिबिंब१ तुझ को२ कौन३ त्याग करता है४ योगारूढ योगी५ तुझ को ६ त्याग करता है७ किस प्रयोजन के लिये ८ तुझ को ९ त्याग करता है १०,११ पूर्ण ब्रह्म की प्राप्ति के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये १२ तुझ को १३ त्याग करता है हे इन्द्रिय समूह तुम १४ देहाभिमानियों के १५ भाग १६ हो॥ २३॥

संवर्चसा पयसा सन्तनूभिरगन्महि मनसा सासथं शिवेन। त्वष्टा सुदत्रो विदधातु रायोनुमार्ष्टु तन्वो यद्विलिष्टम्॥ २४॥

वर्चसा। सम गन्महि। पयसा। सं। तनूभिः। सं। शिवेन। मनसा। सं। सुदत्रः। रायो। विदधातु। तन्वेः। यत्। विलिष्टं तत्। तुष्टा। अनु मार्ष्टु॥ २४॥

अथाधिदैवम्— अध्वर्यु आहवनीय अग्नि की परिक्रमा करके दक्षिणादिशा में उत्तराभिमुख हुआ पूर्ण पात्र को लेता है और यजमान अञ्जली में जल को लेकर मुख को शुद्ध करता है उस का मंत्र १

संवर्चसेति (प्रजापति ऋषिः- त्रिष्टुप् छन्दः- त्वष्टा देवता) १

पदार्थः- १ हम ब्रह्म तेज से २ संयुक्त होवें ३ क्षीर आदि रस से ४ संयुक्त होवें ५ अनुष्ठान में समर्थ अङ्गों अथवा पुत्र आदि से ६ संयुक्त होवें ७ शांत वा कर्म की श्रद्धा से युक्त ८ मनसे ९ संयुक्त होवें और १० ब्रह्मा, विष्णु महेश का रक्षक महानारायण ११ कर्म उपासना के साधक धन १२ हमको दो १३ मेरे शरीर का १४ जो अंग १५ विशेष न्यून है अर्थात् ईश्वर सेवा में असमर्थ है १६ उस को १७ वह ईश्वर १८ न्यूनता के दूर करने से शुद्ध करै अर्थात् धन और शरीर की पुष्टि करै॥ २४॥

अथाध्यात्मम्— आत्मप्रतिबिंब के अभिनिवेश को त्याग करप्रार्थना करता है १ हम ब्रह्म तेज से २ संयुक्त होवें ३ प्राण से ४ संयुक्त होवें ५ इंद्रियों से ६ संयुक्त होवें ७ शांत ८ मनसे ९ संयुक्त होवें और १० ब्रह्मा विष्णु महेश का रक्षक महानारायण ११ योग लक्ष्मी को १२ प्रा-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त करो १३ मेरे शरीर का १४ जो अंग १५ विशेष न्यून अर्थात् योगानु में असमर्थ है १६ उस को १७ ईश्वर १८ शुद्ध अर्थात् समर्थ करो।२४

दिवि विष्णुर्व्यक्रंस्तजागतेन छन्दसा ततो निर्भक्तो योऽस्मान्द्वेष्टि यञ्चवयन्द्विष्मोन्तरिक्षे विष्णुर्व्यक्रंस्त त्रैष्टुभेन छन्दसा ततो निर्भक्तो योस्मान्द्वेष्टि यञ्चवयन्द्विष्मः पृथिव्यां विष्णुर्व्यक्रंस्त गायत्रेण छन्दसा ततो निर्भक्तो योस्मान्द्वेष्टि यञ्चवयन्द्विष्मोस्मादन्नाद्स्येप्रतिष्ठाया अगन्मस्वः सज्ज्योतिषा भूम।२५

विष्णुः।जागतेन। छन्दसा। दिवि। व्यक्रंस्त। यः।अस्मान्। द्वेष्टि। च। वयं। यं। द्विष्मः। ततः। निर्भक्तः।विष्णुः त्रैष्टुभेन। छन्दसा। अन्तरिक्षे। व्यक्रंस्त। यः। अस्मान्। द्वेष्टि। च। वयं। यं। द्विष्मः। ततः। निर्भक्तः। विष्णुः। गायत्रेण। छन्दसा। पृथिव्याम्। व्यक्रंस्त। यः। अस्मान्। द्वेष्टि। च। वयं। यं। द्विष्मः। ततः। निर्भक्तः। ए। अस्मात्। अन्नात्। अस्याः। प्रतिष्ठायाः। स्वः। अगन्म। ज्योतिषा। सम भूम॥२५॥

अथाधिदैवम् — इस कंडिका में ७ मंत्र हैं उन को कहते हैं, यजमान अपने आसन से उठ कर वेदी की दक्षिण श्रोणि देश से आरंभ करके आहवनी याग्नि के पूर्व २ तीन मंत्रों को पढ़ कर तीन प्रदक्षिणा करके अपने पैरों को विष्णु भगवान के चरण जान कर पृथिवी पर धरता है उसके ३ मंत्र १,२,३ यजमान अपने स्थान पर बैठा हुआ अपने पुरोडाश भाग को देखता है उस का मंत्र ४ बैठा हुआ ही वेदी की भूमि को देखता है उस का मंत्र ५ पूर्व दिशा को देखता है उस का मंत्र ६ आहवनी याग्नि को दे-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रवता है उस का मंत्र ७

दिवि विष्णुरिति (प्रजापतिऋषिः — याजुषी छन्दः — विष्णुर्देवता) १
अस्यैप्रतिष्ठायाइति (तथा — तथा — तथा) २
पृथिव्या मिति (तथा — तथा — तथा) ३
अस्मादन्ना दिति (तथा — दैवी बृहती — भागो देवता) ४
अस्यैप्रतिष्ठाया इति (तथा — याजुषी गायत्री — भूमिर्देवता) ५
अगन्म स्वरिति (तथा — दैवी बृहती — देवा देवता) ६
संज्योतिषेति (तथा — याजुषी गायत्री — आहवनीयो देव०) ७

पदार्थः — १ इष्ट देव नारायण ने २ जगती ३ छन्द रूप अपने पांव से ४ स्वर्गलोक में विशेष क्रमण किया ऐसा होने पर ६ जो असुर जाति ७ हम से ८ द्वेष करता है ९ और १० हम ११ जिस से १२ द्वेष करते हैं वह दोनों प्रकार का शत्रु १३ उस स्वर्गलोक से १४ भाग रहित करके निकाला गया १५ विष्णु ने १६ त्रिष्टुप १७ छन्द रूप पांव से १८ अन्तरिक्ष लोक में १९ विक्रमण किया ऐसा होने पर २० जो असुर आदि २१ हम से २२ द्वेष करता है २३ और २४ हम २५ जिस से २६ द्वेष करते हैं २७ वह उस अन्तरिक्ष लोक से २८ भाग रहित करके निकाला गया २९ विष्णु ने ३० गायत्री ३१ छन्द रूप पांव से ३२ पृथिवी लोक में ३३ विक्रमण किया वैसा होने पर ३४ जो ३५ हमसे ३६ द्वेष करता है ३७ और ३८ हम ३९ जिस से ४० द्वेष करते हैं वह ४१ पृथिवी लोक से ४२ भाग रहित करके निकाला गया ४३ हे मोक्षाधिष्ठात्र देवि मोक्ष विरोधी असुरों के निकालने से निर्भय हम लोग ४४ इस ४५ देह से ४६ इस ४७ प्रतिष्ठा हेतु यज्ञभूमि से ४८ स्वर्ग वा सूर्य वा नारायण को ४९ प्राप्त करें ५० नारायण ज्योति से ५१ संयुक्त होवें ॥ २५ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाध्यात्मम् - श्रुत्यर्थप्रमाण से १ योगारूढ़ योगी आत्मा ने २,३ अपान द्वारा ४ भ्रकुटि में ५ विशेष क्रमण किया ऐसा होने पर ६ जो काम ७ हम से ८ द्वेष करता है ९ और १० हम ११ जिस से १२ द्वेष करते हैं वह काम १३ उस भ्रकुटि से १४ भाग रहित करके निकाला गया १५ श्रुति प्रमाण से आत्मा ने १६,१७ उदान द्वारा १८ हृदय के अन्तरिक्ष में १९ विशेष क्रमण किया तैसा होने पर २० जो काम २१ हम से २२ द्वेष करता है २३ और २४ हम २५ जिससे २६ द्वेष करते हैं वह काम २७ उस हृदय के अन्त रिक्ष से २८ भाग रहित करके निकाला गया २९ योगी ने ३०,३१ प्राण द्वारा ३२ मानस कमल में ३३ विशेष क्रमण किया तैसा होने पर ३४ जो काम ३५ हम से ३६ द्वेष करता है ३७ और ३८ हम ३९ जिस से ४० द्वेष करते हैं वह काम ४१ उस मानस कमल से ४२ भाग रहित करके निकाला गया ४३ हे मोक्षाभिमानी देवता हम ४४ इस ४५ विराट् रूप देह और ४६ इस ४७ योग भूमि से ४८ आदित्य रूप ज्योति को ४९ जावें ५० और ब्रह्म ज्योति से ५१ संयुक्त होवें ॥ २५

स्वयम्भूरसि श्रेष्ठो रश्मिर्वर्चोदा असि वर्चो मे देहि। सूर्यस्यावृत्तमन्वावर्ते ॥ २६ ॥

स्वयम्भूः असि। श्रेष्ठः। रश्मिः। वर्चोदाः। असि। मे। वर्चः। देहि। सूर्यस्य। आवृत्तम्। अनु। आवर्ते ॥ २६ ॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में ३ मंत्र हैं, उनको कहते हैं, सूर्य के देखने का मंत्र १ सूर्य की प्रार्थना का मंत्र २ सूर्य की परिक्रमा का मंत्र ३

स्वयम्भूरिति (प्रजापति ऋषिः — याजुषी — सूर्यो देवता) १

वर्चोदाः सीति (तथा — तथा — तथा) २

सूर्यस्येति (तथा — याजुषी बृहती — तथा) ३

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदार्थः – हे सूर्य तुम १ ब्रह्मा २ हो ३ शिव हो ४ ज्योति रूप से सर्व व्यापक विष्णु हो ५ सब को तेज के दाता परा रूप ६ हो ७ मुझे ८ ब्रह्म तेज अथवा अन्न जल और जाठराग्नि ९ दीजिये १० सूर्य की ११,१२ परिक्रमा के अनुसार में १३ परिक्रमा देता हूं ॥ २६ ॥

अथाध्यात्मम् – विना सगुण उपासना के योग सिद्धि दुर्लभ है इस लिये कहते हैं – हे सूर्य के मध्य विराज मान भर्ग नाम ज्योति स्वरूप नारायण तुम १ अद्वैत होते विना आश्रय के आप ही प्रगट होने वाले २ हो ३ दूसरे विद्या और अविद्या से युक्त हैं तुम तो उससे विलक्षण हो उस कारण श्रेष्ठ हो ४ केवल ज्योति स्वरूप हो ५ दूसरे देवता प्रकृति सम्बन्ध से ब्रह्म तेज के दाता नहीं हैं तुम तो ब्रह्म तेज के दाता ६ हो ७ मुझे ८ ब्रह्म तेज ९ दीजिये १० नारायण के अवतार सूर्य के ११ वार वार उदय अस्त के १२ अनुसार में भी १३ समाधि उत्थान कर्म को करता हूं ॥ २६ ॥

अग्ने गृहपते सुगृहपतिस्त्वयाग्नेऽहङ्गृहपतिना भूयासꣳ सुगृहपतिस्त्वम्मयाग्ने गृहपतिना भूयाः। अस्थूरिणौ गार्हपत्यानि सन्तु प्रातꣳहिमाः सूर्यस्यावृतमन्वावर्ते ॥ २७ ॥

गृहपते। अग्ने। अहम्। त्वया। गृहपतिना। सुगृहपतिः। भूयासं। अग्ने। त्वं। मया। गृहपतिना। सुगृहपतिः। भूयाः। अग्ने। नौ। गार्हपत्यानि। प्रातꣳ। हिमाः। अस्थूरि। सन्तु। सूर्यस्य। आवृत्तम्। अनु। आवर्त्ते ॥ २७ ॥

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में दो मंत्र हैं, गार्हपत्य के देखने का मंत्र १ सूर्य की परिक्रमा का मंत्र २

अग्ने गृहपतऽइति (प्रजापतिऋषिः – ब्राह्मी बृहतीछं० – गार्हपत्याग्निर्दे०)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर्यस्येति (प्रजापति ऋषिः -याजुषी बृहती छंः - सूर्यो देवता) २

पदार्थः - १ हे मेरे गृह के रक्षक २ गार्हपत्य अग्नि ३ मैं ४ तुझ ५ गृह पति की कृपा से ६ अच्छा गृह पति ७ होऊं तथा ८ हे अग्नि ९ तुम १० मुझ ११ गृह पति की सेवा से १२ अच्छे गृह पालक १३ हूजियै १४ हे अग्नि १५ हम दोनों के १६ गृह पति सम्बंधी कर्म १७, १८ पूर्णायु पर्यन्त १९ ब्रह्मा, विष्णु, महेश परा और ब्रह्माग्नि से आकांक्षित २० हों २१ सूर्य की २२ परिक्रमा के २३ अनुसार २४ मेंभी परिक्रमा देता हूं॥ २७॥

अथाध्यात्मम् - हे देह रक्षक २ अंतर्यामी ईश्वर ३ मैं जीवात्मा ४ तुझ ५ गृह पालक के साथ ६ श्रेष्ठ गृह पति ७ होऊं ८ हे ईश्वर ९ तुम १० मुझ ११ जीव नाम गृह पति के साथ १२ अच्छे गृह पालक १३ हूजियै क्योंकि जीव के साथ ही ईश्वर के देह पालकत्व का सम्भव है १४ हे परमात्मन् १५ हम दोनों के १६ गृह पति सम्बंधी कर्म १७, १८ पूर्णायु तक १९ ब्रह्मा, विष्णु, महेश परा और ब्रह्माग्नि के ईच्छित २० हों क्योंकि पांच ही उपासना और पांच ही देवता जीवात्मा के आश्रय हैं मैं २१ ब्रह्मावतार सूर्य के २२, २३ उदय अस्त कर्मानुसार २४ समाधि और उत्थान कर्म को करता हूं॥ २७

अग्नेव्रतपतेव्रतमचारिषन्तदशकन्तन्मेराधीदमहंयएवास्मिसोस्मि॥ २८॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
व्रतपते। अग्ने। व्रतम्। अचारिषम्। तत्। अशकेम। तत्।
८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६
मे। अराधि। इदम्। अहम्। यः। अस्मि। सः। एव। अस्मि॥ २८

अथाधिदैवम् - इस कंडिका में दो मंत्र हैं, व्रत के विसर्जन का मंत्र १ आत्मा को अमानुष जानने का मंत्र २॥

अग्नेव्रतपतइति (प्रजापति ऋषिः - साम्नी पंक्तिश्छंदः - अग्निर्देवता) १

इदमहमिति (तथा - याजुषी पंक्तिश्छंदः - तथा) २

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदार्थः- हे यज्ञ रक्षक २ अग्नि मैंने ३ यज्ञ कर्म का ४ अनुष्ठान किया ५ आप की कृपा से उस के करने में ६ समर्थ हुआ तुमने भी ७ उस ८ मेरे कर्म को ९ सिद्ध किया १० यह ११ मैं १२ जो १३ हूं १४,१५ वही अर्थात् देवता १६ हूं॥ २८॥ अथाध्यात्मम्- १ हे योगानुष्ठान के रक्षक २ परमेश्वर ३ मैंने इंद्रिय संस्कार रूप व्रत को ४ किया ५ उस में ६ समर्थ हुआ तुमने भी ७ उस ८ मेरे व्रत को ९ सिद्ध किया १० यह ११ मैं १२ जो १३ हूं १४,१५ वही अर्थात् देवता १६ हूं॥ २८॥ दर्श पूर्ण मास नाम यज्ञ के मंत्र समाप्त हुए अब पिण्ड पित्र यज्ञ के मंत्र आरंभ होते हैं॥

अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा सोमाय पित्रमते स्वाहा
अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः॥ २९॥

कव्यवाहनाय। अग्नये। स्वाहा। पित्रमते। सोमाय। स्वाहा। वेदिषदः। असुराः। रक्षाꣳसि। अपहताः॥ २९॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में ३ मंत्र हैं, सार चांवल को कुछ एक पका कर अभिघारण उद्वासन और देखने के पश्चात् होम करता है उस के मंत्र १,२ दक्षिण ओर से रेखा करता है उस का मंत्र ३

अग्नय इति (प्रजापतिऋषिः- याजुषी- देवो देवता) १
सोमयेति (तथा - तथा - तथा) २
अपहता इति (तथा उष्णिक्-असुरो देवता) ३

पदार्थः- १ जो अग्नि सर्वज्ञ पितरों के हवि को पितरों के पास पहुंचाने वाला है उस २ अग्नि के अर्थ ३ हवि दिया ५ पितरों से संयुक्त ५ सोम नाम देवता के अर्थ ६ हवि दिया ७ वेदी में स्थित ८ असुर ९ राक्षस १० वेदी से दूर निकाले गये॥ २९॥ अथाध्यात्मम्- १ मन की जो वृत्ति हैं और उन का जो हवि है उस से उन मनो वृत्तियों के पास पहुंचाने वाले २ आत्माग्नि के लि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये ३ इन्द्रिय शक्ति रूप हवि दिया ४ मन से संयुक्त ५ चन्द्रमा (समष्टि मन) के अर्थ ६ इन्द्रिय रूप हवि दिया ७ मन हृदय रूप वेदी में स्थित ८ काम आदि असुर ९ मोह आदि राक्षस १० उक्त वेदी से दूर निकाले गये ॥२९॥

ये रूपाणि प्रति मुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति। परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टान्लोकात्प्रणुदात्यस्मात् ॥३०॥

स्वधया[1]। रूपाणि[2]। प्रति मुञ्चमानाः[3]। सन्तः[4]। ये[5]। असुराः[6]। चरन्ति[7]। ये[8]। परापुरः[9]। निपुरः[10]। भरन्ति[11]। अग्निः[12]। तान्[13]। अस्मात्[14]। लोकात्[15]। प्रप्रणुदाति[16] ॥३०॥ अथाधिदैवम् ॥

वेदी पर अंगार घुमाने का मंत्र १

ये रूपाणीति (प्रजापतिऋषिः—त्रिष्टुप्छन्दः—कव्यवाहनाग्निर्देवता) १

पदार्थः—१ पितरों का अन्नभक्षण करना चाहिये इस इच्छा से २ अपने रूपों को ३ पितरों के समान करते ४ हुए ५ जो ६ देव विरोधी असुर ७ पित्र यज्ञ स्थान में फिरते हैं तथा ८ जो असुर ९ स्थूल देह १० और सूक्ष्म देहों को ११ अपना असुरत्व छिपाने के लिये धारण करते हैं १२ उल्मुख रूप अग्नि १३ उन असुरों को १४, १५ इस पित्र यज्ञ स्थान से १६ दूर हटाता है ॥३०॥

अथाध्यात्मम्—१ विषभोग के लिये २ अपने रूपों को ३ मनोवृति रूप समान करते ४ हुए ५ जो ६ काम आदि असुर ७ मनो यज्ञ स्थान में फ़िरते हैं तथा ८ जो काम आदि ९ कर्म्मेन्द्रिय रूप स्थूल देहों को १० तथा ज्ञानेंद्रिय रूप सूक्ष्म देहों को ११ धारण करते हैं १२ ज्ञानाग्नि १३ उन काम आदि को १४ इस १५ मन हृदय रूप लोक से १६ दूर हटा देता है ॥३०॥

अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम्। अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत ॥३१

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पितरः। अत्र। मादयध्वम्। यथा भागं। आवृषायध्वम्। पितरः। अमीमदन्त। यथाभागं। आवृषायिषत॥ ३१॥

अथाधिदैवम्- इसकंडिका में दो मंत्र हैं, यजमान षड् अञ्जली के कि ये पीछे पिंड के सन्मुख संहिता के स्वर से मंत्र को पढ़ परिक्रमा करि के उत्तर मुख होकर स्वांस रोक कर ग्लानि पर्यन्त जप करता है उस के मंत्र १, २

अत्र पितरइति (प्रजापति ऋषिः- साम्नी बृहती छंदः — पितरो देवता) १

अमीमदन्तेति (तथा — तथा तथा) २

पदार्थः १ हे पितरो तुम २ इस कुश समूह पर ३ हर्षित हूजिये ४ और अपने भाग को उलंघन न करके ५ चारों ओर से वृषभ की तुल्य तृप्ति तक हवि को ग्रहण कीजिये, जिन पितरों से ऐसी प्रार्थना की गई वे ६ पितर ७ हर्षित हुए ८ और अपने भाग को उलंघन न कर ९ वृषभ की समान अपने भाग को प्राप्त किया॥ ३१॥ अथाध्यात्मम् — १ हे मन की वृत्तियों तुम २ इस ज्ञान यज्ञ में ३ ब्रह्मानंद युक्त होजाओ ४ और अपने २ भाग इन्द्रिय शक्ति रूप को उलंघन न करके ५ चारों ओर से वृषभ की समान हवि को ग्रहण करो ६ मन की वृत्तियां ७ ब्रह्मानंद मय हुई ८ और अपने भाग को उलंघन न करके ९ वृषभ की समान अपने भाग को भक्षण किया॥ ३१॥

नमोवः पितरो रसाय नमोवः पितरः शोषाय नमोवः पितरो जीवाय नमोवः पितरः स्वधायै नमोवः पितरो घोराय। नमोवः पितरो मन्यवे नमोवः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्मैतद्वः पितरो वास आधत्त॥ ३२॥

१ पितरः। २+३ नमः। ४ वः। ५ रसाय। ६+७ पितरः। ६+७ नमः। ८ वः। ९ शोषाय। १० पितरः। १०+११ नमः। १२ वः। १३ जीवाय। १४ पितरः। १५×१४=१५ नमः। १६ वः। १७ स्वधायै। १८ पितरः। १८+१९ नमः।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१८+१९ २० २१ २२+२३ २३+२२ २४ २५ २७+२६ २६+२७
वः। घोराय। पितरः। नमः। वः। मन्यवे। पितरः। नमः। वः।
२८ ३०+२९ ३०+२९ ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७
पितरः। नमः। वः। पितरः। नः। गृहान्। दत्त। पितरः। वः। सतः
३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३
देष्म। पितरः। एतत्। वासः। वः। आधत्त॥३२॥

अथाधिदैवम्— इस कंडिका में ८ मंत्र हैं, छै अंजली करने के ६ मंत्र १ से ६ तक तीन सूत्रों को पिंडों पर रखने के मंत्र ७, ८

नमोवः (छै मंत्रों के प्रजापति ऋषिः—याजुषी बृहती—लिङ्गोक्त देव) १ से ६ तक
षष्ठ्या षी उष्णिक

गृहान्नऽइति (तथा —साम्नी अनुष्टुप् छंदः—पितरो देवता) ७
एतद्वऽइति (तथा —प्राजापत्या गायत्री— तथा) ८

पदार्थः१ हे पितरो २ तुम्हारा ३ जो स्वरूप रसालय वसन्त है उसके अर्थ ४ नमस्कार ५ हे पितरो ६ तुम्हारा ७ जो स्वरूप औषधि को सुखाने वाला ग्रीष्म ऋतु है उसके अर्थ ८ नमस्कार ९ हे पितरो १० तुम्हारा ११ जो स्वरूप जीवन कारण जल का बरसाने वाला वर्षा ऋतु है उसके अर्थ १२ नमस्कार १३ हे पितरो १४ तुम्हारा १५ जो स्वरूप अन्न उत्पन्न करने वाला रूप शरद ऋतु है उसके अर्थ १६ नमस्कार १७ हे पितरो १८ तुम्हारा १९ जो स्वरूप विषम रूप हेमन्त ऋतु है उसके अर्थ २० नमस्कार २१ हे पितरो २२ तुम्हारा २३ जो रूप औषधि को दग्ध करने वाला शिशिर ऋतु है उसके अर्थ २४ नमस्कार २५ हे पितरो २६ ऐसे ऋतु रूप तुम को २७ नमस्कार २८ हे पितरो २९ तुम को ३० नमस्कार ३१ हे पितरो तुम ३२ हमारे अर्थ ३३ भार्या पुत्र पौत्र आदि ३४ दीजिये ३५ हे पितरो हम भी ३६ तुम्हारे अर्थ ३७ विद्यमान धन से ३८ देवें ३९ हे पितरो ४० आप के अर्थ ४१ यह ४२ सूत्र रूप वस्त्र है ४३ स्वीकार कीजिये॥३२॥

अथाध्यात्मम्— १ हे मन की वृत्तियो २ ज्ञान यज्ञ ३ तुम्हारे ४ आन-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्द मय कोष के अर्थ और उसके संस्कार के लिये है ५ हे मन की वृत्तियो ६ यह ज्ञानयज्ञ ७ तुम्हारे ८ प्राण मय कोष के अर्थ अर्थात् उस के संस्कार के लिये है ९ हे मन की वृत्तियो १० यह ज्ञान यज्ञ ११ तुम्हारे १२ जीव के अर्थ अर्थात् उसके संस्कार के लिये है १३ हे मन की वृत्तियों १४ यह ज्ञान यज्ञ १५ तुम्हारे १६ अन्न मय कोष के अर्थ अर्थात् उस के संस्कार के लिये है १७ हे मन की वृत्तियो १८ यह ज्ञान यज्ञ १९ तुम्हारे २० संसार भयदायक विज्ञान मय कोष के अर्थ अर्थात् उसके संस्कार के लिये है २१ हे मन की वृत्तियो २२ यह ज्ञान यज्ञ २३ तुम्हारे २४ क्रोध रूप मनो मय कोष के अर्थ अर्थात् उस के संस्कार के लिये है २५ हे मन की वृत्तियो २६ यह योग यज्ञ २७ तुम्हारा है २८ हे मन की वृत्तियो २९ यह ज्ञान यज्ञ ३० तुम्हारा है अर्थात् तुमही इसके कर्त्ता हो ३१ हे मन की वृत्तियो ३२ हम्हारे लिये ३३ मानस आदि कमल रूप आश्रय को ३४ दीजिये तात्पर्य यह कि मन की स्थिरता मेंही योगी जन प्राणायाम को करते हैं ३५ हे मन की वृत्तियो हम ३६ तुम्हारे अर्थ ३७ प्राप्त इन्द्रिय समूह को ३८ देते हैं ३९ हे मन की वृत्तियो ४० यह ४१ मानस कमल रूप स्थान ४२ तुम्हारा है ४३ उसको स्वीकार कीजिये अर्थात् अंतर्मुख हूजिये॥ ३२॥

आधत्त पितरो गर्भं कुमारं पुष्करस्रजम्।
यथेह पुरुषोऽसत् ३३

पितरः। यथा। इह। पुरुषः। असत्। पुष्करस्रजम्। कुमारं। गर्भं। आधत्त॥ ३३॥ **अथाधिदैवम्**— पुत्र की कामना रखने वाली पत्नी मझले पिंड को भोजन करती है उस का मंत्र १

आधत्तेति (प्रजापतिऋषिः— गायत्री छन्दः— पितरो देवता) १

पदार्थः—१ हे पितरो १ जिस प्रकार ३ इस ऋतु में ४ देवता पितर मनु

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ष्यों के अपेक्षित अर्थ का पूर्ण करने वाला पुत्र ५ होवे उसी प्रकार ६ पुष्कर माला धारी अश्विनी कुमारों के तुल्य कमल माला धारण करने वाले ७ पुत्र रूप ८ गर्भ को ९ सम्पादन कीजिये ॥ ३३॥

अथाध्यात्मम् – १ हे मन की वृत्तियो २ जिस प्रकार ३ इस समाधि में ४ सर्व व्यापी विष्णु ५ विद्य मान है उसी प्रकार ६ बहु ब्रह्मांड रूप माला धारी ७ माया के खिलोने से खेलने वाले ८ और उन खिलौनों रूप ब्रह्मांडों के प्रकाश, स्थिति, लय के कारण शुद्ध ब्रह्म को ९ धारण करो॥ ३३॥

ऊर्ज्जं वहन्तीरमृतङ्घृतम्पयः कीलालम्परिस्रुतम्। स्वधा स्थ तर्पयत मे पितॄन् ॥३४॥

४+१ २ १+३ ५+४ ३+५ ६ ७
ऊर्ज्जं। अमृतं। परिस्रुतं। घृतम्। कीलालं। पयः। वहन्तीः
८ ९ १० ११ १२
स्वधा। स्थ। मे। पितॄन्। तर्पयत॥ ३४॥

अथाधिदैवम् – श्राद्ध में पिण्ड दान के लिये कुशा जल से जो मार्जन किया जाता है उस से बचे हुए जल को पिंडों के ऊपर सींचता है उस का मंत्र १॥

ऊर्ज्जं वहन्तीरिति (प्रजापति ऋषिः – त्रिपदा विराट् छंदः – आपो देवता) १

पदार्थः – हे पुष्पों से निकले हुए पुष्प सार २ रोग और मृत्यु का नाश करने वाले ३ सब बंधनों के काटने वाले ४,५,६,७ अन्न घृत दुग्ध के धारण करने वाले जलो तुम ८ पितरों के हवि ९ हो १० मेरे ११ पितरों को १२ तृप्त करो ऐसे तीन प्रकार के सार को धारण करने से जलों को पितृ तर्पकत्व गुण प्राप्त है॥ ३४॥

अथाध्यात्मम् – १ अन्न स्वरूप २ जीव को तथा ३ इन्द्रियों के स्थानों से निकले हुए ४ इन्द्रिय शक्ति समूह को तथा ५ सब बंधनों के काट

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने वाले ६ प्राण को ७ धारण करने वाले, हे ज्योति रस अमृत रूप जलो तुम ८ मन की वृत्तियों को तृप्त करने वाले ९ हो, इस कारण १० मेरे ११ मन की वृत्तियों को १२ तृप्त करो ३४॥ इति श्रीभृगु वंशावतंस श्रीनाथूराम सूनुज्वाला प्रसाद भार्गव शर्म्म कृते शुक्ल यजुर्वेदीय ब्रह्म भाष्ये इध्म प्रोक्षादि पित्र्यान्तो वामनः संस्कारादि कथनं नाम द्वितीयोऽध्यायः २॥

समिधाग्निन्दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्।
आस्मिन्हव्याजुहोतन ॥१॥

समिधा। अग्निम्। दुवस्यत। घृतैः। अतिथिम्। बोधयत। अस्मिन्। हव्या। आजुहोतन॥१॥

अथाधिदैवम्— चार ऋत्विजों के खाने योग्य चांवल पाक कर थाली में निकाल बीच में गढ़ेला कर उसमें घृत भर कर पीपल की तीन समिधा उस घृत में डबो कर तीन ऋचाओं से अग्नि में होम करता है उसका मंत्र १॥

समिधाग्नि मिति (आङ्गिरस ऋषिः— गायत्री छन्दः—अग्निर्देवता) १

पदार्थः — पिछली दो अध्याय में दर्श पौर्णी मास यज्ञ के मंत्र कहे, अब अमावस्या में अग्न्याधान के मंत्र कहे जाते हैं, हे ऋत्विजो तुम १ समिध काष्ठ के द्वारा २ अग्नि को ३ सेवन करो ४ और होमे हुए पूर्णाहुति सम्बंधी घृतों से ५ आतिथ्य कर्म द्वारा पूजन योग्य अग्नि को ६ प्रज्वलित करो ७ इस प्रज्वलित अग्नि में ८ नाना प्रकार के हवि को ९ सब ओर से होमो १

अथाध्यात्मम्— इस मंत्र में ब्रह्मोपदेश है १ प्राण रूप समिधि के द्वारा २ आत्माग्नि को ३ सेवन करो ४ और इन्द्रियों की शक्ति से ५ अतिथ्य कर्म द्वारा पूजन योग्य आत्माग्नि को ६ प्रज्वलित करो ७ और इस आत्मा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्नि में ८ मनो वृत्ति रूप हवि को ९ सब ओर से होमो ॥ १ ॥

सुसमिद्धा यशोचिषे घृतन्तीव्रञ्जुहोतन
अग्नये जातवेदसे २

सुसिद्धाय। शोचिषे। जातवेदसे। अग्नये। तीव्रं। घृतम्। जुहोतन॥२॥ अथाधिदैवम्-

सुसमिद्धा येति (वसुश्रुत ऋषिः- गायत्री छन्दः- अग्निर्देवता) १

पदार्थः- हे ऋत्विजो तुम १ शुभ रीति से भले प्रकार दीप्त २ ज्वलित ३ सर्वज्ञ ४ अग्नि के अर्थ ५ सुस्वादित तवा ने छान्ने देखने आदि से संस्कार किये हुए ६ घृत को ७ होम करो ॥ ७ ॥ अथाध्यात्मम्- १ प्राणद्वारा शुभ क्रिया से भले प्रकार दीप्त २ दीप्ति मान ३ अज्ञान मय ४ आत्माग्नि के लिये ५ योग से संस्कृत ६ ज्ञानेन्द्रियों को ७ होम करो ॥ ७ ॥

तन्त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि। बृहच्छोचाय विष्ठ्य ।३॥

अङ्गिरः। तं। त्वा। समिद्भिः। वर्द्धयामः। घृतेन। यविष्ठ्य। बृहत्। असि। शोचि॥३॥ ॥ अथाधिदैवम्-॥

तन्त्वा इति (भरद्वाज ऋषिः- गायत्री छन्दः- अग्निर्देवता) १

पदार्थः १ प्रत्येक यज्ञ में गमन शील हे अग्नि २ उस ३ तुझ को ४ यज्ञ सम्बंधी काष्ठों ५ तथा संस्कृत घृत से ६ हम वृद्धि युक्त करते हैं ७ हे युवतम तुम ८ ब्रह्म रूप ९ हो १० प्रदीप्त हूजिये ॥ ३ ॥

अथाध्यात्मम्- ब्रह्म से उपदेश किया हुआ आत्म प्रति विद्वान प्रार्थना करता है १ हे अंगों के रस आत्माग्नि २ उस ३ तुझ को ४ प्राणों ५ त

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था इन्द्रियों की शक्ति से ६ हम वृद्धि युक्त करते हैं ७ हे योग से समर्थ आत्माग्नि तुम ८ ब्रह्मांड रूप ९ हो १० प्रदीप्त हूजिये॥३॥

उपत्वाग्ने हविष्मती घृताची र्यन्तु हर्यत।
जुषस्व समिधो मम॥४॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
अग्ने। हविष्मतीः। घृताचीः। त्वा। उपयन्तु। हर्यत। मम।
८ ९
समिधः। जुषस्व॥४॥ अथाधिदैवम्-

इस कंडिका में जप का मंत्र है॥

उपत्वा इति (प्रजापति ऋषिः—गायत्री छन्दः—अग्निर्देवता) १

पदार्थः—१ हे अग्नि २ हवि से युक्त ३ घृत में डूबी हुई ४ समिधा ४ तेरे ५ समीप प्राप्त हों ६ हे इच्छा करनेवाले अग्नि ७ मेरी ८ समिधों को ९ सेवन करो॥४॥ अथाध्यात्मम्— हे आत्माग्नि २ मन की वृत्तियों से युक्त ३ ज्ञानेन्द्रिय की शक्तियों से संयुक्त प्राण ४ तुझ में ५ प्रवेश करो ६ भोक्ता भोग्य के योग से अमृत रूप हे आत्माग्नि तुम ७ मेरे ८ प्राणों को ९ सेवन करो॥४॥

भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवी वरिम्णा। तस्या
स्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेग्निमन्नादमन्नाद्याया
दधे॥५॥

९+१ १०+२ ११+३ ३+४ ४+५ ५+६ ६+७ ७+८ ८+९
भूः। भुवः। स्वः। भूम्ना। द्यौः। इव। वरिम्णा। पृथिवी। इव।
१+१० २+११ १२ १३ १४ १५ १६
देवयजनि। पृथिवि। तस्याः। ते। पृष्ठे। अन्नादम्। अग्निम्।
१७ १८
अन्नाद्याय। आदधे॥५॥ अथाधिदैवम्— इस कंडिका में ३ मंत्र हैं, काष्ठ से ज्वलित अग्नि के आधान के मंत्र १२ काष्ठ के पू-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्द्ध को ग्रहण करजप करने का मंत्र ३ आशीर्वाद का मंत्र ४

भूरिति (प्रजापति ऋषिः – दैवी गायत्री छन्दः – अग्निर्देवता) १

भुवरिति (तथा – दैव्युष्णिक् छन्दः – वायुर्देवता) २

स्वरिति (तथा – दैवी गायत्री छन्दः – सूर्योदेवता) ३

द्यौरिवेति (तथा – याजुषीयजमानाशीः – लिङ्गोक्तदेवता) ४

जल, सुवर्ण, ऊषा, (खारी मिट्टी) आखूतकर और शकिर इन ५ संभारों का सम्पादन करके स्फ्य से रेखा की हुई शुद्ध भूमि में उन संभारों को स्थापन करउन पर शुष्क काष्ट से प्रज्वलित अग्नि को भूर्भुवः इन ३ अक्षरों के उच्चारण पूर्वक स्थापन करे यह आहवनीय का स्थापन है ऐसे ही अष्टाक्षर होने से अग्नि को गायत्रत्व है यह श्रुति में कहा है, क्योंकि गायत्री सहित अग्नि का प्रादुर्भाव प्रजापति के मुख से है॥

पदार्थः जो वेदी १ भूलोक रूप २ अन्तरिक्ष रूप ३ स्वर्ग रूप है ४ क्योंकि ज्योति की अधिकता से ५, ६ स्वर्ग की तुल्य है ७ गुणों से वड़ी होने के कारण ८, ९ पृथिवी के समान है १० हे देवताओं की यजन स्थान ११ वेदी रूप पृथिवी १२ उस १३ तेरी १४ पृष्ट पर १५ होम वस्तु के भक्षण करने वाले १६ अग्नि को १७ हवि भक्षण के लिये १८ स्थापन करता हूं—

<u>व्याख्यान</u> भूर्भुवः स्वः इस ऋचा से प्रजापति जीने तीनों लोक, तीनों वर्ण अपनी प्रजा और पशुओं को उत्पन्न किया वे सब मेरे वशी भूत होवें, यह इच्छा करता अग्नियों को स्थापन करे, श्रुति के अनुसार प्रार्थना करे जिस प्रकार यह स्वर्ग नक्षत्रों से पूर्ण है, इसी प्रकार मैंभी धन पुत्रादि से पूर्ण हो जाऊं, और जिस प्रकार यह पृथिवी वड़ी है, उसी प्रकार मैं भी वृद्धि को पाऊं और जिस प्रकार अग्नि अन्न का भक्षक है उसी प्रकार मैं भी अन्न भक्षक होऊं॥ ५॥ **अथाध्यात्मम्**– १ हे विष्णु की

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यजन स्थान २ हार्द भूमि तुम ३ ज्योति की वाहुल्यता से ४,५ स्वर्ग की तुल ६ वड़ी होने से ७,८ पृथिवी के समान हो तथा ९,१०,११ त्रि लोक रूप हो १२ उस १३ तुझ के १४ ऊपर हवि भक्षक १६ आत्माग्नि को १७ प्राण इन्द्रिय रूप अन्न भक्षण के लिये १८ ध्यान से स्थापन करता हूं॥ ५॥

आयङ्गौ पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः। पितरञ्च प्रयन्त्स्वः ६

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
अयम्। गौः। पृश्निः। आ। अक्रमीत्। पुरः। मातरम्। अ
८ ९ १० ११ १२ १३
सदत्। चः। स्वः। प्रयन्। पितरम्। असदन्त्॥ ६॥

अथाधिदैवम्— सर्प राज्ञी नाम मंत्रों से दक्षिनाग्नि का स्थापन और उप स्थान होता है उस के मंत्र १,२,३

आयं गौरिति (सर्पराज्ञी कद्रूऋषिः—गायत्री छन्दः—अग्निर्देवता) १

पदार्थः—१ इस २ यज्ञ सिद्धि के लिये यज मान के घर में जाने वाले ३ श्वेत, रक्त, आदि वहु प्रकार की ज्वालाओं से युक्त अग्नि ने ४ सव ओर आह वनीय गार्हपत्य दक्षिनाग्नि के स्थानों में ५ अति क्रमण किया ६ पूर्व दिशा में ७ पृथिवी को ८ प्राप्त किया ९ और १० सूर्य रूप होकर ११ स्वर्ग में चलते अग्नि ने १२ स्वर्ग लोक को १३ प्राप्त किया॥ ६॥

अथाध्यात्मम्— १ इस २ मन, हृदय भ्रकुटि आदि कमलों में जाने वाले अथवा उक्त कमलों में ब्रह्मा विष्णु महेश रूप धारण करने वाले ३ शुक्ल, श्याम रक्त वर्ण धारी आत्माग्नि ने ४ सव ओर से ५ कमलों में गमन किया ६ प्रथम ७ नाभि चक्र को ८ प्राप्त किया ९ फिर १० सूर्य वा रुद्र रूप होकर ११ चलते हुए ने १२ भ्रकुटि रूप स्वर्ग लोक को १३ प्राप्त किया॥ ६॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती। व्यख्य न्महिषो दिवम्७

अस्य१। रोचना२। प्राणात्३। अपानती४। अन्तः५। चरति६। महिषः७। दिवं८। व्यख्यत्९॥ अथाधिदैवम्-

अन्तश्चरतीति (सर्पराज्ञी कद्रूर्ऋषि- गायत्री छं०-अग्निर्दे०)१

पदार्थः-१ इस अग्नि की २ वायु नाम दीप्ति ३ सब शरीरों में प्राण व्यापार के पीछे ४ अपान व्यापार को करती तथा अपान व्यापार से पीछे प्राण व्यापार को करती ५ पृथिवी स्वर्ग के मध्य ६ घूमती है७ उस अग्नि ने ८ भोग स्थान स्वर्ग लोक को ९ विशेष प्रकाशित किया और करता है७

अथाध्यात्मम्-१ जब इस आत्माग्नि की२ प्राण शक्ति३ प्राण चेष्टा रेचक के पीछे ४ पूरक को करती ५ शरीर के मध्य ६ जाती है तब७ प्राण ने ८ भ्रकुटि वा गगण मंडल को ९ विशेष प्रकाशित किया वाकरता है॥७॥ त्रिष्टुप्शद्धाम विराजति वाक् पतङ्गाय धीयते। प्रतिवत्सो रहद्युभिः। ८

वाके१। त्रिष्टुप्शद्धामे२। विराजति३। प्रतिवत्सोः४। अहद्युभिः५। पतङ्गाये६। धीयते७॥ ८॥ अथाधिदैवम्-

त्रिष्टुप्शद्धा मेति (सर्पराज्ञी कद्रूर्ऋषिः-गायत्री छन्दः-अग्निर्देवता)१

पदार्थः-१ जो वेद रूप स्तुति स्वरूप वाणी२ चतुर्दश भुवनादि अग्रोक्त धामों में३ विशेष शोभा देती है वह४ प्रति दिन ब्रह्मादि अग्रोक्त रूपों से६ गमन शील अग्नि के लिये७ उच्चारण की जाती है क्योंकि वह अरणी काष्ठ से निकलता गार्हपत्य भाव को पाता है, गार्हपत्य से आह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वनीय भाव को, देखो स्मृति आदि में कहा है, लौकिक में पावक नाम प्रथम अग्नि कहा है, गर्भाधान में मारुत नाम अग्नि कहा है, पुंसव कर्म में चमस और शुभ कर्मों में शोभन नाम अग्नि कहा है, सीमन्त में अनल जात कर्म में प्रगल्भ नाम करण में पार्थिव और अन्न प्राशन में शुचि नाम अग्नि कहा है, चूड़ा कर्म में सभ्य नाम और व्रतादेश में समुद्भव, गोदान में सूर्य नाम और केशांत में याजक नाम कहा, विसर्गक में वैश्वानर और विवाह में बलद नाम अग्नि कहा है, आधान कर्म में आवसथ्य, वैश्वदेव में पावक, गार्हपत्य में ब्रह्माग्नि होवे, दक्षिनाग्नि शिव रूप है, आहवनीय में विष्णु होवें, तीनों देवता अग्नि होत्र में माने हैं, लक्ष होम में अभीष्टद अग्नि होवें, कोटि होम में महाशन नाम अग्नि होवे, अग्नि के ध्यान में तत्पर किसी ने धृता र्चिष नाम अग्नि कहा है, रुद्र आदि में मृड नाम अग्नि है, शान्तिक कर्म में शुभ कृत् है, पौष्टिक कर्म में वरद नाम अग्नि है, अभिचारक कर्म (मारणप्रयोग) में क्रोध नाम अग्नि है वशी करण में वशकृत् नाम अग्नि, और वन दाह में पोषक, उदर में जाठराग्नि, शव भक्षण में कव्याद नाम अग्नि कहा, समुद्र में वड़वानल, प्रलय में सम्वर्त्तक नाम अग्नि कहा, कर्मों में २७ अग्नि कहे हैं, जो अग्नि जिस कर्म में विशेष हितकारी है उसी को आह्वान कर होम करना चाहिये अन्यथा सब कर्म निष्फल और राक्षसों का भाग होवे, अब सूर्य आदि में जो अग्नि हैं उन को कहते हैं, सूर्य में कपिल नाम, चंद्रमा में पिङ्गल नाम, मंगल में धूमकेतु, बुध में जठर, वृहस्पति में शिखी नाम, शुक्र में हाटक, शनैश्चर में महातेजा, राहु केतु में हुताशन नाम अग्नि कहा है, यज्ञ आदि में अग्नि के ५ भेद हैं, आवसथ्य, आहवनीय, दक्षिनाग्नि, अन्वाहार्य्य, गार्हपत्य ॥८॥ **अथाध्यात्मम्**— जो स्तुति रूप वेद वाणी २ तीस धाम अ-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र्थात चौदह भुवन प्रधान महत् अहंकार, दस तत्व, स्थूल सूक्ष्म, कारण शरीर में ३ विशेष शोभा देती है वह ४ प्रति दिन ५ काली, सरस्वती, लक्ष्मी शक्ति सहित ब्रह्मा विष्णुः महेश देवता ओं के रूपों से ६ नाभि कमल से सहस्र दल कमल तक गमन शील आत्माग्नि के लिये ७ उच्चारण की जाती है उस के सर्वात्म रूप होने से ॥ ८ ॥

अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्य्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिः स्वाहा ॥ ९ ॥

५+१ १+२ २+३ ३+४ ४+५ १०+६ ६+७
स्वाहा। अग्निः। ज्योतिः। ज्योतिः। अग्निः। स्वाहा। सूर्यः।
७+८ ८+९ ९+१० १५+११ ११+१२ १२+१३ १३+१४
ज्योतिः। ज्योतिः। सूर्यः। स्वाहा। अग्निः। वर्चः। ज्योतिः।
१४+१५ २०+१६ १६+१७ १७+१८ १८+१९ १९+२० २०+२१ २१+२२ २२+२३
वर्चः। स्वाहा। सूर्यः। वर्चः। ज्योतिः। वर्चः। स्वाहा। ज्योतिः। सूर्यः। सूर्यः। ज्योतिः ॥ ९ ॥

अथाधिदेवम्— इस कंडिका में प्रातः काल और सायं काल के होम के ५ मंत्र हैं॥

अग्नि र्ज्योति रिति (तक्षा ऋषिः — एक पदा गायत्री छंदः — लिङ्गोक्त दे०) १
सूर्यो ज्योति रिति (तथा — तथा — तथा) २
अग्नि र्वर्च रिति (प्रजापति ऋषिः — तथा — तथा) ३
सूर्य्यो वर्च रिति (तथा — तथा — तथा) ४
ज्योतिः सूर्य रिति (जीवल ऋषिः — तथा — तथा) ५

पदार्थः—१ जो यह अग्नि देवता है २ वही ब्रह्म ज्योति है ३ जो यह ब्रह्म ज्योति है ४ वही अग्नि देवता है ५ उसके लिये हवि दिया गया यह सायं काल के अग्नि होत्र का मंत्र है ६ यह जो सूर्य देवता है ७ वही ब्रह्म

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योति है ८ यह जो ब्रह्मज्योति है ९ वही सूर्य देवता है इस के अर्थ १० ही दिया सूर्य सम्बंधी तेज रात्रि के समय अग्नि में प्रवेश होता है इस लिये सायंकाल पर अग्निर्ज्योतिः यह मंत्र योग्य है उदय काल पर अग्नि सम्बंधी ज्योति सूर्य में प्रवेश होती है उस कारण प्रातः काल पर, सूर्योज्योतिः यह मंत्र कहा, जो पुरुष ब्रह्म तेज़ का चाहने वाला है वह दोनों काल पर अग्रोक्त मंत्रों से होम करै, ११ जो अग्नि है १२ वही ब्रह्म तेज है १३ जो ब्रह्म ज्योति है १४ वही तेज है उस के अर्थ १५ अच्छा होम हो १६ जो सूर्य है १७ वही ब्रह्म तेज है १८ जो ब्रह्म ज्योति है । १९ वही तेज है उसके लिये २० अच्छा होम हो, अथवा प्रातः काल का अग्रोक्त मंत्र है, २१ जो ब्रह्म ज्योति है २२ वही सूर्य है २३ जो सूर्य है २४ वही ब्रह्मज्योति है उस के लिये २५ श्रेष्ठ होम हो॥ ९॥ **अथाध्यात्मम्** – १ वेद वाक्य से २ जाठराग्नि ३ ब्रह्म ज्योति है, क्योंकि श्री भगवान ने कहा है, कि मैं वैश्वानर अग्नि हूं, ४ जो ब्रह्म ज्योति है ५ वही जाठराग्नि है ६ वेद वाक्य से ७ मानस सूर्य ८ ब्रह्म ज्योति है ९ ब्रह्म ज्योति १० मानस सूर्य है ११ वेद वाक्य से १२ वैश्वानराग्नि १३ ब्रह्म तेज है १४ जो ब्रह्म ज्योति है १५ वही तेज है १६ वेद वाक्य से १७ ब्रह्मांड का सूर्य १८ ब्रह्म तेज है १९ और ब्रह्म की ज्योति २० ब्रह्म तेज है २१ वेद वाक्य से २२ भर्गनाम ज्योति २३ सूर्य है २४ और सूर्य २५ भर्गज्योति है, यह सब ब्रह्म है, यहां नाना त्व कुछ नहीं है, इस महा वाक्य के अर्थ को दर्शाया ॥ ९॥

सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या। जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा। सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या। जुषाणः सूर्य्यो वेतु स्वाहा।१०॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सवित्रा। देवेने। सजूः। इन्द्रदैवत्या। रात्र्या। सजूः। जुषाणः। अग्निः। वेतु। स्वाहा। सवित्रा। देवेन। सजूः। इन्द्रदेवत्या। उषसा। सजूः। जुषाणः। सूर्यः। वेतु। स्वाहा॥१०॥

अथाधिदेवम्— इस कंडिका में होम के २ मंत्र हैं १२ सजूर्देवेनेति (प्रजापति ऋषिः—एकपदा गायत्री छं०—लिङ्गोक्त दे०)१

पदार्थः—१ सब के प्रेरक २ ज्योति स्वरूप सूर्य रूप परमेश्वर के साथ ३ समान प्रीति वाला तथा ४ इन्द्र है देवता जिसका ऐसे ५ रात्रि देवता के साथ ६ समान प्रीति वाला ७ तथा हम पर भी प्रीति रखने वाला ८ अग्नि ९ आहुति को भक्षण करे अथवा हमारे कर्म को प्राप्त करे उस अग्नि के लिये यह १० हवि दिया (प्रातः काल के होम का मंत्र) ११ सब के प्रेरक १२ ज्योतिः स्वरूप परमेश्वर के साथ १३ समान प्रीति वाला तथा १४ इन्द्र है देवता जिस का ऐसी १५ उषा देवी के साथ १६ समान प्रीति वाला १७ तथा हम पर प्रीति रखने वाला १८ सूर्य १९ आहुति को भक्षण करे अथवा हमारे कर्म को प्राप्त करे, उस के लिये यह २० हवि दिया॥१०॥ **अथाध्यात्मम्**— सजूः। देवेने। सवित्रा। जुषाणः। सजूः। इन्द्रदैवत्या। रात्र्या। अग्निः। स्वाहा। वं। एतु। सजूः। देवेन। सवित्रा। जुषाणः। सजूः। इन्द्रदेवत्या। उषसा। सूर्य्यः। स्वाहा। वं। एतु॥१०॥ —१ संसार जय में तत्पर २ ज्योति रूप ३ नारायण के साथ ४ प्रीति युक्त अर्थात् भक्ति पूर्वक नारायणार्पण कर्म करने वाला यजमान अथवा ५ संसार जय में तत्पर ६।७ पितृ यानाधिष्ठाता देवता के साथ जिस का देवता इन्द्र है प्रीति करने वाला

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८ यजमान ९ ब्रह्मार्पण कर्म तथा सकाम कर्म द्वारा १० विष्णु वा स्वर्ग को प्राप्त करो १२ संसार जय में तत्पर १३,१४ कैवल्यमोक्ष के अधिष्ठाता देवता के साथ १५ प्रीति युक्त तथा १६ संसार जय में तत्पर १७,१८ क्रम मुक्ति के अधिष्ठाता देवता के साथ प्रीति युक्त १९ ब्रह्म भाव को प्राप्त योगी २० महा वाक् के उपदेश से २१ ब्रह्म को २२ प्राप्त करो ॥१०॥

उपप्रयन्तोऽध्वरं मन्त्रं वोचेमाग्नये। आरे अस्मे च शृण्वते ११

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
अध्वरं। उपप्रयन्तः। आरे। च। अस्मे। शृण्वते। अग्नये। मन्त्रं। वोचेम ॥११ अथाधिदैवम्- अग्नि उपस्थान का मंत्र १

उपेत्यस्य (गोतम ऋषिः - निचृद्गायत्री छन्दः - अग्निर्देवता) १

पदार्थः - १ यज्ञ में २ जाने वाले अनुष्ठान कर्त्ता हम लोग ३ दूर ४ और हमारे समीप ६ हमारे वाक्य श्रवण में प्रवृत्त ७ आहवनीय अग्नि के लिये ८ उस वाक् समूह को जोकि विचार से रक्षा करने वाला है ९ कहते हैं ११॥ **अथाध्यात्मम्**- इन्द्रियां कहती हैं १ यज्ञ मान के २ समीप जाने वाली हम ३ दूर अर्थात् हार्दाकाश में ४ और ५ हमारे स्थान में ६ हमारे वाक् श्रवण में उद्युक्त ७ आत्माग्नि के लिये ८ उस वाक् समूह को जोकि मनन से रक्षा करने वाला है ९ कहती हैं ॥११॥

अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम् अपाᳬ रेताᳬसि जिन्वति ॥१२॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
अयम्। दिवः। मूर्द्धा। ककुत्। पृथिव्याः। पतिः। अग्निः। अपाᳬ रेताᳬसि। जिन्वति ॥१२॥ (अथाधिदैवम्-)

अग्निर्मूर्द्धेत्यस्य (विरूप ऋषिः - निचृद्गायत्री छन्दः - अग्निर्देवता) १

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१यह २ स्वर्गलोक का ३ त्रिदेव रूप धारक सूर्य ४ अन्तरिक्ष में वायु रूप से शब्द करने वाला ५ पृथिवी का ६ पालक ७ अग्नि ८ यज्ञ कर्म से उत्पन्न ९ जलों को १० पुष्ट करता है वा वृद्धि देता है ॥१२॥ **अथाध्यात्मम्-**

१ यह २ भ्रकुटि का ३ ब्रह्मा विष्णु महेश रूप धारक सूर्य ४ अनाहत शब्द से शिर में शब्द करने वाला ५ मन और हृदय का ६ पालक ७ आत्माग्नि ८ इन्द्रयाल यान्तरिक्षों की ९ शक्तियों को १० पुष्ट करता है वा वृद्धि देता है १२

उभावामिंद्राग्नी आहुवध्या उभा राधसः सह मादयध्यै उभा दाता राविषा छं रयीणामुभावाजस्य सातये हुवे वाम् १३

इन्द्राग्नी। वाम्। उभौ। आहुवध्ये। उभा। सह। राधसः। मादयध्यै। उभा। इषा छं। रयीणाम्। दातारौ। उभा। वाम्। वाजस्य। सातये। हुवे॥ १३॥ **अथाधिदैवम्-**

उभावामिति (भरद्वाज ऋषिः—त्रिष्टुप् छन्दः- इन्द्राग्नी देवते) १

पदार्थः— १ हे सूर्य और आहवनीय अग्नि २ तुम ३ दोनों को ४ आव्हान करना चाहता हूं ५ तुम दोनों को ६ एक साथ ७ हवि रूप धन से ८ हर्षित करना चाहता हूं ९ तुम दोनों १० अन्नों ११ और धनों के १२ दाता हो १३, १४ तुम दोनों को १५ अन्न के १६ दानार्थ १७ आव्हान करता हूं ॥१३॥

अथाध्यात्मम्— १ हे नारायण २ तुम ३ दोनों को ४ आव्हान करना चाहता हूं ५ तुम दोनों को ६ एक साथ ७ आत्म प्रतिबिंब रूप हवि से ८ हर्षित करना चाहता हूं ९ तुम दोनों १० अमृत वर्षाओं के ११ और योग सम्पत्तियों के १२ दाता हो १३, १४ तुम दोनों को १५, १६ प्राण दान के लिये १७ आव्हान करता हूं ॥१३॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अयन्ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातो अरोचथाः।
तं जानन्नग्न आरोहाथा नो वर्द्धया रयिम् १४

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
अग्ने। अयम्। ते। ऋत्वियः। योनिः। यतः। जातः। अरोचथाः।
९ १० ११ १२ १३ १४ १५
तं। जानन्। आरोह। अथ। नः। रयिम्। आवर्द्धय॥ १४॥

अथाधिदैवम्

अयन्तइत्यस्य (देवश्रवदेववाता ऋषी- स्वराडनुष्टुप् छं०-अग्निर्देवता) १

पदार्थः - १ हे आहवनीय अग्नि २ यह गार्हपत्य ३ तेरा ४ सायंकाल और प्रातः काल सम्बंधी ५ प्रादुर्भाव का स्थान है ६ जिस गार्हपत्य से ७ प्रगट होते तुम ८ कर्म काल पर दीप्त होते हो ९ उस गार्हपत्य को १० जानते अर्थात् अपना अंश मानते तुम ११ उसमें प्रवेश कीजिये १२ तिस के पीछे १३ हमारे १४ धन को १५ चारों ओर से वृद्धि दीजिये अर्थात् फिर यज्ञ करने को समर्थ कीजिये॥ १४॥

अथाध्यात्मम्

१ हे ब्रह्मग्नि २ यह क्षेत्रज्ञ आत्मा ३ तेरा ४ समाधिकाल सम्बंधी ४ प्रादुर्भाव का स्थान है ६ जिस से ७ प्रगट होते तुम ८ दीप्त होते हो ९ उस प्रादुर्भाव के स्थान क्षेत्रज्ञ आत्मा को १० जानते अर्थात् अपना अंश मानते तुम ११ उसमें प्रवेश कीजिये, १२ तिस के पीछे १३ हमारी १४ योग लक्ष्मी १५ चारों ओर से बढ़ाइये॥ १४॥

अयमिह प्रथमो धायि धातृभिर्होता यजिष्ठो
अध्वरेष्वीड्यः। यमप्नवानो भृगवो विरुरुचु
र्वनेषु चित्रं विभ्वं विशे विशे॥ १५॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
अयम्। होता। यजिष्ठः। अध्वरेषु। ईड्यः। प्रथमः। इह।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धातृभिः। अधायि। अन्नवानः। भृगवः। वनेषु। यः। चित्रं। विभ्वं। विशे विशे। विरुरुचुः॥ १५॥ अथाधिदैवम्-

अयमिहेत्यस्य (वामदेव ऋषिः-भुरिक् त्रिष्टुप् छं०-अग्निर्देवता) १

पदार्थः यह २ देवताओं का आह्वान करने वाला ३ यज्ञ में स्थित अथवा अति शय करके यज्ञ कराने वाला ४ सोम याग आदि में ५ ऋत्विजों से स्तुति योग्य ६ आहवनी याग्नि ७ इस कर्मानुष्ठान के स्थान में ८ स्थापन करने वालों के द्वारा ९ स्थापित हुआ १० पुत्र वान ११ भार्गव मुनियों ने १२ वनप्रदेशों में १३ जिस १४ नाना प्रकार के कर्मों में उपयोगी होने से अद्भुत १५ सर्व व्यापी अग्नि को १६ प्रत्येक यजमान के अर्थ १७ प्रज्वलित किया १५॥

अथाध्यात्मम्-१ यह २ ज्ञान निष्ठों का आह्वान करने वाला ३ ज्ञान यज्ञ में स्थित अथवा हृदय मन भ्रुकुटि में प्रगट होने वाला ४ ज्ञान यज्ञों में ५ वाणी आदि से स्तुति योग्य ६ मुख्य ब्रह्माग्नि ७ इस ज्ञान यज्ञ में योगियों से ९ ध्यान में धारण किया गया १० शिष्य वान ११ गुरुओं ने १२ तप भूमियों में १३ जिस १४ अद्भुत अथवा ज्ञान दाता १५ सर्व व्यापी अथवा ब्रह्म परा, ईश निवृत्तात्मा ४ रूप वाले ब्रह्माग्नि को १६ प्रत्येक शिष्य के अर्थ १७ ज्ञानोपदेश से प्रदीप्त किया॥ १५॥

अस्य प्रत्नामनु द्युतं शुक्रं दुहे अह्रयः। पयः सहस्रसामृषिम्॥ १६

अह्रयः। अस्य। प्रत्नाम्। सहस्रसाम्। द्युतं। अनु। शुक्रं। पयः। ऋषिम्। दुदुहे॥ १६॥ अथाधिदैवम्-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्यप्रत्ना मित्यस्य (अवत्सार ऋषिः-गायत्री छन्दः- अग्नि र्दे०) १

पदार्थः-१ संस्कार से शुद्ध अयोग्यता की लज्जा से हीन द्विजन्माओं ने २ इस अग्नि की ३ पुरातनी ४ ब्रह्म ज्योति रस रूप ५ दीप्ति को ६ देख कर ७ अन्न ८ दुग्ध ९ वेद को १० होम के लिये दोहा अर्थात् अन्न को भूमि से, दुग्ध को गौ से और वेद को गुरु से होम के लिये प्राप्त किया नाकि केवल अपने लिये जैसा भगवान ने कहा है, यह लोक विष्णवार्पण कर्म के सिवाय कर्म करने से बंधन पाता है हे अर्जुन निष्काम तुम उस परमेश्वर के लिये कर्म को भले प्रकार करो ९ पूर्व काल में परमेश्वर ने प्रजा को यज्ञ सहित उत्पन्न करके कहा, इस यज्ञ के द्वारा वृद्धि पाओ वा उत्पत्ति करो यह यज्ञ तुम्हारी अभीष्ट कामनाओं को देने वाला है १० इस यज्ञ से देवताओं को विभाग देकर वृद्धि दो, वे देवता तुम को बढ़ाओ, परस्पर वृद्धि करते स्वर्ग और मोक्ष को पाओगे ११-निश्चय यज्ञ से आराधित देवता तुम को इष्ट भोग देंगे- जो देवताओं के दिये हुए पदार्थों को उन्हें न देकर भोगता है वह चोर है १२ यज्ञ से शेष अर्थात् अमृत को भोजन करते सब पापों से मुक्त होते हैं, जो पापी अपने लिये ही पाक बनाते हैं, वे तो पाप को भोजन करते हैं १३-अन्न रस से प्राणी उत्पन्न होते हैं, वृष्टि से अन्न की उत्पत्ति है, यज्ञ से वर्षा होती है, यज्ञ कर्म से उत्पन्न हैं, १४ कर्म को वेद से उत्पन्न जानो, वेद ब्रह्म से प्रकट है उस कारण से सर्वगत ब्रह्म सदा यज्ञ में स्थित है १५ जो पुरुष इस लोक में इस प्रकार प्रवृत्त अनुष्ठान चक्र को नहीं वर्त्तता है हे अर्जुन वह पापायु वाला इन्द्रियों के विषय में क्रीडा मान निष्फल जीवता है॥ १६ अध्याय ३ भगवद्गीता॥ १६

अथाध्यात्मम्-१ संस्कार से शुद्ध अयोग्यता की लज्जा से शून्य योगियों ने २ इस ब्रह्माग्नि की ३,४,५ दीप्ति को जोकि परा, ब्रह्मा, वि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ष्णु शिव का रूप धारण करने वाली और ब्रह्म ज्योति रस रूप है ६ अनुभव कर ७ मानस सूर्य को ८ प्राण को ७ और वेद के सार महा वाक् को ८ होम के लिये दोहा ॥ १६ ॥

तनूपाअग्नेसितन्वम्मेपाह्यायुर्दाअग्नेस्या युर्म्मेदेहिवर्चोदाअग्नेसिवर्चो मेदेहि। अग्ने यन्मेतन्वाऊनन्तन्मेआपृणः १७

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
अग्ने। तनूपाः। असि। मे। तन्वम्। पाहि। अग्ने। आयुर्दा।
९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७
असि। मे। आयुः। देहि। अग्ने। वर्चोदा। असि। मे। वर्चः।
१८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६
देहि। अग्ने। मे। तन्वाः। यत्। ऊनम्। मे। तत्। आपृणः।

॥ १७ ॥

अथाधिदैवम्-

तनूपा इत्यस्य (अवत्सार ऋषिः-त्रिष्टुप छंदः-अग्निर्दे०) १

पदार्थः- १ हे अग्नि तुम २ जाठराग्नि रूप से देहों के रक्षक ३ हो ४ मेरे ५ शरीर को ६ रोग आदि से रक्षा करो ७ हे अग्नि तुम ८ आयु के दाता ९ हो १०,११ मुझ को आयु १२ दीजिये अर्थात् अप मृत्यु को दूर कीजिये क्यों कि प्रसिद्ध है जब तक शरीर में जाठराग्नि की उष्णता विद्यमान है तब तक नहीं मरता है १३ हे अग्नि तुम १४ तेज के दाता १५ हो १६ मुझे १७ तेज १८ दीजिये १९ हे अग्नि २० मेरे २१ शरीर का २२ जो अङ्ग २३ ज्ञान के अनुष्ठान में असमर्थ है २४ मेरे २५ उस अंग को २६ समर्थ कीजिये ॥ १७

अथाध्यात्मम्- १ हे ब्रह्माग्नि तुम २ ब्रह्मांड रूप शरीर के रक्षक ३ हो ४ मेरे ५ लिङ्ग शरीर को ६ संसार से रक्षा करो ७ हे ब्रह्माग्नि तुम ८ अनंत आयु के दाता ९ हो १० मुझ को ११ प्रारब्ध का अंत करने वाली

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्णायु १२ दीजिये १३ हे ब्रह्माग्नि तुम १४ ब्रह्म तेज के दाता १५ हो १६ मुझको १७ ब्रह्म तेज १८ दीजिये १९ हे ब्रह्माग्नि २० मेरे २१ शरीर का २२ जो अंग चक्षु आदि २३ ज्ञान यज्ञ के अनुष्ठान में असमर्थ है २४ मेरे २५ उस अंग को २६ समर्थ कीजिये ॥ १७ ॥

इन्धानास्त्वा शत ᳪ हिमा द्युमन्त ᳪ समिधीमहि। वयस्वन्तो वयस्कृत ᳪ सहस्वन्तः सहस्कृतम् ॥ अग्ने सपत्नदम्भनमदब्धासोऽअदाभ्यम्। चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय १८

१ अग्ने। २ इन्धानाः। ३ वयस्वन्तः। ४ सहस्वन्तः। ५ अदब्धासः। ६ शतᳪ हिमाः। ७ त्वा। ८ द्युमन्तᳪ। ९ वयस्कृतᳪ। १० सहस्कृतम्। ११ सपत्नदम्भनम्। १२ अदाभ्यं। १३ समिधीमहि। १४ चित्रावसो। १५ स्वस्ति। १६ ते। १७ पारं। १८ अशीय। १९ ॥ १८ ॥ अथाधिदैवम्

इन्धानास्त्वेत्यस्य (अवत्सार ऋषिः - निचृद्ब्राह्मी पंक्तिश्छंदः - अग्निर्दे०) १

पदार्थः - १ हे अग्नि २ आप के अनुग्रह से दीप्यमान ३ अन्नवान ४ बलवान ५ किसी से पीड़ा न पाने वाले हम यजमान ६ ७ पूर्णायु पर्यंत ८ तुझको ९ दीप्तिमान १० अन्न उत्पन्न करने वाले ११ बल के दाता १२ शत्रुओं के मारने वाले १३ किसी से पीडा न पाने वाले को १४ निरंतर प्रज्वलित करें १५ चंद्रमा नक्षत्र आदि के वास स्थान हे रात्रि यजमान में १६ कल्याण पूर्वक १७ तेरी १८ समाप्ति को १९ प्राप्त करूं, जिस प्रकार लोक में मनुष्यों के सो जाने पर चोर घर में प्रवेश करते हैं, उसी प्रकार इस यज्ञभूमि में राक्षस प्रवेश करते हैं इस शंका से रात्रि देवी की प्रार्थना है ॥ १८ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाध्यात्मम् – ज्ञान यज्ञ के ऋत्विज वाणी आदि कहते हैं १ हे आत्मा
ग्नि २ तेरे अनुग्रह से दीप्य मान ३ जीव ईश्वर का योग करने वाले ४ योग बल
से संपन्न ५ काम आदि से अपीडित हम सब ६,७ पूर्णायु पर्यंत ८ तुझ ९ परा
नामज्योति से युक्त १० जीव ईश्वर का योग करने वाले ११ योग बल को उत्प
न्न करने वाले १२ काम आदि के हिंसक १३ अविनाशी को १४ प्राण रूप स
मिधतथा इन्द्रिय शक्ति रूप घृत से भले प्रकार प्रदीप्त करें १५ हे संसार
रूप रात्रि हम १६ कल्याण पूर्वक १७ तेरे १८ पार को १९ प्राप्त करें जिस
प्रकार लोक में मनुष्यों के सो जाने पर चोर घर में प्रवेश करते हैं, उसी प्र
कार इस योग यज्ञ में काम आदि प्रवेश करते हैं इस शंका से उसके निवा
रण के लिये संसार रूप रात्रि की प्रार्थना है ॥ १८ ॥

सन्त्वमग्ने सूर्यस्य वर्चसा गथाः समृषीणां
स्तुतेन। सम्प्रियेण धाम्ना समहमायुषा संव
र्चसा सम्प्रजयास ँ रायस्पोषेणाग्निषीय। १९।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
अग्ने। त्वम्। सूर्यस्य। वर्चसा। समगथाः। ऋषीणाम्। स्तुते
८ ९ १० ११ १२ १३ १४
न। सम्। प्रियेण। धाम्ना। सम्। अहम्। आयुषा। संग्मिषी
१५ १६ १७ १८ १९ २०
य। वर्चसा। सम्। प्रजया। सम्। रायस्पोषेण। स ँ ॥ १९ ॥

अथाधिदैवम्– उठ कर उपस्थान करने के पीछे बैठा हुआ जप करता
है उसका मंत्र १ ॥

सन्त्वमित्यस्य (अवत्सार ऋषिः— जगती छन्दः—अग्निर्देवता) १

पदार्थः–१ हे अग्नि २ तुम रात्रि के समय ३ सूर्य के ४ तेज से ५ संयुक्त हु
ए हो ६ मंत्रों के ७ स्तोत्र से ८ स्तुति किये गये हो ९ प्रिय १० आहुतों से ११
संयुक्त हुए हो उसी प्रकार १२ मेंभी आप की कृपा से १३ आयु से १४ संयु-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्त होऊं १५ विद्या ऐश्वर्य आदि से युक्त तेज से १६ संयुक्त होऊं १७ पुत्र आदि से १८ संयुक्त होऊं १९ धन की पुष्टि से २० संयुक्त होऊं॥ १९॥

अथाध्यात्मम्- भूतात्मा प्रार्थना करता है १ हे ब्रह्माग्नि २ तुम ३ मानस सूर्य की ४ ज्योति से ५ संयुक्त हुए ६ मंत्रों से ७ स्तुत ईश्वर से ८ संयुक्त हुए ९, १० इन्द्रिय शक्ति समूह से ११ संयुक्त हुए १२ मैंभी १३ अप मृत्युदोषरहित आयु से १४ संयुक्त होऊं १५ ब्रह्म तेज से १६ संयुक्त होऊं १७ शिष्यों से १८ संयुक्त होऊं १९ योग लक्ष्मी से २० संयुक्त होऊं॥ १९॥

अन्धस्थान्धो वो भक्षीय महस्थ महो वो भक्षीयोर्जस्थोर्जं वो भक्षीय रायस्पोषस्थ रायस्पोषं वो भक्षीय॥ २०॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
अंधः। स्थः। वः। अन्धः। भक्षीय। महः। स्थ। वः। महः। भक्षीय। ऊर्ज्जः। स्थ। वः। ऊर्जं। भक्षीय। रायस्पोषः। स्थ। वः। रायस्पोषं। भक्षीय॥ २०॥

११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०

अथाधिदैवम्-

अन्ध स्थेत्यस्य (याज्ञवल्क्य ऋ०— भुरिग्बृहती छंदः— गौर्देवता) १

पदार्थः-हे गौओ तुम १ दुग्ध घृत आदि रूप अन्न के उत्पन्न करने से अन्नरूप २ हो ३ आप की कृपा से आपसे सम्बंध रखने वाले ४ दुग्ध घृत आदि रूप अन्न को ५ सेवन करूं तथा तुम ६ पूज्य ७ हो ८ तुम्हारे ९ दश वीर्य कोजिनके नाम ये हैं, तत्काल का दुग्ध, उष्ण दुग्ध, दुग्ध मण्ड (दूध का सार वा मांड) दही, दही का रस, दही का पिण्डा, मक्खन, घृत, फटा दूध, फटे दूध का पानी, इन दशों को हम १० सेवन करें तथा तुम ११ बल रूप १२ हो १३ तुम्हारे १४ बल को १५ सेवन करें तुम १६ धन पुष्टि रूप १७ हो क्योंकि वैश्य दुग्ध घृत आदि के बेचने से धन को बढ़ाते हैं १८ तुम्हारी कृ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पा से १९ धनकी पुष्टि को २० प्राप्त करूं ॥ २० ॥

अथाध्यात्मम्- आत्मा कहता है हे चक्षु आदि तुम १ अन्न रूप २ हो ३ तुम से सम्बंध रखने वाले ४ इन्द्रिय शक्ति समूह रूप अन्न को ५ सेवन करूं तुम ६ तेजरूप ७ हो ८ तुम से सम्बंध रखने वाले ९ तेज को १० सेवन करूं तथा तुम ११ बल रूप १२ हो १३ तुम्हारा १४ बल १५ सेवन करूं १६ तुम धन पुष्टि रूप १७ हो १८ तुम्हारी १९ धन पुष्टि को २० सेवन करूं इस मंत्र के बीच आत्मा में ३ इन्द्रियों का लय कहा ॥ २० ॥

रेवती रमध्वमस्मिन्योनावस्मिन्गोष्ठेस्मिंल्लोकेस्मिन्क्षये। इहैवस्त मापगात ॥ २१ ॥

रेवतीः। अस्मिन्। योनौ। अस्मिन्। गोष्ठे। अस्मिन्। लोके। अस्मिन्। क्षये। रमध्वम्। इह। एव। स्त। मा। अपगात ॥ २१ ॥

अथाधिदैवम्-

रेवतीरित्यस्य (याज्ञवल्क्य ऋषिः - उष्णिक् छन्दः - गौर्देवता) १

पदार्थः -१ हे धन वान गौओ २ इस ३ दृश्य मान अग्नि होत्र के दूध निकालने के स्थान में तथा दोहन के पीछे ४ इस ५ यजमान सम्बंधी गो वाट में तथा ६ इस ७ यजमान की दृष्टि में तथा रात्रि के समय ८ इस ९ यज मान के गृह में १० क्रीडा करो ११ यहां १२ ही अर्थात् यज मान के गृह में ही १३ रहो १४, १५ अन्यत्र मत जाओ ॥ २१ ॥

अथाध्यात्मम्

१ हे शम आदि धन वाले वाक् आदि तुम २ इस ३ जीव रूप परा शक्ति में तथा ४ इस ५ इन्द्रियों के आलय में तथा ६ इस ७ शरीर में तथा इस ९ संसार में १० क्रीडा करो ११ यहां १२ ही अर्थात् संसार में ही १३ रहो १४ १५ समाधि आदि में मत जाओ ॥ २१ ॥

सꣳहितासि विश्वरूप्यूर्जा मा विश गौपत्येन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपत्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धियावयम्। नमो भरन्त एमसि २२

विश्वरूपी। सृष्टं हिता। असि। ऊर्ज्जा। गोपत्येन। मो। आ विश। दोषावस्तः। अग्ने। वयं। दिवेदिवे। धियो। नमः। त्वा भरन्तः। उपैमसि॥ २२॥ अथाधिदैवम्— इस कंडिका में दो मंत्र हैं, गौके स्पर्श का मंत्र १ गार्हपत्य के उपस्थान का मंत्र २॥

संहितेत्यस्य (वैश्वामित्रो मधुच्छंदा ऋषिः—भुरिगासुरी गायत्री छं०—गौर्दे०)

उपत्वेत्यस्य (तथा — गायत्री छंदः — अग्निर्दे०)

पदार्थः— हे गौतम १ विश्वरूपी २ दुग्ध घृत रूप हवि के देने से यज्ञ कर्मों से संयुक्त अथवा भलेप्रकार हित कारी ३ हो ४ दुग्ध आदि रस तथा ५ गो स्वामित्व द्वारा ६,७ मेरे घरमें प्रवेश करो अर्थात् तुम्हारी कृपा से बहुत प्रकार के रस और गो स्वामित्व को प्राप्त करूं ८ हे रात्रि में वसन शील ९ गार्हपत्य अग्नि १० हम ११ प्रतिदिन १२ श्रद्धा युक्त बुद्धि के द्वारा १३ नमस्कार अथवा अन्न हवि को १४ संपादन करते १५ तुमको १६ प्राप्त करें ॥ २२॥ अथाध्यात्मम्— आत्मा कहता है, हे बुद्धि तुम १ विश्वरूपी तथा २ योग मार्ग में भलेप्रकार हित कारी ३ हो ४ ब्रह्म ज्ञान रूप रस ५ तथा इन्द्रियों के स्वामित्व सहित ६ मुझ आत्मा में ७ सब ओर से प्रवेश करो, प्राण कहते हैं ८ हे रात्रि रूप देह में वसन शील ९ आत्म प्रतिबिंब १० हम ११ प्रतिदिन १२ ब्रह्म बुद्धि द्वारा १३ अन्न रूप १४ तुझ को १५ ब्रह्म में धारण करते १६ प्राप्त करें॥ २२॥

राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिवम्। वर्द्धमाणं स्वे दमे २३

राजन्तम्। अध्वराणाम्। गोपाम्। ऋतस्य। दीदिवम्। स्वे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दमे। वर्द्धमाणं ॥ २३॥ अथाधिदैवम्-
राजन्त मित्यस्य (वैश्वामित्रो मधुच्छंदा ऋ०-गायत्री छं०-अग्निर्दे०) १
पदार्थः हम जिस १ दीप्यमान २ यज्ञों के ३ रक्षक ४ सत्यवचन रूप व्रत के ५ प्रकाशक ६ हमारे ७ गृह में ८ चातुर्मास्य सोम पशु आदि यज्ञ द्वारा वृद्धि पाने वाले अग्नि को प्राप्त करें॥ २३॥ अथाध्यात्मम्-
हम इस १ ब्रह्मतेज से युक्त २ ज्ञान यज्ञों में ३ इन्द्रियों के रक्षक ४ ब्रह्माग्नि के ५ प्रकाशक ६ आत्मा रूप ७ विष्णु में ८ वृद्धि पाने वाले आत्माग्नि को प्राप्त करें॥ २३॥

सनः पितेव सूनवेग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये॥ २४॥

अग्ने। सः। नः। सूपायनः। भव। इव। पिता। सूनवे। नः। स्वस्तये। आ। सचस्व॥ २४॥ अथाधिदैवम्-
सन इत्यस्य (वैश्वामित्रो मधुच्छंदा ऋ०-विराड् गायत्री छं०-अग्निर्दे०) १
पदार्थः-१ हे गार्हपत्य अग्नि २ वह पूर्वोक्त गुण से युक्त तुम ३ हमको ४ सुख से प्राप्त होने के योग्य ५ हूजिये ६ जैसे ७ पिता ८ पुत्र के लिये सुख से प्राप्त होता है ९ हमारे १० क्षेम के लिये ११ इस कर्म से युक्त हूजिये॥ २४॥ अथाध्यात्मम्- आत्मा कहता है १ हे ईश्वराग्नि २ विष्णुरूप तुम ३ हम योगियों के लिये ४ महाविष्णु रूप जो कि ब्रह्मा विष्णु महेश का आश्रय है ५ हूजिये ६ जैसे ७ पिता ८ पुत्र के लिये गुरुरूप होता है ९ हमारे १० मोक्ष रूप कल्याण के लिये ११ उस से युक्त हूजिये, क्योंकि जीव ईश्वर की एकता में ही मुक्ति है॥ २४॥

अग्नेत्वन्नोन्तमउतत्राता शिवोभवा वरूथ्यः। वसुरग्निर्वसुश्रवा अच्छानक्षि द्युमत्तमꣳ रयिन्दाः। २५

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छ। अग्ने। वसुः। अग्निः। वसु श्रवाः। त्वं। नः। अन्तमः। उत। त्राता। शिवः। वरूथ्यः। आभवे। अच्छ। नक्षि। द्युमत्तमम्। रयिं। दाः॥ २५॥ अथाधिदैवम्-

अग्नेत्वमित्यस्य (सुबन्धुर्ऋषिः—भुरिग्बृहती छंदः—अग्निर्देवः) १

पदार्थः—१ हे निर्मल स्वभाव २ गार्हपत्य अग्नि ३ ब्रह्म रश्मि रूप ४ आहवनीय आदि रूप से गमन शील ५ धन दान में विख्यात ६ तुम ७ हमारे ८ समीपवर्ती ९ और १० रक्षक ११ शान्त रूप १२ पुत्र पौत्र गृह के लिये हित कारी १३ हूजिये १४ हे निर्मल स्वभाव १५ हमारे होम स्थान में आओ १६ अति दीप्ति से युक्त १७ धन को १८ दो॥ २५॥

अथाध्यात्मम्—१ हे माया मल से रहित २ ब्रह्माग्नि ३ परा ब्रह्मा विष्णु महेश रूप ४ माया विकार के भक्षक अर्थात् उसको अपने आत्मा में लय करने वाले ५ विष्णु आदि रूप से कीर्ति पाने वाले ६ तुम ७ हमारे ८ अन्त में शेष रहने वाले ९ और १० संसार से रक्षा करने वाले ११ आनन्द स्वरूप १२ संसार जय के लिये त्रिपरिधि रूप कवच के योग्य १३ हूजिये १४ हे निर्मल १५ हम को व्याप्त कीजिये १६ पूर्ण ब्रह्म तेज से युक्त १७ योग लक्ष्मी को १८ दीजिये॥ २५॥

तन्त्वा शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः। सनो बोधि श्रुधी हवमुरुष्याणो घायतः समस्मात्॥ २६॥

शोचिष्ठ। दीदिवः। तम्। त्वा। सखिभ्यः। सुम्नाय। नूनम्। ईमहे। सः। अ। नः। बोधि। दो। हवम्। श्रुधि। समस्मात्। अघायतः। नः। उरुष्य॥ २६॥ अथाधिदैवम्-

तन्त्वेत्यस्य (सुबन्धुर्ऋषिः—सुराड् बृहती छन्दः—अग्निर्देवता) १

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदार्थः १ हे अत्यंत दीप्ति मान २ हे सब के प्रकाशक ३ उस पूर्वोक्त गुण से युक्त ४ तुम को मित्रों के लिये ६ तथा सुख के लिये ७ निश्चय पूर्वक ८ याचना करते हैं ९ वह १० विष्णु रूप तुम ११ हम सेवकों को १२ जानों १३ हे रुद्र रूप १४ हमारे आव्हान को १५ सुनो १६ सब १७ शत्रुओं से १८ हम को १९ रक्षा करो॥ २६॥ अथाध्यात्मम्- १ हे ज्योति स्वरूप २ ब्रह्मांड के प्रकाशक परमेश्वर ३ अविनाशी ४ तुम को ५ वाक् आदि के उपकार के लिये ६ तथा मोक्ष सुख के लिये ७ निश्चय पूर्वक ८ याचना करते हैं ९ वह १० विष्णु रूप ११ तुम हम को १२ जानों १३ हे रुद्र रूप १४ हमारे आव्हान को १५ सुनो १६ सब १७ काम शत्रु से १८ हम को १९ रक्षा करो॥ २६॥

इड एह्यदित एहि काम्या एत। मयि वः काम धरणम् भूयात् २७
इडे। एहि। अदिते। एहि। काम्याः। एत। वः। काम धरणम्। मयि। भूयात्॥ २७॥ अथाधिदैवम्- इस कंडिका में दो मंत्र हैं गौ के पास जाने का मंत्र १ गौ के स्पर्श का मंत्र २॥

इड एहीति (श्रुतिबन्धुर्ऋषिः-विराड् गायत्री छंदः- गौर्देवता) १
काम्या एतेति (तथा — तथा — तथा) २

पदार्थः १ दुग्ध आदि द्वारा मनुष्यों को भूमि की समान पालन करने से पृथ्वी रूप हे गौ २ यहां आओ ३ घृत द्वारा देवताओं को अदिति की समान पालन करने से अदित रूप हे गौ ४ होम के स्थान में आओ ५ सब से चाहने योग्य हे गौओ ६ यहां आओ ७ तुम्हारी कृपा से तुम्हारा ८ अपेक्षित फलों का धारण करना अथवा तुम्हारी प्रीति भाव ९ मुझ यजमान में १० होवै॥ २७॥

अथाध्यात्मम्- आत्मा कहता है १ हे महा वाक् २ आओ ३ हे जीव रूप परा शक्ति ४ आओ ५ सब से चाहने योग्य हे इन्द्रियो ६ ज्ञान यज्ञ के स्थान हार्दाकाश को प्राप्त करो ७ तुम्हारी ८ इच्छा का धारण ९ मुझ आ-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्मा में १० होवै नकि माया के पदार्थों में ॥ २७ ॥

सोमानꣳ स्वरणङ्कृणुहि ब्रह्मणस्पते। कक्षी वन्तं यऔशिजः ॥ २८ ॥

वने। ब्रह्मणस्पते। तं। सोमानं। स्वरणम्। कृणुहि। यः। कक्षी औशिजः ॥ २८ ॥ अथाधिदैवम्- आहवनीय को देखता यहां से ९ ऋचा तक जप करता है ॥

सोमानमिति (मेधातिथिर्ऋ०—गायत्री छंदः—ब्रह्मणस्पतिर्दे०) १

पदार्थः १- हे ब्रह्मा विष्णु महेश रूप २ हे वेद के रक्षक परमेश्वर तुम ३ उस यजमान को ४ सोम यज्ञ का करने वाला और ५ स्तुति रूप शब्द से युक्त ६ करो ७ जो ८ पाप मय होता ९ स्वर्ग की इच्छा से युक्त है ॥ २८ ॥

अथाध्यात्मम्- १ हे त्रिदेव रूप २ वेद के रक्षक परमेश्वर तुम ३ उस यजमान को ४ ब्रह्म में आत्म प्रति बिंब को लय करने वाला ५ अहं ब्रह्मास्मि इस शब्द से युक्त करो ७ जोकि ८ पाप मय होता ९ योग की इच्छा से युक्त है ॥ २८ ॥

योरेवान्योऽमीवहा वसुवित्पुष्टिवर्द्धनः। सनः सिषक्तु यस्तुरः २९

यूः। रेवान्। यूः। अमीवहा। वसुवित्। पुष्टिवर्द्धनः। यः। तुरः। सः। नः। सिषक्तु ॥ २९ ॥ अथाधिदैवम्-

योरेवानित्यस्य (मेधातिथिर्ऋ० गायत्री छन्दः ब्रह्मणस्पतिर्दे०) १

पदार्थः- १ जो महा नारायण २ महा लक्ष्मी का पति है ३ जो ४ संसार रोग का नाशक ५ धन वादीमि का दाता ६ भक्ति ज्ञान रूप पुष्टि का बढ़ाने वाला है ७ जो ८ ब्रह्मा विष्णु महेश रूप है ९ वह १० हम को ११ सेवन करो ॥ २९ ॥ **अथाध्यात्मम्**- १ जो महा विष्णु २ ब्रह्माग्नि और परा शक्ति का स्थान है ३ जो ४ जन्म मृत्यु रूप रोग का नाशक ५ वै

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुंठकादाता अथवा अपने को प्राप्त करानेवाला ६ विष्णु भावनाम पुष्टिका बढ़ानेवाला है ७ जो ८ त्रिदेवरूपधारी है ९ वह १० हमको ११ सेवन करै॥२९

मानः शꣳसोअररुषोधूर्तिःप्रणङ्मर्त्तस्य। रक्षा णोब्रह्मणस्पते ३०

ब्रह्मणस्पते। अररुषः। मर्त्तस्य। शंसः। धूर्तिः। नः। मा। प्रणक्। नः। आरक्ष। ३०॥ अथाधिदैवम्-

मानइत्यस्य (सत्यधृतिर्वारुणिर्ऋ०- निचृद्गायत्रीछं०-ब्रह्मणस्पतिर्दे०)१

पदार्थः- १ हे वेद के रक्षक महा विष्णु २ कभी हविदान न करनेवाले ३ मनुष्य का ४ अनिष्ट चिंतन और ५ हिंसा ६ हम को ७ मत ८ सताओ वा नाश मत करो ९ तुम हम को १० चारों ओर से रक्षा करो॥ ३०॥

अथाध्यात्मम् - १ वेद के रक्षक महा विष्णु २ आत्माग्नि में होम न करने वाले ३ विषयासक्त होने से मरण शील मन का ४ अनिष्ट चिंतन ५ और हिंसा ६ हम योगिजनों को ७ मत ८ विनाश करो ९ तुम हम योगारूढ़ भक्तों को १० चारों ओर से रक्षा करो॥ ३०॥

महित्रीणामवोस्तु द्युक्षम्मित्रस्यार्य्यम्णः॥ दुरावर्षंवरुणस्य ३१

मित्रस्य। अर्य्यम्णः। वरुणस्य। त्रीणाम्। महि। द्युक्षम्। दुराधर्षम्। अवः। अस्तु॥ ३१॥ अथाधिदैवम्-

महित्रीणामित्यस्य (सत्यधृतिर्वारुणिर्ऋ०- विराड्गायत्रीछं०-आदित्योदे०)१

पदार्थः- १ मित्र २ अर्यमा ३ वरुण ४ तीनों देवताओं से सम्बंध रखने वाली ५ बड़ी ६ सुवर्णादि द्रव्यों से युक्त ७ तिरस्कार न पानेवाली ८ रक्षा ९ हम को प्राप्त हो॥ ३१॥ अथाध्यात्मम्- १ प्राण २ मन ३ अपान ४ तीनों से संबंध रखने वाली ५ बड़ी ६ ब्रह्मतेज से युक्त ७ काम आदि से तिरस्कार न पा-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेवाली८ रक्षा ९ हम को प्राप्त हो॥ ३१॥

नहि तेषा ममाचन नाङ्हसुवारणेषु। ईशे रिपुरघशꣳसः॥ ३२॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११
अमी। तेषाम्। अघशꣳसः। रिपुः। नहि। ईशे। रणेषु। वा। अध्वसु। चन। न॥ ३२॥ अथाधिदैवम्-

ओं नहि तेषामित्यस्य (सत्यधृतिर्वारुणिर्ऋ० निचृद्गायत्री छं० आदित्यो दे०) १

पदार्थः १ ग्रहों के मध्य २ उन मित्र अर्यमा वरुण देवताओं से रक्षित यजमानों का ३ सदा अनिष्ट चिंतक ४ शत्रु ५, ६ समर्थ नहीं होता है ७ युद्धों में ८ तथा ९ कर्म उपासना ज्ञान के मार्गों में १० भी ११ समर्थ नहीं होता॥ ३२॥

अथाध्यात्मम् १ इंद्रियों के स्थानों में २ उन प्राण अपान मन का ३ अशुभ चाहने वाला ४ शत्रु अज्ञान ५, ६ समर्थ नहीं होता है ७ काम आदि के युद्धों में ८ अथवा ९ योग मार्गों में १० भी ११ समर्थ नहीं होता है

तेहि पुत्रासो अदितेः प्रजीवसे मर्त्याय। ज्योतिर्यच्छन्त्यजस्रम्॥ ३३

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
हि। ते। अदितेः। पुत्रासः। मर्त्याय। अजस्रम्। ज्योतिः। प्रजीवसे। यच्छन्ति॥ ३४॥ अथाधिदैवम्-

ओं तेहीत्यस्य (वारुणिः सत्यधृतिर्ऋ० विराड् गायत्री छं० आदित्यो दे०) १

पदार्थः १ जिस कारण २ वे ३ देवता के ४ पुत्र मित्र अर्यमा वरुण नाम ५ यजमान के अर्थ ६ अखंड ७ तेज को ८ दीर्घायु के लिये ९ देते हैं॥ ३३॥

अथाध्यात्मम्- १ जिस कारण २ वे ३ जीव रूप परा शक्ति के ४ पुत्र मन प्राण अपान ५ यजमान के अर्थ ६ परिपूर्ण ७ ब्रह्मज्योति को ८ मोक्ष के लिये ९ देते हैं॥ ३३॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कदाचन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे। उपोपेन्नु मघवन्भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यते ३४

इन्द्र। कदाचन। स्तरीः। न। असि। दाशुषे। उप। इन्नु। सश्चसि। मघवन्। ते। देवस्य। भूयइत्। दानम्। नुइत्। उपपृच्यते॥ ३४॥ अथाधिदैवम्-

ओंकदाचनेत्यस्य (मधुच्छंदा ऋ०- पथ्या बृहती छं०- इंद्रो देवता) १

पदार्थः १ हे परमैश्वर्य से युक्त महा नारायण तुम २ कभी ३ हिंसक ४ नहीं ५ हो क्योंकि शुद्ध सत्व रूप हो ६ सर्वस्व देने वाले भक्त के लिये ७ ब्रह्मा विष्णु महेश रूप को ८ इच्छा पूर्वक ९ धारण करते हो १० हे ब्रह्मा विष्णु महेश रूप धारी ११ तुम १२ ज्योति स्वरूप का १३ बहुत बड़ा १४ दान धर्म काम अर्थ मोक्ष नाम १५ शीघ्रही १६ यजमान को प्राप्त होता है॥ ३४॥

तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि। धियो योनः प्रचोदयात्॥ ३५॥

सवितुः। वरेण्यम्। देवस्य। भर्गः। यः। नः। धियः। प्रचोदयात्। तत्। धीमहि॥ ३५॥

ओंतत्सवितुरित्यस्य (विश्वामित्र ऋ०- निचृद्गायत्री छं०- सविता दे०) १

ब्रह्मोपासना पदार्थः- जो ब्रह्म १ विराट के आत्मा सूर्य का २ प्रार्थनीय है ३ राम कृष्ण आदि अवतारों से क्रीडा करने वाले, असुरों के जीतने वाले साकार ब्रह्म क ४ प्रादुर्भाव, रमण व्याप्ति की प्राप्ति का कारण अथवा आदि ज्योति है ५ जो ६ हमारी ७ प्रज्ञा शक्ति मन प्राण और मानस सूर्य को ८ प्रेरणा करै वा करता है ९ उस सत्यज्ञान आनंद आदि रूप वाले वेदान्त से सिद्धि होने वाले ब्रह्म को १० अपनी आत्मा में ध्यान करते हैं॥ ३५

परि ते दूडभो रथोऽस्माँ अश्नोतु विश्वतः

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

येनरक्षसिदाशुषः ३६

तोदूडभूः। रथः। अस्माꣳ। विश्वतः। पर्यश्नोतु। येन। दाशुषः। रक्षसि॥ ३६॥

ओंपरितद्त्यस्य (वामदेव ऋ० निचृद्गायत्री छं०- अग्निर्देवता) १

पदार्थः- हे ब्रह्माग्नि १ तेरा २ ब्रह्मा विष्णु महेश भगवती रूप ३ रथ ४ हम यजमानों को ५ सब दिशाओं में ६ सब ओर से व्याप्त करो ७ जिस देव मय रथ से ८ यजमानों को ९ रक्षा करते हो॥ ३६॥ बृहद्उपस्थान समाप्त हुआ॥ अथ क्षुल्लकोपस्थानमासुरिदृष्टम्-

भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः प्रजाभिः स्याꣳ सुवीरो वीरैः सुपोषः पोषैः। नर्य्य प्रजाम्मे पाहि शꣳस्य पशून्मे पाह्यथर्य्य पितुम्मे पाहि ३७

भूः। भुवः। स्वः। प्रजाभिः। सुप्रजाः। वीरैः। सुवीरः। पोषैः। सुपोषः। स्याꣳ। नर्य। मे। प्रजाम्। पाहि। शंस्य। मे। पशून्। पाहि। अथर्य। मे। पितुम्। पाहि॥ ३७॥

अथाधिदैवम्- अग्नि होत्र करने के पीछे उपस्थान करता है उसका मंत्र १ यजमान दूसरे ग्राम को जाना चाहता गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिणाग्नि का उपस्थान करता है उसके मंत्र २,३,४॥

ओंभूर्भुवरित्यस्य (वामदेव ऋ०- ब्राह्म्युष्णिक् छंद- अग्निर्देवता) १

पदार्थः- हे गार्हपत्य अग्नि तुम १,२,३ त्रिलोकी रूप हो आप की कृपा से मैं ४ बंधु भृत्य आदि के द्वारा ५ अनुकूल प्रजा वाला होऊं ६ वीर पुत्रों के द्वारा ७ शास्त्र मार्ग पर चलने वाली शुभ संतान वाला होऊं ८ सुवर्ण आदि की पुष्टि से ९ बहुत धन से युक्त १० होऊं ११ हे जीव आत्माओं के हितकारी गार्हपत्य १२ मेरी १३ संतान को १४ रक्षा करो १५ हे अनुष्ठान

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने वालों से प्रशंसा योग्य आहवनीय १६ मेरे १७ पशुओं को १८ रक्षा करो १९ हे दक्षिणाग्नि २० मेरे २१ अन्न को २२ रक्षा करो॥ ३७॥

अथाध्यात्मम्– भूतात्मा कहता है, हे ब्रह्माग्नि तुम १,२,३ त्रिलोकी रूप अर्थात् विराट् स्वरूप हो ४ मैं प्राणों के द्वारा ५ योगानुष्ठान के योग्य प्राणों से युक्त होऊं ६ प्राणों से प्राप्त इन्द्रियों के द्वारा ७ जितेन्द्री होऊं ८ योगैश्वर्य पुष्टि के द्वारा ९ योग भ्रंश से रहित १० होऊं ११ हे जीवों के हितकारी नर १२ मेरे १३ प्राण को १४ रक्षा करो १५ हे स्तुति योग्य नारायण १६ मेरी १७ इन्द्रियों को १८ संसार से रक्षा करो १९ जीव भाव से नर भाव प्राप्त करने वाले हे जीवात्मा २० मेरे २१ अन्न रूप देह को २२ रक्षा करो अर्थात् योग मार्ग में विघ्न कारक भोजन से रक्षा करो॥ ३७॥

आगन्म विश्व वेद सम स्मभ्यं वसु वित्त मम। अग्ने सम्राडभि द्युम्न मभि सह आयच्छस्व ॥३८॥

सम्राट्। अग्ने। विश्वे वेद सम्। वसु वित्त मम्। अभ्या गन्म। द्युम्नम्। सहः। अस्मभ्यम्। अभि। आयच्छस्व॥

अथाधिदैवम्– आहवनीय के उपस्थान का मंत्र॥

ओं आगन्मेत्यस्य क्षासुरिर्ऋ०– अनुष्टुप् छं०– आहवनीयाग्निर्दे०) १

पदार्थः- १ हे भले प्रकार दीप्यमान २ आहवनीय अग्नि हम तुम ३ सर्वज्ञ अथवा सब धनों के स्वामी ४ धन के बडे दाता को उद्देश करके ५ दूसरे गांव से आये ६ यश ७ बल को ८ हमारे लिये ९ सब ओर से १० दीजिये वा प्राप्त कराइये॥ ३८॥

अथाध्यात्मम्– १ हे त्रिलोकेश २ नारायण हम तुम ३ सर्वज्ञ ४ लक्ष्मी पति को ५ भक्ति भाव से सन्मुख प्राप्त हुए ६ यश ७ और योग बल को ८ हमारे अर्थ ९ सब ओर से १० दीजिये॥ ३८॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अयमग्निर्गृहपतिर्गार्हपत्यः प्रजायावसुवित्तमः
अग्ने गृहपतेभिद्युम्नमभि सह आयच्छस्व ॥३९॥

अयम्। गार्हपत्यः। अग्निः। गृहपतिः। प्रजायाः। वसुवित्तमः।
गृहपते। अग्ने। द्युम्नम्। अभि। आयच्छस्व। सहः। अभि॥३९॥

अथाधिदैवम्- गार्हपत्य के उपस्थान का मंत्र॥

ओं अयमग्निरित्यस्य असुरिर्ऋषिः भुरिग्बृहती छंः- गार्हपत्याग्निर्देवता)१

पदार्थः-१ यह २ गार्हपत्य ३ अग्नि ४ गृह का रक्षक ५ पुत्र पौत्र आदि के लिये ६ धन का बड़ा दाता है ७ हे गृह पति ८ अग्नि ९ धन को १० सब ओर से ११ दीजिये १२ बल को १३ सब ओर से दीजिये॥ ३९॥

अथाध्यात्मम्- भूतात्मा जीवात्मा से प्रार्थना करता है १ यह २ क्षेत्र रूप ३ जीवात्मा ४ क्षेत्र पति ५ प्राण के अनुग्रह अर्थ ६ इन्द्रिय रूप धन का अतिशय प्राप्त कराने वाला है ७ हे गृह पति आत्माग्नि ९ शमादि रूप धन को १० सब ओर से ११ दीजिये १२ बल को १३ सब ओर से दीजिये। ३९

अयमग्निः पुरीष्यो रयिमान्पुष्टिवर्द्धनः। अग्ने पुरीष्याभि द्युम्नमभि सह आयच्छस्व ४०

अयम्। अग्निः। पुरीष्यः। रयिमान्। पुष्टिवर्द्धनः। पुरीष्यः।
अग्ने। द्युम्नम्। अभि। आयच्छस्व। सहः। अभि॥ ४०॥

अथाधिदैवम्- दक्षिणाग्नि के उपस्थान का मंत्र॥

ओं अयमग्निः पुरीष्य(इतिअसुरिर्ऋषिः निचृदनुष्टुप छंः- दक्षिणाग्निर्देवता)१

पदार्थः-१ यह २ दक्षिणाग्नि ३ पशुओं का हित कारी ४ धन वान ५ पुष्टि का बढ़ाने वाला है उस से याचना करता हूं ६ हे पशु हित कारी ७ अग्नि तुम ८ अन्न को ९ सब ओर से १० दीजिये ११ बल को १२ सब ओर से दीजिये॥ ४०॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाध्यात्मम्- भूतात्मा नर से प्रार्थना करता है १ यह २ नरोत्तम नर ३ जीवों का हित कारी ४ योग सम्पत्ति मान ५ पुष्टि बढाने वाला है उस से याचना करता हूं ६ हे जीवों के हित कारी ७ नर तुम ८ योग सम्पत्ति को ९ सब ओर से १० दीजिये ११ योग क्रिया की सामर्थ्य १२ सब ओर से दीजिये॥ ४०॥

गृहा मा बिभीत मा वेपध्वमूर्जं बिभ्रत एमसि। ऊर्जं बिभ्रद्वः सुमनाः सुमेधा गृहानैमि मनसा मोदमानः ४१

गृहाः। मा। बिभीत। मा। वेपध्वम्। एमसि। ऊर्जम्। बिभ्रत सुमनाः। सुमेधाः। मनसा। मोद मानः। ऊर्जम्। बिभ्रत्। वः। गृहान्। ऐमि॥ ४१॥

अथाधिदैवम्- दूसरे गांव से घर में आकर जप करने का मंत्र॥ ओं गृहा मेत्यस्य (आसुरिर्ऋषि०-आर्षी पंक्तिश्छंदः वास्तु राग्नि र्देवता) १

पदार्थः- १ हे गृहाभिमानी देवता ओ तुम २ मत ३ भय करो यह जान कर कि हमारा रक्षक यजमान गया ४ मत ५ कांपो ६ वायु आकाश विष्णु और शिव की रक्षा में ७ अन्न और रस को ८ धारण करो ९ शुभ मन वाला १० शोभन बुद्धि से युक्त ११ दुःख रहित मन के द्वारा १२ हर्षित १३ अन्न और रस को १४ धारण करता मैंभी १५ तुम १६ गृहों में १७ आता हूं॥ ४१॥

अथाध्यात्मम्- सुषुम्ना मार्ग से भ्रकुटि स्थान को जाता जप करता है, १ हे इन्द्रिय मन बुद्धि रूप गृहो तुम २ मत ३ डरो कि जीवात्मा जावेगा ४ मत ५ कंपो ६ प्राण वायु और त्रिदेव रूप आत्मा में ७ इन्द्रिय शक्ति रूप अन्न को ८ धारण करो ९ शोभन मन वाला १० शुभ बुद्धि से सम्पन्न ११ ब्रह्म रूप मन के द्वारा १२ ब्रह्मानंद से युक्त मैंभी १३ आनंद रस को १४ धारण करता १५ तुम १६ गृहों में १७ आता हूं॥ ४१

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

येषा मद्भ्यो ति प्रवसन्येषु सौ मन सोः बद्धः।
गृहानुपह्वयामहे तेनोजानन्तु जानतः ४२

प्रवसन्। येषाम्। अद्भ्योति। येषु। बद्धः। सौमनसः। गृहान् उपह्वामहे। ते। जानतः। नः। जानन्तु॥ ४२॥ अथाधिदैवम् ओं येषामित्यस्य (शंयुर्ऋ०—अनुष्टुप्छंद—वास्तुपतिरग्निर्दे०) १

पदार्थः—१ दूसरे देश में जाता यजमान २ जिन गृहों की ३ क्षेम सुख चाहता है ४ जिन गृहों में यजमान की ५ बद्धत ६ प्रीति है हम उन ७ गृहाभिमानी देवताओं को ८ आह्वान करते हैं ९ वे गृह देवता १० हमारे उपकार को जान्ते ११ हम को १२ जानों कि यह कृतघ्न नहीं है॥ ४२

अथाध्यात्मम्—प्राण जीव और ईश कहते हैं, १ योगी समाधि करता २ जिन मन बुद्धि इन्द्रिय के आलयों का ३ उत्थान अवस्था में स्मरण करता है ४ जिन इन्द्रियों के स्थानों में उसकी ५ अत्यंत ६ प्रीति है ७ उन इन्द्रियों के स्थानों को ८ आह्वान करते हैं ९ वे १०, ११ हम सर्वज्ञों को १२ जानों॥ ४२॥

उपहूता इह गाव उपहूता अजावयः। अथो
अन्नस्य कीलाल उपहूतो गृहेषु नः क्षेमाय वः
शान्त्यै प्रपद्ये शिवꣳ शग्मꣳ शंय्योः शंय्योः ४३

इह। नः। गृहेषु। गावः। उपहूताः। अजावयः। उपहूताः। अथ अन्नस्य। कीलालः। उपहूतः। क्षेमाय। शान्त्यै। वः। प्रपद्ये। शंय्योः। शिवꣳ। शंय्योः। शग्मꣳ॥ ४३॥ अथाधिदैवम्—ओं उपहूता इत्यस्य (शंयुर्बार्हस्पत्य ऋ०—भुरिग्जगती छं०—वास्तुपतिर्दे०)

पदार्थः १ यहां २ हमारे ३ गृहों में ४ गौ बैल ५ सुख से ठहरो इस प्रकार आज्ञा दिये गये ६ भेड़ बकरियां ७ सुख से रहो इस प्रकार आज्ञा दी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई ८ तथा ९ अन्न का १० रस विशेष ११ वृद्धि पाओ इस प्रकार हम से आज्ञा दिया गया है गृहो १२ विद्यमान धन की रक्षा के लिये १३ मेरे सब अनिष्ट की शान्ति के लिये १४ तुम को १५ प्राप्त करता हूं १६ हे विष्णु वा हे महेश्वर १७ सायुज्य चाहने वाले भक्त का १८ कल्याण हो १९ कैवल्य मोक्ष चाहने वाले योगी को २० ब्रह्मानंद प्राप्त हो॥ ४३॥ उपस्थान के मंत्र समाप्त हुए॥

अथाध्यात्मम्-१ इस उत्थान अवस्था के मध्य २ हमारे ३ देहांगों में ४ कर्म उपासना ज्ञान की प्रकाशक बुद्धि वृत्तियां ५ समीप प्राप्त की गई ६ आत्मा की रक्षक ज्ञानेन्द्रियां ७ समीप प्राप्त की गई ८ तथा ९, १० कर्मेन्द्रिय सहित भूतात्मा ११ चैतन्य के वश में प्राप्त किया गया है देह के अंगो १२ तप की रक्षा के लिये १३ शांति के अर्थ १४ तुम को १५ प्राप्त करता हूं १६ हे विष्णु वा हे योगेश्वर शंकर १७ योगैश्वर्य सुख चाहने वाले आरूरुक्षु योगी का १८ कल्याण हो १९ कैवल्य मोक्ष चाहने वाले योगारूढ़ योगी को २० मोक्ष सुख हो ४३

अथ चातुर्मास्य मंत्राः

प्रघासिनो हवामहे मरुतश्चरिशादसः। करम्भेण सजोषसः॥४४॥

२ २ ३ ४ ५ ६ ७

रिशादसः। करम्भेण। सजोषसः। च। प्रघासिनः। मरुतः। हवामहे ॥४४॥ **अथाधिदैवम्**-

ओं प्रघासिन इत्यस्य (प्रजापति ऋ० गायत्री छं० मरुतो दे०) १

चातुर्मास्य नाम यज्ञ अग्रोक्त चार पर्व रूप है, वैश्वदेव, वरुणप्रघास, साकमेध, शुनाशीरीय. तहां वरुणप्रघास नाम दूसरे पर्व में दक्षिण उत्तर नाम दोनों वेदी के हवि स्थापन करने पर आह्वान करै७

पदार्थः १ वैर कृत हिंसा को दूर करने वाले अथवा हिंसकों को नाश करने वाले २ यव मय हवि से समान प्रीति वाले ४ तथा ५ हवि विशेष के भक्षक-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६ मरुत् गणों को ७ आह्वान करते हैं॥ ४४॥

अथाध्यात्मम्- १ काम कृत हिंसा के निवर्त्तक अथवा काम आदि के नाशक २ ब्रह्माग्नि परब्रह्म विष्णु महेश से ३ समान प्रीति वाले ४ तथा विराट् रूप अन्न के भक्षक ६ प्राणों को ७ आह्वान करते हैं॥ ४४॥

यद्ग्रामे यदरण्ये यत्सभायां यदिन्द्रिये। यदेनश्चकृमा वयमिदन्तदवयजामहे स्वाहा॥ ४५॥

वयम्। ग्रामे। यत्। एनः। अरण्ये। यत्। सभायां। यत्। इन्द्रिये। यत्। यत्। आच कृम। तत्। इदम्। अव यजामहे। स्वाहा। ४५

अथाधिदैवम्- दक्षिणाग्नि में करम्भ पात्रों को होमता है उसका मंत्र ओंयद्ग्रामइत्यस्य (प्रजापति र्ऋ० स्वराडनुष्टुप् छं० मरुतो देवता) १

पदार्थः १ हमने २ गांव में ३ जो ४ मन वाणी शरीर से पर पीडा रूप पाप किया ५ वन में ६ जो वृक्ष छेदन मृग वध आदि पाप किया ७ सभा में ८ जो अनीति आदि पाप किया ९ इन्द्रिय समूह में १०, ११ जो जो धर्म शास्त्र विरुद्ध भोजन पान मैथुन आदि पाप १२ किया १३ उस १४ इस पाप को १५ विनाश करता हूं १६ यह हवि पाप नाशक देवता को दिया॥ ४५॥

अथाध्यात्मम्- १ हमने २ ब्रह्मचर्य वा गृहस्थाश्रम में ३ जो गुरु वा पिता का ४ अपराध किया ५ वानप्रस्थ आश्रम में ६ जो पाप किया ७ साधु सभा में ८ जो शास्त्र विरुद्ध कथन आदि पाप किया ९ इन्द्रिय समूह में १०, ११ जो जो पाप १२ किया १३ उस १४ इस पाप को १५ विनाश करते हैं १६ अहं ब्रह्मास्मि इस महावाक्य से॥ ४५॥

मोषूणइन्द्रान्यत्सुदेवैरस्तिहिष्मातेशुष्मिन्नवयाः महश्चिद्यस्य मीढुषो यव्याहविष्मतो मरुतो वन्दते गीः॥ ४६॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२
अ। उ। भुषिन्। इन्द्र। इत्सु। नः। मा। अस्थुः। देवैः। अस्ति। अत्र। यः
१३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२
अव। हि। ते। स्मः। यस्य। मीढुषः। हविष्मतः। महः। चित्। यव्यो।
२३ २४ २५
गीः। मरुतः। वन्दते ॥ ४६॥ अथाधिदैवम्-जप मंत्रः,
ओं मोषूणइत्यस्य (अगस्त्यऋ० भुरिग्पंक्तिश्छं० इन्द्र मारुतौ देवते)१

पदार्थः- यजमान जप करता है १ हे सुरेश २ अमरेश ३ बलवान ४ इंद्र तुम ५ असुरों के संग्रामों में ६ हम को ७ मत ८ प्रेरणा करो, वह संग्राम ९ देवताओं के साथ १० है ११ इस युद्ध में १२ जाओ १३ हम को रक्षा करो १४ जिस कारण १५ हम आप के भक्त १६ हैं १७ जिस १८ बर्षा से सींचने वाले १९ हवि के योग्य आप की २० पूजा २१ निश्चय २२ मरुत् गणों की वंदना से निष्पन्न हैं उस कारण २३ वाणी २४ आपके सखा मरुद्गणों को २५ नमस्कार करती है॥ ४६॥

अथाध्यात्मम्- आत्मा रूप यजमान जप करता है १ हे सर्वव्यापी २ काम आदि शत्रुओं के नाशक ३ योग बल से युक्त ४ मन तुम ५ काम आदि के संग्रामों में ६ हम योगियों को ७ मत ८ प्रेरणा करो, वह संग्राम ९ इन्द्रियों के साथ १० है ११ इस युद्ध में १२ जाओ १३ हम को रक्षा करो १४ जिस कारण हम १५ तेरे स्वामी १६ हैं १७ जिस १८ अमृत बर्षा से सींचने वाले १९ इन्द्रियरूप हवि के योग्य आपकी २० पूजा २१ निश्चय २२ प्राण वंदन से निष्पन्न है उस कारण २३ वेद वाणी २४ प्राणों को २५ नमस्कार करती है॥ ४६॥

अक्रन्कर्म कर्म्मकृतः सह वाचा मयो भुवा। देवेभ्यः कर्म कृत्वा स्तम्प्रेत सचा भुवः॥ ४७॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
कर्मकृतः। मयोभुवा। वाचा। सह। कर्म्म। अक्रन्। हे सचाभुवः
८ ९ १० ११ १२
देवेभ्यः। कर्म। कृत्वा। अस्तम्। प्रेत। १२॥

अथाधिदैवम्- प्रतिप्रस्थाता यजमान को करम्भ पात्र के होम देश से

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने स्थान को लेजाता इस मंत्र को पढ़ता है॥

ओं अक्रन्नित्यस्य (अगस्त्य ऋ० विराडनुष्टुप छं० अग्निर्दे०) १

पदार्थः – १ वरुणप्रघास नाम कर्म कराने वाले ऋत्विजों ने २ सुख दाता ३ स्तुति रूप वाणी के ४ साथ ५ वरुणप्रघास अनुष्ठान रूप कर्म ६ किया ७ परस्पर यजमान वा पत्नी के साथ इस कर्म में स्थित हे ऋत्विजो ८ देवताओं के अर्थ ९ वरुणप्रघास नाम कर्म को १० करके ११ अपने घरों को १२ जाओ॥ ॥४७॥ **अथाध्यात्मम्** – १ योग यज्ञ के ऋत्विज वाक् आदि ने २ ब्रह्मानंद रूप ३ वेद मंत्र के ४ साथ ५ इन्द्रिय आदि संस्कार रूप कर्म को ६ किया ७ शरीर में साथ रहने वाले हे वाक् आदि ऋत्विजो तुम ८ ब्रह्मपरनारायण के अर्थ ९ इन्द्रिय आदि संस्कार रूप कर्म को १० करके ११ आत्मारूप गृह को १२ प्राप्त करो॥ ४७॥

अवभृथनिचुम्पुणानिचेरुरसिनिचुम्पुणः। अवदेवैर्देवकृतमेनोयासिषमवमर्त्यैर्मर्त्यकृतम्पुरुराव्णो देवरिषस्पाहि ४८॥

निचुम्पुण। अवभृथ। निचेरुः। असि। निचुम्पुण। देवैः। देवकृतम्। एनः। अवायासिषम्। मर्त्यैः। मर्त्यकृतम्। अव। देवैः। पुरुराव्णः। रिषः। पाहि॥४८॥

अथाधिदैवम् – वरुणप्रघास कर्म के अंत में स्त्री पुरुष को जल में अवभृथ नाम स्नान करना चाहिये उसका मंत्र १॥

ओं अवभृथेत्यस्य (शौरी वाभ ऋ० ब्राह्म्यनुष्टुप छन्दो० यज्ञो दे०) १

पदार्थः – १ हे मंद गति २ अवभृथ नाम यज्ञ तुम ३ निरंतर गमन शील ४ हो ५ तौभी यहां मंद गति हूजिये क्योंकि मैंने ६ द्योतनात्मक अपनी इन्द्रियों से ७ हवि स्वामी देवताओं में किया हुआ ८ पाप ९ इस जल में त्याग किया तथा १० हमारे सहायक ऋत्विजों से ११ किया हुआ यज्ञ दर्शनार्थी पुरुषों की

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवज्ञा रूप पाप १२ इस जल में छोड़ा १३ हे देवा भ्रथ नाम यज्ञ १४ वद्धत विरुद्ध फल दाता १५ हिंसा से १६ रक्षा करो ॥ ४८ ॥

अथाध्यात्मम् - १ ज्ञान यज्ञ की समाप्ति में किये हुए स्नान सम्बंधी २ हे आत्म समुद्र तुम अचल भी ३ जीव रूप किरणों से निरंतर गमन शील ४ समुद्र ५ हो ६ ज्ञानेंद्रियों के साथ ७ जीवात्मा का किया हुआ ८ पाप ९ दूर त्याग किया तथा १० कर्मेन्द्रियों के साथ ११ भूतात्मा का किया हुआ पाप १२ दूर त्याग किया १३ हे ज्योतिः स्वरूप आत्म समुद्र तुम १४ वद्धत विरुद्ध फल दाता १५ हिंसा से १६ हम को रक्षा करो ॥ ४८ ॥ ॥

पूर्णा दर्वि परा पत सुपूर्णा पुनरा पत। वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्ज्जं शतक्रतो ॥ ४९ ॥

दर्वि। पूर्णा। परा। पत। सुपूर्णा। पुनः। आपत। शतक्रतो। वस्नेव। इषम्। ऊर्ज्जम्। विक्रीणावहै ॥ ४९ ॥

अथाधिदैवम् - दर्वी द्वारा स्थाली से ओदन ग्रहण करने का मंत्र १ ओं पूर्णा दर्वि रित्यस्य (और्णवाभ ऋ० अनुष्टुप् छं० इन्द्रो देवता) १

पदार्थः - १ हे दर्व्याभिमानि देवि तुम २ स्थाली से अन्न को ले कर पूर्ण ३ और पूर्ण होने से उत्कृष्ट होती ४ इन्द्र के पास जाओ ५ कर्म फल से अच्छी पूर्ण होकर ६ फिर ७ हमारे पास आओ, इस प्रकार दर्वी को कह कर इन्द्र से कहते हैं ८ हे कद्धत कर्म वाले इन्द्र तुम और मैं दोनों ९ मूल्य द्वारा १० अभीष्ट हवि रूप अन्न को और हवि दान के फल रूप रस विशेष को १२ बेचें अर्थात् परस्पर द्रव्य के पलटे द्रव्य बेचें मैं तुम को हवि दूं तुम मुझ को फल दो ॥ ४९

॥ जैसा मनुजी ने कहा है, ब्राह्मण जप से ही सिद्ध होवे इस में संशय नहीं दूसरा कर्म करे वा न करे, क्योंकि ब्राह्मण सब का मित्र कहाता है, महाभारत में भी कहा है, हे पांडुपुत्र आत्मा नदी संयम जल से पूर्ण है इस का बहाव सत्य तट शील और लहर दया है उस में अभिषेक करो क्योंकि अंतरात्मा जल से शुद्ध नहीं होता है ॥ ४८ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाध्यात्मम् – १ इन्द्रिय रूप अन्न दान के साधन हे प्राणाधिष्ठात्र देवि तुम २ इन्द्रिय शक्ति रूप अन्न से पूर्ण ३ और परा शक्ति रूप होती ४ मानस आत्मा में जाओ ५ मानस आत्मा से अच्छी पूर्ण होती ६ फिर ७ ब्रह्म में जाओ ८ ब्रह्मा बिष्णु महेश जिसके संकल्प रूप हैं ऐसे हे महा विष्णु ९ मूल्य द्वारा १० प्राण वा जीव रूप अन्न को ११ और मोक्ष रस को १२ बेचें, अर्थात् परस्पर वस्तु के पल्टे वस्तु बेचें, मैं तुम को प्राण वा जीव दूं तुम मुझ को मोक्ष दो॥ ४९

देहि मे ददामि ते नि मे धेहि नि ते दधे। निहारञ्च हरासि मे निहारं निहराणि ते स्वाहा॥ ५०॥

मे। देहि। ते। ददामि। मे। निधेहि। ते। निदधे। निहारम्। मे। हरासि। निहारम्। ते। निहराणि। स्वाहा॥ ५०॥

अथाधिदैवम्– दर्वि से लिये हुए ओदन को होम करने का मन्त्र १ ओं देहि मइत्यस्य (और्णवाभऋ० भुरिगनुष्टुप् छं० इन्द्रो दे०) १

पदार्थः ईश्वर भोग सम्बंधी बचन को कहता है हे यजमान तुम १ मेरे लिये २ प्रथम हवि दो ३ तुझ यजमान के लिये ४ अपेक्षित पीछे दूंगा फिर मोक्ष सम्बंधी वचन को कहता है ५ मुझ में ६ अपनी आत्मा को निरंतर धारण कर ७ तुझ में ८ अपनी आत्मा को निरंतर धारण करता हूं इस प्रकार ईश्वर के वाक्य को सुन कर यजमान कहता है ९ मूल्य द्वारा मोल ली हुई वस्तु के रूप भोग मोक्ष नाम फल को १० मुझे ११ दीजिये १२ और मैं मूल्य रूप दोनों प्रकार के हवि को १३ तुझ ईश्वर के अर्थ १४ देता हूं १५ श्रेष्ठ होम हो॥ ५०॥

अथाध्यात्मम्– महा विष्णु कहते हैं, हे योगी तुम १ मुझे २ जीव रूप हवि दो ३ मैं तुझ भक्त के लिये ४ मोक्ष देता हूं ५ मुझ में ६ अपने आत्मा को धारण कर ७ तुझ में ८ अपनी आत्मा को धारण करता हूं योगी उत्तर देता है ९ मूल्य द्वारा मोल लेने योग्य वस्तु के रूप मोक्ष फ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लको १० मुझ भक्त के लिये ११ देते हो १२ मूल्य रूप अपने आत्मा को १३ आपके लिये १४ निरंतर समर्पण करता हूं १५ इस महा वाक् द्वारा, यह सब निश्चय ब्रह्म है यहां नाना प्रकार का कुछ नहीं है॥५०॥

अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रिया अधूषत। अस्तोष त स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी ५१

स्वभानवः। विप्राः। अक्षन्। नविष्ठया। अमी मदन्त। हि। प्रियाः। अवाधूषत। अस्तोषत। इन्द्रः। नु। ते। मती। हरी। आयोज। ५१॥ **अथाधिदैवम्**— साकमेध यज्ञ के मध्य पितृयज्ञ नाम कर्म में आहवनीय के उपस्थान का मंत्र, १

ओं अक्षन्नित्यस्य (गोतम ऋ० विराड् पंक्ति श्छं० इन्द्रो देवता) १

पदार्थः १ स्वयं प्रकाश २ मेधावी पितरों ने ३ हमारे दिये हुए हवि रूप अन्न को भक्षण किया ४ अत्यंत नवीन स्वधा से ५ तृप्त हुए ६ इस कारण ७ प्रिय अंगों को ८ कंपित किया अर्थात् तृप्ति सूचक संकेत को जतलाया ९ और स्तुति करने लगे, कि अहो बड़ा स्वादु अन्न दिया बड़ी भक्ति है इस कारण हे १० इन्द्र ११ शीघ्र १२ अपने १३ सम्मत १४ घोड़ों को १५ रथ में जोड़ो अर्थात् आप का अभीष्ट पितृयज्ञ सम्पन्न होने से तुम को उन पितरों के साथ आना चाहिये॥

अथाध्यात्मम्- १ जिन का प्रकाशक आत्मा है उन २ मेधावी मन की वृत्तियों ने ३ इन्द्रिय रूप हवि को भक्षण किया ४ संस्कार से शुद्ध इन्द्रिय रूप हवि के द्वारा ५ तृप्ति को प्राप्त हुए ६ जिस कारण ७ प्रिय अंगों को ८ कंपित किया अर्थात् तृप्ति सूचक संकेत को जतलाया ९ और स्तुति करने वाले हुए इस कारण हे १० महा विष्णु ११ शीघ्र १२ अपने १३ जीवेश रूप १४ किरणों को १५ अपनी आत्मा में युक्त करो॥५१॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुसन्दृशन्त्वावयम्मघवन्वन्दिषीमहि। प्रनूनम्पूर्णवन्धुरस्तुतोयासिवशाꣳ२॥ऽअनुयोजान्विन्द्र तेहरी॥५२॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
मघवन्। अ। वयम्। त्वा। सुसन्दृशम्। बन्दिषीमहि। स्तुतः। पूर्णवन्धुः।
९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६
वशान्। अनु। नूनम्। प्रयासि। हे इन्द्र। नु। ते। हरी
१७
आयोज॥५२॥ अथाधिदैवम्-

ओं सुसन्दृशमित्यस्य (गोतम ऋ० विराट् पंक्तिश्छं० इन्द्रो देवता) १

पदार्थः १ हे लक्ष्मीपति २ विष्णु ३ भक्त हम ४ तुझ ५ अनुग्रह दृष्टि से सब के दृष्टा को ६ स्तुति वा बन्दना करते हैं ७ स्तुति किये हुए ८ पूर्ण मित्र तुम ९ आपके चाहने वाले हम यजमानों को १० देख कर ११ अवश्य १२ प्राप्त होते हो १३ हे परमेश्वर तुम १४ शीघ्र १५ अपने १६ व्यष्टि समष्टि सूर्य को १७ युक्त करो अर्थात् विराट् भाव को दो॥५२॥

अथाध्यात्मम्- १ ब्रह्मा विष्णु महेश रूप धारण करने वाले २ हे महा विष्णु ३ हम योगी जन ४ तुझ ५ अनुग्रह दृष्टि से सब के दृष्टा को ६ स्तुति वा दंडवत करते हैं ७ स्तुति किये हुए ८ पूर्ण मित्र तुम ९ आपके चाहने वाले हम योगियों को १० अनुलक्षी करके ११ अवश्य १२ प्राप्त हो ते हो १३ हे काम के भगाने वाले महा विष्णु तुम १४ शीघ्र १५ अपनी १६ जीव ईश रूप किरणों को १७ अपनी आत्मा में लय करो॥५२॥

मनोन्वाह्वामहेनाराशꣳसेनस्तोमेन। पितॄणाञ्चमन्मभिः५३

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
नाराशंसेन। स्तोमेन। च। पितॄणाम्। मन्मभिः। नु। मनः। आह्वामहे॥५३॥

अथाधिदैवम्- गार्हपत्य के उपस्थान का मंत्र, १

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं मनोन्वित्यस्य (वन्धुऋ० अति पादनिचृद्गायत्री छं० मनोदे०)१

पदार्थः १ मनुष्यों के योग्यस्तुति वाले २ स्तोत्र ३ और ४ पितरों के ५ आकांक्षित वाणी से ६ शीघ्र हम ७ मनोभिमानी देवता को ८ आव्हान करते हैं अर्थात् पित्र यज्ञ के अनुष्ठान से हमारा चित्त पित्र लोक को गया सा हुआ इस कारण आव्हान करते हैं॥ ५३॥

अथाधिदैवम् – यदि अग्रोक्त मंत्रों का प्रयोग न हो तो योगी का देह पात होवे उस कारण प्रारब्ध की समाप्ति तक फिर प्रार्थना करते हैं १ मन के योग्य स्तुति वाले २ स्तोत्र ३ और ४ मनोवृत्तियों के ५ आकांक्षित बचनों से ६ शीघ्र ७ मन वा मनोभिमानी देवता का ८ आव्हान करते हैं॥ ५३

आनएतु मनः पुनः क्रत्वेदक्षायजीवसे। ज्योक्
च सूर्य्यन्दृशे ५४

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
नः। मनः। क्रत्वे। दक्षाय। ज्योक्। जीवसे। च। सूर्यन्दृशे। पुनः। आएतु॥ ५४॥ अथाधिदैवम्-

ओं आन एत्वित्यस्य (वन्धुऋ० विराड् गायत्री छं० मनो देवता) १

पदार्थः १ हमारा २ पूर्वोक्त चित्त ३ यज्ञ संकल्प के लिये ४ तथा उस संकल्प की समृद्धि के अर्थ ५ पूर्णायु पर्यंत ६ जीवने को ७ तथा ८ विराडात्मा सूर्य के दर्शन को ९ फिर १० आओ॥ ५४॥

अथाध्यात्मम् १ हम योगियों का २ मन ३ योग यज्ञ का संकल्प करने को ४ उस संकल्प की समृद्धि के लिये ५ प्रारब्ध समाप्ति तक ६ जीवने को ७ और ८ समाधि में ब्रह्म दर्शन के लिये ९ फिर १० आओ॥ ५४॥

पुनर्न्नः पितरो मनो ददातु दैव्यो जनः। जीवं व्रा
तं सचेमहि ५५

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
पितरः। दैव्यः। जनः। नः। मनः। पुनः। ददातु। जीवं। व्रातं। सं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सचेमहि॥५५॥ अथाधिदैवम्-

ओंपुनर्न इत्यस्य (वन्धुर्ऋ० निचृद्गायत्री छं० मनो देवता) १

पदार्थः-१ हे पितरो आपकी आज्ञा से २ देव सम्बंधी ३ पुरुष ४ हमारे लिये ५ पूर्वोक्त चित्त को ६ फिर ७ दो अथवा प्रेरणा करो वैसा होने पर अनुष्ठान को करके आपकी कृपा से ८ जीवन वंत ९ पुत्र पशु आदि गण को हम १० सेवन करें॥५५॥

अथाध्यात्मम्-१ हे मनोवृत्तियो २ ब्रह्म सम्बंधी ३ नरोत्तमनर ४ हमारे लिये ५ मन को ६ फिर ७ दो ८ जीवांश रूप ९ इन्द्रिय समूह को १० हम सेवन करें ५५॥

वयꣳ सोमव्रतेतवमनस्तनूषुविभ्रतः। प्रजावन्तःसचेमहि ५६

सोमे। प्रजावन्तः। वयꣳ। व्रते। तवे। तनूषु। मनः। विभ्रतः। सचेमहि॥५६॥ अथाधिदैवम्

ओंवयमित्यस्य (वन्धुर्ऋ० गायत्री छं० सोमो देवता) १

पदार्थः-१ हे पित्र सम्बंधी देवता अथवा ब्रह्मा विष्णु महेश रूप धारी महा विष्णु २ पुत्र पौत्र आदि से सम्पन्न ३ हम यजमान ४ यज्ञ में अथवा एकादशी आदि व्रत में ५ आप के ६ कृपा आदि स्वरूप में ७ चित्त को ८ धारण करते ९ आप को सेवन करें अथवा आप से सम्बंध रखने वाले होवें॥५६॥

अथाध्यात्मम्-१ हे आत्म प्रतिबिंब २ प्राण वान् ३ हम आत्मा ४ योग यज्ञ में ५ तेरी ६ इन्द्रियों में ७ मन को ८ धारण करते ९ प्रारम्भ समाप्ति तक उन इन्द्रियों को सेवन करें॥५६॥

एषतेरुद्रभागःसहस्वस्राम्बिकयातज्जुष

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वस्वाहैषते रुद्र भाग आखुस्ते पशुः ॥ ५७ ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७

रुद्र। अम्बिकया। स्वस्वा। सह। ते। एषः। भागः। तम्। स्वाहा। जुषस्व। रुद्र। एषः। ते। भागः। आखुः। ते। पशुः॥ ५७॥

अथाधिदैवम्– इस कंडिका में दो मंत्र हैं, अवदान के होम का १ यजमान के जितने पुत्र, पौत्र, भृत्य आदि पुरुष होवैं उन को गिन कर प्रति पुरुष एक २ पुरोडाश निरूपण कर फिर उन से एक अधिक पुरोडाश निर्वपन करै, सो इस एक अधिक को अतिरिक्त कहते हैं, उस को न होमे किन्तु आखूत्कर अर्थात् कृपण समूह की तुल्य मूसों की खोदी पृथिवी में खरेदे उसका मंत्र २ ओं एषत इत्यस्य (बन्धुर्ऋ० प्राजापत्या बृहती छं०- रुद्रो देवता) १

तथा (तथा) याजुषी जगती छं० तथा) २

पदार्थः– १ हे देहाभिमानी पुरुषों के रुलाने वाले पुरुष २ अम्बिका नाम प्रकृति ३ वहन के ४ साथ ५ आप का ६ हम से दिया हुआ यह पुरोडाश ७ भाग है ८ इस को ९ सेवन करो १० श्रेष्ठ होम हो ११ हे रुद्र १२ हम से उपकीर्यमान यह पुरोडाश १३ तेरा १४ भाग है १५ विभव होने पर जो न खाता है न देता है न होम करता है वह कृपण पुरुष १६ तेरा १७ पशु है॥ ५७॥ ⁜

अथाध्यात्मम्– योगी प्राण से प्रार्थना करता है, १ हे प्राणाग्नि २ परारूप आत्म शक्ति नाम ३ वहन के ४ साथ ५ तुझ को ६ यह इन्द्रिय शक्ति समूह ७ स्वीकार योग्य है ८ उस को ९ मंत्र प्रभाव से १० सेवन करो ११ हे प्राण १२ यह आत्म प्रतिबिंब १३ तुझ से १४ सेवन योग्य है और १५ चौर काम १३ तेरा १७ पशु है॥ ५७॥

⁜ प्रश्न, पशु समर्पण में क्या फल है, उस का उत्तर श्रुति से यह है, पशु समर्पण से दूसरे पशुओं की रक्षा होती है, और वर्त्तमान भविष्य काल की सन्तान रुद्र भय से छूट जाती है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवरुद्रमदीमह्यवदेवंत्र्यम्बकम्। यथानो वस्यसस्करद्यथानः श्रेयसस्करद्यथानो व्यवसाय यात्॥ ५८॥

रुद्रम्। त्र्यम्बकम्। देवं। अव। अवादीमहि। यथा। नः। वस्यसः। करत्। यथा। नः। श्रेयसः। करत्। यथा। नः। व्यवसाययात्॥ ५८॥

अथाधिदैवम्— आखूत्कर देश से आकर जप करता है उसका मंत्र ओंअवरुद्रमित्यस्य (बन्धुऋ० विराट् पंक्तिश्छं० रुद्रो देवता) १

पदार्थः १ शत्रुओं के रुलाने वाले २ तीनों लोक के पिता ३ सर्गआदि से क्रीडा करने वाले वा शत्रु जय शील वा सब प्राणियों में आत्म रूप से चेष्टवान द्युति मान स्तोत्रों से स्तुत वा सर्व गत परमेश्वर को ४ गुरु शास्त्र द्वारा जान कर ५ हार्दाकाश में स्थापन करें ६ जिस प्रकार ७ हम को ८ ब्रह्म में वसन शील ९ करै १० जैसे ११ हम को १२ भक्तों में श्रेष्ठतर १३ करै १४ जिस प्रकार १५ हम को १६ सिद्धांतों में निश्चय युक्त करै॥ ५८॥

अथाध्यात्मम्— त्र्यम्बकम्। देवम्। रुद्रम्। अव। अवादीमहि। यथा। नः। वस्यसः। करत्। यथा। नः। श्रेयसः। करत्। यथा। नः। व्यवसाय यात्॥ ५८॥

पदार्थः—१ पूरक, कुंभक, रेचक नाम तीन नेत्र वाले २ द्युति मान ३ प्राण को ४ प्राप्त करके ५ हार्दाकाश में धारण करें ६ जिस प्रकार प्रारब्ध के क्षय पर ७ हम को ८ ब्रह्म में वसन शील ९ करै १० जिस प्रकार ११ हम को १२ जीवन मुक्त १३ करै १४ जिस प्रकार १५ हम को १६ सिद्धांतों में निश्चय युक्त करै॥ ५८॥

भेषजमसि भेषजङ्गवेश्वाय पुरुषाय भेषजम्
सुखम्मेषाय मेष्यै ५९

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गवे। भेषजम्। असि। अश्वाय। भेषजम्। पुरुषाय। भेषजम्। भेषाय। मेष्यै। सुखम्॥ ५९॥ अथाधिदैवम्-

ओं भेषजमसीत्यस्य (वन्धुर्ऋ० स्वराड्गायत्री छन्द० रुद्रो देवता) १

पदार्थः हे पशुपति तुम १ धेनु समूह के लिये २ औषधि की समान सब उपद्रव के दूर करने वाले ३ हो ४ पशु समूह के लिये ५ औषधि की समान सब उपद्रव के दूर करने वाले हो ६ हमारे पुरुष समूह के लिये ७ औषधि की समान सब उपद्रव के दूर करने वाले हो ८ मेढ़ा समूह ९ और भेड़ों के लिये १० आनंद स्वरूप हो॥ ५९॥

अथाध्यात्मम्- हे प्राण तुम १ इन्द्रिय समूह के लिये २ संसार रोगनाशक औषधि ३ हो ४ जाठराग्नि के लिये ५ रोगनाशक औषधि हो ६ जीवात्मा के लिये ७ गगन मंडल मार्ग गति द्वारा संसार रोग की औषधि हो ८ इन्द्रियों के सींचने वाले मन तथा ९ ज्ञान से इन्द्रियों को सींचने वाली बुद्धि के लिये १० आनंद स्वरूप हो॥ ५९॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पतिवेदनम्। उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः॥ ६०॥

पुष्टिवर्द्धनम्। त्र्यम्बकम्। यजामहे। मृत्योः। मुक्षीय। इव। सुगन्धिम्। उर्वारुकम्। बन्धनात्। अमृतात्। मा। पति वेदनम्। त्र्यम्बकम्। यजामहे। इतः। मुक्षीय। इव। सुगन्धिम्। उर्वारुकम्। बन्धनात्। अमुतः। मा॥ ६०॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में दो मंत्र हैं उन को कहते हैं, जैसे पितृमेध यज्ञ में पुत्र आदि पुरुष अपनी वाम उरू को ताड़न कर ३ उलटी प्र

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिणा देते हैं और जैसे देवता की सेवा में दाहिनी उरू को ताडन करते ३ सीधी प्रदक्षिणा देते हैं तैसे यहां पुरुष पहिले त्र्यम्बक मंत्र से अग्नि की उक्त प्रदक्षिणा करता है उसका मंत्र १ यजमान की कुमारियां भी पूर्वोक्त पुरुष की समान पिछले त्र्यम्बंक मंत्र से अग्नि की ३ परिक्रमा करती हैं उसका मंत्र २ ओं त्र्यम्बंकमित्यस्य (वसिष्ठ ऋ० ब्राड ब्राह्मी त्रिष्टुप् छन्दः रुद्रो देवता) १,२

पदार्थः— पुरुष कहता है, १ सांसारिक पारमार्थिक पुष्टि के बढ़ाने वाले २ तीनों लोकों के पिता वा तीनों लोक और काल में वेद रूप शब्द वाले वा तीनों अकार उकार मकार शब्दों से सिद्ध होने वाले वा पृथ्वी अन्तरिक्ष स्वर्ग नाम ३ स्थान वाले महेश्वर को ३ हम पूजन करते हैं हे परमेश्वर ४ अपमृत्यु वा संसार मृत्यु से ६ छुटाओ ६ जैसे ७ शोभन गन्ध से युक्त अर्थात् परिपक्व ८ उर्वारुक नाम फल को ९ अपने डांठ से १० क्रम निर्वाण नाम मोक्ष से ११ मत छुटाओ कुमारियां कहती हैं १२ भर्त्ता के प्राप्त कराने वाले १३ तीनों लोक के पिता महेश्वर को हम पूजन करती हैं १५ हे परमेश्वर जन्म के कारण माता पिता के वर्ग से १६ मुझ को छुटाओ १७ जैसे १८ शोभन गंध से युक्त अत्यंत पक्के १९ उर्वारुक नाम फल को २० उसके डांठ से छुटाते हो २१ पति के गृह वा पति लोक से २२ मत छुटाओ ॥ ६० ॥ ⊕

⊕ जिस कारण पति ही स्त्रियों की गति है, जैसा काशी खंड ४ अध्याय में लिखा है स्त्री का एक पति शिव और विष्णु से भी अधिक है, स्त्री विना पति की आज्ञा के व्रत, उपवास और नियम को नहीं करै, जो प्रसन्न स्त्री बाहर से आते हुए पति को देख कर शीघ्र आसन जल तांबूल पंखा पांव दावना आदि तथा सुन्दर वचन और पसीना पोंछने आदि से प्रिय पति को प्रसन्न वात्सल्य करै, मानों उस ने तीनों लोक तृप्ति किये पिता, भ्राता और पुत्र परिमित वस्तु को देते हैं, परंतु भर्त्ता अमित पदार्थों का देने वाला है, उसी को सदा पूजन करै भर्त्ता देवता है, भर्त्ता गुरु, धर्म, तीर्थ और व्रत है उस कारण सब को त्याग कर अकेले पति को भले प्रकार पूजन करै, जिसने प्रिय पति को पूजा उस से श्री कृष्ण पूजे गये क्योंकि विष्णु भगवान आप पति

CC-0. Gurukul Kangri Collection; Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाध्यात्मम् – आत्मा रूप यजमान प्रार्थना करता है १ देह और मोक्ष सम्बंधी पुष्टि के बढ़ाने वाले २ पूरक कुम्भक रेचक तीन नेत्र वाले प्राण को ४ हम पूजन करते हैं हे प्राण ४ गगन मार्ग से निकलने के द्वारा मृत्यु से ५ हम को मुक्त करो ६ जैसे ७ सुगन्ध युक्त अर्थात् पके हुए ८ ऊर्वारुक नाम फल को ९ डांठ से छुटाते हो १० विषय सेवन के कारण मोक्ष से ११ मत छुटाओ। यजमान की पत्नी बुद्धि प्रार्थना करती है १२ आत्मा रूप भर्त्ता के प्राप्त कराने वाले पूर्वोक्त गुण विशिष्ट प्राण को १३ हम १४ पूजन करती हैं हे प्राण १५ इस संसार से १६ मुक्त करो १७ जैसे १८ पके १९ उर्वारुक नाम फल को २० डांठ से छुटाते हो २१ आत्मा से २२ मत छुड़ाओ॥६०॥

एतत्ते रुद्रावसन्तेन परो मूजवतोतीहि। अवतत धन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासा अहिंꣳ सन्नः शिवोतीहि॥ ६१॥

रुद्र। एतत्। ते। अवसम्। तेन। अवततधन्वा। पिनाकावसः परः। मूजवतः। अतीहि। कृत्तिवासाः। शिवः। नः। अहिꣳसन्। अतीहि॥ ६१॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में दो मंत्र हैं उन को कहते हैं, चांवल जौ आदि को बांध कर तृण वांस आदि से बने हुए मूत नाम दो पात्रों में त्र्यम्बक संबंधी शेष हवि को डाल कर अपने कंधे पर बांस की लठिया रख उसके दोनों शिरों से दोनों मूतों को बांध उत्तराभिमुख दूर जा कर वृक्ष, वांस, वा-

व्रता के व्रत के लिये पति रूप हैं, सब दान, सब यज्ञ, सब तीर्थ सेवन, सब व्रत, तप उपवास, आदि सत्य, सब देवताओं का पूजन, वह सब स्वामि से वाक्री सोलहवीं कला के भी तुल्य नहीं है, जो स्त्री अच्छे पवित्र भारत वर्ष में पति सेवा को करती है वह स्वामी के साथ वैकुंठ को जाती है और वहां ब्रह्मा जी की पूर्णायु तक रहती है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वंवई पर दोनों मूत सहित वांस की लाठी को छोड़ता है, गौ उसके सूंघने कोभी समर्थ न होकर रोग को नहीं पातीं उसका मंत्र १ ऊंचे वृक्ष पर दोनों मूत को लटका कर उन को न देखता लौट कर वेदी के समीप आकर जल स्पर्श करता है उस का मंत्र २,

ओं एतत्तद्दत्यस्य (वशिष्ट ऋ० भुरिगा स्तार पंक्ति श्छं० रुद्रो देवता) १।२

पदार्थः- निराकार शिव का साकार रूप हे रुद्र २ यह शेष हवि ३ आपका ४ भोजन है अर्थात् देशान्तर में जाने वाले का मार्ग के बीच तटाका आदि के समीप खाने योग्य ओदन विशेष है ५ उस कारण ६ हमारे शत्रुओं का निवारण करने से अवरोपित धनुष वाले ७ वस्त्र से आच्छादित धनुष वाले ८ श्रेष्ट तुम ९ मूजवान पर्वत का १० अति क्रमण एक के जाओ हे रुद्र ११ चर्म्माम्बर धारी १२ को परहित आनंद स्वरूप तुम १३ हम को १४ न मारते १५ पर्वत को अति क्रमण करके जाओ ॥ ६१॥

अथाध्यात्मम्- १ हे प्राण २ यह ब्रह्मांड ३ तेरा ४ अन्न है ५ उस कारण ६ श्रेष्ठ तुम ७ नाड़ी संवेष्टित हृदय का ८ अति क्रमण करके भ्रकुटि को जाओ फिर ९ अवरोपित प्राण रूप धनुष वाले १० आपनी आत्मा में प्रणव का लय करने वाले ११ भ्रकुटि रूप वस्त्र से आच्छादित १२ शिव रूप तुम १३ हम योगियों को १४ न मारते १५ अति क्रमण करके गंगन मंडल को जाओ ॥ ६१॥

त्र्यायुषन्जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् यद्देवेषु त्र्यायुषन्तन्नोस्तु त्र्यायुषम् ६२

यत्। जमदग्नेः। त्र्यायुषम्। कश्यपस्य। त्र्यायुषम्। देवेषु। त्र्यायुषम्। तत्। त्र्यायुषम्। नः। अस्तुः॥ ६२॥

अथाधिदैवम्- यजमान वपन (हजामत) काल पर जप करता है उ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका मंत्र १

ओं त्र्यायुष मित्यस्य (नारायणऋ० उष्णिक् छं० आशीर्देवता) १

पदार्थः १ जो २ जमदग्नि मुनि की ३ बाल्य यौवन वृद्ध अवस्था का समाहार है ४ ब्रह्मा जी के पौत्र कश्यप प्रजापति की ५ तीनों अवस्थाओं का जो समाहार है ६ इन्द्र आदि देवताओं में ७ जो तीनों अवस्था का समाहार है ८ वे ९ आयु के तीनों भाग १० हम यजमानों को ११ प्राप्त हों अर्थात् अल्प मृत्यु से रक्षा हो॥ ६२॥

अथाध्यात्मम् – पूर्व मंत्रों के प्रभाव से प्रारब्ध का क्षय न होने पर भी देह त्याग के भय से यजमान प्रार्थना करता है, पदार्थ पूर्व की समान है॥ ६२॥

शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हिꣳसीः। निवर्त्तयाम्यायुषेन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्य्याय। ६३।

नाम। शिवः। असि। स्वधितिः। ते। पिता। ते। नमः। अस्तु। मा। मा हिꣳसीः। आयुषे। अन्नाद्याय। प्रजननाय। रायः। पोषाय। सुप्रजास्त्वाय। सुवीर्य्याय। निवर्त्तयामि॥ ६३॥

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में क्षौरकर्म्म सम्बंधी दो मंत्र हैं, ओं शिवो नामासीत्यस्य (नारायणऋ० भुरिग्जगती छं० क्षुरोदे०) १

ओं निवर्त्तयामीत्यस्य (तथा तथा लिङ्गोक्त दे०) २

पदार्थः – हे क्षुराभिमानी देवता तुम १ नाम करके २ शांत ३ हो ४ वज्र ५ तेरा ६ पिता है ७ तेरे अर्थ ८ नमस्कार ९ हो १० मुझको ११ मत १२ पीड़ा दे, हे यजमान मैं तुम को १३ जीवन के लिये १४ अन्नभक्षण के लिये १५ सन्तान की उत्पत्ति के अर्थ १६ धन की १७ पुष्टि के लिये १८ ÷ मुझ सन्तान के लिये १९ उत्तम सामर्थ्य के अर्थ २० मुंडन करता हूं॥ ६२

÷ प्रश्न – क्षौरकर्म में क्या फल है, उत्तर श्रुतिद्वारा, पुरुष का अंग अपवित्र है इसके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाध्यात्मम्--हे मन तुम १,२ नाम करके २ शांत ३ हो ४ ज्ञान वज्र ५ ते राद्ध पिता है ७ तेरे अर्थ ८ विराट् रूप अन्न ९ हो १० मुझ आत्मा के विषय सहि से ११, १२ मत नाश कर मनोभिमानी देवता कहता है, हे यजमान तुम के १३ नित्य आयु के लिये १४ विराट् रूप जो अन्न है उस को आत्मा में लय करने के लिये १५ अष्ट सिद्धि की उत्पत्ति के अर्थ १६ योगलक्ष्मी की १७ पुष्टि के लिये १८ श्रेष्ठ प्राण के लाभार्थ १९ श्रेष्ठ योगबल की प्राप्ति के लिये २९ प्रारब्ध समाप्ति तक देह त्याग से निवारण करता हूं॥ ६२॥

इतिश्री भृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्मकृते शुक्लयजुर्वेदीयब्रह्मभाष्ये अग्न्याधानादि पिच्यान्तस्तथा आत्मसंस्कारकथनं नाम तृतीयोऽध्यायः॥३॥

आधान, अग्निहोत्र, अग्न्युपस्थान, चातुर्मास्य के मंत्र तीसरी अध्याय में कहे अब चौथी अध्याय से प्रारंभ करके आठवीं अध्याय की बत्तीसवीं कंडिका तक अग्निष्टोमयज्ञ के मंत्र कहते हैं॥

जिस अंग पर जल नहीं ठहरता, सिर के बाल डाढ़ी मूंछ और नखों पर जल नहीं ठहरता है इस लिये उनके अलग करने से पवित्र होकर दीक्षा के योग होता है, कोई सम्पूर्ण बालों को मुंडन करते हैं यह समझ कर कि हम सम्पूर्ण पवित्र होकर दीक्षित हों ऐसा नहीं केवल केश डाढ़ी मूंछ और नखों के दूर करने से ही पवित्र होजाता है। स्मृति आदि में भी कहा है, जो मनुष्य व्रत, उपवास, श्राद्ध आदि के संयम में क्षौर कर्म नहीं करता है वह सब कर्म्मों में अपवित्र है, परन्तु बृहस्पति के दिन क्षौर कराने में मान की हानि होती है, शुक्र वीर्य को, सूर्य धन को मंगल आयु को नाश करता है और शनिश्चर सब को नष्ट करता है देव कार्य, पित्र श्राद्ध, सूर्य ग्रहण और अपने जन्म मास और जन्म नक्षत्र में क्षौर कर्म न करे रोहिणी, विशाखा, अनुराधा, उत्तरा मघा और कृत्तिका नक्षत्र में द्विजों को क्षौर कराना वर्जित है। जो मनुष्य क्षौर और मैथुन कर्म करके देवता और पितरों का तर्पण करै वह तर्पण का जल रुधिर होवै और दाता नरक को जावे विना देवता के अर्पण किये अपने लाये आपही फूल माला का धारण करना और अपने घि से हुए चंदन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिः ओं इदमग्न्मदेवयजनं पृथिव्या यत्र देवा सोऽअ
जुषन्त विश्वे। ऋक्सामाभ्याᳬ सन्तरन्तो यजुर्भी रा
यस्पोषेण समिषा मदेम। इमा आपः शमु मे सन्तु देवी
रोषधे त्रायस्व स्वधिते मैनᳬ हिᳬ सीः॥१॥

इदम्। पृथिव्याः। देवयजनम्। आ। अगन्म। यत्र। विश्वे। देवाः
अजुषन्त। ऋक्सामाभ्याᳬ। यजुर्भी। सन्तरन्तः। रायः। पो
षेण। इषा। सम्मदेम। इमाः। देवीः। आपः। मे। शम्। उ। स
न्तु। ओषधे। त्रायस्व। स्वधिते। एनᳬ। मा। हिᳬ सीः॥१॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में ४ मंत्र हैं, यजमान सोलह ऋत्विजों का वरण करके अरणी में अग्नि का आरोपण कर शाला को जाता जप करता है उसका मंत्र १ कंधा से सिर के बालों की दक्षिण जूटि का को काढ़ कर जल से भिगोता है उस का मंत्र २ सूक्ष्म कुशाग्र को क्षुरा से काटकर जल पात्र में डालता है उस का मंत्र ३ अध्वर्यु नाई को छुरा देता है वह नाई उस क्षुरे से सिर के बाल और डाढ़ी मूंछ को मूड़ता है उसका मंत्र ४॥

ओं इदमग्ने त्यस्य (प्रजापति ऋ० विराड्ब्राह्मीजगती छं० देवयजनं दे०)
आप इत्यस्य (तथा तथा आपो दे०)२
ओषध इत्यस्य (तथा तथा ओषधिर्दे०)३
स्वधित इत्यस्य (तथा तथा क्षुरो देवता)४

को लगाना और नाई के घर में क्षौर कराना ये कर्म इन्द्र से भी लक्ष्मी को हरलें- चौथ छठ, अष्टमी, चतुर्दशी और पंचदशी को सदा ब्रह्मचारी होवे। जो मनुष्य इन तिथियों को शिरोभ्यंग, दंतधावन और मैथुन करे उसके घर में लक्ष्मी नहीं ठहरती है। गङ्गा सूर्य क्षेत्र में और मृतक दिन में आधान और सोम पान में क्षौर कही है॥ सम स्थल पर बैठा हुआ मनुष्य पूर्व और उत्तर मुख होकर क्षौर करावे॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदार्थः— १ हम इस २ पृथिवी सम्बंधी ३ देव यजन स्थान में ४,५ आये हैं ६ जिस देव यजन स्थान में ७ सब ८ देवता ९ प्रीति पूर्वक स्थित हुए हम १० ऋग्वेद साम वेद ११ और यजुर्वेद के मंत्रों से १२ समुद्र तुल्य गंभीर सोम याग को समाप्त करते १३ धन की १४ पुष्टि १५ और इच्छित अन्न से १६ हृष्ट और तृप्त होवें १७ ये १८ निर्मल प्रकाश मान १९ जल जो शिर में लगाये जाते हैं २० मुझ यजमान के २१ सुखदाता २२ ही २३ हों २४ हे कुशतरूणा नाम औषधि तुम २५ यजमान को क्षुरा से रक्षा करो २६ हे क्षुरा २७ इस यजमान को २८,२९ मत पीड़ा दो॥ १॥

अथाध्यात्मम— योगी कहते हैं, हम १ इस २ मानस कमल के ३ देव यजन नाम स्थान को जिस में ब्रह्म परानारायण नाम देवता ओं का पूज नहोता है ४,५ आये हैं ६ जिस मानस कमल में ७ सब ८ ब्रह्म परा नारायण नाम देवता ९ प्रीति पूर्वक स्थित हुए १० मनवाणी ११ और मन की वृत्तियों से ११ योग मार्ग को समाप्त करते हम योगी १३ योग धन की १४ पुष्टि १५ और अमृत वर्षा से १६ भले प्रकार आनंद युक्त होवें १७ ये १८ ज्योति रूप १९ अमृत रस ब्रह्मांभु २० मुझ योगी के २१ मोक्ष कारण २२ ही २३ हों २४ हे इन्द्रियशक्ति समूह २५ विषयों से रक्षा करो २६ हे मन २७ इस आत्म रूप यजमान को २८,२९ विषय सेवन से मत नाश करो अर्थात् मोक्ष मार्ग से विमुख मत करो॥ १॥

आपो अस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृत प्वः पुनन्तु। विश्वꣳ हि रिप्रम्प्रवहन्ति देवी रुदिदाभ्यः शुचिरा पूत एमि। दीक्षा तपसो स्तनूरसि तान्त्वा शिवाꣳ शग्मा म्परि दधे भद्रं वर्णं पुष्यन्२

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
मातरः। आपः। अस्मान्। शुन्धयन्तु। घृतप्वः। घृतेन। नः।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनन्तु। हि। देवीः। आपः। विश्वे। रिप्रम्। प्रवहन्ति। अभ्यः
मुञ्चिः। आपूतः। उत। इत। एमि। दीक्षातपसोः। तनूः। असि।
ताम्। शिवां। शग्माम्। त्वा। भद्रं। वर्णं। पुष्यन्। परिदधे।२

अथाधिदेवम्— इस कंडिका में दो मंत्र हैं, तड़ाग आदि के जल में स्नान करता है और जल से ऊपर आता है उसका मंत्र १ यजमान स्नान के पीछे आचमन करके जल से बाहर निकल कर क्षोम वस्त्र अथवा नित्य के पहरने की धोती को जोकि धोबी ने नहीं धोई हो और जिससे मूत्रोत्सर्ग न किया हो धारण करता है और नीवी नहीं करता है उसका मंत्र २

ओं आप इत्यस्य (प्रजापतिऋ० स्वराड् ब्राह्मी त्रिष्टुप् छं० आपो दे०) १
ओं दीक्षातपसोरित्यस्य (तथा तथा वासो दे०) २

पदार्थः— १ माता की समान पालन करने वाले २ हे जलो ३ हम क्षोर करने वाले यजमानों को ४ शुद्ध करो ५ हे क्षरित जलों से पवित्र करने वाले जल देवताओ ६ क्षरित जल से हम को ८ शुद्ध करो ९ जिस कारण १० द्योतमान ११ जल १२ सब १३ पाप को १४ दूर करते हैं १५ जल द्वारा १६ स्नान से बाहर शुद्ध १७ और आचमन से अंतः करण में शुद्ध में १८ जल से ऊपर १९ ही २० जाता हूं हे क्षोम वस्त्र तुम २१ दीक्षाभिमानी और तपोभिमानी देवता के २२ शरीर तुल्य प्रिय २३ हो २४ उस दीक्षातप के शरीर रूप २५ कल्याण स्वरूप २६ कोमल होने से सुख रूप २७ तुझ को २८ तेरे धारण से कल्याण रूप २९ कांति को ३० बढ़ाता में ३१ धारण करता हूं २

अथाध्यात्मम्— १ जगत् का निर्माण करने वाले २ ब्रह्म ज्योति रस रूप हे जलो ३ हम योगियों को ४ शुद्ध करो ५ और इन्द्रिय शक्तियों से पवित्र करने वाले प्राण ६ इन्द्रिय शक्ति द्वारा ७ हम आत्म रूप यजमानों को ८ शुद्ध करो ९ जिस कारण १० ब्रह्म ज्योति रूप ११ जल १२ सब १३

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाप को १४ दूर करते हैं १५ इन जलों के द्वारा १६ माया रहित १७ ब्रह्म भाव को प्राप्त में १८ प्राण को १९ ही प्राप्त करता हूं २० हे हृदय में विद्यमान जीव रूप परा शक्ति तुम २१ योग यज्ञ की दीक्षा और योगानुष्ठान रूप तप को २२ विस्तार करने वाले २३ हो २४ उस २५ आनंद स्वरूप २६ मोक्ष सुखरूप २७ तुझ को २८ ब्रह्मा विष्णु महेश और ब्रह्माग्नि २९ रूप को ३० ग्रहण करता में ३१ धारण करता हूं ॥ २ ॥

महीनाम्पयोसिवर्च्चोदाअसिवर्च्चोमेदेहि। वृत्रस्यासिकनीनकश्चक्षुर्दाअसिचक्षुर्मेदेहि॥३॥

महीनाम्। पयः। असि। वर्च्चोदाः। असि। मे। वर्च्चः। देहि। वृत्रस्य कनीनकः। असि। चक्षुर्दाः। असि। मे। चक्षुः। देहि॥ ३ ॥

अथाधिदैवम्– इस कंडिका में दो मंत्र हैं, यजमान शाला के पूर्व भाग में निकट ही कुशाओं पर पूर्व मुख बैठ कर गौ के मकखन से मस्तक से पांव तक उबटना करता है उसका मंत्र १ त्रिककुत पर्वत के अंजन को अथवा उसके न मिलने में दूसरे अंजन को अध्वर्यु यजमान की दाहिनी आंख में दो वार और बांयी आंख में तीन वार लगाता है उसका मंत्र २

ओं महीनामित्यस्य (प्रजापति ऋ० भुरिग् त्रिष्टुप् छं० नवनीत दे०) १

ओं वृत्रस्यासीत्यस्य (तथा तथा अञ्जनं दे०) २

पदार्थः– हे नवनीताभिमानी देवता तुम १ गौओं के २ दुग्ध ३ हो ४ अतिस्निग्ध होने से कांति दाता ५ हो ६ मुझ यजमान के लिये ७ कांति ८ दीजिये, हे अंजनाभिमानी देवता तुम ९ वृत्रासुर के १० नेत्र की पुतली ११ हो

⊕ प्रश्न– अंजन को वृत्रासुर की पुतली क्यों कहा, उत्तर श्रुति से, जब इन्द्र ने वृत्रासुर को मारा तब उस की आंख भूमि पर गिर कर त्रिककुत पर्वत हो गई जिस का अंजन होता है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२ दृष्टि के दाता १३ हो १४ मुझे १५ पूर्ण दृष्टि १६ दीजिये॥ ३॥

अथाध्यात्मम् – हे इन्द्रिय शक्ति समूह तुम १ इन्द्रियों के २ रस ३ हो ४ ब्रह्म तेज के दाता ५ हो, क्योंकि इन्द्रियों के निरोध से ब्रह्म तेज की प्राप्ति होती है इस कारण ६ मुझे ७ ब्रह्म तेज ८ दीजिये, हे ज्ञानांजन तुम ९ पाप के १० जमाई अर्थात् संतति द्वारा पाप के शोधक ११ हो १२ ज्ञानचक्षु के दाता १३ हो तिस कारण १४ मुझे १५ ज्ञानचक्षु १६ दीजिये॥ ३॥

चित्पतिर्म्मा पुनातु वाक् पतिर्मा पुनातु देवो मा सविता पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः तस्य ते पवित्र पते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्॥ ४॥

अच्छिद्रेण। पवित्रेण। सूर्यस्य। रश्मिभिः। चित्पतिः। मा। पुनातु। वाक्पतिः। मा। पुनातु। सविता। देवः। मा। पुनातु। पवित्र पते। तस्य पवित्र पूतस्य। ते। यत्। कामः। पुने। तत्। शकेयम्॥ ४॥

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में ३ मंत्र हैं, मूलाग्र सहित सात वा तीन वा एक कुश पवित्रों से नाभि के ऊपर दो वार और नाभि के नीचे एक वार मार्जन करता है उसके मंत्र १, २, ३, दे० १

ओं चित्पतिर्मेत्यस्य (प्रजापतिर्ऋ० निचृद्ब्राह्मी पंक्तिश्छं० प्रजापति सवितारौ

पदार्थ – १ वायु रूप २ पवित्रा से ३ और सूर्य की ४ किरणों से ५ जीवात्माओं का स्वामी ब्रह्मा ६ मुझ यजमान को ७ शुद्ध करो ८ वेद वचनों का स्वामी विष्णु ९ मुझ को १० पवित्र करो ११ ज्योति स्वरूप १२ ब्रह्मांड का आत्मा सब का प्रेरक ईश १३ मुझ को १४ शुद्ध करो, अध्वर्य कहता है १५ पवित्र वस्तु वा इन्द्रियों के स्वामी हे यजमान १६ उस १७ पूर्वोक्त पवित्रा से शुद्ध १८ आप की १९ जो २० सोम यागानुष्ठान रूप कामना है तथा मैं भी २१ तुम को शोधन करता हूं २२ वह दोनों प्रकार की २३ का

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मना पूर्ण करने को समर्थ होऊं॥ ४॥

अथाध्यात्मम्— योगी प्रार्थना करता है, १ प्राण रूप २ पवित्रा से जो कि श्रुति के अनुसार एक वा प्राण, उदान, व्यान, नाम से तीन अथवा सात भी है ३ और मानस सूर्य की ४ किरणों से ५ जीवेश्वर का स्वामी ब्रह्म ६ मुझ को ७ पवित्र करो ८ बुद्धि ९ मुझ को १० पवित्र करो ११ इन्द्रियों का प्रकाशक १२ मन १३ मुझ को १४ पवित्र करो, ज्ञान चक्षु कहता है १५ हे प्राण पति यजमान १६ उस १७ पूर्वोक्त पवित्रा से शुद्ध १८ आप की १९ जो २० प्रति विंव होम रूप का मना है तथा मैंभी २१ तुझे शोधन करता हूं २२ वह दोनों प्रकार की कामना २३ सिद्ध करने को समर्थ होऊं॥ ४॥

आवो देवासईमहे वाम म्प्रयत्यध्वरे। आवो देवा सआशिषो यज्ञियासोहवामहे॥ ५॥

देवासः। अध्वरे। प्रयति। वामम्। वः। आ। ईमहे। देवासः। यज्ञियासः। आशिषः। आ। वः। हवामहे॥ ५॥

अथाधिदैवम्— अध्वर्यु यजमान से मंत्रोच्चारण कराता है॥ ओं आवो देवास इत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः निचृदार्ष्यनुष्टुप्छंः आशीर्दे) १

पदार्थः—१ हे देवता आ हम २ यज्ञ ३ वर्त्तमान होने पर ४ यज्ञफल को ५ तुम से ६,७ मांगते हैं और ८ हे देवता आ हम ९ यज्ञ सम्बन्धी १० फल ११ प्राप्त करने को १२ तुम्हें १३ आव्हान करते हैं॥ ५॥

अथाध्यात्मम्— १ हे ब्रह्म परा नारायण नाम देवता आ हम २ योग यज्ञ वा ज्ञान यज्ञ के ३ वर्त्तमान होने पर ४ ब्रह्मा विष्णु महेश रूप सूर्य को ५ तुम से ६,७ चाहते हैं ८ और हे देवता आ हम ९ योग यज्ञ सम्बंधी १० आशीर्वादें ११ प्राप्त करने को १२ तुम्हें १३ आव्हान करते हैं॥ ५॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाहा यज्ञम्मनसः स्वाहोरोरन्तरिक्षात्। स्वाहाद्या वापृथिवीभ्यां ꣳ स्वाहा वातादारभे स्वाहा ॥ ६ ॥

स्वाहा। यज्ञम्। मनसः। आरभे। स्वाहा। उरोः। अन्तरिक्षात्। स्वाहा। द्यावापृथिवीभ्याम्। स्वाहा। वातात्। स्वाहा ॥ ६ ॥

अथाधिदैवम्— इस कंडिका में ४ मंत्र हैं, पहले मंत्र से दोनों हाथ की कनिष्ठिका अंगुलियों को सकोड़ कर शेष मंत्रों से दूसरी अंगुलियों को सकोड़ कर मुट्ठी बांध कर स्वाहा कह कर, मौन होकर फिर खोलता हैं उसके मंत्र १,२,३,४,॥

ओंस्वाहा यज्ञ मित्यस्य (प्रजापतिर्ऋ० निचृदार्ष्यनुष्टुप्छं० यज्ञोदे०) १,२,३,४

पदार्थ:— १ वाणी का संयमन करना चाहिये, इस वेद वाक्य से २ यज्ञ को ३ मन से ४ आरंभ करता हूं ५ श्रुति प्रमाण द्वारा ६ विस्तीर्ण ७ हृदय के अन्तरिक्ष से यज्ञ को आरंभ करता हूं ८ श्रुति प्रमाण द्वारा ९ मन और हृदय के अभिमानी देवताओं से यज्ञ को आरंभ करता हूं १० श्रुति प्रमाण द्वारा ११ प्राण से उस यज्ञ को प्रत्यक्ष आरंभ करता हूं १२ श्रुति प्रमाण द्वारा अर्थात् वाणी ही यज्ञ है उसको आत्मा में धारण करता है ॥ ६ ॥

अथाध्यात्मम्— १ गुरु के उपदेश से २ योग यज्ञ को ३ मन से ४ आरंभ करता हूं ५ श्रुति प्रमाण से वह मेरा मन शिव संकल्प हो ६ विस्तीर्ण ७ हृदय के अन्तरिक्ष से यज्ञ को आरंभ करता हूं ८ इस श्रुति के प्रमाण से कि यह हृदय प्रजापति है ब्रह्म है यह सब है, ब्रह्म रूप हो ९ पृथिवी स्वर्ग के अभिमानी जीव ईश से यज्ञ को आरंभ करता हूं १० इस श्रुति प्रमाण के द्वारा कि जैसे से उत्पन्न होता है वैसा ही होता है, इन दोनों का एकत्व हो ११ प्राण से यज्ञ को आरंभ करता हूं १२ प्राण ब्रह्म है इस श्रुति के अनुसार ब्रह्म भाव को प्राप्त करो ॥ ६ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकूत्यै प्रयुजेऽग्नये स्वाहा मेधायै मनसेऽग्नये स्वाहा दीक्षायै तपसेऽग्नये स्वाहा सरस्वत्यै पूष्णेऽग्नये स्वाहा। आपो देवीर्बृहतीर्विश्वशम्भुवो द्यावापृथिवी उरो अन्तरिक्ष बृहस्पतये हविषा विधेम स्वाहा ॥ ७ ॥

आकूत्यै। प्रयुजे। अग्नये। स्वाहा। मेधायै। मनसे। अग्नये। स्वाहा। दीक्षायै। तपसे। अग्नये। स्वाहा। सरस्वत्यै। पूष्णे। अग्नये। स्वाहा। देवीः। बृहतीः। विश्वशम्भुवः। आपः। द्यावापृथिवी। उरो। अन्तरिक्ष। बृहस्पतये। हविषा। विधेम। स्वाहा ॥ ७ ॥

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में ५ मंत्र हैं, पत्नी यजमान के अपने आसन पर बैठ जाने के पीछे अध्वर्यु स्रुवा के द्वारा औद्भ्रमणों को होमता है उसके मंत्र १,२,३,४ केवल जप का मंत्र ५ ॥

ओं आकूत्यै प्रयुज इत्यस्य (प्रजापतिर्ऋ० पंक्तिश्छं० अग्निर्दे०) १,२,३,४,

ओं आपो देवीरित्यस्य (तथा० आर्षी बृहतीछं० लिङ्गोक्त दे०) ५

पदार्थः – १ यज्ञ करूंगा इस प्रकार का जो मानस संकल्प है उसकी पूर्त्ति के अर्थ २ निर्विघ्न प्रेरणा करने वाले ३ आत्माग्नि के लिये ४ श्रेष्ठ होम हो ५ मंत्र श्रुति की धारणा शक्ति को मेधा कहते हैं उसकी सिद्धि के अर्थ ६ मेरे मनोभिमानी ७ अग्नि के लिये ८ श्रेष्ठ होम हो क्योंकि विद्या धारणा शक्ति मन के स्वास्थ्य में ही होती है ९ व्रत के नियम को दीक्षा कहते हैं उस की सिद्धि के अर्थ १० मेरे शरीर तपोभिमानी ११ अग्नि के लिये १२ श्रेष्ठ होम हो क्योंकि नियम का रक्षण तपसे ही होता है १३ मंत्रोच्चारण शक्ति को सरस्वती कहते हैं इस की सिद्धि के अर्थ १४ वाक् इन्द्री के पोषक १५ अग्नि के लिये १६ श्रेष्ठ होम हो १७ हे द्योतमान १८ महान् १९ जगत् के सुख दाता २० जलो २१ तथा हे पृथिवी स्व

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गि२२ तथा हे विस्तीर्ण २३ अन्तरिक्ष तुम्हारे अर्थ २४ और ब्रह्म के लिये २५ हवि २६ देते हैं २७ श्रेष्ठ होम हो ॥७॥

अथाध्यात्मम्—१ योग यज्ञ का जो संकल्प है उस की सिद्धि के अर्थ २ सब के प्रेरक ३ ब्रह्माग्नि के लिये ४ जीव रूप हवि दिया ५ अहं ब्रह्मास्मि, इस बुद्धि के लाभार्थ ६ मन रूप ७ अग्नि के लिये ८ इन्द्रिय रूप हवि दिया ९ योग यज्ञ का जो नियम है उस की सिद्धि के अर्थ १० विचारात्मक ब्रह्मज्ञान रूप ११ अग्नि के लिये १२ सब कर्मों की आहुति हो १३ जो महा वाक् धारणा शक्ति है उस के अर्थ १४ पोषक १५ ब्रह्माग्नि के लिये १६ सब उपाधियां सुहुत हों १७ हे ज्योतिस्वरूप १८ महान् १९ सब को ब्रह्मानंद देने वाले २० ब्रह्मज्योति रस रूप जलो २१ हे भृकुटि मन २२, २३ हे विस्तार वान् हार्दान्तरिक्ष तुम्हारे और २४ ब्रह्म के लिये क्रम पूर्वक २५ जीव रूप हवि को २६ चारों ओर से देते हैं २७ श्रेष्ठ होम हो ७

विश्वो देवस्य नेतुर्मर्त्तो वुरीत सख्यम्। विश्वो राय इषुध्यति द्युम्नं वृणीत पुष्यसे स्वाहा ॥ ८॥

विश्वः। मर्त्तः। नेतुः। देवस्य। सख्यम्। वुरीत। पुष्यसे। द्युम्नं। वृणीत। विश्वः। रायः। इषुध्यति। स्वाहा ॥ ८॥

अथाधिदेवम्—पांचवें औद्भिद्य को होमता है उस का मंत्र १ ओं विश्वो देवस्येत्यस्य (स्वस्त्या त्रेय ऋ० आर्ष्यनुष्टुप् छं० सविता दे०) १

पदार्थः १ सब २ मनुष्य ३ फल प्रापक ४ दान आदि गुण से युक्त परमेश्वर के ५ सखि भाव अर्थात् भक्ति को ६ चाहो ७ कर्म उपासना ज्ञान की पुष्टि के लिये ८ अन्न को ९ चाहो क्योंकि १० सब मनुष्य ११ धन के लिये १२ ईश्वर से प्रार्थना करते हैं १३ उस परमेश्वर के लिये श्रेष्ठ होम हो ॥ ८॥

अथाध्यात्मम्— विना उपासना के योग प्राप्ति दुर्लभ है उस कारण उपासना को कहते हैं, १ सब २ रजप्रधान सत्व प्रधान तम प्रधान

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुद्ध सत्व मय चार प्रकार के पुरुष ३ सब के प्रेरक ४ हृदय स्थ नारायण की ५ अनन्य भक्ति को ६ चाहौ ७ कर्म उपासना ज्ञान की पुष्टि के लिये ८ अन्न को ९ चाहौ क्योंकि १० सब मनुष्य ११ सांसारिक धन वा योग संपत्ति के लिये १२ नारायण से प्रार्थना करते हैं १३ उस नारायण के अर्थ श्रेष्ठ होम हो ॥८॥

ऋक्सामयोः शिल्पे स्थस्ते वामारभे ते मा पातमा स्य यज्ञस्योदृचः। शर्म्मासि शर्म मे यच्छ नमस्ते अस्तु मा मा हिꣳसीः ९

ऋक्सामयोः। शिल्पे। स्थः। ते। वां। आरभे। ते। मा। अस्य यज्ञस्य। आउदृचः। पातं। शर्म्म। असि। मे। शर्म्म। यच्छ। ते। नमः। अस्तु। मा। मा। हिꣳसीः॥ ९॥

अथाधिदैवम्— इस कंडिका में दो मंत्र हैं, यजमान मृग चर्म के शुक्ल कृष्ण वर्ण रोमों की संधि को हाथ से स्पर्श करता है उसका मंत्र १ यजमान मृग चर्म पर दाहिने जानु से चढ़ता है और पश्चिम भाग में उसी दक्षिण जानु से बैठता है उस का मंत्र २

ॐ ऋक्सामयोरित्यस्य (आङ्गिरस ऋ० आर्षी पंक्ति श्चं० कृष्णाजिने दे०) १२

पदार्थः— हे मृग चर्म में विद्यमान श्वेत श्याम रेखा ओ तुम १ ऋग्वेद और साम वेद के २ समान ३ हौ ४ उस प्रकार की ५ तुम को ६ स्पर्श करता हूं ७ वे तुम ८ मुझ को ९ इस १० यज्ञ की ११ समाप्ति तक १२ रक्षा करो हे कृष्णाजिन तुम १३ शरण १४ हौ इस कारण १५ मुझे १६ शरण १७ दीजिये १८ तुम को १९ नमस्कार २० हो २१ मुझ यजमान को २२, २३ मत मारो॥ ९॥

अथाध्यात्मम्— हे हृदय में विद्यमान इडा पिंगला नाड़ी तुम दोनों १ ऋग्वेद और साम वेद के २ सदृश ३ हौ ४ उन ५ दोनों को ६ स्पर्श

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता हूं ७ वे तुम ८ मुझ को ९ इस १० योग यज्ञ की ११ सुषुम्ना मध्य प्राप्त चित्रा नाम नाड़ी की प्राप्ति तक १२ रक्षा करो हे हृदय तुम १३ शरण १४ हो १५ मुझे १६ शरण १७ दीजिये १८ तुमको १९ नमस्कार २० हो २१ मुझ योगी को २२, २३ मत नाश करो॥ ⊕ ॥९॥

उर्गस्याङ्गिरस्यूर्णम्रदाऊर्जम्मयिधेहि। सोमस्य नीविरसि विष्णोः शर्म्मासि शर्म यजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीस्कृधि। उच्छ्रयस्व वनस्पत ऊर्ध्वो मा पाह्यꣳहसः प्रास्य यज्ञस्योदर्चः १०

आङ्गिरसी। ऊर्क। ऊर्णम्रदाः। असि। ऊर्जम्। मयि। धेहि। सोमस्य। नीविः। असि। विष्णो। शर्म्म। असि। यजमानस्य। शर्म। इन्द्रस्य। योनिः। असि। कृषिः। सुसस्याः। कृ-

⊕ प्रश्न, नाड़ियों के मध्य कौन मुख्य हैं, इडा, पिंगला, सुषुम्ना, सरस्वती, अलम्बूषा, कुहू, शंखिनी, चित्रिणी, विश्वोदरी, विश्व मुखी ये दश नाड़ी योग मार्ग में कही हैं। उनमें तीन नाड़ी मुख्य कही हैं इडा नाड़ी वाम ओर स्थित है पिंगला दाहिनी ओर है, उन दोनों के मध्य सुषुम्ना नाड़ी कही है। चंद्र सूर्य अग्नि स्वरूप और ब्रह्म स्थान में विद्यमान वह नाड़ी शिर से दोनों पादाङ्गुष्ठ तक चली गई है, उस सुषुम्ना के मध्य योगियों की प्रिय चित्रा नाम नाड़ी विद्यमान है, उसमें कमल सूत्र के तुल्य श्रेष्ठ ब्रह्म रन्ध्र को कहा है॥ इडा में चन्द्रमा और पिङ्गला में सूर्य चलता है, योग निदान के जान्ने वालों ने उन दोनों को सुषुम्ना में जाना है योगी इडा नाड़ी के द्वारा वाह्य वायु को १६ मात्रा तक खींचे और पूरित वायु को ६४ मात्रा तक धारण करे श्रेष्ठ योगी सुषुम्ना के मध्य प्राप्त वायु को १२ मात्रा में धीरे २ पिङ्गला नाड़ी द्वारा भले प्रकार निकाले, योग शास्त्र के जान्ने वालों ने इस को प्राणा याम कहा है॥ ९॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धिः। वनस्पते। उच्छ्रयस्व। ऊर्द्ध्वः। अस्य। यज्ञस्य। आउद्दृंहः। मा अ थं हसः। पाहि॥ १०॥

अथाधिदेवम्— इस कंडिका में ६ मंत्र हैं, उन को कहते हैं यजमानवेणीकेआकार तिहरी शण मूंज मिश्रित मेखला धोती के भीतर बांधता है उस का मंत्र १ नीवी करता है उस का मंत्र २ डुपट्टा वा पगडी से शिर का आच्छादन करता है उस का मंत्र ३ कृष्ण मृग की विषाण को तीन वा पांच ग्रंथि से युक्त करके ऊंची दशा में बांधता है यदि शरीर में कण्डु उत्पन्न हो तो उस से खुजाता है और दक्षिण भोंह के ऊपर ललाट में स्पर्श करता है उस का मंत्र ४ उसी विषाण से वेदी के बाहर पूर्व में रेखा करता है उस का मंत्र ५ यजमान के मुख के बराबर गूलर का दण्ड अध्वर्यु यजमान को देता है और यजमान उसे ऊंचा करता है उस का मंत्र ६

ओंऊर्गसीत्यस्य (आङ्गिरसऋ० निचृदार्षीजगतीछं० मेखलानीविवस्त्रकृष्णविषाणादेवता ओंउच्छ्रयस्वेत्यस्य (आ० ऋ० साम्नी त्रिष्टुप्छं० कृष्णविषाण दण्डो देवता १,२,३,४ ५,६

पदार्थः— हे मेखला तुम १ अङ्गिरा वंशी ऋषियों से सम्बंध रखने वाली २ अन्न रस रूप ३ ऊन की समान कोमल ४ हो तुम ५ अन्न रस को ६ मुझ में ७ स्थापन करो,[१⊕] हे मेखला तुम ८ सोम देवता की ९ प्रिय ग्रंथि[२⊕] १० हो हे वस्त्र तुम ११ व्यापक यज्ञ पुरुष के १२ सुख हेतु १३ हो इस कारण १४ यजमान का १५ सुख करो, हे कृष्ण विषाण तुम १६ इन्द्र के १७ प्रादुर्भाव स्थ

१⊕ स्वर्गलोक को जाते अङ्गिरा वंशी ऋषियों ने अन्न रस का विभाग किया विभाग करते बचा हुआ अन्न रस भूमि पर गिरा और शण मुञ्ज नामतृण रूप से प्रकट हुआ इस कारण शण मुञ्ज की मेखला करते हैं और इसी से वह अङ्गिरा वंशी ऋषियों से सम्बंध रखने वाली है॥ (२⊕ मूल और अग्र के एकीकरण को नीवी अर्थात् गांठ कहते हैं॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न१८ हो १९ यजमान की खेतियां २० चांवल जौ आदि शोभन अन्नों से युक्त २१ करो २२ हे वृक्ष के अंग दंड २३ ऊंचा हो २४ और ऊंचा होकर २५ इस-२६ यज्ञ की २७ समाप्ति पर्यंत २८ मुझ को २९ पापसे ३० रक्षा कर॥१०

अथाध्यात्मम् — हे सुषुम्ना नाडी तुम १ प्राण सम्बंधी २ देह रूप अन्न की सार भूत ३ ऊन की समान कोमल ४ हो ५ विराट् रूप-अन्न को ६ मुझ में ७ स्थापन करो ८ तुम अमृत मोक्ष की ९ ग्रंथि १० हो अर्थात् तुम में मुक्ति स्थित है हे भ्रकुटि तुम ११ दीक्षित योगी की ⊞ १२ ब्रह्मानंद हेतु १३ हो इस कारण १४ यजमान को १५ मोक्ष सुख प्राप्त कराओ, हे महा वाक् और ज्ञान यज्ञ के मिथुन तुम १६ यजमान के १७ जीवन मुक्ति रूप से प्रादुर्भाव के कारण १८ हो ⊕ १९ अष्ट सिद्धि और नवनिधि रूप खेतियों को २० फल युक्त २१ करो २२ हे नासिका गत प्राण के स्वामी शिव रूप आत्मा २३ गगन मंडल को जाओ २४ गगन मंडल में स्थित होकर २५ इस २६ योग यज्ञ की २७ समाप्ति तक २८ अपने प्रति बिंब-मुझ को २९ पापसे ३० रक्षा करो॥ १०॥

⊞ श्रुति कहती है, यजमान के दो नाम हैं, दीक्षा में विष्णु होता है और जब यजन करता है तब यजमान कहाता है॥

⊕ श्रुति कहती है, कि यज्ञ ने महा वाक् को ध्यान किया कि मेरा इसके साथ मिथुन हो उससे युक्त होऊं इन्द्र रूप यजमान ने विचार किया कि इस यज्ञ और महा वाक् के मिथुन से बड़ा प्रतापी उत्पन्न होगा वह मेरा तिरस्कार न करे यह शोच कर इन्द्र ही गर्भ होकर इस मिथुन में प्रवेश हुआ, एक वर्ष में जन्म लेकर विचारा यह योनि बड़े योग बल वाली है जिसने मुझ को धारण किया और मैं उस्से महान हुआ इस लिये अब कोई दूसरा इस्से जन्म न ले जो मेरा तिरस्कार करे ऐसा विचार कर उसको गुप्त किया अर्थात् उसको सूर्य में धारण किया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्रतङ्कृणुताग्निर्ब्रह्माग्निर्यज्ञो वनस्पतिर्यज्ञियः दैवीर्न्धियम्मना महे सुमृडीकामभिष्टये वर्च्चोधां यज्ञवाहसꣳ सुतीर्था नोऽअसद्वशे। ये देवा मनोजाता मनोयुजो दक्षक्रतवस्ते नोवन्तु ते नः पान्तु तेभ्यः स्वाहा॥११॥

व्रतम्। कृणुत। अग्निः। ब्रह्म। अग्निः। यज्ञः। वनस्पतिः। यज्ञियः। अभिष्टये। दैवीं। सुमृडीकाम्। वर्च्चोधाः। यज्ञवाहसꣳ। धियम्। मनामहे। सुतीर्था। नः। वशे॥ असत्। ये। मनोजाताः। मनोयुजः। दक्षक्रतवः। देवाः। ते। नः। अवन्तु। तेभ्यः। स्वाहा॥ ११॥

अथाधिदैवम्— इस कंडिका में तीन मंत्र हैं, पूर्व मुख बैठा हुआ जो दीक्षित यजमान है वह अध्वर्यु का भेजा हुआ आहवनीय अग्नि के सन्मुख होकर तीन वार व्रतं कृणुतेति इस मंत्र को पढ़कर (अग्निर्ब्रह्म) इस एक वार पढ़े हुए मंत्र से वाग्विसर्जन करता है उस का मंत्र १ मृगचर्म पर बैठा हुआ यजमान व्रत अर्थात् दुग्ध पान के लिये हाथ धोता है उसका मंत्र २ अपने आसन पर बैठा हुआ यजमान मिट्टी के पात्र में दुग्ध पान करता है उसका मंत्र॥ ३॥

ओं व्रतं कृणुतेत्यस्य (आङ्गिरस ऋषयः० स्वराड्ब्राह्म्युनुष्टुप् छं० यज्ञो दे०) १
ओं दैवीं धियमित्यस्य (तथा ०प्राजापत्या जगती छं० तथा) २
ओं ये देवा इत्यस्य (तथा ०प्राजापत्या त्रिष्टुप् छं० अग्निमित्रावरुणादित्या विश्वे देवा दे०) ३

पदार्थः— १ दुग्ध को २ दोहन आदि से संपादन करो क्योंकि ३ जाठराग्नि ४ ब्रह्म है ५ ईशरूप अग्नि ६ यज्ञ पुरुष है ७ देह वृक्ष ८ यज्ञ रूप

श्री गीता में भगवान ने कहा है, मैं वैश्वानर रूप होकर प्राणियों के देह में आश्रित और प्राण अपान से युक्त हुआ चार प्रकार के अन्न को पचाता हूं॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं ९ सन्मुखप्राप्तसिद्धिके लिये १० देवता सम्बंधी ११ श्रेष्ठ सुख की कारण १२ तेज की धारण करने वाली १३ यज्ञ का निर्वाह करने वाली १४ बुद्धि को १५ हम चाहते हैं १६ वह सुख से प्राप्ति योग्य अथवा श्रेष्ठ अवतरण मार्ग वाली बुद्धि १७ हमारे १८ वश में १९ प्राप्त हो २० जो २१ दर्शन श्रवण आदि इच्छा रूप मन से उत्पन्न होने वाले २२ और रूप आदि के दर्शन समय भी मन से युक्त अथवा स्वप्नावस्था में मन से योग करने वाले २३ संकल्प करा सिद्धि में कुशल २४ चक्षु आदि इन्द्रिय रूप प्राण हैं २५ वे २६ हम को २७ यज्ञानुष्ठान का विघ्न दूर करने से रक्षा करो २८ उन प्राण रूप देवताओं के लिये २९ यह दुग्ध होम हो॥ ११॥

अथाध्यात्मम्— १ योग यज्ञ के व्रत को २ करो क्योंकि ३ आत्माग्नि ४ ब्रह्म है ५ ब्रह्माग्नि ६ यज्ञ पुरुष ईश है ७ नासिका में विद्यमान प्राण का स्वामी जीवात्मा ८ यज्ञ योग्य हवि है ९ विष्णु और परा शक्ति के यजनार्थ १० ब्रह्म सम्बिधिनी ११ ब्रह्मानंद की कारण १२ ब्रह्म तेज की धारक योग यज्ञ १३ का निर्वाह करने वाली १४ बुद्धि को १५ हम चाहते हैं १६ वह श्रेष्ठ रूप बुद्धि १७ हमारे १८ वश में १९ हो २० जो २१ मन से उत्पन्न २२ मन में योग शील २३ ज्ञान यज्ञ में कुशल २४ चक्षु आदि इन्द्रियां हैं २५ वे २६ हम योगियों को २७ संसार से रक्षा करो २८ उनके लिये २९ महा वाक् जिनका अर्थ यह है कि प्राण, वाणी, चक्षु, श्रोत्र, मन, हृदय ये सब ब्रह्म रूप हैं॥ ११॥

श्वात्राः पीता भवत यूयमापोऽअस्माकमन्तरुदरे सुशेवाः। ताऽअस्मभ्यमयक्ष्माऽअनमीवाऽअनागसः स्वदन्तु देवीरमृता ऋतावृधः॥ १२॥

▽ यज्ञ साधन होने से वनस्पति को यज्ञ रूप कहा क्योंकि श्रुति कहती है, मनुष्य यज्ञ नहीं करें जो वनस्पति नहीं होवें॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपः। यूयम्। पीताः। श्वात्राः। भवत। अस्माकं। अन्तरुदरे। सुशेवाः। ताः। अयक्ष्माः। अनमीवाः। अनागसः। ऋतावृधः। देवीः। अमृताः। अस्मभ्यम्। स्वदन्तु॥ १२॥

अथाधिदैवम्— नाभिका स्पर्श करता है उसका मंत्र,

ओं श्वात्रा इत्यस्य (आङ्गिरस ऋ० जगती छं० आपो देवता) १

पदार्थः -१ हे दुग्ध रूप जलो २ तुम ३ मुझ से पान किये हुए ४ जलकुष्ट में गमन करने वाले ५ हूजियै ६ हमारे ७ जल पाक स्थान में ८ श्रेष्ठ सुखरूप हूजियै ९ वे १० प्रबल रोग राज से रहित ११ सामान्य रोग के दूर करने वाले १२ अपराध हरने वाले १३ मानस सूर्य की वृद्धि के कारण १४ कूपनदी आदि में क्रीडा करने वाले १५ अमृत रूप तुम १६ हमारे उपकार के लिये १७ स्वाद युक्त हूजियै॥ १२॥

अथाध्यात्मम - आपः। यूयम्। अस्माकं। अन्तरुदरे। पीताः। श्वात्राः। सुशेवाः। भवत। शेषं पूर्ववत्- १ हे अन्तरिक्ष २ तुम ३ हमारी ४ भृकुटि हृदय और मन के मध्य ५ परमात्मा और परा शक्ति मिथुन से युक्त ६ ब्रह्मा विष्णु महेश रूप आत्मा के रक्षक ७ ब्रह्मानंद युक्त ८ हूजियै ९ वे अन्तरिक्ष १० शंका, भ्रम, मोह, कोप, मान, काम और महा क्षोभ से रहित ११ संसार रोग से पृथक् १२ अधर्म रहित १३ ब्रह्मतेज की वृद्धि के कारण १४ द्योत मान १५ मृत्यु निवर्त्तक होकर १६ हमारे उपकार के लिये १७ आत्म प्रति बिंब और इन्द्रियों का निरोध करो॥ १२

इयन्ते यज्ञिया तनूरपो मुञ्चामि न प्रजाम्।
अ॒ग्नेः होमुचः स्वाहाकृताः पृथिवीमाविशत
पृथिव्यासम्भव १३

इयम्। ते। यज्ञिया। तनूः। अपः। मुञ्चामि। न। प्रजाम्।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ हो मुञ्चः। स्वाहाकृताः। पृथिवीम्। आविशत। पृथिव्या सम्भव॥ १३॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में तीन मंत्र हैं, यजमान मूत्र पुरीषक रना चाहता काले हिरण की सींगड़ी से कुछ के मिट्टी का ढेला वा तृण काष्ठ आदि ग्रहण करता है उसका मंत्र १ मूत्र पुरीष करता है उस का मंत्र २ स्मृति के अनुसार शौच को करके ग्रहण किये हुए ढेले वा तृण आदि को भूमि पर पटकता है उसका मंत्र ३

इयन्त इत्यस्य (आङ्गिरस ऋषयः० प्राजापत्या गायत्री छं० यज्ञो दे) १
अपो मुञ्चामीत्यस्य (तथा ० याजुषी० छं० यजमानो दे) २
पृथिव्या सम्भवेत्येस्य (तथा ० प्राजापत्या गायत्री छं० पृथिवी दे) ३

पदार्थः- हे यज्ञ पुरुष १ यह पृथिवी २ तेरा ३ यज्ञ योग्य ४ शरीर है इस कारण मूत्र की अपवित्रता दूर करने के लिये ढेले वा तृण आदि को लेता हूं यह भाव है ५ मूत्र रूप जल ६ छोड़ता हूं ७ नकि ८ सन्तानोत्पत्ति के कारण वीर्य को इस कारण हे मूत्र नाम जलो ९ पाप से मुक्त करने वाले १० और दुग्ध पान के समय स्वाहा मंत्र से स्वीकृत तुम ११ पृथिवी में १२ प्रवेश करो हे लोष्ट आदि क तुम १३ भूमि के साथ १४ एकीभाव को प्राप्त करो॥ १३॥ ९

९ स्मृति पुराणों में मूत्र पुरीष की जो विधि लिखी है उस को कहते हैं (विष्णुपुराण) मनुष्य प्रातः काल उठ कर नैऋत दिशा में वाण विक्षेप की समान चल कर पुरीष विसर्जन करै (आपस्तंब) दक्षिण दिशा वा नैऋत कोण में जाकर मूत्र पुरीष करै, परन्तु सूर्य के अस्त होने पर गांव से बाहर और घर से दूर जा कर मूत्र पुरीष कर्म को न करै (वायु पुराण) शुष्क तृण जिन में कुशा आदि न हो, काष्ठ जिन में ढाक आदि की लकड़ी यज्ञ सम्बंधी न हो, पत्र वांस का टुकड़ा मिट्टी के पात्रों से पृथि-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वी को ढक कर मूत्र विष्टा का त्याग करै (मनुः) मूत्र विष्टा का त्याग दिन में उत्तर मुख हो कर रात्रि में दक्षिण मुख हो कर और दोनों संध्या में उत्तर मुख हो कर करै (यमः) प्रातः काल पश्चिम मुख हो कर और सायं काल पर पूर्व मुख हो कर और मध्यान्ह पर उत्तर मुख होकर, रात्रि में दक्षिण मुख होकर मूत्र विष्टा का त्याग करै (मनुः) छाया (पाखाना) अंधकार और रात्रि में तथा प्राणवाधा के भय में यथा रुचि मुख करै (हारीतः) नाक और मुंह को वस्त्र से ढक कर मूत्र विष्टा का त्याग करै (यमः) शिर को ढक कर मूत्र विष्टा का त्याग करै (मनुः) मार्ग, भस्म, गोशाला, हल से जोता हुआ खेत, जल श्मशान, पर्वत, पुराना मंदिर, जीवों के विल और जीव युक्त गढ़े लों में मूत्र विष्टा का त्याग न करै (देवलः) वावड़ी, कूप, नदी, गोशाला, अग्नि, चबूतरा आदि पर मूत्र विष्टा का त्याग न करै (विष्णुः) ऊसर, हरियाली भूमि, और दूसरे मनुष्य की विष्टा पर बाग़, जल के समीप और असंवृत स्थान में मूत्र विष्टा का त्याग न करै (वायु पुराण) छोटा सरोवर, वड़ा तालाव, नदी, झिरना, पर्वत, गोवर भस्म, जुता खेत, भूसा, अङ्गार, खोपड़ी, देव मंदिर, राज मार्ग, खलियान, चौराहा, जल, जल के समीप वृक्ष की जड़, चैत्य वृक्ष, फटी भूमि के विल पर मूत्र विष्टा का त्याग न करै (हारीतः) चबूतरा, द्वार के समीप, तीर्थ, सस्य संपन्न भूमि यज्ञिय वृक्षों के नीचे मूत्र विष्टा का त्याग न करै (आपस्तंवः) जिस छाया में पथिकजन वैठें अथवा दूसरे मनुष्य की छाया में मूत्र विष्टा का त्याग न करै अपनी छाया में तो मूत्र त्याग करै और खड़ाउ पहिरे हुए मूत्र विष्टा का त्याग न करै (मनुः) चलता और खड़ा हुआ भी दोनों कर्म न करै (शंख लिखित) नग्न शरीर भी दोनों कर्म को न करै (गौतमः) वायु, अग्नि, ब्राह्मण, सूर्य, जल, देवता, और गौओं को देखता मूत्र विष्टा को न त्यागे (याज्ञवल्क्यः) सूर्य, अग्नि, गौ, चन्द्रमा, संध्या, जल, स्त्री और ब्राह्मणों के सन्मुख दोनों कर्म न करै (विष्णु पुराण) मूत्र पुरीष के स्थान में अति देरतक न ठहरै (हारीतः) ढेला वा शुष्क काष्ठ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से गुदा लिङ्ग पूंछे फिर जल से शुद्ध करै (गौतम) पत्ता- खंगड और पाषाण से मूत्र पुरीष को न पोंछे (व्यासः) पाषाण, मूल, फल, कोयला इत्यादि, अस्थि और कुशा से उक्त शुद्धि न करै (अथ शौचं) मनुः) सावधान पुरुष लिङ्ग ग्रहण कर उठाये हुए जल से शौच करे जिस्से गन्ध लेप का क्षय हो (ब्रह्म पु०) मौन पुरुष उठाये हुए जल और मृत्ति का को लेकर दिन में उत्तर मुख और रात्रि में दक्षिण मुख होकर शौच करे (यमः) ब्राह्मण वालू सहित मृत्ति का को तालाव आदि के तट से लेवै परंतु चूहे की खोदी मिट्टी और वंवई धूल कीच मार्ग और ऊसर की मिट्टी और दूसरे के शौच से वची हुई मिट्टी को न लेवै (विष्णु पुराण) जल के भीतर की मिट्टी स्थान की मिट्टी जीव युक्त मिट्टी हल से खोदी मिट्टी को त्याग करै (ब्रह्म पु०) जल से धोकर मिट्टी लगावे और मिट्टी को जल से धोवे (मनुः) शुद्धि चाहने वाले पुरुष को मृत्तिका लिङ्ग पर एक वार गुदा पर तीन वार, वावें हाथ में दश वार फिर दोनों हाथ में सात २ वार लगानी चाहिये (यमः) शुद्धि चाहने वाले पुरुष को सदा मृत्ति का दोनों पांव में तीन २ वार लगानी चाहियै (मनुः) यह शौच गृहस्थों का है, ब्रह्मचारियों का द्विगुण है वानप्रस्थों का त्रिगुणा है और सन्यासियों का चौगुणा है (आपस्तंवः) दिन में जो शौच कहा उस का आधा रात्रि में और चौथाई मार्ग में जान्ना चाहिये और रोगी वल के अनुसार करै (ऋष्य शृङ्ग) जिस स्थान पर शौच किया उस को जल से शुद्ध करै जो स्थान शोधन नहीं करता उस की शुद्धि नहीं होती (दक्षः) मूत्रोत्सर्ग में मृत्तिका को लिङ्ग पर एक वार वांवे हाथ में तीन वार और दोनों हाथ में दो २ वार लगावे यही विधि वीर्योत्सर्ग में है (देवलः) धर्मज्ञ पुरुष नाभि से नीचे के अंगों को दाहिने हाथ से शुद्ध न करै उसी प्रकार नाभि से ऊपर के अंगों को वामें हाथ से न धोवै परंतु रोग आदि में विलोम कर्म का निषेध नहीं है (हारीतः) शौच के पीछे गोवर वा मिट्टी से लोटा को मांज कर हाथ धो दांतून करके सूर्य चंद्रमा वा अग्नि का दर्शन करै (ब्रह्म पु०) दोनों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाध्यात्मम्— हे विष्णु १ यह २ यज्ञ योग्य मन हृदय भृकुटि रूप भूमि ३ तेरा ४ शरीर है इस कारण ५ कर्म को ६ त्याग करता हूं ७ परा श्री ब्रह्म की भक्ति को ८ नहीं त्यागता हूं ९ हे पाप से मुक्ति देने वाली १० वेदवाक्य से की हुई क्रिया ओ ११ देह में १२ प्रवेश हूजिये हे कर्त्तृत्वाभिमान तुम १३ देह के साथ १४ एकी भाव को प्राप्त करो॥ १३॥ ⊕

अग्नेत्वꣳ सुजागृहि वयꣳ सुमन्दिषीमहि
रक्षाणोऽअप्रयुच्छन्नप्रबुधेनः पुनस्कृधि।१४

अग्ने। त्वं। सुजागृहि। वयꣳ। सुमन्दिषीमहि। अप्रयुच्छन्। नः। आरक्ष। नः। पुनः। प्रबुधे। कृधि॥ १४॥

अथाधिदैवम्— यजमान आहवनीय अग्नि से दक्षिण दिशा में उत्तर मुख वा पूर्व को शिर करके अग्नि की अपेक्षा नीचली भूमि में शयन करता है उस का मंत्र॥

ओं अग्नेत्व मित्यस्य (आङ्गिरस ऋषयः० अनुष्टुप् छं० अग्निर्दे०) १

पदार्थः—१ हे अग्नि २ तुम ३ भले प्रकार जागिये ४ हम यजमान सुख पूर्वक ५ सोवें ६ सावधानी करते तुम ७ हम को ८ चारों ओर से रक्षा करो ९ हम को १० फिर ११,१२ जगाओ सोने के समय अग्नि की प्रार्थना राक्षसों

पांव में दो बार मिट्टी लगा कर धोकर अच्छे धोये हुए हाथ से तीन आच मन कर सनातन विष्णु को स्मरण करके शुद्ध होवै (शंखलिखतौ) आच मन करके शिवजी को मन से ध्यान करै (व्यासः) शौच करके मूत्र विष्ठा को न देखै, देख कर सूर्य अग्नि वा चन्द्रमा का दर्शन करै इस स्थान पर वशिष्ठ जी ने गौ ब्राह्मण का दर्शन अधिक कहा है॥

⊕ गीता में भगवान ने कहा है जो पुरुष सब कर्मों को प्रकृति के किये हुए और आत्मा को अकर्त्ता देखता है वह सर्व दर्शी है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केनाशार्थ है॥ १४॥

अथाध्यात्मम्— समाधि कर्त्ता ब्रह्माग्नि से प्रार्थना करता है १ हे ब्रह्माग्नि २ तुम ३ भले प्रकार जागो ४ हम योगी जन ५ सुषुप्ति रूप समाधि को करें ६ सावधानी करते तुम ७ हम को ८ सब ओर से रक्षा करो ९ हम को १० फिर ११ उत्थान के लिये १२ समर्थ करो॥ १४॥

पुनर्म्मनः पुनरायुर्म आगन् पुनः प्राणः पुनरात्मा म आगन् पुनश्चक्षुः पुनः श्रोत्रम्म आगन्। वैश्वानरो अदब्धस्तनूपा अग्निर्नः पातु दुरितादवद्यात्॥ १५॥

१ मे। २ मनः। ३ पुनः। ४ आगन्। ५ आयुः। ६ पुनः। ७ प्राणः। ८ पुनः। ९ आगन्। १० मे। ११ आत्मा। १२ पुनः। १३ चक्षुः। १४ पुनः। १५ मे। १६ श्रोत्रं। १७ पुनः। १८ आगन्। १९ वैश्वानरः। २० अदब्धः। २१ तनूपाः। २२ अग्निः। २३ अवद्यात्। २४ दुरितात्। २५ नः। २६ पातु। १५॥ **अथाधिदैवम्**— निद्रा रहित फिर जागने वाले और आहवनीय अग्नि के सन्मुख होने वाले यजमान को अध्वर्यु यह मंत्र कहलाता है १ ओं पुनर्म्मनइत्यस्य (आङ्गिरस ऋषयः० भुरिग्ब्राह्मीबृहती छं० अग्निर्दे०) १

पदार्थः— १ मुझ यजमान का २ मन ३ फिर जाग्रत अवस्था में ४ प्राप्त हुआ अर्थात् सुप्ति काल में लय होकर फिर अब शरीर में विद्यमान हुआ ५ मेरी आयु स्वप्न समय नष्टप्राय होकर ६ फिर प्राप्त हुई ७ प्राण ८ फिर ९ प्राप्त हुआ १० मेरा ११ जीवात्मा १२ फिर प्राप्त हुआ १३ चक्षु इन्द्री १४ फिर प्राप्त हुई १५ मेरी १६ श्रवणेन्द्रिय १७ फिर १८ प्राप्त हुई १९ सब मनुष्यों का उपकारक २० अविनाशी २१ हमारे शरीर का रक्षक २२ ईशाग्नि २३ निन्दित २४ पाप से २५ हम को २६ रक्षा करो॥ १५॥

अथाध्यात्मम्— उत्थान अवस्था में जप करता है १ मुझ योगी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का २ मन समाधि के बीच ब्रह्म में लीन हुआ ३ फिर उत्थान अवस्था में ४ प्राप्त हुआ ५ मेरी आयु समाधि के बीच जीव ईश्वर का एकत्व होने पर नष्ट प्राय होकर ६ फिर उत्थान अवस्था में प्राप्त हुई शेष पूर्व की समान है॥ १५॥

त्वमग्ने व्रतपा असि देव आमर्त्येष्वा त्वं यज्ञेष्वीड्यः
रास्वेयत्सोम भूयो भर देवो नः सविता वसो दाता
वस्वदात्॥ १६॥

अग्ने। देवः। त्वम्। आमर्त्येषु। व्रतपाः। असि। यज्ञेषु। आ।
ईड्यः। हे सोम। इयत्। रास्व। भूयः। आभर। वसोः। दाता।
सविता। देवः। नः। वसु। अदात्॥ १६॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में दो मंत्र हैं, दीक्षित क्रोध करके अथवा व्रत के विरुद्ध उच्चारण करके प्रायश्चित के लिये जप करता है उसका मंत्र २ यज्ञ में प्राप्त धन को स्पर्श करके पढ़ता है उसका मंत्र २

ओंत्वमग्न इत्यस्य (भुरिगार्षी पंक्तिश्छं० अग्नि सोमौ देवते) १, २

पदार्थः- १, २ हे द्योतनात्मक अग्नि ३ तुम ४ मनुष्य पर्यंत सब प्राणियों में ५ यज्ञ कर्म के रक्षक ६ हो ७ यज्ञों में ८ सब ओर से ९ याचना और पूजन योग्य हो १० हे सोम ११ इतना धन १२ दीजिये १३ फिर भी १४ धन को दे जिस कारण १५ धन के १६ दाता १७ सविता १८ देवता ने १९ हमारे लिये २० धन २१ दिया॥ १६॥

अथाध्यात्मम्- १ हे ब्रह्माग्नि २ ज्योति स्वरूप ३ तुम ४ प्राण पर्यंत सब इन्द्रियों में ५ योगानुष्ठान व्रत के रक्षक ६ हो ७ ज्ञान यज्ञों में ८ सब ओर से ९ (यह सब ब्रह्म है यहां नाना प्रकार का कुछ नहीं है) ऐसी स्तुति के योग्य हो १० हे आत्म प्रतिबिंब तुम ११ मन प्राण आत्मा ईश को १२ ग्रहण करो १३ फिर १४ अपनी आत्मा में धारण करो इस कारण १५ योग य-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञ के १६ दाता १७ द्योत मान १८ मन वा प्राण ने १९ हमारे लिये २० योग य ज्ञ २१ दिया॥ १६॥

एषा ते शुक्र तनूरेतद्वर्चस्तया सम्भव भ्राजङ्गच्छ।
जूरसि धृता मनसा जुष्टा विष्णवे॥ १७॥

शुक्र। एषा। ते। तनूः। एतत्। वर्चः। तया। सम्भव। भ्राजम्।
गच्छ। जूः। मनसा। धृता। विष्णवे। जुष्टा। असि॥ १७॥

अथाधिदेवम्— इस कंडिका में दो मंत्र हैं, अध्वर्यु ध्रुवा के आज्य में से जुहू को चार वार भर के तिस घृत में दर्भ तृणों में वंधे हुए सुवर्ण को छोड़ता है उसका मंत्र १ उस घृत को आहवनीय अग्नि में समिदाधान पूर्वक होमता है उसका मंत्र २॥

ओं एषात इत्यस्य (वत्स ऋषि० आर्षी त्रिष्टुप् छं० हिरण्य आज्ये दे०) १
ओं जूरसीत्यस्य (तथा ० तथा ० वाग् देवता) २

पदार्थः १ हे दीप्यमान अग्नि २ यह आज्य लक्षण विभूति ३ तेरा ४ शरीर है ५ यह सुवर्ण ६ तेज है ७ दोनों प्रकार के तेज से ८ एकी भाव को प्राप्त कर तिस के पीछे ९ सोम देवता को १० प्राप्त कर हे काक् ११ वेग युक्त १२, १३ मन से नियमित १४ तुम यज्ञ पुरुष के लिये १५ प्रीति युक्त १६ हो॥ १७॥

अथाध्यात्मम् १ हे शुद्ध आत्माग्नि २ यह माया ३ तेरा ४ शरीर है ५ यह प्रतिबिंब ६ तेज है ७ परा अपरा रूप दोनों प्रकार की उस प्रकृति के साथ ८ एकीभाव को प्राप्त कर अर्थात् अपनी आत्मा में लय कर तिस के पीछे ९ विराट् के आत्मा सूर्य को अर्थात् विराट् भाव को १० प्राप्त कर हे महावाक् ११ सरस्वती रूप १२ मनसे १३ अनुभूत १४ तुम विष्णु के अर्थ १५ सेवित १६ हो १७॥

तस्यास्ते सत्यसव सः प्रसवे तन्वो यन्त्रमशीय स्वाहा। शुक्रमसि चन्द्रमस्यमृतमसि वैश्व

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवमसि॥१८॥

तस्याः। ते। सत्यसवसः। प्रसवे। तन्वाः। यन्त्रम्। अशीय। स्वाहा। शुक्रम्। असि। चन्द्रम्। असि। अमृतम्। असि। वैश्वदेवम्। असि॥१८॥

अथाधिदेवम् – जुहू में सेतृणवद्ध सुवर्ण को निकाल करतृणके वेदी के मध्य डालता है उसका मंत्र १

ओं तस्यास्त इत्यस्य (वत्स ऋ० सुरा डार्षी बृहती छंदो वाक्यहिरण्ये दे०)१

पदार्थः १ उस २ तुझ ३ सत्य अनुज्ञा वाली वेदवाणी की ४ अनुज्ञा में वर्त्तमान में ५ शरीर के ६ नियमन दृढ़ता को ७ प्राप्त करूं ८ इस घृत की आहुति हो हे सुवर्ण तुम ९ दीप्यमान १० हो ११ आल्हाद के दाता १२ हो १३ जीवन के उपाय १४ हो १५ सर्वदेव सम्बधी १६ हो क्योंकि सब देवता सुवर्ण दान से तृप्त होते हैं॥१८॥

अथाध्यात्मम् – १ उस २ तुझ ३ सत्य अनुज्ञा वाले महा वाक् का ४ फल होने पर ५ व्यष्टि समष्टि देह के ६ नियमन को ७ प्राप्त करूं ८ श्रुति वाक्य से और वह है वह पुरुष शरीर के नियमन को लब्ध करता है जो कि यज्ञ की समाप्ति को पाता है हे आत्म प्रतिबिंब तुम ९ हृदय के सूर्य १० हो ११ मानस ज्योति १२ हो १३ जीवन के साधन १४ हो १५ इन्द्रियों के आत्मा १६ हो १८

चिदसि मनासि धीरसि दक्षिणासि क्षत्रियासि यज्ञियास्यदितिरस्युभयतः शीर्ष्णी। सा नः सुप्राची सुप्रतीच्येधि मित्रस्त्वा पदि बध्नीताम्पूषाध्वनस्पा विन्द्रायाध्यक्षाय।१९

चित्। असि। मनः। असि। धीः। असि। दक्षिणा। असि। क्षत्रिया। असि। यज्ञिया। असि। अदितिः। असि। उभयतः शीर्ष्णी। सा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नः। सुप्राची। सुप्रतीची। एधि। मित्रः। पदि। त्वा। वध्नीतां। पूषा। अध्यक्षाय। इन्द्राय। अध्वनः। पातु॥१९॥

अथाधिदैवम् – वाग्रूपाध्यारोप कल्पना करके सोमक्रयणी गौ की स्तुति करते हैं उस का मंत्र १॥

ओं चिदसीत्यस्य (वत्सऋ० भुरिग्ब्राह्मी पंक्तिश्छं० वाग दे०) १

पदार्थः हे सोमक्रयणी गौ तुम १ चिदात्मा २ हो ३ ब्रह्मा विष्णु महेश रूप पूज्य ४ हो ५ दुग्ध दान से प्रज्ञाशक्ति ६ हो ७ यज्ञ में दक्षिणारूप ८ हो ९ दाता को कष्ट से रक्षा करने वाली १० हो ११ यज्ञ सम्बंधी होने से यज्ञ के योग्य १२ हो १३ अखंडिता परा शक्ति रूप १४ हो १५ पृथिवी स्वर्ग की ओर शिर रखने वाली अर्थात् दिव्य भोम भोगों की दाता हो १६ वह तुम १७ हमारे लिये १८ सोम वेचने वाले की ओर पूर्व मुखी हो कर १९ पीछे सोम सहित हमारे पास आने को पश्चिम मुखी २० हूजिये २१ सूर्य २२ दक्षिण पदमें २३ तुझ को २४ रक्षा के लिये वंधन करो २५ पृथिवी २६ यज्ञ के स्वामी २७ इन्द्र की प्रीति के लिये २८ मार्ग में २९ रक्षा करो॥१९॥ अथवा इस कंडिका का यह अर्थ है, हे वाक् तुम १ चिद् धातु ब्रह्म २ हो ३ चिदेवरूप यज्ञ ४ हो ५ ज्ञानत्व रूप ६ हो ७ पर छन्दानुवर्त्तिनी ८ हो ९ संसाररूप रोग से रक्षा करने वाली १० हो ११ यज्ञ योग्य १२ हो १३ मंत्र रूप से अखंडित १४ हो १५ वंधन मोक्ष की ओर सिर रखने वाली हो जैसा श्रुति कहती है, जब इस वाणी के द्वारा समान ब्रह्म को विपरीत कहता है तब अपर को पूर्व और पूर्व को अपर करता है तिस कारण वाणी दोनों ओर शिर रखने वाली है १६ वह तुम १७ हमारे लिये १८ सोम वेचने वाले की ओर पूर्व मुखी हो कर १९ पीछे सोम सहित हमारे पास आने को पश्चिम मुखी २० हूजिये २१ मानस सूर्य २२, २३, २४ तुझ को अपने वश में करो २५ मन २६ यज्ञ के स्वा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मी २७ ईश्वर की प्रीति के लिये तुझ को २८ मार्ग में २९ रक्षा करो॥ १९॥

अथाध्यात्मम्- हे मानस सूर्य रूप परा शक्ति तुम १ चित्त २ हो ३ मन ४ हो ५ बुद्धि ६ हो ७ नर रूप ८ हो ९ जीव रूप १० हो ११ यज्ञ के योग्य ईश रूप १२ हो १३ अखंडित ब्रह्म ज्योति १४ हो १५ जड़ चैतन्य के मध्य वर्त्तन शील हो १६ वह तुम १७ हमारे प्रेरणा के लिये १८ समष्टि प्रति बिंब बेचने वाले की ओर पूर्व मुखी होकर १९ पीछे समष्टि प्रति बिंब सहित हमारे पास आने को पश्चिम मुखी २० हूजियै ११ प्राण २२ ब्रह्म में २३ तुझ को २४ युक्त करो २५ मन २६ २७ महा विष्णु वा ब्रह्म के अर्थ २८ पितृ यान आदि से तुझ को २९ रक्षा करो॥ १९

अनुत्वा माता मन्यतामनु पितानु भ्राता सग
र्भ्यो नु सखा सयूथ्यः। सा देवि देव मच्छेहीन्द्रा
य सोमꣳ रुद्रस्त्वा वर्त्तयतु स्वस्ति सोमसखा
पुनरेहि। २०।

त्वा। माता। अनु मन्यताम्। पिता। अनु। सगर्भ्यः। भ्राता। अनु। सयूथ्यः। सखा। अनु। देवि। सो। इन्द्राय। सोमम्। देवम्। अच्छेहि। रुद्रः। त्वा। वर्त्तयतु। सोम सखा। स्वस्ति। पुनः। एहि॥ २०॥

अथाधिदैवम् - गौ की प्रार्थना का मंत्र १

ओं अनुत्वेत्यस्य (वत्स ऋ० साम्नीजगती तथा भुरि गार्ष्युष्णिक छं० वाक् गावौ दे०) १

पदार्थः- हे गौ वाहे वाक १ सोम लाने में प्रवृत्त तुम को २ पृथिवी ३ अनुज्ञा दो ४ स्वर्ग ५ अनुज्ञा दो ६ सहोदर ७ भाई अर्थात् ईश ८ अनुज्ञा दो ९, १० एक यूथ में प्रकट होने वाला सखा अर्थात् आत्म प्रति बिंब ११ अनुज्ञा दो १२ हे सोम कयणी १३ वह तुम १४ ईश्वर के लिये १५, १६ द्योति मान सोम के १७ प्राप्त करने को जाओ १८ रुद्र देवता वा प्राण १९ तुझ सोम धारी को २०

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी ओर लौटाओ २१ सोम सहित तुम २२ क्षेम पूर्वक २३ फिर २४ आओ॥ २०

अथाध्यात्मम्- हे जीवात्मन् १ तुझको २ प्रकृति ३ अनुज्ञा दो ४ पुरुष ५ अनुज्ञा दो ६,७ देहस्थ ईश ८ अनुज्ञा दो ९,१० प्राण ११ अनुज्ञा दो १२ हे जीवरूप पराशक्ति १३ वह तुम १४ माया दूर करने वाले महानारायण के लिये १५,१६ ज्योतिरूप समष्टि प्रति विंब के १७ प्राप्त करने को जाओ १८ प्राण १९ तुझे २० लौटाओ वा कर्म में प्रवृत्त करो २१ समष्टि प्रति विंब के सखा तुम २२ कल्याण पूर्वक २३ फिर २४ आओ॥ २०॥

वस्व्यस्यदितिरस्यादित्यासि रुद्रासि चन्द्रासि।
बृहस्पतिष्ट्वा सुम्ने रमणातु रुद्रो वसुभिराचके २१

वस्वी। असि। अदितिः। असि। आदित्यः। असि। रुद्रः। असि। चन्द्रः। असि। बृहस्पतिः। त्वा। सुम्ने। रमणातु। रुद्रः। वसुभिः। आचके॥ २१॥

अथाधिदैवम्- अभिमंत्रण के अनंतर किसी से उत्तर में प्राप्त की हुई सोमक्रयणी के पीछे अध्वर्यु और यजमान चलते हैं उस का मंत्र॥ १॥

ओं वस्वीत्यस्य (वत्स ऋ० विराडार्षी बृहती छं० वाग्गावौ देवते) १

पदार्थः हे वाक वाहे गौ तुम १ अष्टवसु रूप ७ अथवा यज्ञ स्वरूप २ हो ३ देवमाता परः रूप ४ हो ५ द्वादश सूर्य रूप ६ हो ७ एकादश रुद्र रूप ८ हो ९ चंद्ररूप १० हो ११ ब्रह्म १२ तुम को १३ सुख में १४ रमण कराओ १५ पशुपति यजमान में १६ यज्ञों के कारण १७ तुम को चाहता हूं॥ २१॥

अथाध्यात्मम्- हे मानस सूर्य रूप पराशक्ति तुम १ देहस्थ कमल रूप २ हो ३ अखंडित ब्रह्म ज्योति ४ हो ५ दश इन्द्रिय मन बुद्धि रूप ६ हो ७ प्राण रूप ८ हो ९ मन रूप १० हो ११ प्राण १२ तुम को १३ ब्रह्मानंद में १४ रमण कराओ १५ शिव रूप योगी में १६ कमल मार्गों से १७ तुझ को अपनी आत्मा में

७ श्रुति में लिखा है अग्नि, पृथिवी, वायु, अन्तरिक्ष, सूर्य, स्वर्ग, चंद्रमा, नक्षत्र यह वसु हैं यह सब इन्हों में स्थापित है ये ही इस सब को बसाते हैं इसी से इन का नाम वसु है-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लयकरना चाहता हूं॥२१॥

अदित्यास्त्वा मूर्द्धन्नाजि घर्मि देवयजने पृथिव्या इडायास्पदमसि घृतवत्स्वाहा अस्मे रमस्वास्मे तेवन्धुस्त्वे रायो मे रायो मा वयꣳ रायस्पोषेण वियौष्म तोतो रायः॥२२

अदित्याः। पृथिव्याः। मूर्द्धन्। देवयजने। त्वा। आजि। घर्मि। इडायाः। पदम्। असि। घृतवत्। स्वाहा। अस्मे। रमस्व। अस्मे। ते। वन्धुः। त्वे। रायः। मे। रायः। वयम्। रायः। पोषेण। मा। वियौष्म। तोतः। रायः॥२२॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में ७ मंत्र हैं उनको कहते हैं, सोमक्रय के पूर्व दक्षिण पद सम्बंधी छै पदों को छोड़ कर सातवें पद का लक्षण कर उस सुवर्ण रख कर होम करता है उसका मंत्र १ अध्वर्यु स्फ्य से गौ के पदांकित भूमि में तीन रेखा करता है उसका मंत्र २ स्वर्ण को हटा कर पद सम्बंधी धूलि उठा कर हाथ में ले कर थाली में डालता है उसका मंत्र ३ गौ के उठाये हुए पद के स्थान पर जल डाल कर वह उठाया हुआ पद यजमान को देता है उसका मंत्र ४ थाली में स्थित उस पद को यजमान ग्रहण करता है उसका मंत्र ५ अध्वर्यु अपने हृदय को स्पर्श करता है उस का मंत्र ६ अध्वर्यु यजमान से पदलेकर पत्नी को देता है और नेष्टा पुरुष मंत्रोच्चारण कराता है उस का मंत्र ७

ओं अदित्यास्त्वेति (वत्सऋ० ब्राह्मी पंक्तिश्छंदः० आज्यं देवतं) १
ओं अस्मे रमस्वेति (तथा ० तथा ० स्थानं दे०) २
ओं अस्मे ते वंधुरिति (तथा ० तथा ० पदं दे०) ३
ओं त्वे राय इति (तथा ० तथा ० यजमानो दे०) ४
ओं मे राय इति (तथा ० तथा ० तथा ०) ५

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं मावय मिति (तथा ॰ तथा ॰ अध्वर्यु दे॰) ६
ओं तोत इति (तथा ॰ तथा ॰ पत्नी दे॰) ७

पदार्थः – हे आज्य १ अखंडित २ पृथिवी के ३ मस्तक रूप ४ देव यजन-स्थान पर ५ तुझ को ६ छोड़ता हूं हे स्थान विशेष तुम ७, ८ गोपद से अंकित होने के कारण गोपद रूप ९ हो १० घृत युक्त करने को ११ श्रेष्ठ होम हो हे गोपद तुम १२ मुझ में १३ क्रीडा करो हे सोमक्रयणी पद १४ हम १५ तेरे १६ बंधु हैं हे यजमान १७ तुझ में १८ धन वा पशु इस पद रूप से ठहरो १९ मुझ यजमान के पास २० धन वा पशु हों २१ अध्वर्यु आदि हम २२, २३ धन की पुष्टि से २४, २५ वियोग न पावें २६ पत्नी सहित जो ब्रह्मा विष्णु महेश परा रूप धारी यजमान है उस को २७ धन वा पशु प्राप्त हों। २२

अथाध्यात्मम्– हे इन्द्रिय शक्ति समूह १ अखंडिता २ मानस भूमि के ३ मस्तक रूप ४ ब्रह्म परानारायण नाम देवताओं के याग योग्य स्थान पर ५ तुझ को ६ छोड़ता हूं हे मानसालय तुम ७ जीव रूप हवि के ८ इन्द्रिय शक्ति युक्त ९ स्थान १० हो ११ गुरु उपदेश से हे आत्म प्रतिबिंब तुम १२ मुझ आत्मा में १३ रमण करो १४ तेरा १५ बंधु अर्थात् काम १६ मुझ आत्मा में है १७ तुझ में १८ जो अष्ट सिद्धि नव निधि रूप योगैश्वर्य हैं वे १९ मेरे ही २० धन हैं वाक् आदि ऋत्विज कहते हैं २१ हम २२ योग लक्ष्मी की २३ पुष्टि से २४, २५ वियोग न पावें जिस कारण २६ शक्ति सहित त्रिदेव रूप धारी योगी के ही २७ योगैश्वर्य हैं अर्थात् दूसरे के नहीं हैं॥ २२

समख्ये देव्याधियासन्दक्षिणया उरुचक्षसा।
मामायुः प्रमोषीर्मो अहन्त्वं वीरं विदेयतव
देवि सन्दृशि। २३

१ ओं। २ देव्या। ३ दक्षिणया। ४ उरुचक्षसा। ५ धिया। ६ सम्। ७ समख्ये

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मे। आयुः। मो। प्रमोषीः। तव। आयुः। अहम्। मा। उ। देवि। ते। व। सन्दृशि। वीरम्। विदेय ॥२३॥

अथाधिदेवम्- सोमक्रयणी को देखती पत्नी से अध्वर्यु कुछ कहलाता है उस का मंत्र १॥

ओंसमख्य इत्यस्य (वत्सऋ० आस्तार पंक्तिश्छं० वाग् दे०) १

पदार्थः पत्नी प्रार्थना करती है १ हे सोमक्रयणी वाग् वाहे गौ २ तुझ प्रकाशमान ३ दूसरे की इच्छानुसार वर्त्तने वाली ४ विस्तीर्ण दर्शन वाली के द्वारा ५ बुद्धि पूर्वक मैं ६ यज्ञ पुरुष विष्णु को देखती हूं तुम ८ मेरे ९ आयु को १०,११ खंडित मत करो १२ मैं १३ तुझ सोमक्रयणी की १४ आयु को १५,१६ खंडित नहीं करूं १७ हे गौ १८ तेरे १९ दर्शन होते २० पुत्र को २१ प्राप्त करूं॥२३॥

अथाध्यात्मम्- जीवात्मा यजमान की पत्नी ज्ञान स्वरूपा बुद्धि प्रार्थना करती है १ हे परा शक्ति २ तुझ ज्योति स्वरूप ३ आश्रय रूप ४ दीर्घ दर्शिनी ५ ज्ञान स्वरूपा के द्वारा मैं ६ विष्णु को ७ प्रारब्ध समाप्ति तक देखती हूं ८ मेरे ९ इन्द्रिय रूप अन्न को १०।११ खंडित मत करो १२,१३ मैं तेरे १४ जीव रूप अन्न को १५,१६ अज्ञान से खंडित नहीं करूं १७ हे परा शक्ति १८ तेरे १९ भले प्रकार दर्शन होने पर २० ब्रह्माग्नि परा शक्ति ईश्वर सहरूप ब्रह्म को २१ प्राप्त करूं॥२३॥

एषते गायत्रो भाग इति मे सोमायब्रूता देषते त्रैष्टुभो भाग इति मे सोमायब्रूता देष ते जागतो भाग इति मे सोमायब्रूताच्छन्दोनामानाꣳ साम्राज्यङ्गच्छेति मे सोमायब्रूता दास्मा को सि शुक्रस्ते ग्रह्यो विचितस्त्वा विचिन्वन्तु ॥२४॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मे। इति। सोमाय। ब्रूतात्। ते। एषः। भागः। गायत्रः। ते। एषः। भागः। त्रैष्टुभः। इति। मे। सोमाय। ब्रूतात्। एषः। ते। भागः। जागतः। इति। मे। सोमाय। ब्रूतात्। छन्दोनामानाथं। साम्राज्यम्। गच्छ। इति। मे। सोमाय। ब्रूतात्। अस्मोकः। असि। शुक्रः। ते। ग्रह्यः। विचितः। त्वा। विचिन्वन्तु॥२४॥

अथाधिदैवम्— इस कंडिका में दो मंत्र हैं अध्वर्यु सोम की ओर जाने वाले यजमान को कहलाता है उसका मंत्र १ यजमान पूर्व मुख बैठकर सोम को स्पर्श करता है उसका मंत्र २

ओं एषत इत्यस्य (वत्सऋ० ब्राह्मीजगती छंदो लिङ्गोक्त दे०) १

ओं अस्मा को सीत्यस्य (तथा० याजुषी पंक्तिश्छं० तथा) २

पदार्थः— हे अध्वर्यु १ मेरा २ यह वचन ३ सोम से ४ कहो हे सोम ५ तेरा ६ यह आगे दीखता ७ भाग ८ गायत्री सम्बंधी है अर्थात् गायत्री छन्द के लिये तेरा मोल लेना है नकि वध के लिये ९ तेरा १० यह ११ भाग १२ त्रिष्टुप् छंद सम्बंधी है १३ यह १४ मेरा अभिप्राय १५ सोम से १६ कहो १७ यह १८ तेरा १९ भाग २० जगती छंद सम्बंधी है २१ यह २२ मेरा अभिप्राय २३ सोम से २४ कहो २५ उष्णिक् आदि छंदों के २६ आधिपत्य को २७ प्राप्त करो २८ यह २९ मेरा वचन ३० सोम से ३१ कहो ९ हे सोम तुम मोल लिये हुए ३२ हमारे ३३ हो ३४ शुक्र ग्रह ३५ तुझ से ३६ ग्रहण योग्य है ३७ विवेक से चयन करने वाले ३८ तुझ को ३९ सार असार का विवेक करके सार रूप को इकट्ठा करो २४

९ जो पुरुष सोम को छन्दों का आधिपत्य दे कर मोल लेता है वह अपनों के आधिपत्य को प्राप्त करता है यह तित्तिर श्रुति का वचन है, यहां इन मंत्रों के द्वारा सोम को राज्य की प्राप्ति जतलाई गायत्री आदि छन्दों के देवता जहां रहते हैं वह छंद लोक है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाध्यात्मम्- हे मन वा हे ज्ञानचक्षु १ मेरा २ यह वचन ३ व्यष्टि
विंव से ४ कहो कि हे सोम ५ तेरा ६ यह ७ भाग ८ गायत्री सम्बंधी है ९ तेरा
यह ११ भाग १२ त्रिष्टुप छंद सम्बंधी है १३ यह १४ मेरा अभिप्राय १५ अ
प्रति विंव से १६ कहो १७ यह १८ तेरा १९ भाग २० जगती छंद सम्बंधी है
यह २२ मेरा अभिप्राय २३ प्रति विंव से २४ कहो २५ प्राणों के २६ आधि
त्य को २७ प्राप्त करो २८ यह २९ मेरा वचन ३० आत्म प्रति विंव से ३१ कहो
तुम ३२ हम योगियों के ३३ हो ३४ समष्टि प्रति विंव सूर्य ३५ तुझ से ३६
हण योग्य है अर्थात् अपनी आत्मा में युक्त करना चाहिये ३७ मन बुद्धि
आदि ३८ तुझे ३९ अन्वेषण करो ॥२४॥

अभित्यन्देव ꣳ सविता रमोएयोः कवि क्रतु मर्चा
मि सत्य सव ꣳ रत्न धा मभि प्रिय म्मति ङ्क विम् ॥
ऊर्द्ध्वा यस्या मतिर्भा अदि द्युतत्सवी मनि हिरण्यपा
णि रमि मीत सुक्रतुः कृपास्वः । प्रजाभ्य स्त्वा प्रजा
स्त्वानु प्राणन्तु प्रजा स्त्वमनु प्राणिहि ॥ २५ ॥

तम् । ओएयोः । देवम् । कविक्रतम् । सत्य सवम् । रत्नधाम् ।
अभिप्रियम् । मतिम् । कविम् । सवितारम् । अभ्यर्चामि । यस्य
अमतिः । ऊर्ध्वा । भाः । सवीमनि । अदि द्युतत् । हिरण्यपा
सुक्रतुः । कृपाः । स्वः । यं । अमि मीत । प्रजाभ्यः । त्वा । प्रजाः ।
त्वा । अनु । प्राणन्तु । त्वम् । प्रजाः । अनु । प्राणिहि ॥ २५

अथाधिदैवम् - इस कंडिका में तीन मंत्र हैं उन को कहते हैं
म बांधने के कपड़ा को दुहरा तिहरा करके उसमें १० चुकट सोम डाले
१ फिर अध्वर्यु सोम को इकट्ठा कर उष्णीष में बांधता है उस का मंत्र
ष्णीष में बंधे सोम का स्वास न रुके इस लिये छिद्र करता है उस का मंत्र

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओंअभित्यमित्यस्य (वत्सऋ० ब्राट् ब्राह्मी जगती छं० सविता दे०)१
ओंअजाभ्यस्त्वेत्यस्य (तथा ० निचृदार्षी गायत्री छं० तथा)२

पदार्थः १ उस२ पृथिवी स्वर्गके३प्रकाशक वा परात्मा ४ ब्रह्म संकल्प से प्रकट ५ सत्य प्रेरणा वाले ६ रत्नों के धारक ७ सब ओर से प्रीति के विषय ८ मनन योग्य ९ ब्रह्म स्वरूप १० सूर्य को ११ सब ओर से पूजन करता हूं१२ जिस सूर्य की १३ अनंत १४ आकाशाभि मुखी १५ दीप्ति १६आकाशअथ वाअपरा प्रकृति रूप ब्रह्मांडको१७प्रकाशित करती है १८ ज्योति रूप हाथ रखने वाले १९ साधु संकल्प २० विराट् देह और वैदिक क्रिया के रक्षक २१ सूर्य ने २२ जिस सोम का २३ परिमाण निश्चय किया है सोम २४ प्रजाओं केउपकारार्थ २५ तुझे बांधता हूं हे सोम २६ प्रजा २७, २८ तेरेअनुसार२९ स्वास लो हे सोम ३० तुम ३१,३२ प्रजा के अनु सार ३३ स्वास लोप्रजाओं का और तेरा कभी स्वास रोध मत हो इसी अभि प्राय से छिद्र का करना है॥ २५॥ **अथाध्यात्मम्**- पूर्व मंत्र से अच्छा बोधित व्यष्टि प्रति बिंब कहता है१उस२ पृथिवी स्वर्ग के ३ परात्मा ४ब्रह्म संकल्प से प्रकट ५ सत्य प्रेरणा वाले ६ रत्नों के धारक ७ सब ओर से प्रीति के विषय ८ मनन योग्य ९ ब्रह्म स्वरूप १० सूर्य को ११ सब ओर से पूजन करता हूं १२ जिस सूर्य की १३ अनंत १४ आकाशाभि मुखी १५ दीप्ति ने १६ अपरा विकार रूप ब्रह्मांड में १७ प्रकाश किया उस १८ ज्योति रूप हाथ रखने वाले १९ साधु संकल्प २० विराट देह और वैदिक क्रिया के रक्षक २१ सूर्य ने मुझ व्यष्टि प्रति बिंब को २३ निर्माण किया है समष्टि प्रति बिंब सूर्य २४ प्राणों के उपकारार्थ २५ तुम को धारण करता हूं २६ प्राण २७ तुम को २८ देख कर २९ स्वास लो ३० तुम ३१ प्राणों को ३२ देख कर ३३ स्वास लो॥ २५॥

शुक्रन्त्वा शुक्रेणाक्रीणामि चन्द्रञ्चन्द्रेणामृत

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म मृतेन। सग्मेते गोरस्मेते चन्द्राणि तपस स्तनूरसि प्रजापते र्वर्णः परमेण पशुना क्रीयसे सहस्र पोष म्पुषेयम्।२६।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
चन्द्रं। अमृतं। शुक्रं। त्वा। अमृतेन। चन्द्रेण। क्रीणामि। ते
८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६
गोः। सग्मे। ते। चन्द्राणि। अस्मे। तपसः। तनूः प्रजापतेः।
१७ १८ १९ २० २१ २२ २३
वर्णः। असि। परमेण। पशुना। क्रीयसे। सहस्र पोषं। पुषेयं॥२६ अथवा प्रजापतेः। तपसः। तनूः। वर्णः। असि॥
१४ १५ १६ १७ १८

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में चार मंत्र हैं उन को कहते हैं- यजमान सुवर्ण का स्पर्श करा कर मंत्रोच्चारण कराता है वह मंत्र १ सोम बेचने वाले को सुवर्ण से कंपित करता है उस का मंत्र २ यजमान प्रति अर्पित जो गो द्रव्य है यजमान सहित उस को फिर सोम बेचने वाले के आगे रखता है उस का मंत्र ३ पश्चिम मुखी अजा को स्पर्श कर कहता है उस का मंत्र ४

ओं शुक्रं त्व इत्यस्य (वत्स ऋ० भुरिग्ब्राह्मी पंक्ति श्छं० सोमो दे०) १
ओं सग्मेत इत्यस्य (या ० तथा ० लिङ्गोक्त दे०) २
ओं अस्मेत इत्यस्य (तथा ० तथा ० तथा ०) ३
ओं तपस्तनुरित्यस्य (तथा ० तथा ० अजा दे०) ४

पदार्थः – हे सोम १ फल का हेतु होने से आल्हाद करने वाले २ देव भाव देने से अमृत की समान ३ दीप्ति मान ४ तुम को ५ जीवन के उपाय ६ सुवर्ण से ७ मोल लेता हूं हे सोम बेचने वाले ८ तेरी ९ गो १० गोपति यजमान के पास ठहरो अर्थात् सुवर्ण तेरा और गो यजमान की हो ११ तुम को दिये हुए १२ सुवर्ण १३ हमारे पास लौट कर ठहरो अर्थात् गो ही सोम का मूल्य होनकि सुवर्ण हे अजा तुम १४ पुन्य का १५ शरीर १६ प्रजापति की १७ देह १८ हो इस प्रकार अजा को कह कर सोम से कहते हैं हे सोम तुम १९ इस

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजा रूप उत्तम २० पशु के वदले २१ मोल लिये जाते हौ आप की कृपा से २२ जिस प्रकार पुत्र पशु आदि सहस्रों का पालन हो उसी प्रकार २३ धन आदि से पुष्ट होऊं अथवा यह अर्थ है, हे अजा तू १४ प्रजा पति के १५ तप का १६ रूप है क्योंकि उसी से उत्पन्न है और १७ प्रजा पति का वर्ण १८ है क्योंकि तीन गुण के कारण प्रजा पति के तीन रूप हैं और अजा भी प्रति वर्ष तीन वार जनती है॥ २६॥

अथाध्यात्मम् – हे समष्टि प्रति विंव १ तुझ दीप्ति मान २ नाश रहित ३ सूर्य रूप ४ को ५ नाश रहित ६ मानस सूर्य के वदले ७ मोल लेता हूं, हे भर्ग ब्रह्म ८ तेरा ९ ब्रह्मा विष्णु महेश रूप आत्मा १० यज मान में ठहरो ११ तुझ को दीहुई १२ जीवात्म सहित इन्द्रियां १३ मुझ व्यष्टि प्रति विंव में लौ टकर आरब्ध समाप्ति तक ठहरो हे प्रकृति तुम १४ ब्रह्मा विष्णु महेश शक्ति नाम चार रूप वाले प्रजा पति की १६ देह और १७ रूप १८ हौ हे सूर्य तुम १९ उत्तम २० पशु मानस सूर्य नाम के वदले २१ मोल लिये जाते हौ आप की कृपा से २२ ब्रह्म ज्योति दाता योग पुष्टि को २३ वढ़ाऊं॥ २६॥

मित्रो न एहि सुमित्रधा इन्द्रस्योरुमाविशदक्षिणामुशन्नुशन्तꣳ स्योनः स्योनम्। स्वान भ्राजाङ्गारेवम्भारे हस्त सुहस्त कृशानावेतेवः सोमक्रयणास्तान्रक्षध्वम्मा वोदभन्॥ २७॥

मित्रः। सुमित्रधाः। नः। एहि। उशन्। स्योनः। इन्द्रस्य। उशन्तम्। स्योनम्। दक्षिणाम्। ऊरुम्। आविशः। स्वान। भ्राजा। अङ्गारे। वम्भारे। हस्त। सुहस्त। कृशानो। वः। एते। सोमक्रयणाः। तान्। रक्षध्वम्। वः। मा। दभन्॥ २७॥

अथाधिदेवम् – इस कंडिका में तीन मंत्र हैं उन को कहते हैं, वा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में हाथ से अजा को देता सोम को ग्रहण करता है उस का मंत्र १ फिर अध्वर्यु वस्त्र पर सोम को स्थापन कर उस वस्त्र बद्ध सोम को यजमान के दक्षिण ऊरु पर रखता है उसका मंत्र २ सोम बेचने वाले को देखता यजमान जप करता है और गौ आदि सोम के मूल्य को सोम विक्रयी के आधि देवता भूत गन्धर्वों के निवेदन करता है उस का मंत्र ३

ओं मित्रोनइत्यस्य (वत्सऋ० भुरिग्ब्राह्मी पंक्तिश्छं० सोमः सोमरक्षकाश्च देव)१३

पदार्थः – हे सोम १ सखा प्रीति युक्त २ मित्रों के पोषक तुम ३ हमारे पास ४ आओ ५ ऊरु को चाहते ६ सुख रूप तुम ७ यजमान की सोमेच्छु ८ वा प्रिय ९ वेठक में सुखदाता १० दाहिनी ११ ऊरू पर १२ बैठो हे १३ स्वान १४ भ्राज १५ अङ्गारि १६ वम्भारि १७ हस्त १८ सुहस्तु १९ कृशानु नाम सोम रक्षक देव विशेषो २० तुम्हारे २१ ये २२ सुवर्ण आदि सोम के मूल्य पदार्थ आगे स्थापित हैं २३ उन पदार्थों को २४ रक्षा करो २५ तुम को २६,२७ शत्रु पीड़ा मत दो॥ २७॥

अथाध्यात्मम् – हे समष्टि प्रति विंब १ सूर्य रूप २ और भक्तों के पोषक तुम ३ हमारे पास ४ आओ ५ अपने अंश रूप व्यष्टि प्रति विंब को चाहने वाले वा प्रिय ६ आनंद स्वरूप तुम ७ यजमान के ८,९ आनंद रूप तेरे चाहने वाले वा प्रिय १० पर छन्दानुवर्त्ती ११ मन हृदय भ्रकुटि में ब्रह्मा विष्णु महेश रूप धारी जीवात्मा में १२ प्रवेश करो १३ हे आकाश वा दिशा १४ हे प्रकाश मान परा ज्योति १५ हे पाप नाशक भर्गाख्य ज्योति १६ हे विश्व पोषक वायु १७ हे हृष्ट रूप चन्द्रमा १८ हे समुद्र १९ हे अग्नि २० तुम्हारे २१ ये श्रोत्र, बुद्धि, वृत्ति, जीवात्मा, प्राण, मन, जिव्हा वाणी रूप पदार्थ २२ सोम के मूल्य हैं २३ उन अपने अंश रूपों को २४ रक्षा करो कामादि २५ तुम रक्षकों को २६ मत पीड़ा दो॥ २७॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परि माग्ने दुश्चरिताद्बाधस्वा मा सुचरिते भज।
उदायुषा स्वायुषोदस्थाम मृता २॥ऽअनु २८॥

अग्ने। दुश्चरितात्। मा। परिबाधस्व। सुचरिते। मा। आभज। उदायुषा। स्वायुषा। अमृतान्। अनु। उद स्थाम॥२८॥

अथाधिदैवम्— इस कंडिका में दो मंत्र हैं, सोम ग्रहण करने वाले यजमान को उच्चारण करता है उसका मंत्र १ यजमान ऊरु के ऊपर से सोम को हाथ से लेकर उठता है उस का मंत्र २

ओं परि माग्न इत्यस्य (वत्स ऋ० - साम्नी बृहती छं० अग्निर्दे०) १
ओं उदायुष इत्यस्य (तथा ० साम्नी उष्णिक छं० तथा ०) २

पदार्थः १ हे अग्नि २ पाप से ३ मुझ को ४ चारों ओर से निवारण करो अर्थात् पाप में मेरी प्रवृत्ति न हो ५ सदाचार रूप शुभ पुन्य रूप कर्म में ६ मुझ यजमान को ७ स्थापन करो ८ चिर जीवन रूप उत्कृष्ट आयु तथा ९ यागदानादि कर्मयुक्त आयु के द्वारा १० सोम आदि देवताओं को ११ लेकर १२ मैं उठा हूं॥२८॥

अथाध्यात्मम्— १ हे ब्रह्माग्नि २ विषयों की आसक्ति से ३ मुझ को ४ निवारण करो ५ योग के अनुष्ठान में ६ मुझ को ७ स्थापन करो ८,९ प्राण और मानस सूर्य सम्बंधी आयु के कारण १० ब्रह्म परा नारायण नाम देवताओं को ११ अनु लक्ष करके १२ समाधि से उठा हूं॥२८॥

प्रति पन्थाम पद्महि स्वस्ति गामनेहसम्। येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु॥२९॥

स्वस्ति गाम। अनेहसम्। पन्थाम। प्रत्य पद्महि। येन। विश्वाः। द्विषः। परि वृणक्ति। वसु। विन्दते॥२९

अथाधिदैवम्— अपने शिर पर सोम को रख कर और शिर पर-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथ रख कर शकट की ओर जाता है उस का मंत्र-१

ओंप्रति पंथामित्यस्य (वत्स ऋ० निचृदार्ष्यनुष्टुप् छं० पथो दे०) १

पदार्थः १ क्षेम से गमन योग्य २ पाप रूप चौर आदि की बाधा से रहित पथिक जनों के सुख देने वाले ३ मार्ग को ४ हम प्राप्त होवें ५ जिस मार्ग के द्वारा ६ सब ७ द्वेषी चौर आदि को ८ चारों ओर से दूर करता है ९ और धन को १० प्राप्त करता है॥ २९॥

अथाध्यात्मम्- १ मोक्ष के लिये गमन योग्य २ पाप रहित ३ मोक्ष मार्ग को ४ हम प्राप्त करें ५ जिस मोक्ष मार्ग के द्वारा ६ सब ७ कामादि शत्रुओं को ८ चारों ओर से निवारण करता है ९ और मोक्ष लक्ष्मी को १० प्राप्त करता है

अदित्यास्त्वगस्यदित्यै सदआसीद। अस्तभ्नाद्
द्यां वृषभो अन्तरिक्षममीमीत वरिमाणं पृथिव्याः
आसीद्विश्वा भुवनानि सम्राड्विश्वेत्तानि वरुणस्य व्रतानि॥ ३०॥

१ २ ३ ६ ७ ८
अदित्याः। त्वक्। असि। ए। अदित्याः। सदः। आसीद। वृषभः।
९ १० ११ १२ १३ १४
द्याम्। अन्तरिक्षम्। अस्तभ्नात्। पृथिव्याः। वरिमाणम्। अमिमीत।
१५ १६ १७ १८ १९ २०
सम्राट्। विश्वाः। भुवनानि। आसीदत्। विश्वाः। इत्।
२१ २२
वरुणस्य। व्रतानि॥ ३०॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में तीन मंत्र हैं उन को कहते हैं, शकट के पश्चात् भाग में मृग चर्म को बिछाता है उसका मंत्र १ उस बिछे मृग चर्म पर अध्वर्यु सोम को स्थापन करता है उस का मंत्र २ यजमान को सोम का स्पर्श करा के कहलाता है उस का मंत्र ३

ओंअदित्यास्त्वगित्यस्य (वत्स ऋ० स्वराड् याजुषी त्रिष्टुप् छं० कृष्णाजिनो दे०) १

ओंअदित्यै सदित्यस्य (तथा० विराडार्षी त्रिष्टुप् छं० सोमो दे०) २

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ॐअस्तभ्नादद्यामित्यस्य (तथा० तथा० वर्णो दे०)३

पदार्थः – हे कृष्णाजिन तुम १ पृथिवी के २ त्वचा रूप ३ हो ४ हे सोम तुम ५ भूमि सम्बंधी ६ स्थान में ७ बैठो ८ ब्रह्म ने ९ स्वर्ग १० और अन्तरिक्ष को ११ स्तम्भित किया १२ पृथिवी के १३ उरुत्व को १४ निर्म्माण किया १५ विष्णु रूप हो कर १६ सब १७ भुवनों में १८ प्रवेश हुआ १९,२० सबही २१ विष्णु के २२ कर्म हैं ३०॥ **अथाध्यात्मम्** – हे हृदय वा हे मन तुम १ परा प्रकृति के २ आवरण ३ हो ४ हे सूर्य तुम ५ परा प्रकृति के ६ स्थान हृदय में ७ ठहरो ८ आप के आत्मा भर्ग ने ९ भृकुटि १० और हृदय को ११ स्तम्भित किया १२ मानस कमल के १३ उरुत्व को १४ निर्म्माण किया १५ तथा विष्णु रूप धारी भर्ग १६ सब १७ कमलों पर १८ विराजमान हुआ १९,२० सबही २१ भर्ग के २२ कर्म हैं ॥३०॥

वनेषु व्यन्तरिक्षन्ततान वाजमर्व्वत्सु पयऽउस्रियासु। हृत्सु क्रतुं वरुणो विक्ष्वग्निन्दिवि सूर्य्यमदधात्सोममद्रौ ३१

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
वरुणः। वनेषु। अन्तरिक्षम्। विततान। अर्वत्सु। वाजम्। उस्रियासु। पयः। हृत्सु। क्रतुम्। विक्षु। अग्निम्। दिवि। सूर्यम्। अद्रौ। सोमम्॥३१॥

अथाधिदैवम् – सोम बांधने का जो कपड़ा है उस से सोम को सब ओर से लपेट कर जप करता है उसका मंत्र॥

ॐवनेष्वित्यस्य (वत्स ऋ० विराडार्षी त्रिष्टुप् छं० वरुणो दे०)१

पदार्थः १ विष्णु ने २ वनगत वृक्षों के अग्र में ३ आकाश को ४ विस्तृत किया ५ पुरुषों में ६ वीर्य को ७ गौओं में ८ दुग्ध को ९ हृदयों में १० संकल्पात्मक मन को ११ प्रजाओं में १२ जाठराग्नि को १३ स्वर्ग में १४ सूर्य को १५ पर्वत में १६ वल्ली रूप सोम को स्थापित किया ॥ ३१॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाध्यात्मम्- १ महानारायण ने २ जल परिणाम शरीरों में ३ इंद्रिय मध्यगत आकाश को ४ विस्तृत किया ५ जीवात्माओं में ६ योग बल को ७ आत्मा की किरणों में ८ प्राण को ९ हृदयों में १० प्रज्ञा शक्ति को ११ प्राणों में १२ आत्माग्नि को १३ भृकुटि में १४ शिवरूप आत्मा १५ गगन मंडल के मेघ में १६ अमृत को स्थापन किया ॥ ३१॥

सूर्यस्य चक्षुरारोहाग्नेरक्षणः कनीनकम्।
यत्रैतशोभिरीयसे भ्राजमानो विपश्चिता ॥३२॥

सूर्यस्य। चक्षुः। अग्नेः। अक्ष्णः। कनीनकं। आरोह। यत्र। विपश्चिता। भ्राजमानः। एतशोभिः। ईयसे॥ ३२॥

अथाधिदैवम्- आसन के लिये जो दो मृग चर्म हैं उनमें से एक को शकट के पूर्वभाग में युग के समीप ऊंचे दंड में लगाता है यदि आसन के लिये एक ही मृग चर्म हो तो उस की ग्रीवा को कंठ प्रदेश में काट कर शकट के पूर्वभाग में लगाता है उसका मंत्र १

ओं सूर्यस्येत्यस्य (वत्सऋ० निचृदार्ष्यनुष्टुप छं० कृष्णाजिनो दे०) १

पदार्थः हे कृष्णाजिन तुम १ सूर्य के २ नेत्र ३ और अग्नि के ४ नेत्र के ५ तारे पर ६ आरोहण करो ७ जहां इन दोनों के दर्शन में ८ सर्वज्ञ सूर्य और अग्नि से ९ दीप्यमान होता १० घोड़ों की सवारी से ११ चलता है। तात्पर्य यह कि सूर्य और अग्नि की दृष्टि का विषय होने से मार्ग राक्षसों की बाधा से रहित होता है यह तित्तिरि श्रुति का वचन है॥ ३२॥

अथाध्यात्मम्- हे हृदय तुम १ ईश्वर के २ नेत्र और ३ ब्रह्माग्नि के ४ नेत्र की ५ पुतली का ६ दृष्टि गोचर हो ७ जहां इन दोनों के दर्शन में ८ ज्ञानी योगी से ९ दीप्यमान होता १० इन्द्रियों के साथ ११ ब्रह्म में प्राप्त होता है॥ ३२॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस्रावेतन्धूर्षाहौ युज्येथामनश्रू अवीरहणौ ब्रह्मचोदनौ। स्वस्ति यजमानस्य गृहान् गच्छतम् ॥३३॥

उस्रौ। धूर्षाहौ। अनश्रू। अवीरहणौ। ब्रह्मचोदनौ। एतम्। युज्येथाम्। स्वस्ति। यजमानस्य। गृहान्। गच्छतम् ॥३३॥ अथाधिदैवम्- बैलों को शकट में जोड़ता है उसका मंत्र ओं उस्रावेतमित्यस्य (वत्स ऋ० ऊर्ध्व वृहती छं० अनड्वाहौ दे०) १

पदार्थः १ हे बैलो २ शकट धुर के धारण करने में समर्थ ३ उत्साह वान ४ सींगों से बालकों के न मारने वाले ५ ब्राह्मणों को यज्ञ में प्रेरणा करने वाले तुम दोनों ६ इस शकट में ७ युक्त हूजियै ८ और क्षेम पूर्वक ९ यजमान के १० गृहों को ११ जाओ ३३॥

अथाध्यात्मम्- १ हे व्यष्टि समष्टि सूर्य २ योग रथ की धुरी के धारण करने में समर्थ ३ उत्साह वान बाधा रहित ४ पाप न करने वाले ५ महा वाक से प्रेरित तुम दोनों ६ इस योग रथ में ७ युक्त हूजियै ८ और कल्याण पूर्वक ९ यजमान के १० गृहों अर्थात् भृकुटि आदि कमलों में ११ जाओ ॥३३॥

भद्रो मेसि प्रच्यवस्व भुवस्पते विश्वान्यभिधामानि मात्वा परि परिणो विदन्मात्वा परि पन्थिनो विदन्मात्वा वृका अघायवो विदन्श्येनो भूत्वा परापत यजमानस्य गृहान् गच्छतन्नौ सꣳस्कृतम् ॥३४॥

मे। भद्रः। असि। भुवःपते। विश्वानि। धामानि। अभि। प्रच्यवस्व। त्वा। परि परिणः। मा। विदन्। परि पन्थिनः। त्वा। मा। विदन्। अघायवः। वृकाः। त्वा। मा। विदन्। श्येनः।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूत्वा। परापत। यजमानस्य। गृहान्। गच्छ। तत्। नौ। सं स्कृतम्॥ ३४॥

अथाधिदैवम्– सोम लेकर शाला में जाने वाले यजमान को अध्वर्यु कहलाता है उसका मंत्र,

ओंभद्रो मे सीत्यस्य (वत्स ऋ० भुरि गार्षी गायत्र्यादि छन्दो० सोमो दे०) १

पदार्थः– हे सोम तुम १ मुझ यजमान के उपकारार्थ २ कल्याण रूप ३ हो ४ हे यजमान अध्वर्यु आदि के पालक सोम तुम ५ सब ६ स्थानों पत्नी शाला हविर्धान आदि को ७ देखकर ८ चलो ९ तुझ को १० सब ओर घूमने वाले चोर विशेष ११,१२ मत जानो १३ याग के प्रतिषेधक शत्रु १४ तुम को १५,१६ मत जानो १७ दूसरे का अपराध करने वाले १८ विकर्तन शील (काटने वाले) वन के पशु वा दुर्जन १९ तुझे २०,२१ मत जानो २२ मध्य स्थान देवता २३ होकर २४ सन्मुख चलो २५ यजमान के २६ गृहों को २७ जाओ २८ वह यज्ञ का स्थान २९ हम तुम दोनों के लिये ३० सब उपकरण से संयुक्त है॥ ३४॥

अथाध्यात्मम्– हे सूर्य तुम १ मेरे २ शिव रूप आत्मा ३ हो ४ हार्दान्तरिक्ष पालक ५ सब ६ कमलों को ७ देखते ८ गमन करो ९ तुम को १० काम आदि ११,१२ मत जानो १३ क्रोध आदि १४ तुम को १५,१६ मत जानो १७ दूसरे का अपराध करने के इच्छा मान १८ विषय भोग १९ तुझे २०।२१ मत जानो २२ मध्य स्थान का देवता २३ होकर २४ ऊर्ध्व गमन कर २५ भूतात्मा के २६ गृहों अर्थात् भृकुटि आदि कमलों को २७ जाओ २८ वह ब्रह्मपुर २९ हम तुम दोनों जीव ईश के लिये ३० वेद के मंत्रों से संस्कार किया गया है॥ ३४॥

नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृतꣳ सपर्यत। दूरे दृशे देवजाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्याय शꣳसत ३५

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मित्रस्य। वरुणस्य। चक्षसे। महोदेवाय। दूरेदृशे। देवजाताय। केतवे। दिवः पुत्राय। सूर्याय। नमः। तत्। ऋतम्। सपर्यत। शंसत॥ ३५॥

अथाधिदेवम्- शाला के पूर्व में प्रतिप्रस्थाता कृष्णसारंग पशु को अथवा उसके नभिलने में लोहित सारंग पशु को लेकर स्थित होता है उसका मंत्र १ ओंनमइत्यस्य (वत्स ऋ० निचृदार्षीजगती छं० सूर्यो दे०) १

पदार्थः- इस मंत्र में सूर्यरूप से सोम की स्तुति करते हैं, १ प्राण के २ और जीवात्मा के ३ द्रष्टा ४ ज्योतिस्वरूप ५ दूरदर्शी ६ ब्रह्म से प्रादुर्भूत ७ प्रज्ञारूप ८ स्वर्ग के पराब्रह्म विष्णु महेश रूप ९ सूर्य के अर्थ १० नमस्कार ११ उस १२ सत्य ब्रह्म की १३ सेवा करो १४ तथा स्तुति करो॥ ३५॥

वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद॥ ३६॥

वरुणस्य। उत्तम्भनम्। असि। वरुणस्य। स्कम्भसर्जनी। स्थ। वरुणस्य। ऋतसदनी। असि। वरुणस्य। ऋतसदनम्। असि। वरुणस्य। ऋतसदनम्। आसीद॥ ३६॥

अथाधिदेवम्- इस कंडिका में ५ मंत्र हैं उनको कहते हैं शाला के समीप शकट को पूर्वमुख वा उत्तरमुख खड़ा करके तिपाये से बांधता है उसका मंत्र १ शकट को तिपाये पर स्थापन करके दोनों शम्या ऊपर को निकालता है उसका मंत्र २ अध्वर्यु आदि चारों ऋत्विज गूलर की लकड़ी से बनी हुई नाभि प्रमाण वाले पायों से युक्त अरत्नि मात्र अंगों से युक्त मूंज की रस्सी से बुनी हुई मञ्चिका को सोम रखने के लिये शकट के समीप लाते हैं और अध्वर्यु हाथ से स्पर्श करता है उसका मंत्र ३ मृगचर्म को इस मञ्चिका पर बिछाता है उ-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सका मंत्र ४ तिसआसंदी पर विछेहुए मृगचर्म पर वस्त्र वद्ध सोम को स्थापन करता है उसका मंत्र ५॥

ओं वरुणास्येत्यस्य (वत्सऋ० विराड् ब्राह्मी बृहती छं० वरुणो दे०) १ से ५ तक

पदार्थः हे काष्ठाभिमानी देवता तू १ शकट रूप देहस्थ सोम का २ उत्तम्भन ३ है हे दोनों शम्या ओ तुम ४ पूर्वोक्त सोम की ५ रोकने वाली ६ हौ हे आसंदी तुम ७ सोम सम्बंधी ८ यज्ञ सिद्धि के लिये आसन रूप ९ हौ हे मृगचर्म तुम १० सोम के ११ यज्ञ सम्बंधी आसन रूप १२ हौ हे सोम तुम १३ अपने १४ यज्ञ सम्बंधी आसन आसंदी स्थ मृगचर्म पर १५ सुख पूर्वक बैठो॥ ३६॥

अथाध्यात्मम्- हे मन तुम १ सूर्य के २ उत्तम्भन ३ हौ हे प्राण अपान तुम दोनों ४ सूर्य का ५ निरोध करने वाले ६ हौ हे ब्रह्म राष्ट्र शरीर तुम ७ सूर्य के ८ योग यज्ञ सम्बंधी आसन ९ हौ हे हृदय तुम १० सूर्य के ११ यज्ञार्थ आसन १२ हौ हे सूर्य तुम १६ व्यष्टि सूर्य जीवात्मा के १४ योग यज्ञ सम्बंधी आसन हृदय में १५ विराजमान हूजियै॥ ३६॥

यातेधामानिहविषायजन्तिताते विश्वापरिभूरस्तुयज्ञम्। गयस्फानःप्रतरणःसुवीरोवीरहाप्रचरासोमदुर्यान्॥ ३७

सोम। ते। या। धामानि। हविषा। यज्ञं। यजन्ति। ते। ता। विश्वा। परिभूः। अस्तु। गयस्फानः। प्रतरणः। सुवीरः। अवीरहा। दुर्यान्। प्रचर॥ ३७॥

अथाधिदैवम्- सोम के प्रविष्ट होने पर अध्वर्यु यजमान को कहलाता है उसका मंत्र १

ओं यातइत्यस्य (गोतमऋ० निचृदार्षीत्रिष्टुप् छं० सोमो दे०) १

पदार्थः- हे सोम २ तेरे ३ जिन ४ स्थानों प्रातः सवन आदि को पाकर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेरे रसरूप हवि से ६ यज्ञपुरुष को ७ ग्रोस्थ उर्वश्यस्यायुरसि पुरू
आप ११, १२ सब ओर से प्राप्त हूजिये १ छन्दसा मंथामि त्रैष्टुभेन
प्राप्त कराने वाले १५ हम ऋत्विजों अथवा तेन त्वा छन्दसा मंथामि २
उक्त वीरों के रक्षक तुम १७ यज्ञ गृहों को स्थः। उर्वशी। असि। आयुः। अ
अथाध्यात्मम्— १ हे सूर्य २ तेरे ३ जो न्दसा। त्वा। मन्थामि। त्रैष्टु
पने आत्मा रूप हवि से ६ महानारायण को ७ गतेन। छन्दसा। त्वा। मंथा
जों को ११, १२ आप प्राप्त हूजिये १३ दृष्टि देह
आपत्ति निवारक १५ पराब्रह्म विष्णु महेश आत्मा से व्यतिरिक्त माया कल्पित संसार के नाशक तुम को १८ प्राप्त कीजिये ॥ ३७ ॥

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु कृते शुक्लयजुर्वेदीय ब्रह्मभाष्ये शालागमाद्वाध्यात्मसंस्कारनाडीमहिमावर्णनपूर्वकं व्यष्टिपर्णेन सूर्यरूपसोमक्रयकथनं नाम चतुर्थोध्यायः

चौथे अध्याय में ऋत्विज सहित यजमान के शाला प्रवेश से लेके सोम के शाला प्रवेश तक मंत्र कहे अब पांचवां अध्याय जिस की आदि व्यष्टि के मध्य हविर्ग्रहण आदि के मंत्र कहे जाते हैं ॥

हरिः ओं— अग्नेस्तनूरसि विष्णवे त्वा सोमस्य तनूरसि विष्णवे त्वातिथेरातिथ्यमसि विष्णवे त्वाश्वेनाय त्वा सोमभृते विष्णवे त्वाग्नये त्वा राय स्पोषदे विष्णवे त्वा १

अग्नेः। तनूः। असि। विष्णवे। त्वा। सोमस्य। तनूः। असि। त्वा विष्णवे। अतिथेः। आतिथ्यम्। असि। त्वा। विष्णवे। सोमभृ-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकामंत्र ४ तिसआसंदीपरविछेहुए मृगचर्मनये। त्वा। त्वा। रायस्पोषे
ता है उसका मंत्र ५॥

ओंवरुणस्येत्यस्य वत्सऋ० विराड्ब्राह्मंत्र,

पदार्थः हे काष्ठाभिमानी देवता तू १ विराड्ब्राह्मी बृहती छं० विष्णुर्दे० १
३ है हे दोनों शम्या ओ तुम ४ पूर्वोक्त शरीर ३ हो क्योंकि उसको तृप्त करते
७ सोमसम्बंधी ८ यज्ञसिद्धि के लिये ग्रहण करता हूं ९ ६ तुम सोम देवता का
के ११ यज्ञ सम्बंधी आसन रूप १२ विष्णु के अर्थ ग्रहण करता हूं ११ अतिथि सोमदे
नआसंदी स्थ भ्रगचर्मपर १५ रूप १३ हो १४ उस तुझको १५ विष्णु के अर्थ

अथाध्यात्मम्- तं सोम लाने वाले १७ श्येन रूपधारी गायत्री के अधि
तुम दोनों ४ सूर्य का ८ तुझे ग्रहण करता हूं १९ उस तुझको २० विष्णु के अर्थ
के ८ योग यज्ञ स अग्नि के अर्थ २२ तुझे ग्रहण करता हूं २३ उस तुझको २४
सन १२ हो हे २५ विष्णु के लिये ही ग्रहण करता हूं ॥ १॥

नहृदय में १ **अथ**- हे व्यष्टि प्रतिबिंब तुम १ आत्माग्नि के २ शरीर ३ हो ४ उ
या विष्णु के अर्थ ग्रहण करता हूं तथा ६ समष्टि प्रतिबिंब सूर्य के ७ श
रू उस तुझको १० विष्णु के अर्थ ग्रहण करता हूं ११ अतिथि रूप सूर्य के
१३ हो १४ उस तुझको १५ विष्णु के लिये ग्रहण करता हूं १६ स्वर्गि
स्मे लाने वाले १७ गायत्री के अधिष्ठाता देवता के लिये १८ तुझे ग्रहण करता
हूं १९ उस तुझको २० विष्णु के लिये ही ग्रहण करता हूं २१ ब्रह्माग्नि के लिये
२२ तुझे ग्रहण करता हूं २३ उस तुझको २४ योगैश्वर्यदाता २५ विष्णु के लि
ये ही ग्रहण करता हूं॥ १॥

९ श्रुति में लिखा है कि जो यज्ञ के अर्थ ग्रहण करता है वह विष्णु के लिये ही ग्रह
करता है और गीता में भी भगवद्वाक्य है, कि मैं ही सब यज्ञों का भोक्ता और प्रभु हूं, त
झको तत्व पूर्वक नहीं जानते हैं इस कारण च्युत होते हैं॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्नेर्जनित्रमसि वृषणौस्थ उर्वश्यस्यायुरसि पुरूरवोऽसि। गायत्रेणत्वा छन्दसा मन्थामि त्रैष्टुभेन त्वा छन्दसा मन्थामि जागतेन त्वा छन्दसा मन्थामि २

अग्नेः। जनित्रम्। असि। वृषणौ। स्थः। उर्वशी। असि। आयुः। असि। पुरूरवाः। असि। गायत्रेण। छन्दसा। त्वा। मन्थामि। त्रैष्टुभेन। छन्दसा। त्वा। मन्थामि। जागतेन। छन्दसा। त्वा। मन्थामि। २॥

अथाधिदेवम्— इस कंडिका में ८ मंत्र हैं उनको कहते हैं यज्ञ सम्बंधी वृक्ष की शकल को लेकर वेदी पर उत्तराग्र रखता है उसका मंत्र १ उस शकल पर कुशतरुण को पूर्वाग्र रखता है उसका मंत्र २ कुशतरुण के ऊपर नीचे के अरणि काष्ठ को उत्तराग्र रखता है उसका मंत्र ३ उत्तरारणि से आज्य स्थालीगत आज्य को स्पर्श कर उस उत्तरारणि को अधरारणि के ऊपर रखता है उसका मंत्र ४ अधरारणि के सन्मुख उत्तरारणि को रखता है उसका मंत्र ५ तीन मंत्र से दोनों अरणि का मन्थन करता है उसका मंत्र ६,७,८,

ओं अग्नेर्जनित्रमित्यस्य (गोतम ऋषिः आर्षी गायत्री छं० शकलादि दे०) १ से ५ तक

ओं गायत्रेत्युत्तरस्य (तथा० आर्षी त्रिष्टुप् छं० अग्निर्दे०) ६,७,८

पदार्थः— हे शकल तुम १ अग्नि के २ आदुर्भाव स्थान ३ हो हे दर्भ तुम ४ सींचने वाली अर्थात् अरणि काष्ठों में अग्नि जनन सामर्थ्य को देने वाली ५ हो हे नीचे के अरणि काष्ठ तुम ६ बहुभोक्त्री स्त्री रूप ७ हो हे स्थालीगत आज्य तुम ८ दोनों अरणि से आदुर्भूत अग्नि के अन्न ९ हो हे ऊपर के अरणि काष्ठ तुम १० वेद पाठ आदि बहुत शब्द करने वाले पति रूप ११ हो हे अग्नि १२,१३ गायत्री छन्दोभिमानी देवता के द्वारा मैं १४ तुझ को १५ अरणि मंथन से प्रकट करता हूं १६,१७ त्रिष्टुप् छन्दाभिमानी देवता के द्वारा मैं १८ तुझे १९ प्रकट करता हूं २०,२१ जगती छन्दाभिमानी देवता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के द्वारा मैं २२ तुझे २३ प्रकट करता हूं॥२॥

अथाध्यात्मम्- हे मन तुम १ ब्रह्माग्नि के २ प्रादुर्भाव स्थान ३ हौ हे प्राण उदान तुम दोनों ४ सींचने वाले अर्थात् शुद्ध करने वाले ५ हौ हे जीवात्म तुम ६ वहु भोक्ता परा शक्ति रूप ७ हौ हे इन्द्रिय शक्ति समूह तुम ८ अन्न रूप ९ हौ हे प्रणव तुम १० वहुत शब्द करने वाले वेदों के वीज ११ हौ ९ हे ब्रह्माग्नि १२,१३ प्राण के द्वारा १४ तुझे १५ प्रकट करता हूं १६,१७ उदान के द्वारा १८ तुझे १९ प्रकट करता हूं २०,२१ अपान के द्वारा २२ तुझे २३ प्रकट करता हूं॥२॥

भवतन्नः समनसौ सचेतसावरेपसौ। मा यज्ञꣳ हिꣳसिष्टम्मा यज्ञपतिञ्जातवेदसौ शिवौ भवतमद्यनः ३

जातवेदसौ। नः। समनसौ। सचेतसौ। अरेपसौ। भवतम्। यज्ञꣳ। मा। हिंसिष्टꣳ। यज्ञपतिꣳ। मा। अद्य। नः। शिवौ। भवतम्॥३॥

अथाधिदैवम्- मथन से प्रादुर्भूत अग्नि को आहवनीय में डालता है उसका मंत्र॥१

ओंभवतन्नइत्यस्य (गोतमऋ० आर्षी पंक्तिश्छं० निर्मथ्याहवनीयावग्नी दे०)१

पदार्थः-१ हे निर्मथ्याग्नि और आहवनीय याग्नि तुम दोनों २ हमारे अनुग्रह के लिये ३ एकाग्र मन ४ समान चित्त ५ प्रमाद द्वारा हम से पाप होने पर भी कोपन करने वाले ६ हूजियै ७ हमारे यज्ञ अर्थात् कर्म अनुष्ठान को ८,९ मत विनाशियै १० यजमान को ११ पीड़ा न दीजियै १२ अव अर्थात् अनुष्ठान के दिन १३ हमारे लिये १४ शांत रूप कल्याण कारक १५ हूजियै॥३॥

अथाध्यात्मम्- वाक आदि ऋत्विज कहते हैं १ हे सर्वज्ञ ब्रह्मदेव तुम २ हमारे लिये साधन अवस्था में ३ विष्णु शिव गणेश भगवती सूर्य पंचदेव

९ स्मृति में लिखा है, आत्मा को नीचे की अरणि और प्रणव को ऊपर की अरणि करके ब्रह्मज्योति को प्रकट करै॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूपधारीतथाज्ञानअवस्थामें ४ब्रह्मपराविष्णुमहाविष्णुव्यष्टिसमष्टिप्रतिबिंबरूपधारीत थासिद्धअवस्थामें ५प्रकृतिआकाशअग्निवायुपृथिवीजलअहङ्कारमहत् सेरहित ६हूजियै ७योगयज्ञको ८,९नष्टनकीजियै १० ११जीवात्माकोसं सारबंधनसेपीडितनकीजियै १२अवअर्थात्इसीजन्ममें १३हमारेलिये १४ आनंदस्वरूप १५हूजियै॥३॥

अग्नावग्निश्चरति प्रविष्ट ऋषीणां पुत्रोऽभि शस्ति पावा। स नः स्योनः सुयजा यजेह देवेभ्यो हव्यꣳ सदमप्रयुच्छन्त्स्वाहा॥४॥

ऋषीणां। पुत्रः। वा। अभिशस्तिपाः। अग्निः। अग्नौ। प्रविष्टः चरति। सानः। स्योनः। सदम्। अप्रयुच्छन्। इह। सुयजा। देवेभ्यः। हव्यꣳ। यज। स्वाहा॥४॥

अथाधिदेवम्— स्थालीसे घृतकोलेकरडालीहुईअग्निकेऊपरहो मकरताहैउसकामंत्र॥

ओंअग्नावग्निरित्यस्य (गौतमऋ० आर्षीत्रिष्टुप्छं० अग्निर्दे०)१

पदार्थः— १मंत्रोंसे २प्रादुर्भूत ३और ४अभिशापतथायाञ्चासेरक्षक ५म ध्यमानअग्नि ६आहवनीयअग्निमें ७प्रवेशकरता ८हविकोभक्षणकरताहै हेअग्नि ९वहतुम १०हमारेलिये ११सुखरूपहोते १२सदा १३सावधानहोते १४इसस्थानमें १५शुभयज्ञद्वारा १६देवताओंकेअर्थ १७सोमआदिरूपहवि को १८दीजियेअर्थात्हमारादियाहुआहविदेवताओंकोप्राप्तकराइये १९ तेरेलियेयहघृतकाश्रेष्ठहोमहो॥४॥

अथाध्यात्मम्— १मंत्रोंसे २प्रादुर्भूत ३और ४हिंसासेरक्षक ५ब्रह्मा ग्नि ६ईशाग्निमें ७प्रवेशहोता ८जीवरूपहविकोभक्षणकरताहैअर्थात्उ सकोअपनीआत्मामेंलयकरताहैहेब्रह्माग्नि ९वहतुम १०हमारेलिये ११आनं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द स्वरूप होते १२ ब्रह्मा विष्णु महेश रूपधारी यजमान को १३ बोधित करते १४ इस हृदाकाश में १५ ज्ञानयज्ञ द्वारा १६ परानरनारायणनाम देवताओं के लिये १७ व्यष्टि समष्टि रूप प्रतिबिंब को १८ दीजिये १९ अष्टहोम हो॥ १५॥

आपतयेत्वा परिपतये गृह्णामि तनूनप्त्रे शक्क रायशक्कन ओजिष्ठाय अनाधृष्टमस्यनाधृ ष्यन्देवानामोजोनभिशस्त्यभिशस्तिपाश्चनभिश स्तेन्यमृज्जसासत्यमुपगेषꣳ स्त्वितेमाधाः॥ ५

त्वा। परिपतये। तनूनप्त्रे। शक्कराय। शक्कने। ओजिष्ठाय। आपतये। गृह्णामि। अनाधृष्टम्। अनाधृष्यम्। देवानाम्। ओजः। अनभिशस्ति। अभिशस्तिपा। असि। आ। अञ्जसा। अनभिशस्तेन्यम्। सत्यम्। उपगेषम्। स्त्वितेः। मा। धाः॥ ५॥

अथाधिदैवम्– इस कंडिका में दो मंत्र हैं व्रतप्रदान नाम पात्र में शुवा द्वारा स्थाली से दो वार आज्य को लेता है उस का मंत्र १ उस तानूनप्त्रनामघृत को वेदी के दक्षिण श्रोणी पर रख कर ऋत्विज और यजमान एक साथ स्पर्श करते हैं उस का मंत्र २

ओं आपतयेत्वेत्यस्य (गोतमऋ० आर्ष्युष्णिक्छं० वायुर्देवता) १

ओं अनाधृष्टमित्यस्य (तथा० भूरिगार्षीपंक्तिश्छं० आज्यंदै०) २

पदार्थः– हे आज्य १ तुझे २ सर्वव्यापी ३ आत्मा के पौत्र ४ आकाश के पुत्र ५ सब कर्मों में समर्थ ६ बलवान ७ निरंतर गतिवान वायु के लिये ८ ग्रहण करता हूं ९ हे आज्य तुम ९ अब से पहिले भी सब से अतिरस्कृत १० और इस से पीछे भी तिरस्कार के अयोग्य ११ अग्नि आदि देवताओं के १२ बल १३ अनिंदित १४ निंदा से रक्षक १५ हो क्योंकि घृत से हवि के सुस्वादित होने पर कोई निंदा नहीं कर सकता इस कारण १६ हे आज्य १७ सीधे मार्ग से १८ अनिंदित मोक्ष के प्राप्त करा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेवाले १९ नारायण को २० प्राप्त करूं हे आज्य २१ शोभन मार्ग यज्ञ कर्म में २२ मुझ को २३ स्थापन कर॥५॥

अथाध्यात्मम्— हे इन्द्रिय शक्ति समूह १ तुझे २ प्राण के लिये ३ मन के लिये ४ जीवात्मा के लिये ५ विष्णु के लिये ६ परा रूप प्रकाश में स्थित ७ सर्व शक्तिमान महाविष्णु के लिये ८ ग्रहण करता हूं हे इन्द्रिय शक्ति समूह तुम ९ इस से पहिले काम आदि से अतिरस्कृत १० इस से पीछे भीति रस्कार के अयोग्य ११ इन्द्रियों के १२ तेज १३ अनंदित १४ और निंदित माया से रक्षक १५ हो १६ हे इन्द्रिय शक्ति समूह मैं १७ अनन्य भक्ति वा योग मार्ग द्वारा १८ मोक्ष मार्ग प्राप्त कराने वाले १९ महानारायण को २० प्राप्त करूं २१ मोक्ष मार्ग में २२ मुझ को २३ स्थापन कर॥५॥

अग्नेव्रतपास्त्वेव्रतपायातवतनूरियꣳसाम यियोममतनूरेषासात्वयि। सहनौव्रतपतेव्रता न्यनुमेदीक्षान्दीक्षापतिर्मन्यतामनुतपस्तप स्पतिः॥६॥

१ अ। २ अ। ३ इ। ४ उ। ५ व्रतपाः। ६ अग्ने। ७ व्रतपाः। ८ अस्तु। ९ तव। १० या। ११ तनूः। १२ सा। १३ इयꣳ। १४ मयि। १५ या। १६ मम। १७ तनूः। १८ सा। १९ एषा। २० त्वयि। २१ व्रतपते। २२ नौ। २३ व्रतानि। २४ सह। २५ दीक्षापतिः। २६ मे। २७ दीक्षाम्। २८ अनुमन्यताम्। २९ तपस्पतिः। ३० तपः। ३१ अनु॥६॥

अथाधिदैवम्— आहवनीय और गार्हपत्य में समिध डालने का मंत्र १ ओंअग्नइत्यस्य (गोतमऋ० विराड्ब्राह्मी पंक्तिश्छंदः० अग्निर्दे०) १

पदार्थः— १ ब्रह्मा २ विष्णु ३ परा ४ शिव रूप ५ सब व्रतों के रक्षक ६ अग्नि तुम ७ व्रत के रक्षक ८ हूजिये ९ तेरा १० जो ११ शरीर है १२ वह १३ यह १४ तुझ में हो १५ जो १६ मेरा १७ शरीर है १८ वह १९ यह २० तुझ में हो २१ हे व्रत पालक अग्नि २२ हम तुम दोनों के २३ अनुष्ठित कर्म २४ साथ हों अर्थात् व्रतों में मेरा जि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तनाआदरहैउतनाहीआपका हो२५ औरदीक्षा कारक्षक सोमदेवता२६ मेरी दीक्षाको२८ मानो२९ उपसदरूपतपकारक्षक सोमदेवता ३० मेरेउपसदरूपको३१मानो॥ ६॥

अथाध्यात्मम्– १ब्रह्मा२ विष्णु३ परा४ शिवरूपधारी५ योगव्रतके रक्षक ६ हेब्रह्माग्नितुम७ योगव्रतके रक्षक ८ हूजियै ९ तेरी१० जो११ पराशक्तिहै १२ वह १३ यह १४ तुमहमेंस्थित हो १५ जो १६ मेरी१७ शक्तिजीव नामहै१८ वह १९ यह२० तुमहमेंस्थित हो२१ हे योगयज्ञके रक्षक ब्रह्माग्नि२२ उत्पत्तिपालनआदि कर्म२३ हमतुमदोनोंके२४ साथ हों जीव ईश्वरके एकत्व से२५ विराट्का आत्मा सूर्य२६ मेरे२७ योगयज्ञ कीदीक्षा को२८ स्वीकार करो२९ व्यष्टिप्रति बिंबका रक्षक सूर्य३० व्यष्टि प्रति बिंब को३१ स्वीकार करो॥ ६॥

अंशुरंशुष्टेदेव सोमाप्यायतामिंद्रायैकधनविदेऽप्यातुभ्यमिन्द्रः प्यायतामात्वमिन्द्राय प्यायस्व। आप्यायया स्मांत्सखीन्त्सन्यामेधयास्वस्तितेदेव सोम सुत्यामशीयाऽएष्टारायः प्रेषेभगायऋतमृतवादिभ्योनमो द्यावापृथिवीभ्याम्। ७।

सोमा देवा। ते। अंशुः। अंशुः। एकधनविदे। इन्द्राय। आप्यायतुताम्। तुभ्यम्। इन्द्रः। आप्यायताम्। त्वे। इन्द्राय। आप्यायस्व। सखीन्। अस्मान्। सन्या। मेधया। आप्यायस्व। सोम। देवा। ते। स्वस्ति। सुत्यां। अशीय। एष्टाः। रायः। प्रेषे। भगाय। ऋतवादिभ्यः। ऋतम्। द्यावापृथिवीभ्यां। नमः॥ ७॥

अथाधिदैवम्– इसकंडिकामेंदो मंत्रहैं ब्रह्मा, उद्गाता, होता, अध्व

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युध्रग्नीध्रये पांचो ऋत्विज और छठा यजमान सोम को वृद्धि देते हैं उसका मंत्र १ सब ऋत्विज प्रस्तर के ऊपर दोनों हाथों को ऊंचा करके अथवा दाहिने हाथ को ऊपर रख कर रक्षा के लिये सोम की परिचर्या करते हैं उसका मंत्र २

ओं अश्छ्मुद्त्यस्य (गोतम ऋ० आर्षी बृहती छं० सोमो दे०) १

ओं एष्टाराय इति (वत्स ऋ० आर्षी जगती छं० लिङ्गोक्त दे०) २

पदार्थः - १ हे सोम २ देवता ३ तेरा ४, ५ सब अवयव ६ तुझ मुख्य धन के प्राप्त करने वाले ७ नारायण के अर्थ ८ वृद्धि पाओ और ९ तेरे पान के लिये १० नारायण भी ११ प्रादुर्भूत हों १२ तुम भी १३ नारायण के अर्थ १४ सब ओर से वृद्धि पाओ १५ सखा की तुल्य प्रीति के विषय १६ हम ऋत्विजों को १७ धन दान और १८ अर्थ धारण शक्ति वृद्धि से १९ बढाओ २० हे सोम २१ देवता २२ तेरा २३ कल्याण हो आप की कृपा से मैं २४ सोमाभिषव क्रिया के समाप्त दिन को २५ प्राप्त करूं २६ हमारे अपेक्षित २७ धन २८ अत्यंत प्रिय २९ त्रिदेव रूप धारी महा नारायण के लिये न कि अपने भोग के लिये ३० ब्रह्मवादियों के लिये ३१ सत्य ब्रह्म और ३२ स्वर्ग पृथिवी के अभिमानी देवताओं के लिये ३३ यज्ञ, यज्ञ फल और अन्न ॥ ७ ॥

अथाध्यात्मम् - वाणी आदि ऋत्विज कहते हैं १ हे समष्टि प्रति बिंब २ ज्योति स्वरूप सूर्य ३ तेरा ४, ५ प्रत्येक व्यष्टि प्रति बिंब ६ मुख्य धन आत्म प्रति बिंब को अपनी आत्मा में लय करने वाले ७ महा विष्णु के लिये ८ वृद्धि पाओ हे व्यष्टि प्रति बिंब ९ तेरे पान के लिये १० महा विष्णु ११ प्रादुर्भूत हो हे सूर्य १२ तुम भी १३ महा विष्णु के लिये १४ वृद्धि पाओ १५ सखा की तुल्य प्रीति के विषय १६ हम वागादि ऋत्विजों को १७ शम दम आदि रूप धन के दान और १८ ब्रह्म धारण शक्ति रूप बुद्धि के द्वारा १९ बढ़ाओ २०, २१ हे ज्योति स्वरूप सूर्य २२ तेरा २३ कल्याण हो आप की कृपा से मैं २४ प्रति बिंब याग की समाप्ति को २५

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रासकरूं २६ हमारे अपेक्षित २७ योगैश्वर्य २८ अत्यंतप्रिय २९ महाविष्णु के लिये हों क्योंकि उनमें आसक्ति मोक्ष में विघ्न करनेवाली है ३० योगियों के लिये ३१ सत्यब्रह्म ३२ पृथिवी स्वर्गाभिमानी देवताओं के लिये ३३ देहरूप अन्न॥७॥

यातेअग्नेयः शयातनूर्वर्षिष्ठा गह्वरेष्ठाउग्रं वचोअपावधीत्त्वेषंवचोअपावधीत्स्वाहा। यातेअग्नेरजः शयातनूर्वर्षिष्ठा गह्वरेष्ठाउग्रंवचोअपावधीत्त्वेषंवचोअपावधीत्स्वाहा। यातेअग्नेहरिशयातनूर्वर्षिष्ठा गह्वरेष्ठाउग्रं वचोअपावधीत्त्वेषंवचोअपावधीत्स्वाहा॥८

अग्ने। या। ते। अयः। शया। तनूः। वर्षिष्ठा। गह्वरेष्ठा। उग्रं। वचः। अपावधीत्। त्वेषं। वचः। अपावधीत्। स्वाहा। अग्ने। या। ते। रजः। शया। तनूः। वर्षिष्ठा। गह्वरेष्ठा। उग्रं। वचः। अपावधीत्। त्वेषं। वचः। अपावधीत्। स्वाहा। अग्ने। या। ते। हरिशया। तनूः। वर्षिष्ठा। गह्वरेष्ठा। उग्रं। वचः। अपावधीत्। त्वेषं। वचः। अपावधीत्। स्वाहा॥८॥

अथाधिदैवम्- इसकंडिकामें ३ मंत्र हैं उनको कहते हैं, जुहूआदिमें प्रस्तर को परिधिस्थापनपूर्वक स्रुवासे उपसदनामअग्निमें होम करता है उसका मंत्र १ दूसरे और तीसरे दिन दूसरी और तीसरी उपसदनामअग्निमें होमता है उसके मंत्र २ ३

ओंयातइत्यस्य (गोतमऋ० विराडार्षी बृहती छं० अग्निर्दे०) १

ओंयातइतिद्वितीय (वत्सऋषि निचृदार्षी बृहती छं० तथा) २

तृतीययो

पदार्थः- यह मंत्र भूतभविष्य का वक्ता है शिवजीने इसी मंत्र के द्वारा त्रिपुर को दग्ध किया था १ हे अग्नि २ जो ३ तेरी ४ लोहमय पुर व्यापी ५ शक्ति ६ दे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वताओं पर वांछित फल की वर्षा करने वाली ७ असुरों विषम देश में स्थिति शील है उस के ने ८ मारो छेदो इत्यादि असुरों के कहे हुए तीव्र ९ वचनों को १० प्रत्येक कल्प में विनाश किया तथा ११,१२ असुरों के कहे हुए देवाधि क्षेप रूप दीप्त वाक्य को १३ विनाश किया १४ वैसे उपकारक तुझ अग्नि के लिये हवि दिया १५ हे अग्नि १६ जो १७ तेरी १८ रजतमय पुर व्यापी १९ शक्ति है उसने २० देवताओं के वांछित फल की वर्षा करने वाली और २१ असुरों के विषम देश में स्थित होकर २२, २३ मारो छेदो इत्यादि असुरों से कहे हुए तीव्र वचनों को २४ विनाश किया २५,२६ तथा असुरों के कहे हुए देवाधि क्षेप रूप प्रदीप्त वाक्य को २७ विनाश किया २८ वैसे उपकारक तुझ अग्नि के लिये हवि दिया २९ हे अग्नि ३० जो ३१ तेरी ३२ सुनहरी पुर व्यापिनी ३३ शक्ति है उसने ३४ देवताओं पर वांछित फल की वर्षा करने वाली ३५ असुरों के विषम देश में स्थित होकर ३६,३७ मारो छेदो इत्यादि असुरों के कहे हुए तीव्र वचनों को ३८ विनाश किया ३९,४० तथा असुरों के कहे हुए देवाधि क्षेप रूप प्रदीप्त वाक्य को ४१ विनाश किया ४२ वैसे उपकारक तुझ अग्नि के लिये हवि दिया॥ ८॥ ९॥

अथाध्यात्मम् – तेरा त्रिगुणमय आत्मा किस प्रकार मेरे योग्य है इस प्रश्न के उत्तर को कहते हैं १ हे ब्रह्माग्नि २ जो ३ तेरी ४ नाभि कमल शायी विष्णु रूप ५ शक्ति है उस ६ योग मार्ग से अमृत वर्षा करने वाली ७ नाभि कमल रूप गुहा में स्थित ने ८ हिंसात्मक ९ वचन को १० त्याग किया ११ पश्चात्ताप संबंधी १२ वचनों को १३ विनाश किया १४ यह सब ब्रह्म है इस महा वाक के प्रभाव से १५ हे ब्रह्माग्नि १६ जो

९ श्रुति में लिखा है प्रजा पति के पुत्र देवता और असुरों में परस्पर वैर था इसलिये असुरों ने तीनों लोक में तीन पुर बनाए पृथिवी लोक में लोहे का, अन्तरिक्ष में रूपहरी, स्वर्ग में सुनहरी देवताओं ने विचार करके अग्नियों की उपासना की उपासना से अग्नियों का नाम उपसद हुआ उस उपासना के फल से तीनों पुर को तोड़ा और तीनों लोक को जीता इसी प्रकार जो कोई इस लोक में उन अग्नियों की उपासना करता है वह शत्रु के दुर्ग आदि को तोड़ता है और जय पाता है॥ ८॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१७ तेरी १८ रजोगुणप्रधानब्रह्मारूप १९ शक्ति है २० योगमार्ग से अमृतवर्षा करने वाली २१ हृदयकमलरूप गुहा में स्थित उस शक्ति ने २२ हिंसात्मक २३ वचन को २४ विनाश किया २५ पश्चात्ताप संबंधी २६ वचन को २७ नष्ट किया २८ महावाक् के प्रभाव से २९ हे ब्रह्माग्नि ३० जो ३१ तेरी ३२ शिवरूप ३३ शक्ति है ३४ योग से अमृतवर्षा करने वाली ३५ भ्रूकुटिकमलरूप गुहा में स्थित उस शक्ति ने ३६ हिंसात्मक ३७ वचन को ३८ नष्ट किया ३९ पश्चात्ताप सम्बंधी ४० वचन को ४१ नष्ट किया ४२ महावाक् के प्रभाव से उस कारण मेरा आत्मा तुझ में होम करने के योग्य

तत्पायनी मेसि वित्तायनी मेस्यवतान्मा नाथिता
दवतान्मा व्यथितात्। विदेदग्निर्नभो नामाग्नेऽ
ङ्गिरआयुना नाम्नेहि यो स्यामृथिव्या मसि यत्ते
नाधृष्टन्नाम यज्ञियन्तेन त्वादधे विदेदग्निर्नभो
नामाग्नेऽङ्गिरआयुना नाम्नेहि यो द्वितीय स्याम्
पृथिव्या मसि यत्ते नाधृष्टन्नाम यज्ञियन्तेन त्वाद
धे विदेदग्निर्नभो नामाग्नेऽङ्गिरआयुना नाम्ने
हि यस्तृतीय स्याम्पृथिव्या मसि यत्ते नाधृष्टन्नाम
यज्ञियन्तेन त्वादधे। अनु त्वा देव वीतये॥ ९॥

मे। तत्पायनी। असि। मे। वित्तायनी। असि। मा। नाथितात्। अवतात्। मा। व्यथितात्। अवतात्। नमः। नाम। अग्निः। विदेत्। अङ्गिरः। अग्ने। आयुना। नाम्ना। एहि। यः। अस्याम्। पृथिव्याम्। असि। ते। यत्। यज्ञियम्। अनाधृष्टम्। तेन। त्वा। आदधे। नमः। नाम। अग्निः। विदेत्। अंगिरः। अग्ने। आयुना। नाम्ना। एहि। यः। द्वितीय स्याम्। असि। ते। यत्। अनाधृष्टम्। यज्ञियम्। नाम। तेन। त्वा। आदधे। नमः। नाम। अग्निः। विदेत्

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अङ्गिरः। अग्ने। आयुना। नाम्ना। एहि। यः। तृतीयस्याम। पृथिव्याम्। असि। ते। यत्। अनाधृष्टम्। यज्ञियम्। नाम। तेन। नाम्ना। त्वा। आदधे। देववीतये। त्वा। अनु॥ ९॥

अथाधिदैवम्- इसकंडिका में ७ मंत्र हैं उनको कहते हैं प्रत्येक दिशा में शम्या को रखकर उस रक्खी हुई शम्या के मध्य पार्श्व में भीतर स्फ्य से रेखा करता है इस प्रकार १२ अंगुल वाला सम कोण चतुर्भुज चात्वाल पर चिन्हित होता है उस का मंत्र १ यजमान के स्पर्श करने पर अध्वर्यु मिट्टी खोदने के लिये प्रहार करता है उसका मंत्र २ खोदी हुई मिट्टी को अध्वर्यु हाथ वा स्फ्य से लेता है उसका मंत्र ३ उस उठाई हुई मिट्टी को उत्तर वेदी के पूर्व भाग में स्थापित शङ्कु के पास डालता है उस का मंत्र ४ जैसे पहिले वेदी के अर्थ तीन मंत्रों से मिट्टी खोद करले कर डाली उसी प्रकार फिर भी दो वार करता है उसके मंत्र ५, ६ जैसे पहिले तीन पर्यायों में मिट्टी लेकर पट की ऐसे चौथे में भी प्रक्षेपण पर्यन्त मृदाहरण करता है उसका मंत्र ७

ओंतत्पायनीत्यस्य (गोतमऋ० भुरिगार्षी गायत्री छं० पृथिवी दे०) १=४ तक

ओंविदेदग्निरित्यस्य (वत्स ऋ० भुरिब्राह्मी बृहती छं० अग्नि दे०) ५

ओंअग्नेअङ्गिरइत्यस्य (तथा ० निचृद्ब्राह्मीजगती छं० लिङ्गोक्त दे०) ६

ओंअनुत्वेत्यस्य (तथा ० याजुष्यनुष्टुप् छं० तथा) ७

पदार्थः हे पृथिवि तुम १ मेरे अनुग्रह के लिये २ निर्धनता से दुखी पुरुष के शरण स्थान रूप वा उस को प्राप्त होने वाली ३ हो ४ मेरे लिये ५ धनार्थी पुरुष को धनवान करने वाली ६ हो तुम ७ मुझ को ८ याचना से ९ रक्षा करो १० मुझ को ११ भय वा स्थान भ्रंश से १२ रक्षा करो हे चात्वाल में विद्यमान मृत्तिका १३ नभ १४ नाम १५ अग्नि जो कि तेरा अधिष्ठाता है १६ मुझ से खोदी हुई तुझ को जानै १७ हे गतिमान १८ अग्नि तुम १९, २० आयु नाम से विख्यात होते २१ आओ हे अग्नि २२ जो तुम २३ इस दृश्य मान २४ भूमि में २५ हो २६ तेरा २७ जो रूप २८

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यज्ञ योग्य २९ सब से अतिरस्कृत है ३० उस नाम से युक्त ३१ तुम को ३२ स्थापन करता हूं हे मृत्ति के ३३,३४,३५ नभ नाम अग्नि ३६ तुझे जानै ३७ हे गति मान ३८ अग्नि तुम ३९ ४० आयु नाम से विख्यात ४१ आओ ४२ जो कि ४३ दूसरी ४४ पृथिवी अर्थात् अन्तरिक्ष में ४५ हो ४६ तेरा ४७ जो ४८ सब से अतिरस्कृत ४९ यज्ञ योग्य ५० नाम है ५१ उस नाम से विख्यात ५२ तुझ को ५३ स्थापन करता हूं हे मृत्ति का ५४,५५,५६ नभ नाम अग्नि ५७ तुझे जानै ५८ हे गति मान ५९ अग्नि तुम ६०, ६१ आयु नाम से विख्यात ६२ आओ ६३ जो तुम ६४ तीसरी ६५ पृथिवी अर्थात् स्वर्ग में ६६ हो ६७ तेरा ६८ जो ६९ सब से अतिरस्कृत ७० यज्ञ योग्य ७१ नाम है ७२ ७३ उस नाम से विख्यात ७४ तुझ को ७५ स्थापन करता हूं हे मृत्ति का ७६ नारायण देवता वा देवताओं की प्रीति के अर्थ ७७ तुझ को ७८ लेता हूं॥ ९॥

अथाध्यात्मम् – हे मानस भूमि तुम १ मेरे अनुग्रह के अर्थ २ जागरण में तत्पुरुष को प्राप्त होने वाली अथवा उस का शरण स्थान ३ हो हे हार्द भूमि तुम ४ मेरे अनुग्रह के अर्थ ५ विज्ञात ब्रह्म की प्राप्ति का स्थान ६ हो हे भृकुटि भूमि तुम ७ मुझ को ८ याचित विषय से ९ रक्षा करो हे गगन मंडल भूमि १० मुझ को ११ योगभ्रंश वा भय युक्त संसार से १२ रक्षा करो हे मन में विद्यमान काम शरीर की मिट्टी १३ ज्ञान प्रकाश हीन १४ नाम से विख्यात १५ काम का आत्मा १६ मुझ से खोदी हुई तुझ को जानै १७ हे गति मान १८ काम के आत्मा तुम १९ अपने कारण में लयशील २० नाम से विख्यात २१ अपने कारण को प्राप्त करो २२ जो कि तुम २३ इस २४ मानस भूमि में २५ हो २६ तेरा २७ जो अंश २८ योग यज्ञ के योग्य २९ विषयों से अतिरस्कृत है ३० उस अंश से ३१ तुझ को ३२ स्थापन करता हूं हे हृदय में विद्यमान क्रोध देह की मिट्टी ३३ ज्ञान प्रकाश हीन ३४ नाम से विख्यात ३५ क्रोध का आत्मा ३६ मुझ से खोदी तुझ को जानै ३७ हे गति मान ३८ क्रोध के आत्मा ३९ लयशील ४० नाम से विख्यात तुम ४१ अपने कारण को प्राप्त करो ४२ जो कि तुम ४३

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४४ हार्दान्तरिक्षमें ४५ हौ ४६ तेरा ४७ जोअंश प्रजाधर्म रक्षक ४८ कामसेअतिरस्कृत ४९ योग यज्ञके योग्य ५० विख्यात है ५१ उसअंश से ५२ तुझको ५३ स्थापनकरता हूं हे भृकुटि में विद्यमान लोभ देह की मिट्टी ५४ ज्ञानप्रकाश हीन ५५ नामसे विख्यात ५६ लोभ काआत्मा ५७ मुझ से खोदी हुई तुझको जानै ५८ हे गतिमान ५९ लोभ के आत्मा तुम ६० लयशील ६१ नाम से विख्यात ६२ अपने कारण को प्राप्त करो ६३ जोकि तुम ६४, ६५ भृकुटि भूमिमें ६६ हौ ६७ तेरा ६८ जोअंश नारायण के अर्चणमें प्रवृत्त ६९ विषयों से अतिरस्कृत ७० योग यज्ञके योग्य ७१ विख्यात है ७२ उसअंश से ७३ विख्यात ७४ तुझको ७५ स्थापन करता हूं हे अज्ञान देह की मिट्टी ७६ महानारायण की प्राप्ति के अर्थ ७७ तुझको पूर्ववत् ७८ पृथक् करता हूं॥ ९॥

सिंहीसि सपत्नसाही देवेभ्यः कल्पस्व सिंहीसि सपत्नसाही देवेभ्यः शुन्धस्व सिंहीसि सपत्नसाही देवेभ्यः शुम्भस्व १०

सिंहीसि सपत्नसाही। असि। देवेभ्यः। कल्पस्व। सिंहीसि सपत्नसाही। असि। देवेभ्यः। शुन्धस्व। सिंहीसि सपत्नसाही। असि। देवेभ्यः। शुम्भस्व॥ १०॥

अथाधिदैवम्— इस कंडिका में ३ मंत्र हैं उनको कहते हैं उत्तरवेदी को विशेषकर मिट्टी से समान और जल से प्रोक्षण करता है और वालू को उस पर डालता है उसके मंत्र १, २, ३,

ओंसिंह्यसीत्यस्य (गोतमऋ० ब्राह्म्युष्णिक् छं० वेदिर्दे०) १, २, ३

पदार्थः— हे उत्तरवेदी जो तुम १ सिंही के समान होती २ शत्रुओं को ३ पराभव (हार) देने वाली ३ हौ इस कारण ४ देवताओं के उपकारार्थ ५ रचित हो ६ सिंही समान होती ७ शत्रुओं का तिरस्कार करने वाली ८ है ९ देवता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं के लिये १० शुद्ध हो ११ सिंही समान होती १२ शत्रुओं का अपमान करने वाली १३ है १४ देवताओं के अर्थ १५ वालू पड़ने से शोभित हो॥ १०॥

अथाध्यात्मम् – हे मानस वेदी तुम १ सिंही रूप होती २ काम शत्रु का पराभव करने वाली ३ हो इस कारण ४ ब्रह्म परा नारायण के अर्थ ५ समर्थ हो हे हृदय रूप वेदी तुम ६ सिंही रूप होती ७ क्रोध शत्रु का तिरस्कार करने वाली ८ हो ९ ब्रह्म परा नारायण के अर्थ १० शुद्ध हो हे भ्रकुटि वेदी तुम ११ सिंही रूप होती १२ लोभ शत्रु का अपमान करने वाली १३ हो १४ ब्रह्म परा नारायण नाम देवताओं के लिये १५ अलङ्कृत हो॥ १०॥

इन्द्रघोषस्त्वा वसुभिः पुरस्तात्पातु प्रचेतास्त्वा रुद्रैः पश्चात्पातु मनोजवास्त्वा पितृभिर्दक्षिणतः पातु विश्वकर्म्मा त्वादित्यैरुत्तरतः पातु विदमहन्तसं वा वीहि धा यज्ञान्निः स्टजामि॥ ११॥

इन्द्रघोषः। वसुभिः। त्वा। पुरस्तात्। पातु। प्रचेताः। रुद्रैः। पश्चात्। त्वा। पातु। मनोजवाः। पितृभिः। दक्षिणतः। त्वा। पातु। विश्वकर्म्मा। आदित्यैः। उत्तरतः। त्वा। पातु। धा। अहम्। इदम्। तत्। वाः। यज्ञात्। वहिः। आ। निः। स्टजामि॥ ११॥

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में ५ मंत्र हैं उनको कहते हैं, अध्वर्यु अग्नि दूसरे को देकर वेदी के भीतर अथवा उत्तर वेदी के दक्षिण पार्श्व में वेदी के मध्य उत्तर मुख स्थित होकर उत्तर वेदी का प्रोक्षण करता है उसके मंत्र १, २, ३, ४ फिर अध्वर्यु प्रोक्षण शेष जल को वेदी के बाहर प्रदेश में वेदी के दक्षिण भाग से लगा कुशा डालता है उस का मंत्र ५

ओं इन्द्रघोषस्त्वेत्यस्य (गोतमऋ० निचृद्गा० त्रिष्टुप्छं० उत्तरवेदिर्दे० १

पदार्थः हे उत्तरवेदी १ इन्द्र नाम से विख्यात देवता २ अष्ट वसुओं से

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युक्त होता ३ तुझको ४ पूर्वदिशा में ५ रक्षा करौ ६ श्रेष्ठ बुद्धिवाला वरुण देवता ७ ग्यारह रुद्रों के साथ ८ पश्चिम दिशा में ९ तुझको १० रक्षा करौ ११ मन की तुल्य वेगवान यमदेवता १२ स्वर्गवासी देव पितरों के साथ १३ दक्षिण दिशा में १४ तुझको १५ रक्षा करौ १६ विश्व की उत्पत्ति पालन आदि करने वाला ईश्वर १७ बारह आदित्यों के साथ १८ उत्तर दिशा में १९ तुम को २० असुरों से रक्षा करौ २१ हे वेदी २२ मैं २३ इस २४ प्रोक्षण शेष तत्व २५ जल को २६ यज्ञ से २७ बाहर प्रदेश में २८ चारों ओर २९ डालता हूं॥ ११॥

अथाध्यात्मम्- हे तीन रूपवाली वेदी १ महा विष्णु का महा वाक रूप शब्द २ ब्रह्मा विष्णु महेश परा से युक्त होता ३ तुझको ४ पूर्वदिशा में ५ रक्षा करौ ६ आत्मा ७ प्रतिबिंब सहित प्राणों के साथ ८ पश्चिम दिशा में ९ तुझको १० रक्षा करौ ११ जाठराग्नि १२ मन की वृत्तियों के साथ १३ दक्षिण दिशा में १४ तुझको १५ रक्षा करौ १६ प्राण १७ एकादश इन्द्रिय मन और बुद्धि के साथ १८ उत्तर दिशा में १९ तुझको २० काम आदि से रक्षा करौ २१ हे वेदी २२ ज्ञानचक्षु मैं २३ इस प्रोक्षण शेष २४ तत्व २५ गगनामृत नाम जल को २६ यजमान से २७ बाहर २८ चारों ओर २९ डालता हूं- अभिप्राय यह कि वह काम आदि का भाग है॥ ११॥

सिꣳह्यसि स्वाहा सिꣳह्यस्यादित्यवनिः स्वाहा सिꣳह्यसि ब्रह्मवनिः क्षत्रवनिः स्वाहा। सिꣳह्यसि सुप्रजावनी रायस्पोषवनिः स्वाहा सिꣳह्यस्यावहदेवान्यजमानाय स्वाहा भूतेभ्यस्त्वा॥ १२॥

सिꣳही। असि। स्वाहा। आदित्यवनिः। सिꣳही। असि। स्वाहा। ब्रह्मवनिः। क्षत्रवनिः। सिꣳही। असि। स्वाहा। सुप्रजावनी। सिꣳही। असि। रायस्पोषवनिः। सिꣳही। असि। स्वाहा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यजमानाय। देवान्। आवह। स्वाहा। त्वा। भूतेभ्यः॥१२॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में दो मंत्र हैं, अध्वर्यु उत्तरवेदी के उत्तर ओर बैठ कर ५ वार ग्रहण किये हुए आज्य को जुहू में ले कर नाभि के दक्षिणोत्तर स्कन्ध और दक्षिणोत्तर श्रोणि और नाभि के मध्य में सुवर्ण को रख कर उस को देखता कोण सूत्र प्रदेश से होम करता है उस का मंत्र १ होम के लिये नीचे की हुई स्रुचि को ऊंची करता है उस का मंत्र २

ओंसिध्रं ह्यसीत्यस्य (गोतमऋ० भुरिग्ब्राह्मी पंक्तिश्छं० वेद स्रुचौ दे०) १,२

पदार्थः- हे उत्तरवेदी तुम १ असुरों का भक्षण करने वाली २ हो ३ तेरे अर्थ हवि दिया ४ आदित्य नाम देवताओं को तृप्त करने वाली ५ असुर भक्षिका ६ है ७ तुझ को हवि दिया ८ ब्राह्मण क्षत्री जाति को तृप्त करने वाली १० सिंही ११ है १२ तुझे हवि दिया १३ पुत्र पौत्र आदि शुभ संतान का संपादन करने वाली १४ सिंही १५ है १६ सुवर्ण चांदी आदि धन पुष्टि का संपादन करने वाली १७ सिंही १८ है १९ तुझे हवि दिया २० यजमान के उपकारार्थ २१ देवताओं को २२ लाओ २३ तुझे हवि दिया हे होम विशेष घृत से युक्त जुहू २४ तुझ को २५ जरायुज, अंडज आदि चार प्रकार के जीव समूह की प्रीति के अर्थ ऊंची करता हूं॥ १२॥

अथाध्यात्मम्- हे मानसवेदी तुम १ काम आदि की भक्षक २ हो ३ तुझ को इन्द्रिय रूप हवि दिया हे हृदय वेदी तुम ४ इन्द्रिय शक्तियों की सेव्य ५ सिंही ६ हो ७ तुझे इन्द्रिय शक्ति रूप हवि दिया हे भृकुटि वेदी तुम ८ मनसे सेव्य ९ प्राणों से सेवनीय १० सिंही ११ हो १२ तुझ को प्राण आदि रूप हवि दिया तुम १३ शम दम आदि से प्रार्थनीय १४ सिंही १५ हो १६ श्रेष्ठ होम हो १७ योगैश्वर्य की पुष्टि से सेवनीय १८ सिंही १९ हो २० यजमान के अर्थ २१ ब्रह्म परा नारायण नाम देवताओं को २२ प्राप्त कराओ २३ जीव नाम हवि का श्रेष्ठ होम हो हे भूतात्म युक्त महावाक २४ तुझ को २५ देहाभिमानियों के लिये

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊंचा करता हूं॥ १२॥

ध्रुवोसि पृथिवीन्दृꣳह ध्रुवक्षिदस्यन्तरिक्षन्दृꣳह अच्युतक्षिदसि दिवन्दृꣳहाग्नेः पुरीषमसि॥१३॥

ध्रुवः। असि। पृथिवीम्। दृꣳह। ध्रुवक्षित्। असि। अन्तरिक्षम्। दृꣳह। अच्युतक्षित्। असि। दिवम्। दृꣳह। अग्नेः। पुरीषम्। असि॥१३॥

अथाधिदैवम्— इस कंडिका में दो मंत्र हैं, देव दारु वृक्षज प्रादेश मात्र मध्य मदक्षिण उत्तर परिधियों को उत्तर वेदी के नाभि देश पर स्थापन करता है उस का मंत्र १ गुग्गुल आदि संभार समूह को नाभि देश पर डालता है उस का मंत्र २ (ओं ध्रुवो सीत्यस्य (गोतम ऋ० भुरिगार्ष्यनुष्टुप् छं० परिधयो दे०) १

ओं अग्ने रित्यस्य (तथा ० दैवी जगती छं० गुग्गलादिक संभारो दे०) २

पदार्थः हे मध्य परिधि तुम १ स्थिर २ हो इस कारण ३ पृथिवी को २ दृढ़ करो हे दक्षिण परिधि तुम ५ स्थिर यज्ञ में वास करने वाली ६ हो इस कारण ७ अन्तरिक्ष को ८ दृढ़ करो हे उत्तर परिधि तुम ९ विनाश रहित इस यज्ञ में निवास करने वाली १० हो उस कारण ११ स्वर्ग को १२ दृढ़ करो हे गुग्गुल आदि संभार समूह तुम १३ अग्नि के १४ पूरक १५ हो॥ १३॥

अथाध्यात्मम्— हे जीव नाम परिधि तुम १ अचल २ हो इस कारण ३ मन को ४ दृढ़ करो हे नर नाम परिधि तुम ५ जीव में व्यापक ६ हो इस कारण ७ हार्दान्तरिक्ष को ८ दृढ़ करो हे नारायण नाम परिधि तुम ९ ब्रह्म में निवास शील १० हो इस कारण ११ भृकुटि को १२ दृढ़ करो हे ब्रह्मांड तुम १३ ब्रह्माग्नि के १४ पूरक १५ हो॥ १३॥

युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः। वि होत्रा दधे वयुनाविदेक इन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः स्वाहा १४

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
वृहत्। विपश्चितः। विप्रस्य। विप्राः। होत्राः। मनः। युञ्जन्ति।
८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५
धियः। उत्। युञ्जते। वयुनाविद्। एकः। इत्। विदधे। सवितुः। दे
१६ १७ १८ १९
वस्य। परिष्टुतिः। मही। स्वाहा॥ १४॥

अथाधिदेवम्– हवि धानि मंडप बनाकर अध्वर्यु शाला में प्रवेश हो कर आज्य का संस्कार करके चार वार ग्रहण किये हुए आज्य को परिस्तरण समिधा धान पूर्वक शाला द्वार्य अग्नि में होमता है उसका मंत्र १ ओंयुञ्जते मन इत्यस्य (गोतमऋषिः स्वराडार्षीजगती छं० सविता दे०)१

पदार्थः–१ वेदपाठ से महत्त्व को प्राप्त २ सर्वज्ञ ३ यजमान के ४ वेदज्ञाता ५ होम करने वाले ऋत्विज ६ मन को ७ एकाग्र करते हैं ८ इन्द्रियों को ९ भी १० यज्ञ कर्मों में नियुक्त करते हैं जिस कारण ११ सब प्राणियों के मन बुद्धि की वृत्तियों को जान्ने वाले १२, १३ अकेले सृष्टि कर्त्ता नेही १४ विश्व को उत्पन्न किया १५ उस सब के प्रेरक अंतर्यामी १६ देवता की वेद आदि में कथित स्तुति १८ वड़ी है १९ उस परमेश्वर के लिये श्रेष्ठ होम हो॥ १४॥

अथाध्यात्मम्– १ ब्रह्म भाव सम्पन्न २ सर्वज्ञ ३ वेदान्त पारगामी आत्मा रूप यजमान के ४ वेद ज्ञाता ५ वाक् आदि ६ मन को ७ आत्मा में युक्त करते हैं ८ बुद्धि मन प्राणों को ९ ही १० आत्मा में युक्त करते हैं जिस कारण ११ सर्वधी साक्षी १२, १३ अकेले योगी नेही १४ अभाव रूप संसार को भाव रूप किया १५ उस सब के प्रेरक १६ योगारूढ़ योगी की १७ वेदोक्त स्तुति १८ वड़ी है १९ ब्रह्मवित् ब्रह्म ही होता है, इस श्रुति के प्रमाण से॥ १४॥

इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳ सुरे स्वाहा १५

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
ओं। विष्णुः। अस्य। इदम्। विचक्रमे। पाꣳ सुरे। समूढम्। प
८ ९ १० ११
दम्। त्रेधा। निदधे। स्वाहा॥ १५॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाधिदेवम्– फिर घृत को संस्कार कर और चार वार ग्रहण किये हुए को लेकर दक्षिण हवि धानि के दक्षिण चक्र मार्ग में सुवर्ण को रख कर शाला द्वार की अग्नि में होमता है उसका मंत्र १

ओं इदं विष्णु रित्यस्य (मेधातिथि ऋषि० भुरिगार्षी गायत्री छं० विष्णु र्दे०) १

पदार्थः १ देवताओं के ईश्वर २ विष्णु ने ३,४ प्रधान के कार्य इस विश्व को ५ विशेष कर अपनी किरणों से व्याप्त किया ६ प्रधान कार्य के विस्तार से चौदह भुवनों से व्याप्त जो संसार है उसमें ७ भले प्रकार अंतर्हित ८ प्राप्ति योग्य अद्वैत ब्रह्म को ९ त्रिदेव रूप से १० स्थापित किया ११ उस विष्णु के लिये हवि दिया अथवा इस कंडिका का यह दूसरा अर्थ है॥

उ। विष्णुः। इदम्। विचक्रमे। त्रेधा। पदम्। निदधे। अस्य। पाꣳ सुरे। समूढम्। स्वाहा॥

१ देवताओं के ईश्वर २ त्रिविक्रमावतार वामन रूप विष्णु ने ३ इस विश्व को ४ विभाग पूर्वक उलंघन किया ५ तीन प्रकार से ६ पद ७ रक्खा अर्थात् भूमि में में एक अन्तरिक्ष में दूसरा और स्वर्ग में तीसरा पद रक्खा ८ इसका पद ९ चतुर्दश भुवन रूप ब्रह्मांड में १० मध्य वर्त्ती हुआ ११ उस विष्णु के अर्थ हवि दिया १५

त्रेधा। समूढम्। पदम्। शेषं पूर्ववत्– अथाध्यात्मम्–

१ शिव रूप २ योगी ने ३ इस देह के ४ इस सुषुम्ना मार्ग को ५ विभाग पूर्वक उलंघन किया ६ अज्ञान भूमि में ७ ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय, नाम तीन प्रकार के भेद से ८ भले प्रकार अंतर्हित छिपे हुए ९ प्राप्ति योग्य ब्रह्म को १० अपनी आत्मा में धारण किया ११ निश्चय सब ब्रह्म है यहां नाना प्रकार का कुछ नहीं है इस महावाक् के प्रभाव से॥ १५॥

इरावती धेनुमती हि भूतꣳ सूयवसिनी मनवे दशस्या। व्यस्कभ्नारोदसी विष्णवेते दाधर्थ पृथिवी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मभितो मयूषैः स्वाहा॥ १६॥

इरावती। धेनुमती। सूयवसिनी। मनवे। दशस्या। भूतम। दिषणे। अ। एते। रोदसी। व्यस्कभ्नाः। पृथिवीम्। मयूखैः। अभितः। दधर्थ। स्वाहा॥ १६॥

अथाधिदैवम्- प्रतिप्रस्थाता अध्वर्यु के दिये हुए स्रुवा और स्थाली को लेकर उत्तर हविर्धान के दक्षिण चक्र मार्ग में सुवर्ण रख कर चार वार लिये हुए घृत को होमता है उसका मंत्र १.

इरावतीत्यस्य (वसिष्ठ ऋ० स्वराडार्षी त्रिष्टुप् छ० विष्णुर्दे०) १

पदार्थः - हे पृथिवी स्वर्ग तुम दोनों १ अन्न जल रखने वाली २ वहु धेनु से युक्त ३ सुन्दर तृण रखने वाली ४ ज्ञानी यजमान के लिये ५ यज्ञ साधनों की देने वाली ६ हूजियै ७ हे सर्व व्यापी ८ विष्णु तुम ९ इन १० स्वर्ग पृथिवी को ११ स्तम्भन करो जिस प्रकार १२ अन्तरिक्ष को १३ अपने तेज रूप सूर्य चन्द्र आदि के द्वारा १४ सब ओर से १५ धारण किया १६ उस तुझ के लिये हवि दिया॥ १६॥

अथाध्यात्मम्- समाधि में ब्रह्म प्राप्ति के अनन्तर प्रारब्ध समाप्ति तक फिर प्रार्थना करता है. हे हृदय मनके कमलो तुम १ प्राण वान् २ बुद्धि से युक्त ३ जीवात्मा श्रोत्र, वाक्, चक्षु, त्वक्, ईश, मन, घ्राण, से युक्त ४ योगी के लिये ५ योग यज्ञ साधनों के देने वाले ६ हूजियै ७ हे सर्व व्यापी ८ योगी ९ इन १० हृदय मन को ११ अपनी किरणों से स्तम्भन करो जिस प्रकार १२ गगन मंडल को १३ अपनी किरणों से १४ सब ओर १५ धारण किया १६ गुरु के उपदेश से॥ १६॥

देवश्रुतौ देवेष्वा घोषतम्प्राचीप्रेतमद्धुरङ्कल्पयन्तीऊर्द्ध्वं यज्ञन्नयतम्मा जिह्वरतम्॥ स्वङ्गोष्ठमावदतन्देवी दुर्यश्रायुर्म्मानिर्व्वी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिष्टम्प्रजाम्मा निर्वादिष्टमत्र रमेथां वर्ष्मन्पृथिव्याः १७
देवश्रुतौ। देवेषु। शंघोषेतम्। अध्वरम्। कल्पयन्ती। प्राची।
प्रेतम्। यज्ञम्। ऊर्ध्वं। नयतम्। मा। जिह्वरेतम्। दुर्या। देवी।
स्व। गोष्ठं। आवदतम्। आयुः। मा। निर्वादिष्टम्। प्रजाम्। मा
निर्वादिष्टम्। पृथिव्याः। अत्र। वर्ष्मन्। रमेथां॥ १७॥

अथाधिदेवम्- इस कंडिका में ४ मंत्र हैं उन को कहते हैं, शाला के द-
क्षिण द्वार से लाई हुई पत्नी ४ वार लिये हुए होम से शेष घृत को लेकर दो
नों अक्ष के धुर में लगाती है उस का मंत्र १ शकटों के चलते यजमान को कह-
लाता है वह मंत्र ४ चक्र घर्षण से उत्पन्न अव्यक्त शब्द शकट में होने पर यज
मान से कहलाता है वह मंत्र ३ उत्तर वेदी की तीन परिक्रमा हो जाने पर दोनों शक
टों मध्य फल का धारण करके अध्वर्यु दोनों शकटों को एक साथ अभिमंत्र-
ण करता है उसका मंत्र ४॥

ओं देवश्रुतावित्यस्य (वशिष्ठ ऋ० याजुषी पंक्तिश्छं० अक्षधुरौ दे०) १
ओं प्राची प्रेतमित्यस्य (तथा ० निचृदार्षी गायत्रीछं० हविर्धानं दे०) २
ओं स्वं गोष्ठमित्यस्य (तथा ० भुरिगार्षी गायत्रीछं० तथा ०) ३
ओं अत्र रमेथामित्यस्य (तथा ० याजुषी पंक्तिश्छंदः० तथा ०) ४

पदार्थः- १ हे देव सभा में प्रसिद्ध अक्ष के अग्र भाग तुम दोनों २ देवताओं
में ३ उच्च ध्वनि से कहो कि यजमान यज्ञ करता है ४ इस कर्म को ५ समर्थ क
रते तुम ६ पूर्व मुख ७ जाओ ८ इस यज्ञ को ९,१० स्वर्गवासी देवताओं के पा
स प्राप्त करो ११,१२ कुटिल वा चलित मत होओ १३,१४ हे गृह समान शक
टरूप देवताओ १५ अपने १६ गोष्ठ (गो शाला) में १७ सब ओर कहो १८ य-
जमान की आयु को १९,२० पशु धन आदि से रहित मत उच्चारण करो २१ य-
जमान की प्रजा पुत्र आदि रूप को २२,२३ दुष्ट वाक्य मत कहो अर्थात् श्रुति-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अनुसार दोनों ओर से बंधा हुआ अक्ष वरुण देव रूप और दुष्ट वाक्य है उस कारण शाप रूप दुर्वाक्य के परिहारार्थ आशीर्वाद रूप सुवाक्य इस मंत्र से प्रार्थना किया जाता है हे शकटो तुम दोनों २४ पृथिवी के २५ इस २६ देह रूप देव यजन स्थान में २७ क्रीडा करो॥ १७॥

अथाध्यात्मम्— १ हे प्राण अपान तुम दोनों २ ब्रह्म परा नारायण नाम देवताओं में ३ उच्चारण करो ४ योग यज्ञ को ५ समर्थ करते ६ गगनमंडल को ७ जाओ ८ यजमान को ९ ब्रह्म में १० प्राप्त करो ११,१२ कुटिल वा चलित मत होओ १३,१४ हे सूक्ष्म लिंग शरीर देवताओ १५ अपने १६ इंद्रिय स्थान में १७ सब ओर कथन करो १८ प्रारब्ध समाप्ति तक यजमान की आयु को १९,२० खंडित मत करो २१ प्राण को २२,२३ खंडित मत करो हे सूक्ष्म लिङ्ग शरीर २४ भूमि सम्बंधी २५ इस २६ स्थूल शरीर में २७ क्रीडा करो॥ १७॥

विष्णोर्न्नुकं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजाꣳसि। योऽअस्कभायदुत्तरꣳसधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायो विष्णवेत्वा १८

नुकं। विष्णोः। वीर्याणि। प्रवोचं। यः। पार्थिवानि। रजांसि। विममे। यः। त्रेधा। विचक्रमाणः। उरुगायः। उत्तरम्। सधस्थं। अस्कभायत्। विष्णवे। त्वा॥ १८॥

अथाधिदैवम्— इस कंडिका में दो मंत्र हैं उन को कहते हैं, अध्वर्यु दोनों हविर्धानि को उत्तर ओर से परिक्रमण करि दक्षिण हविर्धानि को स्तम्भ पर खड़ा करता है उस का मंत्र १ शकट बंधन के अर्थ स्थूण को अग्नि कोण में गाड़ता है उसका मंत्र २

ओं विष्णोर्नुकमित्यस्य (औतथ्यो दीर्घतमा ऋ० स्वराडार्षी त्रिष्टुप् छं० विष्णुर्दे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदार्थः— जो १ ब्रह्मा विष्णु महेश रूप धारी है उस २ सर्वव्यापी परमात्मा के ३ कर्मों को ४ मैं कहता हूं ५ जिस विष्णु ने ६ भूमि अन्तरिक्ष स्वर्ग संबंधी ७ ज्योतियों को ८ निर्म्माण किया ९ जिस १० अग्नि वायु सूर्य रूप से ११ लोकों में तीन पद रखने वाले १२ महात्माओं से स्तुति किये गये ने १३,१४ देवताओं के सह वास स्थान ब्रह्म लोक को १५ स्तंभित किया है काष्ठ के स्थूण १६ विष्णु की प्रीति के अर्थ १७ तुझे गाड़ता हूं ॥ १८॥

अथाध्यात्मम्— जो १ नाभि हृदय भ्रुकुटि में विष्णु ब्रह्म शिव रूपधारी योगी है उस २ योगी के ३ योग यज्ञ सम्बंधी कर्मों को ४ कहता हूं ५ जिसने ६ इन्द्रिया स्थानों के अन्तरिक्ष सम्बंधी ७ ज्योतियों को ८ निर्माण किया ९ जिस १० जाठराग्नि प्राण मानस सूर्य रूप से ११ तीन पद रखने वाले १२ वाग्आदि से स्तुत योगी ने १३,१४ इन्द्रियों के सह वास स्थान प्रधान मानस कमल को १५ स्तंभित किया है सूक्ष्म देह के स्तम्भ रूप अस्थि १६ योगी के लिये १७ तुझे अचल करता हूं ॥ १८॥

दिवो वा विष्णा उत वा पृथिव्या महो वा विष्णा उरोरन्तरिक्षात्। उभा हि हस्ता वसुना पृणस्वा प्रयच्छ दक्षिणा दोत सव्या विष्णो वेत्वा ॥ १९॥

१ विष्णो। २ विष्णो। ३ दिवः। ४ वा। ५ पृथिव्याः। ६ उत। ७ वा। ८ महः। ९ उरोः। १० अन्तरिक्षात्। ११ वा। १२ वसुना। १३ उभा। १४ हि। १५ हस्ता। १६ पृणस्व। १७ दक्षिणात्। १८ सव्यात्। १९ उत। २० प्र। २१ यच्छ। २२ विष्णो। २३ वे। २४ त्वा॥ १९॥

अथाधिदैवम्— प्रतिप्रस्थाता उत्तर हविर्धान को खड़ा करता है उसका मंत्र १

ओं दिवो वेत्यस्य (औतथ्यो दीर्घतमा ऋ० निचृदार्षीजगती छं० विष्णुर्दे०) १

पदार्थः— १ हे सर्वव्यापी २ विष्णु ३ स्वर्गलोक से ४ और ५ पृथिवी लो-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क से ६ भी ७ और ८ बड़े ९ विस्तीर्ण १० अन्तरिक्ष से ११ भी १२ द्रव्य द्वारा १३ दोनों १४ ही १५ हाथों को १६ पूर्ण करो फिर १७ दहिने हाथ से १८ और वाम हाथ से १९ भी २० हम को दोहे काष्ठ के घूण २१ विष्णु की प्रीति के अर्थ २२ तुझे गाड़ता हूं ॥ १९॥

अथाध्यात्मम्– वाक् आदि ऋत्विज कहते हैं १ हे सर्व व्यापी २ योग यज्ञ के यजमान ३ भ्रकुटि ४ और ५ मन से ६ भी ७ और ८ बड़े ९ विस्तीर्ण १० हार्दान्तरिक्ष से ११ भी १२ योग संपत्ति द्वारा १३ दोनों १४ ही १५ हाथों को १६ पूर्ण करो फिर १७ दहिने हाथ से और १८ वाम हाथ से १९ भी २० हम को दे हे लिङ्ग देह के स्तम्भ रूप अस्थि २१ योगी के लिये २२ तुझे अचल करता हूं ॥ १९॥

प्रतद्विष्णुस्तवते वीर्य्येण मृगोन भीमः कुचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा २०

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
तत्। भीमः। कुचरः। मृगः। न। गिरिष्ठाः। विष्णुः। वीर्येण।
१० ११ १२ १३ १४ १५
प्रस्तवते। यस्य। उरुषु। त्रिषु। विक्रमणेषु। विश्वा। भुवनानि। अधिक्षियन्ति॥ २०॥

अथाधिदैवम्– मध्यम छदी का स्पर्श कर उच्चारण करता है वह मंत्र १॥

ओं प्रतद्विष्णु रित्यस्य (औतथ्यो दीर्घतमा ऋ० विराडार्षीत्रिष्टुप्छं० विष्णुर्देव०

पदार्थः १ वह २ राम आदि अवतारों से असुरों का भय दाता ३ पृथिवी में मत्स्य आदि रूप से गमन शील ४ वाराह आदि अवतार धारण करने वाला ५ और ६ वेद वाणी वा देह में अंतर्यामी रूप से स्थित ७ विष्णु ८ इति हास पुराण में कथित असुर बध भक्त धर्म रक्षण रूप पराक्रम से ९ स्तुति किया

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता है १० जिस विष्णु के ११ वहुत वड़े १२,१३ जीव ईश प्रति विंव रूप पाद प्रक्षेपण स्थान तीनों लोक में १४ सव १५ चतुर्दश संख्या वाले भुवन १६ निवास करते हैं ॥२०॥ **अथाध्यात्मम्**– १ वह २ काम आदि का भय दाता ३ योग भूमि में गमन शील ४ ब्रह्म दर्शन के अर्थ चेष्टा मान ५ और ६ भृकुटि वा गगन मंडल में वसन शील ७ योगी ८ योग वल के कारण ९ स्तुति किया जाता है १० जिस योगी के ११,१२,१३ विस्तीर्ण पाद प्रक्षेपण स्थान षट् चक्रों में १४ सव १५ भुवन १६ निवास करते हैं ॥२०॥

विष्णो रराट मसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा २१

विष्णोः। रराटम्। असि। विष्णोः। श्नप्त्रे। स्थः। विष्णोः। स्यूः। असि। विष्णोः। ध्रुवः। असि। वैष्णवम्। असि। विष्णवे। त्वा॥२१॥

अथाधिदैवम्– इस कंडिका में ५ मंत्र हैं उन को कहते हैं दोनों हविर्धान शकट को दक्षिणोत्तर भाग में स्थापन कर उन के आवरण रूप हविर्धान नाम मंडप को बनाता है और वह मंडप जिस का देवता विष्णु है विष्णु कहाता है और मूर्त्त धारी विष्णु के सव अव यव होने से ललाट नाम अव यव है उसी प्रकार हविर्धान मंडप के पूर्व द्वार वर्त्ती स्तम्भ के मध्य कोई दर्भ माला गूंदी जाती है उस माला को वा उस के वंधना धार तिरछे वांस को सम्वोधन कर पुरुष ललाट रूप कहते हैं उस का मंत्र १ उच्चाई ललाट की प्रांतों को स्पर्श कर उच्चारण करता है उस का मंत्र २ फिर अध्वर्यु काठ की सूची में पिरोई हुई रस्सी से द्वार की चारों थूण द्वार शाखाओं को सींता है उस का मंत्र ३

ॐ प्रश्न दो अर्थ के सम्भव में विष्णु और ज्ञानी का एकत्व सिद्ध होता है उसमें क्या प्रमाण है, उत्तर, ब्रह्म वित् ब्रह्म ही होता है यह श्रुति– ज्ञानी तो मेरा ही आत्मा है यह गीता का वचन प्रमाण है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीवन के आरंभ में रस्सी की जड़ में गांठ लगाता है उस का मंत्र ४ पूर्वाग्र वांसों के मंडप को बना कर स्पर्श करता है उसका मंत्र ५

ओं विष्णोरराट मित्यस्य (औतथ्यो दीर्घतमा ऋ० याजुषी उष्णिक् छं० विष्णुर्दे० १)
ओं विष्णो रित्यस्य (तथा ० दैवी पंक्ति श्छं० तथा ०) ३
ओं वैष्णव मित्यस्य (तथा ० याजुषी बृहती छं० तथा ०) ५

पदार्थः– हे दर्भमय माला के आधार वांस तुम १ विष्णु रूप हविर्धानि मंडप के २ ललाट स्थानीय ३ हो हे ललाट की प्रांत तुम दोनों ४ विष्णु नामक हविर्धानि मंडप के ५ ओष्ठ संधि रूप ६ हो हे काठ की सुई तुम ७ हविर्धानि के ८ सूची ९ हो हे रस्सी की गांठ तुम १० हविर्धानि की ११ ग्रंथि १२ हो हे हविर्धानि तुम १३ विष्णु सम्बंधी १४ हो इस कारण १५ विष्णु प्रीति के अर्थ १६ तुझे स्पर्श करता हूं॥२१॥

अथाध्यात्मम्– हे स्थूल शरीर तुम अपने अवयव से १ योगी के २ ललाट ३ हो हे ललाट में विद्यमान इड़ा पिंगला नाड़ी तुम ४ योगी की ५ ओष्ठ संधि रूप ६ हो हे सुषुम्ना तुम ७ योगी के अर्थ ८ जीव ईश का योग करने वाली ९ हो हे उक्त नाड़ियों के संगम स्थान तुम १० योगी की ११ ग्रंथि १२ हो हे शिर तुम १३ योगीसम्बंधी १४ हो १५ योगी की प्रीति के अर्थ १६ तुझे स्पर्श करता हूं॥२१॥

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। आददे नार्यसीदमहꣳ रक्षसां ग्रीवा अपि कृन्तामि बृहन्नसि बृहद्रवा बृहतीमिन्द्रायवाचं वद॥२२॥

सवितुः। देवस्य। प्रसवे। अश्विनोः। बाहुभ्याम्। पूष्णः। हस्ताभ्याम्। त्वा। आददे। नारी। असि। बृहत्। बृहद्रवाः। असि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्राय[१५]। बृहतीम्[१६]। वाचं[१७]। वदं[१८]। इदम्[१९]। अहं[२०]। रक्षसाम्[२१]। ग्रीवाः[२२]। अपि[२३]। कृन्तानि[२४]॥२२॥

अथाधिदैवम्— इस कंडिका में ४ मंत्र हैं उन को कहते हैं, काठ से निर्मित खोदने की साधन अभ्रि को ले कर यूप वाट को चिन्हित करता है उसका मंत्र १ चिन्ह क्रम से उपर वों को खोदता है उसके मंत्र २,३,४

ओं देवस्य त्वेत्यस्य (ओं तथ्यो दीर्घ तमाऋ० प्राजा पत्या बृहती छं० अभ्रिर्दे०) १
ओं आददे इत्य स्य (तथा ० याजुषी गायत्री छं० ० तथा) २
ओं इदमित्य स्य (तथा ० आसुरी उष्णिक् छं० ० रक्षोघ्नो दे०) ३
ओं बृहन्न सीत्या स्य (तथा ० आर्षी पंक्ति श्छं० ० उपर वो दे०) ४
वैषावीमित्यन्त्यस्य (

पदार्थः— हे अभ्रि १ सविता २ देवता की ३ आज्ञा में वर्त्तमान होता में ४ अश्विनी कुमार की ५ बाहु भाव को प्राप्त अपनी भुजाओं और ६ पूषा देवता के ७ हस्त भाव को प्राप्त अपने हाथों से ८ तुझ को ९ ग्रहण करता हूं तुम तो १० खोदने का साधन और कर्म में उपयोगी होने से अनुष्ठाता मनुष्यों से सम्बंध रखनेवाली ११ हो हे उपर व नाम गढ़े ले तुम १२ वर्तुल गढेले के प्रादेश मात्र परिमाण और बाहु मात्र खुदने से बड़े १३ और बड़ी ध्वनि वाले १४ हो १५ इन्द्र के अर्थ १६ बड़ी ध्वनि वाले १७ वचन को १८ कहो १९ यह २० मैं अध्वर्यु २१ यज्ञविनाशक राक्षसों के २२ कंठ स्थानों को २३ ही २४ काटता हूं॥२२॥

अथाध्यात्मम्— हे बुद्धि १,२ गुरु देवता की ३ आज्ञा में वर्त्तमान होता में ४ पृथिवी स्वर्ग रूप हृदय मन की ५ ग्रहण शक्तियों और ६ मानस सूर्य की ७ ग्रहण शक्तियों से ८ तुझ को स्वीकार करता हूं ९ तुम तो १० नर सम्बिधनी ११ हो हे गगन मंडल रूप गर्त तुम १२ महान् १३ अनाहत शब्द वाले १४ हो १५ यजमान के अर्थ १६ ब्रह्म सम्बंधिनी १७ तत्व मसि नाम वचन को १८

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहौ १९ यह २० मैं ज्ञानचक्षु २१ काम आदि की २२ ग्रीवा को २३ भी २४ काटता हूं

२२॥ रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवीमिदमहन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे निष्ट्यो यम मात्यो निचखानेदमहन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे समानो यम समानो निचखानेदमहन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे बन्धुर्यम सबन्धुर्निचखानेदमहन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे सजातो यम सजातो निचखानोत्कृत्याङ्किरामि॥२३॥

रक्षोहणं। वलगहनं। वैष्णवीम्। निष्ट्यः। यम्। अमात्यः। यम्। मे। निचखान। अहम्। तम्। इदम्। वलगम्। उत्किरामि। समानः। यम्। असमानः। यम्। मे। निचखान। अहम्। तम्। इदम्। वलगम्। उत्किरामि। सबन्धुः। यम्। असबन्धुः। यम्। मे। निचखान। अहम्। तम्। इदम्। वलगम्। उत्किरामि। सजातः। यम्। असजातः। यम्। मे। निचखान। अहम्। तम्। इदम्। वलगम्। उत्किरामि। कृत्याम्। उत्किरामि॥२३॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में ५ मंत्र हैं उन को कहते हैं, खोदने के पीछे खननक्रमानुसार सब उपरवों से खोदी मिट्टी को बाहर निकालता है उसके मंत्र १ से ४ तक, पीछे सब उपरवों से कृत्या को निकालता है उस का मंत्र ५

ओंइदमित्यस्य (औतथ्यो दीर्घतमा ऋ० निचृदार्षी गायत्री छं० लिंगोक्तदे०) १
ओंइदमहमित्यस्य (तथा ० भुरिगार्षी गायत्री छं० तथा) २,३,४
ओंकृत्यामित्यस्य (तथा ० याजुषी गायत्री छं० तथा) ५

पदार्थः- पूर्व मंत्र कथित वचन १ राक्षस वध विषयक २ कृत्या का नाशक ३ और यज्ञ रक्षक विष्णु से सम्बध रखने वाला है ४ साथ रहने वाले जन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समूह वा चांडाल आदि ५ जिस कृत्या का मेरे वध के लिये प्रयोग किया तथा ६ मंत्री ने ७ जिस कृत्या का ८ मेरे वध के लिये ९ प्रयोग किया १० में ११ उस १२ इस १३ कृत्या को १४ हटाता हूं १५ धन कुल आदि से समान मनुष्य ने १६ जिस कृत्या को और १७ धन कुल आदि में न्यून वा अधिक ने १८ जिस कृत्या को १९ मेरे वध के लिये २० प्रयोग किया २१ मैं २२ उस २३ इस २४ कृत्या को २५ दूर फेंकता हूं २६ कुल शील आदि से समान मामा फूफी के बेटे आदि ने २७ जिस कृत्या को २८ उस के विपरीत मनुष्य ने २९ जिस कृत्या को ३० मेरे वध के लिये ३१ प्रयोग किया ३२ मैं ३३ उस ३४ इस ३५ कृत्या को ३६ दूर फेंकता हूं ३७ भाई ने ३८ जिस कृत्या का ३९ उस के विपरीत मनुष्य ने ४० जिस कृत्या का ४१ मेरे वध के लिये ४२ प्रयोग किया ४३ मैं ४४ उस ४५ इस ४६ कृत्या को ४७ दूर फेंकता हूं ४८ तथा प्रयोग करने वाले शत्रुओं से संपादित कृत्या को ४९ उठा कर दूर फेंकता हूं ॥२३॥ **अथाध्या०** पूर्व मंत्रोक्त वचन १ कामादि के वध से सम्बंध रखने वाला २ कामादि से प्रेरित कृत्या का नाशक ३ यजमान सम्बंधी है ४ इन्द्रिय समूह ने ५ जिस कृत्या को ६ मनने जिस कृत्या को ८ मेरे संसार बंधन के अर्थ ९ प्रयोग किया १० में ११ उस १२ इस १३ देह में विद्यमान विषय वासना को १४ दूर फेंकता हूं १५ जीवने १६ जिस को १७ देह ने १८ जिस को १९ मेरे बंधन के लिये २० प्रयुक्त किया २१ मैं २२ उस २३ इस २४ विषय या सक्ति को २५ दूर फेंकता हूं २६ प्रति बिंब ने २७ जिस को २८ कामने २९ जिस को ३० मेरे बंधन के लिये ३१ प्रयुक्त किया ३२ मैं ३३ उस ३४ इस ३५ देह में विद्यमान विषय वासना को ३६ दूर फेंकता हूं ३७ प्रारब्ध ने ३८ जिस को ३९ वर्त्तमान जन्म के कर्म फल ने ४० जिस को ४१ मेरे बंधन के लिये ४२ प्रयुक्त किया ४३ मैं ४४ उस ४५ इस ४६ विषय या सक्ति को ४७ दूर फेंकता हूं तथा ४८ प्रयोग करने वाले कामादि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शत्रुओं से संपादित कृत्या को ४९ उठा कर दूर फेंकता हूं॥ ३३॥

स्वराडसि सपत्नहा सत्त्वराडस्यभिमातिहा जनराडसि रक्षोहा सर्वराडस्यमित्रहा॥ २४॥

सपत्नहा। स्वराट्। असि। अभिमातिहा। सत्त्वराट्। असि। रक्षोहा। जनराट्। असि। अमित्रहा। सर्वराट्। असि॥ २४॥

अथाधिदैवम्— अध्वर्यु उन उपरवों को खनन क्रम से यजमान को स्पर्श कराता है उसके मंत्र १ से ४ तक॥

ओं स्वराडसीत्यस्य (औतथ्यो दीर्घतमा ऋ० प्राजापत्या गायत्री छं० उपरवो देवता)१
ओं सत्त्वराडसीत्यस्य (तथा ० याजुषी बृहती छं० ० तथा)२
ओं जनराडसीत्यस्य (तथा ० प्राजापत्या गायत्री छं० तथा)३
ओं सर्वराडसीत्यस्य (तथा ० तथा ० तथा)४

पदार्थः— हे प्रथम गर्त्त तुम १ शत्रु नाशक २ आपही प्रकाश मान ३ हो हे द्वितीय गर्त्त तुम ४ शत्रु घाती ५ द्वादशाह आदि यज्ञों में शोभामान ६ हो हे तीसरे गर्त्त तुम ७ यज्ञ विनाशक राक्षसों को मारने वाले ८ यजमान आदि के मध्य शोभा मान ९ हो हे चौथे गर्त्त तुम १० शत्रु नाशक ११ और सब के मध्य शोभा मान १२ हो॥ २४॥

अथाध्यात्मम्— हे श्रोत्र रूप गर्त्त तुम १ भगवत् कथा श्रवण से काम आदि के नाशक २ आत्मा में शोभा मान ३ हो हे चक्षु रूप गर्त्त तुम ४ भगवद्विभूति के दर्शन से कामादि क शत्रु के नाशक ५ आत्मा रूप यजमान में शोभा मान ६ हो हे नासिका रूप गर्त्त तुम ७ प्राणायाम से कामादि शत्रु के नाशक ८ और योगी में शोभा मान ९ हो हे मुख रूप गर्त्त तुम १० पाठ आदि के द्वारा कामादि शत्रु के नाशक ११ और विष्णु नामोच्चारण से शोभा मान १२ हो— इस अर्थ में श्रुति प्रमाण है और वह यह है, इस का शिर हवि धानि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है और शिर में श्रोत्र आदि ४ कूप हैं॥ २४॥

रक्षोहणो वो वल गहनः प्रोक्षामि वैष्णवान्रक्षोहणो वो वल गहनोवन यामि वैष्णवान्रक्षोहणो वो वल गहनो वस्त्टणामि वैष्णवान्रक्षोहणो वो वल गहनाउपदधामि वैष्णवी रक्षोहणो वो वल गहनो पर्य्यूहामि वैष्णवी वैष्णव मसि वैष्णवास्थ॥ २५॥

रक्षोहणः। वल गहनः। वैष्णवान्। वः। प्रोक्षामि। रक्षोहणः। वल गहनः। वैष्णवान्। वः। अवन यामि। रक्षोहणः। वल गहनः। वैष्णवान्। वः। अवस्त्टणामि। रक्षोहणो। वल गहनो। वैष्णवी। वो। उपदधामि। रक्षोहणो। वल गहनो। वैष्णवी। वो। पर्यूहामि। वैष्णव मसि। वैष्णवाः। स्थ॥ २५॥

अथाधिदैवम्।— इस कंडिका में ७ मंत्र हैं उन को कहते हैं, अध्वर्यु लौकिक जल से इन उपरवों को प्रोक्षण करता है उस का मंत्र १ गर्त्तों में प्रोक्षण शेष जल का सींचना और कुशाओं से आच्छादन करना यह दोनों कर्म करता है उसके मंत्र २, ३ उन उपरवों के ऊपर सूक्ष्म, स्थूल पूर्वाग्र वा उत्तराग्र कुशाओं को फैला कर दो अधिषवण फलक (जिन पर सोम निचोड़ते हैं) को पूर्वाग्र पर स्पर्श मिले हुए वा दो अंगुल के अंतर से रखता है और उन के चारों ओर मिट्टी लगाता है उसके मंत्र ४, ५ उन दोनों अधिषवण फलक के ऊपर सब ओर से लाल वर्ण चारों ओर काटने से समान किये हुए अधिषवण चर्म को रखता है उस का मंत्र ६ उस चर्म पर सोमाभिषव के कारण ५ पांच पाषाण को स्थापित करता है उस का मंत्र ७॥

ओं रक्षोहणा इत्यस्य (औतथ्यो दीर्घतमा ऋ० प्राजापत्यानुष्टुप् छं० विष्णुर्दे०) १:

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं रक्षोहण इत्यस्य क्षेतथ्यो दीर्घतमा ऋ० भुरिग्प्राजापत्यानुष्टुप छं० उपरवो दे०) २
तथा (तथा ० तथा तथा ०) ३
ओं रक्षोहणौ वामित्यस्य (तथा ० आर्ची गायत्री छं० विष्णु दे०) ४
ओं रक्षोहण इत्यस्य (तथा ० भुरिग्प्राजापत्यानुष्टुप छं० उपरवो दे०) ५
ओं वैष्णवमित्यस्य (तथा ० दैवी पंक्ति श्छं० ० विष्णु दे०) ६
ओं वैष्णवास्थेत्यस्य (तथा ० दैवी बृहती छं० ० तथा) ७

पदार्थः– १ राक्षस नाशक २ मारण प्रयोग को नष्ट करने वाले ३ विष्णु को देवता रखने वाले ४ तुम गर्त्तों को ५ प्रोक्षण करता हूं ६ राक्षस नाशक ७ मारण प्रयोग को नष्ट करने वाले ८ विष्णु को देवता रखने वाले ९ तुम गर्त्तों को १० सींचता हूं ११ राक्षस नाशक १२ मारण प्रयोग को नष्ट करने वाले १३ विष्णु को देवता रखने वाले १४ तुम गर्त्तों को १५ कुशाओं से आच्छादन करता हूं हे अधिषवण फलक १६ राक्षस नाशक १७ कृत्या विनाशक १८ विष्णु को देवता रखने वाले १९ तुम दोनों को २० एक गर्त्त पर स्थापन करता हूं हे अधिषवण फलक २१ राक्षस नाशक २२ कृत्या विनाशक २३ विष्णु को देवता रखने वाले २४ तुम दोनों को २५ मिट्टी से चारों ओर आच्छादन करता हूं हे चर्म तुम २६ यज्ञ रक्षक विष्णु सम्बंधी २७ हो हे पाषाणो तुम २८ यज्ञ रक्षक विष्णु सम्बंधी २९ हो॥२५॥

अथाध्यात्मम्– हे शिर में विद्यमान चक्षु आदि १ काम आदि के नाशक २ काम आदि से रचित विषय वासना के नाशक ३ योगी सम्बंधी ४ तुम को ५ प्राण में विद्यमान ब्रह्म ज्योति रस रूप जलों से प्रोक्षण करता हूं ६ काम आदि के नाशक ७ काम आदि से रचित विषय वासना के नाशक ८ योगी सम्बंधी ९ तुम को १० पूर्वोक्त जलों से सींचता हूं ११ काम आदि के नाशक १२ कामादि से रचित विषय वासना के नाशक १३ योगी सम्बंधी १४ तुम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को १५ लोम रूप दर्भों से आच्छादन करता हूं हे अधिषवण फलक रूप हनू १६ का मादि के नाशक १७ काम कृत्या के विनाशक १८ योगी सम्बंधी १९ तुम दोनों को २० दोनों नेत्र के ऊपर स्थापन करता हूं हे हनू २१ कामादि के नाशक २२ काम कृत्या के विनाशक २३ योगी सम्बंधी २४ तुम दोनों को २५ दृढ़ करता हूं हे जिव्हा तुम २६ योगी सम्बंधी २७ हो हे दन्तो तुम २८ योगी सम्बंधी २९ हो यजमान के शिर का संस्कार किया ॥ २५॥

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे श्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। आददे नार्य्यसीदमहꣳ रक्षसां ग्रीवा अपि कृन्तामि यवोसि यवयास्मद्द्वेषो यवयारातीर्दिवे त्वान्तरिक्षाय त्वा पृथिव्यै त्वा प्रुन्धन्तां लोकाः पितृषदनाः पितृषदनमसि॥२६॥

सवितुः। देवस्य। प्रसवे। अश्विनोः। बाहुभ्याम्। पूष्णः। हस्ताभ्याम्। त्वा। आददे। नारी। असि। इदम्। अहꣳ। रक्ष सम्। ग्रीवाः। अपि। कृन्तामि। यवः। असि। द्वेषः। अस्मत्। यवय। अरातीः। यवय। दिवे। त्वा। अन्तरिक्षाय। त्वा। पृथिव्यै। त्वा। पितृषदनाः। लोकाः। प्रुन्धन्ताम्। पितृषदनम्। असि॥ २६॥

अथाधिदेवम्— इस कंडिका में ९ मंत्र हैं उनमें तीन का विनियोग कहचुके यजमान के शरीर की समान गूलर की शाखा को सदनाम मंडप के बीच गाड़ता है और गाडने से पहले वह शाखा यूप की समान भूमि पर पड़ी होती है यूपावट खनन के अनुसार अभिस्वीकार से लेकर कुशोपस्तरण पर्यंत सब पदार्थों को मंत्रों से ही करता है उसका मंत्र १ अभि लेकर गर्त्त को चिन्हित करता है उसके मंत्र २, ३ जल पात्र में जौ डाल कर उस जल से अग्र मध्य मूल को प्रोक्षण करता है इसके मंत्र ४,५ ६,७ शेष जल को अवट में सींचता है उसका मंत्र ८ उस अवट में पूर्वाग्र वा उत्तराग्र कु

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाओं को विछाता है उस का मंत्र ९

ओं देवस्य त्वा देवस्य त्वा— इस के तीनों विन योग ऊपर लिख चुके १,२,३

ओं यवो सीत्यस्य (औतथ्योदीर्घतमाऋ० आसुरीउष्णिक छं० यवोदे०) ४ से ६ तक

ओं दिवे त्वेत्यस्य (तथा ० याजुषीजगती छं० औदुम्बरीदे०) ७

ओं शुन्धन्तामित्यस्य (तथा ० याजुषी पंक्ति श्छं० पितरो दे०) ८

ओं पितृषदन मित्यस्य (तथा ० दैवीजगती छं० तथा ०) ९

पदार्थः—हे अश्वि १ सविता २ देवता की ३ आज्ञा में वर्त्तमान में ४ अश्वनी कुमार की वह भाव को प्राप्त अपनी भुजा ओं ६ पूषा देवता के ७ हस्त भाव को प्राप्त अपने हाथों से ८ तुझे ९ ग्रहण करता हूं तुम १० नर सम्बंधिनी ११ हो १२ यह १३ मैं १४ राक्षसों की १५ ग्रीवाओं को १६ भी १७ काटता हूं हे यव तुम १८ शत्रुओं के हटाने वाले १९ हो २० शत्रु वादी भाग्य को २१ हम से २२ दूर करो २३ अदान शील वा शत्रुओं को २४ दूर करो हे औदुम्बरी के अग्र भाग २५ स्वर्ग लोक की प्रीति के अर्थ २६ तुझे प्रोक्षण करता हूं हे मध्य भाग २७ अन्तरिक्ष लोक की प्रीति के अर्थ २८ तुझे प्रोक्षण करता हूं हे मूल भाग २९ पृथिवी की प्रीति के अर्थ ३० तुझे प्रोक्षण करता हूं ३१ पितरों के वास स्थान ३२ लोक ३३ इस जल सेचन से शुद्ध हों हे कुशा तुम ३४ पितरों के बैठने का आसन ३५ हो॥ २६॥

अथाध्यात्मम्—

अब लिङ्ग शरीर का संस्कार वर्णन करते हैं हे बुद्धि रूप वज्र १,२ गुरु देवता की ३ आज्ञा में वर्त्तमान में ४ हृदय मन की ५ ग्रहण शक्तियों और ६ मानस सूर्य की ७ ग्रहण शक्तियों से ८ तुझे ९ ग्रहण करता हूं तुम १० नर सम्बंधी ११ हो १२ यह १३ मैं १४ कामादि की १५ ग्रीवाओं को १६ भी १७ काटता हूं हे प्राण तुम १८ कामादि के हटाने वाले १९ हो २० कामादि को २१ हम से २२ पृथक् करो २३ विषयों को २४ पृथक् करो हे लिङ्ग शरीर के अग्र भाग २५ भृकुटि की प्राप्ति के अर्थ २६ तुझे प्रोक्षण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ण करता हूं हे लिंग शरीर के मध्य भाग २७ हार्दान्त रिक्ष की प्राप्ति के अर्थ २८ तुझे प्रोक्षण करता हूं हे लिंग शरीर के मूल भाग २९ मानस कमल की प्राप्ति के अर्थ ३० तुझे प्रोक्षण करता हूं ३१ मनो वृत्ति के आलय रूप ३२ लोक ३३ शुद्ध हों हे मानस कमल तुम ३४ मनो वृत्ति स्थान ३५ हो॥ २६॥

उद्दिवꣳ स्तभानान्तरिक्षमृणस्तदꣳहस्त्वा पृथिव्यान्द्युतानस्त्वा मारुतो मिनोतु मित्रा वरुणौ ध्रुवेण धर्मणा। ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि रायस्पोषवनि पर्यूहामि ब्रह्म दꣳह क्षत्रन्दꣳहायुर्दꣳह प्रजान्दꣳह॥ २७॥

१ २ ३ ४ ५ ६
दिवꣳ। उत्तभान। अन्तरिक्षम्। ऋणः। पृथिवीम्। आदꣳ
७ ८ ९ १० ११ १२
हस्त्व। मित्रा वरुणौ। द्युतानः। मारुतः। ध्रुवेण। धर्म्मणा। त्वा।
१३ १४ १५ १६ १७ १८
मिनोतु। ब्रह्मवनि। क्षत्रवनि। रायस्पोषवनि। त्वा। पर्यूहामि। ब्र-
१९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६
ह्म। दꣳह। क्षत्रं। दꣳहं। आयुः। दꣳह। प्रजाम्। दꣳहे। २७

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में ४ मंत्र हैं उनको कहते हैं, औदुम्बरी को ऊंची करता है उस का मंत्र १ औदुम्बरी शाखा को गर्त्त में डालता है उसका मंत्र २ पर्यूहण से लेकर उपसेचन पर्यन्त जैसा यूप में किया वैसा यहां भी करता है और यूप के अवट को मिट्टी से पूरित करता है उसका मंत्र ३ अध्वर्यु उस मृत्ति का पूरित गर्त्त को मैत्रा वरुण दंड से कूटता मिट्टी को अवट के भीतर प्रवेश करता है उसका मंत्र ४

ओं उद्दिवमित्यस्य (औतथ्यो दीर्घतमा ऋ० भुरिग्प्राजापत्यानुष्टुप् छं० औदुम्बरीदेवे १
ओं द्युतानरित्यस्य (तथा ० आर्ष्युष्णिक् छं० ० तथा) २
ओं ब्रह्मवनीत्यस्य (तथा ० भुरिग्साम्नी बृहती छं० ० तथा) ३
ओं ब्रह्मेत्यस्य (तथा ० आसुरी गायत्री छं० ० तथा) ४

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदार्थः—हे औदुम्बरी तुम १ स्वर्ग लोक को २ स्तम्भन करो ३ अन्तरिक्ष को ४ पूरित करो ५ पृथिवी को ६ दृढ़ करो हे औदुम्बरि ७ मित्रा वरुणा नाम दोनों देवता ८ तथा दीप्य मान ९ वायु देवता १० स्थिर ११ धारण के द्वारा १२ तुझे १३ गर्त्त में डालों हे औदुंबरि १४ ब्राह्मणों से सेवनीय १५ क्षत्रियों से सेवनीय १६ धन पुष्टि के लिये सेवनीय १७ तेरे चारों ओर १८ मिट्टी डालता हूं हे औदुम्बरि तुम १९ ब्राह्मण जाति को २० दृढ़ करो २१ क्षत्री जाति को २२ दृढ़ करो २३ जीवन को २४ दृढ़ करो २५ पुत्र आदि रूप प्रजा को २६ दृढ़ करो ॥ २७ ॥

अथाध्यात्मम्—हे भूतात्मन तुम १ भृकुटि को २ स्तम्भन करो ३ हार्दान्तरिक्ष को ४ पूरित करो ५ मानस कमल को ६ दृढ़ करो ७ प्राण उदान तथा ८ दीप्य मान ९ अपान १०, ११ योग मार्ग से १२ तुझ को १३ पुरुष में डालो हे भूतात्मन १४ मन से सेवनीय १५ प्राण से सेवनीय १६ योग पुष्टि के लिये सेवनीय १७ तुझ को १८ अचल करता हूं हे भूतात्मन् १९ मन को २० दृढ़ कर २१ प्राण को २२ दृढ़ कर २३ आयु को २४ दृढ़ कर अर्थात् अल्प मृत्यु से रक्षा कर २५ इन्द्रियों को २६ दृढ़ कर ॥ २७ ॥

ध्रुवासि ध्रुवो यं यजमानोऽस्मिन्नायतने प्रजया पशुभिर्भूयात्। घृतेन द्यावा पृथिवी पूर्येथामिन्द्रस्य छदिरसि विश्वजनस्य छाया ॥ २८ ॥

ध्रुवा। असि। अयम्। यजमानः। अस्मिन्। आयतने। प्रजया। पशुभिः। ध्रुवः। भूयात्। घृतेन। द्यावा पृथिवी। पूर्येथाम्। इन्द्रस्य। छदिः। विश्वजनस्य। छाया। असि ॥ २८ ॥

अथाधिदैवम्—इस कंडिका में तीन मंत्र हैं उनको कहते हैं औदुम्बरी को स्पर्श कर पढ़ता है वह मंत्र १ अध्वर्यु औदुम्बरी के द्विशाखोत्पत्ति प्रदेश में स्रुवा द्वारा घृत से होम करता है उसका मंत्र २ औदुम्बरी गाड़ने के पीछे सदन नाम मंडप को निर्माण कर उसके ऊपर आवरण के लिये तृण निर्मित कटको आ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोपण करता है उस का मंत्र ३

ओं ध्रुवा सीत्यस्य (श्रौतथ्यो दीर्घतमा ऋ० निचृद्दार्षी गायत्री छं० औदुम्बरी दे०) १

ओं घृते नेत्यस्य (तथा ० याजुषी त्रिष्टुप् छं० द्यावा पृथिवी दे०) २

ओं इन्द्रस्येत्यस्य (तथा ० साम्न्युष्णिक् छं० इन्द्रो देवता) ३

पदार्थः – हे औदुम्बरि तुम १ स्थिर २ हो ३ यह ४ यजमान ५ इस ६ अपने गृह में ७ संतान ८ और गौ आदि पशुओं से ९ स्थिर १० होवे होमे हुए ११ घृत से १२ पृथिवी स्वर्ग १३ पूरित हों हे तृण मय कट तुम १४ इन्द्र सम्बंधी १५ कट और १६ सद मध्य वर्त्ती यजमान ऋत्विज रूप प्राणियों के १७ आवरण के लिये छाया १८ हो क्योंकि सद का देवता इन्द्र है ॥ २८ ॥

अथाध्यात्मम् – हे लिंग शरीर रूप माया तुम १ अचला २ हो ३ यह ४ आत्मा रूप यजमान ५ इस ६ भ्रकुटि स्थान में ७ प्राण ८ और इन्द्रियों के साथ ९ अचल १० होवे होमी हुई ११ इन्द्रियों की शक्ति से १२ मन और भ्रकुटि १३ क्रम पूर्वक पूरित हों हे नाड़ी रचित कट तुम १४ यजमान के १५ कट १६ और इन्द्रिय समूह के १७ आवरण के लिये छाया १८ हो ॥ २८ ॥

परित्वा गिर्वणो गिरः इमा भवन्तु विश्वतः। वृद्धायुमनु वृद्धयो जुष्टा भवन्तु जुष्टयः ॥ २९ ॥

गिर्वणः। इमाः। अनु वृद्धयः। गिरः। त्वा। वृद्धायुम। विश्वतः। परि भवन्तु। जुष्टयः। जुष्टाः। भवन्तु ॥ २९ ॥

अथाधिदैवम् – छावने के पीछे लोक प्रसिद्ध छै परिवारों से सद को चारों ओर आच्छादन करता है उस का मंत्र १

ओं परित्वेत्यस्य (श्रौतथ्यो दीर्घतमा ऋ० अनुष्टुप् छं० इन्द्रो दे०) १

पदार्थः – १ हे स्तुति योग्य परमेश्वर २ यह ३ सवन क्रम से वृद्धि युक्त ४ स्तोत्र शास्त्र रूप वाणी ५ तुझ ६ बड़े अन्न वान को ७ सब ओर से ८ ग्रहण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कीजियो और ९ हमारी सेवा तेरी १० प्रिय ११ हूजियो॥ २९॥

अथाध्यात्मम्– लिङ्ग शरीर कहता है १ हे स्तुति योग्य आत्मा २ यह ३ क्रम से वृद्धि युक्त ४ महा वाक्य ५ तुझ ६ प्राण आदि बड़े अन्न वाले को ७ सब और से ८ ग्रहण करो ९ और हमारी सेवा १० तेरी प्रिय ११ हों॥ २९॥

इन्द्रस्य स्यूरसीन्द्रस्य ध्रुवोसि। ऐन्द्रमसि वैश्वदेवमसि॥ ३०॥

इन्द्रस्य। स्यूः। असि। इन्द्रस्य। ध्रुवः। असि। ऐन्द्रम्। असि। वैश्वदेवम्। असि॥ ३०॥

अथाधिदैवम्– इस कंडिका में ४ मंत्र हैं उन को कहते हैं, पूर्व द्वार के दक्षिण स्थूण आदि के प्रदक्षिण क्रम से चारों द्वार्य का परिषी वन रस्सी में गांठ लगाना और स्पर्श करता है उसके मंत्र १,२,३ हविर्धान मंडप के वायव्य कोण के उत्तर भाग में आग्नीध्र नामक अग्नि स्थान को निर्याण कर उस का स्पर्श करता है उस का मंत्र ४॥

ओं इन्द्रस्येत्यस्य (मधुच्छंदा ऋ० याजुषी गायत्री छं० इन्द्रो दे०) १,२
ओं ऐन्द्रमित्यस्य (तथा ० दैवी बृहती छं० तथा ०)३
ओं वैश्वदेवमित्यस्य (तथा ० याजुषी गायत्री छं० विश्वे देवा दे०) ४

पदार्थः– हे रस्सी तुम १ सदोभिमानि इन्द्र देवता से सम्बंध रखने वाली २ सीवने की वस्तु ३ हो हे ग्रंथि तू ४ इन्द्र सम्बंधी होकर ५ स्थिर ६ है हे सद तुम ७ इन्द्र सम्बंधी ८ हो हे आग्नीध्र तुम ९ सर्व देव सम्बंधी १० हो॥ ३०॥

अथाध्यात्मम्– हे षुषुम्ना तुम १ यजमान को २ ब्रह्म से युक्त करने वाली ३ हो हे भृकुटि की ज्योति तुम ४ यजमान के ५ आत्मा ६ हो हे हृदय रूप सद तुम ७ यजमान सम्बंधी ८ हो हे मानसान्तरिक्ष तुम ९ इन्द्रिय समूह संबंधी १० हो॥ ३०॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब सोलह धिष्णा के मंत्रों को कहते हैं,

विभूरसि प्रवाहणो वह्निरसि हव्यवाहनः। श्वात्रोसि प्रचेतास्तुथोसि विश्ववेदाः ॥ ३१ ॥

विभुः। प्रवाहणः। असि। वन्हिः। हव्यवाहनः। असि। श्वात्रः। प्रचेता। असि। तुथः। विश्ववेदाः। असि॥ ३१॥

अथाधिदैवम्— इस कंडिका में ४ मंत्र हैं उन को कहते हैं, अध्वर्यु उत्तर मुख बैठ कर अग्नियों के आश्रय भूत छोटी वेदी रूप धिष्णियों को मिट्टी से बनाता है वहां प्रथम आग्नीध्र की वेदी को संभालता है उसका मंत्र १ तिस के पीछे पश्चिम मुख अध्वर्यु पूर्व में सद के द्वार को उसके उत्तर में होता के धिष्णय को सम्हालता है उस का मंत्र २ फिर उत्तर मुख अध्वर्यु औदुम्बरी के अग्नि कोण और होत्र धिष्णय के दक्षिण दिशा में मैत्रा वरुण के धिष्णय को सम्हालता है उस का मंत्र ३ होत्र धिष्णय के उत्तर ब्राह्मणाच्छंसि, पोता, नेष्टा, अच्छावाक् चारों ऋत्विजों के समानांतर धिष्णियों को सम्हालता है उनमें पहिले का मंत्र ४

ओं विभूरसीत्यस्य (मधुच्छंदा ऋ० प्राजापत्या गायत्री छं० अग्निर्दे०) १
ओं वन्हिरसीत्यस्य (तथा ० याजुषी बृहती छं० तथा) २
ओं श्वात्रासीत्यस्य (तथा ० याजुषी गायत्री छं० तथा) ३
ओं तुथोसीत्यस्य (तथा ० दैवी जगती छं० तथा) ४

पदार्थः— हे आग्नीध्रीय धिष्णय के अग्नि तुम १ नाना रूप धारक २ हवि के प्रवाहक ३ हो हे होत्र धिष्णय के अग्नि तुम ४ यज्ञ कर्म के निर्वाहक ५ देवताओं को हव्य प्राप्त कराने वाले ६ हो हे मैत्रा वरुण धिष्णय के अग्नि तुम ७ शीघ्र गामी मित्र रूप ८ और श्रेष्ठ ज्ञान वाले वरुण रूप ९ हो हे ब्राह्मणाच्छंसि धिष्णय के अग्नि तुम १० ब्रह्म रूप अथवा देवताओं में दक्षिणा विभाग

CC-0. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने वाले और ११ सर्वज्ञ १२ हो॥ ३१॥

अथाध्यात्मम्- हे हार्दान्तरिक्ष के अग्नि तुम १ कमलों पर त्रिदेव आदि रूप धारण करने वाले २ ब्रह्म परा नारायण के अर्थ हवि के पहुंचाने वाले ३ हो हे वागाभिमानी अग्नि तुम ४ ज्ञान यज्ञ के निर्वाहक ५ ब्रह्म परा नारायण के अर्थ हव्य प्रापक ६ हो हे मानसाग्नि तुम ७ शीघ्र गामी ८ श्रेष्ठ ज्ञान से युक्त ९ हो हे अहङ्कार नामनो वृत्ति विशेष तुम १० ब्रह्म रूप ११ और सर्वज्ञ १२ हो ॥३१॥ अथवा इस का दूसरा अर्थ यह है, हे ब्रह्माग्नि तुम १ अपनी माया से बहु रूप धारी २ अपनी आत्मा को प्राप्त करानें वाले ३ हो ४ ईशाग्नि ५ और जीव को अपनी आत्मा में धारण करने वाले ६ हो ७ ब्रह्मा विष्णु महेश के रक्षक ८ और ज्ञान स्वरूप ९ हो १० ब्रह्म ११ और सर्वज्ञ १२ हो ॥ ३१॥

उशिगसि कविरङ्घारिरसि बम्भारिरवस्यूरसि
दुवस्वाञ्छुन्ध्यूरसि मार्ज्जालीयः सम्राडसि कृ
शानुः परिषद्योऽसि पवमानोऽनभोऽसि प्रतक्वामृ
ष्टोऽसि हव्यसूदनऽऋतधामासि स्वर्ज्योतिः ३२

उशिक्। कविः। असि। अङ्घारिः। बम्भारिः। असि। अवस्यूः। दुवस्वान्। असि। शुन्ध्यूः। मार्जालीयः। असि। सम्राट्। कृशानुः। असि। परिषद्यः। पवमानः। असि। नभः। प्रतक्वा। असि। मृष्टः। हव्यसूदनः। असि। ऋतधामा। स्वर्ज्योतिः। असि। ३२

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में ९ मंत्र हैं उन को कहते हैं, पोता नेष्टा और अच्छावाक् के धिष्ण्यों को सम्हालता है उन के मंत्र १, २, ३ मार्जालीयाधिष्ण्य को सम्हालाता है उस का मंत्र ४ अध्वर्यु सद के पूर्व द्वार के पूर्व भाग में स्थित हो कर आहवनीय, वहिष्यवमान देश, चात्वाल, शामित्र और औदुम्बरी को देखता है उन के मंत्र ५ से ९ तक-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं उशिग सीत्यस्य (मधुच्छंदा ऋ० याजुषी गायत्री छं० अग्निर्दे०) १
ओं अङ्गारीत्यस्य (तथा ० याजुष्यनुष्टुप् छं० तथा) २
ओं अवस्यूरसीत्यस्य (तथा ० तथा ० तथा) ३
ओं शुन्ध्यूरसीत्यस्य (तथा ० तथा ० तथा) ४
ओं सम्राडसीत्यस्य (तथा ० याजुष्युष्णिक् छं० आहवनीयो दे०) ५
ओं परिषद्यो सीत्यस्य (तथा ० याजुषी गायत्री छं० वहिष्यमानो दे०) ६
ओं नभो सीत्यस्य (तथा ० तथा ० चात्वालो दे०) ७
ओं मिष्टो सीत्यस्य (तथा ० याजुष्यनुष्टुप छं० शामित्रो दे०) ८
ओं ऋतधामा सीत्यस्य (तथा ० तथा ० औदुम्बरिर्दे०) ९

पदार्थः— हे पोत्रधिषाग्ने तुम १ कामनीय २ और क्रांतदर्शी ३ हो हे नेष्टृधिषाय के अग्नि तुम ४ पाप के नाशक ५ और पोषक ६ हो हे अच्छावाकधिषाय के अग्नि तुम ७ अन्न चाहने वाले ८ और हविष्मान् ९ हो क्योंकि अच्छावाक ही पुरोडाश के भाग को पाता है हे मार्जलीय धिषाय के अग्नि तुम १० पवित्र करने वाले ११ और मार्जन करने वाले १२ हो क्योंकि उस स्थान पर पात्र धोये जाते हैं हे उत्तर वेदी में विद्यमान आहवनीय तुम १३ वहुप्रकार की आहुति धारणा करने से भले प्रकार शोभा मान औ १४ पयोव्रत आदि से कृश यजमान के अनुगामी १५ हो हे वहिष्यमान देश तुम १६ स्तुति कारक ऋत्विजों की सभा के योग्य १७ और पवित्र करने वाले १८ हो हे चात्वाल तुम १९ छिद्र रूप होने से आकाश स्वरूप और २० ऋत्विजों के प्रदक्षिणा चलने से प्रतक्रा नाम २१ हो हे शामित्र तुम २२ यज्ञ में हिंसा के अभाव से हिंसा होने पर भी शुद्ध २३ और हविपाक का कारण २४ हो हे औदुम्बरि तुम २५ साम गान को उपवेशन स्थान रखने वाली २६ और सूर्य ज्योति से प्रकाशित २७ हो ॥ ३२ ॥

अथाध्यात्मम्— हे चित्तनामाग्नि तुम १ कामनीय २ सर्वत्र क्रांतद-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शी मेधावी ३ हो हे ज्ञानाग्नि तुम ४ पाप नाशक ५ और पोषक ६ हो हे वाग् ह
ति विशेष तुम ७ विराट रूप अन्न को प्रकृति में युक्त करने वाले ८ और प्रति
विंव रूप हवि से युक्त ९ हो हे विज्ञानाग्नि तुम १० पवित्र कारक ११ और ज्यो
ती रस रूप अमृत से मार्जन करने वाले १२ हो हे ईशाग्नि तुम १३ सर्वेश्व
र होने से शोभा मान १४ और माया बिकारों से क्षीण यज मान के अनु गा
मी १५ हो हे योग भूमि तुम १६ स्तुति कारक योगी वा भक्तों की सभा के यो
ग्य १७ और पवित्र करने वाली १८ हो हे विष्णु रूप अग्नि तुम १९ आकाश
वत् व्यापक २० प्राप्ति योग्य २१ हो हे ज्ञानाग्नि तुम २२ ज्ञान द्वारा सब उपाधि
यों के नाशक रने में भी शुद्ध २३ और जीवात्म रूप हवि पाक के कारण २४
हो हे लिङ्ग शरीराग्नि तुम २५ ब्रह्म ज्योति से युक्त २६ और सूर्य ज्योति से
युक्त २७ हो॥ ३२॥ अथवा इसका दूसरा अर्थ यह है-

हे ब्रह्माग्नि तुम १ विष्णु, शिव, परा, और ब्रह्मा का रूप धारण करने वाले
२ और सर्वज्ञ ३ हो ४ पाप के शत्रु ५ और सब के पोषक ६ हो ७ विराट् रू
प अन्न को अपनी आत्मा में लय करने वाले ८ और प्रति विंव रूप हवि से
संपन्न ९ हो १० पवित्र कारक ११ और ज्योती रस रूप जल से मार्जन कर
ने वाले १२ हो १३ भले प्रकार शोभा मान १४ और माया विकारों से क्षीण
योगी के अनु गामी १५ हो १६ स्तुति कारक भक्तों की सभा के योग्य १७
और पवित्र करने वाले १८ हो १९ आकाश वत् व्यापक २० और प्राप्ति
योग्य २१ हो २२ शुद्ध २३ और माया रूप हवि के नाशक २४ हो २५ स
त्य ज्योति २६ और सूर्य ज्योति २७ हो॥ ३२॥

समुद्रोसि विश्वव्यचा अजोस्येकपादहिर
सि बुध्नो वा गस्यैन्द्र मसि सदो स्यृतस्य द्वा
रौ मा मासन्तासमद्भना मध्व पतेप्रमातिर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वस्ति मेऽस्मिन्पथि देवयाने भूयात् ३३

समुद्रः। विश्वेव्यचः। असि। अजः। एकपात्। असि। अहिः। बुध्न्यः। असि। वाक्। असि। ऐन्द्रम्। असि। सदः। असि। ऋतस्य द्वारौ। मा। मा सन्ताप्तम्। अध्वपते। अध्वना। मा। प्रतिर। अस्मिन्। देवयाने पथि। मे। स्वस्ति। भूयात्॥ ३३॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में ६ मंत्र हैं उन को कहते हैं, अध्वर्यु सद के पूर्व द्वार के पूर्व भाग में स्थित होता ब्रह्मा सन शाला द्वार और प्राजहित को देखता है उन के मंत्र १,२,३ सद का स्पर्श करता है उस का मंत्र ४ सद के द्वार में लगे हुए थूणों को स्पर्श करता है उसका मंत्र ५ सूर्य को अभिमंत्रण करता है उसका मंत्र ६

ओं समुद्रोसीत्यस्य (मधुच्छंदा ऋ० प्राजापत्या गायत्री छं० ब्रह्मासनं दैवतं) १
ओं अजोसीत्यस्य (तथा ० दैवी पंक्तिश्छंद ० अग्निर्दे०) २
ओं अहिरसीत्यस्य (तथा ० दैवी पंक्तिश्छंद ० गार्हपत्याग्निर्दे०) ३
ओं वागसीत्यस्य (तथा ० याजुषी बृहती छं ० सदो दे०) ४
ओं ऋतस्येत्यस्य (तथा ० याजुषी पंक्ति छं ० द्वार्यशाखे दे०) ५
ओं अध्वनामित्यस्य (तथा ० निचृदार्षी गायत्री छं ० सूर्यो दे०) ६

पदार्थः - हे ब्रह्मासन तुम १ सब देवताओं के सन्मुख आने का स्थान अथवा समुद्रवत् ज्ञान से गंभीर ब्रह्मा का आसन २ यज्ञ में कृत अकृत के देखने का स्थान ३ हो हे प्राचीन वंश शाला द्वार वर्त्ती अग्नि तुम ४ आहवनीय रूप से यज्ञ प्रदेश में जाने वाले अथवा अजन्मा ५ अकेले रक्षक अथवा सब प्राणी जिस का एक पाद है ऐसे ६ हो हे पत्नी शाला पश्चिम भाग वर्त्ती प्राजहित नाम गार्हपत्याग्नि तुम ७ शाला द्वारी यनूतन गार्हपत्य के उत्पन्न होने पर भी अक्षय रूप ८ और आधान काल में प्रथम स्थापित होने के कारण मूल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप ९ हो हे सद तुम १० अपने मध्य वाक् से कर्म होने के कारण वाग् रूप ११ हो १२ इन्द्र को देवता रखने वाले १३ हो १४ बैठने के स्थान १५ हो १६ हे यज्ञ द्वार देश में स्थापित शाखाओ तुम दोनों १७ मुझ को १८, १९ मत संतप्त करो २० हे मार्ग रक्षक सूर्य २१ मार्गों के मध्य वर्त्तमान २२ मुझ को २३ वृद्धि दो २४ इस २५ देवयान प्रापक २६ यज्ञ मार्ग में २७ मेरा २८ कल्याण २९ होवै॥ ३३॥ **अथाध्यात्मम्** – हे मानस कमल तुम १ समुद्र वत् गंभीर २ और विश्व रूप ३ हो हे मुखाग्नि तुम ४ मानस सूर्य से उत्पन्न ५ और विष्णु रूप ६ हो हे जीवाग्नि तुम ७ अविनाशी ८ और ब्रह्म में प्रादुर्भूत ९ हो हे उदराग्नि तुम १० प्राण वायु को चारों ओर से प्राप्त ११ हो १२ यजमान सम्बंधी १३ हो इन्द्रियों के भोग स्थान १५ हो १६ हे मोक्ष के द्वार ब्रह्म रंध्र और सूर्य १७ मुझे १८, १९ संतप्त मत करो २० हे मार्ग रक्षक सूर्य २१ मार्गों के मध्य वर्त्तमान २२ मुझ को २३ वृद्धि दो २४ इस २५ देवयान २६ मार्ग में २७ मेरा २८ कल्याण २९ होवै॥ ३३

दूसरा अर्थ- हे ब्रह्माग्नि तुम १ भले प्रकार उत्कृष्ट मोक्ष के दाता २ सर्वगत ३ हो ४ अजन्मा ५ ब्रह्मा विष्णु महेश और महा माया रूप से रक्षक ६ हो हे जीवात्मा तुम ७ अविनाशी ८ और ब्रह्म में प्रकट मानसान्तरिक्ष में प्रादुर्भूत ९ हो हे ब्रह्मांड के उदर तुम १० समष्टि वायु से चारों ओर युक्त ११ हो १२ ईश्वर सम्बंधी १३ हो १४ भोग स्थान १५ हो १६ हे मोक्ष के द्वार भक्ति ज्ञान १७ मुझ को १८, १९ संतप्त मत करो २० हे मोक्ष मार्ग रक्षक महा विष्णु २१ कर्म उपासना ज्ञान नाम मार्गों के मध्य वर्त्तमान २२ मुझ को २३ वृद्धि दो जिस प्रकार २४ इस २५ देवयान २६ मार्ग में २७ मेरा २८ कल्याण २९ होवै॥ ३३॥

मित्रस्य मा चक्षुषेक्षध्वमग्नयः सगराः सगरा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थ सगरेणनाम्ना रौद्रेणानीकेन पात मांग्नयः
पिपृत मांग्नयो गोपायत मानमोवोस्तु मामाहि
ष्ठं सिष्ट ॥३४॥

मित्रस्य। चक्षुषा। मा। ईक्षध्वम्। अग्नयः। सगराः। सगरेण।
नाम्ना। सगराः। स्थ। अग्नयः। रौद्रेण। अनीकेन। मा। पात-
म्। अग्नयः। मा। पिपृत। मा। गोपायत। वः। नमः। अस्तु।
मा। मा। हि ष्ठं सिष्ट॥ ३४॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में दो मंत्र हैं उन को कहते हैं यजमान स
ब ऋत्विजों को अभि मंत्रण करता है उस का मंत्र १ अध्वर्यु आग्नीध्रीय आ-
दि आठों धिषायों को अभि मंत्रण करता है उस का मंत्र २

ओं मित्रस्येत्यस्य (मधुश्छंदा ऋ० याजुषी बृहती छं० ऋत्विजो दे०) १
ओं अग्नयइत्यस्य (तथा ० निचृद्ब्राह्म्यनुष्टुप् छं० धिषायाः दे०) २

पदार्थः- हे ऋत्विजो १ सखा के २ नेत्र से ३ मुझे ४ देखो ५ हे धिषायों की
अग्नियो ६ स्तुति सहित तुम ७ स्तुति युक्त ८ नाम धिषाय करके ९ स्तुति कि
ये हुए १० हो ११ हे अग्नियो १२ उग्र १३ सेना वा मुख से १४ मुझ को १५ र-
क्षा करो १६ हे अग्नियो १७ मुझ को १८ धन आदि से परिपूर्ण करो १९
मुझ को २० रक्षा करो २१ तुम को २२ नमस्कार २३ हो २४ मुझ को २५,२६
मत मारो अर्थात् यज्ञ को निर्विघ्न करो॥ ३४॥

अथाध्यात्मम्- हे वाक् आदि ऋत्विजो १ सखा के २ नेत्र से ३ मु
झ को ४ देखो ५ हे इंद्रिय रूप धिषायो ६ संसार बंधन रूप विष वा रोग से
सहित तुम ७,८ सगर नाम करके ९ अन्तरिक्ष रूप १० हो ११ हे इन्द्रिय-
धिषाय में विद्यमान ब्रह्माग्नि की किरणो तुम १२ काम आदि के भयंकर १३
शम दमादि समूह से १४ मुझ को १५ रक्षा करो १६ हे इन्द्रिय शक्तियो १७

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझ को १८ योग लक्ष्मी से पूरित करो १९ मुझ को २० संसार से रक्षा करो २१ तुझ को २२ नमस्कार २३ हो २४ मुझ को २५,२६ मत मारो ॥ ३४॥

ज्योतिरसि विश्वरूपं विश्वेषान्देवानाᳬसमित्। त्वᳬसोम तनूकृद्भ्यो द्वेषोभ्योन्यकृतेभ्य उरु यन्तासि वरूथᳬस्वाहा। जुषाणो अप्तुराज्यस्य वेतु स्वाहा ॥ ३५॥

विश्वरूपं। ज्योतिः। असि। विश्वेषाम्। देवानाᳬ। समित्। सोम। त्वᳬ। अन्यकृतेभ्यः। द्वेषोभ्यः। तनूकृद्भ्यः। यन्ता। उरु। वरूथᳬ। असि। स्वाहा। जुषाणः। अप्तुः। आजस्य। वेतु। स्वाहा॥ ३५॥

अथाधिदैवम्— इस कंडिका में तीन मंत्र हैं उन को कहते हैं, ध्रुवा में से दधिमिश्र ५ बार लिये हुए एषदाज्य को लेता है उस का मंत्र १ प्रदीप्त इध्म के ऊपर एक बार लिये हुए घृत को जुहू से होम करता है उस का मंत्र २ फिर भी जुहू में एक बार ग्रहण किये हुए घृत को लेकर प्रदीप्त इध्म के ऊपर दूसरी आहुति को होमता है उस का मंत्र ३

ओंज्योतिरसीत्यस्य (मधुच्छंदा ऋ० साम्न्यनुष्टुप् छं० विश्वे देवा दे०) १
ओंत्वंसोमेत्यस्य (भृगुसुतकतुर्ऋ० अनवसाना गायत्री छं० सोमो दे०) २
ओंजुषाणइत्यस्य (तथा ० एकपदा विराट् छं० ० तथा ०) ३

पदार्थः— हे आज्य तुम १ रूपदान से विश्व के रूप २ और दीप्ति दान से ज्योति ३ हो ४ सब ५ देवताओं के ६ भले प्रकार दीपक हो ७ हे सोम ८ तुम ९ हमारे विरोधियों से प्रेरित १० शत्रुओं ११ और शरीर छेदक राक्षसों के लिये १२ दंड दाता १३ और बड़े १४ बल रूप १५ हो १६ उस तुझ के लिये यह होम हो १७ प्रसन्न १८ सोम १९ घृत का २० पान करो २१ उस सोम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये श्रेष्ठ होम हो॥ ३५॥

अथाध्यात्मम्— हे इन्द्रिय शक्ति समूह तुम १ विश्वरूप २ ज्योति ३ हो ४ सब ५ इन्द्रियों के ६ भले प्रकार दीपक हो ७ हे समष्टि सूर्य ८ तुम ९ माया से रचित १० द्वेष कारक ११ काम आदि के लिये ११ दंड दाता १३ और बड़े १४ बल १५ हो १६ उस तुझ के लिये यह होम हो १७ प्रसन्न १८ सूर्य १९ इन्द्रिय शक्ति समूह का २० पान करो २१ उसके लिये श्रेष्ठ होम हो ३५

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देववयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम॥ ३६॥

देव[१]! अग्ने[२]! विश्वानि[३]। वयुनानि[४]। विद्वान्[५]। अस्मान्[६]। राये[७]। सुपथा[८]। नय[९]। अस्मत्[१०]। जुहुराणम्[११]। एनः[१२]। युयोधि[१३]। ते[१४]। भूयिष्ठां[१५]। नम उक्तिं[१६]। विधेम[१७]॥ ३६॥

अथाधिदैवम्— आग्नीध्र प्रति गमन के लिये प्रवृत्त होने पर अध्वर्यु यजमान को कहलाता है उस का मंत्र १

ओं अग्ने नयेत्यस्य (अगस्त्य ऋ० त्रिष्टुप् छन्दः० अग्निर्दे०) १

पदार्थः— १, २ हे अग्नि देवता ३ सब ४ ज्ञानों को ५ जानने वाले तुम ६ हम अनुष्ठाताओं को ७ धन और यज्ञ फल के लिये ८ शोभन मार्ग से ९ प्राप्त करो १० हम अनुष्ठाताओं के ११ अभिलषित क्रिया के प्रति बंधक १२ पाप को १३ पृथक् करो १४ तेरे लिये १५ बहुत १६ नमस्कार विषयक वचन को १७ उच्चारण करते हैं॥ ३६॥

अथाध्यात्मम्— सूर्य भाव को प्राप्त यजमान प्रार्थना करता है १ हे ज्योति स्वरूप २ ब्रह्माग्नि ३ सब ४ ज्ञानों को ५ जानने वाले तुम ६ हम योगियों को ७ योग लक्ष्मी के लिये ८ शुभ मार्ग देवयान द्वारा ९ अपने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मा में प्राप्त करौ १० हम से ११ योग के प्रति बंधक १२ पाप को १३ पृथक् करौ १४ आप के लिये हम १५ वद्धत १६ हविषा पर्ण बचन को १७ उच्चारण करते हैं ॥ ३६॥

अयन्नो अग्निर्वरिवस्कृणोत्वयम्मृधः पुरएतु प्रभिन्दन्। अयं वाजाञ्जयतु वाजसातावयꣳ शत्रूञ्जयतु जर्हृषाणः स्वाहा ॥ ३७॥

अयम्। अग्निः। नः। वरिवः। कृणोतु। अयम्। मृधः। अभिन्दन्। पुरः। एतु। अयं। वाजसातौ। वाजान्। जयतु। जर्हृषाणः। अयꣳ। शत्रून्। जयतु। स्वाहा ॥ ३७॥

अथाधिदैवम् – सद के उत्तर भाग में सब को ले जा कर आग्नीध्रीय धिष्ण्य में अग्नि को स्थापन करता है उसका मंत्र १

ओं अयन्न इत्यस्य (अगस्त्य ऋ० – आर्षी त्रिष्टुप् छं० अग्निर्देवता) १

पदार्थः – १ यह २ अग्नि ३ हमारे ४ धन को ५ संपादन करौ ६ यह अग्नि ७ संग्रामों को ८ विदीर्ण करता ९ आगे १० आओ ११ यह १२ अन्न विभाग के निमित्त १३ अन्नों को १४ हमें देने के लिये जीतौ १५ अत्यंत हर्षित होता १६ यह अग्नि १७ शत्रुओं को १८ जीतौ १९ उसके लिये श्रेष्ठ होम हो ॥ ३७॥

अथाध्यात्मम् – १ यह २ ब्रह्माग्नि ३ हमारी ४ योग लक्ष्मी को ५ संपादन करौ ६ यह ७ कामादि के संग्रामों को ८ विदीर्ण करता ९ सन्मुख १० आ ह्वा ११ यह १२ योग यज्ञ के दानार्थ १३ इन्द्रिय आदि रूप अन्नों को १४ जय करौ १५ अत्यंत हर्षित १६ यह ब्रह्माग्नि १७ काम आदि शत्रुओं को १८ जीतौ १९ उसके लिये जीव रूप हवि दिया ॥ ३७॥

उरु विष्णो विक्रमस्वोरु क्षयाय नस्कृधि। घृतं घृतयोनेपिबप्रप्रयज्ञपतिन्तिर स्वाहा ॥ ३८॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विष्णो। उरु। विक्रमस्व। क्षयाय। नः। उरु। कृधि। घृतयोने। घृतं। प्रपिब। यज्ञपतिं। प्रतिरे। स्वाहा॥ ३८॥

अथाधिदैवम्— आहवनीय अग्नि में एक बार लिये हुए घृत को जुहू से होमता है उस का मंत्र १

ओंउरुविष्णा वित्यस्य (अगस्त्य ऋ० भुरिगार्ष्यनुष्टुप् छं० विष्णुर्दे०) १

पदार्थः—१ हे सर्वव्यापी आहवनीय २ बहुत ३ पराक्रम करो ४ और ब्रह्म में निवास के अर्थ ५ हम को ६ विराट् भाव से संपन्न ७ करो ८ हे अग्नि ९ घृत को १० पीवो ११ यजमान को १२ वृद्धि दो १३ उस तुझ के लिये श्रेष्ठ होम हो॥

अथाध्यात्मम्— वाक् आदि कहते हैं १ हे योगी २,३ बड़ा पराक्रम करो अर्थात् समाधि करो ४ और ब्रह्म में निवास के लिये ५ हम को ६ ब्रह्म रूप ७ करो ८ हे इन्द्रियों के कारण ९ इन्द्रिय शक्ति समूह को १० पान करो ११ आत्म प्रतिबिंब को १२ वृद्धि दो अर्थात् समष्टि प्रतिबिंब रूप करो १३ महा वाक् के प्रभाव से॥ ३८॥

देव सवितरेषते सोमस्त्त्वं रक्षस्त्व मात्वादभन्
एतत्त्वन्देव सोम देवो देवा ऽउपागा इदमहम्म
नुष्यान सह रायस्पोषेण स्वाहा निर्वरुणस्य
पाशान्मुच्ये॥ ३९॥

सवितः। देव। एषः। सोमः। ते। तं। रक्षस्व। त्वा। मा। दभन्। सोम। देव। एतत्। देवः। त्वम्। देवान्। आ। उपगाः। इदम्। अहम्। रायस्पोषेण। सह। मनुष्यान्। स्वाहा। वरुणस्य। पाशात्। निमुच्ये॥ ३९॥

अथाधिदैवम्— इस कंडिका में ३ मंत्र हैं उन को कहते हैं, जुहू आदि से लेकर आज्य स्थाली तक स्थापन करके उस के पीछे उन का स्प

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र्श आत्म स्पर्श और जल स्पर्श करके ब्राह्मण वा यजमान के सकाश से सोम को लेकर हविर्धान में प्रवेश कर फिर दक्षिण हविर्धान के नीड़ में प्राग्ग्रीवा और उत्तर लोम मृगचर्म को बिछा कर उस पर सोम को रखता है उस का मंत्र १ यजमान सोम का उपस्थान करता है उस का मंत्र २ हविर्धान मंडप से निकलने का मंत्र ३

ओं देव सवितरित्यस्य (अगस्त्य ऋ० आर्षी गायत्री छं० सविता दे०) १
ओं एतत्त्व मित्यस्य (तथा ० प्राजापत्या त्रिष्टुप् छं० सोमो दे०) २
ओं स्वाहानिरित्यस्य (तथा ० याजुषी त्रिष्टुप् छं० लिङ्गोक्त दे०) ३

पदार्थः-१ हे सब के प्रेरक २ देवता ३ यह ४ सोम ५ तेरे अर्थ अर्पण किया ६ उस सोम को ७ रक्षा करो असुर ८ तुझ सोम रक्षक को ९, १० मत पीड़ा दो ११ हे सोम १२ देव १३ यह १४ देवता १५ तुम १६ देवताओं को १७ चारों ओर से १८ प्राप्त हो जाओ १९ यह २० मैं यजमान २१ पशु आदि धन पुष्टि के २२ साथ २३ अपने मनुष्यों को प्राप्त हूं २४ सोम रूप अन्न देवताओं के अर्थ दान हो इस सोम दान के द्वारा मैं २५ बरुण की २६ पाश से २७ निरंतर मुक्त हूं ॥ ३९॥

अथाध्यात्मम्- १ हे मन २ देवता ३ यह ४ मानस सूर्य ५ तेरे अर्पण किया ६ उस मानस सूर्य को ७ प्रारब्ध समाप्ति तक पालन करो कामादि ८ तुझ को ९, १० पीड़ा मत दो ११ हे आत्म प्रतिबिंब १२ देव १३ यह १४ देवता १५ तुम १६ इन्द्रियों को १७ सब ओर से १८ प्रारब्ध समाप्ति तक प्राप्त हूजिये १९ यह २० मैं आत्मा २१ योग धन की पुष्टि के २२ साथ २३ सनकादि रूप गुरुओं को प्राप्त हूं २४ महा वाक् के प्रभाव से २५, २६ संसार से २७ निरंतर मुक्त हूं ॥ ३९॥

अग्नेव्रत पास्त्वे व्रत पायातवतनूर्मय्यभूदेषा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सात्वयि यो मम तनूस्त्वय्यभूदियꣳ सा मयि। यथा यथ न्नौ व्रत पते व्रतान्यनु मे दीक्षान्दीक्षा पति रमꣳ स्त्वानु तपस्तपस्पतिः॥४०॥

अद्। अग्ने। व्रत पाः। अस्तु। तव। यो। व्रतपाः। तनूः। मयि। अभूत्। सा। एषा। त्वयि। यो। उ। मम। तनूः। त्वयि। अभूत्। सा। इयम्। मयि। व्रत पते। नौ। व्रतानिः। यथा यथं। दीक्षा पतिः। मे। दीक्षां। अन्वमंस्त। तपस्पतिः। तपः। अनु॥ ४०॥

अथाधिदैवम् – आहवनीय में समिध रख कर मदन्ती का स्पर्श करगाढ़तर मुष्टि मेखला को करता है उस का मंत्र १

ओं अग्ने व्रत पा इत्यस्य (अगस्त्य ऋ० निचृद्ब्राह्मी त्रिष्टुप् छं० अग्नि दे०) १

पदार्थः १ हे लक्ष्मी नारायण रूप २ अग्नि तुम ३ मेरे व्रत के रक्षक ४ हों ५ आप का ६ जो ७ व्रत रक्षक ८ आत्मा प्रति विंब ९ मुझ में १० प्रकट हुआ है ११ वह १२ यह १३ तुम में लय हो १४,१५ और जो १६ मेरा १७ आत्मा १८ तुम में १९ प्राप्त हुआ है २० वह २१ यह २२ मुझ में है २३ हे व्रत पालक २४ हम तुम दोनों के २५ कर्म २६ अपने सम्बंध को अतिक्रमन करके हों जिस कारण २७ दीक्षा के स्वामी तुमने २८ मेरी २९ दीक्षा को ३० अङ्गीकार किया ३१ सब के रक्षक तुम ने ३२ मेरे उपसद रूप तप को ३३ अङ्गीकार किया॥ ४०॥

अथाध्यात्मम् – १ हे ब्रह्म परा रूप २ ब्रह्माग्नि तुम ३ योग यज्ञ के रक्षक ४ हूजियै ५ तेरा ६ जो ७ व्रत रक्षक ८ ईश रूप ९ मुझ में १० विराजमान हुआ है ११ वह १२ यह १३ तुम में लय हो १४,१५ और जो १६ मेरा १७ आत्मा १८ तुम में १९ प्राप्त हुआ है २० वह २१ यह २२ मुझ में है २३ हे योग व्रत के रक्षक ब्रह्माग्नि २४ हम तुम दोनों के २५ भक्ति पूजन और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोक्ष दान नामक कर्म २६ अपने सम्बंध को अति क्रमन करके हों जिस कारण २७ दीक्षा पति तुमने २८ मेरे २९ योग यज्ञ की दीक्षा को ३० अंगीकार किया ३१ और तप के स्वामी तुमने ३२ मेरे प्राणायाम, समाधि आदि रूप तप को ३३ अंगीकार किया॥ ४०॥

अथ पशुयागः

उरुविष्णो विक्रमस्वोरुक्षयायनस्कृधि। घृतङ्घृतयोनेपिबप्रप्रयज्ञपतिन्तिर स्वाहा॥ ४१॥

यूप काटने को जाना चाहता ४ वार लिये हुए घृत को आहवनीय अग्नि में होमता है उस का मंत्र १ इस मंत्र की व्याख्या ३८ वें मंत्र में हो चुकी ४१

अत्यन्याᳬअगान्नान्याᳬउपागामर्वाक्कापरेभ्योविदम्परोवरेभ्यः। तन्त्वाजुषामहेदेववनस्पतेदेवयज्यायैदेवास्त्वादेवयज्यायैजुषन्तांविष्णोवेत्वा। ओषधेत्रायस्वस्वधितेमैनंहिᳬसीः ४२

अन्याᳬ। अत्यगाम्। अन्याᳬ। न। उपागाम्। त्वा। परेभ्यः। अर्वाक्। अवरेभ्यः। परः। अविदम्। वनस्पते। देव। देवयज्यायै। ते। त्वा। जुषामहे। देवाः। देवयज्यायै। त्वा। जुषन्ताम्। त्वा। विष्णवे। ओषधे। त्रायस्व। स्वधिते। एनᳬ। मा। हिᳬसीः। ४२॥ अथाधिदैवम्— इस कंडिका में ४ मंत्र हैं उन को कहते हैं आज्य स्थाली को यूपाहुति के लिये संस्कार कर और आज्य शेष को लेकर अध्वर्यु सूत्रधार तक्षा के साथ यूप छेदन के लिये वन में जाता है यूप को स्पर्श करता है और पूर्व मुख स्थित होकर अभि मंत्रण करता है उसका मंत्र १ उस यूप वृक्ष को छेदन प्रदेश में घृत लिप्त स्रुवा से स्पर्श करता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका मंत्र २ कुश तरुण को रख कर उसके ऊपर कुठार से प्रहार करता है उसका मंत्र ३ यूप के कटने पर जो पहिला टुकड़ा गिरता है उस को यूपावट के मध्य डालने के लिये किसी सुगुप्त देश में रखता है उस का मंत्र ४

ओं अत्यन्या नित्यस्य (अगस्त्य ऋ० भुरिग्ब्राह्मी बृहती छं० वनस्पतिर्दे०) १

ओं विष्णवे त्वेत्यस्य (तथा ० तथा ० तथा) २

ओं ओषध इत्यस्य (तथा ० याजुषी गायत्री छं० ० कुशतरुणोदे०) ३

ओं स्वधित इत्यस्य (तथा ० दैवी जगती छं० ० परशुर्दे०) ४

पदार्थः — हे आगे वर्त्तमान यूप वृक्ष मैंने १ तुझ से अन्य वृक्षों को २ उलंघन किया है ३ दूसरे यूप योग्य वृक्षों के ४, ५ समीप नहीं गया ६ तुझ को ७ दूर वर्त्ती वृक्षों से ८ निकट और ९ निकटों से १० श्रेष्ठ ११ पाया १२ हे वृक्ष १३ देवता १४ देव यागार्थ १५ उस १६ तुझ को हम १७ सेवन करते हैं १८ देवता भी १९ देव यजन के लिये २० तुझ को २१ सेवन करो हे यूप वृक्ष २२ तुझे २३ यज्ञ के लिये स्पर्श करता हूं २४ हे ओषधि तुम २५ वज्र भय से मुझ को रक्षा करो २६ हे परशु २७ इस यूप को २८, २९ मत मारो॥ ४२॥

अथाध्यात्मम् — हे यजमान रूप स्थूल शरीर मैंने १ तुझ से अन्य बहुत जन्मों को २ अतिक्रमण किया है ३ वर्त्तमान देह से अन्य देहों के ४, ५ समीप नहीं गया ६ तुझ को ७ देवता आदि के शरीरों से ८ पश्चाद्वा पूर्व ९ और पशु आदि से १० श्रेष्ठ ११ पाया १२ हे देह वृक्ष १३ देवता १४ ब्रह्माग्नि के यागार्थ १५ उस १६ तुझ को हम १७ सेवन करते हैं १८ इन्द्रियां भी १९ देव यजन के लिये २० तुझे २१ सेवन करो हे देह वृक्ष २२ तुझे २३ योग यज्ञ के लिये स्पर्श करता हूं २४ हे इन्द्रिय शक्ति समूह २५ संसार से रक्षा करो २६ हे ज्ञान वज्र २७ इस भूतात्मा को २८, २९ संसार बंधन से मत नष्ट करो॥ ४२॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्यामा लेखीरन्तरिक्षमा हि ष्ठ सीः पृथिव्या
सम्भवाभ्रयष्ठ हित्वा स्वधितिस्तेति जानः प्रणि
नाय महते सौभगाय। अतस्त्वन्देव वनस्पते शत
वल्शो विरोह सहस्रवल्शा विवयष्ठ रुहेम॥

॥४३॥

द्याम्। मा। लेखीः। अन्तरिक्षम्। मा। हि ष्ठ सीः। पृथिव्या। सम्भव। हि। अभ्रयष्ठ। तेति जानुः। स्वधितिः। महते। सौभगाय। त्वा। प्रणिनाय। वनस्पते। देव। अतः। त्वं। शतवल्शः। विरोह। वयष्ठ। सहस्रवल्शाः। विरुहेम॥ ४३॥

अथाधिदैवम् - इस कंडिका में तीन मंत्र हैं उन को कहते हैं, गिरते हुए यूप को अभिमंत्रण करता है उस का मंत्र १ कुठार से छिन्न यूप वृक्ष के पत्ते आदि को गिरा कर शोधन करता है उस का मंत्र २ आज्य स्थाली से एक वार लिये हुए घृत को जुहू में लेकर छेदन प्रदेश में होमता है और छेदन प्रदेश को होम से संस्कार युक्त करता है उस का मंत्र ३

ओं द्यामा लेखीरित्यस्य (अगस्त्य ऋ० निचृत्साम्नीबृहती छं० वनस्पतिर्दे०)१
ओं अभ्रयमित्यस्य (तथा ० साम्नी त्रिष्टुप् छं० ० तथा ०)२
ओं अतस्त्वमित्यस्य (तथा ० आर्षी बृहती छं० ० तथा ०)३

पदार्थः - हे यूप वृक्ष तुम १ स्वर्ग लोक को २,३ मत स्पर्श करो ४ अन्तरिक्ष को ५,६ मत पीड़ा दो ७ पृथिवी के साथ ८ संगम करो, तात्पर्य यह यूप के वज्र रूप होने से लोकों की शांति मांगता है ९ जिस कारण १० यह ११ अति तीक्ष्ण १२ कुठार १३ बड़े १४ ऐश्वर्य के लाभार्थ १५ तुझ को १६ यूप रूप करता है १७ १८ हे वृक्ष देवता १९ इस स्थाणु से २० तुम २१ बहुत अङ्कुर वाले होते २५ उपजो और २३ हम २४ पुत्र पौत्र आदि द्वारा बहुत शाखा वाले २५ हो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वें॥ ४३॥

अथाध्यात्मम्— हे देह दक्ष तुम विराट् भाव को प्राप्त करके १ स्वर्गलोक को २,३ मत स्पर्श करो ४ अंतरिक्ष को ५,६ मत नष्ट करो ७ विस्तार शील अपरा प्रकृति के साथ ८ संगम करो ९ जिस कारण १० यह ११ अति तीक्ष्ण १२ ज्ञान वज्र १३ बड़े १४ योगैश्वर्य के लिये १५ तुझ को १६ कारण में प्राप्त करने के लिये काटता हूं १७,१८ हे भूतालन् १९ इस प्रारब्ध से २० तुम कटे हुए भी २१ वर्द्धत अंकुर वाले होते २२ प्रारब्धि समाप्ति तक उपजो २३ हम वाक् आदि भी २४ धारणाध्यान समाधि आदि के द्वारा वर्द्धत शाखा वाले २५ होवें॥ ४३॥

इति श्री भृगु वंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म कृते शुक्ल यजुर्वेदीय ब्रह्म भाष्ये आतिथ्यात्स्थाणु होमान्तस्तथा प्रतिविंब होम विधि वर्णनं नाम पंचमोध्यायः॥५॥

सोम सम्बंधी वेदी जिसमें प्रधान है, उस पांचवीं अध्याय में आतिथ्य से लेकर यूप निर्माण तक मंत्र कहे, अब जिस्में अग्नीषोमीय पशु प्रधान है उस, छटी अध्याय में यूप संस्कार से लेकर सोमाभिषव के उद्योग तक कहते हैं॥

हरिः ओं देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे श्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। आददे नारसीदमहꣳ रक्षसाङ्ग्रीवा अपि कृन्तामि। यवोसि यवयास्मद्द्वेषो यवयारातीर्दिवे त्वान्तरिक्षाय त्वा पृथिव्यै त्वा शुन्धन्तां लोकाः पितृषदनाः पितृषदनमसि १

पांचवी अध्याय में २६ कंडिका के मध्य इस मंत्र की व्याख्या की वहां लिंग शरीर का संस्कार था यहां तो स्थूल शरीर का संस्कार वर्णन होता है १

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्रेणीरसि स्वावेश उन्नेतृणामेतस्य वित्तादधि त्वा स्थास्यति देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु सुपिप्पलाभ्यस्त्वौषधीभ्यः। द्यामग्रेणास्पृक्षमन्तरिक्षम्मध्येनाप्राः पृथिवीमुपरेणा दृꣳहीः॥२॥

उन्नेतृणाम्। स्वावेशः। अग्रेणीः। असि। एतस्य। वित्तात्। त्वा। अधि। स्थास्यति। सविता। देवः। मध्वा। त्वा। अनक्तु। सुपिप्पलाभ्यः। औषधीभ्यः। त्वा। अग्रेण। द्याम्। अस्पृक्षः। मध्येन। अन्तरिक्षम्। आ। अप्राः। उपरेण। पृथिवीम्। दृꣳहीः॥२॥

अथाधिदैवम्– इस कंडिका में ४ मंत्र हैं उन को कहते हैं, यूप के अवट (गढ़ेले) में प्रथम शकल (यूप खंड) को डालता है उस का मंत्र १ घृत से यूप को मार्जन करता है उस का मंत्र २ ऊपर घृत से लिप्त चषाल (काष्ठ वा लोहे का कड़ा जिस में पशु बांधा जाता है) को यूपाग्र पर स्थापन करता है उस का मंत्र ३ उस यूप को ऊंचा करता है उस का मंत्र ४

ओं अग्रेणीरित्यस्य (शाकल्य ऋ० निचृद्गायत्री छं० शकलो दे०) १
ओं देवस्त्वेत्यस्य (तथा ० याजुषी पंक्तिश्छं० यूपो दे०) २
ओं सुपिप्पलाभ्यस्त्वेत्यस्य (तथा ० याजुषी बृहती छं० चाशालो दे०) ३
ओं द्यामित्यस्य (तथा ० निचृद्गायत्री छं० यूपो दे०) ४

पदार्थः– हे यूप शकल तुम १ उठाने वाले अध्वर्यों की २ सुख पूर्वक प्रवेश करने के योग्य तथा ३ कटते यूप से प्रथम प्राप्त होने वाली अथवा प्रथम यूप के अवट में प्राप्त होने वाली ४ हो वह तुम ५ इस कर्म को ६ जानों जो यूप ७ तेरे ८ ऊपर ९ स्थिति करेगा हे यूप १० सविता ११

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवता १२ मधुर घृत से १३ तुझे १४ सींचौ हे चषाल १५ शुभ फल युक्त १६ ओ षधियों के लिये १७ तुझ को यूप के आगे छोड़ता हूं हे यूप तुम ने १८ अग्र भाग से १९ स्वर्ग को २० स्पर्श किया है २१ मध्य भाग से २२ अंतरिक्ष को २३ चारों ओर से २४ पूर्ण किया है २५ अधो भाग से २६ पृथिवी को २७ दृढ़ किया है ॥२॥

अथाध्यात्मम् – हे सूक्ष्म शरीर तुम १ वाग्आदि ऋत्विजों के द्वारा २ अपरामें मेंसुख पूर्वक प्रवेश करने योग्य ३ प्रधान में प्राप्त होने वाले ४ हो वह तुम ५ इस कर्म को ६ जानों जो स्थूल शरीर ७ तुझे ८ आगे करके ९ प्रकृति में स्थिति करेगा हे यजमान रूप स्थूल शरीर १०, ११ ज्ञान प्रकाश से युक्त मन १२ इन्द्रिय शक्ति समूह के द्वारा १३ तुझे १४ सींचौ हे मन १५ शुभ फल से युक्त १६ इन्द्रिय शक्ति समूह के लिये १७ तुझ को छोड़ता हूं हे स्थूल शरीर तुम ने १८ शिर से १९ स्वर्ग को २० स्पर्श किया २१ शरीर के मध्य भाग से २२ अन्तरिक्ष को २३ चारों ओर से २४ पूरित किया है २५ अधो भाग से २६ पृथिवी को २७ दृढ़ किया है अर्थात् विराट् भाव को प्राप्त किया है॥२॥

यातेधामान्युश्मसि गमद्ध्येयत्र गावोभूरिशृङ्गा
अयासः। अत्राहतदुरुगायस्य विष्णोः परमम्प
दमवभारि भूरि। ब्रह्म वनि त्वा क्षत्र वनि राय स्पो
षवनि पर्य्यूहामि ब्रह्मदृꣳह क्षत्रदृꣳहायुर्दृꣳ
ह प्रजान्दृꣳह।३।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
या। ते। धामानि। सि। गमद्ध्ये। उश्मः। यत्र। भूरि शृङ्गाः। गावः।
१० ११ १२ १३ १४ १५ १६
अयासः। अत्र। उरु गायस्य। विष्णोः। परमम्। पदम्। आहे।
१७ १८ १९ २० २१ २२
तत्। भूरि। अवभारि। ब्रह्म वनिः। क्षत्र वनिः। राये स्पोष वनिः।
२३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०
त्वा। पर्य्यूहामि। ब्रह्म। दृꣳह। क्षत्रं। दृꣳह। आयुः। दृꣳह
३१ ३२
प्रजाम्। दृꣳह॥३॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में ३ मंत्र हैं उनको कहते हैं, अवट के मध्य यूप की जड़ को प्रवेश करता है उस का मंत्र १ अध्वर्यु यूप के अवट को धूल से भरता है और मैत्रावरुण नाम दंड से उस धूल भरे गढ़ेले को कूट कर पक्का करता है उसके मंत्र २,३

ओं यातइत्यस्य (दीर्घतमा ऋ० त्रिष्टुप् छं० ० यूपो दे०) १
ओं अत्रा हेत्यस्य (तथा ० साम्न्युष्णिक् छं० ० तथा) २
ओं ब्रह्मवनित्वेत्यस्य (तथा ० निचृत्याजा पत्या बृहती छं० तथा) ३

पदार्थः – हे यूप १ जो २ तेरे ३ तेज ४ विष्णु में ५ लय करने के लिये ६ हम चाहते हैं ७ जिस विष्णु में ८ बहुत प्रज्वलित ९ किरणें १० हैं ११ इस वैष्णव ज्योति में १२ महात्माओं से स्तुति किये हुए १३ विष्णु के १४ उत्कृष्ट १५ प्राप्ति स्थान ब्रह्म को १६ कहते हैं १७ वह १८ बहुत प्रकार से १९ प्रकाश करता है हे यूप २० ब्राह्मणों से स्वीकार योग्य २१ क्षत्रियों से चाहने योग्य २२ धन पुष्टि के अर्थ स्वीकृत २३ तुझ पर २४ चारों ओर से मिट्टी डालता हूं हे यूप २५ ब्राह्मण जाति को २६ दृढ़ कर २७ क्षत्री जाति को २८ यज्ञकर्म में दृढ़ कर २९ जीवन को ३० दृढ़ कर ३१ इन्द्रिय आदि सन्तान को ३२ दृढ़ कर ॥ ३ ॥

अथाध्यात्मम् – हे स्थूल शरीर १ जो २ तेरे ३ मन, बुद्धि, प्राण, जीव रूप तेज हैं हम उन को ४ विष्णु में ५ लय करने के लिये ६ चाहते हैं ७ जिस विष्णु में ८ बहुत ज्वालामान ९ किरणें १० हैं ११ इस वैष्णव ज्योति में १२ महात्माओं से स्तुत १३ विष्णु के १४,१५ परम पद अर्थात् ब्रह्म को १६ कहते हैं १७ वह १८ बहुत प्रकार से १९ प्रकाश करता है हे स्थूल शरीर २० मन से स्वीकृत २१ प्राण से स्वीकृत २२ योगैश्वर्य सिद्धि के लिये स्वीकृत २३ तुझे २४ स्थिर करता हूं हे स्थूल शरीर तुझ २५ मन को २६ दृढ़ करो २७ प्राण को २८ दृढ़ करो २९ प्रारब्ध समाप्ति तक जीवन को ३० दृढ़ करो ३१ इन्द्रियों को ३२ दृढ़ करो ॥ ३ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विष्णोः कर्म्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे।
इन्द्रस्य युज्यः सखा ४

विष्णोः। कर्म्माणि। पश्यत। यतः। इन्द्रस्य। युज्यः। सखा। व्रतानि। पस्पशे॥ ४॥

पदार्थः — उस अवट को कूटने से भूमि के समान कर लौकिक जलों से सींच कर यूप स्पर्श करने वाले यजमान को कहलाता है उसका मंत्र १ ओं विष्णोरित्यस्य (मेधातिथिर्ऋ० निचृदार्षी गायत्री छं० विष्णुर्दे०) १ हे ऋत्विजो वा वाक् आदि १ विष्णु के २ सृष्टि संहार आदि कर्मों को ३ देखो ४ जिस कारण ५ यजमान के ६ संयोग योग्य ७ मित्र उस विष्णु ने ८ द्रव्ययज्ञ और ज्ञान यज्ञ नाम कर्मों को ९ अपने भक्त के मोक्षार्थ निर्माण किया॥ ४॥

तद्विष्णोः परमम्पदꣳ सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम् ५

सूरयः। विष्णोः। तत्। परमम्। पदꣳ। सदा। पश्यन्ति। इव। दिवि। आततम्। चक्षुः॥ ५॥

अध्वर्यु चषाल देखते यजमान को कहलाता है उस का मंत्र १ ओं तद्विष्णोरित्यस्य (मेधातिथिर्ऋ० निचृदार्षी गायत्री छं० विष्णुर्दे०) १

पदार्थः १ वेदान्त पारगामी विद्वान योगीजन २ विष्णु के ३ उस ४ उत्कृष्ट ५ पद अर्थात् प्राप्ति योग्य ब्रह्म को ६ सब काल वा सब अवस्था में ७ ज्ञान दृष्टि से देखते हैं ८ जैसे ९ मानस कमल वा स्वर्ग में १० व्याप्त ११ मानस सूर्य वा विराट् आत्मा सूर्य को प्रत्यक्ष देखते हैं॥ ५॥

परिवीरसि परित्वा देवीर्विशो व्ययन्तामपरीमं यजमानꣳ रयो मनुष्याणाम्। दिवः सूनुरस्येषते पृथिव्या लोकं धीरणयस्ते पभुः॥ ६॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवीः। असि। देवीः। विशः। त्वा। परिव्ययन्ताम्। मनुष्याणाम्। रायः। इम। यजमानम्। परि। दिवः। सूनुः। असि। पृथिव्याः। एषः। ते। लोकः। आरण्यः। पशुः। ते॥ ६॥

अथाधिदेवम्— इस कंडिका में तीन मंत्र हैं उन को कहते हैं, तीन लड़वाली कुशा की रस्सी से यूप के नाभि प्रदेश में तीन लपेट देता है उस का मंत्र १ अष्ट कोण यूप का जो आग्नेय कोण है उस के उत्तर भाग पर रस्सी में स्वरुनाम शकल को प्रवेश करता है उस का मंत्र २ बर्षिष्ट यूप के दक्षिण भाग में बिना छिले बारहवें यूप को स्थापन करता है गाड़ता नहीं उस का मंत्र ३

ओं परिवीरित्यस्य (दीर्घतमा ऋ० प्राजापत्या त्रिष्टुप् छं० यूपो दे०) १
ओं दिवः सूनुरसीत्यस्य (तथा ० दैवी त्रिष्टुप् छं० स्वरुर्दे०) २
ओं एषत इत्यस्य (तथा ० साम्न्युष्णिक् छं० यूपो दे०) ३

पदार्थः—हे यूप तुम १ चारों ओर रस्सी से वेष्टित अथवा हम से परिवारित (घिरे हुए) २ हो ३ देवता सम्बंधी ४ मरुत् गण आदि प्रजा अथवा पशु ५ तुझ को ६ चारों ओर से घेरो ७ मनुष्य सम्बंधी ८ धन ९ इस १० यजमान को ११ चारों ओर से व्याप्त करो हे स्वरु तुम १२ स्वर्गलोक के १३ पुत्र १४ ⊗ हो हे यूप १५ पृथिवी पर १६ यह १७ तेरा १८ आश्रय स्थान है १९ वन सम्बंधी २० पशु २१ तेरा ही है॥ ६॥

अथाध्यात्मम्—हे स्थूल शरीर तुम १ हम वाक् आदि ऋत्विजों से परिवारित २ हो ३ यजमान सम्बंधी ४ प्राण जो कि श्रुति प्रमाण से पशु रूप हैं ५ तुझ को ६ व्याप्त करो ७ सनकादि ऋषियों के ८ योगैश्वर्य ९ इस १० यजमान रूप आत्मा को ११ चारों ओर से वेष्टन करो हे मन तुम १२ मानस कर्म

⊗ स्वर्गलोक से वर्षा होती है उस से यूप उत्पन्न होता है यूप से स्वरु इस लिये स्वरु को स्वर्ग का पुत्र कहा॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ल के १३ पुत्र १४ हो हे स्थूल शरीर १५ पृथिवी पर १६ यह भारत वर्षनाम कर्म भूमि १७ तेरा १८ आश्रय स्थान है १९ वानप्रस्थ धर्म में तत्पर २० इन्द्रिय समूह २१ तेरा ही है ॥ ६॥

उपावीरस्युपदेवान्देवीर्विशः प्रागुरुशिजोवह्नितमान्। देवत्वष्टर्वसुरमहव्यातेस्वदन्ताम् ७

उपावीः। असि। देवीर्विशः। उशिजः। वन्हितमान्। देवान्। उपप्रागुः। देव। त्वष्टः। वसुः। रमे। ते। हव्यो। स्वदन्ताम्॥

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में ४ मंत्र हैं उनको कहते हैं, तृण लेकर उससे पशु को स्पर्श करता है उस के मंत्र १ से ४ तक॥

ओं उपवीरित्यस्य (मेधातिथिर्ऋ० दैवी पंक्तिश्छं० तृणं दैवतं) १

ओं उपदेवानित्यस्य (तथा ० निचृत्साम्नीबृहतीछं० लिङ्गोक्तदे०) २

ओं देवेत्यस्य (तथा ० प्राजापत्या गायत्री छं० त्वष्टा दे०) ३

ओं हव्याइत्यस्य (तथा ० दैवीत्रिष्टुप् छंद० पशुर्दे०) ४

पदार्थः हे तृण विशेष तुम १ समीप में रक्षक और पशु के दूसरे सखा २ हो ३ पशु जो हैं वे ४ मेधावी अथवा हवि चाहने वाले ५ यजमान के स्वर्ग दाता देवताओं में श्रेष्ठ तुम ६ अग्नीषोम आदि देवताओं को ७ प्राप्त हों ८,९ हे त्वष्टा देवता तुम १० पशु लक्षण धन से ११ रमन करो हे पशु १२ तेरे १३ हवि १४ स्वादु युक्त हों ॥७॥

अथाध्यात्मम् – हे सुषुम्ना तुम १ समीप में रक्षक और आत्म प्रतिबिंब की सखी २ हो ३ योगी के प्राण ४ हम इन चाहने वाले ५ श्रेष्ठ अग्नि रूप ६ ज्योति स्वरूप परानर नारायण को ७ प्राप्त हों ८,९ हे ईश्वर तुम १० आत्म प्रति

१ चीन रोम पारस आदि जितने मानुष देश हैं उन सबके समूह को भारत वर्ष कहते हैं अन्य खंड और द्वीप इस्से पृथक हैं जैसे आकाश में तारा गण॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विंवरूप धन में ११ रमन करौ हे भूतात्मन् १२ तेरी १३ इन्द्रियां १४ स्वादु युक्त हों॥७॥

रेवती रमध्वं बृहस्पते धार यावसूनि। ऋतस्य त्वा देवहविः पाशेन प्रति मुञ्चामि धर्षा मानुषः ८

रेवतीः। रमध्वम्। बृहस्पते। वसूनि। रयाः। धाः। देवहविः। ऋतस्य। पाशेन। त्वा। प्रति मुञ्चामि। अ। मानुषः। धर्षः॥८

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में दो मंत्र हैं उन को कहते हैं, दो व्याम लम्बी दुलड़ी कुशा की रस्सी से नाग पाश बना कर पशु के सींगों में बांधता है और आदि अंत में प्रार्थना करता है उसके मंत्र॥१,२

ओं रेवती रमध्वमित्यस्य (दीर्घतमा ऋ० प्राजापत्यानुष्टुप् छं० बृहस्पतिर्दे०)१

ओं ऋतस्य त्वेत्यस्य (तथा ० निचृत्प्राजापत्या बृहती छं० पशुर्दे०)२

पदार्थः – १ हे क्षीर आदि धन वाली गौओ २ यजमान के गृह में भले प्रकार क्रीडा करो ३ हे ब्रह्मांड के स्वामी महा नारायण ४ पशुओं को ५ धन द्वारा पोषण करो ७ हे देवताओं के हवि रूप पशु ८ फल रूप होने से सत्य रूप जो यज्ञ है उसकी ९ पाश से १० तुझ को ११ बांधता हूं १२ काम रूप १३ देवाभिमानी १४ तेरा शमिता है॥८॥

अथाध्यात्मम् – हे शम दम आदि धन से युक्त इन्द्रियो २ आत्म रूप यजमान के शरीर में क्रीडा करो ३ हे महा विष्णु ४ प्राण और इन्द्रियों को ५ योग लक्ष्मी से ६ पोषण करो ७ हे भूतात्मन् ८ योग यज्ञ के ९ पाश से १० तुझ को ११ बांधता हूं १२ विष्णु रूप १३ प्राणाभिमानी देवता १४ तेरा शमिता है॥८॥

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। अग्नीषोमाभ्याञ्जुष्टन्नि यु

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नज्मि। अद्भ्यस्त्वौषधीभ्यो नुत्वा माता मन्यतामनु पितानु भ्राता सगर्भ्यो नु सखा सयूथ्यः। अग्नीषोमाभ्यान्त्वा जुष्टम्प्रोक्षामि॥ ९॥

सवितुः। देवस्य। प्रसूवे। अग्नीषोमाभ्याम्। जुष्टम्। त्वा। अश्विनोः। बाहुभ्याम्। पूष्णः। हस्ताभ्याम्। नियुनज्मि। अग्नीषोमाभ्याम्। जुष्टम्। त्वा। अद्भ्यः। ओषधीभ्यः। प्रोक्षामि। त्वा। माता। अनुमन्यताम्। पिता। अनु। सगर्भ्यः। भ्राता। अनु। सयूथ्यः। सखा। अनु॥ ९॥

अथाधिदैवम्— इस कंडिका में दो मंत्र हैं, यूप से पशु को बांधता है उसका मंत्र १ संस्कार किये हुए जलों से पशु को प्रोक्षण करता है उसका मंत्र २

ओं देवस्य त्वेत्यस्य (दीर्घतमा ऋ० भुरिगार्ची पंक्तिश्छं० लिङ्गोक्त दे०) १

ओं अद्भ्यस्त्वेत्यस्य (तथा ० आर्षी पंक्तिश्छं० पशुर्दे०) २

पदार्थः— हे पशु १ सविता २ देवता की ३ आज्ञा होने पर ४ अग्नीषोम देवताओं के लिये ५ प्रिय ६ तुझ को ७ अश्विनी कुमारों की ८ बाहु भाव को प्राप्त अपनी भुजाओं और ९ पूषा देवता के १० हस्त भाव को प्राप्त अपने हाथों से ११ बांधता हूं हे पशु १२ अग्नीषोम देवताओं के अर्थ १३ प्रिय १४ तुझ को १५ जल और १६ ओषधियों से १७ प्रोक्षण करता हूं इस प्रकार प्रोक्षित १८ तुझ को १९ पृथिवी २० आज्ञा दो २१ स्वर्ग २२ आज्ञा दो २३ सहोदर २४ भाई २५ आज्ञा दो २६, २७ समान यूथ वाला सुहृद् २८ आज्ञा दो॥ ९॥

अथाध्यात्मम्— प्रति विंब के होम से पहले भूतात्मा के होम को कहते हैं, हे भूतात्मन् १, २ गुरु देव की ३ आज्ञा में वर्त्तमान में ४ प्रकृति पुरुष के लिये ५ प्रिय ६ तुझ को ७ मन हृदय की ८ ग्रहण शक्तियों ९ और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानस सूर्य की १० ग्रहण शक्तियों से ११ निश्चल करता हूं हे भूतात्मन् १२ प्रकृति पुरुष के लिये १३ प्रिय १४ तुझ को १५ १६ ज्योति रस रूप जल और जन्म रूप रोग नाशक ज्ञान स्वरूपी औषधियों से १७ प्रोक्षण करता हूं इस प्रकार प्रोक्षित १८ तुझ को १९ प्रकृति २० आज्ञा दो २१ पुरुष २२ आज्ञा दो २३,२४ सहोदर भाई अर्थात् जीवात्मा २५ आज्ञा दो २६,२७ समान यूथ वाला सखा अर्थात् ईश २८ आज्ञा दो॥ ९॥

अपाम्पेरुरस्या पो देवीः स्वदन्तु स्वात्तञ्चित्स देव हविः। सन्ते प्राणो वाते न गच्छता ᳪ सम ङ्गानि यजत्रैः संयन्तु पतिराशिषा॥ १०॥

१ अपाम्। २ पेरुः। ३ असि। ४ देवीः। ५ आपः। ६ स्वदन्तु। ७ देव हविः। ८ स्वात्तम्। ९ सत्। १० चित्। ११ ते। १२ प्राणः। १३ वाते। १४ न। १५ सङ्गच्छताम्। १६ अङ्गानि। १७ यजत्रैः। १८ सं। १९ यन्तु। २० पतिः। २१ आशिषा। २२ सं॥ १०॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में तीन मंत्र हैं उन को कहते हैं, पशु के मुख के नीचे लगी हुई प्रोक्षणी को पान के लिये रखता है उस का मंत्र १ पशु के उदर और हृदय प्रदेश में प्रोक्षण करता है उसका मंत्र २ उत्तर घार होम के पीछे ध्रुवा समञ्जन से पहले पशु के ललाट दोनों स्कंध और दक्षिणोत्तर कटि को जुहू में स्थित घृत से मार्जन करता है उसका मंत्र ३

ओं अपाम्पेरुरित्यस्य (मेधातिथिर्ऋ० याजुषी गायत्री छं० पशुर्दे०) १
ओं आपो देवीरित्यस्य (तथा ० आसुरी गायत्री छं० आपो दे०) २
ओं संत इत्यस्य (तथा ० भुरिगार्च्यनुष्टुप् छं० पशु दे०) ३

पदार्थः- हे पशु तुम १ जलों के २ पीने वाले ३ हो ४ दीप्यमान ५ ज्योतिरस अमृत रूप जल तुझ को ६ भले प्रकार भक्षण करो ७ जिस कारण ७ देवताओं का हवि ८, ९ अच्छा भक्षित होता १० चिद्रूप अर्थात् मुक्त होता है हे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भु ११ तेरा १२ प्राण १३ समष्टि प्राण से १४ संयोग को पाओ १५ तेरे अंग १६ देवताओं से १७ संयोग को पाओ १८ यजमान १९ यज्ञ फल से २० संयोग को पाओ १०

अथाध्यात्मम् – हे भूतात्मन् तुम १ ब्रह्मज्योति रस अमृत के २ पान करने वाले ३ हो ४ ब्रह्मज्योति रस रूप ५ जल तुझ को ६ भक्षण करो जिस कारण ७ ईश का हवि ८,९ अच्छा भक्षित होता १० ब्रह्म रूप होता है हे भूतात्मन् ११ तेरा १२ प्राण १३ समष्टि प्राण से १४ संयोग को पाओ १५ तेरे अंग १६ देवताओं से १७ संयोग को पाओ १८ आत्मा रूप यजमान १९ योग यज्ञ के फल से २० संयोग को पाओ॥ १०॥

घृतेनाक्तौ पशू ँ स्त्रायेथा ँ रेवति यजमाने प्रियन्धा आविश उरोरन्तरिक्षात्सजूर्देवेन वातेनास्य हविषस्त्मना यजसमस्य तन्वा भव। वर्षो वर्षीयसि यज्ञे यज्ञपतिन्धाः स्वाहा देवेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा॥ ११॥

घृतेन। अक्तौ। पशून्। त्रायेथाम्। रेवति। यजमाने। प्रियम्। धाः। देवेन। वातेन। सजूः। उरोः। अन्तरिक्षात्। आविश। अस्य। हविषः। त्मना। यज। अस्य। तन्वा। सम्भव। वर्षो। वर्षीयसि। यज्ञे। यज्ञपतिं। धाः। देवेभ्यः। स्वाहा। देवेभ्यः। स्वाहा॥ ११॥

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में ५ मंत्र हैं उनको कहते हैं शमिता से दी हुई शास (कटारी) को लेकर आपही यूप से स्वरु को लेकर खड्ग और स्वरु को जुहू के अग्र में घृत से लिप्त कर उन दोनों से पशु के ललाट का स्पर्श करता है उसका मंत्र १ यजमान को कहलाता है वह मंत्र २ शामित्र कर्म के पीछे पूर्वाग्र एक तृण को पटकता है उसका मंत्र ३ फिर अध्वर्यु वसा होम हवनी में एक वार ग्रहण किये हुए घृत को लेकर आहवनीय में होमता है

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस के मंत्र ४, ५

ओं घृतेनाक्तावित्यस्य (मेधातिथिर्ऋ० याजुष्यनुष्टुप् छं० स्वरुशासौ देवते) १

ओं रेवतीत्यस्य (तथा ० ब्राह्म्युष्णिक् छं० वाक् दे०) २

ओं वर्षड्इत्यस्य (तथा ० आसुर्यनुष्टुप् छं० तृणं दैवतं) ३

ओं देवेभ्यः इतिद्वयोः (तथा ० दैवी पंक्तिश्छं० यज्ञो देवता) ४, ५

पदार्थः—हे स्वरुशास तुम दोनों १ घृत से २ लिप्त होते ३ पशु को ४ पालन करो ५ हे धन वति वाणी देवता ६ यजमान में ७ मन वांछित को ८ धारण करो ९ प्रकाश मान १० प्राण से ११ समान प्रीति वाली होकर १२, १३ गुरु के हार्दान्तरिक्ष से १४ ज्ञान दान द्वारा यजमान में प्रवेश कर और १५ पशु के १६ हवि रूप देह का १७ होम कर १८ इस पशु के १९ आत्मा से २० प्रकट हो अर्थात् पशु को यह ज्ञान हो कि मैं शुद्ध आत्मा हूं २१ हे वर्षा से उत्पन्न तृण तुम २२ विस्तीर्ण तर २३ यज्ञ पुरुष विष्णु में २४ यज मान को २५ धारण करो २६ देवताओं के अर्थ २७ होम हो २८ देवताओं के अर्थ २९ होम हो। श्रुति प्रमाण से दो बार कहे हुए देवता पृथक् २ हैं॥ ११॥

अथाध्यात्मम्—हे बुद्धि मन तुम दोनों १ इन्द्रिय शक्ति समूह से २ लिप्त होते ३ भूतात्मा के अंग प्राण आदि को ४ रक्षा करो ५ हे महा वाक् ६ आत्मा में ७ अभि प्रेत मोक्ष को ८ धारण कर ९ प्रकाश मान १० प्राण से ११ समान प्रीति वाला होकर १२, १३ गुरु के हार्दान्तरिक्ष से १४ ज्ञान दान द्वारा यजमान में प्रवेश कर १५ इस भूतात्मा के १६ हवि रूप देह का १७ होम कर १८ इस भूतात्मा के १९ शरीर से २० अहं ब्रह्मास्मि इस वाक् द्वारा प्रकट हो २१ हे विस्तीर्ण सुषुम्ना २२ विस्तीर्णतर २३ विष्णु में २४ आत्मा को २५ धारण कर २६ कर्मेन्द्रिय लय स्थान के देवताओं के अर्थ २७ होम हो २८ ज्ञानेन्द्रिय लय स्थान देवताओं के अर्थ २९ होम हो॥ ११॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माहिर्भूर्मा एदाकुर्न्नमस्तआतानानर्वा प्रेहि।
घृतस्य कुल्या उपऋतस्य पथ्या अनु ॥ १२॥

अहिः। एदाकुः। मा। भूः। आतान। ते। नमः। अनर्वा। प्रेहि।
ऋतस्य। पथ्याः। घृतस्य। कुल्याः। अनु। उप प्रेहि॥ १२॥

अथाधिदैवम्– इस कंडिका में दो मंत्र हैं, वपा अपण के दोनों काष्ठों के द्वारा दुहरी पशु बंधन रस्सी को चात्वाल में डालता है उसका मंत्र १ प्रति प्रस्थाता अथवा नेष्टा पुरुष जल पात्र हाथ में रखने वाली पत्नी को गार्हपत्य के समीप से पशु शोधन के अर्थ लाता कहता है उस का मंत्र २

ओंमाहिर्भूरित्यस्य (मेधातिथि ऋषि० दैवी जगती छंदः रज्जुर्दे०) १
ओंनमस्त इत्यस्य (तथा ० प्राजापत्या पंक्तिश्छं० यज्ञो दे०) २

पदार्थः – हे रस्सी तुम १ सर्पाकार २ अजगराकार ३,४ मत हो ५ हे यज्ञ ६ तुझ को ७ नमस्कार तुम ८ शत्रु रहित होते ९ समाप्ति तक विद्यमान रहो १० यज्ञ के ११ मार्ग में विद्यमान १२ घृत की १३ नदियों को १४ देख कर १५ आओ ॥ १२॥ **अथाध्यात्मम्**– हे सुषुम्ना तुम १ कुटिल २ बिच्छू के समान काटने वाली ३,४ मत हो ५ हे यजमान ६ तेरे अर्थ ७ भूतात्म रूप अन्न होतु ८ कामादि शत्रु से रहित होते ९ सुषुम्ना मार्ग से चलो १०,११ ब्रह्म मार्ग में हित कारी १२ इन्द्रिय शक्ति समूह की १३ नदियों को १४ देख कर १५ त्रिदेव रूपधारी महा विष्णु को प्राप्त करो ॥ १२॥

देवीरापः शुद्धा वोढ्वꣳ सुपरिविष्टा देवेषु
सुपरिविष्टा वयम्परिवेष्टारो भूयास्म ॥ १३॥

देवीः। आपः। शुद्धाः। सुपरिविष्टाः। देवेषु। वोढ्वं। सुपरिविष्टाः
वयम्। परिवेष्टारः। भूयास्म॥ १३॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में दो मंत्र हैं, जल स्तुति का मंत्र १ आशी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र्वाद का मंत्र २

ओं देवीरापरित्यस्य (मेधातिथिर्ऋ० साम्न्यनुष्टुप् छं० आपो दे०) १

ओं देवेष्वित्यस्य (तथा ० आसुरी गायत्री छं० आपो दे०) २

पदार्थः -१ हे द्योत मान २ जलो ३ शुद्ध ४ और सब ओर से पान्नेजनी पात्र में प्रविष्ट तुम इस पशु को ५ देवताओं में ६ प्राप्त करो ७ देवताओं से तर्पित ८ हम ९ देवताओं के परोसने वाले १० होवें॥ १३॥

अथाध्यात्मम् - १ हे इन्द्रिय सम्बंधी २ अन्त रिक्षो ३ सांसारिक सुख और शयन का दाता जो भोग है उसके धारण करने वाले ४ और देह में प्रविष्ट तुम भूतात्मा को ५ देवताओं में प्राप्त करो ६, ७ देवताओं से तर्पित ८ हम वाक आदि ऋत्विज ९ देवताओं के परोसने वाले १० होवें॥ १३॥

वाचन्ते शुन्धामि प्राणन्ते शुन्धामि चक्षुस्ते शुन्धामि श्रोत्रन्ते शुन्धामि। नाभिन्ते शुन्धामि मेढ्रन्ते शुन्धामि पायुन्ते शुन्धामि चरित्रांस्ते शुन्धामि॥ १४॥

१ ते। २ वाचम्। ३ शुन्धामि। ४ ते। ५ प्राणं। ६ शुन्धामि। ७ ते। ८ चक्षुः। ९ शुन्धामि। १० ते। ११ श्रोत्रम्। १२ शुन्धामि। १३ ते। १४ नाभिम्। १५ शुन्धामि। १६ ते। १७ मेढ्रम्। १८ शुन्धामि। १९ ते। २० पायुम्। २१ शुन्धामि। २२ ते। २३ चरित्रान्। २४ शुन्धामि। १४

अथाधिदैवम् - इस कंडिका में ८ मंत्र हैं, पत्नी पशु के समीप बैठ कर मृत पशु के प्राण आदि को जल से स्पर्श करती है उसके मंत्र १ से ८ तक ओं वाचंते शुन्धामीत्यादि मंत्राणां (मेधातिथिर्ऋषि दैवी त्रिष्टुप् छं० पशुर्दे०) १ से ७ तक ओं चरित्रा नित्यस्य (तथा ० दैवीजगती छं० तथा०) ८

पदार्थः - पत्नी वा बुद्धि कहती है हे पशु वा हे भूतात्मन् मैं १ तेरी २ वाक् इन्द्रियं को ३ शुद्ध करती हूं ४ तेरे ५ प्राण को ६ शुद्ध करती हूं ७ तेरी ८ च

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षु इन्द्री को ९ शुद्ध करती हूं १० तेरी ११ श्रोत्र इन्द्री को १२ शुद्ध करती हूं १३ तेरी १४ नाभि को १५ शुद्ध करती हूं १६ तेरे १७ लिङ्ग को १८ शुद्ध करती हूं १९ तेरी २० पायु इन्द्री को २१ शुद्ध करती हूं २२ तेरे २३ पैरों को २४ शुद्ध करती हूं २४

मनस्त आप्यायतां वाक्त आप्यायतां प्राणस्त आप्यायताञ्चक्षुस्त आप्यायताꣳ श्रोत्रन्त आप्यायताम्। यत्ते क्रूरं यदास्थितन्तत्त आप्यायतां निष्ट्यायतान्तत्ते शुध्यतु शमहोभ्यः। ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैनꣳ हिꣳसीः॥१५॥

ते। मनः। आप्यायतां। ते। वाक्। आप्यायतां। ते। प्राणः। आप्यायतां। ते। चक्षुः। आप्यायताꣳ। ते। श्रोत्रं। आप्यायतां। ते। यत्। क्रूरं। यत्। आस्थितम्। ते। तत्। आप्यायतां। निष्ट्यायतां। ते। तत्। शुध्यतु। अहोभ्यः। शं। ओषधे। त्रायस्व। स्वधिते। एनं। मा। हिꣳसीः॥१५॥

अथाधिदैवम्— इस कंडिका में नौ मंत्र हैं उनको कहते हैं, यजमान और अध्वर्यु पान्ने जन शेष से पशु के शिर आदि अंगों को सींचते हैं उसका मंत्र १ शेष अंगों को सींचते हैं उसके मंत्र २ से ६ तक पीछे पशु को सींचते हैं उसका मंत्र ७ पशु को ऊंचा करके नाभि के आगे ४ अंगुल त्याग कर पूर्वाग्र तृण को रखता है उस का मंत्र ८ तृण के ऊपर खड्ग धारा को रख कर चुप तृण सहित उदर की त्वचा को काटता है उसका मंत्र ९

ओं वाक्त इत्यस्य (मेधातिथिर्ऋ० दैवी त्रिष्टुप् छं० पशुर्दे०) २

ओं मनस्त इत्यादिचतुर्णाम्मन्त्राणां (तथा ० दैवीजगती छं० तथा०) १, ३, ४, ५

ओं यत्त इत्यस्य (तथा ० साम्नी त्रिष्टुप् छं० तथा०) ६

ओं शमित्यस्य (तथा ० दैवी बृहती छं० लिङ्गोक्त दे०) ७

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं ओषध इत्यस्य (मेधातिथिर्ऋ० याजुषी गायत्री छं० तृणं देवतं) ८
ओं स्वधित इत्यस्य (तथा ० दैवी जगती छं० असिर्दे०) ९

पदार्थः – हे पशु सालोक्य मोक्ष प्राप्ति के लिये १ तेरा २ मन ३ वृद्धि पाओ ४ तेरी ५ वाणी ६ वृद्धि पाओ ७ तेरा ८ प्राण ९ वृद्धि पाओ १० तेरी ११ चक्षुइन्द्री १२ वृद्धि पाओ १३ तेरी १४ श्रोत्र इन्द्री १५ वृद्धि पाओ हे पशु १६ तेरा १७ जो १८ ब्रह्मा विष्णु महेश और ब्रह्माग्नि चार रूप वाला आत्मा है १९ जो २० आत्म प्रति बिंब है २१ तेरा २२ वह २३ वृद्धि पाओ २४ एकी भाव को प्राप्त करो तथा ब्रह्म भाव प्राप्ति के अर्थ २५ तेरा २६ वह सब २७ शुद्ध हो २८ देवयान सम्बधी काल विशेषों के अर्थ २९ कल्याण हो ३० हे ओषधि ३१ रक्षा करो ३२ हे वज्र ३३ इस पशु को ३४,३५ मत मारो ॥ १५ ॥

अथाध्यात्मम् – हे भूतात्मन् १ तेरा २ मन ३ मोक्ष के अर्थ समष्टि मन के भाव को प्राप्त करो ४ तेरी ५ वाक् इन्द्री ६ समष्टि भाव को प्राप्त करो ७ तेरा ८ प्राण ९ समष्टि भाव को प्राप्त करो १० तेरी ११ चक्षु इन्द्री १२ समष्टि भाव को प्राप्त करो १३ तेरी १४ श्रोत्र इन्द्री १५ समष्टि भाव को प्राप्त करो १६ तेरा १७ जो १८ ब्रह्मा विष्णु महेश और ब्रह्माग्नि रूप आत्मा है और १९ जो २० आत्म प्रति बिंब है २१,२२ वह तेरा २३ समष्टि भाव को प्राप्त करो २४ एकी भाव को प्राप्त करो और ब्रह्म भाव प्राप्ति के अर्थ २५,२६ तेरा वह सब २७ शुद्ध हो २८ देवयान सम्बंधी काल विशेषों के अर्थ २९ कल्याण हो ३० हे इन्द्रिय शक्ति समूह ३१ संसार से रक्षा करो ३२ हे मन ३३ इस भूतात्मा को ३४,३५ संसार बंधन से मत नाश करो ॥ १५ ॥

रक्षसाम्भागोसि निरस्तꣳ रक्षइदमहꣳ रक्षो भितिष्ठामीदमहꣳ रक्षो बबाधइदमहꣳ रक्षो धमन्तमोनयामि। घृतेन द्यावापृथिवी प्रोर्णु वा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यां वायो वेस्तोकानामग्नि राज्यस्य वेतु स्वाहा
स्वाहाकृते ऊर्ध्वनभ सम्मारुतङ्गच्छतम् १६

रक्षसां। भागः। असि। रक्षः। निरस्तं। इदम्। रक्षः
अभि तिष्ठामि। अहं। इदम्। रक्षः। अवबाधे। अहं। इदम्।
रक्षः। अधमं। तमः। नयामि। द्यावापृथिवी। घृतेन। प्रोर्णुवाथाम्। वा-
यो। स्तोकानां। वेः। अग्निः। आज्यस्य। वेतु। स्वाहा। स्वाहाकृते।
ऊर्ध्वनभसम्। मारुतं। गच्छतं॥ १६॥

अथाधिदेवम् – इस कंडिका में ७ मंत्र हैं उन को कहते हैं, जो तृण नाभि के अग्र में स्थापन किया उस छिन्न तृण को वाम हस्त में रख-कर दाहिने हाथ में जड़ को रख कर और उस को दुहरा कर अग्र और मूल-को पशु छेदन निष्पन्न रुधिर से लिप्त करता है उस का मंत्र १ उस रुधिर लिप्त तृण मूल को उत्कर में फेंकता है उस का मंत्र २ उत्कर में फेंके हुए तृण को यजमान पैर से दाब कर खड़ा होता है उस का मंत्र ३ पशु के उद-र से वपा को निकाल कर उस्से वपा अपणी को आच्छादन करता है उस का मंत्र ४ वाम हस्त में रक्खे हुए तृणाग्र को आहवनीय अग्नि में डालता है उस का मंत्र ५ अध्वर्यु वपा को होमता है उस का मंत्र ६ वपा को होम कर उ-त्तर में बैठ कर दोनों वपा अपणी को आहवनीय अग्नि में डालता है उस-का मंत्र ७॥

ओं रक्षसा मित्यस्य (मेधातिथिर्ऋ॰ याजुषी गायत्री छं॰ लिङ्गोक्त दे॰)१
ओं निरस्त मित्यस्य (तथा ॰ दैवी पंक्तिश्छंदः ॰ रक्षोहणं दे॰)२
ओं इद मित्यस्य (तथा ॰ निचृदार्ष्यनुष्टुप् छं॰ तथा ॰)३
ओं घृतेनेत्यस्य (तथा ॰ याजुषी जगती छं॰ द्यावापृथिवी दे॰)४
ओं वायो वेरित्यस्य (तथा ॰ याजुषी गायत्री छं॰ वायुर्दे॰)५

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं अग्निरित्यस्य (मेधातिथिर्ऋषिः याजुषी बृहती छं० अग्निर्दे०) ६
ओं स्वाहाकृत इत्यस्य (तथा ० आसुरी गायत्री छं० वपाश्रपण्योर्दे०)

पदार्थः – हे रुधिर लिप्त त्वा तुम १ राक्षसों के २ भाग ३ हो ४ यज्ञ विघ्न करने वाला राक्षस ५ त्याग किया गया ६ मैं ७ इस ८ राक्षस को ९ पांव से दबा कर स्थिति होता हूं १० मैं ११ इस १२ राक्षस को १३ नाश करता हूं और १४ मैं १५ इस १६ राक्षस को १७ अत्यंत निकृष्ट १८ नरक में १९ प्राप्त करता हूं २० हे पृथिवी स्वर्ग तुम दोनों २१ जल और घृत से अपने आत्मा को २२ परस्पर आच्छादन करो अर्थात् आहुति से स्वर्ग और जल से पृथिवी युक्त हो २३ हे वायु तुम २४ वपा सम्बंधी विन्दुओं को २५ जानो २६ आहवनीय अग्नि २७ घृत का २८ पान करो २९ श्रेष्ठ होम हो ३० स्वाहाकार से आहुति भाव प्राप्त होने पर तुम दोनों ३१ आकाश में वर्त्तमान ३२ वायु को ३३ प्राप्त करो क्योंकि वायुही यज्ञ की प्रतिष्ठा है ॥ १६॥

अथाध्यात्मम् – हे क्रोध आदि के समूह तुम १ काम आदि के २ भाग ३ हो ४ यज्ञ का विघ्न करने वाला अज्ञान ५ त्याग किया गया ६ मैं ७ इस ८ अज्ञान को ९ पांव से दबा कर स्थित होता हूं १० मैं ११ इस १२ अज्ञान को १३ नाश करता हूं १४ मैं १५ इस १६ अज्ञान को १७ अत्यंत निकृष्ट १८ उसके उत्पत्ति स्थान तमो गुण में १९ प्राप्त करता हूं २० हे हृदय मन तुम दोनों २१ इन्द्रिय शक्ति समूह से २२ अपने आत्मा को आच्छादन करो २३ हे प्राण २४ गगन च्युत अमृत रस विन्दुओं का २५ ज्ञान प्राप्त करो और जान कर पान करो २६ आत्माग्नि २७ इन्द्रिय शक्ति समूह का २८ पान करो २९ ब्रह्म ज्ञान के उपदेश से ३० महा वाक का उच्चारण होने पर तुम दोनों व्यष्टि समष्टि प्रति विंव ३१ आकाश में वर्त्तमान ३२ समष्टि वायु को ३३ प्राप्त करो॥ १६॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इदमापः प्रवहतावद्यञ्च मलञ्च यत्। यच्चाभिदुद्रोहानृतं यच्च शेपे अभीरुणम्। आपो मा तस्मादेनसः पवमानश्च मुञ्चतु १७

आपः। इदम्। प्रवहत। च। यत्। अवद्यम्। च। मलम्। च। यत्। अनृतं। अभिदुद्रोह। च। यत्। अभीरुणं। शेपे। आपः। च। पवमानः। तस्मात्। एनसः। मा। मुञ्चतु॥ १७॥

अथाधिदैवम्— तिसके पीछे सपत्नीक और यजमान सहित सब ऋत्विजचात्वाल के समीप जलों से आत्म शोधन करते हैं उस का मंत्र १

ओंइदमित्यस्य (दीर्घतमा ऋ० ऋवसाना महापंक्तिश्छं० आपो दे०) १

पदार्थः— १ हे जलो २ इस पशु संज्ञपन के पाप को ३ दूर करो ४ और ५ जो ६ अकथनीय अभिशाप आदि ७ और ८ देह मल है उसको दूर करो ९ और १० जो ११ अपराधी पुरुष को १२ मारा १३ और १४ जो अनपराधी को १६ दुर्वाक्य कहा १७ जल १८ और १९ वायु २० उस २१ पाप से २२ मुझ को २३ मुक्त करो॥ १७॥

अथाध्यात्मम्— १ हे ज्योती रस अमृत रूप जलो २ काम के दाता अज्ञान को ३ दूर करो ४ और ५ जो ६ निंद्य विषय भोग ७ और ८ ज्ञान का आवरण मल है उसे दूर करो ९ और १० जिस ११ अहंकार ममत्व विशिष्ट मोहात्मा को १२ मारा १३ और १४ जो १५ अद्वैत आत्मा को १६ ब्रह्म से पृथक् जाना १७ पूर्वोक्त जल १८ और १९ समष्टि वायु २० उस २१ पाप से २२ मुझ को २३ छुडाओ॥ १७॥

सन्ते मनो मनसा सम्प्राणः प्राणेन गच्छताम्। रेडस्यग्निष्ट्वा श्रीणात्वापस्त्वा समरिणन्वातस्य त्वा ध्राज्यै पूष्णो रथ्यं ह्यावृष्णो व्यधिषत्यर्यु तन्द्वेषः। १८।

ते। मनः। मनसा। सङ्गच्छताम्। प्राणः। प्राणेन। सम्। रेट्। असि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निः। त्वा। श्रीणातु। आपः। त्वा। समरिणन्। वातस्य। ध्राज्यै। पूषाः। रथ्यै। त्वा। ऊष्मणः। व्यथिषत। द्वेषः। प्रयुतं॥१८॥

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में तीन मंत्र हैं उनको कहते हैं प्रश्नोत्तर के पीछे अध्वर्यु जुहू में रक्खे हुए एष दाज्य से पशु के हृदय को प्रथम अभिघारन करे पश्चात् सब पशु को अभिघारन करता है उसका मंत्र १ वसा होम हवनी पात्र में वसा को ले कर और दो वार अभिघारन कर उसमें स्रुव वा कटारी से घृत को मिलाता है उसके मंत्र २,३

ओं सन्नहृदयस्य (दीर्घतमा ऋ० प्राजापत्या अनुष्टुप् छं० हृदयं देवतं) १
ओं रेड सीत्यस्य (तथा ० आर्षी पंक्ति श्छं० ० वसा दे०) २
ओं प्रयुतमित्यस्य (तथा ० दैवी पंक्ति श्छं० ० लिङ्गोक्त दे०) ३

पदार्थः – हे पशु के हृदय १ तेरा २ मन ३ देवताओं के मन से ४ संयोग को पाओ ५ तेरा प्राण ६ देवताओं के प्राण से ७ संयोग को पाओ हे वसा तू ८ अल्प होने से हिंसित सी ९ है १० अग्नि ११ तुझे १२ परिपक्व करे १३ जल १४ तुझको १५ भले प्रकार प्राप्त करे क्योंकि जल से ही रस उत्पन्न होता है १६ वायु की १७ अन्तरिक्ष में गति होने के लिये १८,१९ स्वर्ग में सूर्य के गमनार्थ २० तुझ को ग्रहण करता हूं उस कारण २१ वैश्वानर अग्नि की २२ क्षुधा रूप व्यथा प्रकट हो २३ देवताओं का द्वेषी राक्षस २४ दूर हुआ॥१८॥

अथाध्यात्मम् – हे भूतात्मा के हृदय १ तेरा २ मन ३ समष्टि मन से ४ संयोग को पाओ ५ तेरा प्राण ६ समष्टि प्राण से ७ संयोग पाओ हे मानस सूर्य ८ तुझ अल्प होने से हिंसित से ९ हो १० ब्रह्माग्नि ११ तुझे १२ स्वीकार करे १३ ज्योती रस अमृत १४ तुझे १५ भले प्रकार प्राप्त हों १६,१७ हार्दान्तरिक्ष में प्राण की प्राप्ति के अर्थ १८,१९ और भ्रूकुटि में मन के गमनार्थ २० तुझे ग्रहण करता हूं इस कारण २१ ब्रह्माग्नि की २२ क्षुधा रूप व्यथा प्रकट हो २३ काम रूप राक्षस २४ पृथक्

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ॥ १८॥

घृतं घृत पावानः पिवत वसां वसा पावानः पिवता न्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥ १९॥

घृत पावानः। घृतम्। पिवत। वसा पावानः। वसां। पिवत। अन्तरिक्षस्य। हविः। असि। स्वाहा। दिशः। विदिशः। प्रदिशः। आदिशः। उद्दिशः। दिग्भ्यः। स्वाहा॥ १९॥

अथाधिदेवम्- इस कंडिका में सात मंत्र हैं उनको कहते हैं, आहवनीय के उत्तर और बैठ कर वाम हाथ में स्रुचों को लेकर दाहिने हाथ से वसा के एक देश को होमता है उसका मंत्र १ शेष वसा से दिशाओं को व्याघारन करता है उसके मंत्र २ से ७ तक॥

ओं घृतमित्यस्य	(दीर्घतमा ऋ०	आर्षी पंक्तिश्छं०	विश्वे देवा दे०)	१
ओं दिश इत्यस्य	(तथा	०दैवी उष्णिक् छं०	दिग्देव०)	२
ओं दिग्भ्य इत्यस्य	(तथा	० तथा	० तथा)	३
ओं प्रदिश इत्यस्य	(तथा	०दैव्यनुष्टुप् छं०	० तथा)	४
ओं आदिश इत्यस्य	(तथा	० तथा	० तथा)	५
ओं विदिश इत्यस्य	(तथा	० तथा	० तथा)	६
ओं उद्दिश इत्यस्य	(तथा	० तथा	० तथा)	७

पदार्थः- १ हे घृत के पान करने वाले देवता ओ तुम २ घृत को ३ पान करो ४ हे वसा के पान करने वाले देवता ओ तुम ५ वसा को ६ पान करो हे वसा तुम ७ अन्तरिक्ष की ८ हवि ९ हो १० श्रेष्ठ होम हो ११ जो पूर्व आदि दिशा १२ और ईशान आदि विदिशा हैं वे तीन प्रकार की हैं १३ पृथिवी और उसके अधिष्ठाता अग्नि से संबंध रखने वाली सब दिशा १४ अन्तरिक्ष और उसके अधिष्ठाता वायु से संबंध रख

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने वाली सब दिशा १५ सूर्य और स्वर्ग से सम्बंध रखने वाली सब दिशा १६ उन दिशाओं के अर्थ १७ श्रेष्ठ होम हो, कर्म में मंत्रों के यह स्वरूप हैं, दिग्भ्यः स्वाहा, १ प्रदिग्भ्यः स्वाहा २ आदिग्भ्यः स्वाहा ३ विदिग्भ्यः स्वाहा ४ उद्दिग्भ्यः स्वाहा ५ सर्वाभ्यो दिग्भ्यः स्वाहा ॥ १९ ॥

अथाध्यात्मम्— १ हे इन्द्रिय शक्ति समूह के पान करने वाले समष्टि मन बुद्धि प्राणो २ इन्द्रिय शक्ति समूह को ३ पान करो ४ हे मानस सूर्य के पान करने वाले ब्रह्म परा नारायण नाम देवता ओ ५ मानस सूर्य को ६ पान करो हे मानस सूर्य तुम ७ हार्दान्तरिक्ष के ८ हवि ९ हो १० श्रेष्ठ होम हो जिस कारण जो ११ शास्त्र का उपदेष्टा १२ ब्रह्म परा का उपदेष्टा है वह तीन प्रकार का है १३ सावित्री देवी का उपदेष्टा १४ निर्गुण और सगुण ब्रह्म का उपदेष्टा १५ उत्कृष्ट योग मार्ग का उपदेष्टा १६ उन ब्रह्मा विष्णु महेश रूप गुरुओं से १७ उपदेश किया गया।

ऐन्द्रः प्राणोऽङ्गेऽङ्गे निदीध्यदैन्द्र उदानोऽङ्गेऽङ्गे निधीतः। देवत्वष्टर्भूरिते सꣳ समेतु सलक्ष्माय द्विषुरूपम्भवाति। देवञ्चा यन्तमवसे सखायो नुत्वा माता पितरो मदन्तु ॥ २० ॥

१ ऐन्द्रः। २ प्राणः। ३ अङ्गे। ४ अङ्गे। ५ निदीध्यत्। ६ ऐन्द्रः। ७ उदानः। ८ अङ्गे। ९ अङ्गे। १० निधीतः। ११ देव। १२ त्वष्टः। १३ ते। १४ सꣳ। १५ भूरि। १६ ओ। १७ यत्। १८ वः। १९ द्विषुरूपम्। २० भवति। २१ सलक्ष्मा। २२ सम्। २३ एतु। २४ देव। २५ अवसे। २६ च। २७ आयन्तम्। २८ त्वा। २९ सखायः। ३० माता। ३१ पितरः। ३२ अनुमदन्तु ॥ २० ॥

दिशा व्याघारन के पीछे स्रुक निधान से पहिले पशु को स्पर्श करता है उसका मंत्र १

ओं ऐन्द्रः प्राणइत्यस्य (दीर्घतमा ऋषिः ब्राह्म्यनुष्टुप् छं० लिङ्गोक्त दे०) १

पदार्थः— १ ईश्वर सम्बंधी पशु वा भूतात्मा का २ प्राण ३, ४ ईश्वर के अंगों में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५ धारित हुआ ६ ईश्वर सम्बंधी पशू वा भूतात्मा का ७ उदान ८,९ ईश्वर के अंगों मे १० धारित हुआ ११ हे ज्योति स्वरूप १२ ईश्वर १३ तेरा १४ विष्णु रूप १५ परिपूर्ण है १६ हे सर्वव्यापी १७ जिस कारण १८ निवृतात्मा १९ वाणी रूप २० होता है उस कारण २१ अंगुष्ठ स्वरूप आत्मा २२ विष्णु को २३ प्राप्त करो २४ हे सायुज्य के योग्य आत्मा २५ संसार से रक्षा के अर्थ २६ विष्णु रूप अग्नि में २७ जाने वाले २८ तुझ को २९ प्राणादि ३० प्रकृति ३१ और देवता ३२ आज्ञा दो ॥ २० ॥

समुद्रङ्गच्छ स्वाहान्तरिक्षङ्गच्छ स्वाहा देवꣳ स
विता रङ्गच्छ स्वाहा मित्रा वरुणौ गच्छ स्वाहा होरा
त्रे गच्छ स्वाहा छन्दांꣳसि गच्छ स्वाहा द्यावा पृथि-
वी गच्छ स्वाहा यज्ञङ्गच्छ स्वाहा सोमङ्गच्छ स्वाहा
दिव्यन्नभो गच्छ स्वाहाग्निं वैश्वानरङ्गच्छ स्वाहा
मनो मे हार्दि यच्छ दिवन्ते धूमो गच्छतु स्वज्योतिः।
पृथिवीम्भस्मना पृण स्वाहा ॥ २१ ॥

समुद्रं। गच्छ। स्वाहा। अन्तरिक्षम्। गच्छ। स्वाहा। देवꣳ। सविताराम्। गच्छ। स्वाहा। मित्रावरुणौ। गच्छ। स्वाहा। अहोरात्रे। गच्छ। स्वाहा। छन्दांꣳसि। गच्छ। स्वाहा। द्यावापृथिवी। गच्छ। स्वाहा। यज्ञं। गच्छ। स्वाहा। सोमं। गच्छ। स्वाहा। दिव्यं। नभः। गच्छ। स्वाहा। वैश्वानरं। अग्निम्। गच्छ। स्वाहा। मे। हार्दि। मनः। यच्छ। ते। धूमः। दिवं। गच्छतु। ज्योतिः। स्वः। भस्मना। पृथिवीम्। आपृण। स्वाहा ॥ २१ ॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में १२ मंत्र है उन को कहते हैं, अनुयाजों के हूयमान होने पर प्रतिप्रस्थाता गुदतृतीय के प्रछेद को होमता है उसका मंत्र १ प्रतिप्रस्थाता प्रतिवषट्कार प्रत्येक गुद कांड को होम कर सब के अंत में मुख का-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पर्श करता है उसके मंत्र २ से ११ तक अनुयाज के अंत में स्वरु को होमता है उसका मंत्र ।१२॥

ओं समुद्रमित्यस्य	दीर्घतमा ऋ०	याजुष्युष्णिक् छं०	लिङ्गोक्तदे०	)१
ओं अन्तरिक्षमित्यस्य	तथा	० प्राजापत्या गायत्री छं०	तथा ०	)२
ओं देवमित्यस्य	तथा	० याजुषी पंक्ति श्छं	० तथा ०	)३
ओं मित्रावरुणा इत्यस्य	तथा	० याजुषी बृहती छं	० तथा ०	)४
ओं अहो रात्र इत्यस्य	तथा	० याजुष्यनुष्टुप् छं	० तथा ०	)५
ओं छन्दांसीत्यस्य	तथा	० याजुष्युष्णिक् छं	० तथा ०	)६
ओं द्यावा पृथिवीइत्यस्य	तथा	० याजुषी बृहती छं	० तथा ०	)७
ओं यज्ञमित्यस्य	तथा	० याजुषी गायत्री छं	० तथा ०	)८
ओं सोम इत्यस्य	तथा	० तथा	० तथा ०	)९
ओं दिव्यमित्यस्य	तथा	० याजुष्यनुष्टुप् छं	० तथा ०	)१०
ओं अग्निमित्यस्य	तथा	० याजुषी पंक्ति श्छं	० तथा ०	)११
ओं मनइत्यस्य	तथा	० याजुष्युष्णिक् छं०	तथा ०	)१२

पदार्थः— हे हवि र्गुदावयव रूप तुम १ समुद्र को २ तर्पण के लिये प्राप्त करौ ३ श्रेष्ठ होम हो ४ अन्तरिक्ष को ५ प्राप्त करौ ६ श्रेष्ठ होम हो ७, ८ सविता देवता को ९ प्राप्त करौ १० श्रेष्ठ होम हो ११ मित्रा वरुण देवताओं को १२ प्राप्त करौ १३ श्रेष्ठ होम हो १४ अहो रात्रि को १५ प्राप्त करौ १६ श्रेष्ठ होम हो १७ छन्दों को १८ प्राप्त करौ १९ श्रेष्ठ होम हो २० पृथिवी स्वर्ग को २१ प्राप्त करौ २२ श्रेष्ठ होम हो २३ यज्ञ को २४ प्राप्त करौ २५ श्रेष्ठ होम हो २६ सोम को २७ प्राप्त करौ २८ श्रेष्ठ होम हो २९ दिव्य ३० आकाश को ३१ प्राप्त करौ ३२ श्रेष्ठ होम हो ३३ वैश्वानर ३४ अग्नि को ३५ प्राप्त करौ ३६ श्रेष्ठ होम हो ३७ हे समुद्रादि देव समूह १७ मेरे ३८ हृदय सम्बंधी ३९ मन का ४० निरोध करौ हे स्वरु ४१ तेरा ४२ धूम्र ४३

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्गलोक को ४४ वृष्टि के अर्थ जाओ ४५ तेरी ज्वाला ४६ सूर्य वा अन्तरिक्ष को प्राप्त करो ४७ भस्म से ४८ पृथिवी को ४९ पूर्ण कर ५० श्रेष्ठ होम हो॥ २१॥

अथाध्यात्मम्- देह के अवयवों में प्रत्येक अवयव को उपदेश करता है हे भूतात्मा में विद्यमान जल तुम १ समुद्र को २ प्राप्त करो ३ श्रेष्ठ होम हो हे भूतात्मा में विद्यमान वायु ४ अन्तरिक्ष को ५ प्राप्त करो ६ श्रेष्ठ होम हो हे आत्मप्रतिबिंब ७,८ सूर्य देवता को ९ प्राप्त करो १० श्रेष्ठ होम हो हे जीवात्मा तुम ११ नरनारायण को १२ प्राप्त करो १३ श्रेष्ठ होम हो हे जन्म मरण काल तुम १४ अहोरात्रि को १५ प्राप्त करो १६ श्रेष्ठ होम हो हे देह के अङ्गो तुम १७ समष्टि देह के अङ्गो को १८ प्राप्त करो १९ श्रेष्ठ होम हो हे मन हृदय आदि के कमल समूह तुम २० पृथिवी स्वर्ग को २१ प्राप्त करो २२ श्रेष्ठ होम हो हे यज्ञ क्रियाओ तुम २३ यज्ञ पुरुष विष्णु को २४ प्राप्त हों २५ श्रेष्ठ होम हो हे अन्न पान भोग समूह तुम २६ सोम देवता को २७ प्राप्त करो २८ श्रेष्ठ होम हो हे भूतात्म गत आकाश तुम २९ दिव्य ३० आकाश को ३१ प्राप्त करो ३२ श्रेष्ठ होम हो हे जाठराग्नि तुम ३३ वैश्वानर ३४ अग्नि देवता को ३५ प्राप्त करो ३६ श्रेष्ठ होम हो हे योग शक्ति ३७ मेरे ३८ हृदय सम्बंधी ३९ मन को ४० निरुद्ध करो हे भूतात्मन् ४१ तेरा ४२ धूम्र ४३ स्वर्ग को ४४ जाओ ४५ आत्म ज्योति ४६ सूर्य को प्राप्त करो ४७ भस्म से ४८ पृथिवी को ४९ पूर्ण करो ५० श्रेष्ठ होम हो॥ २१॥

मापो मौषधीर्हिꣳसीर्धाम्नो धाम्नो राजंस्त तो वरुण नो मुञ्च। यदाहुरघ्न्या इति वरुणेति शपामहे ततो वरुण नो मुञ्च। सुमित्रियान आप ओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यञ्च वयन्द्विष्मः॥ २२॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
आपः। मा। हिꣳसीः। ओषधीः। मा। राजन्। वरुण। ततः।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धाम्नः। धाम्नः। नः। मुञ्च। अघ्न्याः। इति। यत्। आहुः। वरुण। इति। शपामहे। वरुण। ततः। नः। मुञ्च। आपः। ओषधयः। नः। सुमित्रियाः। सन्तु। यः। अस्मान्। द्वेष्टि। च। वयं। यम्। द्विष्मः। तस्मै। दुर्मित्रियाः। सन्तु॥ २२॥

अथाधिदैवम्– इस कंडिका में तीन मंत्र हैं उन को कहते हैं, अध्वर्यु जल में प्रवेश करके शुष्क आर्द्र संधि पर भूमि के मध्य हृदय शूल को अधोमुख वल से प्रवेश करता है उसके मंत्र १,२ यजमान सहित सब ऋत्विज तड़ागादि स्थ जल को स्पर्श करते हैं उस का मंत्र ३

ओं मापइत्यस्य (दीर्घतमा ऋ० दैवी जगती छं० हृदय शूलं दैवतं) १
ओं धाम्नइत्यस्य (तथा ० साम्न्युष्णिक् छं० वरुणो देवता) २
ओं सुमित्रियानइत्यस्य (तथा ० निचृद्प्राजापत्या गा यत्री छं० आपो देवता) ३

पदार्थः– हे हृदय शूल तुम १ जलों को २,३ मत नाश करो ४ ओषधियों को ५ मत नाश करो ६,७ हे राजा वरुण ८,९,१० अपने पाश युक्त प्रत्येक स्थान से ११ हम को १२ मुक्त करो १३ पशु अवध्य हैं १४ इस प्रकार १५ जो १६ वेद स्मृति ने कहा है १७ हे वरुण हम तो १८ इस विधि से १९ हिंसा करते हैं २० हे वरुण २१ उस अवध्य वध पाप से २२ हम को २३ मुक्त करो २४ जल २५ और ओषधि २६ हमारे २७ श्रेष्ठ मित्र २८ होवें २९ जो शत्रु ३० हम से ३१ द्वेष करता है ३२ और ३३ हम ३४ जिस शत्रु से ३५ द्वेष करते हैं ३६ उस दोनों प्रकार के शत्रु के लिये ३७ जल और ओषधि शत्रु रूप ३८ हों॥ २२॥

अथाध्यात्मम्– वाणी से भूतात्मा को होम करके अब प्रारब्ध समाप्ति के फिर प्रार्थना करता है हे मन तुम १ इन्द्रियों के अन्तरिक्षों को २,३ नष्ट मत करो ४ इन्द्रियों की शक्ति को ५ नष्ट मत करो ६,७ हे राजा मन ८,९,१० अपने पाश रूप प्रत्येक इन्द्री से ११ हम को १२ मुक्त करो १३ ईश्वर के पूजक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देहावयव अवध्य हैं १४ इसप्रकार १५ जो १६ वेदादिक कहते हैं १७ हे मन ह मतो १८ इस योग विधि से १९ हिंसते हैं २० हे मन २१ उस पाप से २२ हम को २३ मुक्त करो २४ इन्द्रियों के अन्तरिक्ष २५ और इन्द्रियां २६ हमारे २७ श्रेष्ठ मित्र २८ हों २९ जो काम ३० हम से ३१ द्वेष करता है ३२ और ३३ हम योगी जन ३४ जिस काम से ३५ द्वेष करते हैं ३६ उस काम के लिये इन्द्रियान्तरिक्ष और इन्द्रियां ३७ शत्रु रूप ३८ हों ॥२२॥

अब सोमाभिषव के उपयोगी वस्ती वरी नाम जलों के ग्रहण को कहते हैं

हविष्मती रिमा आपो हविष्मा२ ँ आविवासति। हविष्मान्देवी अध्वरो हविष्मा२ ँ अस्तु सूर्य ॥२३॥

हविष्मान्। इमाः। हविष्मतीः। आपः। आविवासति। देवः। अध्वरः। हविष्मान्। अस्तु। सूर्यः। हविष्मान् ॥२३॥

अथाधिदैवम् – सूर्य अस्त से पूर्व नदी आदि में बहते वस्ती वरी नाम जल को ग्रहण करता है यदि सूर्य अस्त हो जाय और यजमान ने पहिले यज्ञ किया हो तो यजमान के घर के मटके से जल को ले लेवे यदि यजमान पूर्वयाजी न हो तो किसी पूर्वयाजी पड़ोसी के मटके से जल को ले लेवे यदि पड़ोसी भी पूर्वयाजी न हो तो जल के सभी पउल्का वा सुवर्ण को रखकर वहां से वस्ती वरी नाम जल को ले लेवे उसका मंत्र १ ओं हविष्मतीरित्यस्य (दीर्घतमा ऋ० निचृद्दार्षी त्रिष्टुप छं० लिङ्गोक्त दे०) १

पदार्थः – १ हवि से संयुक्त यजमान २ इन ३ हवि से संयुक्त ४ वस्ती वरी नाम जलों की ५ परिचर्या करता है ६ प्रकाशमान ७ याग भी ८ हवि से युक्त ९ हो इन जलों से १० सूर्य भी ११ हविष्मान हो, क्योंकि श्रुति में लिखा है, कि जल को सूर्य और सब देवताओं के लिये ग्रहण करता है, सब देवता इस विराडात्मा सूर्य की किरणें हैं ॥२३॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाध्यात्मम्- १ आत्म प्रति विंव नाम हवि से युक्त आत्मा रूप यजमान २ इन ३ हवि युक्त ४ इन्द्रियान्त रिक्षों की ५ परिचर्या करता है ६ प्रकाशमान ७ योग यज्ञ ८ हवि से युक्त ९ हो १० समष्टि प्रति विंव ईश भी ११ हवि से युक्त हो ॥ २३॥

अग्नेर्वो पन्न गृहस्य सदसि साद यामीन्द्राग्न्यो भागधेयी स्थ मित्रा वरुणयो भागधेयी स्थ विश्वेषान्देवा नाम्भागधेयी स्थ अमूर्य्या उप सूर्ये याभिर्वा सूर्यः सह। तानो हिन्वन्त्वध्वरम् ॥ २४॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५

वः। अपुन्न गृहस्य। अग्नेः। सदसि। साद यामि। इन्द्राग्न्योः। भाग धेयी। स्थ। मित्रा वरुणयोः। भाग धेयी। स्थ। विश्वेषाम्। देवानाम्। भाग धेयी। स्थ। अमूर्य्याः। उपसूर्ये। वा। सूर्यः। याभिः। सह। ताः। नः। अध्वरम्। हिन्वन्तु॥ २४॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में ५ मंत्र हैं उनको कहते हैं, उनवस्ती वरी नाम जलों को नूतन गार्हपत्य के पश्चिम भाग में रखता है उसका मंत्र १ शाला द्वार्य समीपस्थ वस्ती वरी नाम जल को ले कर शाला के दक्षिण द्वार से चल कर उत्तर वेदी के दक्षिण श्रोणि पर रखता है उसका मंत्र २ पूर्ववत उत्तर वेदी के उत्तर श्रोणि पर पूर्वोक्त जल को रखता है उसका मंत्र ३ उत्तर वेदी के श्रोणि से पूर्वोक्त जल को ले कर आग्नीध्रीय के पीछे रखता है उसके मंत्र ४,५

ओं अग्नेर्व इत्यस्य (मेधातिथिर्ऋ० आसुरी गायत्रीछं० आपो दे०) १
ओं इन्द्राग्न्योरित्यस्य (तथा ० प्राजापत्या गायत्रीछं० तथा) २
ओं मित्रा वरुणयोरित्यस्य (तथा ० यानुष्टुप छं० तथा) ३

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं विश्वेषामित्यस्य (मेधातिथिऋ० याजुषीत्रिष्टुप्छं० आपो दे०)४
ओं अमूर्या इत्यस्य (तथा ० आर्च्युष्णिक्छं० तथा ०)५

पदार्थः – हे वस्त्री वरीजलो १ तुम को २ अविनाशी गृह वाले ३ शाला द्वार्य अग्नि के ४ निकट स्थान में ५ स्थापन करता हूं तुम ६ इन्द्र अग्नि देवताओं के ७ भाग रूप ८ हौ तुम ९ मित्र वरुण नाम देवताओं के १० भाग रूप ११ हौ तथा १२ सब १३ देवताओं के १४ भाग रूप १५ हौ १६ बंधन रहित प्रवाह युक्त जल १७ सूर्य के समीप स्थित हैं १८ और १९ सूर्य २० जिन जलों के २१ साथ प्रति बिंब रूप से है २२ वे जल २३ हमारे २४ यज्ञ को २५ तृप्त करौ ॥२४॥

अथाध्यात्मम् – हे कमलों के अन्तरिक्षो १ तुम को २ अक्षय लोक वाले ३ ब्रह्माग्नि के ४ निकट स्थान में ५ स्थापन करता हूं जो कि तुम ६ जीव ईश्वर के ७ भाग रूप ८ हौ तथा ९ प्राण उदान के १० भाग रूप ११ हौ तथा १२, १३ सब इन्द्रियों के १४ भाग रूप १५ हौ तथा १६ ब्रह्मा विष्णु महेश और ब्रह्माग्नि के सम्बंधी तुम १७ आत्म प्रति बिंब में और उसके समीप स्थित हौ १८ और १९ आत्म प्रतिबिंब भी २० जिन आप के २१ साथ हैं २२ वे अन्तरिक्ष २३ हमारे २४ योग यज्ञ को २५ प्राप्त करौ ॥ २४॥

हृदे त्वा मनसे त्वा दिवे त्वा सूर्य्याय त्वा। ऊर्ध्वमिमं मध्वरन्दिवि देवेषु होत्रा यच्छ ॥२५॥

मनसे। त्वा। हृदे। त्वा। दिवे। त्वा। सूर्याय। त्वा। होत्रा। इमम्। अध्वरम्। ऊर्ध्वम्। दिवि। देवेषु। यच्छ ॥ २५॥

अथाधिदैवम् – घृत स्थापन पर्यन्त कर्म करके सोम को लेकर हविर्धान में जा कर सोम को खोल उसके आधे को दक्षिण शकट के ईशान्त रल से सन्मुख अभिषवण के पाषाणों पर रखता है उसका मंत्र १
ओं हृदे त्वेत्यस्य (मेधातिथिऋ० विराडनुष्टुप्छं० सोमो दे०)१

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदार्थः हे सोम १ संकल्प विकल्पात्मक मन के लिये २ तुझे उपाहरण करता हूं ३ निश्चयात्मिका बुद्धि के लिये ४ तुझे उपाहरण करता हूं ५ स्वर्ग लोक के लिये ६ तुझे उपाहरण करता हूं ७ विश्वात्मा सूर्य के अर्थ ८ तुझे उपाहरण करता हूं ९ होता से इस प्रकार उपाहृत और अभिषुत तुम १० इस ११ यज्ञ को १२ ऊंचा १३ स्वर्ग में १४ देवताओं के मध्य १५ धारण करो ॥ २५॥

अथाध्यात्मम् – हे आत्म प्रति विंब १ मानस कमल के लिये २ तुझे उपाहरण करता हूं ३ हृदय कमल के अर्थ ४ तुझे उपाहरण करता हूं ५ भृकुटि कमल के अर्थ ६ तुझे उपाहरण करता हूं ७ विश्वात्मा सूर्य के लिये ८ तुझे उपाहरण करता हूं इस प्रकार ९ महावाक से उपाहृत और अभिषुत तुम १० इस ११ यजमान रूप अपने आत्मा को १२ ऊपर १३ गगन मंडल में १४ ब्रह्म परा नारायण के मध्य १५ धारण कर ॥ २५ ॥

सोम राजन्विश्वास्त्वम्प्रजा उपावरोह विश्वास्त्वाम्प्रजा उपावरोहन्तु। शृणोत्वग्निः समिधा हवम्मे शृण्वन्त्वापो धिषणाश्च देवीः श्रोतु ग्रावाणो विदुषो न यज्ञꣳ शृणोतु देवः सविता हवम्मे स्वाहा २६

राजन्। सोम। विश्वाः। प्रजाः। उपावरोह। विश्वाः। प्रजाः। त्वाम्। उपावरोहन्तु। समिधा। अग्निः। मे। हवम्। शृणोतु। आपः। च। धिषणा। देवीः। शृण्वन्तु। ग्रावाणः। श्रोतु। देवः। सविता। मे। हवं। न। विदुषः। यज्ञꣳ। शृणोतु। स्वाहा॥ २६॥

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में तीन मंत्र हैं उनको कहते हैं, अध्वर्यु लिपटे हुए वस्त्र को सोम से अलग कर सोम का उपस्थान करता है उसके मंत्र १,२ होता से मंत्रोच्चारण करने पर अध्वर्यु आज्य स्थाली से

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये हुए घृत को स्रुवा से लेकर अति प्रणीता में होमता है उसका मंत्र ३
ओं सोम राजन्नित्यस्य (मेधातिथि ऋ॰ साम्न्युष्णिक छं॰ सोमो दे॰) १
ओं विश्वान्वा मित्यस्य (तथा ॰ याजुषी त्रिष्टुप छं॰ तथा) २
ओं श्रणोत्व ग्नि रित्यस्य (तथा ॰ त्रिष्टुप छं ॰ लिङ्गोक्त दे॰) ३

पदार्थः १,२ हे राजा सोम ३ सब ४ प्रजाओं के ५ आधिपत्य को करो ६ सब ७ प्रजा ८ तुझ को ९ प्रत्युत्थान अभिवादन आदि के साथ प्राप्त हों १० समिधः सहित ११ अग्नि १२ मेरे १३ आव्हान को १४ सुनो १५ जल १६ और १७,१८ वाक् देवियां १९ मेरे आव्हान को सुनो २० हे अभिषव पाषाणाभिमानी देवताओ तुम २१ मेरे आव्हान को सुनो २२,२३ सविता देवता २४ मेरे २५ आव्हान को २६ और २७ यजमान के २८ यज्ञ को २९ सुनो ३० श्रेष्ठ होम हो ॥ २६ ॥

अथाध्यात्मम् — १,२ हे आत्मप्रति विंब ३ सब ४ प्राणों के ५ आधिपत्य को करो ६ सब ७ प्राण ८ तेरे ९ सन्मुख प्राप्त हों १० प्राण सहित ११ आत्माग्नि १२ मेरे १३ आव्हान को १४ सुनो १५ इन्द्रियों के अन्तरिक्ष १६ और १७,१८ ब्रह्म रूप महावाक १९ मेरे आव्हान को सुनो २० हे प्राणो तुम २१ मेरे आव्हान को सुनो २२ ज्योति स्वरूप २३ ईश २४ मेरे २५ आव्हान को २६ और २७ ज्ञानी योगी के २८ योग यज्ञ को २९ सुनो ३० जिसे वेद वाणी कहती है ॥ २६ ॥

देवीरापोऽअपान्नपाद्वोव ऊर्मिर्हविष्य इन्द्रियावान्मदिन्तमः। तन्देवेभ्यो देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यो येषाम्भागस्य स्वाहा ॥ २७ ॥

देवीः। आपः। वः। अपाम्। नपात्। यः। हविष्यः। इन्द्रियवान्। मदिन्तमः। ऊर्मिः। देवत्राः। तम्। शुक्रपेभ्यः। देवेभ्यः। दत्त। येषाम्। भागः। स्थ। स्वाहा ॥ २७ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में दो मंत्र हैं उनको कहते हैं जिस ४ वार लिये हुए घृत को साथ लिया उस को जल के समीप जा कर होमता है उसके मंत्र १,२

ओं देवी राप इत्यस्य (मेधातिथिर्ऋ० भुरिगार्षी पंक्तिश्छं० आपो दे०)१

ओं स्वाहेत्यस्य (तथा ० दैव्युषिाक् छं० तथा ०)२

पदार्थः – १ हे प्रकाशमान २ जलो ३ तुम ४ जलों की ५ संतान रूप ६ जो ७ हवि योग्य ८ इन्द्रिय शक्ति दाता ९ अत्यंत हर्ष कारक अथवा अतितृप्त करने वाली १० जल संघादि कल्लोल है ११ हे यजमान के रक्षको तुम १२ उस कल्लोल को १३ शुक्र आदि सोम ग्रह पान करने वाले १४ देवताओं के अर्थ १५ दीजिये १६ जिन देवताओं के १७ भाग रूप १८ हो १९ यह घृत तुम्हारे अर्थ होम हो ॥ २७ ॥

अथाध्यात्मम् – १ हे ज्योति स्वरूप २ ब्रह्म ज्योति रस अमृत रूप जलो ३,४ तुम जलों का ५ पौत्र अर्थात् ब्रह्मा शुक्र का पुत्र नारायण उस का पुत्र आत्म प्रति बिंब ६ जो ७ हवि योग्य ८ इन्द्रिय शक्ति से युक्त ९ अत्यंत तृप्त करने वाली १० कल्लोल है ११ हे योग निष्ठ के रक्षको तुम १२ उस आत्म प्रति बिंब को १३ मानस सूर्य के पान करने वाले १४ ब्रह्म परा नारायण के अर्थ १५ दीजिये तुम १६ जिन ब्रह्म परा नारायण के १७ अकाशात्मक अवयव रूप १८ हो १९ महावाक के प्रमाण से ॥ २७ ॥

कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि।
समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः २८

कार्षीः। असि। त्वा। समुद्रस्य। अक्षित्यै। उन्नयामि। आपः। अद्भिः। समग्मत। ओषधीः। ओषधीभिः। सम्॥ २८॥

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में ३ मंत्र हैं उन को कहते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो ४ वार लिया हुआ घृत जल में होमा उसको मैत्रा वरुण चमस से दूर करता है उस का मंत्र १ फिर अध्वर्यु उस मैत्रा वरुण चमस द्वारा तड़ागादि में स्थित जलों को लेता है उस का मंत्र २ जलाशय से आकर चात्वाल के ऊपर मैत्रा वरुण चमस और वस्ती वरी नाम जल को मिला कर रखता है उस का मंत्र ३

ओं कार्षि रसी त्यस्य (मेधातिथि ऋ० दैवी वृहती छं० आज्यं दैवतं)१
ओं समुद्र स्थेत्यस्य (तथा ० याजुषी त्रिष्टुप छं० आपो दे०)२
ओं समाप इत्यस्य (तथा ० साम्न्यनुष्टुप छं० तथा ०)३

पदार्थः — हे घृत पदार्थ तुम १ देवता से भक्षित अथवा अंतर्गत मल के दूर करने वाले २ हो हे जल ३ तुम को ४ वसती वरी नाम जल की ५ अक्षीणता के लिये ६ ग्रहण करता हूं ७ मैत्रा वरुण चमस में स्थित जल ८ वस्ती वरी नाम जलों के साथ ९ संगम को पाओ १० मुद्ग, मसूर आदि औषधि ११ चांवल यव आदि के साथ १२ संगम को पाओ॥ २८॥

अथाध्यात्मम् — हे इन्द्रिय शक्ति समूह तुम १ आकृष्ट अर्थात् देवता से भक्षित २ हो हे आत्म प्रति विंव ३ तुझे ४ ब्रह्म ज्योति रस अमृत रूप समुद्र की ५ अक्षीणता के लिये ६ ऊपर प्राप्त करता हूं ७ प्राण उदान में स्थित इन्द्रिय प्रति विंव रूप जल ८ कमलान्त रिक्षों के साथ ९ संगम को पाओ १० इन्द्रियों की शक्तियां ११ परा नर नारायण की शक्तियों के साथ १२ संगम को पाओ॥ २८॥

य मग्ने पृत्सु मर्त्य मवा वाजेषु यज्जुनाः। स यन्ता शश्वती रिषः स्वाहा॥ २९॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
अग्ने। पृत्सु। यमे। मर्त्यम्। अवाः। वाजेषु। यम्। जुनाः। स।
१० ११ १२ १३
शश्वतीः। इषः। यन्ता। स्वाहा॥ २९॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाधिदैवम् – अग्नि ष्टोम नाम यज्ञ के आरंभ होने पर शेष घृत को होमपर्याप्ति के अभाव में अन्वरणी पात्र में लिप्त ४ वार लिये हुए घृत शेष को होमता है उसका मंत्र १

ओं यमग्न इत्यस्य (मधुच्छंदा ऋ० भुरि गायत्री गायत्री छं० अग्निर्दे०) १

पदार्थः – १ हे अग्नि तुम २ संग्रामों में ३ जिस ४ मनुष्य को ५ रक्षा करते हो ६ और यज्ञों में हवि ग्रहण के लिये ७ जिस पुरुष के पास ८ जाते हो ९ वह पुरुष आप के अनुग्रह से १० निरंतर ११ अन्नों को १२ प्राप्त करता है १३ श्रेष्ठ होम हो ॥ २९॥ अथाध्यात्मम् – १ हे ब्रह्माग्नि तुम २ काम आदि के संग्रामों में ३ जिस ४ आत्म प्रतिबिंब को ५ रक्षा करते हो ६ और योग यज्ञों में ७ जिस प्रतिबिंब को ८ प्राप्त होते हो ९ वह योगी १० आत्मभूत ११ इन्द्रियों को १२ निरुद्ध करने वाला है १३ महावाक के अभाव से ॥ २९॥

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे श्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। आददे रावासि गभीरमिममध्वरङ्कृधीन्द्राय सुषूतममुत्तमेन पविनोर्ज्जस्वन्तं मधुमन्तम्पयस्वन्तन्निग्राभ्यास्थ देवश्रुतेस्तर्पयतमा ३०

सवितुः। दिवस्य। प्रसवे। अश्विनोः। बाहुभ्याम्। पूष्णोः। हस्ताभ्याम्। त्वा। आददे। रावा। असि। इमम्। अध्वरम्। गभीरं। कृधि। उत्तमेन। पविना। इन्द्राय। सुषूतमम्। ऊर्जस्वन्तं। मधुमन्तं। पयस्वन्तं। निग्राभ्याः। स्थ। देवश्रुतः। मा। तर्पयत ॥ ३०॥

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में दो मंत्र हैं उन को कहते हैं, अध्वर्यु उपांशु सवन नाम सोमाभिषव के पाषाण को लेकर हिंकार से पूर्व

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोन होता है उसका मंत्र १ यजमान से सोमाभिषव में सेवनीय निग्राभ्य नाम जल के ग्रहण और स्पर्श करने पर अध्वर्यु यजमान को कहलाता है वह मंत्र २ ओंदेवस्यत्वेत्यस्य (मधुच्छंदा ऋ० ब्राह्मी पंक्तिश्छं० अद्रिर्दे०)१ ओंनिग्राभ्यइत्यस्य(तथा ० आसुर्यनुष्टुप्छं० आपो दे०)२

पदार्थः— हे अभिषव साधन पाषाण १ सविता २ देवता की ३ आज्ञा में वर्त्तमान मैं ४ अश्विनी कुमार के ५ बाहु भाव को प्राप्त अपनी भुजाओं से ६ पूषा देवता के ७ हस्त भाव को प्राप्त अपने हाथों से ८ तुझे ९ ग्रहण करता हूं तुम १० आहुतियों और दक्षिणाओं के दाता ११ हो १२ इस १३ यज्ञ को १४ गंभीर अर्थात् महान् १५ करो मैं तुझ १६ उत्कृष्ट १७ वज्र रूप से १८ ईश्वर के अर्थ १९ अभिषुत तम सोम को २० रसवान २१ मधु स्वाद वाले रस से युक्त तथा २२ दुग्ध स्वाद वाले रस से युक्त करता हूं हे जलो तुम २३ सोमाभिषव के लिये हमसे निरंतर ग्रहण योग्य २४ हो २५ हे देवताओं में विख्यात बहुत मान से युक्त तुम २६ मुझे २७ तृप्त करो॥ ३०॥

अथाध्यात्मम्— हे प्राण १,२ गुरु देव की ३ आज्ञा में वर्त्तमान मैं ४ हृदय मन की ५ ग्रहण शक्तियों ६ तथा मानस सूर्य की ७ ग्रहण शक्तियों से ८ तुझे ९ ग्रहण करता हूं तुम १० योग के दाता ११ हो १२ इस १३ योग यज्ञ को १४ ब्रह्मज्ञान ब्रह्मनारायण और लक्ष्मी का देने वाला १५ करो १६ मैं तुझ उत्कृष्ट १७ वज्ररूप से १८ नारायण के अर्थ १९ अभिषुत तम प्रति विंब रस आत्मा को २० योग बल वाला २१ ब्रह्मज्ञान से सम्पन्न २२ प्राणवान करता हूं हे ब्रह्मांभु रूप जलो तुम २३ प्रति विंबाभिषव के लिये निरंतर ग्रहण योग्य २४ हो २५ विद्वानों में विख्यात तुम २६ मुझ यजमान को २७ तृप्त करो॥ ३०॥

मनो मेतर्पयत वाचं मेतर्पयत प्राणं मे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तर्पयतचक्षुर्म्मेतर्पयतश्रोत्रम्मेतर्पयतात्मा
नम्मेतर्पयतप्रजाम्मेतर्पयतपशून्मेतर्पयत
गणान्मेतर्पयतगणा मेमा वितृषन् ॥ ३१ ॥

मे। मनः। तर्पयतु। मे। वाचम्। तर्पयतु। मे। प्राणम्। तर्पयतु। मे। चक्षुः। तर्पयतु। मे। श्रोत्रम्। तर्पयतु। मे। आत्मानम्। तर्पयतु। मे। प्रजाम्। तर्पयन्तु। मे। पशून्। तर्पयतु। मे। गणान्। तर्पयतु। मे। गणाः। मा। वितृषन् ॥ ३१ ॥ प्रार्थनामन्त्र ओंमनो इत्यस्य (मधुच्छंदा ऋ० त्राड् ब्राह्मी जगती छं० आपो दे०) १

पदार्थः - संक्षेप कहकर विस्तार पूर्वक कहते हैं, हे पूर्वोक्त जलो १ मेरे २ मन को ३ तृप्त करो ४ मेरी ५ वाणी को ६ तृप्त करो ७ मेरे ८ प्राण को ९ तृप्त करो १० मेरी ११ चक्षु इन्द्री को १२ तृप्त करो १३ मेरी १४ श्रोतेन्द्री को १५ तृप्त करो १६ मेरे १७ आत्मा को १८ तृप्त करो १९ मेरी २० पुत्र आदि वा शम दम आदि सम्पत्ति को २१ तृप्त करो २२ मेरे २३ गौ आदि पशु वा इन्द्रियों को २४ तृप्त करो २५ मेरे २६ मनुष्य समूहों वा मन की वृत्तियों को २७ तृप्त करो २८ मेरे मनुष्य समूह वा मन की वृत्तियां ३०, ३१ विशेष तृषित न होवें

इन्द्रायत्वा वसुमते रुद्रवत इन्द्रायत्वादित्य
वत इन्द्रायत्वाभिमातिघ्ने। श्येनायत्वा सो
मभृतेग्नयेत्वा रायस्पोषदे ॥ ३२ ॥

वसुमते। रुद्रवते। इन्द्राय। त्वा। आदित्यवते। इन्द्राय। त्वा। अभिमातिघ्ने। इन्द्राय। त्वा। सोमभृते। श्येनाय। त्वा। रायस्पोषदे। अग्नये। त्वा ॥ ३२ ॥

अथाधिदैवम् - इस कंडिका में ५ मंत्र हैं उनको कहते हैं, पूर्वोक्त उपांशु सवन नाम पाषाण को अभिषवणाचर्म पर रख कर उसके

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊपर ५ वार अभिषव योग्य सोम मुष्टि को डालता है उसके मंत्र १ से ५ तक

ओं इन्द्रायत्वेत्यस्य (मधुच्छंदा ऋ० साम्नी गायत्री छं० सोमो दे०) १

ओं इन्द्रायत्वेत्यस्य (तथा ० प्राजापत्या गायत्री छं० तथा०) २, ३

ओं श्येनायत्वेत्यस्य (तथा ० तथा ० तथा०) ४

ओं अग्नेत्वेत्यस्य (तथा ० याजुषी बृहती छं० तथा०) ५

पदार्थः – हे सोम १ वसु नाम प्रातः सवन के देवता से युक्त २ रुद्र नाम माध्यन्दिन सवन के देवता से युक्त ३ इन्द्र के लिये ४ तुझे परिमित करता हूं ५ तृतीय सवन के देवता आदित्य से युक्त ६ इन्द्र के लिये ७ तुझ को परिमित करता हूं ८ शत्रु हंता ९ इन्द्र के लिये तुझे १० परिमित करता हूं ११ स्वर्ग से सोम लाने वाले १२ श्येन रूप धारी गायत्री के अधिष्ठाता देवता के लिये १३ तुझे परिमित करता हूं १४ धन पुष्टि दाता १५ अग्नि के लिये १६ तुझे परिमित करता हूं॥ ३२॥

अथाध्यात्मम् – हे प्रति विंव १ अपरा के विकार से युक्त २ प्राण से युक्त ३ आत्मा रूप यजमान के लिये ४ तुझे परिमित करता हूं ५ इन्द्रियों से युक्त ६ आत्मा के लिये ७ तुझे परिमित करता हूं ८ काम शत्रु के नाशक ९ आत्मा के लिये १० तुझे परिमित करता हूं ११ मानस कमल से प्रति विंव लाने वाले १२ ईश्वर के लिये १३ तुझे परिमित करता हूं १४ योगैश्वर्य पुष्टि के दाता १५ ब्रह्माग्नि के लिये १६ तुझे परिमित करता हूं॥ ३२॥

यत्ते सोम दिवि ज्योतिर्यत्पृथिव्यां यदुरावन्तरिक्षे। तेनास्मै यजमानायोरु राये कृध्यधि दात्रे वोचः ३३

सोम। दिवि। ते। यत्। ज्योतिः। पृथिव्याम्। यत्। उरौ। अन्तरिक्षे। यत्। तेन। अस्मै। यजमानाय। राये। उरु। कृधि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोत्रे। अधि। वोचं ॥ ३३ ॥

अथाधिदैवम्- मंत्र के अन्त में उपांशु सवन पर ५ बार डाले हुए सोम का स्पर्श करता है उसका मंत्र १

ओं यत्त इत्यस्य (मधुश्छंदा ऋ० भुरि गार्षी बृहती छं० सोमो दे०) १

पदार्थः- १ हे सोम २ स्वर्ग लोक में ३ तेरी ४ जो ५ ज्योति है ६ पृथिवी में ७ जो ज्योति है ८ विस्तीर्ण ९ अन्तरिक्ष में १० जो ज्योति है ११ उस देहरूप ज्योति से १२ इस १३ यजमान के लिये १४ धन लाभार्थ १५ अपने शरीर को विस्तीर्ण १६ करो १७ और दाता यजमान से १८, १९ अधिक कहो अर्थात् यह कहो कि मैं पूर्ण रूप से विद्यमान हूं ॥ ३३ ॥

अथाध्यात्मम्- १ हे आत्म प्रतिबिंब २ स्वर्ग लोक वा भृकुटि में ३ तेरी ४ जो ५ ज्योति सूर्य रूप वा शिव रूप है ६ पृथिवी वा मानस कमल में ७ जो ज्योति अग्नि रूप वा मानस सूर्य रूप है ८ विस्तीर्ण ९ अन्तरिक्ष वा हृदय में १० जो ज्योति वायु रूप वा प्राण रूप है ११ उस ज्योति से १२ इस १३ आत्मारूप यजमान के लिये १४ योगैश्वर्य प्राप्ति के अर्थ १५ अपने शरीर को विस्तीर्ण १६ करो १७ और १७ दाता आत्म रूप यजमान के लिये १८, १९ अधिक कहो कि मैं समष्टि रूप से विद्यमान हूं ॥ ३३ ॥

प्र्चात्रास्थ वृत्रतुरो राधो गूर्त्ता अमृतस्य पत्नीः।
ता देवीर्देवत्रेमं यज्ञं नयतोपहूताः सोमस्यपिबत ॥ ३४ ॥

प्र्चात्राः। वृत्रतुरः। राधो गूर्त्ताः। अमृतस्य। पत्नीः। देवत्राः। स्थ। देवीः। ताः। इमम्। यज्ञम्। नयत। उपहूताः। सोमस्य पिबत ॥ ३४ ॥

अथाधिदैवम्- अध्वर्यु सोम के ऊपर होत्र चमस से नियाभ्यनाम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जल को सींचता है उसका मंत्र १

ओंम्चात्रास्थ इत्यस्य (मधुच्छंदा ऋ० सुराडार्षी पंक्त्या बृहती छं० आपो दे०) १

पदार्थः—हे जलो तुम १ त्रिदेव रूप यजमान के रक्षक २ पाप नाशक ३ फल के दाता ४ सोम के ५ पालक ६ सोम के रक्षक ७ हो ८ हे प्रकाश मान जलो ९ वे तुम १० इस ११ यज्ञ को १२ प्राप्त करो १३ आव्हान किये हुए तुम १४ सोम को १५ पान करो ॥ ३४॥

अथाध्यात्मम्—हे ज्योती रस रूप जलो तुम १ त्रिदेव रूप धारी यजमान के रक्षक २ पाप के नाशक ३ योगैश्वर्य के दाता ४ प्रति विंबस्थ आत्मा के ५ पालन करने वाले ६ और उस देव रूप के रक्षक ७ हो ८ हे ज्योति रूप जलो ९ वे तुम १० इस ११ योग यज्ञ को १२ प्राप्त करो १३ और आव्हान किये हुए तुम १४ प्रति विंबस्थ आत्मा का १५ पान करो ॥ ३४॥

माभेर्मा संविक्था ऊर्जन्धत्स्व धिषणे वीड्वी सती वीडयेथामूर्जन्दधाथाम्। पाप्मा हतो न सोमः ३५

मा। भेः। मा। संविक्थाः। ऊर्जम्। धत्स्व। धिषणे। वीड्वी। सती वीडयेथाम्। ऊर्जम्। ददाथाम्। पाप्मा। हतः। नः। सोमः ३५

अथाधिदैवम्—अध्वर्यु निग्राभ्य नाम जल से सींच कर उपांशु सवन नाम पाषाण से सोम पर तीन प्रहार करता है उसका मंत्र १

ओं माभेरित्यस्य (मधुच्छंदा ऋ० भुरिगार्ष्यनुष्टुप् छं० अद्भ्यस्त्वा वाऽधि दे०) १

पदार्थः हे सोम तुम १, २ भय मत करो ३, ४ कंपित मत हो ओ ५ रस को ६ धारण करो ७ हे पृथिवी स्वर्ग तुम दोनों ८, ९ दृढ़ होते १० अपने आत्मा को दृढ़ करो ११ सोम रस को १२ धारण करो १३ पाप रूप सोम का देह १४ नष्ट हुआ १५ नकि १६ सोम ॥ ३५॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाध्यात्मम् – हे प्रति विंव तुम १,२ भय मत करो ३,४ कंपित मत होओ ५ योग वल को ६ धारण करो ७ हे मन भृकुटि तुम दोनों ८,९ दृढ़ होते १० अपने आत्मा को दृढ़ करो ११ प्रति विंव के रस आत्मा को १२ धारण करो १३ पाप अर्थात प्रति विंव शरीर १४ नष्ट हुआ १५ नकि १६ आत्म ज्योति ॥ ३५॥

प्राग पाग्रुदग धराक सर्वत स्त्वा दिश आधावन्तु। अम्ब निष्पर सुमरी विदाम ॥ ३६॥

प्राके। अपाके। उदके। अधराक। दिशः। सर्वतः। त्वा। आधावन्तु। अम्ब। निष्पर। अरीः। संविदाम ॥ ३६॥

अथाधिदैवम् – प्रतिप्रहार वर्ग में होत्र चमस के बीच सोम के अंशुओं को रख कर निग्राभ्य नाम दो ऋचा यजमान से कहलाता है ओं प्रग पागित्यस्य (मधुच्छंदा ऋ० आर्ष्युष्णिक् छं० सोमो दे०) १

पदार्थः – हे सोम १ पूर्व २ पश्चिम ३ उत्तर ४ दक्षिण नाम ५ सव दिशा ६ अपने २ प्रदेश से ७ तेरे ८ सन्मुख आओ ९ हे दिगाभिमानिन देवता १० अपने भागों से सोम को पूर्ण वा पालन कर ११ प्रजा १२ सोम के समागम को जानों ॥ ३६॥

अथाध्यात्मम् – हे आत्म प्रति विंव १ पूर्वा विज्ञान लक्षणा २ पश्चिमा व्यवहार लक्षणा ३ श्रेष्ठा भक्ति लक्षणा ४ अधमास काम कर्म लक्षणा ५ उपदेश कारक बुद्धि वृत्तियां ६ सव ओर से ७ तेरे ८ सन्मुख आओ ९ हे बुद्धि तुम १० ब्रह्म ज्ञानी योगियों के ११ ब्रह्म ब्रह्माग्नि परा रूप प्रति विंव को १२ अपने भागों से पूर्ण करो ॥ ३६॥

त्वमङ्ग प्रथमो रिषो देवः शविष्ठ मर्त्यम्
नत्वदन्यो मघव न्नस्ति मर्डितेन्द्र ब्रवीमि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेवर्चः॥ ३७॥

शविष्ठ। मघवन्। अङ्ग। इन्द्र। देवः। त्वं। मर्त्यम्। प्रशंसिषः। त्वत्। अन्यः। मर्डिता। न। अस्ति। ते। वचः। ब्रवीमि॥ ३७॥ महा विष्णु की प्रार्थना का मंत्र १

ओंत्वमित्यस्य (गोतम ऋ० पंक्त्या बृहती यद्वा भुरिगार्ष्यनु० छं० इन्द्रो दे०)१

पदार्थः १ हे अतिशयबलवान २ ब्रह्मा विष्णु महेश रूप धारण शील ३ ब्रह्म में प्रादुर्भूत ४ महा विष्णो ५ ज्योति स्वरूप ६ तुम ७ प्रति विंव रूप यजमान को ८ भक्ति ज्ञान के दान से प्रशंसा योग्य करते हो ९ तुम से १० दूसरा ११ यजमान का सुख दाता १२ नहीं १३ है १४ तेरे १५ वेद मंत्र रूप वचन को १६ कहता हूं॥ ३७॥

इति श्री भृगु वंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्म्म कृते शुक्ल यजुर्वेदीय ब्रह्म भाष्ये अभ्रादानाद्वाचनान्तस्तथा आत्म प्रति विंवाभिषवो द्योग वर्णनं नाम षष्ठोध्यायः

छठी अध्याय में यूप संस्कार से सोमाभिषव तक मंत्र कहे अब सातवीं अध्याय में ग्रह ग्रहण के मंत्र कहे जाते हैं॥

हरिः ओं वाचस्पतये पवस्व वृषाऽअंशुभ्यां गभस्ति पूतः। देवो देवेभ्यः पवस्व येषाम्भागोसि॥ १॥

वृषाः। अंशुभ्याम्। गभस्ति पूतः। वाचस्पतये। पवस्व। देवः। देवेभ्यः। पवस्व। येषाम्। भागः। असि॥ १॥

अथाधिदैवम् – उपांशु ग्रह को ग्रहण करता है उसके मंत्र १,२

ओंवाचस्पतयइत्यस्य (गोतम ऋ० साम्नी बृहती छं० प्राणो दे०)१

ओंदेव इत्यस्य (तथा ० आसुर्यनुष्टुप छं० तथा ०)२

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदार्थः – हे सोम १ तुझ वर्षा करने वाले की २ अंशुओं (किरण) ३ तथा अध्वर्यु के हाथों से पवित्र तुम ४ प्राण के लिये ५ जाओ, दूसरा मंत्र हे सोम तुम ६ देवता होते ७ देवताओं के लिये ८ प्रवृत्ति करो ९ जिन देवताओं के तुम १० भाग ११ हो ॥ १॥

अथाध्यात्मम् – प्राण आदि आत्म प्रति बिंब के अवयव हैं उनको उनके समष्टि रूपों में होमता है हे प्राण १ आत्मा की २ किरणों तथा ३ इन्द्रिय शक्ति की प्राप्ति से पवित्र तुम ४ समष्टि प्राण के लिये ५ चलो ६ देवता होते ७ ब्रह्म परानारायण नाम देवताओं के लिये ८ चलो ९ १ जिन देवताओं के १० भाग ११ हो ॥ १॥

मधुमतीर्न इषस्कृधि यत्ते सोमादाभ्यन्नामजागृविं तस्मै ते सोम सोमाय स्वाहा स्वाहोर्वन्तरिक्षमन्वेमि ॥ ३॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
नः। इषः। मधुमतीः। कृधि। सोमे। ते। यत्। अदाभ्यम्। जागृ
१० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७
वि। नाम। सोम। तस्मै। ते। सोमाय। स्वाहा। स्वाहा। उरु
१८ १९
अन्तरिक्षम्। अन्वेमि ॥ २॥

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में तीन मंत्र हैं उनको कहते हैं, तीसरे ग्रह को ग्रहण करता है उसका मंत्र १ स्वीकृत अंशुओं को सोम में स्थापन करता है उसका मंत्र २ अध्वर्यु हविर्धान से निष्क्रमण करता है उसका मंत्र ३ ॥

ओं मधुमती रित्यस्य (गोतमऋ० याजुषी बृहती छं० लिङ्गोक्त दे०) १

१ जो देवता नहीं वह देवताओं के तृप्त करने को समर्थ नहीं जैसा श्रुति कहती है, जो अन्न आत्मा के समान है वह रक्षा करता है पीड़ा नहीं देता, जो अन्न आत्मा के समान नहीं है वह रक्षा नहीं करता किंतु पीड़ा देता है ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं यन्तद्इत्यस्य (गोतमऋ० आर्च्युष्णिक् छं० लिङ्गोक्त दे०) १
ओं स्वाहाइत्यस्य (तथा ० आसुरीजगती छं० तथा ०) ३

पदार्थः हे सोम तुम १ हमारे २ अन्नों को ३ मधुर रस से युक्त ४ करो ५ हे सोम ६ तेरा ७ जो ८ हिंसा रहित ९ जागरण शील १० नाम है ११ हे सोम १२ उस नाम वाले १३ तुझ १४ सोम के लिये १५, १६ मंत्रोच्चारण पूर्वक श्रेष्ठ होम हो १७ विस्तीर्ण १८ अन्तरिक्ष को १९ जाता हूं ॥२॥

अथाध्यात्मम् – हे समष्टि प्राण १ हमारी २ इन्द्रियों को ३ ब्रह्मज्ञान से युक्त ४ करो ५ हे समष्टि प्राण ६ तेरा ७ जो ८ हिंसा रहित ९ जागरण शील १० नाम है ११ हे समष्टि प्राण १२ उस १३ तुझ १४ समष्टि प्राण के लिये १५, १६ मंत्रोच्चारण पूर्वक होम हो १७ विस्तीर्ण १८ हार्दान्तरिक्ष को १९ जाता हूं ॥२॥

स्वाङ्कृतोसि विश्वेभ्य इन्द्रियेभ्यो दिव्येभ्यः
पार्थिवेभ्यो मनस्त्वाष्टु स्वाहा त्वा सुभव सू-
र्याय देवेभ्यस्त्वा मरीचिपेभ्यो देवा ꣳ शोय
स्मै त्वेडे तत्सत्य मुपरि प्रुता भङ्गेन हतो सौ फ
ट् प्राणाय त्वा व्यानाय त्वा ॥३॥

विश्वेभ्यः। पार्थिवेभ्यः। दिव्येभ्यः। इन्द्रियेभ्यः। स्वाङ्कृतः। असि। मनः। त्वा। अष्टु। सुभव। सूर्याय। त्वा। स्वाहा। मरीचिपेभ्यः। देवेभ्यः। त्वा। देवाः। अंशो। यस्मै। त्वा। ईडे। तत्। सत्यम्। उपरि। प्रुता। भङ्गेन। असौ। हतः। फट्। प्राणाय। त्वा। व्यानाय। त्वा ॥३॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में ५ मंत्र हैं उन को कहते हैं, उपांशुग्रह को होम कर पात्र का मार्जन करता है उस का मंत्र १ अध्वर्युग्रह-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को होम कर पात्र का मार्जन करके उस जल से सोम लिप्त हाथ को पश्चिम स्थ परिधि में धोता है उस का मंत्र २ सोमाभिषव करते पाषाण के अभिघात से उड़कर जो सोमांशु वस्त्र हृदय भुजा में लगा उस को लेकर आहवनीय अग्नि में होमता है उस का मंत्र ३ उपांशु ग्रह के पात्र को उसके स्थान पर स्थापन करता है उस का मंत्र ४ फिर अध्वर्यु सोमाभिषव के उपांशु सवन नाम पाषाण को हाथ से धो कर उसमें लगी हुई ऋजीष आदि को मार्जन से नीचे गिरा कर फिर उस को उत्तर मुख उपांशु पात्र के निकट स्थापन करता है उस का मंत्र ५

ओं स्वाङ्कृतो सीत्यस्य (गोतम ऋ० भुरिग्प्राजापत्या जगती छं० उपांशुर्दे० १
ओं देवेभ्य स्त्वेत्यस्य (तथा ० याजुषी बृहती छं० ० देवा दे० २
ओं देवांश इत्यस्य (तथा ० साम्नी त्रिष्टुप् छं० ० लिङ्गोक्त ३
ओं प्राणायत्वेत्यस्य (तथा ० दैवी बृहती छंद ० ग्रहो दे० ४
ओं व्यानायत्वेत्यस्य (तथा ० तथा ० उपांशुसव० दे० ५

पदार्थः – हे प्राण रूप उपांशु ग्रह तुम १ सव २ पृथिवी पर उत्पन्न द्विपद चतुष्पद के लिये ३ तथा स्वर्ग वासी देवताओं के लिये ४ तथा कर्म ज्ञान नाम इन्द्रियों के लिये ५ स्वयं उत्पन्न ६ हो ७ मन प्रजापति ८ तुझे ९ व्याप्त करो १० हे उत्तम जन्म वाले ग्रह ११ सूर्य देवता के लिये १२ तुझ को १३ स्वाहा कार पूर्वक होमता हूं हे लेप १४ सूर्य किरण पान करने वाले १५ देवताओं के लिये १६ तुझे परिधि पर मार्जन करता हूं १७ हे दीप्यमान १८ सोमांशु १९ जिसके वधार्थ २० तुझ से २१ प्रार्थना करता हूं २२ वह २३ सत्य हो २४ ऊपर २५ प्राप्त २६ मर्दन से २७ यह अमुक संज्ञा वाला शत्रु २८ मरा हुआ २९ विशीर्ण हो, हे उपांशु पात्र ३ प्राण देवता के संतोषार्थ ३१ तुझे आसादन करता हूं हे उपांशु सवन ३२

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यान देवता की प्रीति के अर्थ ३३ तुझे आसादन करता हूं ॥३॥

अथाध्यात्मम् – हे प्राण १ सव २ कर्म संज्ञक ३ ज्ञान संज्ञक ४ इन्द्रियों सहित तुम ५ ब्रह्मा विष्णु महेश रूप सूर्य के अर्थ साधित ६ हौ ७ मन ८ तुमको ९ व्याप्त करो १० हे श्रेष्ठ जन्म वाले प्राण ११ सूर्य के अर्थ १२ तुझको १३ स्वाहा कार पूर्वक होमता हूं हे प्राण लेप १४ सूर्य किरण रूप १५ देवताओं के अर्थ १६ तुझको भलेप्रकार मार्जन करता हूं १७ हे दीप्य माम १८ जीवात्मा १९ जिसके लिये २० तुझे २१ चाहता हूं २२ वह २३ सत्य ब्रह्म है २४ ऊपर २५ प्राप्त २६ मर्दन से २७ यह काम २८ मरा हुआ २९ विशीर्ण हो हे प्राण ३० समष्टि प्राण देवता के सन्तोषार्थ ३१ तुझे आसादन करता हूं हे व्यान ३२ समष्टि व्यान की प्रीति के अर्थ ३३ तुझे आसादन करता हूं ॥ ३॥

उपयाम गृहीतोस्यन्तर्य्यच्छ मघवन् पाहि सोमम्। उरुष्य रायएषो यजस्व ॥ ४॥

उपयाम गृहीतः। असि। मघवन्। अन्तः। यच्छ। सोमं। पाहि। रायः। उरुष्य। इषः। आयजस्व ॥ ४॥

अथाधिदैवम् – सूर्योदय पर अध्वर्यु अंतर्यामि पात्र में अंतर्यामि नाम ग्रह को ग्रहण करता है उसका मंत्र १

ओं उपयामेत्यस्य (गोतम ऋषिः प्राजापत्या त्रिष्टुप छं० इन्द्रो दे०) १

पदार्थः – हे सोम रस तुम १, २ उपयाम ग्रह से ग्रहण किये हुए २ हौ ३ हे त्रिदेव रूप धारण करने वाले परमेश्वर तुम उस सोम रस को ४ ग्रह पात्र के मध्य ५ ग्रहण करो ६ सोम को ७ रक्षा करो ८ धन वा पशुओं को ९ रक्षा करो १० अन्नों को ११ चारों ओर से दो अथवा प्रजा को यज्ञ कर्म में तत्पर करो ॥ ४॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाध्यात्मम् – हे उदानात्मा तुम १ परा शक्ति से गृहीत २ हो ३ हे त्रिदेव रूप धारण करने वाले महानारायण तुम उस उदानात्मा को ४ अपनी किरणों के मध्य ५ ग्रहण करो ६ और प्रति विंव रस आत्मा को ७ संसार वंधन से रक्षा करो ८ इन्द्रियों को ९ रक्षा करो १० विषयों को ११ उसके कारण में स्थापन करो ॥ ४ ॥

अन्तस्ते द्यावा पृथिवी दधाम्यन्तर्दधाम्युर्वन्तरिक्षम् । सजूर्देवेभिरवरैः परैश्चान्तर्यामे मघवन्मादयस्व ५

द्यावा पृथिवी । ते । अन्तः । दधामि । उर्वी । अन्तरिक्षम् । अन्तः । दधामि । मघवन् । अवरैः । परैः । देवेभिः । सजूः । अन्तर्यामे । मादयस्व ॥ ५ ॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में विष्णु की प्रार्थना का मंत्र है ॥ ओं अन्तस्त इत्यस्य (गोतम ऋ० आर्षी पंक्ति श्छं० मघवा दे०) १

पदार्थः – हे अन्तर्यामग्रह १ पृथिवी स्वर्ग को २ तेरे ३ मध्य ४ स्थापन करता हूं ५ विस्तीर्ण ६ अन्तरिक्ष को ७ तेरे मध्य ८ स्थापन करता हूं अर्थात् वैश्व देव रूप करता हूं ९ हे त्रिदेव रूप धारी परमेश्वर १० अपरा विकार रूप ११ परा भूत १२ देवताओं के साथ १३ समान प्रीति वाले तुम १४ अन्तर्यामग्रह में १५ तृप्ति को पाओ ॥ ५ ॥

अथाध्यात्मम् – हे उदान १ मन और भृकुटि को २ तेरे ३ मध्य ४ स्थापन करता हूं ५ विस्तीर्ण ६ द्यादान्तरिक्ष को ७ तेरे मध्य ८ स्थापन करता हूं अर्थात् वैश्व देव रूप करता हूं ९ हे त्रिदेव रूप धारी महाविष्णु १० साकार इन्द्रादि ११ ज्योति रूप नारायण आदि १२ देवताओं के १३ साथ तुम १४ उदान में १५ तृप्ति को पाओ ॥ ५ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाङ्कृतोसि विश्वेभ्य इन्द्रियेभ्यो दिव्येभ्यः पार्थिवेभ्यो मनस्त्वाष्टु स्वाहा। त्वा सुभव सूर्याय देवेभ्यस्त्वा मरीचिपेभ्य उदानाय त्वा॥ ६॥

विश्वेभ्यः। पार्थिवेभ्यः। दिव्येभ्यः। इन्द्रियेभ्यः। स्वाङ्कृतः। असि। मनः। त्वा। अष्टु। सुभव। सूर्याय। त्वा। स्वाहा। मरीचिपेभ्यः। देवेभ्यः। त्वा। उदानाय। त्वा॥ ६॥

अथाधिदेवम्— इस कंडिका में ३ मंत्र हैं उन को कहते हैं, वरवरणा और हुत शेष का आज्य स्थाली में आसेचन इन सब को छोड़ सब विधि उपांशु ग्रह वत् होती है उसका मंत्र १ अंतर्यामि ग्रह में ग्रह को होम कर पश्चि माभि मुख होकर अधो मुख हाथ से प्रथम परिधि को मार्जन करता है उसका मंत्र २ उपांशु सवन से संलग्न अन्तर्यामपात्र को आसादन करता है उसका मंत्र ३

ओं स्वाङ्कृतो सीत्यस्य (गोतमऋ० भुरिग्प्राजापत्याजगती छं० अन्तर्यामादे०) १

ओं देवेभ्य इत्यस्य (तथा ० याजुषी बृहती छं० देवो दे०) २

ओं उदानायत्वेत्यस्य (तथा ० दैवी पंक्ति श्छं० ० ग्रहो दे०) ३

पदार्थः— हे उदान रूप अन्तर्यामि ग्रह तुम १ सब २ पृथिवी पर उत्पन्न द्विपद चतुष्पदों ३ देवता ओं ४ कर्मज्ञान संज्ञक इन्द्रियों के अर्थ ५ स्वयं उत्पन्न ६ हो ७ मन प्रजा पति ८ तुझे ९ व्याप्त करो १० हे उत्तम जन्म वाले ग्रह ११ सूर्य देवता के अर्थ १२ तुझ को १३ स्वाहा कार पूर्वक होमता हूं हे लेप १४ सूर्य किरण पान करने वाले १५ देवता ओं के अर्थ १६ तुझे परिधि पर मार्जन करता हूँ हे अन्तर्यामि पात्र १७ उदान देवता की प्रीति के अर्थ १८ तुझे सादन करता हूं॥ ६॥

अथाध्यात्मम्— हे उदानात्मन् १ सब २ कर्म संज्ञक ३ ज्ञान-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संज्ञक ४ इन्द्रियों से ५ त्रिदेव रूप धारी सूर्य के अर्थ साधित ६ हौ ७ मन ८ तुम को ९ व्याप्त करो १० हे श्रेष्ठ जन्म वाले उदान ११ सूर्य के अर्थ १२ तुझ को १३ स्वाहा कार पूर्वक होमता हूं हे उदान लेप १४, १५ सूर्य किरणों के अर्थ १६ तुझे मार्जन करता हूं हे उदान १७ समष्टि उदान की प्रीति के अर्थ १८ तुझे सादन करता हूं ॥ ६ ॥

आवायो भूष शुचिपा उप नः सहस्रन्ते नियुतो विश्ववार। उपो ते अन्धो मद्यमयामि यस्य देव दधिषे पूर्वपेयं वायवे त्वा ॥ ७ ॥

शुचिपाः। वायो। नः। उप। आभूष। विश्ववार। ते। सहस्रम्। नियुतः। मद्यम्। अन्धः। ते। उप। अयामि। देव। यस्य। पूर्वपेयं। दधिषे। वायवे। त्वा ॥ ७ ॥

अथाधिदैवम्- सूर्योदय पर अंतर्यामि ग्रहण आदि और उस पात्र का आसादन करके अध्वर्यु तभी ऐन्द्र वायव पात्र में ऐन्द्र वायवनाम दो देवता वाले पहिले ग्रह को ग्रहण करता है उसका मंत्र १ ओं आवायो भूषेत्यस्य (वशिष्ठ ऋ० निचृदार्षी जगती छं० वायुर्दे०) १

पदार्थः १ वषट् कृत दूसरे देवताओं से अप्राप्त पवित्र सोम के पान करने वाले २ हे वायु देवता तुम ३ हमारे ४ समीप ५ चारों ओर से शोभित हूजिये ६ हे सर्वव्यापी वा हे सब के प्रार्थनीय जिस कारण ७ आपके ८ असंख्य ९ वाहन रूप मृग हैं उस कारण १० तृप्ति करने वाले ११ सोम लक्षण अन्न को १२ आप के १३ आगे १४ समर्पण करता हूं १५ हे दीप्यमान वायु १६ जिस सोम के १७ प्रथम वषट् कार लक्षण वाले पूर्व पान को तुम १८ धारण करते हो हे सोम रस १९ वायु देवता के लिये २० तुझे ग्रहण करता हूं ॥ ७ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाध्यात्मम् – १ हे पवित्र वाणी के पान करने वाले २ वायु देवता ३ हम योगियों के ४ समीप ५ चारों ओर से शोभित हूजिये ६ हे सर्वव्यापी ७ आपकी ८ असंख्य ९ आपसे योजित वाक् रूप तरङ्ग हैं १० तृप्त करने वाले ११ वाक् रूप अन्न को १२ आप के १३ आगे १४ समर्पण करता हूं १५ हे वायु १६ जिस वाणी के १७ पूर्व पान को १८ तुम धारण करते हो हे वाक् १९ वायु देवता के अर्थ २० तुझे ग्रहण करता हूं॥७॥ क्योंकि वाणी के प्रादुर्भाव का आदि आत्मा और अंत वायु है, जैसे स्मृति में कहा है, आत्मा बुद्धि से अर्थों को विचार कर कहने की इच्छा से मन को नियुक्त करता है, और मन जाठराग्नि को और जाठराग्नि वायु को प्रेरित करता है वह ऊर्द्ध गामी वायु मस्तक पर आता हुआ मुख को पाकर वर्णों को उत्पन्न करता है उन वर्णों के विभाग पांच प्रकार के माने हैं॥

इन्द्र वायू इमे सुता उप प्रयो भिरागतम्। इन्द्र वोवा मुशन्ति हि। उपयाम गृहीतोसि वायव इन्द्र वायुभ्यान्त्वैषते योनिः सजोषो भ्यान्त्वा॥८॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
इन्द्र वायू। इमे। सुताः। प्रयोभिः। उप। आगतम्। हि। इन्द्र
९ १० ११ १२ १३ १४
वः। वाम्। उशन्ति। उपयाम गृहीतः। असि। वायवे। इन्द्र
१५ १६ १७ १८ १९ २०
वायुभ्याम्। त्वा। एषः। ते। योनिः। सजोषाभ्याम्। त्वा॥८॥

अथाधिदैवम्– इस कंडिका में दो मंत्र हैं, एक वार आधे को लेकर फिर ऐन्द्र वायव ग्रह को ग्रहण करता है उसका मंत्र १ दशापवित्र से ग्रहण किये हुए ग्रह को मार्जन करके उसका सादन करता है उसका मंत्र २

ओं इन्द्र वायू इत्यस्य (मधुच्छ० ऋ० आर्षी गायत्री छं० इन्द्र वायू दे०) १

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओंउपयामेत्यस्य (मधुच्छंदा ऋ० सुराडार्षी गायत्री छं० इन्द्रोदे०)२

पदार्थः-१ हे इन्द्र वायु देवता ओं तुम्हारे लिये २ यह सोम ३ अभिषवण किये ४ इन सोम रस रूप अन्नों के निमित्त ५ समीप ६ आइये ७ जिस कारण ८ सोम ९ तुम दोनों को १० चाहते हैं हे सोम रस तुम ११ उपयाम पात्र से ग्रहण किये हुए १२ हो १३ वायु देवता के लिये १४ तथा इन्द्र वायु देवता के अर्थ १५ तुझे ग्रहण करता हूं हे उपयाम पात्र १६ यह १७ तेरा १८ स्थान है १९ समान प्रीति वाले इन्द्र वायु देवता के लिये २० तुझे सादन करता हूं॥ ८॥

अथाध्यात्मम्-१ हे समष्टि आत्मा प्राण २ यह वाणी रूप सोम ३ अभिषवण किये गये ४ वाणी रूप अन्नों के निमित्त ५ समीप ६ आइये ७ जिस कारण ८ वाणी रूप सोम ९ तुम दोनों को १० चाहते हैं हे वाक्तु ११ ब्रह्मशक्ति से ग्रहण किये हुए १२ हो १३ वायु देवता के लिये १४ तथा इन्द्र वायु देवता के अर्थ १५ तुझे ग्रहण करता हूं हे उपयाम पात्र १६ यह परा नाम तेरा आत्माही १७ तेरा १८ स्थान है १९ समान प्रीति वाले इन्द्र वायु देवता के लिये २० तुझे सादन करता हूं॥ ८॥

अयंवा मित्रावरुणा सुतः सोम ऋतावृधा।
ममेदिह श्रुतꣳ हवम्। उपयाम गृहीतोसि
मित्रावरुणाभ्यान्त्वा ९

ऋतावृधा। मित्रावरुणा। वाम्। अयम्। सोमः। सुतः। इह। ममेत्। हवम्। श्रुतꣳ। उपयामे गृहीतः। असि। मित्रावरुणाभ्याम्। त्वा॥ ९॥

अथाधिदैवम्-मैत्रावरुण ग्रह को ग्रहण करता है उसके मंत्र १,२

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं अयंवामित्यस्य (गृत्समद ऋ० आर्षी गायत्री छं० मित्रा वरुणौ दे०)१
ओं उपयामेत्यस्य (तथा ० आसुरी गायत्री छं० तथा ०)२

पदार्थः – १ चारों ओर से यज्ञ की वृद्धि करने वाले २ हे मित्र वरुण देवताओ ३ तुम दोनों के लिये ४ यह ५ सोम ६ अभिषवण ६ आ ७ इस यज्ञ में ८ मेरे ही ९ आव्हान को १० सुनो हे सोम रस तुम ११ मैत्रा वरुण पात्र से ग्रहण किये हुए १२ हो १३ मित्र वरुण देवताओं के लिये १४ तुझे ग्रहण करता हूं॥ ९॥

अथाध्यात्मम् – योग यज्ञ की वृद्धि करने वाले २ हे समष्टि मन और मन की शक्ति ३ तुम दोनों के लिये ४ यह ५ आत्म प्रति विंब ६ अभिषवण किया ७ इस योग यज्ञ में ८ मेरे ही ९ आव्हान को १० सुनो हे काम्य संकल्प और उसकी समृद्धि तुम ११ परा शक्ति से ग्रहण किये हुए १२ हो १३ समष्टि मन और मन की शक्ति के लिये १४ तुझे ग्रहण करता हूं॥ ९॥

रायावयꣳ ससवाꣳ सोम देम हव्येन देवा
यवसेन गावः। तान्धेनुम्मित्रावरुणा युवन्नो
विश्वाहा धत्तमनपस्फुरन्तीमेष ते योनिर्ऋ
तायुभ्यान्त्वा १०

ससवाꣳ सः। वयꣳ। रायो। मदेम। देवाः। हव्येन। गावः। यवसे
न। मित्रा वरुणा। युवम्। ताम्। अनपस्फुरन्तीम्। धेनुम्। नः।
विश्वाहा। धत्तम्। एषः। ते। योनिः। ऋतायुभ्याम्॥ त्वा॥ १०॥

अथाधिदैवम् – ग्रहण के अनन्तर इस मैत्रा वरुण ग्रह को दो कुशा से युक्त कर लोकिक दुग्ध से पकाता है, और पात्र का सादन करता है उसके मंत्र १,२

ओं रायावयमित्यस्य (त्रिसदस्यु ऋ० आर्षी त्रिष्टुप छं० मित्रा वरुणौ दे०)१
ओं एषत इत्यस्य (तथा ० याजुषी पंक्ति छं० ग्रहो दे०)२

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदार्थः- १ धन से सम्पन्न २ हम ३ धन से ४ हृष्ट होवें ५ देवता ६ हव्य से ७ गौ ८ घास आदि से तृप्त हों ९ हे मित्रवरुण देवता ओ १० तुम दोनों ११ उस १२ अनन्य गामिनी १३ धेनु को १४ हमारे अर्थ १५ सदा १६ दीजियै हे ग्रह १७ यह १८ तेरा १९ स्थान है २० मित्र वरुण देवता ओं के लिये २१ तुझे सादन करता हूं॥ १०॥

अथाध्यात्मम्- १ विराट् भाव को प्राप्त २ हम आत्मा रूप योगी ३ योग लक्ष्मी से ४ हृष्ट होवें ५ देवता नारायण आदि ६ आत्म प्रति बिंब से ७ और प्रारब्ध समाप्ति तक इंद्रियां ८ त्यागनि वृत्ति सर्व व्यापी निवृत्तात्मा और सोहं मंत्र से हृष्ट हों ९ हे समष्टि मन और मन की शक्ति १० तुम दोनों ११ उस १२ अनन्य गामिनी १३ सोहं वाणी को १४ हमारे लिये १५ सदा १६ दीजियै हे काम्य संकल्प और हे काम समृद्धि १७ यह परा शक्ति १८ तेरा १९ स्थान है २० समष्टि मन और मन की शक्ति के लिये अथवा ब्रह्म परा के अर्थ २१ तुझे सादन करता हूं॥ १०॥

यावाङ्कशामधुमत्यश्विना सूनृतावती तया यज्ञं मिमिक्षतम्। उपयामगृहीतोस्यश्विभ्यान्त्वैषते योनिर्माध्वीभ्यान्त्वा॥ ११॥

अश्विना। वाम्। या। कशा। मधुमती। सूनृतावती। तया। यज्ञम्। मिमिक्षतम्। उपयामगृहीतः। असि। एषः। ते। योनिः। माध्वीभ्याम्। त्वा॥ ११॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में दो मंत्र हैं, वहिष्पवमान की स्तुति के अनन्तर अध्वर्यु हविर्धान में प्रवेश करके द्रोण कलश से आश्विन नाम ग्रह को ग्रहण करता है उसका मंत्र १ पात्र का सादन करता है उसका मंत्र २

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओंयावामित्यस्य (मेधातिथिर्ऋ० भुरिगार्षी गायत्री छं० अश्विनौ दे०) १
ओंउपयामेत्यस्य (तथा ० याजुषी त्रिष्टुप छं० ग्रहो दे०) २

पदार्थः – १ हे अश्विनी कुमारो २ तुम दोनों की ३ जो ४ वाणी ५ ब्रह्मज्ञानवती ६ सत्य प्रिय वचन से युक्त है ७ उस वाणी से ८ हमारे यज्ञ को ९ सींचने की इच्छा कीजिये हे ग्रह तुम १० उपयाम पात्र में ग्रहण किये हुए ११ हो हे ग्रह १२ यह १३ तेरा १४ स्थान है १५ मधु ब्राह्मण का पाठ करनेवाले अश्विनी कुमारों के अर्थ १६ तुझे सादन करता हूं॥ ११॥

अथाध्यात्मम् – १ हे पृथिवी स्वर्गाभिमानी देवताओ २ तुम दोनों की ३ जो ४ वाणी ५ ब्रह्मज्ञानवती ६ सत्य प्रिय वचन से युक्त है ७ उस वाणी से ८ यजमान को ९ सींचना चाहो हे श्रोत्र नाम ग्रह तुम १० परा शक्ति से ग्रहण किये हुए ११ हो १२ यह परा शक्ति १३ तेरा १४ स्थान है १५ पृथिवी स्वर्ग के अंग भूत दिशाओं के लिये १६ तुझे सादन करता हूं॥ १९॥

तम्मन्त्रथो पूर्वथा विश्वथेमथा ज्येष्ठतातिम्बर्हिषदꣳ स्वर्विदम्। प्रतीचीनं वृजनं दोहसे धुनिमाशुञ्जयन्तमनु यासुवर्द्धसे। उपयामगृहीतोसि शण्डायत्त्वैष ते योनिर्वीरतां पाह्युपमृष्टः शण्डो देवास्त्वाशुक्रपाः प्रणयन्त्वनाधृष्टासि १२

यासु। अनु। वर्द्धसे। तम्। ज्येष्ठतातिम्। बर्हिषदम्। स्वर्विदम्। प्रतीचीनम्। धुनिम्। आशुम्। जयन्तम्। वृजनम्। दोहसे।

* श्रुति में लिखा है, कि ये दशा सब प्राणियों के मधु हैं और सब प्राणी इन दिशाओं के मधु हैं, इन दिशाओं में जो यह तेजोमय, अमृतमय पुरुष है और श्रोत्र में जो यह तेजोमय अमृतमय पुरुष है वह वही है जो यह आत्मा है, यह अविनाशी है यह ब्रह्म है यह सब है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्नथा। पूर्वथा। विश्वथा। इमथा। उपयाम गृहीतः। असि। शण्डाय। त्वा। एषः। ते। योनिः। वीरताम्। पाहि। शण्डः। अपमृष्टः। शुक्रपाः। देवाः। त्वा। प्रणयन्तु। अनाधृष्टा। असि॥ १२॥

अथाधिदैवम् — इस कंडिका में पांच मन्त्र हैं उन को कहते हैं, विल्व पात्र अथवा वैकङ्कत पात्र के द्वारा शुक्र नाम ग्रह को ग्रहण करता है उसके मंत्र १,२ चमसोन्नयन के पीछे अध्वर्यु और प्रतिप्रस्थाता शुक्र और मन्थी ग्रहों के साथ यथाक्रम चलते हैं प्रोक्षित दो यूप शकल के साथ अप्रोक्षित दो यूप शकल को ले कर प्रोक्षितों से उन दोनों ग्रह को क्रम पूर्वक आच्छादन करके अप्रोक्षितों से दोनों ग्रह को मार्जन करते हैं वहां प्रोक्षित शकल से ग्रह को ढ़क कर अप्रोक्षित शकल से अध्वर्यु शुक्र ग्रह को मार्जन करता है उसका मंत्र ३ अध्वर्यु शुक्र लिङ्ग द्वारा और प्रतिप्रस्थाता मन्थि लिङ्ग द्वारा हविर्धान के मध्य से निकलते हैं उसका मंत्र ४ अध्वर्यु और प्रतिप्रस्थाता वेदी के पिछले भाग में अरत्नी का संयोजन कर ग्रहों का त्याग न करते उत्तर वेदी की श्रोणि में ग्रहों का सादन करते हैं तहां अध्वर्यु दक्षिण श्रोणि में शुक्र ग्रह को और प्रतिप्रस्थाता उत्तर वेदी की श्रोणि में मंथि ग्रह को सादन करता है उसका मंत्र ५

ओंतमित्यस्य (वस्तारः काश्यपऋ० निचृदार्षीजगतीछं० विश्वे देवादे०) १
ओंउपयामेत्यस्य (तथा ० आर्च्युष्णिक छं० ० ग्रहो दे०) २
ओंअपमृष्टइत्यस्य (तथा ० याजुषी गायत्री छं० ० आभिचारिक) ३
ओंदेवास्त्वेत्यस्य (तथा ० याजुषी पंक्ति श्छं० ० शुक्र पा दे०) ४
ओंअनाधृष्टासीत्यस्य (तथा ० दैवी पंक्ति श्छं० ० वेदि श्रोणी दे०) ५

पदार्थः — हे यजमान तुम १ जिन यज्ञ क्रियाओं में २ यज्ञ के फल से

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृद्धि पाते हो उन क्रियाओं में ३ उस ४ उत्कृष्ट विस्तारवान ५ लोक में स्थित ६ विराडात्मा सूर्य के ज्ञाता ७ ब्रह्म के सन्मुख ८ शत्रुओं के कंपित करने वाले ९,१० ब्रह्मा विष्णु महेश रूपधारी महा विष्णु के प्राप्त करने वाले ११ भक्ति बल वा योग बल को १२ प्राप्त करते हो १३ जैसे भृगु आदि ऋषियों ने प्राप्त किया १४ तथा सनकादि ऋषियों ने प्राप्त किया १५ तथा जैसे ऋषि पुत्रों ने प्राप्त किया १६ तथा जैसे वर्त्तमान काल के महात्मा प्राप्त करते हैं हे शुक्र ग्रह तुम १७ उपयाम पात्र से ग्रहण किये हुए १८ हो १९ असुर प्रोहित के लिये २० तुझे ग्रहण करता हूं हे ग्रह २१ यह खर प्रदेश २२ तेरा २३ स्थान है २४ वीरता को २५ रक्षा करो २६ असुरों का पुरोहित २७ शुद्ध किया हे शुक्र ग्रह २८ शुक्र ग्रहस्थ सोम के पान करने वाले २९ देवता ३० तुझ को ३१ यजति स्थान में प्राप्त करो हे उत्तर वेदी की श्रोणि तुम ३२ अनुपहिंसित ३३ हो॥ १२॥

अथाध्यात्मम्– हे योगी तुम १ जिन योग क्रियाओं में २ समष्टि भाव को प्राप्त करते हो उन क्रियाओं में ३ उस ४ बड़े विस्तारवान ५ लोक में स्थित ६ ईश के ज्ञाता ७ ब्रह्म के सन्मुख ८ काम आदि के कंपित करने वाले ९,१० महानारायण को प्राप्त कराने वाले ११ परोक्ष ज्ञान बल को १२ प्राप्त करते हो १३ जैसे भृगु आदि महर्षियों ने प्राप्त किया १४ तथा जैसे सनकादि ऋषियों ने प्राप्त किया १५ तथा जैसे ऋषि पुत्रों ने प्राप्त किया १६ तथा जैसे वर्त्तमान काल के महात्मा प्राप्त करते हैं हे चक्षु तुम १७ परा शक्ति से ग्रहण किये हुए १८ हो १९ प्रजापति भर्ग नारायण शङ्कर का रूप धारण करने वाले सूर्य के अर्थ २० तुझे ग्रहण करता हूं हे चक्षु २१ यह परा शक्ति २२ तेरा २३ स्थान है २४ संसार जय में शूरता को २५ रक्षा करो २६ काम २७ भले प्रकार शोधन किया गया है मानस सूर्य २८ सूर्य का पान करने वाले २९ ब्रह्म परा नारायण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवता ३० तुझको ३१ ब्रह्म में प्राप्त करो हे हार्दान्तरिक्ष की श्रोणि तुम ३२ का मश्रादि से उपहिंसित ३३ नहीं हो॥ १२॥

सुवीरो वीरान्प्रजनयन्परीह्यभि रायस्पोषेण यजमानम्। सञ्जग्मानो दिवा पृथिव्या शुक्रः शुक्रशोचिषा निरस्तः शण्डः शुक्रस्याधिष्ठानमसि १३

सुवीरः। वीरान्। प्रजनयन्। रायः। पोषेण। यजमानम्। अभि। परीहि। शुक्रः। शुक्रशोचिषा। पृथिव्या। दिवा। सञ्जग्मानः। शण्डः। निरस्तः। शुक्रस्य। अधिष्ठानम्। असि। १३

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में ४ मंत्र हैं उनको कहते हैं; अध्वर्यु दक्षिण यूप देश को और प्रतिप्रस्थाता उत्तर यूप देश को जाता है उसका मंत्र १ अध्वर्यु और प्रतिप्रस्थाता यूप के पश्चिम भाग में उस २ ग्रह वाचक पदलिङ्ग को अतिक्रमन करके अरत्नी का संयोजन करते हैं उसका मंत्र २ अध्वर्यु अप्रोक्षित यूप शकल को फेंकता है उसका मंत्र ३ अध्वर्यु आहवनीय में प्रोक्षित यूप शकल को डालता है उसका मंत्र ४

ओं सुवीर इत्यस्य (वत्सारः काश्यपऋ० साम्नीत्रिष्टुप्छं० शुक्रं दै०)१
ओं सञ्जग्मान इत्यस्य (तथा ० साम्न्यनुष्टुप् छं० तथा)२
ओं निरस्त इत्यस्य (तथा ० दैवी पंक्तिश्छं० अभिचारकं)३
ओं शुक्रस्येत्यस्य (तथा ० प्राजापत्या गायत्रीछं० शकलं दै०)४

पदार्थः – हे शुक्र ग्रह तुम १ श्रेष्ठ पराक्रम से युक्त होते २ यजमान के शूर भृत्य आदि को ३ उत्पन्न करते ४,५ धन पुष्टि से ६ यजमान को देखकर ८ चारों ओर से प्राप्त करो ९ शुक्र ग्रह तुम १० शुद्ध दीप्ति के साथ ११ भूलोक १२ और स्वर्ग लोक को १३ तृप्ति के साथ प्राप्त होने वाले

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो १४ असुरों का पुरोहित १५ यज्ञ से बाहर निकाला हे यूप शकल तुम १६ यूप ग्रह के १७ आधार १८ हो॥ १३॥

अथाध्यात्मम्– हे आत्म प्रति विंब १ श्रेष्ठ योग बल से युक्त तुम २ शम दम आदि को ३ उत्पन्न करते ४,५ योग लक्ष्मी की पुष्टि द्वारा ६ आत्मा को ७ सब ओर से ८ प्राप्त करो ९ सूर्य रूप तुम १० शुद्ध दीप्ति के साथ ११ मानस कमल १२ और हार्दाकाश में १३ भले प्रकार प्राप्त हो १४ काम १५ योग यज्ञ से बाहर निकाला हे सूक्ष्म शरीर तुम १६ मानस सूर्य के १७ आधार १८ हो नकि काम के॥ १३॥

अच्छिन्नस्य ते देव सोम सुवीर्य्यस्य रायस्पोषस्य ददितारः स्याम। सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा स प्रथमो वरुणो मित्रो अग्निः। १४।

देव। सोम। अच्छिन्नस्य। सुवीर्य्यस्य। ते। रायः। पोषस्य। ददितारः। स्याम। सा। विश्ववारा। संस्कृतिः। प्रथमा। सा। प्रथमः। वरुणः। मित्रः। अग्निः॥ १४॥

अथाधिदैवम्– इस कंडिका में दो मंत्र हैं उनको कहते हैं, यजमान जप करता है उसका मंत्र १ अध्वर्यु और प्रति प्रस्थाता यूप के दोनों पार्श्व में पश्चिम मुख स्थित होकर होम करते हैं तहां अध्वर्यु आदि में शुक्र ग्रह को और प्रति प्रस्थाता पीछे मन्थि ग्रह को होमता है उसका मंत्र २

ओं अच्छिन्नस्येत्यस्य (वत्सारः काश्यप ऋ० प्राजापत्या पंक्तिश्छं० सोमोदे) १
ओं सा प्रथमा इत्यारभ्य (तथा ० विराडार्षी त्रिष्टुप् छं० इन्द्रोदे) २
स्वाहान्तस्य

पदार्थः– १ आत्मा रूप यजमान जप करता है १ हे दीप्यमान २

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोम ३ अखंडित ४ कल्याण प्रभाव वाले ५ आपके अनुग्रह से हम ६ ७ धन पुष्टि के ८ दाता ९ होवें १० वह ११ सब ऋत्विजों से वरणीय १२ सोम का संस्कार १३ मुख्य है १४ और वह १५ परमेश्वर १६ वरुण रूप १७ सूर्य रूप १८ और अग्नि रूप है ॥१४॥

अथाध्यात्मम्— १ हे ज्योति स्वरूप २ आत्म प्रतिबिंब ३ समष्टि भाव को प्राप्त करने वाले ४ योग बल वाले ५ आपकी ६ ७ अष्ट सिद्धि आदि की पुष्टि के ८ दाता ९ हम होवें १० वह ११ सबसे वरणीय १२ संस्कार १३ मुख्य है १४ और वह १५ महा नारायण १६ ज्योति रस अमृत रूप १७ सूर्यान्तर गत भर्ग रूप १८ और ब्रह्माग्नि रूप है ॥१४॥

सप्रथमो बृहस्पतिश्चिकित्वांस्तस्मा इन्द्रायसुतमाजुहोतस्वाहा। तृम्पन्तु होत्रा मध्वोयाः स्विष्टायाः सुप्रीताः सुहुतायत्स्वाहा याडग्नीत् १५

सः। चिकित्वान्। बृहस्पतिः। प्रथमः। तस्मै। इन्द्राय। सुतम्। स्वाहा। आजुहोत। होत्राः। तृम्पन्तु। मध्वः। स्विष्टाः। याः। सुप्रीताः। यत्। स्वाहा। सुहुताः। अग्निः। इत्। अयाट्॥ १५॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में दो मंत्र हैं उनको कहते हैं, प्रथम प्रशास्तृ चमस को होम कर अध्वर्यु जप करता है उसका मंत्र १ फिर अध्वर्यु होता के समीप पश्चिम मुख बैठता है उसका मंत्र २ ओंतृम्पन्त्वित्यस्य (वत्सारः काश्यपऋ० प्राजापत्या बृहती छं० होत्रा दे०)१ ओं अयाडित्यस्य (तथा ० दैवी बृहती छं० तथा)२

पदार्थः—१ वह २ ज्ञान स्वरूप ३ वेद का स्वामी ४ सब का आद्य है

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५उस ६परमेश्वर के लिये ७ अभिषुत सोम को ८ स्वाहाकार पूर्वक ९ होम करो १० छन्दोभिमानी देवता ११ तृप्त हों १२ वह १३ मधुर स्वादु वाले सोम के १४ भले प्रिय हैं १५ और जो १६ अच्छे प्रसन्न हैं १७ उस कारण १८ स्वाहाकार पूर्वक १९ सोम के लिये नियुक्त हुए २०, २१ अग्नि ने ही २२ होम किया न कि दूसरे ने ॥१५॥ ❀

अथाध्यात्मम् – १ वह २ ज्ञान स्वरूप ३ असंख्य ब्रह्मांडों का स्वामी महानारायण ४ आद्य है ५ उस ६ माया नाशक महानारायण के अर्थ ७ अभिषुत प्रतिबिंब रस आत्मा को ८ महावाक् पूर्वक ९ होमो १० ब्रह्मभाव को प्राप्त वाक् आदि ११ ब्रह्मभाव से तृप्त हों १२ जो वाक् आदि १३ ब्रह्मज्ञानी आत्म प्रतिबिंब के १४ अत्यंत प्रिय हैं १५ और जो वाक् आदि १६ ब्रह्मानंद से युक्त हैं १७ जिस कारण १८ महावाक् पूर्वक १९ होम के लिये नियुक्त हुए २०, २१ ब्रह्माग्नि ने ही २२ होम किया उस से भिन्न चैतन्य के न होने से ॥ १५॥

अयं वेन श्चोदयत्पृश्निगर्भा ज्योतिर्जरायू रजसो विमाने। इमम पाथं संगमे सूर्यस्य शिशुं न विप्रा मतिभी रिहन्ति। उपयाम गृहीतो सि मर्कायत्वा ॥१६॥

१ अयं। २ ज्योतिर्जरायुः। ३ वेनः। ४ रजसः। ५ विमाने। ६ पृश्निगर्भाः। ७ अचोदयत्। ८ विप्राः। ९ सूर्यस्य। १० अपाथं। ११ संगमे। १२ इमम्। १३ शिशुं। १४ न। १५ मतिभिः। १६ रिहन्ति। १७ उपयामगृहीतः। १८ असि। १९ मर्काय। २० त्वा। १६

अथाधिदैवम् – मन्थि पात्र में मन्थि ग्रह को ग्रहण करता है उसके मंत्र १, २

ओं अयं वेन इत्यस्य (वत्सारः काश्यप ऋ० निचृदार्षी त्रिष्टुप् छं० सोमोदे०) १

ओं उपयामेत्यस्य (तथा ० साम्नी गायत्री छं० तथा) २

❀ जैसा भगवान ने कहा है कि स्रुवा आदि, हवि, अग्नि और यजमान सब ब्रह्म हैं॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदार्थः- १ यह २ विजली की समान मंडल से युक्त ३ शोभा मान चंद्रमा ४ ५ रसात्मक विमान में ६ स्वर्गस्थ वा सूर्यस्थ जलों को ७ प्रेरणा करता वा बर्षाता है ८ वेद के ज्ञाता ब्राह्मण ९ सूर्य १० और जलों के ११ संङ्गम में वर्षा होने के अर्थ १२ इस चंद्रमा को १३,१४ बालक की समान १५ बुद्धि पूर्वक वचनों से १६ स्तुत करते हैं हे मन्थि ग्रह तुम १७ उपयाम पात्र से ग्रहण किये हुए १८ हो १९ असुर पुरोहित के लिये २० तुझे ग्रहण करता हूं॥ १६॥

अथाध्यात्मम्- १ यह २ ज्योति मय कमल से वेष्टित ३ समष्टि भाव को प्राप्त मन ४,५ ज्योति मय विमान गगन मंडल में ६ गगना मृत रूप जलों को ७ वर्षाता है ८ मेधावी योगीजन ९ मानस सूर्य १० और कमलान्तरिक्षों का ११ सङ्गम होने पर १२ इस मन को १३,१४ बालक की समान १५ ज्ञान स्वरूप बचनों से १६ स्तुत करते हैं हे समष्टि मन तुम १७ परा शक्ति से ग्रहण किये हुए १८ हो १९ चंद्रमा के पूज्य महानारायण के अर्थ २० तुझे ग्रहण करता हूं॥ १६॥

मनोनयेषु हवनेषु तिग्मं विपः शच्या वनुथो द्रवन्ता। आयः शर्य्याभिस्तुविनृम्णो अस्याश्रीणीतादिशङ्गभस्ता वेषते योनिः प्रजाः पाह्यपमृष्टो मर्को देवास्त्वा मन्थिपाः प्रणयन्त्वनाधृष्टासि॥ १७॥

द्रवन्ताः। विपः। शच्या। मनोनयेषु। हवनेषु। तिग्मं। वनुथः। तुविनृम्णः। अस्य। गभस्तौ। शर्य्याभिः। आदिशम्। अश्रीणीत। ते। एषः। योनिः। प्रजाः। पाहि। मर्कः। अपमृष्टः। मन्थिपाः। देवाः। त्वा। प्रणयन्तु। अनाधृष्टा। असि॥ १७॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में ४ मंत्र हैं उनको कहते हैं. इस मंत्र ग्रह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोयव पिष्टि से युक्त करता है उसका मंत्र १ प्रति प्रस्थाता प्रोक्षित यूप शकल से मन्थि ग्रह को ढक कर अप्रोक्षित से मार्जन करता है उसका मंत्र २ प्रति प्रस्थाता हविर्धान से निकलता है उसका मंत्र ३ प्रति प्रस्थाता मन्थि ग्रह को सादन करता है उसका मंत्र ४

ओं मनोनयेष्वित्यस्य (वत्सारः काश्यपऋ० आर्षी पंक्तिश्छं० सोमो दे०) १
ओं एषत इत्यस्य (तथा ० याजुषी बृहतीछं० ग्रहो दे०) २
ओं देवास्त्वेत्यस्य (तथा ० याजुषी पंक्तिश्छं० मन्थिदैवतं) ३
ओं अनाधृष्टा सीत्यस्य (तथा ० याजुषी गायत्री छं० अभिचारिकं) ४

पदार्थः १ हे गतिमान २ मेधावी ऋत्विजो तुम ३ वैदिक मंत्र द्वारा ४ मनजिनका नेता है ऐसे ५ सोम होमों में ६ तीक्ष्ण मन्थि ग्रह को ७ प्राप्त हो ८ जो वह धन वाला मन्थि ग्रह १० इस अध्वर्यु के ११ हाथ में १२ अंगुलियों से १३ सब ओर १४ यव पिष्टि से मिश्रित हुआ है मंथि ग्रह १५ तेरा १६ यह १७ स्थान है तुम १८ यजमान सम्बंधी प्रजा को १९ पालन करो २० असुर पुरोहित २१ शुद्ध किया है मन्थि ग्रह २२ मन्थि पान करने वाले २३ देवता २४ तुझे २५ यजति स्थान में प्राप्त करो है उत्तर वेदी की श्रोणी तुम २६ अनुपहिंसित २७ हो ॥ १७ ॥

अथाध्यात्मम् – १ हे गतिमान २ मेधावी वाक आदि ऋत्विजो तुम ३ योग क्रिया के साथ ४ मन जिनका नेता है ऐसे ५ प्रति विंब रसात्मा के होमों में ६ तीक्ष्ण मन को ७ प्राप्त करो ८ जो ९ बड़े ऐश्वर्य वाला मन १० इस योगी की ११ आत्म ज्योति में १२ वाणी रूप इन्द्रियों के साथ १३ सब ओर से १४ मिश्रित हुआ है मन १५ तेरा १६ यह परा शक्ति १७ स्थान है तुम १८ इन्द्रियों को १९ रक्षा करो २० मन रूप चन्द्रमा २१ संस्कारी हुआ है मन २२ मनके रक्षक २३ ब्रह्म परा नारायण नाम देवता २४ तुझे २५ अपने आत्मा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में प्राप्त करो हे गगन भूमि तुम २६ अनुपहिंसित २७ हो॥ १७॥

सुप्रजाः प्रजाः प्रजनयन्परीह्यभि रायस्पोषेण यजमानम्। सञ्जग्मानो दिवा पृथिव्या मन्थी मन्थि शोचिषा निरस्तो मर्को मन्थिनो धिष्ठानमसि॥ १८॥

सुप्रजाः। प्रजाः। प्रजनयन्। रायः। पोषेण। यजमानं। अभि। परीहि। मन्थी। मन्थि शोचिषा। दिवा। पृथिव्या। सञ्जगमानः। मर्कः। निरस्तः। मन्थिनः। अधिष्ठानं। असि। १८

अथाधिदैवम्– इस कंडिका में ४ मंत्र हैं उनको कहते हैं, प्रतिप्रस्थाता उत्तर यूप देश को जाता है उसका मंत्र १ अरत्नी का संधान करता है उसका मंत्र २ प्रतिप्रस्थाता अप्रोक्षित यूप शकल को निकालता है उसका मंत्र ३ प्रतिप्रस्थाता प्रोक्षित यूप शकल को आहवनीय में डालता है उसका मंत्र ४.

ओं प्रजा इत्यस्य (वत्सारःकाश्यप ऋ० साम्नी त्रिष्टुप् छं० मंथिदैवतं) १
ओं सञ्जगमान इत्यस्य (तथा ० साम्न्यनुष्टुप् छं० तथा) २
ओं निरस्त इत्यस्य (तथा ० दैवी पंक्ति श्छं० आभिचारिकं) ३
ओं मन्थिनः इत्यस्य (तथा ० प्राजापत्या गायत्री छं० शकलं दै) ४

पदार्थः– हे मन्थि ग्रह १ श्रेष्ठ प्रजा वाले तुम २ यजमान सम्बंधी प्रजा को ३ उत्पन्न करते ४,५ धन पुष्टि के साथ ६ यजमान के ७ सन्मुख ८ आओ ९ मन्थी नाम ग्रह तुम १० अपनी दीप्ति के साथ ११,१२ पृथिवी और स्वर्ग लोक से १३ युक्त हो १४ असुर पुरोहित १५ यज्ञ से निकाला गया हे यूप शकल तुम १६ मन्थी के १७ आधार १८ हो॥ १८॥

अथाध्यात्मम्– हे मन १ इन्द्रियों को वश करने वाले तुम २ शम

CC-0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दम आदि को ३ उत्पन्न करते ४, ५ योगैश्वर्य की पुष्टि के साथ ६ आत्मा के ७ सन्मुख ८ आओ ९ चंद्रमा रूप तुम १० अपनी दीप्ति के साथ ११, १२ समाधि में भृकुटि और हार्दाकाश से १३ युक्त हो १४ मन से पूजित काम १५ योग यज्ञ सेवा हरनिकाला गया है भृकुटि कमल तुम १६ मन के १७ आधार १८ हो ॥ १८ ॥

येदेवासोदिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्येकादश स्थ। अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिमञ्जुषध्वम् ॥ १९ ॥

देवासः। ये। महिना। दिवि। एकादश। स्थ। पृथिव्याम्। अधि। एकादश। स्थ। अप्सुक्षितः। एकादश। स्थ। ते। देवासः। इमम्। यज्ञम्। जुषध्वम् ॥ १९ ॥

अथाधिदेवम्– दोनों धारा के झरते हुए आग्रयन ग्रह को स्थाली से ग्रहण करता है उसका मंत्र १

ओं येदेवास इत्यस्य (परुच्छेपऋ० भुरिगार्षी पंक्तिश्छं० विश्वेदेवा दे०) १

पदार्थः– १ हे देवताओ २ जो तुम ३ अपनी महिमा से ४ स्वर्ग में ५ एकादश रुद्ररूप से एकादश ६ हो ७ पृथिवी के ८ ऊपर ९ आत्मा सहित दशप्राण रूप से एकादश १० हो ११ समवायु रूप से अन्तरिक्षनिवासी १२ एकादश १३ हो वे १५ देवता तुम १६ इस १७ यजनयोग्य आग्रयण को अथवा आत्मा को १८ सेवन करो ॥ १९ ॥

उपयामगृहीतोस्याग्रयणोसि स्वाग्रयणः पाहि यज्ञम्पाहि यज्ञपतिं विष्णुस्त्वामिन्द्रियेण पातु विष्णुस्त्वम्पाह्यभि सवनानि पाहि २०

उपयामगृहीतः। असि। आग्रयणः। स्वाग्रयणः। असि। यज्ञम्। पाहि। यज्ञपतिम्। पाहि। विष्णुः। इन्द्रियेण। त्वाम्। पातु। त्वम्

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विष्णुम्। पाहि। सवनानि। अभि। पाहि॥ २०॥

अथाधिदैवम्- आग्रयणग्रहके ग्रहणका मंत्र १

ओंउपयामेत्यस्य (परुच्छेपऋ० निचृदार्षीजगती छं० आग्रयणोदे०) १

पदार्थः- हे आग्रयणग्रह तुम १ उपयाम पात्र से स्वीकृत २ हो ३ ब्रह्माविष्णु महेश को प्राप्त करानेवाले ४ और त्रिदेवरूपधारी महाविष्णु की प्राप्ति करानेवाले ५ हो वैसे तुम ६ द्रव्ययज्ञ को ७ रक्षा करो ८ यजमान को ९ रक्षा करो १० यज्ञ का अधिष्ठाता विष्णु ११ अपनी सामर्थ्य से १२ तुझे १३ रक्षा करो १४ तुम १५ भक्तियज्ञ को १६ रक्षा करो १७ तीनों सवन को १८ सब ओर से १९ रक्षा करो॥ २०॥

अथाध्यात्मम्- हे जीवात्मा तुम १ परा शक्ति से स्वीकृत २ हो ३ सायुज्य मोक्ष में ब्रह्माविष्णु महेश के भोजन ४ और कैवल्य मोक्ष में महानारायण के भोजन ५ हो तैसे तुम ६ ज्ञानयज्ञ को ७ रक्षा करो ८ अपने आत्मा को ९ रक्षा करो १० यज्ञ का अधिष्ठाता विष्णु ११ अपनी सामर्थ्य से १२ तुझे १३ रक्षा करो १४ तुम १५ योगयज्ञ को १६ रक्षा करो १७ तीनों सवनों को १८ सब ओर से १९ रक्षा करो॥ २०॥

सोमः पवते सोमः पवते स्मैब्रह्मणे स्मैक्षत्राया स्मै सुन्वते यजमानाय पवत इषऊर्जे पवते ऽद्भ्य ओषधीभ्यः पवते द्यावापृथिवीभ्याम्पवते सुभूताय पवते विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः। एषते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः २१

सोमः। अस्मै। ब्रह्मणे। पवते। सोमः। अस्मै। क्षत्राय। पवते। अस्मै। सुन्वते। यजमानाय। पवते। इषे। ऊर्जे। पवते। अद्भ्यः। ओषधीभ्यः। पवते। द्यावापृथिवीभ्याम्। पवते। सुभूताय। पवते। त्वा। विश्वेभ्यः। देवेभ्यः। एषः। ते। योनिः। विश्वेभ्यः। देवेभ्यः। त्वा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥२१॥ **अथाधिदैवम्** – दशापवित्रसे आग्रयण को ग्रहण करतीनवार हिङ्कार करके (सोमः पवते) इस को तीन वार उच्चारण कर शेष को एक वार जपकर ताहै उसका मंत्र १ ग्रह के ग्रहण का मंत्र २ ग्रह के सादन का मंत्र ३

ओं सोम इत्यस्य (परुच्छेप ऋ० भुरिग्ब्राह्मी पंक्तिश्छं० विश्वेदेवा दे०) १

ओं विश्वेभ्यः इत्यस्य (तथा ० दैवीजगती छं० ग्रहो देवता) २

ओं एषत इत्यस्य (तथा ० याजुषीजगती छं० तथा) ३

पदार्थः १ सोम २ इस ३ ब्राह्मण जाति की प्रीति के अर्थ ४ ग्रह पात्रों में जाता है ५ सोम ६ इस ७ क्षत्रिय जाति की प्रीति के अर्थ ८ ग्रह पात्रों में जाता है ९ इस १० सोमाभिषव करने वाले ११ यजमान की काम सिद्धि के अर्थ १२ जाता है १३ वृष्टि के अर्थ १४ तथा वृष्टि रस के लाभार्थ १५ जाता है १६ रस की उत्पत्ति के अर्थ १७ तथा जौ चांवल आदि की सिद्धि के अर्थ १८ जाता है १९ पृथिवी स्वर्ग नाम दोनों लोक की तृप्ति के अर्थ २० जाता है २१ सब के कल्याणार्थ २२ जाता है हे आग्रयण ग्रह तैसे २३ तुम को २४ सब २५ देवताओं की प्रीति के अर्थ ग्रहण करता हूं हे ग्रह २६ यह २७ तेरा २८ स्थान है २९ सब ३० देवताओं के अर्थ ३१ तुझे सादन करता हूं॥ २१॥

अथाध्यात्मम् – १ आत्म प्रति विंब २ इस ३ मन के अर्थ ४ परारूप पात्र में जाता है ५ आत्म प्रति विंब ६ इस ७ प्राण के अर्थ ८ परारूप पात्र में जाता है ९ इस १० अभिषव करने वाले ११ आत्मा के अर्थ १२ परारूप पात्र में जाता है १३ गगना मृत वृष्टि के अर्थ १४ तथा ब्रह्मानंद रस के लाभार्थ १५ परारूप पात्र में जाता है १६ इन्द्रियों का जो अन्तरिक्ष है उस की लय के अर्थ १७ तथा इन्द्रियशक्ति की प्राप्ति के अर्थ १८ परारूप पात्र में जाता है १९ मन और हृदय का जो अन्तरिक्ष है उस के लय के अर्थ २० परारूप पात्र में जाता है २१ ब्रह्मभाव के अर्थ २२ परारूप पात्र में जाता है हे आत्म प्रति विंब २३ तुझे २४ सब २५ देवता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थात्ब्रह्म परानारायण के अर्थ ग्रहण करता हूं २६ यह पराशक्ति २७ तेरा २८ स्थान है २९ सब ३० देवता अर्थात्ब्रह्म परानारायण के अर्थ ३१ तुझे सादन करता हूं॥२१॥

उपयामगृहीतोसीन्द्रायत्वाबृहद्वतेवयस्वत उकथाव्यङ्गृह्णामि। यत्तइन्द्रबृहद्वयस्तस्मैत्वा विष्णवेत्वैषतेयोनिरुकथेभ्यस्त्वादेवेभ्यस्त्वा देवाव्यंगृह्णामियज्ञस्यायुषेगृह्णामि॥२२॥

उपयामगृहीतः। असि। उकथाव्यम्। त्वा। बृहद्वते। वयस्वते इन्द्राय। गृह्णामि। इन्द्र। यत्। ते। बृहत्। वयः। तस्मै। त्वा। विष्णवे। त्वा। एषः। ते। योनिः। उक्थेभ्यः। त्वा। देवेभ्यः। देवाव्यम्। त्वा। यज्ञस्य। आयुषे। गृह्णामि॥२२॥

अथाधिदैवम्– इसकंडिका में तीन मंत्र हैं उनको कहते हैं, उक्थ्य स्थाली से उक्थ्य नाम ग्रह को ग्रहण करता है उसका मंत्र १ उक्थ स्थाली में स्थित सोम को तीन विभाग करके उक्थ्य पात्र में ग्रहण करता है उसके मंत्र २,३

ओं उपयामेत्यस्य (परुच्छेपऋ० आर्षी पंक्तिश्छं० लिङ्गोक्तदे०) १
ओं एषतइत्यस्य (तथा ० दैवीजगती छं० तथा) २
ओं देवेभ्यइत्यस्य (तथा ० आर्ची गायत्री छं० तथा) ३

पदार्थः हे उकथ ग्रह तुम १ उपयाम पात्र में ग्रहण किये हुए २ हो ३ मित्र वरुण ब्राह्मणाच्छंसि, अच्छावाक सम्बंधी शस्त्रों के रक्षा करने वाले ४ तुम को ५ बृहत साम को प्रियमान्ने वाले ६ सोम रूप अन्न से युक्त ७ परमेश्वर के अर्थ ८ ग्रहण करता हूं ९ हे षट् एश्वर्य से सम्पन्न विष्णु १० जिस कारण ११ आपका १२ महान् १३ सोम रूप अन्न है १४ उसके पानार्थ १५ आपसे प्रार्थना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता हूं हे सोम १६ विष्णु के अर्थ १७ तुझे ग्रहण करता हूं हे ग्रह १८ यह १९ तेरा २० स्थान है २१ उक्थों के अर्थ २२ तुझे सादन करता हूं हे सोम २३ देवताओं के लिये २४ देव तर्पक २५ तुझ को २६, २७ फल पर्यन्त स्थिति के अर्थ २८ ग्रहण करता हूं ॥ २२ ॥

अथाध्यात्मम् – हे अनिरुक्त आत्मा तुम १ परा शक्ति से ग्रहण किये हुए २ हो ३ प्राण रक्षक ४ तुझ को ५ बृहत् साम रूप ६ ब्रह्मांड रूप अन्न के स्वामी ७ महानारायण के अर्थ ८ ग्रहण करता हूं ९ हे महानारायण १० जिस कारण ११ आप का १२ ब्रह्म भाव से सम्पन्न १३ अन्न है १४ उस कारण उसके पानार्थ १५ आप से प्रार्थना करता हूं हे अनिरुक्त आत्मा १६ महा विष्णु के अर्थ १७ तुझे ग्रहण करता हूं हे ग्रह १८ यह परा शक्ति १९ तेरा २० स्थान है २१ प्राण लय के अर्थ २२ तुझे सादन करता हूं २३ ब्रह्म परा नारायण नाम देवताओं के अर्थ २४ उन देवताओं के तर्पक २५ तुझ को २६ योग यज्ञ की २७ मोक्ष पर्यन्त स्थिति के अर्थ २८ ग्रहण करता हूं ॥ २२

मित्रावरुणाभ्यान्त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामीन्द्रायत्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामीन्द्राग्निभ्यान्त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामीन्द्रावरुणाभ्यान्त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामीन्द्राबृहस्पतिभ्यान्त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामीन्द्राविष्णुभ्यान्त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामि २३

१ अ। २ देवाव्यम्। ३ त्वा। यज्ञस्य। आयुषे। ६ मित्रावरुणाभ्याम्।

अ भगवान ने गीता में कहा है, साम मंत्रों में बृहत् साम मैं ही हूं॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गृह्णामि। अ। देवाव्यम्। त्वा। यज्ञस्य। आयुषे। इन्द्राय। गृह्णामि। अ। देवाव्यम्। त्वा। यज्ञस्य। आयुषे। इन्द्राग्निभ्याम्। गृह्णामि। अ। देवाव्यम्। त्वा। यज्ञस्य। आयुषे। इन्द्रवरुणाभ्याम्। गृह्णामि। अ। देवाव्यं। त्वा। यज्ञस्य। आयुषे। इन्द्रबृहस्पतिभ्याम्। गृह्णामि। अ। देवाव्यम्। त्वा। यज्ञस्य। आयुषे। इन्द्रविष्णुभ्याम्। गृह्णामि॥ २३॥

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में ६ मंत्र हैं उनको कहते हैं, मैत्रावरुण कर्तृक शस्त्र की समान ग्रह याग के लिये उक्थ्य स्थाली को उत्पादन करके उसमें रक्खे हुए सोम के तीसरे भाग को उक्थ्य पात्र में ग्रहण करता है उसका मंत्र १ इसी प्रकार प्रतिप्रस्थाता उत्तर ग्रहों से चेष्टा करता है उसका मंत्र २ उक्थ्य आदि सोम संस्थों में मैत्रावरुण आदि के तीसरे सवन के मध्य उक्थ्य ग्रह का ग्रहण करता है उसके मंत्र ३,४,५,६

ओंमित्रावरुणाभ्यामित्यस्य (परुच्छेपऋ० आर्ची गायत्री छं० लिङ्गोक्त दे०)१
ओंइन्द्रायत्वेत्यस्य (तथा ० आसुरी गायत्री ० तथा ०)२
ओंइन्द्राग्निभ्यामित्यस्य (तथा ० प्राजापत्याऽनुष्टुप् ० तथा ०)३
ओंइन्द्रावरुणाभ्यामित्यस्य (तथा ० आर्ची गायत्री ० तथा ०)४
ओंइन्द्राबृहस्पतिभ्यामित्यस्य (तथा ० निचृद्प्राजापत्याबृ० तथा ०)५
ओंइन्द्राविष्णुभ्यामित्यस्य (तथा ० भुरिग्साम्न्यनुष्टुप् ० तथा ०)६

पदार्थः – १ हे उक्थ्य ग्रह २ देवता तृप्त करने वाले ३ तुझ को ४ यज्ञ की ५ फल पर्यन्त स्थिति के अर्थ ६ मित्रावरुण देवताओं के लिये ७ ग्रहण करता हूं ८ हे ग्रह ९ देवतर्पक १० तुझ को ११ यज्ञ की १२ फल पर्यन्त स्थिति के अर्थ १३ इन्द्र के लिये १४ ग्रहण करता हूं १५ हे ग्रह १६ देवतर्पक १७ तुझ को १८

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यज्ञ की १९ फल पर्यन्त स्थिति के अर्थ २० इन्द्र अग्नि देवताओं के लिये २१ ग्रहण करता हूं २२ हे ग्रह २३ देवताओं की तृप्ति करने वाले २४ तुझ को २५ यज्ञ की २६ फल पर्यन्त स्थिति के अर्थ २७ इन्द्र वरुण देवताओं के लिये २८ ग्रहण करता हूं २९ हे ग्रह ३० देवताओं की तृप्ति करने वाले ३१ तुझ को ३२ यज्ञ की ३३ फल पर्यन्त स्थिति के अर्थ ३४ इन्द्र बृहस्पति नाम देवताओं के लिये ३५ ग्रहण करता हूं ३६ हे ग्रह ३७ देवताओं की तृप्ति करने वाले ३८ तुझ को ३९ यज्ञ की ४० फल पर्यन्त स्थिति के अर्थ ४१ इन्द्र विष्णु नाम देवताओं के लिये ४२ ग्रहण करता हूं ॥२३॥

अथाध्यात्मम् – १ हे आत्म प्रतिबिंब २ ब्रह्मा विष्णु महेश राम कृष्ण आदि रूपों से क्रीडा शील महानारायण की तृप्ति करने वाले ३ तुझ को ४ योग यज्ञ की ५ मोक्ष पर्यन्त स्थिति के अर्थ ६ प्राण उदान के अर्थ ७ ग्रहण करता हूं ८ हे आत्म प्रतिबिंब ९ महानारायण की तृप्ति करने वाले १० तुझ को ११ योग यज्ञ की १२ मोक्ष पर्यन्त स्थिति के अर्थ १३ मानस कमल के लिये १४ ग्रहण करता हूं १५ हे आत्म प्रतिबिंब १६ महानारायण की तृप्ति करने वाले १७ तुझ को १८ यज्ञ की १९ मोक्ष पर्यन्त स्थिति के अर्थ २० आत्मा और मन के लिये २१ ग्रहण करता हूं २२ हे आत्म प्रतिबिंब २३ महानारायण की तृप्ति करने वाले २४ तुझ को २५ यज्ञ की २६ मोक्ष पर्यन्त स्थिति के अर्थ २७ हृदय और ब्रह्मा के लिये २८ ग्रहण करता हूं २९ हे आत्म प्रतिबिंब ३० महानारायण की तृप्ति करने वाले ३१ तुझ को ३२ यज्ञ का ३३ मोक्ष पर्यन्त स्थिति के अर्थ ३४ भृकुटि और शिर के लिये ३५ ग्रहण करता हूं ३६ हे आत्म प्रतिबिंब ३७ महानारायण की तृप्ति करने वाले ३८ तुझ को ३९ यज्ञ की ४० मोक्ष पर्यन्त स्थिति के अर्थ ४१ गगन मंडल और विष्णु के लिये ४२ ग्रहण करता हूं ॥२३॥

प्रश्न – छठे आदि पदों के मध्य प्रकार के युक्त करने में क्या कारण है, उत्तर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूर्द्धानन्दिवोऽअरतिम्पृथिव्या वैश्वानरमृतऽआ
जातमग्निम्। कविꣳसम्राजमतिथिञ्जनानामासन्ना पात्रञ्जनयन्त देवाः ॥ २४ ॥

देवाः। दिवः। मूर्द्धानम्। पृथिव्याः। अरतिम्। वैश्वानरम्। ऋतऽआजातम्। कविꣳ। सम्राजम्। जनानाम्। अतिथिम्। आसन्न पात्रम्। अग्निम्। अजनयन्त ॥ २४ ॥

अथाधिदैवम् – वैश्वानर की स्तुति का मंत्र,

ओं मूर्द्धानमित्यस्य (भरद्वाज ऋ० आर्षी त्रिष्टुप् छं० वैश्वानरो दे०) १

पदार्थः – १ विद्वान पुरुषों ने २ स्वर्ग लोक के ३ प्रकाशक सूर्य ४ पृथिवी के ५ ब्रह्माविष्णु महेश और शक्ति रूप ६ जाठराग्नि रूप से सब के हितकारी ७ यज्ञ में ८ दो अरणी से प्रादुर्भूत ९ क्रांत दर्शी १० भले प्रकार दीप्यमान ११ यजमानों के १२ अतिथि अर्थात् हवि से सत्कार योग्य १३ निकटस्थ हवि आदि के निवेश स्थान १४ अग्नि को १५ प्रकट किया ॥ २४ ॥

बंध मोक्ष अवस्था में एक ही आत्मा अचल और अविनाशी है, जैसा भगवान ने कहा है, यह आत्मा कभी न जन्म लेता है न मरता है और होकर फिर होगा ऐसा भी नहीं है यह अजन्मा, नित्य, निरंतर रहने वाला और पुरातन है, शरीर के नष्ट होने पर नष्ट नहीं होता इस को शस्त्र नहीं छेदते हैं, इस को अग्नि नहीं जलाता है, इस को जल गीला नहीं करते, वायु नहीं सुखाता है यह नित्य सर्व गत स्थाणु, अचल और सनातन है यह अव्यक्त है यह अचिन्त्य है, यह विकार शून्य कहाता है वह आत्मा बंधन अवस्था में भी अखंड, अचल और अविनाशी है, उसके दर्शन के लिये अकार को पदों में युक्त किया यह सर्वत्र अनुभव करना चाहिये ॥ २३ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाध्यात्मम्— १ प्राणों ने २ गगन मंडल के ३ सूर्य ४ मन हृदय भृकुटि रूप भूमि के ५ शक्ति सहित त्रिदेव रूप ६ जाठराग्नि रूप से हितकारी ७ योग यज्ञ में ८ संस्कृत ९ ब्रह्म रूप १० भले प्रकार दीप्यमान ११ वाक् आदि के १२ आतिथ्य योग्य १३ उपासक वाक् आदि के प्रवेश स्थान १४ आत्माग्नि को १५ प्रकट किया ॥२४॥

उपयाम गृहीतोसि ध्रुवोसि ध्रुवक्षितिर्ध्रुवाणा न्ध्रुवत मोच्युता नामच्युतक्षित्तम एषते योनि र्वैश्वानराय त्वा। ध्रुवन्ध्रुवेण मनसा वाचा सोम मवनयामि। अथान इन्द्र इद्विशो सपत्नाः सम नसस्करत् २५

उपयाम गृहीतः। असि। ध्रुवक्षितिः। ध्रुवाणाम्। ध्रुवतमः। अच्युतानाम्। अच्युतक्षित्तमः। ध्रुवः। असि। एषः। ते। योनिः। वैश्वानराय। त्वा। ध्रुवेण। मनसा। वाचा। ध्रुवम्। सोमम्। अवनयामि। अथ। अ। इन्द्रः। इत्। नः। विशः। असपत्नाः। समनसः। करत्॥ २५॥

अथाधिदैवम्— इस कंडिका में ४ मंत्र हैं उनको कहते हैं, करणभूत ध्रुव स्थाली से ध्रुव नाम ग्रह को ग्रहण करता है उसका मंत्र १ ग्रह सादन का मंत्र २ ध्रुव पात्र स्थ सव सोम को होत्र चमस में सींचता है उसका मंत्र ३ इन्द्र की प्रार्थना का मंत्र ४

ओं उपयाम्येत्यस्य (भरद्वाज ऋ० निचृदार्ष्यनुष्टुप छं० ध्रुवोदे०)१
ओं एषत इत्यस्य (तथा ० याजुषी त्रिष्टुप छं० तथा)२
ओं ध्रुव मित्यस्य (तथा ० निचृद्साम्नी बृहती छं० तथा)३

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं अथान इत्यस्य (भरद्वाज ऋ० निचृदा-वी गायत्री छं० इन्द्रो दे०) ४

पदार्थः – हे सोम तुम १ उपयाम पात्र मे ग्रहण किये हुए २ हो ३ स्थिर निवास वाले ४ आदित्य स्थाली आदि के मध्य ५ अति शय स्थिर ६ च्युति हीन के मध्य ७ च्युति रहित पात्र में अति शय निवास करने वाले ८ ध्रुव नाम ९ हो हे ग्रह १० यह ११ तेरा १२ स्थान है १३ समष्टि अग्नि के अर्थ १४ तुझे सादन करता हूं १५ एकाग्र १६ मन १७ और मंत्रोच्चारण में प्रवीन वाणी के साथ १८ ध्रुव नाम १९ सोम को २० होत्र चमस में सींचता हूं २१ तदनंतर २२ सर्व व्यापी २३ परमेश्वर २४ ही २५ हमारी २६ प्रजा को २७ शत्रु रहित २८ स्थिर मन वाली वाधी रज से युक्त २९ करै॥ २५॥

अथाध्यात्मम्– हे समष्टि भाव को प्राप्त जीवात्मा तुम १ परा शक्ति से ग्रहण किये हुए २ हो ३ तुम ब्रह्म में स्थित ४ अचल पदार्थों में ५ अति शय अचल ६ जीवन मुक्तों के मध्य ७ अति शय ब्रह्म स्थ ८ ब्रह्म रूप ९ हो हे सोमष्टि भाव में प्राप्त जीवात्मा १० यह परा शक्ति ११ तेरा १२ स्थान है १३ सब मनुष्यों के हित कारक विष्णु के लिये १४ तुझे सादन करता हूं १५ ब्रह्म रूप १६ मन १७ और वाणी से १८ ब्रह्म भाव को प्राप्त १९ जीव रूप अमृत को २० परा पात्र में स्थापन करता हूं २१ तिस के पीछे २२, २३, २४, सर्व व्यापी विष्णु ही हम योगियों के २५ २६ प्राणों को २७ काम आदि शत्रु से शून्य २८ और स्थिर मन वाले २९ करै प्रारब्ध समाप्ति तक॥ २५॥

यस्तेद्रप्सस्कन्दति यस्तेअꣳशुर्यविच्युतोधि षणायोरुपस्थात। अध्वर्य्योर्वापरिवायः पवित्रा न्तेजुहोमि मनसावषट्कृतꣳ स्वाहा देवानां मुत्क्रमणमसि २६

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ते। यः। द्रप्सः। स्कन्दति। ते। यः। अंशुः। ग्रावच्युतः। धिषणायोः। उपस्थात्। वः। अध्वर्य्योः। वः। यः। पवित्रात्। परि ते। तम्। मनसा। वषट्कृतम्। स्वाहा। जुहोमि। देवानाम्। उत्क्रमणम्। असि॥ २६॥

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में तीन मंत्र हैं उनको कहते हैं, सब अध्वर्यु आदि सोम बिन्दुओं को होमते हैं उसका मंत्र १ वेदी के मध्य से जो दोतृण ग्रहण किये उनमें से एक तृण को अध्वर्यु चात्वाल में डालता है उसके मंत्र २,३

ओं यस्त इत्यस्य (देव श्रवा ऋ० भुरिग्गायत्री त्रिष्टुप् छं० सोमो दे०) १

ओं स्वाहा इत्यस्य (तथा ० देवी उषिक् छं० अग्निर्दे०) २

ओं देवानामित्यस्य (तथा ० आसुरी जगती छं० चात्वालो दे०) ३

पदार्थः – हे सोम १ तेरा २ जो ३ रस का एक देश ४ भूमि पर वा अन्यत्र पड़ता है ५ तेरा ६ जो ७ अंशु ८ पाषाण से गिरा ९ वा अधिषवण फलकों के १० उत्संग से ११ अथवा १२ अध्वर्यु के सकाश से गिरा १३ अथवा १४ जो १५ पवित्र से १६ गिरा १७ तेरे १८ उस अंशु को १९ जो कि मनसे २० संकल्पित है २१ स्वाहा पूर्वक २२ होमता हूं हे चात्वाल तुम २३ देवताओं के २४, २५ वह स्थान हो जिस स्थान से स्वर्ग को जाते हैं॥ २६॥

अथाध्यात्मम् – हे आत्म प्रति बिंब १ तेरा २ जो ३ रस का एक देश ४ भूतात्मा में गिरता है ५ तेरा ६ जो ७ अंशु ८ प्राण से गिरा ९ वाणी और जिह्वा के १० उत्संग से गिरा ११ अथवा १२ चक्षु से गिरा १३ अथवा १४ जो १५ प्राण, उदान, व्यान रूप पवित्र से १६ गिरा १७ तेरे १८ उस १९ मनसे २० संकल्पित रस को २१ महा वाक्य से २२ ब्रह्माग्नि में होमता हूं हे मन तुम २३

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्वान योगियों की २४ ऊर्द्ध गति के कारण २५ होनकि अधो गति के कारण यह अभि प्राय है॥ २६॥

प्राणाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व व्यानाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्वोदानाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व वाचे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व क्रतू दक्षाभ्याम्मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व श्रोत्राय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व चक्षुर्भ्याम्मे वर्चोदसौ वर्चसे पवेथाम् ॥ २७॥

१ मे। २ प्राणाय। ३ वर्चोदाः। ४ वर्चसे। ५ पवस्व। ६ मे। ७ व्यानाय। ८ वर्चोदाः। ९ वर्चसे। १० पवस्व। ११ मे। १२ उदानाय। १३ वर्चोदाः। १४ वर्चसे। १५ पवस्व। १६ मे। १७ वाचे। १८ वर्चोदाः। १९ वर्चसे। २० पवस्व। २१ मे। २२ क्रतू दक्षाभ्याम्। २३ वर्चोदाः। २४ वर्चसे। २५ पवस्व। २६ मे। २७ श्रोत्राय। २८ वर्चोदाः। २९ वर्चसे। ३० पवस्व। ३१ मे। ३२ चक्षुर्भ्याम्। ३३ वर्चोदसौ। ३४ वर्चसे। ३५ पवेथाम् ॥ २७॥

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में ७ मंत्र हैं उनको कहते हैं अवकाश नाम मंत्रों को उच्चारण करते हुए ग्रहों को ग्रहण क्रम से देखता है उसके मंत्र १ से ७ तक॥

ओं प्राणाय + व्यानाय + श्रोत्राय (देव अवा ऋ० आसुरी नुष्टुप् छं० लिङ्गोक्त दे०) १,२,३
ओं उदानाय + चक्षुर्भ्यां (तथा ० आसुर्युष्णिक् छं० तथा०) ३,७
ओं वाचेम इत्यस्य (तथा ० साम्नीगायत्री छं० तथा) ४
ओं क्रतू दक्षाभ्यामित्यस्य (तथा ० आसुरीगायत्री छं० तथा) ५

पदार्थः – हे उपांशु १ मेरे २ प्राण के लिये ३ तेज के दाता तुम ४ हृदयस्थ वायु के तेज के लिये ५ प्रवृत्त हो हे उपांशु सवन ६ मेरे ७ सब शरीर में विद्यमान वायु के लिये ८ तेज के दाता तुम ९ तेज के लिये १० प्रवृत्त हो हे अंतर्यामि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रह ११ मेरे १२ कंठस्थ उदान वायु के लिये १३ तेज के दाता तुम १४ तेज के लिये १५ प्रवृत्त हो हे ऐन्द्र वायव १६ मेरे १७ वाक् इन्द्रिय के लिये १८ तेज के दाता तुम १९ तेज के लिये २० प्रवृत्त हो हे मैत्रावरुण ग्रह २१ मेरे २२ काम और काम समृद्धि के लिये २३ तेज २४ दानार्थ २५ प्रवृत्त हो हे आश्विन ग्रह २६ मेरे २७ श्रोत्रेन्द्रिय के लिये २८ तेज के दाता तुम २९ तेज दानार्थ ३० प्रवृत्त हो हे शुक्र मन्थि नाम दोनों ग्रह ३१ मेरे ३२ नेत्रों के लिये ३३ तेज के दाता तुम ३४ तेज दानार्थ ३५ प्रवृत्त हूजियै॥ २७॥

अथाध्यात्मम्— हे समष्टि प्राण १ मेरे २ प्राण के लिये ३ तेज के दाता तुम ४ ब्रह्म तेज के लिये ५ प्रवृत्त हो हे समष्टि व्यान ६ मेरे ७ व्यान के लिये ८ तेज के दाता तुम ९ ब्रह्म तेज के लिये १० प्रवृत्त हो, हे समष्टि उदान ११ मेरे १२ उदान के लिये १३ तेज के दाता तुम १४ ब्रह्म तेज के लिये १५ प्रवृत्त हो हे समष्टि वाक् १६ मेरे १७ वाक् के लिये १८ तेज के दाता तुम १९ ब्रह्म तेज के लिये २० प्रवृत्त हो हे समष्टि मन और हे मन की शक्ति २१ मेरे २२ काम और काम समृद्धि के लिये २३ तेज के दाता तुम २४ ब्रह्म तेज के लिये २५ प्रवृत्त हूजियै हे दिगाभिमानी देवता २६ मेरे २७ श्रोत्रेन्द्रिय के लिये २८ तेज के दाता तुम २९ ब्रह्म तेज के लिये ३० प्रवृत्त हो हे सूर्य चन्द्रमा ३१ मेरे ३२ नेत्रों के लिये ३३ तेज के दाता तुम दोनों ३४ ब्रह्म तेज के लिये ३५ प्रवृत्त हूजियै॥ २७॥

आत्मने मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व ओजसे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्वायुषे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व विश्वाभ्यो मे प्रजाभ्यो वर्चोदसौ वर्चसे पवेथाम्॥ २८॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मे। आत्मने। वर्चोदाः। वर्चसे। पवस्व। मे। ओजसे। वर्चोदाः। वर्चसे। पवस्व। मे। आयुषे। वर्चोदाः। वर्चसे। पवस्व। मे। विश्वाभ्यः। प्रजाभ्यः। वर्चोदसौ। वर्चसे। पवेथाम् ॥२८॥

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में ग्रह देखने के ४ मंत्र हैं

ओं आत्मने + ओजसे + आयुषे (देव श्रवा ऋ० आसुर्युनुष्टुप छं० लिङ्गोक्तदे० १)

ओं विश्वाभ्यः इत्यस्य (तथा ०भुरिग्साम्न्युष्णिक् छं० तथा)४

पदार्थः – हे आग्रयण १ मेरे २ आत्मा के लिये ३ तेज के दाता तुम ४ तेज दानार्थ ५ प्रवृत्त हो हे उक्थ्य ६ मेरी ७ इन्द्रियों की पुष्टि वा शारीरबल के लिये ८ तेज के दाता तुम ९ तेजदानार्थ १० प्रवृत्त हो हे ध्रुव ११ मेरी १२ आयु के लिये १३ तेज के दाता तुम १४ तेज दानार्थ १५ प्रवृत्त हो हे धृत भृदा धवनीय १६ मेरे १७ सब १८ प्रजाओं के लिये १९ तेज के दाता तुम दोनों २० तेज दानार्थ २१ प्रवृत्त हूजिये ॥२८॥

अथाध्यात्मम् – हे समष्टि आत्मा १ मेरे २ आत्मा के लिये ३ तेज के दाता तुम ४ ब्रह्मतेज के लिये ५ प्रवृत्त हूजिये हे समष्टि प्राण ६ मेरे ७ इन्द्रियों के बलार्थ ८ तेज के दाता तुम ९ ब्रह्मतेज के लिये १० प्रवृत्त हूजिये हे समष्टि आत्मा ११ मेरी १२ आयु के लिये १३ तेज के दाता तुम १४ ब्रह्मतेज के लिये १५ प्रवृत्त हूजिये हे विराट् के आत्मा और मन १६ मेरे १७ सब १८ प्राणों के अर्थ १९ तेज के दाता तुम २० ब्रह्मतेज के लिये २१ प्रवृत्त हूजिये २२

कौसिकतमोसि कस्यासि कोनामासि। यस्य तेनामा मन्महि यन्त्वा सोमेनातीतृपाम। भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः प्रजाभिः स्याᳬं सुवीरो वीरैः सुपोषः पोषैः २९

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कः। असि। कतमः। असि। कस्य। असि। कः। नाम। असि। यस्य ते। नाम। अमन्महि। यम्। त्वा। सोमेन। अतीतृपाम। भूः। भुवः स्वः। प्रजाभिः। सुप्रजाः। वीरैः। सुवीरः। पोषैः। सुपोषः। स्योम् ॥२९॥

अथाधिदैवम् – इसकंडिका में दो मंत्र हैं उनको कहते हैं अध्वर्यु मंत्र यजमान को कहलाता द्रोण कलश को देखता है उसका मंत्र १ यजमान जप करता है उसका मंत्र २

ओं कोसीत्यस्य (देवश्रुवाऋ० आर्ची पंक्तिश्छं० प्रजापतिर्दे०)१

ओंभूर्भुवः स्वरित्यस्य (तथा ०भुरिग्साम्नी पंक्तिश्छं० तथा)२

पदार्थः – हे द्रोण कलश तुम १ प्रजापति २ हो ३ अतिशय प्रजापति ४ हो ५ प्रजापति के ६ हो ७,८ प्रजापति नाम ९ हो हम १० जिस ११ तुझ के १२ नाम को १३ जानते हैं १४ और जिस १५ तुझ को १६ सोमसे १७ तृप्त करते हैं तुम १८,१९,२० विराट्रूप हो मैं २१,२२ श्रेष्ठ सन्तान से युक्त होऊं २३ और पुत्रद्वारा २४ श्रेष्ठ वीर वाला होऊं २५ धन आदि की पुष्टि से २६ श्रेष्ठ पुष्टि वाला २७ होऊं ॥२९॥

अथाध्यात्मम् – हे देह में स्थित अंतर्यामी तुम १ सगुण २ हो ३ निर्गुण ४ हो ५ ईश के अंश जीव ६ हो ७,८ ब्रह्मा विष्णु महेश रूप धारी महाविष्णु ९ हो १० जिस ११ तुझ के १२ नाम को १३ हम जानते हैं १४ और जिस १५ तुझ को १६ जीवात्मद्वारा १७ तृप्त करते हैं तुम १८,१९,२० विराट्रूप हो योगी मैं २१ इन्द्रियों से २२ श्रेष्ठ इन्द्री वाला होऊं २३ प्राणों से २४ श्रेष्ठ प्राण वाला होऊं २५ योगैश्वर्य की पुष्टि से २६ श्रेष्ठ पुष्टि वाला २७ होऊं ॥२९॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपयामगृहीतोसि मधवेत्वोपयामगृहीतोसि माधवायत्वोपयामगृहीतोसि शुक्रायत्वोपयामगृहीतोसि शुचयेत्वोपयामगृहीतोसि नभसे त्वोपयामगृहीतोसि नभस्यायत्वोपयामगृहीतोसीषेत्वोपयामगृहीतोस्यूर्जेत्वोपयामगृहीतोसि सहसेत्वोपयामगृहीतोसि सहस्यायत्वोपयामगृहीतोसि तपसेत्वोपयामगृहीतोसि तपस्यायत्वोपयामगृहीतोस्यंहसस्पतयेत्वा ३०

उपयामगृहीतः। असि। मधवे। त्वा। उपयामगृहीतः। असि। माधवाय। त्वा। उपयामगृहीतः। असि। शुक्राय। त्वा। उपयामगृहीतः। असि। शुचये। त्वा। उपयामगृहीतः। असि। नभसे त्वा। उपयामगृहीतः। असि। नभस्याय। त्वा। उपयामगृहीतः। असि। इषे। त्वा। उपयामगृहीतः। असि। ऊर्जे। त्वा। उपयामगृहीतः। असि। सहसे। त्वा। उपयामगृहीतः। असि। सहस्याय। त्वा। उपयामगृहीतः। असि। तपसे। त्वा। उपयामगृहीतः। असि। तपस्याय। त्वा। उपयामगृहीतः। असि। अंहसः। पतये। त्वा॥ ३०॥

अथाधिदैवम्— इस कंडिका में १३ मंत्र हैं उनको कहते हैं, द्रोणकलश से ऋतु ग्रहों को ग्रहण करते हैं वहां मंत्रों को षट् जोड़ों में पहला २ मंत्र अध्वर्यु का और पिछला २ प्रति प्रस्थाता का है और अध्वर्यु इच्छा करता तेरहवें ग्रह को ग्रहण करता है उनके मंत्र १ से १३ तक॥

ओं १,२,३,४,५,९,११ मंत्राणां (देवश्रवा ऋ० साम्नी गायत्री छं० ऋत वो दे०)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं ६,१०,१३ मंत्राणां (देव श्रवा ऋ० आसुर्यनुष्टुप् छं० ऋतवो दे०)
ओं ७,८ मंत्रयोः (तथा ० याजुषी पंक्तिश्छं० तथा)
ओं १३ मंत्रस्य (तथा ० आसुर्य्युष्णिक् छं० तथा)

पदार्थः हे ऋतु ग्रह तुम १ उपयाम पात्र से ग्रहण किये हुए २ हो ३ प्रजा पति के अंग भूत चैत्र मास के लिये ४ तुझे ग्रहण करता हूं हे ऋतु ग्रह तुम ५ उपयाम पात्र से ग्रहण किये हुए ६ हो ७ प्रजा पति के अंग भूत वैशाख मास के लिये ८ तुझे ग्रहण करता हूं, हे ऋतु ग्रह तुम ९ उपयाम पात्र से ग्रहण किये हुए १० हो ११ प्रजा पति के अंग भूत ज्येष्ठ मास के लिये १२ तुझे ग्रहण करता हूं हे ऋतु ग्रह तुम १३ उपयाम पात्र से ग्रहण किये हुए १४ हो १५ आषाढ़ मासाभिमानी देवता के लिये १६ तुझे ग्रहण करता हूं हे ऋतु ग्रह तुम १७ उपयाम पात्र से ग्रहण किये हुए १८ हो १९ श्रावण मासाभिमानी देवता के लिये २० तुझे ग्रहण करता हूं हे ऋतु ग्रह तुम २१ उपयाम पात्र से ग्रहण किये हुए २२ हो २३ भाद्रपद मासाभिमानी देवता के लिये २४ तुझे ग्रहण करता हूं हे ऋतु ग्रह तुम २५ उपयाम पात्र से ग्रहण किये हुए २६ हो २७ आश्विन मासाभिमानी देवता के लिये २८ तुझे ग्रहण करता हूं हे ऋतु ग्रह तुम २९ उपयाम पात्र से ग्रहण किये ३० हो ३१ कार्तिक मासाभिमानी देवता के लिये ३२ तुझे ग्रहण करता हूं हे ऋतु ग्रह तुम ३३ उपयाम पात्र से ग्रहण किये हुए ३४ हो ३५ मार्गशीर्ष मासाभिमानी देवता के लिये ३६ तुझे ग्रहण करता हूं हे ऋतु ग्रह तुम ३७ उपयाम पात्र से ग्रहण किये हुए ३८ हो ३९ पुष्य मासाभिमानी देवता के लिये ४० तुझे ग्रहण करता हूं हे ऋतु ग्रह तुम ४१ उपयाम पात्र से ग्रहण किये हुए ४२ हो ४३

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माघ मासाभिमानी देवता के लिये ४४ तुझे ग्रहण करता हूं हे ऋतु ग्रह तुम ४५ उपयाम पात्र से ग्रहण किये हुए ४६ हौ ४७ फाल्गुण मासाभिमानी देवता के लिये ४८ तुझे ग्रहण करता हूं हे ऋतु ग्रह तुम ४९ उपयाम पात्र से ग्रहण किये हुए ५० हौ ५१, ५२ अधिक मासाभिमानी देवता के लिये ५३ तुझे ग्रहण करता हूं॥ ३०॥ ९

अथाध्यात्मम्— समष्टि भाव को प्राप्त हुआ होम करता है, हे द्विग्रह तुम १ परा शक्ति से गृहीत २ हौ ३ ब्रह्म ज्ञान के लिये ४ तुझे ग्रहण करता हूं हे आत्म प्रति बिंब तुम ५ परा शक्ति से गृहीत ६ हौ ७ नारायण के अर्थ ८ तुझे ग्रहण करता हूं हे चक्षु तुम ९ परा शक्ति से गृहीत १० हौ ११ सूर्य के अर्थ १२ तुझे ग्रहण करता हूं हे वाक् तुम १३ परा शक्ति से गृहीत १४ हौ १५ अग्नि के अर्थ १६ तुझे ग्रहण करता हूं हे श्रोत्रेन्द्रिय तुम १७ परा शक्ति से गृहीत १८ हौ १९ आकाश के लिये २० तुझे ग्रहण कर-

९ श्रुतिमें लिखा है कि वसन्त ऋतु के चैत्र और वैशाख मास में ओषधि उत्पन्न होती हैं, वनस्पति पकती हैं इस कारण उनके नाम मधु और माधव हैं ग्रीष्म ऋतु के ज्येष्ठ और आषाढ़ मास में सूर्य अधिक तपता है इस कारण उनके नाम शुक्र और शुचि हैं। वर्षा ऋतु के श्रावण और भाद्रपद मास में आकाश से वर्षा होती है इस कारण उनका नाम नभ और नभस्य है। शरद ऋतु के आश्विन और कार्त्तिक मास में रस वान ओषधियां पकती हैं इस कारण उन का नाम इष और ऊर्ज है हेमन्त ऋतु के मार्गशिर और पौष मास में यह प्रजा शीत के वश में हो जाती हैं इस कारण उन का नाम सह और सहस्य है शिशिर ऋतु के माघ और फाल्गुण मास में सूर्य का तेज अधिक होता है इस कारण उन का नाम तप और तपस्य है ३०

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताहूं हे त्वक इन्द्री तुम २१ परा शक्ति से गृहीत २२ हौ २३ वायु के लिये २४ तुझे ग्रहण करता हूं हे घ्राण इन्द्रिय तुम २५ परा शक्ति से गृहीत २६ हौ २७ पृथिवी के लिये २८ तुझे ग्रहण करता हूं हे रसेन्द्रिय तुम २९ परा शक्ति से गृहीत ३० हौ ३१ जल देवता के लिये ३२ तुझे ग्रहण करताहूं हे पादेन्द्रिय तुम ३३ परा शक्ति से गृहीत ३४ हौ ३५ उपेन्द्र देवता के लिये ३६ तुझे ग्रहण करता हूं हे पाणीन्द्रिय तुम ३७ परा शक्ति से गृहीत ३८ हौ ३९ महेन्द्र देवता के लिये ४० तुझे ग्रहण करता हूं हे वायु इन्द्रिय तुम ४१ परा शक्ति से गृहीत ४२ हौ ४३ मित्र देवता के लिये ४४ तुझे ग्रहण करता हूं हे उपस्थ तुम ४५ परा शक्ति से गृहीत ४६ हौ ४७ प्रजापति के लिये ४८ तुझे ग्रहण करता हूं हे मन तुम ४९ परा शक्ति से गृहीत ५० हौ ५१ ५२ चंद्र देवता के लिये ५३ तुझे ग्रहण करता हूं ३०९

इन्द्राग्नी आगत ꣳ सुतङ्गी र्भिर्न भोवरेण्यम्
अस्य पातन्धि येषिता। उपयाम गृहीतो सीन्द्रा
ग्नि भ्यान्त्वैषते योनि रिन्द्राग्नि भ्यान्त्वा ३१

९ श्रुति में लिखा है कि जो वाक है वह अग्नि ही है, जो चक्षु है वह सूर्य है, जो मन है वह चंद्रमा है, जो श्रोत्र है वह दिशा है इस बात को जानने वाला जो पुरुष देह त्याग करता है वह वाक से अग्नि को, चक्षु से सूर्य को, मनसे चंद्रमा को, और श्रोत्र से दिशा को प्राप्त करता है, प्रश्न-सम्वत्सर और पुरुष की समता में क्या प्रमाण है १ उत्तर श्रुति से पुरुष ही सम्वत्सर है, सम्वत्सर में षट् ऋतु हैं और पुरुष में ६ प्राण हैं इस लिये समान हुआ सम्वत्सर के १२ मास हैं और पुरुष में १२ प्राण हैं इस लिये समान हुआ सम्वत्सर के १३ मास हैं और पुरुष में १३ प्राण हैं उनमें तेरहवीं नाभि है

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्राग्नी।सुतम्। गीर्भिः।नभः। वरेण्यम्। आगत ँ। धिया इषिता। अस्य। पातम्। उपयाम गृहीतः। असि। इन्द्राग्निभ्याम्। त्वा। एषः। ते। योनिः। इन्द्राग्निभ्याम्। त्वा॥३१॥

अथाधिदैवम् – प्रतिप्रस्थाता उस ग्रह को जिसका देवता इन्द्राग्नि है ग्रहण करता है उसके मंत्र १,२

ओं इन्द्राग्नी त्यस्य (विश्वामित्र ऋ० निचृदार्षी गायत्री छं० इन्द्राग्नी दे०)१

ओं उपयामेत्यस्य (तथा ० आर्च्युष्णिक् छं० ग्रहो दे०) २

पदार्थः –१हे इन्द्र अग्नि देवताओ तुम २ अभिषवण किये हुए ३ वेदों के वचनों से ४ आदित्य स्वरूप ५ इसीलिये देवताओं से प्रार्थनीय सोम को ६ प्राप्त कीजिये ७ और यजमान की बुद्धि से ८ प्रार्थना किये हुए तुम दोनों ९ इस सोम का १० पान कीजिये हे सोम तुम ११ उपयाम पात्र से गृहीत १२ हो १३ इन्द्र अग्नि देवताओं के लिये १४ तुझे ग्रहण करता हूं १५ यह १६ तेरा १७ स्थान है १८ इन्द्र अग्नि देवताओं के लिये १९ तुझे सादन करता हूं॥३१॥

अथाध्यात्मम् – ऊर्द्ध गति प्राप्ति के लिये प्राण उदान से प्रार्थना करता है १ हे प्राण उदान तुम दोनों २ अभिषवण किये हुए ३ महा वाकों से ४ आदित्य स्वरूप ५ ब्रह्म परा महानारायण से ईप्सित शुद्धात्मा को ६ प्राप्त कीजिये ७ योग बुद्धि से ८ प्रार्थित तुम दोनों ९ इस शुद्ध आत्मा की १० रक्षा कीजिये हे आत्मा तुम ११ परा शक्ति से गृहीत १२ हो १३ प्राण उदान के लिये १४ तुझे ग्रहण करता हूं १५ यह परा शक्ति १६ तेरा १७ स्थान है १८ प्राण उदान के लिये १९ तुझे सादन करता हूं॥३१॥

इस लिये समान हुआ॥३०॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आघाये अग्नि मिन्धते स्तृणन्ति वर्हिरानुषक्
येषा मिन्द्रो युवा सखा। उपयाम गृहीतोस्य ग्नी
न्द्राभ्यान्त्वे षते योनि रग्नीन्द्राभ्यान्त्वा॥ ३२॥

ये। अग्निम्। आ। इन्धते। अनुषक्। वर्हिः। स्तृणन्ति। येषाम्। युवा। इन्द्रः। सखा। अघाः। उपयाम गृहीतः। असि। अग्नीन्द्राभ्याम्। त्वा। एषः। ते। योनिः। अग्नीन्द्राभ्याम्। त्वा॥ ३२॥

अथाधिदेवम् – अग्नीन्द्र ग्रह का ग्रहण करता है उसके मंत्र १३ ओं आघाय इत्यस्य (त्रिशोक ऋ० आर्षी गायत्री छं० अग्नीन्द्रौ देवते) १
ओं उपयामेत्यस्य (तथा ० आर्च्युष्णिक् छं० ग्रहो दे०) २

पदार्थः – १ जो यजमान २ अग्नि को ३ ४ इष्टि, पशु, सोम, चातुर्मास्य नाम अङ्गों में प्रज्वलित करते हैं ५ और क्रम पूर्वक ६ कुशाओं को ७ बिछाते हैं ८ और जिन भक्तों का ९ जरा मृत्यु से रहित १० नारायण ११ सखा है वे १२ निष्पाप हैं हे सोम उन्हों के यज्ञ में तुम १३ उपयाम पात्र से गृहीत १४ हो १५ अग्नि इन्द्र देवताओं के लिये १६ तुझे ग्रहण करता हूं हे सोम १७ यह १८ तेरा १९ स्थान है २० अग्नि इन्द्र देवताओं के लिये २१ तुझे सादन करता हूं॥ ३२

अथाध्यात्मम् – १ योग यज्ञ के ऋत्विज जो वाक् आदि २ आत्माग्नि को ३, ४ प्राण समिध से प्रज्वलित करते हैं ५ और क्रम पूर्वक ६ इन्द्रियों को ७ योग भूमि में स्थापन करते हैं ८ और जिन्हों का ९ सब उपाधि से शून्य होने के कारण जरा मृत्यु से रहित १० आत्मा ११ सखा है वे १२ निष्पाप हैं अर्थात् आत्मा स्वरूप हैं हे शुद्धात्म प्रतिबिंब तुम १३ परा शक्ति से स्वीकृत १४ हो १५ मन हृदय रूप पृथिवी स्वर्ग के लिये १६ तुझे ग्रहण करता हूं १७ यह परा शक्ति १८ तेरा १९ स्थान है २० मन और हृदय के लि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये २१ तुझे सादन करता हूं ॥ ३२ ॥

सोमा सश्चर्षणी धृतो विश्वे देवास आगत। दाश्वाꣳ सो दाशुषः सुतम्। उपयाम गृहीतोसि विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्य एषते योनि र्विश्वेभ्य स्त्वा देवेभ्यः ॥ ३३ ॥

विश्वेदेवासः। सोमासः। चर्षणी धृतः। सुतम्। दाशुषः। दाश्वांसः। आगत। उपयाम गृहीतः। असि। विश्वेभ्यः। देवेभ्यः। त्वा। एषः। ते। योनिः। विश्वेभ्यः। देवेभ्यः। त्वा ॥ ३३ ॥

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में दो मंत्र हैं उनको कहते हैं, अध्वर्यु यजमान से स्पर्श करने वा न करने पर द्रोण कलश से शुक्र पात्र में वैश्वदेव ग्रह को ग्रहण करता है उसके मंत्र १, २

ओं सोमास इत्यस्य (मधुच्छंदा ऋ० आर्षी गायत्री छं० विश्वे देवा दे०) १

ओं उपयामेत्यस्य (तथा ० आर्ची बृहती छंद ग्रहो दे०) २

पदार्थः – १ हे विश्वे देवा २ रक्षा और तृप्ति करने वाले अथवा तर्पनीय ३ मनुष्यों के पोषक ४ अभिषवण किये हुए सोम के ५ दाता यजमानको ६ फल देने वाले अथवा कामनाओं के पूर्ण करने वाले आप ७ आइये हे सोम तुम ८ उपयाम पात्र से गृहीत ९ हो १०, ११ विश्वे देवाओं के लिये १२ तुझे ग्रहण करता हूं १३ यह १४ तेरा १५ स्थान है १६, १७ विश्वे देवाओं के लिये १८ तुझे सादन करता हूं ॥ ३३ ॥

अथाध्यात्मम् – १ हे मानस सूर्य की किरणो २ उत्पत्ति पालन संहार शक्ति से युक्त ३ योगियों से धारित तथा ४ अभिषवण किये हुए ५ ब्रह्माग्नि के लिये हवि देने वाले आत्मा रूप यजमान को ६ अपना आत्मा देने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाले तुम ७ आइये हे शमादि समूह तुम ८ मानस सूर्य रूप पात्र से स्वीकृत ९ हो १०,११ इन्द्रियों की शक्ति के लिये १२ तुझे ग्रहण करता हूं १३ यह मानस सूर्य १४ तेरा १५ स्थान है १६,१७ इन्द्रियों की शक्ति के लिये १८ तुझे सादन करता हूं ॥ ३३ ॥

विश्वे देवास आगत शृणुता मे इमं हवम्।
एदम्बर्हि निषीदत। उपयाम गृहीतोसि वि
श्वेभ्यस्त्वा देवेभ्य एष ते योनि र्विश्वेभ्य स्त्वा
देवेभ्यः ॥ ३४ ॥

विश्वे देवासः। आगत। मे। इमं। हवम्। आशृणुत। इदम्
बर्हिः। आनिषीदत। शेषं पूर्ववत् ॥ ३४ ॥

अथाधिदैवम् – वैश्वदेव ग्रह के ग्रहण में मंत्र विकल्प १,२

ओं विश्वेदेवास इत्यस्य (गृत्समद ऋ० आर्ची गायत्री छं० विश्वे देवा दे०) १

ओं उपयामेत्यस्य (तथा ० आर्ची बृहती छं० ग्रहो देवता) २

पदार्थः – १ हे विश्वे देवा आप २ आइये ३ मेरे ४ इस ५ आह्वान को ६ सुनिये ७ इस ८ कुशासन पर ९ बैठिये शेष अर्थ पूर्व मंत्र की समान ३४

अथाध्यात्मम् – १ हे इन्द्रिय शक्तियो २ आओ ३ मुझ ज्ञान चक्षु के ४ इस ५ आह्वान को ६ सुनो ७ इस ८ मानस कमल पर ९ बैठो शेष पूर्व मंत्र की समान है ॥ ३४ ॥

प्रातः सवन के ग्रह समाप्त हुए, अब माध्यन्दिन सवन के ग्रहों को कहते हैं

इन्द्र मरुत्व इह पाहि सोमं यथा शार्याते अपिबः
सुतस्य। तव प्रणीती तव शूर शर्म्मन्ना विवास
न्ति कवयः सुयज्ञाः। उपयाम गृहीतो सीन्द्रा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यत्वा मरुत्वत एषते योनिरिन्द्रा यत्वा मरुत्वते ३५
मरुत्वः। इन्द्र। यथा। शार्यातेः। सुतस्य। अपिबः। इह। सोमं
पाहि। शूर। तव। प्रणीती + आ। सुयज्ञाः। कवयः। शर्म्मन्
तव। विवासन्ति। उपयाम गृहीतः। असि। मरुत्वते। इन्द्राय।
त्वा। एषः। ते। योनिः। मरुत्वते। इन्द्राय। त्वा॥ ३५॥

अथाधिदैवम् – आग्रयण ग्रह के ग्रहण से पीछे और उक्थ्य ग्रहण के पहले ऋतु पात्र में मरुत्वतीय नाम ग्रह को ग्रहण करता है उसके मंत्र १,२

ओं विश्वेदेवास इत्यस्य (विश्वामित्र ऋ० आर्षी त्रिष्टुप् छं० विश्वेदेवा दे०)१
ओं उपयामेत्यस्य (तथा ० आर्ष्युष्णिक् छं० ग्रहो देवता)२

पदार्थः – १ हे विराट् रूप अन्न वाले अथवा मरुत् गणों से युक्त २ परमेश्वर या देवेन्द्र ३ जिस प्रकार ४ सोम यज्ञों में ५ अभिषुत सोम का ६ पान किया उसी प्रकार ७ इस संसार में ८ मानस सूर्य को ९ बंधन से रक्षा करो १० नाना प्रकार के अवतारों से असुरों को जीतने वाले हे महा विष्णु वा हे देवेन्द्र ११ आप की १२ अनुज्ञा से १३ कल्याण यज्ञ वाले १४ क्रान्तदर्शी भक्त जन १५ सुख के कारण यज्ञ गृह में १६ आपकी १७ परिचर्या करते हैं हे सोम तुम १८ उपयाम पात्र से गृहीत १९ हो २० विराट् रूप अन्न वाले या मरुद्गण से युक्त २१ महा विष्णु वा देवेन्द्र के लिये २२ तुझे ग्रहण करता हूं २३ यह २४ तेरा २५ स्थान है २६ विराट् रूप अन्न वाले वा मरुत् गणों से युक्त २७ महा विष्णु वा देवेन्द्र के लिये २८ तुझे सादन करता हूं ३५

अथाध्यात्मम् – वाकादि ऋत्विज कहते हैं १ हे वाक् आदि ऋत्विज वाले २ आत्मा रूप योगी ३ जिस प्रकार ४ मानस सूर्य सम्बंधी यज्ञ में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५अभिषुत आत्म प्रति विंव का ६ पान किया उसी प्रकार७ इस मूल चक्र प-
र८ प्राण को ९ संसार बंधन से रक्षा करो १० हे कामादि को जीतने वाले योगी-
११ तेरी १२ अनुज्ञा से १३ श्रेष्ठ यज्ञ वाली १४ क्रान्त दर्शिनी मन की वृत्तियां
१५ यज्ञ गृह हार्दी काश में १६ तेरी १७ परिचर्या करते हैं हे मूल चक्र गत-
प्राण तुम १८ प्राणा याम से गृहीत १९ हो २० वाकादि ऋत्विज वाले २१ आ-
त्मा के लिये २२ तुझे ग्रहण करता हूं २३ यह आत्मा २४ तेरा २५ स्थान है-
२६ वाकादि ऋत्विज वाले २७ आत्मा के लिये २८ तुझे सादन करता हूं ३५

मरुत्वन्तं वृषभं वावृधानमकवारिन्दिव्यꣳ
शासमिन्द्रम्। विश्वासाहमवसे नूतनायोग्रꣳ
सहोदामिहतꣳहुवेम। उपयाम गृहीतोसीन्द्रा
यत्वा मरुत्त्वत एषते योनिरिन्द्रा यत्वा मरुत्वते।
उपयाम गृहीतोसि मरुतान्त्वौजसे॥ ३६॥

१ इह। तमे। मरुत्वन्तं। वृषभं। वावृधानं। अकवारिं। दिव्यं।
शासं। विश्व साहं। सहोदां। उग्रं। इन्द्रम्। नूतनाय। अवसे।
आहुवेम। उपयाम गृहीतः। असि। मरुत्वते। इन्द्राय। त्वा। एष
ते। योनिः। मरुत्वते। इन्द्राय। त्वा। उपयाम गृहीतः। असि।
मरुतम्। ओजसे। त्वा॥ ३६॥

अथाधिदैवम् – अध्वर्यु रिक्त ऋतु पात्र द्वारा शुक्र वा पूत भृत से मरु
त्वतीय ग्रह का ग्रहण करता है उसका मंत्र १ प्रति प्रस्थाता हविर्धान में प्रवे
श हो कर दूसरे ऋतु पात्र के द्वारा द्रोण कलश वा पूत भृत से मरुत्वतीय ग्रह
का ग्रहण करता है उसके मंत्र २,३

ओंमरुत्वन्तमित्यस्य (विश्वामित्र ऋ० विराडार्षी त्रिष्टुप छं० इन्द्रो दे०)१

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपयामेत्यस्य (विश्वामित्र ऋ० आर्ष्युष्णिक् छं० ग्रहो दे०) २

तथा (तथा ० साम्न्युष्णिक् छं० ग्रहो दे०) ३

पदार्थः- १ इस यज्ञ में २ उस ३ विराट् रूप अन्न वाले ४ श्रेष्ठ ५ कामनाओं के पूर्ण करने वाले ६ उत्कृष्ट ऐश्वर्य वाले ७ स्वर्ग में सूर्य रूप से प्रादुर्भूत ८ नाना प्रकार के अवतारों से दुष्टों को दंड देने वाले अथवा ब्रह्मा विष्णु महेश रूपधारी ९ विश्व पालन में समर्थ १० बल दाता ११ विराट् रूप धारी १२ परमेश्वर को १३ नवीन १४ पालन के लिये १५ हम आव्हान करते हैं हे सोम तुम १६ उपयाम पात्र से गृहीत १७ हो १८ विराट् रूप अन्न वाले १९ परमेश्वर के लिये २० तुझे ग्रहण करता हूं २१ यह २२ तेरा २३ स्थान है २४ विराट् रूप अन्न वाले २५ परमेश्वर के लिये २६ तुझे सादन करता हूं हे सोम तुम २७ उपयाम पात्र से गृहीत २८ हो २९ मरुत् नाम देवताओं के ३० बलार्थ ३१ तुझे ग्रहण करता हूं ॥ ३६॥

अथाध्यात्मम्- १ इस योग यज्ञ में २ उस ३ वाक् आदि ऋत्विज वाले ४ श्रेष्ठ ५ वृद्धि सम्पन्न ६ योगैश्वर्य मान ७ हृदय में स्थित ८ त्रिदेव रूप ९ सर्व द्वन्द सहन शील १० प्राणों के बल दाता ११ काम आदि को भय देने वाले १२ योग यज्ञ के यजमान को १३ नवीन १४ प्राण रक्षा के लिये १५ आव्हान करते हैं हे नाभि कमल गत प्राण तुम १६ प्राणा याम से गृहीत १७ हो १८ वाकादि ऋत्विज वाले १९ आत्मा के लिये २० तुझे ग्रहण करता हूं २१ यह आत्मा २२ तेरा २३ स्थान है २४ वाकादि ऋत्विज वाले २५ आत्मा के लिये २६ तुझे सादन करता हूं हे मनो गत प्राण तुम २७ प्राणा याम से गृहीत २८ हो २९ वाक् आदि ऋत्विजों के ३० योग बलार्थ ३१ तुझे ग्रहण करता हूं ॥ ३६॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोममपिब वृत्रहा।
शूर विद्वान्। जहि शत्रूँरप मृधो नुदस्वाथा
भयङ्कृणुहि विश्वतोनः। उपयाम गृहीतो सीन्द्रा
।१ यत्वा मरुत्त्वत एषते योनिरिन्द्रा यत्वा मरुत्त्वते ३७

१ शूर। इन्द्र। सजोषः। सगणः। वृत्रहा। विद्वान्। मरुद्भिः।
सोमम्। पिब। शत्रून्। जहि। मृधः। अपनुदस्व। अथ। नः।
विश्वतः। अभयम्। कृणुहि। उपयाम। गृहीतः। असि। मरुत्व
तः। इन्द्राय। त्वा। एषः। ते। योनिः। मरुत्वते। इन्द्राय। त्वा। ३७

अथाधिदैवम्– वाचस्तोम में जोकि चार हैं मरुत्वतीय ग्रह को ग्रहण करता है उसके मंत्र १,२

ओं सजोषेत्यस्य (विश्वामित्र ऋ० निचृदार्षी त्रिष्टुप् छं० इन्द्रो दे०) १
ओंउपयामेत्यस्य (तथा ०प्राजापत्या त्रिष्टुप् छं० ग्रहो दे०) २

पदार्थः– १ हे असुरनाशक २ परमेश्वर ३ सन्तुष्ट ४ अपने अंश रूप देवताओं से सहित ५ पापनाशक ६ और सर्वज्ञ तुम ७ अन्नों के साथ ८ सोम को ९ पान करो १० हमारे शत्रुओं को ११ मारो १२ संग्रामों को अथवा मरने से शेष शत्रुओं को संग्राम से १३ हटाओ वा बंद करो १४ इसके पीछे १५ हम को १६ सब ओर से १७ अभय १८ करो हे सोम तुम १९ उपयाम पात्र से गृहीत २० हो २१ विराट् रूप अन्न वाले २२ परमेश्वर के लिये २३ तुझे ग्रहण करता हूं २४ यह २५ तेरा २६ स्थान है २७ विराट् रूप अन्न वाले २८ परमेश्वर के लिये २९ तुझे सादन करता हूं॥ ३७॥

अथाध्यात्मम्– १ हे कामनाशक २ योग यज्ञ के यजमान ३ सन्तुष्ट ४ वाक् आदि ऋत्विजों संयुक्त ५ पापनाशक ६ और ज्ञानी तुम ७ आ-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ण रूप अन्न सहित ८ अपने आत्म प्रति विंव को ९ पान करो १० काम आ
दि शत्रुओं को ११ मारो १२ संग्राम से १३ भागने के लिये प्रेरणा करो १४
इसके पीछे १५ हम वाक् आदि की १६ सब ओर से १७ मुक्ति १८ करो हे
हृदय गत प्राण तुम १९ प्राणा याम से गृहीत २० हो २१ वाक् आदि ऋत्वि
ज वाले २८ आत्मा के लिये २३ तुझे ग्रहण करता हूं २४ यह आत्मा २५
तेरा २६ स्थान है २७ वागादि। ऋत्विज वाले २८ आत्मा के लिये २९ तु-
झे सादन करता हूं॥ ३७॥

मरुत्वाँ इन्द्र वृषभो रणाय पिबा सोमं मनुष्व
धम्मदाय। आसिञ्च स्व जठरे मधू ऊर्मिन्त्वँ
राजासि प्रति पत्सुतानाम्। उपयाम गृहीतो सी
न्द्रो यत्वा मरुत्वत एषते योनि रिन्द्रा यत्वा मरुत्वते ३८

इन्द्र। मरुत्वान्। वृषभः। मनुष्वधम्। सोमम्। मदाय।
रणाय। आपिव। मध्वः। ऊर्मिम्। जठरे। आसिञ्च। त्वँ।
प्रति पत्सुतानाम्। राजा। असि। उपयाम गृहीतः। असि।
मरुत्वते। इन्द्राय। त्वा। एषः। ते। योनिः। मरुत्वते। इन्द्रा
य। त्वा॥ ३८॥

अथाधिदैवम् – मरुत्वतीय ग्रह को ग्रहण करता है उसके
मंत्र १,२

ओं मरुत्वा नित्यस्य (विश्वा मित्र ऋ० निचृदार्षी त्रिष्टुप् छं० इन्द्रो दे० १
ओं उपयामे त्यस्य (तथा ० प्राजापत्या त्रिष्टुप् छं० ग्रहो दे० २

पदार्थः – १ हे परमेश्वर २ विराट् रूप अन्न वाले ३ और श्रेष्ठ तुम
४ स्वधा पूर्वक पुरोडाश धाना मन्थ, दधि, पय लक्षण वाले ५ सोमको

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृप्ति के अर्थ ७ और असुरों से संग्राम के लिये ८ पान करो ९ और ब्रह्मज्ञान की १० कल्लोल को ११ मेरे मानस उदर में १२ सींचो जिस कारण १३ तुम १४ ज्ञान के लिये अभिषुत सोमों के १५ स्वामी १६ हो हे सोम तुम १७ उपयाम पात्र से गृहीत १८ हो १९ विराट् रूप अन्न वाले २० परमेश्वर के लिये २१ तुझे ग्रहण करता हूं २२ यह २३ तेरा २४ स्थान है २५ विराट् रूप अन्न वाले २६ परमेश्वर के लिये २७ तुझे सादन करता हूं ॥३८॥

दूसरा अर्थ—१ हे देवेश्वर इन्द्र २ मरुत गणा से संयुक्त ३ जलवर्षी करने वाले तेम ४ स्वधा पूर्वक ५ सोम को ६ तृप्ति के लिये ७ तथा संग्राम के अर्थ ८ पान करो ९ और मधुर स्वाद वाली १० कल्लोल को ११ उदर में १२ सींचो १३ तुम १४ प्रतिपदा आदि में अभिषुत सोमों के १५ स्वामी १६ हो हे सोम तुम १७ उपयाम पात्र से गृहीत १८ हो १९ मरुत् गण युक्त २० इन्द्र के लिये २१ तुझे ग्रहण करता हूं २२ यह २३ तेरा २४ स्थान है २५ मरुद् गण युक्त २६ इन्द्र के लिये २७ तुझे सादन करता हूं ॥३८॥

अथाध्यात्मम्—१ हे योगी २ वागादि ऋत्विज वाले ३ और श्रेष्ठ तुम ४ मनोवृत्ति शक्ति के अनुगामी ५ अपने आत्म प्रति विंब को ६ मैं ब्रह्म हूं और यह सब ब्रह्म है इस ब्रह्मानंद के लिये ७ तथा संसार से संग्राम करने के अर्थ ८ पान करो ९ अपरोक्ष ज्ञान की १० कल्लोल को ११ मानस उदर में १३ सींचो तुम १४ ज्ञान के लिये अभिषुत प्राणादि के १५ स्वामी १६ हो हे कंठ गत प्राण तुम १७ प्राणायाम से गृहीत १८ हो १९ वाक् आदि ऋत्विज वाले २० आत्मा के लिये २१ तुझे ग्रहण करता हूं २२ यह आत्मा २३ तेरा २४ स्थान है २५ वाक् आदि ऋत्विज वाले २६ आत्मा के लिये २७ तुझे सादन करता हूं ॥३८॥

महाछं इन्द्रो नृवदा चर्षणिप्राउत द्विवर्हा अमिनः

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहोभिः। अस्मद्र्यग्वावृधे वीर्यायोरुः पृथुः सुकृतः कर्तृभिर्भूत। उपयाम गृहीतोसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा ३९॥

आचर्षणिप्राः। द्विवर्हाः। सहोभिः। अभिनः। उत। अस्मद्र्यक्। महाँ। इन्द्रः। वीर्याय। नृवत्। ववृधे। उरुः। पृथुः। कर्तृभिः। सुकृतः। अभूत। उपयाम गृहीतः। असि। महेन्द्राय। त्वा। एष। ते। योनिः। महेन्द्राय। त्वा॥ ३९॥

अथाधिदैवम् - माहेन्द्रग्रह को वैश्वदेव की समान मुक्त पात्र द्वारा ग्रहण करता है उसके मंत्र १,२

ओंमहानित्यस्य (भरद्वाजऋ० भुरिगार्षी पंक्तिश्छंदो माहेन्द्रो दे०) १

ओंउपयामेत्यस्य (तथा ० साम्नीत्रिष्टुप् छं० ग्रहो देवता) २

पदार्थः - १ चारों ओर से भक्तों को अभीष्ट कामना देने वाला २ मध्यम और उत्तमस्थान में प्रभु ३ बलों से ४ उपमारहित ५ और ६ हमारे अभिमुख ७,८ महेश्वर वा महेन्द्र ९ वीरकर्म अर्थात् हमारे संसार बंधन के नाशार्थ १० पुरुषरूपसे ११ प्रकट होता है जिस कारण १२ यश से महान् १३ बल में बड़ा वह परमेश्वर १४ यजमानों से १५ पूजित १६ हुआ हे ग्रहतम १७ उपयाम पात्र से गृहीत १८ हो १९ महेन्द्र के लिये २० तुझे ग्रहण करता हूं २१ यह २२ तेरा २३ स्थान है २४ महेन्द्र के लिये २५ तुझे सादन करता हूं॥ ३९॥

अथाध्यात्मम् - १ चारों ओर से प्राणों के पूरक २ भक्ति यज्ञ और ज्ञान यज्ञ से वृद्धि युक्त ३ योग बलों से ४ उपमा रहित ५ और ६ हम वाक् आदि ऋत्विजों के सन्मुख ७,८ योगारूढ़ आत्मा ९ वीर कर्म अर्थात् संसार जय के लिये १० पुरुष की समान ११ वृद्धि पाता है जिस कारण १२ यश से बड़ा १३

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योगबल से महान् वह आत्मा १४ हम वाक् आदि से १५ संस्कृत १६ हुआ हे भृकुटि गत प्राण तुम १७ प्राणा याम से गृहीत १८ हो १९ योगा रूढ आत्मा के लिये २० तुझे ग्रहण करता हूं २१ यह आत्मा २२ तेरा २३ स्थान है २४ आत्मा के लिये २५ तुझे सादन करता हूं ॥ ३९ ॥

महा ᳪ इन्द्रो य ओजसा पर्ज्जन्यो वृष्टिमा ᳪ इव। स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे। उपयाम गृहीतो सि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा ॥ ४० ॥

१ यः। २ महा ᳪ। ३ इन्द्रः। ४ ओजसा। ५ वृष्टिमा ᳪ। ६ पर्जन्यः। ७ इव। ८ वत्सस्य। ९ स्तोमैः। १० आ। ११ वृधे। उपयाम। १२ गृहीतः। १३ असि। १४ महेन्द्राय। १५ त्वा। १६ एषः। १७ ते। १८ योनिः। १९ महेन्द्राय। २० त्वा ॥ ४० ॥

अथाधिदैवम्— माहेन्द्र ग्रह को ग्रहण करता है उसके मंत्र २ ओं महानित्यस्य (वत्स ऋ० आर्षी गायत्री छं० महेन्द्रो देवता) १

ओं उपयामेत्यस्य (तथा ० विराडार्षी गायत्री छं० ग्रहो दे०) २

पदार्थः— १ जो २,३ महा विष्णु ४ तेज से ५,६,७ मेघ की समान भक्तों के ऊपर चतुर्वर्ग की वर्षा करने वाला है वह ८ मन के ९ स्तोत्रों से १० प्रकट होता है हे सोम तुम ११ उपयाम पात्र से गृहीत १२ हो १३ महा विष्णु के लिये १४ तुझे ग्रहण करता हूं १५ यह १६ तेरा १७ स्थान है १८ महा विष्णु के लिये १९ तुझे सादन करता हूं ॥ ४० ॥

अथाध्यात्मम्— १ जो २,३ योगा रूढ आत्मा ४ ब्रह्म तेज से ५,६,७ मेघ की समान गगना मृत की वृष्टि करने वाला है वह ८ मन के ९ स्तोत्रों से १० वृद्धि पाता है हे गगन गत आत्म शक्ति तुम ११ प्राणा याम से गृहीत १२ हो १३ महा विष्णु के लिये १४ तुझे ग्रहण करता हूं १५ यह गगन सूर्य १६ तेरा १७

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थान है १८ महा विष्णु के लिये १९ तुझे सादन करता हूं॥४०॥

उदुत्यञ्जातवेदसन्देवंवहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यꣳ स्वाहा॥४१॥

केतवः। तम्। जातवेदसं। देवम्। सूर्यम्। यो। उ। विश्वाय। दृशे। उद्वहन्ति। स्वाहा॥४१॥

अथाधिदैवम्- वस्त्र में बंधे हुए सुवर्ण को जुहू में रख कर ४ वार लिये हुए घृत को शाला द्वार्य नाम अग्नि में समिदाधान पूर्वक होमता है उस का मंत्र १

ओं उदुत्य मित्यस्य (प्रस्कण्व ऋ० भुरिगार्षी गायत्री छं० सूर्यो दे०) १

पदार्थः- १ सूर्य की किरणों २ उस ३ ज्ञान वाधन के उत्पत्ति स्थान ४ प्रकाशमान ५ सूर्य रूप ६ सोम को ७ ही ८,९ सर्व दर्शन लाभ के लिये १० स्वर्ग लोक में पहुंचाती हैं उस सूर्य के अर्थ ११ श्रेष्ठ होम हो॥४१॥

अथाध्यात्मम्- १ ब्रह्म की किरणों २ उस ३ ब्रह्म ज्ञानी ४ ज्योति स्वरूप ५ सूर्य रूप ६ योगारूढ़ आत्मा को ७ ही ८,९ सर्व दर्शन ज्ञान के लिये १० आकर्षण करती हैं उस ब्रह्माग्नि के लिये ११ श्रेष्ठ होम हो॥४१॥

चित्रन्देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षꣳ सूर्य्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा ४२

देवानाम्। अनीकम्। मित्रस्य। वरुणस्य। अग्नेः। चक्षुः। जगतः। च। तस्थुषः। आत्मा। सूर्य्यः। चित्र। उदगात्। स्वाहा। द्यावापृथिवी। अन्तरिक्षꣳ। आप्राः॥४२॥

अथाधिदैवम्- चार वार लिये हुए घृत से शाला द्वार्य नाम अग्नि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में दूसरी आहुति को होमता है उसका मंत्र १

ओं चित्रमित्यस्य (कुत्स ऋ० भुरिग्गायत्री त्रिष्टुप् छं० सूर्यो दे०) १

पदार्थः—१ देवताओं के २ जीवन साधन ३,४,५ ब्रह्मा विष्णु महेश रूप धारक परमेश्वर के ६ चक्षु और ७ चर ८ और ९ अचर के १० आत्मा ११ सूर्य ने १२ आश्चर्यवत् १३ उदय किया १४ उसके अर्थ श्रेष्ठ होम हो हे सूर्य १५ पृथिवी स्वर्ग १६ और अन्तरिक्ष को १७ जगत की उपकारक किरणों से पूर्ण कर॥ ४२॥

अथाध्यात्मम्—१ इन्द्रियों के २ जीवन साधन ३ प्राण ४ अपान ५ जाठराग्नि अथवा वाणी के ६ तेज ७ चर ८ और ९ अचर के १० आत्मा ११ मानस सूर्य ने १२ आश्चर्यवत् १३ गगन मंडल को प्राप्त किया १४ वेद वाक्य वा गुरु के उपदेश से, उत्थान को वर्णन करते हैं, हे मानस सूर्य तुम प्रारब्ध समाप्ति तक १५ भृकुटि मन १६ और हार्दान्तरिक्ष को १७ अपनी किरणों से पूर्ण करो॥ ४२॥

अग्नेन यसुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा ४३

आग्नीध्रीय अग्नि में एक वार लिये हुए घृत को होमता है उसका मंत्र १ पांचवीं अध्याय की ३६ कंडिका में इस मंत्र की व्याख्या हो चुकी है॥ ४३॥

अयन्नो अग्निर्वरिवस्कृणोत्वयम्मधः पुरएतु प्रभिन्दन्। अयं वाजाञ्जयतु वाजसातावयꣳ शत्रूञ्जयतु जर्हृषाणः स्वाहा ४४

दूसरी आहुति को आग्नीध्र नाम अग्नि में होमता है उसका मंत्र १ पांचवीं-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्याय की ३७ कंडिका में इस मंत्र की व्याख्या हो चुकी है॥ ४४॥

रूपेणवो रूपमभ्यागान्तुथोवो विश्ववेदा विभजतु ऋतस्य पथा प्रेत चन्द्रदक्षिणा विस्वः पश्यव्यन्तरिक्षं यतस्व सदस्यैः ४५॥

रूपेण। वः। रूपम्। अभ्यागाम्। चन्द्रदक्षिणाः। ऋतस्य। पथा। प्रेत। विश्ववेदाः। तुथः। वः। विभजतु। स्वः। विपश्यन्तरिक्षम्। वि। सदस्यैः। यतस्व॥ ४५॥

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में ३ मंत्र हैं उन को कहते हैं, आग्नीध्रीय होम के पीछे उसी स्ववर्ण युक्त यजमान शाला के पूर्व में खड़ा होकर वेदी से बाहर दक्षिण दिशा में स्थित दक्षिणा की गौओं को अभिमंत्रण करता है उसका मंत्र १ यजमान आग्नीध्र देश से सदनाम स्थान में जाता है उसका मंत्र २ यजमान सद के समीप स्थित होकर सदस्यों को देखता है उसका मंत्र ३

ओं रूपेणेत्यस्य (आङ्गिरस ऋ० प्रजापत्या जगती छं० दक्षिणा दे०) १

ओं विश्व इत्यस्य (तथा ० याजुष्यनुष्टुप छं० तथा) २

ओं यतस्वेत्यस्य (तथा ० दैवी त्रिष्टुप् छं० तथा) ३

पदार्थः हे दक्षिणारूप गौओ १ यजमान रूप से २ तुम्हारे ३ दर्शनीय रूप के ४ सन्मुख प्राप्त हुआ हूं ५ सुवर्ण नाम दूसरी दक्षिणा से युक्त हे ६ गौओ ६ यज्ञ के ७ मार्ग में ८ प्राप्त होओ ९ सर्वज्ञ १० ब्रह्मा जो कि दक्षिणा के योग्य और अयोग्य को जानता है ११ तुम्हें १२ विभाग करो हे ब्रह्मन् दक्षिणा रूप प्रथम यो १३ सद रूप स्वर्ग को १४ देख १५ देव विमान के स्थित स्थान अन्तरिक्ष को १६ देख हे दक्षिणा तुम १७ ऋत्विजों के साथ १८ य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न फल प्राप्ति के लिये यत्न करो ॥ ४५॥ ९

अथाध्यात्मम् – हे इन्द्रियों की शक्तियो १ में देही रूप से २ तुम्हारे ३ उभय रूप के ४ सन्मुख प्राप्त हुआ हूं ५ हे मन रूप दूसरी दक्षिणा रखने वाली इन्द्रियो ६,७ ब्रह्म मार्ग अर्थात् सुषुम्ना मार्ग द्वारा ८ लौट आओ ९ सर्व न १० हृदय रूप ब्रह्म ११ तुम्हें १२ विभाग करो अर्थात् वाक् आदि ऋत्विजों के अर्पण करो हे प्रथम दक्षिणा रूप इन्द्रिय शक्ति तुम १३ भृकुटि को १४ देखो १५ हार्दान्त रिक्ष को १६ देखो १७ वाक् आदि ऋत्विजों के साथ १८ यज्ञ फल रूप मोक्ष की प्राप्ति के लिये यत्न करो इस प्रकार सब दक्षिणाओं के दान में कहना चाहिये॥ ४५॥

९ ब्रह्म वैवर्त्त पुराण के प्रकृति खंड में लिखा है, यज्ञ दक्षिणा और फल रूप पुत्र के साथ है वह दक्षिणा यज्ञ कर्त्ताओं के फल को देने वाली है इस प्रकार वेद ज्ञाताओं ने जाना है कर्म करके शीघ्र उसकी दक्षिणा देदेवे उस कर्म के फल को पाता है यह वेदों ने कहा है २ कर्म पूर्ण होने पर जो कर्म कर्त्ता देवे अथवा अज्ञान से उसी क्षण ब्राह्मणों को दक्षिणा नहीं देवै ३ तो वह दक्षिणा एक मुहूर्त्त व्यतीत होने पर द्विगुणी होवे, एक रात्रि व्यतीति होने पर शत गुणी होवे ४ तीन रात्रि व्यतीति होने पर उससे दश गुणी होवे ७ दिन में उससे भी द्विगुणी होवे महीने में लक्ष गुणी होवै ५ और एक वर्ष व्यतीत होने पर तीन कोट गुणी होवै और यजमानों का वह सब कर्म निष्फल होवे ६ वह ब्राह्मण के धन का हर्त्ता पातकी अपवित्र मनुष्य कर्म के योग्य नहीं है और उस पाप से दरिद्री और व्याधि युक्त होता है ७ लक्ष्मी दारुण शाप को देकर उसके घर से चली जाती है और पितर उसके दिये हुए श्राद्ध और तर्पण को ग्रहण नहीं करते ८ इसी प्रकार देवता भी उसकी पूजा को और अग्नि उसकी दी हुई

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Harid

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मणमद्य विदेयम्पितृमन्तम्पैतृमत्यमृषिमार्षेयꣳ सुधातुदक्षिणम्। अस्मद्दाता देवत्रा गच्छत प्रदातारमा विशत ४६

अद्य। पितृमन्तम्। पैतृमत्यम्। ऋषिम्। आर्षेयम्। सुधातुदक्षिणम्। ब्राह्मणम्। विदेयम्। अस्मद्दाताः। देवत्रा। गच्छत। दातारं। आविशत ॥ ४६॥

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में दो मंत्र हैं, यजमान आग्नीध्र नाम ऋत्विज के पास जाता है उसका मंत्र १ यजमान बैठ कर उस ऋत्विज को सुवर्ण देता है उसका मंत्र २

ओं ब्राह्मण मित्यस्य (आङ्गिरस ऋ० आर्ची बृहती छं० लिङ्गोक्त देवता) १

ओं अस्मदित्यस्य (तथा आर्ची गायत्री छं० दक्षिणा देवता) २

पदार्थः – १ इस समय २ श्राद्ध तर्पण क्रिया में तत्पर ३ आर्ष बुद्धि के अनुगामी अथवा कुलीन ४ मंत्रों के व्याख्याकर्त्ता ५ जाति प्रवर और ज्ञान से अच्छे जाने हुए ६ सुवर्ण दक्षिणा के योग्य ७ ब्राह्मण को ८ प्राप्त करूं हे दक्षिणाओ ९ हमसे दी हुई तुम १० देवताओं के पास ११ जाओ उन की तृप्ति करके १२ दाता के पास १३ प्रवेश करो ॥ ४६॥

आहुति को ग्रहण नहीं करते दाता देने योग्य दक्षिणा को नहीं देता है और ब्राह्मण उसको नहीं मांगता है वे दोनों नरक में जाते हैं जैसे कटी रस्सी वाला घट ९ जो यजमान मांगने वाले ब्राह्मणों को दक्षिणा नहीं देवें वह ब्राह्मण के धन का हर्त्ता होवे और निश्चय कुंभी पाक नरक को जावे १० वहां यमदूत से ताडित हुआ लक्ष वर्ष वास करे फिर वह व्याधि युक्त और दरिद्री चांडाल होवे ७ पिछले और ७ अगले पुरुषों को स्वर्ग से गिरावे ॥ ११॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाध्यात्मम् – १ इस उत्थान अवस्था में २ मन से युक्त ३ आर्षज्ञान से सम्पन्न ४ मंत्रों के व्याख्याता ५ मंत्र द्रष्टा ६ आत्म ज्योति रूप दक्षिणा वाले ७ हृदय को ८ प्राप्त करूं हे इन्द्रियों की शक्तियो ९ हमसे दी हुई तुम १० इन्द्रिय गोलकों को ११ जाओ और प्रारब्ध समाप्ति पर १२ मुझ दाता में १३ प्रवेश करो॥ ४६॥

अग्नयेत्वा मह्यं वरुणो ददातु सोमृतत्वमशीया युर्दात्रे णधि मयो मह्यम्प्रति गृहीत्रे। रुद्रायत्वा मह्यं वरुणो ददातु सोमृतत्त्वमशीय प्राणो दात्र ऽणधि वयो मह्यम्प्रति गृहीत्रे। बृहस्पतयेत्वा मह्यं वरुणो ददातु सोमृतत्व मशीयत्वग्दात्रः णधि मयो मह्यम्प्रति गृहीत्रे। यमायत्वा मह्यं वरुणो ददातु सोमृतत्व मशीय हयो दात्र ऽणधि वयो मह्य म्प्रति गृहीत्रे ४७

वरुणः। मह्यं। अग्नये। त्वा। ददातु। सः। अमृतत्वम्। अशीय। दात्रे। आयुः। णधि। प्रति गृहीत्रे। मह्यं। मयः। वरुणः। मह्यं। रुद्राय। त्वा। ददातु। सः। अमृतत्वं। अशीय। दात्रे। प्राणः। णधि। मह्यं। प्रति गृहीत्रे। वयः। वरुणः। त्वा। मह्यं। बृहस्पतये। ददातु। सः। अमृतत्वं। अशीय। दात्रे। त्वक्। णधि। प्रति गृहीत्रे। मयः। वरुणः। मह्यं। यमाय। त्वा। ददातु। सः। अमृतत्वं। अशीय। दात्रे। हयः। णधि। मह्यं। प्रति गृहीत्रे। वयः॥ ४७॥

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में ४ मंत्र हैं उनको कहते हैं अध्वर्यु

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और प्रति प्रस्थाता सुवर्ण को लेते हैं उसका मंत्र १ तथा गौ को लेते हैं उसका मंत्र २ तथा वस्त्र को लेते हैं उसका मंत्र ३ तथा घोड़े को लेते हैं उसका मंत्र ४

ओं अग्न यइत्यस्य (आङ्गिरस ऋ० आर्ची त्रिष्टुप् छं० हिरण्यं देवतं)१

ओं रुद्रा येत्यस्य (तथा ० भुरिगार्ची त्रिष्टुप् छं० गौर्दे०)२

ओं बृहस्पतय इत्यस्य (तथा ० निचृदार्षी जगती छं० वस्त्रं देवतं)३

ओं यमा येत्यस्य (तथा ० भुरिगार्ची त्रिष्टुप् छं० अश्वो दे०)४

पदार्थः – हे सुवर्ण १ यजमान २ मुझ ३ अग्नि रूप अग्नीध्र के लिये ४ तुझे ५ दान करो ९ इस विधि से लेता हुआ ६ वह मैं ७ आरोग्य को ८ प्राप्त करूं हे सुवर्ण तुम ९ दाता के लिये १० जीवन ११ हो १२, १३ और मुझ लेने वाले के लिये १४ सुख रूप हो अर्थात् दाता आयुष्मान हो और मैं सुखी होऊं हे गौ १५ यजमान १६, १७ मुझ रुद्र रूप होता के अर्थ १८ तुझे १९ दान करो २० वह मैं २१ आरोग्य को २२ प्राप्त करूं हे गौ तुम २३ यजमान के लिये २४ प्राण रूप २५ हो २६ मुझ २७ दान लेने वाले के अर्थ २८ अन्न और पशु रूप हो अर्थात् दुग्ध दधि आदि रूप से अन्न और सन्तान द्वारा पशु रूप हो हे वस्त्र २९ यजमान ३० तुझे ३१ मुझ ३२ बृहस्पति रूप उद्गाता के लिये ३३ दान करो ३४ वह मैं ३५ आरोग्य को ३६ प्राप्त करूं तुम ३७ दाता के लिये ३८ त्वक् इन्द्रिय रूप सुख कारी ३९ हो और ४० मुझ ४१ दान लेने वाले के अर्थ ४२ सुख रूप हो हे अश्व ४३ यजमान ४४ मुझ ४५ यम रूप ब्रह्मा के लिये ४६ तुझे ४७ दान करो ४८ वह यम रूप मैं ४९ आरोग्य को ५० प्राप्त करूं हे अश्व तुम ५१ दाता के लिये ५२ अश्व ५३ हो ५४ मुझ ५५ दान लेने वाले के लिये ५६ अन्न का दाता

९ पहले वरुण नेकनक आदि पदार्थ, अग्नि आदि देवताओं को दिये इस कारण उस स्वरूप से लेता हुआ ब्राह्मण हानि को नहीं पाता है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सन्तति द्वारा पशुओं का दाता हो ॥ ४७॥

अथाध्यात्मम् – हे आत्म ज्योति १ योगा रूढ़ आत्मा ने २ मुझ ३ मन के लिये ४ तुझे ५ दान किया ६ वह मैं ७ मोक्ष को ८ प्राप्त करूं हे आत्म ज्योति तुम ९ योगा रूढ़ आत्मा के लिये १० जीवन ११ हूजिये १२ मुझ १३ दान लेने वाले मन के लिये १४ मोक्ष सुख वा ब्रह्मानंद हूजिये हे प्राण १५ योगा रूढ़ आत्मा ने १६ मुझ १७ आत्म ज्योति के लिये १८ तुझे १९ दान किया २० वह आत्म ज्योति मैं २१ मोक्ष को २२ प्राप्त करूं हे प्राण तुम २३ योगा रूढ़ आत्मा के लिये २४ प्राण २५ हो २६ और मुझ २७ दान लेने वाले आत्म ज्योति के लिये २८ अन्न हो हेलगास्यद भूतात्मा २९ योगा रूढ़ आत्मा ने ३० तुम को ३१ मुझ ३२ प्राण के लिये ३३ दान किया ३४ वह प्राण मैं ३५ मोक्ष को ३६ प्राप्त करूं तुम ३७ योगा रूढ़ आत्मा के लिये ३८ त्वचा ३९ हूजिये ४० और मुझ ४१ दान लेने वाले प्राण के अर्थ ४२ ब्रह्मानंद मय हूजिये हे ज्ञान वज्र ४३ योगा रूढ़ आत्मा ने ४४ मुझ ४५ यम रूप भूतात्मा के लिये ४६ तुझे ४७ दान किया ४८ वह भूतात्मा मैं ४९ मोक्ष को ५० प्राप्त करूं हे ज्ञान वज्र तुम ५१ योगा रूढ़ आत्मा के लिये ५२ ज्ञान वज्र ५३ हूजिये ५४ और मुझ ५५ दान लेने वाले भूतात्मा के लिये ५६ अन्न हूजिये ॥ ४७॥

कोदात्कस्माअदात्कामोदात्कामायादात्। कामो दाता कामः प्रतिगृहीता कामैतत्ते ॥ ४८॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
कः। अदात्। कस्मै। अदात्। कामः। अदात्। कामाय। अदात्।
९ १० ११ १२ १३ १४ १५
कामः। दाता। कामः। प्रतिगृहीता। कामः। एतत्। ते। ४८॥

अथाधिदैवम् – दूसरी वस्तु मन्थौदन तिल आदि को ग्रहण करते हैं उसका मंत्र १

ओं कोदादित्यस्य (आङ्गि० रस ऋ० प्राजापत्या त्रिष्टुप् छं० कामो देव०) १

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदार्थः दाता को दानाभिमान और दान लेने वाले को प्रति ग्रह सम्बंधी दोषन होने के लिये देह और इन्द्रियों के समूह में काम को सम्बंध देते हैं १ किसने २ दिया ३ किसके अर्थ ४ दिया यह दो प्रश्न हुए उनका उत्तर ५ कामने ६ दिया ७ काम के अर्थ ८ दिया ९ काम १० दाता है ११ काम १२ लेने वाला है १३ हे काम १४ यह द्रव्य अथवा शरीर और ब्रह्मांड १५ तेरा ही है॥ ४८॥ ९

इति श्री भृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म कृते यजुर्वेदीय ब्रह्म भाष्ये उपांश्वादि प्रदानान्तः सप्तमोध्यायः॥७

सातवीं अध्याय में उपांशु ग्रह आदि सम्बंधी दूसरे सवन के मंत्र दक्षिणा दान तक कहे, अब आठवीं अध्याय में तीसरे सवन के आदित्य ग्रह आदि सम्बंधी मंत्र कहे जाते हैं॥

उपयाम गृहीतोस्यादित्येभ्यस्त्वा। विष्णोऽउरुगायैषते सोमस्तꣳ रक्षस्व मात्वा दभन्॥ १॥

उपयाम गृहीतः। असि। आदित्येभ्यः। त्वा। उरुगाय। विष्णो। एष। सोमः। ते। तꣳ। रक्षस्व। त्वा। मा। दभन्॥ १॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में तीन मंत्र हैं उनको कहते हैं, अध्वर्यु से अनुवाचन करने पर प्रति प्रस्थाता आदित्य पात्र द्वारा द्रोण कलश वा घृत भृत से देवता निर्देश शून्य मंत्र द्वारा सोम को ग्रहण कर के अग्नि के उत्तर

९ गीता में श्री भगवान का वचन है हे अर्जुन ज्ञानी के नित्य वैरी दुष्पूराग्नि स्वरूप काम से ज्ञान ढका हुआ है १ इन्द्रियां मन और बुद्धि इस काम का स्थान कहाती हैं यह काम इन्हों के साथ ज्ञान को ढक कर जीवात्मा को मोहित करता है २ हे अर्जुन इस कारण तुम आदि में इन्द्रियों को वश में करके इस ज्ञान विज्ञान के नाशक पापी काम को मारो॥ ३॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूं में द्वि देवत्य होम के पीछे होमता है उस का मंत्र १ प्रति प्रस्थाता शेष हवि को आदित्य स्थाली में डालता है उस का मंत्र २ प्रति प्रस्थाता तीसरी वार आदित्य स्थाली में डाल कर उसी आदित्य पात्र से आदित्य स्थाली को ढकता है उस का मंत्र ३

ओं उपयामेत्यस्य (आङ्गि रस ऋ० याजुष्यनुष्टुप् छं० सोमो देवता) १
ओं आदित्येभ्य इत्यस्य (तथा ० दैवी पंक्ति श्छंद० तथा) २
ओं विष्णा इत्यस्य (तथा ० साम्नी वृहती छं० विष्णु र्दे०) ३

पदार्थः – हे सोम तुम १ उपयाम पात्र से गृहीत २ हो ३ आदित्य नाम देवताओं के लिये ४ तुझे सींचता हूं ५ वहुत महात्माओं से स्तुत किये हुए ६ हे यज्ञ पुरुष ७ यह ८ सोम ९ तेरे अर्पण किया १० उस सोम को ११ रक्षा करो सो मरक्षा में प्रवृत्त १२ तुमको राक्षस १३, १४ पीड़ा न दें ॥ १ ॥

अथ योगिनां सायं सन्ध्या

अथाध्यात्मम् – हे आत्म प्रति विं व तुम १ परा शक्ति से गृहीत २ हो ३ परा नाम ब्रह्म ज्योति के पुत्र ब्रह्मा विष्णु महेश के लिये ४ तुझे सींचता हूं ५ वहुत भक्तों से स्तुति किये हुए ६ हे त्रिदेव रूपधारी विष्णु ७ यह ८ आत्म प्रति विं व ९ आपका ही है १० उस को ११ रक्षा करो १२ तुम को काम आदि १३, १४ मत पीड़ा दो ॥ १ ॥

कदाचन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे। उपोपेन्नु मघवन भूइन्नु ते दानन्देवस्य पृच्यत आदित्येभ्यस्त्वा २

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६
मघवन। इन्द्र। कदाचन। स्तरीः। न। असि। दाशुषे। इन्नु। उप सश्चसि। इन्नु। भूयः। देवस्य। दानम्। ते। उप पृच्यते। आदित्येभ्यः

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वा ॥२॥

इस कंडिका में दो मंत्र हैं उन को कहते हैं इन्द्र की स्तुति का मंत्र १ हविर्धान का द्वार बन्द करने पर अध्वर्यु आदित्य पात्र को हाथ में लेकर और संस्रवों को आदित्य स्थाली में लेकर उन संस्रवों के सकाश से आदित्य पात्र द्वारा आदित्य ग्रह को ग्रहण करता है उसका मंत्र २

ओं कदाचन इत्यस्य (आङ्गि॰ रस ऋ॰ आर्षी बृहती छं॰ आदित्यो दे॰) १
ओं आदित्येभ्य इत्यस्य (तथा दैवी पंक्ति छंद॰ ग्रहो दे॰) २

पदार्थः - १ हे त्रिदेव रूप धारी २ महा विष्णु तुम ३ कभी ४ हिंसक ५ नहीं ६ हो ७ हवि अर्पण करने वाले ८ यजमान के लिये ८ ब्रह्मा विष्णु महेश और सूर्य रूप को ९ धारण करते हो १० हे ब्रह्मा विष्णु महेश सूर्य रूप धारी महा विष्णु ११ फिर १२ भक्त वा योगी का १३ हविदान वा आत्म दान १४ तुझसे ही १५ सम्बंध पाता है हे ग्रह वा हे आत्म प्रति बिंब १६ ब्रह्मा विष्णु महेश देवताओं के लिये १७ तुझे ग्रहण करता हूं ॥२॥

कदाचन प्रयुच्छसि उभे निपासि जन्मनी। तुरीयादित्य सवनन्त इन्द्रिय मातस्थावमृतन्दिव्यादित्येभ्यस्त्वा ३

तुरीयादित्य। कदाचन। न। प्रयुच्छसि। उभे। जन्मनी। निपासि। ते। अमृतम्। सवनम्। इन्द्रियम्। दिवि। आतस्थौ। आदित्येभ्यः। त्वा ॥३॥

धारा से तोड़ कर पूत भृत में से अपने समीप लाकर उसी प्रकार फिर आदित्य ग्रह को ग्रहण करता है उसके मंत्र १,२

ओं कदाचनेत्यस्य (आङ्गि॰ रस ऋ॰ निचृदार्षी बृहती छं॰ आदित्यो दे॰) १

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओंआदित्येभ्य इत्यस्य (आङ्गि॰ रस ऋ॰ दैवी पंक्ति श्छं॰ ग्रहो दे॰)२

पदार्थः – १ हे महा विष्णो तुम २ कभी ३,४ भक्तों को नहीं भूलते हो ५ दो नों ६ जन्म जिन में एक माता पिता से दूसरा गुरु से होता है ७ निरंतर रक्षा करते हो ८ आप का ९ अविनाशी १० जगत प्रवर्त्तक ११ सूर्य रूप बल १२ स्वर्ग लोक में १३ स्थित हुआ हे ग्रह वा हे आत्म प्रति बिंब १४ विष्णु आदि देवताओं के लिये १५ तुझे ग्रहण करता हूं॥३॥

यज्ञो देवाना म्प्रत्येति सुम्न मादित्या सोभवता
मृडयन्तः। आवो र्वाची सुमति र्वृत्याद ँहो
श्चिद्धावरिवो वित्तरा सदादित्येभ्यस्त्वा॥४॥

यज्ञः। देवानाम्। सुम्नम्। प्रत्येति। आदित्यासः। आमृडयन्तः। भवत। वः। सुमतिः। अर्वाची। अवृत्यात्। अंहोः। चित्। या वरिवो वित्तरा। असत्। आदित्येभ्यः। त्वा॥४॥

इस कंडिका में दो मंत्र हैं उनको कहते हैं, इस आदित्य ग्रह को ग्रह के पश्चिम भाग वा मध्य में दधि से मिश्रित करता है उसके मंत्र १,२

ओंयज्ञ इत्यस्य (कुत्स ऋ॰ विराडार्षी त्रिष्टुप् छं॰ आदित्यो दे॰)१

ओंआदित्येभ्य इत्यस्य (तथा ॰ दैवी पंक्ति श्छंद ॰ ग्रहो दे॰)२

पदार्थः – १ यज्ञ वा यजमान २ ब्रह्मा विष्णु महेश नाम देवताओं के ३ सुख को ४ प्राप्त करता है ५ हे ब्रह्मा विष्णु महेश नाम देवताओ आप ६ सब ओर से सुख करने वाले ७ हूजिये ८ आप की ९ भक्तों के अनुग्रह में तत्पर श्रेष्ठ बुद्धि १० हमारे सन्मुख ११ प्राप्त हो १२ पापियों को १३ भी १४

९ अपने अंश रूप आत्मा को ग्रहण करता है वह आदित्य कहाता है आदित्य नाम ब्रह्मा विष्णु महेश हैं उनका चौथा महा विष्णु है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो वृद्धि १५ महान धन वा योग लक्ष्मी प्राप्त कराने वाली १६ होवे हे सोम वा हे त्व प्रति विंव १७ ब्रह्मा विष्णु महेश नाम देवता ओं के लिये १८ तुझे दधि वा निरुद्ध इन्द्रिय समूह से मिश्रित करता हूं॥ ४॥

विवस्वन्नादित्यैषते सोम पीथस्तस्मिन्मत्स्व।
अदस्मै नरो वर्चसे दधातन यदाशीर्दा दम्पती
वामभ्नुतः। पुमान् पुत्रो जायते विन्दते वस्व
धा विश्वाहारपएधते गृहे ५

१ विवस्वन्। २ आदित्य। ३ एष। ४ ते। ५ सोम पीथः। ६ तस्मिन्। ७ मत्स्व। ८ नरः। ९ आशीर्दा। १० अस्मै। ११ वर्चसे। १२ अदधातन। १३ यत्। १४ दम्पती। १५ वामम्। १६ अश्नुतः। १७ पुमान्। १८ पुत्रः। १९ जायते। २० वसु। २१ विन्दते। २२ अ। २३ धा। २४ विश्वाहा। २५ अरपः। २६ गृहे। २७ ओ। एधते॥ २७॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में दो मंत्र हैं उनको कहते हैं, अध्वर्यु उपांशु सवन नाम पाषाण से आदित्य ग्रह को मिलाता है अर्थात् सोम और दधि को परस्पर मिश्रित करता है उसका मंत्र १ पत्नी इस पूत भूत को देखती है उसका मंत्र २

ओं विवस्वानित्यस्य (कुत्स ऋ० प्राजापत्यानुष्टुप् छं० आदित्यो दे०) १
ओं आदित्यस्य (तथा ० निचृदार्षीजगती छं० आशीर्दे०) २

पदार्थः- हे तम नाशक वा विशिष्ट धन वाले २ आदित्य ३ यह पात्र स्थ तेरा ५ पान योग्य सोम है ६ उस सोम में तुम ७ तृप्ति पाओ पत्नी कहती है ८ हे यजमान सहित ऋत्विजो ९ आशीर्वादों के दाता आप १० इस आशीर्वाद के लिये १२ श्रद्धा करो कि १३ जो १४ पत्नी यजमान १५ संभजनीय यज्ञ फल को १६ प्राप्त करें तथा १७ पौरुष धर्म से सम्पन्न १८

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुत्र १९ उत्पन्न होवे वह पुत्र २० धन को २१ प्राप्त करे २२ तिस के पीछे २३ सदा २४ पाप रहित होता २५ अपने गृह में २६,२७ सब ओर से वृद्धि पावे॥ ५॥

अथाध्यात्मम्— १ हे अज्ञान तम नाशक अथवा योगैश्वर्यवान २ मन ३ यह इन्द्रिय शक्ति समूह ४ तेरा ५ पान योग्य अमृत है ६ उसमें ७ तृप्त हो बुद्धि कहती है ८ हे वाक् आदि ऋत्विजो ९ आशीर्वाद देने वाले आप १० इस ११ आशीर्वचन पर १२ श्रद्धा करो १३ जो १४ बुद्धि और आत्मा १५ योगयज्ञ के फल को १६ प्राप्त करें तथा १७ प्राण १८ योग पुरुषार्थ से युक्त १९ होवे वह प्राण २० योग लक्ष्मी को २१ प्राप्त करे २२ इस के पीछे २३ सदा २४ निष्पाप होता २५ ब्रह्म पुर शरीर में २६,२७ समष्टि भाव को प्राप्त करे॥ ५॥

वाम मद्य सवितर्वा ममुश्वो दिवे दिवे वाममस्म भ्यꣳ सावीः। वामस्य हि क्षयस्य देव भूरेरया धिया वाम भाजः स्याम ६

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
सवितः। अद्य। अस्मभ्यम्। वामम्। सावीः। श्वः। उ। वामम्।
९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७
दिवे। दिवे। वामम्। वामस्य। भूरेः। क्षयस्य। हि। देव। अया।
१८ १९ २०
धियो। वाम भाजः। स्याम॥ ६॥

अथाधिदैवम्— इडा को भक्षण करके उपांशु अंतर्यामि पात्र से अन्यतर पात्र द्वारा सावित्र ग्रह को ग्रहण करता है उसके मंत्र १,२

ओं वाममित्यस्य (भरद्वाज ऋ० निचृदार्षी त्रिष्टुप् छं० सविता दे०)१

ओं उपयामेत्यस्य (तथा ० विराड् ब्राह्म्यनुष्टुप् छं० तथा)२

पदार्थः— १ हे सब के प्रेरक देवता २ अब सायं सवन में ३ हमारे लिये ४ संभजनीय यज्ञ फल को ५ दीजिये ६,७ अगले दिन भी ८ यज्ञ फल को दीजिये ९,१० प्रत्येक दिवस ११ यज्ञ फल को दीजिये १२ संभजनीय १३ विस्तीर्ण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१४ब्रह्मांड के १५ही १६प्रकाशक हे सूर्यदेवता हम १७ इस १८ श्रद्धा युक्त बुद्धि द्वारा १९ यज्ञ का अनुष्ठान करने वाले २० होवें॥ ६॥

अथाध्यात्मम् – वाक् आदि ऋत्विज कहते हैं १ हे मन वा हे प्राण २ अव सायं सवन में ३ हमारे लिये ४ ब्रह्मा विष्णु महेश रूप धारी महा विष्णु को ५ प्राप्त कराइये ६,७ अगले दिन भी ८ महा विष्णु को अनुभव कराइये ९,१० प्रत्येक दिवस ११ महा विष्णु को प्राप्त कराइये १२ महा विष्णु का १३ विस्तीर्ण १४ व्यष्टि समष्टि शरीर रूप जो गृह है उसके १५ही १६ प्रकाशक हे मन हम १७ विष्णु में योजित १८ अपरोक्ष ज्ञान के द्वारा १९ महा विष्णु के उपासक २० होवें॥ ६॥

उपयाम गृहीतोसि सावित्रोसि चनोधा अनोधा असि चनो मयि धेहि। जिन्व यज्ञ ज्जिन्व यज्ञ पतिम्भगाय देवाय त्वा सवित्रे ॥७॥

उपयाम गृहीतः। असि। सावित्रः। असि। चनोधाः। चनोधाः। असि। चनः। मयि। धेहि। यज्ञम्। जिन्व। यज्ञ पतिम्। जिन्व। भगाय। सवित्रे। देवाय। त्वा॥ ७॥

अथाधिदैवम् – हे सोम तुम १ उपयाम पात्र से गृहीत २ हो ३ तुम सविता को देवता रखने वाले ४ हो ५,६ अत्यन्त अन्न के धारक अथवा भी म दिव्य अन्न के धारण करने वाले ७ हो इस कारण ८ अन्न को ९ मुझ में १० स्थापन करो और ११ यज्ञ को १२ तृप्त करो १३ यजमान को १४ तृप्त करो १५ ब्रह्मा विष्णु महेश स्वरूप १६ सूर्य १७ देवता के लिये १८ तुम्हें ग्रहण करता हूं॥ ७॥

अथाध्यात्मम् – हे मन तुम १ योग क्रिया से निगृहीत २ हो ३ मानस

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर्य को देवता रखने वाले ४ हो ५ प्राण के धारक ६ और आत्म प्रति बिंब के धारक ७ हो इस कारण ८ प्राण वा आत्म प्रति बिंब को ९ मुझ आत्मा में १० लय करो ११ योग यज्ञ के अभि मानी देवता को १२ तृप्त करो १३ मुझ आत्मा को १४ तृप्त करो १५ त्रिदेव रूप धारी १६ सब के प्रेरक १७ अवतारों से क्रीडण शील महा विष्णु के लिये १८ तुझे ग्रहण करता हूं ॥ ७ ॥

उपयाम गृहीतोसि सुशर्म्मासि सुप्रतिष्ठानो वृहदुक्षायनमः। विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्य एषते योनि र्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः ८

उपयाम गृहीतः। असि। सुशर्म्मा। सुप्रतिष्ठानः। वृहदुक्षाय। नमः। असि। विश्वेभ्यः। देवेभ्यः। त्वा। एषः। ते। योनिः। विश्वेभ्यः। देवेभ्यः। त्वा॥ ८॥

अथाधिदैवम् – अभक्षित सावित्र ग्रह पात्र द्वारा पूत भृत से महा वैश्वदेव ग्रह को अध्वर्यु ग्रहण करता है उनके मंत्र १,२

ओं उपयामेत्यस्य (भरद्वाज ऋ० निचृद् प्राजा पत्या जगती छं० विश्वे देवा दे०) १

ओं एषत इत्यस्य (तथा ० याजुषी जगती छं ० ग्रहो दे०) २

पदार्थः – हे वैश्वदेव ग्रह तुम १ उपयाम पात्र से गृहीत २ हो ३ श्रेष्ठ सुख वा आश्रय वाले ४ पात्र में भले प्रकार स्थित ५ प्रजा पति के लिये ६ अन्न स्वरूप ७ हो ८,९ सब देवताओं के लिये १० तुझे ग्रहण करता हूं ११ यह १२ तेरा १३ स्थान है १४,१५ सब देवताओं के लिये १६ तुझे सादन करता हूं ॥ ८ ॥

अथाध्यात्मम् – हे प्राण तुम १ प्राणायाम से गृहीत २ हो ३ ब्रह्मानंद मय ४ श्रेष्ठ पात्र में स्थित ५ ब्रह्म के लिये ६ अन्न स्वरूप ७ हो ८,९ ब्रह्म परा महा नारायण नाम देवताओं के लिये १० तुझे ग्रहण करता हूं ११ यह परा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति १२ तेरा १३ स्थान है १४,१५ ब्रह्म परा महानारायण नाम देवताओं के लिये १६ तुझे सादन करता हूं ॥८॥

उपयाम गृहीतोसि बृहस्पति सुतस्य देव सोम तइन्दो रिन्द्रियावतः पत्नीवतो ग्रहा ँ ऋध्या सम। अहम्परस्तादहमवस्ताद्यद न्तरिक्षन्त दुमे पिता भूत। अह ँ सूर्य्य मुभयतो ददर्शाह न्देवानाम्परमङ्गुह्यायत ९

देव। सोम। उपयाम गृहीतः। असि। ते। बृहस्पति सुतस्य। इन्दो। इन्द्रियवतः। पत्नीवतः। ग्रहान्। आऋध्यासम। अहम्। परस्तात्। अहम्। अवस्तात्। यत्। अन्तरिक्षम्। तत्। उ। मे। पिता। अभूत्। अहम्। उभयतः। सूर्यम्। ददर्श। यत्। अहम्। देवानाम्। परमम्। गुह्यं ॥९॥

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में ३ मंत्र हैं उनको कहते हैं प्रतिप्रस्थाता हविर्धान में प्रवेश होकर उपांसु पात्र अथवा अंतर्याम पात्र द्वारा आग्रयण से पात्नीवत नाम ग्रह को ग्रहण करता है उसका मंत्र १ अध्वर्यु प्रचर्णी शेष घृत से पात्नीवत ग्रह को मिश्रित करता है उसके मंत्र २,३

ओं उपयामेत्यस्य (भरद्वाज ऋ० ब्राह्मी गायत्री छं० सोमो देवता) १

ओं अहमित्यस्य (तथा ० आर्च्युष्णिक छं० प्रजापति रूपात्मादे०) २,३

पदार्थः – १ हे दीप्यमान २ सोम तुम ३ उपयाम पात्र से गृहीत ४ हो इस कारण ५,६ मुझ ब्राह्मणों के हाथ से अभिषुत ७ रस रूप ८ वीर्यवान ९ शक्ति से युक्त के १० उपांशु आदि ग्रहों को ११ पूर्ण करता हूं १२ आत्मा रूप प्रजापति मैं १३ ऊपर स्वर्ग लोक आदि में हूं १४ मैं १५ नीचे भूलोक आदि में हूं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६ जो १७ अन्तरिक्ष है १८ वह १९ भी २० मेरे रूपों का २१ स्थान रूप से पालन करने वाला २२ हुआ २३ मैंने २४ दोनों ओर अर्थात् ऊपर नीचे से २५ अपने आत्म प्रति विंब सूर्य को २६ देखा २७ जिस कारण २८ मैं २९ इन्द्रादि देवताओं अथवा इन्द्रियों का ३० उत्कृष्ट ३१ आश्रय स्थान हूं ॥ ९ ॥

अथाध्यात्मम्—आत्मा कहता है १ हे दीप्यमान २ आत्म प्रति विंवतुम ३ पराशक्ति से गृहीत ४ हो इस कारण ५ तुझ ६ प्राण से अभिषुत ७ ज्योति रूप ८ योग बल से सम्पन्न ९ बुद्धि से संयुक्त के १० प्राण आदि ग्रहों को मैंने ११ पूर्ण किया शेष अधिदैव अर्थ की समान है ॥ ९ ॥

अग्ना३इ पत्नीवन्त्सजूर्देवेन त्वष्ट्रा सोमम्पिब स्वाहा। प्रजापतिर्वृषा सि रेतोधा रेतो मयि धेहि प्रजापते स्ते वृषणो रेतोधसो रेतो धामशीय १०

पत्नीवत्। अग्ना३इ। त्वष्ट्रा। देवेन। सजूः। सोमम्। पिब। स्वाहा। प्रजापतिः। वृषा। रेतोधाः। असि। रेतः। मयि। धेहि। वृषणः। रेतोधसः। ते। प्रजापतेः। रेतोधां। अशीय ॥ १० ॥

अथाधिदैवम्—इस कंडिका में दो मंत्र हैं उनको कहते हैं अध्वर्यु पत्नीवत नाम ग्रह को अग्नि के उत्तर भाग में होमता है उसका मंत्र १ भेजा हुआ नेष्टा नाम अध्वर्यु पत्नी को दूसरे द्वार से सद में प्रवेश करा के उद्गाता के उत्तर में स्थित पत्नी से कहता है कि उद्गाता को देख और वह पत्नी उद्गाता को देखती है उसका मंत्र २

ओं अग्न इत्यस्य (भरद्वाज ऋ० भुरिगार्ची गायत्री छं० अग्नि दे०) १
ओं प्रजापतिरित्यस्य (तथा ० आर्ची त्रिष्टुप् छं० प्रजापति दे०) २

पदार्थः—१ हे पत्नी से युक्त २ अग्ने ३ तुष्टा ४ देवता से ५ समान प्रीति

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाले तुम ६ सोम को ७ पान करो ८ श्रेष्ठ होम हो हे उद्गाता ९ प्रजा पालक तुम १० सींचने वाले ११ और वीर्य के धारण करने वाले १२ हो १३ वीर्य को १४ मुझ में १५ स्थापन करो १६ वीर्य के सींचने वाले १७ वीर्य के धारण करने वाले १८ तुझ १९ प्रजापति के २० वीर्य धारक अर्थात् सन्तान उत्पन्न करने में समर्थ पुत्र को २१ प्राप्त करूं॥ १०॥

अथाध्यात्मम् – १ हे बुद्धि से सम्पन्न २ आत्माग्नि ३,४ ईश्वर के साथ ५ सेवा युक्त तुम ६ आत्म प्रति विंब को ७ पान करो ८ महा वाक् के गुरु के उपदेश से हे महा वाक् ९ योगियों का पालन करने वाले तुम १० ज्ञान रस से सींचने वाले ११ और योग बल के धारण करने वाले १२ हो १३ योग बल को १४ मुझ में १५ धारण करो १६ ज्ञान रस से सींचने वाले १७ योग बल के धारण करने वाले १८ तुझ १९ महा वाक् के २० योग बल धारक ज्ञान को २१ प्राप्त करूं॥ १०॥

उपयाम गृहीतोसि हरिरसि हारि योजनो हरिभ्यान्त्वा। हर्य्योर्द्धानास्थ सह सोमा इन्द्राय ११

उपयाम गृहीतः। असि। हारि योजनः। हरिः। असि। त्वा। हरिभ्याम्। सह सोमाः। इन्द्राय। हर्य्योः। धानाः। स्थ॥ ११

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में दो मंत्र हैं, अध्वर्यु हारि योजन नाम ग्रह का ग्रहण करता है उसका मंत्र १ धानाओं को बोता है उसका मंत्र २

ओंउपयामेत्यस्य (भरद्वाजऋ० आर्च्युष्णिक् छं० ऋक् सामे देवते) १
ओंहर्योरित्यस्य (तथा ० याजुषी जगती छं० धाना देवता) २

पदार्थः – हे ग्रह तुम १ उपयाम पात्र से गृहीत २ हो ३ ब्रह्मांमुरूपजी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वर को युक्त करने वाला जो महा विष्णु है उससे सम्बंध रखने वाले ४ सोम ५ हो ६ तुझे ७ ऋक् सामनाम मंत्रों के लिये ग्रहण करता हूं ८ हे सोम सहित भृष्ट यवो तुम ९ महा विष्णु की प्राप्ति के अर्थ १० ऋक् साम नाम मंत्रों की ११ तृप्ति करने वाले १२ हो ॥ ११॥

अथाध्यात्मम् – हे आत्म प्रति विंब तुम १ परा शक्ति से गृहीत २ हो ३ महा विष्णु से सम्बंध रखने वाली ४ किरण ५ हो ६ तुम को ७ भक्ति ज्ञान सम्बंधी मंत्रों के लिये ग्रहण करता हूं ८ हे आत्म प्रति विंब सहित प्राणो तुम ९ महा विष्णु की प्राप्ति के लिये १० भक्ति ज्ञान सम्बंधी महा वाक् के ११ पोषक १२ हो ॥ ११॥

यस्ते अश्व सनि भक्षो योगो सनिस्तस्य तद्दृष्ट यजुष स्तुत स्तोमस्य शस्तो कथस्योपहूतस्यो पहूतो भक्षयामि ॥ १२

१ २ ३ ४ ५ ६
ते। इष्ट यजुषः। स्तुत स्तोमस्य। शस्तो कथस्य। उपहूतस्य। यः
७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४
भक्षः। अश्व सनिः। यः। गोसनिः। तस्य। तो उपहूतः। भक्षयामि ॥ ११॥

अथाधिदैवम् – प्राण भक्ष्य को भक्षण करके उत्तर वेदी में डालते हैं उसका मंत्र १

ओं यस्त इत्यस्य (भरद्वाज ऋ० आर्षी पंक्तिश्छंदो भक्ष्य द्रव्यं देवतं) १

पदार्थः – हे धाना सहित सोम हे भक्ष्य द्रव्य १ तुझ २ पूजित यजु मंत्र वाले ३ उद्गाताओं से स्तुत स्तोत्र वाले ४ होताओं से स्तुत शस्त्र वाले ५ अनुज्ञात का ६ जो ७ भक्ष्य ८ घोड़ों का दाता है ९ जो १० गौओं का दाता है ११ उस १२ तुझ के वैसे भक्ष्य को १३ अनुज्ञात में १४ भक्षण कर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताहूं ॥ १२ ॥

अथाध्यात्मम् - आत्मा कहता है हे प्रति विंब १ तुझ २ महा वाक् को प्रिय मान्ने वाले ३ वचनों से स्तुत स्तोत्र वाले ४ वचनों से स्तुत शस्त्र वाले ५ महा वाक् से अनुज्ञात का ६ जो ७ भक्ष्य ८ ब्रह्मांड का दाता है ९ ज्ञ १० इन्द्रियों का दाता है ११ उस १२ तुझ के वैसे भक्ष्य को १३ महा विष्णु से अनुज्ञात मैं १४ भक्षण करता हूं ॥ १२ ॥

देवकृतस्यैनसोऽवयजनमसि मनुष्यकृतस्यैनसोऽवयजनमसि पितृकृतस्यैनसोऽवयजनमस्यात्मकृतस्यैनसोऽवयजनमस्यैनस एनसोऽवयजनमसि। यच्चाहमेनो विद्वांश्च कारयच्च विद्वांस्तस्य सर्वस्यैनसोऽवयजनमसि ॥ १३ ॥

देवकृतस्य। एनसः। अवयजनम्। असि। मनुष्यकृतस्य। एनसः। अवयजनम्। असि। पितृकृतस्य। एनसः। अवयजनम्। असि। आत्मकृतस्य। एनसः। अवयजनम्। असि। एनसः। एनसः। अवयजनम्। असि। च। विद्वान्। यत्। एनः। अहम्। चकार। च। अविद्वान्। यत्। तस्य। सर्वस्य। एनसः। अवयजनम्। असि ॥ १३ ॥

अथाधिदैवम् छैमंत्रों से छे यूप शकल को आहवनीय में जलता है उसके मंत्र १-६

ओं देवकृतस्य पितृकृतस्यात्मकृतस्य मंत्राणां (भरद्वाज ऋ० आसुर्यनुष्टुप् छं० अग्नि दे० १ तथा
ओं मनुष्यकृतस्येत्यस्य (तथा ० आसुर्युष्णिक् छं० तथा) २
ओं एनस इत्यस्य (तथा ० आसुरी बृहती छं० तथा) ५

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओंउच्चाह मित्यस्य (भरद्वाज ऋ० आर्ची बृहती छं० अग्निर्दे०) ६

पदार्थः – हे शकल तुम १ देवताओं के साथ किये हुए ७ पाप के ३ नाशक ४ हो ५ मनुष्यों के साथ किये हुए ६ द्रोह निंदा आदि पाप के ७ नाशक ८ हो ९ पित्रों के साथ किये हुए १० श्राद्ध आदि न करने पापके ११ नाशक १२ हो १३ आत्मा के साथ किये हुए १४ आत्म निन्दा आदि पापके १५ नाशक १६ हो १७,१८ जितने पाप हैं उन सब के १९ नाशक २० हो २१ और २२ ज्ञान पूर्वक २३ जो २४ पाप २५ मैंने २६ किया २७ और २८ अज्ञान पूर्वक २९ जो पाप किया ३० उस ३१ सब ३२ पापके ३३ नाशक ३४ हो।१३

अथाध्यात्मम् – हे हवि रूप देह के अवयवो तुम १ वाणी कृत २ पापके ३ नाशक ४ हो ५ प्राण कृत ६ पाप के ७ नाशक ८ हो ९ मन कृत १० पापका ११ नाशकरने वाले १२ हो १३ आत्मप्रति विंब कृत १४ पापके १५ नाशक १६ हो १७,१८ सब पापों के १९ नाशक २० हो २१ और २२ ज्ञान अवस्था में २३ जो २४ पाप २५ मैंने २६ किया २७ और २८ अज्ञान अवस्था में २९ जो पाप किया ३० उस ३१ सब ३२ पाप का ३३ नाशक करने वाले ३४ हो॥ १३॥

संवर्चसा पयसा सन्तनूभिरगन्महि मनसा सꣳ शिवेन। त्वष्टा सुदत्रो विदधातु रायोनु मार्ष्टु तन्वो यद्विलिष्टम् १४

वर्चसा। समगन्महि। पयसा। सं। तनूभिः। सं। शिवेन। मनसा। सꣳ। सुदत्रः। त्वष्टा। रायः। विदधातु। तन्वः। यत्। विलिष्टम्। अनु मार्ष्टु॥१४॥

अथाधिदैवम् – चात्वाल से अन्य स्थान में निकट ही होता आदि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के क्रम से उदक संस्थ और प्राग्ग्रवभस स्थापन किये जाते हैं उन चमसों को ऋत्विज और यजमान जल पूर्ण करके उनपर हरी कुशा रख कर चमस के मध्य नीचे से स्पर्श करते हैं उसका मंत्र १

ओं संवर्च्चसेत्यस्य (भरद्वाज ऋ० विराडार्षी त्रिष्टुप् छं० त्वष्टा दे०) १

पदार्थः – १ हम ब्रह्म तेज से २ संयुक्त हुए ३ क्षीर आदि रस से ४ संयुक्त हुए ५ अनुष्ठान में समर्थ देह के अंगों से ६ संयुक्त हुए ७ कर्म श्रद्धा युक्त ८ मनसे ९ संयुक्त हुए १० शुभ दान वाला ११ त्वष्टा देवता १२ धनों को १३ हमें दो १४ हमारे शरीर का १५ जो अंग १६ विशेष न्यून है १७ उस न्यूनता के दूर करने से उसको पूर्ण करके शुद्ध करो ॥ १४ ॥

अथाध्यात्मम् – १ हम ब्रह्म तेज से २ संयुक्त हुए ३ प्राण से ४ संयुक्त हुए ५ इन्द्रियों से ६ संयुक्त हुए ७ आनंद स्वरूप ८ मनसे ९ संयुक्त हुए १० ब्रह्मा विष्णु महेश और मानस सूर्य का रक्षक ११ माया रहित करने से सूक्ष्म करने वाला महा विष्णु १२ योग धनों को १३ हम योगियों में धारण करो १४ भूतात्मा का १५ जो अंश १६ समाधि के बीच ब्रह्म में लय हुआ उसे १७ शोधन करो ॥ १४ ॥

समिन्द्रणो मनसा नेषि गोभिः सथ्ं सूरिभिर्मघवन्त्सथ्ं स्वस्त्या। सम्ब्रह्मणा देव कृतं यदस्ति सन्देवानाथ्ं सुमतौ यज्ञियानाथ्ं स्वाहा ॥ १५ ॥

मघवन्[१]। इन्द्र[२]। नः[३]। मनसा[४]। सन्नेषि[५]। गोभिः[६]। सम्[७]। सूरिभिः[८]। सथ्ं[९]। स्वस्त्या[१०]। ब्रह्मणा[११]। सम्[१२]। यज्ञियानाथ्ं[१३]। देवानाथ्ं[१४]। सुमतौ[१५]। देव[१६]। कृतं[१७]। यत्[१८]। अस्ति[१९]। सम्[२०]। स्वाहा ॥ १५ ॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नो समिष्ट यजु को होमता है उनके मंत्र, उनमें पहिले मंत्र को कहते हैं १
ओं समिन्द्र मित्यस्य (अत्रि ऋ० भुरि गार्षी त्रिष्टुप् छं० विश्वे देवा दे०) १

अथ मंत्रार्थः - १ ब्रह्मा विष्णु महेश रूप धारी वा धनवान २ हे महा विष्णु वा महा इन्द्र तुम ३ हम को ४ भक्ति ज्ञान युक्त मनसे ५ संयुक्त करते हो ६ भक्ति ज्ञान सम्पन्न इन्द्रियों वा पशुओं से ७ संयुक्त करते हो ८ पंडित सत्पुरुष महात्माओं से ९ संयुक्त करते हो १० क्षेम ११ और वेद से १२ संयुक्त करते हो १३ यज्ञ सम्बंधी १४ देवताओं के १५ ज्ञान में १६ विद्वानों का कर्म १७ जो १८ हैं उस से १९ संयुक्त करते हो २० वेदवाक् से अथवा उस तुझ के लिये श्रेष्ठ होम हो ॥ १५॥

संवर्चसा पयसा सन्तनूभिरगन्महि मनसा स शिवेन। त्वष्टा सुदत्रो विदधातु रायो नु मार्ष्टु तन्वो यद्विलिष्टम् १६

दूसरा मंत्र,
ओं संवर्चसेत्यस्य (प्रजापति ऋ० विराडार्षी त्रिष्टुप् छं० त्वष्टा दे०) १
इसकी व्याख्या चौदहवें मंत्र में हो चुकी है ॥ १६॥

धाता रातिः सविता दज्जुषन्ताम्प्रजापतिर्निधिपा देवोऽग्निः। त्वष्टा विष्णुः प्रजया स्थं रराणा यजमानाय द्रविणन्दधात स्वाहा ॥ १७॥

१ रातिः। धाता। सविता। निधिपाः। प्रजापतिः। देवः। अग्निः। त्वष्टा। विष्णुः। इदम्। जुषन्ताम्। प्रजया। संरराणाः। यजमानाय। द्रविणम्। दधाते। स्वाहा ॥ १७॥

अथाधिदैवम् - समष्टि यजु के होम का तीसरा मंत्र-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं धाता रातिरित्यस्य (अत्रिर्ऋ० स्वराडार्षी त्रिष्टुप् छं० धातृ, सवितृ, प्रजापत्याग्नि, त्वष्टृ विष्णु देवा देवताः) १

पदार्थः - १ दान शील २ धाता देवता ३ और सविता ४ और महा पद्म, शंख आदि निधियों के रक्षक ५ प्रजा पति ६ और दीप्य मान ७ अग्नि ८ और तुष्टा ९ और विष्णु ये छै देवता १० इस हमारे हवि समष्टि यजु नाम को ११ सेवन करो और १२ भक्तों के साथ १३ भले प्रकार रम माण तुम १४ यजमान के लिये १५ धन १६ दीजिये १७ आप के अर्थ श्रेष्ठ होम हो ॥ १७॥

अथाध्यात्मम् - १ दान शील २ आत्मा ३ और सूर्य ४ और श्रोत्र आदि निधियों का रक्षक ५ मन ६ और दीप्य मान ७ महा वाक् ८ और ईश्वर ९ और ब्रह्म १० इस प्रति विंब को ११ सेवन करो हे देवता ओ १२ प्राणों के साथ १३ भले प्रकार रम माण तुम १४ यजमान के लिये १५ योग सम्पत्ति १६ दीजिये १७ महा वाक् द्वारा ॥ १७॥

सुगावो देवाः सदना अकर्म्म य आजग्मेद ᳪ सवनञ्जुषाणाः। भरमाणा वहमाना हवी ᳪ ष्यस्मे धत्त वसवो वसूनि स्वाहा ॥ १८॥

देवाः। ये। इदम्। सवनम्। जुषाणाः। आजग्म। वः। सदना। सुगा। अकर्म। वसवः। हवींषि। भरमाणाः। वहमानाः। अस्मै। वसूनि। धत्त। स्वाहा ॥ १८॥

अथाधिदैवम् - समष्टि यजु के होम का चौथा मंत्र १

ओं सुगाव इत्यस्य (अत्रिर्ऋ० आर्षी त्रिष्टुप् छं० देवा देवताः) १

पदार्थः - १ हे देवता ओ २ जो तुम ३ इस ४ यज्ञ को ५ सेवन करते हुए ६ आये ७ उन आप के ८ स्थान ९ सुख से प्राप्ति योग्य १० किये ११ हे सब के वास स्थान अग्नि पृथिवी वायु अन्तरिक्ष सूर्य्य चन्द्रमा और नक्षत्र नाम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवताओं १२ हवियों को १३ धारण करते १४ और लेजाते तुम १५ हम यजमानों में १६ धनों को १७ स्थापन कीजिये १८ उनआप के लिये श्रेष्ठ होमहो ॥ १८॥

अथाध्यात्मम् – १ हे इन्द्रिय शक्तिओ २ जो तुम ३ इस ४ योगयज्ञ को ५ सेवन करते ६ प्राप्त हुए ७ उन आप के ८ इन्द्रिय गोलकों को ९ सुख से प्राप्त योग्य १० किया ११ हे इन्द्रिय गोलको १२ इन्द्रिय शक्तिरूपधनों को १३ धारण करते १४ और प्राप्त करते तुम १५ हम योगियों में १६ यम, नियम, आसन, प्राणायाम प्रत्याहार धारण, ध्यान समाधि रूपधनों को १७ स्थापन कीजिये १८ गुरु के उपदेश से॥ १८॥

या थं आवह उशतो देव देवां स्तान्प्रेरयस्वे अग्ने सुधस्थे। जक्षिवा थं सः पपिवा थं स अ विश्वे सुङ्घर्म्मं थं स्वरा तिष्ठतानु स्वाहा १९

देव। अग्ने। यान्। उशतः। देवान्। आवहः। तान्। देवान्। स्वे। सुधस्थे। प्रेरय। विश्वे। जक्षिवांसः। च। पपिवांसः। अ सं। घर्मं थं। स्वः। अन्वतिष्ठत। स्वाहा॥ १९॥

अथाधिदैवम्– समष्टि यजु के होम का पांचवां मंत्र १ ओं यानित्यस्य (अत्रि ऋ० भुरिगार्षी त्रिष्टुप् छं० अग्नि देवता)१

पदार्थः – १ हे दीप्यमान २ अग्नि देवता तुम ने ३ जिन ४ हवि चाहने वाले ५ देवताओं को ६ आव्हान किया है ७ उन ८ देवताओं को ९ उनके १० निज लोकों में ११ भेजो हे देवताओ १२ तुम सबने १३ सवन के पुरोडाश आदि को भक्षण किया १४ और १५ सोम का पान किया अब १६ हिरण्य गर्भ के प्राण रूप वायु मंडल को १७ तथा सूर्य मंडल को १८ वा स्वर्ग

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोक को १९ प्राप्त करो अर्थात् जहां जिसके लोक हैं वहां जाओ २० तुम्हारे लिये श्रेष्ठ होम हो ॥ १९॥

अथाध्यात्मम् – १ हे इन्द्रियों के प्रकाशक २ आत्माग्नि तुमने ४ जिन ४ आपके चाहने वाले ५ इन्द्रियों को ६ आव्हान किया है ७ उन ८ इन्द्रियों को ९ उनके १० निज वास स्थान में ११ भेजो हे वाक् आदि देवताओ १२ तुम सवने १३ भोग किया १४ और १५ भोगों से तृप्त और निवृत्त हुए अब १६ प्राणों को १७ आत्म प्रति विंब को १८ और मन रूप स्वर्ग को १९ जाओ २० गुरु के उपदेश से॥ १९॥

वयꣳ हिल्वा प्रयति यज्ञे अस्मिन्नग्ने होतारम वृणी महीह। ऋधग्गया ऋधगुता शमिष्टः प्रजानन्यज्ञमुप याहि विद्वान्स्वाहा। २०।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
अग्ने। हि। इह। अस्मिन्। यज्ञे। प्रयति। होतारं। त्वा। वयम्
१० ११ १२ १३ १४ १५
अवृणी महि। ऋधक्। अयाः। उत। ऋधक्। अशमिष्टः
१६ १७ १८ १९ २०
विद्वान्। यज्ञं। प्रजानन्। उपयाहि। स्वाहा॥ २०॥

अथाधिदैवम् – समष्टि यजु के होम का छठा मंत्र १ ओंवयमित्यस्य (अत्रि ऋ० स्वरा डाषी त्रिष्टुप् छं० अग्नि दे० १

पदार्थः – अब अग्नि का विसर्जन करते हैं १ हे अग्नि देवता २ जिस कारण ३ इस दिन वा स्थान में ४ इस ५ यज्ञ के ६ वर्त्तमान होने पर देवताओं का आव्हान करने वाले वा होम के निष्पादक ८ तुमको ९ हम ने १० वरण किया तिस कारण ११ समृद्धि पूर्वक अथवा यज्ञ को वृद्धि देते हुए तुमने १२ यज्ञ कराया १३ और १४ यज्ञ को वृद्धि देते हुए

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५ यज्ञ प्रायश्चित्त को शांत किया अथवा विघ्नों की शान्ति की १६ वह ज्ञानी तुम १७ यज्ञ को १८ समाप्त जान्ते १९ अपने लोक को जाओ २० आपके लिये श्रेष्ठ होम हो ॥ २० ॥

अथाध्यात्मम् – १ हे वाक् २ जिस कारण ३ इस आश्रम में ४ इस ५ योग यज्ञ के ६ प्रवृत्त होने पर ७ इन्द्रियों का आह्वान करने वाले वा होम सिद्धि करने वाले ८ तुझ को ९ हमने १० वरण किया ११ यज्ञ को वृद्धि देते तुमने १२ यज्ञ कराया १३ और १४ यज्ञ को वृद्धि देते हुए १५ विघ्नों की शान्ति की १६ वह विद्वान् तुम १७ आत्मा रूप यजमान को १८ अपना आश्रय जान्ते १९ समीप जाओ २० वेद वचन के द्वारा ॥ २० ॥

देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित। मन
सस्पत इमन्देव यज्ञꣳ स्वाहा वाते धाः॥ २१

गातुविदः। देवाः। गातुं। वित्वा। गातुम्। इत। मन सस्पते देव। इमम्। यज्ञꣳ। स्वाहा। वाते। धाः॥ २१॥

अथाधिदैवम् – समष्टि यजु के होम का सातवां मंत्र १ ओं देवा इत्यस्य (अत्रि ऋ० स्वराडार्ष्युष्णिक् छं० वनस्पतिर्दे०) १

पदार्थः – १ नाना प्रकार के वैदिक शब्दों से जो सिद्धि किया जाता है उस यज्ञ के जान्ने वाले हे २ देवता ओ ३ यज्ञ को ४ लब्ध करके ५ मार्ग को ६ प्राप्त करो ७ हे प्रजा पति ८ देवता ९ इस १० यज्ञ को ११ आपके हाथ में धारण करता हूं और तुम १२ वायु रूप देवता में १३ स्थापन करो ॥ २१ ॥

अथाध्यात्मम् – १ हे यज्ञ पुरुष महा विष्णु के ज्ञाता २ वाक् आ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दि देवताओ ३ यज्ञ पुरुष को ४ प्राप्त करके ५ सुषुम्ना मार्ग को ६ जाओ ७ हे प्रजा पति ८ ज्योति स्वरूप तुम ९ इस १० आत्म रूप यजमान को ११ वेद विधि से १२ प्राण में १३ स्थापन करो ॥ २१ ॥

यज्ञं यज्ञङ्गच्छ यज्ञपतिङ्गच्छ स्वां योनिङ्गच्छ स्वाहा। एषते यज्ञो यज्ञपते सह सूक्तवाकस्सर्ववीरस्तञ्जुषस्व स्वाहा ॥ २२ ॥

यज्ञ। यज्ञम्। गच्छ। यज्ञपतिम्। गच्छ। स्वां। योनिम्। गच्छ। स्वाहा। यज्ञपते। एषः। सह सूक्तवाकः। सर्ववीरः यज्ञः। तं। तम्। जुषस्व। स्वाहा ॥ २२ ॥

अथाधिदैवम् – समष्टि यजु के होम का आठवां मंत्र १ ओं यज्ञयज्ञमित्यस्य (अत्रिर्ऋ० भुरिग् साम्युष्णिक् छं० यज्ञो दे०) १

पदार्थः – १ हे यज्ञ तुम २ यज्ञ पुरुष विष्णु को ३ अपनी प्रतिष्ठा के लिये प्राप्त करो ४ यजमान को ५ फल दान से प्राप्त करो ६ अपनी ७ कारण भूत वायु की क्रिया शक्ति को ८ वर्षासिद्धि के लिये प्राप्त करो ९ श्रेष्ठ होम हो, समष्टि यजु के होम का नवां मंत्र, १० हे यजमान ११ यह अनुष्ठीयमान १२ स्तोत्रों से युक्त १३ सोम पशु सवनीय चरु, पुरोडाश नाम वीरों से संयुक्त १४ यज्ञ १५ तेराही है १६ उस यज्ञ को १७ फल भोग से सेवन कर १८ श्रेष्ठ होम हो ॥ २२ ॥

अथाध्यात्मम् – फिर समाधि को कहते हैं, १ हे आत्म प्रतिष्ठ २ आत्मा को ३ प्राप्त कर ४ ईश्वर को ५ प्राप्त कर ६ अपने ७ उत्पत्ति कारण ब्रह्म को ८ प्राप्त कर ९ महा वाक द्वारा १० हे आत्म रूप यजमान ११ यह १२ महा वाक्यों से युक्त १३ प्राणों से संयुक्त १४ योग यज्ञ १५

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेराही है १६ उस योग यज्ञ को १७ सेवन कर १८ गुरु के उपदेश से॥ २२॥

माहि भूमि ष्टदाकुः। उरु थं हि राजा वरुणा
श्च कार सूर्याय पन्था मन्वेत वाउ। अपदेपा
दा प्रति धातवे करुता पवक्ता हृदया विध
श्चित्। नमो वरुणाया भिष्टितो वरुणा स्य
पाशः २३

अहिः। मा। भूः। ष्टदाकुः। मा। हि। हृदया विधः। अपवक्ता
चित्। उत। कैः। राजा। वरुणः। अपदे। पादा। प्रतिधात
वे। सूर्याय। अन्वेत वाउ। उरु थं। पन्थाम्। चकार। वरु
णाय। नमः। वरुणस्य। पाशः। अभिष्टितः। २३॥

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में तीन मंत्र हैं उनको कहते हैं अध्वर्यु यजमान सम्बंधी मृग अङ्ग और मध्य में बंधी हुई मेखला को चात्वाल में डालता है उसका मंत्र १ मेखला डालने के पीछे चात्वाल के समीप वेदी के मध्य पूर्व मुख बैठे हुए यजमान को अध्वर्यु कहलाता है उसका मंत्र २ जल के समीप जाकर साम गान करने पर भुजा से पकड़े हुए यजमान को जल के मध्य प्रवेश करता हुआ कहलाता है उसका मंत्र ३

ओं माहि भूरित्यस्य (अत्रि ऋ० देवी जगती छं० रज्जुर्दे०) १
ओं उरु मित्यस्य (सुनःशेप ऋ० निचृदार्षी त्रिष्टुप् छं० वरुणो दे) २
ओं नम इत्यस्य (तथा आसुरी गायत्री छं० तथा) ३

पदार्थः – हे रज्जु तुम १ सर्पाकार २, ३ मत हो ४ अजगर कार ५ मत हो ६ जिस कारण ७ हृदय के पीड़ा देने वाले को ८ तिरस्कार करने वाले ९ चैतन्य १० और ११ प्रजाओं के स्वामी १२ अचिंत्य ऐश्वर्य मान

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३ ईश्वर ने १४ अन्तरिक्ष के मध्य १५, १६ पांव रखने १७ और सूर्य की १८ प्राप्ति के लिये १९ विस्तीर्ण २० मार्ग २१ रचा २२ वरुण के अर्थ २३ नमस्कार २४ वरुण का २५ पाश २६ वशीभूत हुआ उस कारण वंधन करने में समर्थ नहीं ॥ २३ ॥

अथाध्यात्मम्- हे सुषुम्ना तुम १ सर्प की समान कुटिल २, ३ मत हो ४ विच्छू की सामान काटने वाली ५ मत हो ६ जिस कारण ७ हृदय पीड़क काम के ८ तिरस्कार करने वाले ९ देहाभिमान से रहित १० और ११ ईश भाव को प्राप्त १२ योगैश्वर्य से सम्पन्न १३ आत्मा रूप यजमान ने १४ अन्तरिक्ष में १५, १६ गमन करने और १७ महा विष्णु की १८ प्राप्ति के लिये १९ विस्तीर्ण २० योग मार्ग को २१ शोधन किया २२ योगी के लिये २३ विराट् रूप अन्न हो २४ योगी का २५ पाश अर्थात् वंधन हेतु संसार २६ तिरस्कृत हुआ उस कारण वंधन करने में समर्थ नहीं ॥ २३ ॥

अग्ने रनीकमप आविवेशा पान्न पात्प्रति रक्षन्न सूर्य्यम्। दमे दमे समिधं यक्ष्यग्नेप्रति ते जिह्वा घृतमुच्चरण्यत्स्वाहा ॥ २४ ॥

अग्ने। अग्नेः। अपान्न पात्। अनीकं। अपः। आविवेश। दमे। दमे। असूर्यम्। प्रति रक्षन्। समिधं। यक्षि। ते। जिह्वा। घृतम्। प्रति उच्चरण्यत्। स्वाहा ॥ २४ ॥

अथाधिदैवम्- जल में प्रवेश के पीछे हाथ में ली हुई स्थाली से चार वार लिये हुए घृत को जुहू में लेकर जल में समिध को डाल कर उस पर होम करता है उसका मंत्र १

ओं अग्न इत्यस्य (अत्रि ऋ० आर्षी त्रिष्टुप् छं० अग्नि देवता) १

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदार्थः-१ हे अग्नि २ तुझ अङ्गन शील का ३ अपान्न पान नाम ४ मुख ५ जलों में ६ प्रवेश हुआ वह तुम ७,८ प्रत्येक यज्ञ गृह में ९ असुरों के किये हुए यज्ञ विघ्न को १० शांत करते हुए ११ घृत को १२ अपने आत्मा में संयुक्त करो १३ तेरी १४ ज्वाला १५ घृत में १६ उद्युक्त हो १७ उस तुझ के लिये श्रेष्ठ होम हो॥ २४॥

अथाध्यात्मम्-१ हे आत्माग्नि २ तुझ अपने प्रति विंव से गमन शील का ३ इन्द्रिय नाम ४ समूह ५ मानस आदि कमलों के अंत रिक्ष में ६ प्रवेश हुआ वह तुम ७,८ मानस कमल आदि प्रत्येक यज्ञ गृह में ९ किया मरचित यज्ञ विघ्न को १० शांत करते ११ प्राण को १२ अपने आत्मा में युक्त करो १३ तेरा १४ आत्म प्रति विंव १५ इन्द्रिय शक्ति समूह को १६ भक्षण करो १७ यह सब आत्मा है इस श्रुति के प्रभाव से॥ २४॥

समुद्रेते हृदय मप्स्वन्तः सन्त्वा विशन्त्वो
षधीरुतापः। यज्ञस्यत्वा यज्ञ पते सूक्तो
क्तौ नमो वाके विधेम यत स्वाहा॥ २५॥

यत्। ते। हृदयम्। समुद्रे। अप्सु। अन्तः। ओषधीः। उत। आपः। त्वा। संविशन्तु। यज्ञपते। यज्ञस्य। सूक्तोक्तौ। नमोवाके। त्वा। विधेम। स्वाहा॥ २५॥

अथाधिदैवम्-अध्वर्यु सार रहित सोम के कुंभ को जल में डालता है उसका मंत्र १

ओं समुद्र इत्यस्य (अत्रि ऋ० भुरिगार्षी पंक्ति छं० सोमो दे०) १

पदार्थः-हे सोम १ जो २ तेरा ३ हृदय है वह ४ समुद्र में ५ जलों के ६ मध्य वर्त्तमान है वहां तुझे पहुंचाता हूं वहां पर ७ ओषधियां ८ और ९ जल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१० तुझ में ११ प्रवेश करो १२ हे यज्ञ रक्षक सोम १३,१४ यज्ञ सम्बंधी शेष वचनों के उच्चारण १५ और नमस्कार वचन में १६ तुझे १७ हम स्थापन करते हैं १८ श्रेष्ठ होम हो॥२५॥

अथाध्यात्मम् – हे आत्म प्रति बिंब १ जो २ तेरा ३ हृदय है वह ४ हार्दान्तरिक्ष में ५ ब्रह्मांभु रूप ज्योती रस अमृत के ६ मध्य वर्त्तमान है ७ इन्द्रियों की शक्तियां ८ और ९ प्राण का शरीर रूप जल १० तुझ में ११ प्रवेश करो १२ हे आत्म प्रति बिंब १३ यज्ञ पुरुष विष्णु के १४ पुरुष सूक्त आदि के उच्चारण १५ और नमस्कार पूर्वक मंत्र के जप में १६ तुझे १७ स्थापन करते हैं १८ गुरु के उपदेशानुसार ॥२५॥

देवीराप एषवो गर्भस्त थ्ं सुप्रीत थ्ं सुभृत म्बिभृत । देव सोमेषते लोकस्तास्मिञ्छ न्वक्ष्व परिच्वक्ष्व २६

देवीः। आपः। वः। एषः। गर्भः। तं। सुप्रीतम्। सुभृतम्। बिभृत। देव। सोम। ते। एषः। लोकः। च। तस्मिन्। शं। वक्ष्व। च। परिवक्ष्व॥ २६॥

अथाधिदैवम् – उस सार रहित सोम घट को छोड़ कर उपस्थान करता है उसके मंत्र १,२

ओं देवीराप इत्यस्य (अत्रिऋ० भुरिग् साम्नी बृहती छं० आपो दे०)१
ओं देव इत्यस्य (तथा ० निचृद् साम्नी पंक्ति श्छं० सोमो दे०)२

पदार्थः – १ हे दीप्यमान २ जलो ३ तुम्हारा ४ यह ५ शिशु है ६ उस ७ श्रेष्ठ प्रीति से युक्त ८ और अच्छे पुष्ट सोम को ९ धारण करो १० हे प्रकाशमान ११ सोम १२ तेरा १३ यह जल रूप १४ स्थान है १५ हे चेत

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्य१६ उसमें स्थित तुम १७ सुख को १८ प्राप्त कराओ १९ और २० हमारी स-
व पीड़ाओं को दूर करो॥२६॥

अथाध्यात्मम्– १ हे ब्रह्म ज्योति रस रूप २ जलो ३ यह प्रति विंब ४
तुम्हारा ५ बालक है ६ उस ७ भक्ति मान ८ अच्छे पुष्ट को ९ धारण करो
१० हे दीप्य मान ११ आत्म प्रति विंब १२ तेरा १३ यह ब्रह्मज्योति रूप-
जल १४ स्थान है १५ हे चैतन्य १६ उसमें स्थित तुम १७ मोक्ष को १८
प्राप्त कराओ १९ और २० हमसे संसार को पृथक् करो॥२६॥

अव भृथ निचुम्पुण निचेरु रसि निचुम्पुणः।
अव देवैर्देव कृतमेनो यासिषमव मर्त्यैर्मर्त्य
कृतम्पुरुराव्णो देव रिषस्पाहि देवानाँ ँ
समिदसि॥२७॥

अव भृथ। निचुम्पुण। निचेरुः। असि। निचुम्पुनः। देवैः।
देव कृतम्। एनः। अवयासिषम्। मर्त्यैः। मर्त्य कृतम्। अव
देवैः। पुरुराव्णः। रिषः। पाहि। देवानाम्। समित्। असि॥२७

अथाधिदैवम्– उसी सार हीन सोम के कुंभ को जल में डुबाता-
है तथा स्नान के पीछे आहवनीय को प्राप्त कर उसमें समिध रखता है
उसके मंत्र १,२

ओं अव भृथेत्यस्य (अत्रिर्ऋ० ब्राह्म्यनुष्टुप् छं० यज्ञो देवता) १
ओं अव देवैरित्यस्य (तथा ० याजुष्युष्णिक् छं० अग्निर्दे०) २

पदार्थः– १ हे अव भृथ नाम यज्ञ विशेष तुम २ मंद गति होय यद्यपि-
तुम ३ निरंतर गति शील ४ हो तौ भी यहां ५ मंद गति वाला हो जिस-
कारण ६ हमारी प्रकाश मान इन्द्रियों से ७ हवि के स्वामी देवताओं के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ किया हुआ ८ अपराध ९ जल में डाला है तथा १० हमारे सहायक ऋत्विजों से ११ यज्ञ दर्शना कांक्षी पुरुषों का किया हुआ अवज्ञा रूप पाप १२ जल में डाला है हमसे त्याग किया हुआ यह पाप जिस प्रकार तुम को प्राप्त न हो उसी प्रकार हे यज्ञ मंद गति हो यह भाव है १३ हे अवभृथ नाम यज्ञ १४ वज्र विरुद्ध फल दाता १५ वध से १६ रक्षा करो हे अग्नि तुम १७ देवताओं के १८ भले प्रकार दीपन कर्ता १९ हो ॥ २७ ॥

अथाध्यात्मम् - १ हे ब्रह्मांशुरूप अमृत जल के धारण करने वाले २ आत्म समुद्र तुम अचल भी ३ पिंड ब्रह्मांड में जीव रूप किरणों से निरंतर गमन शील ४ समुद्र ५ हो ६ ज्ञानेन्द्रियों के साथ ७ जीवात्मा का किया हुआ ८ पाप ९ मैंने दूर त्याग किया तथा १० कर्मेन्द्रियों के साथ ११ भूतात्मा का किया हुआ पाप १२ दूर त्याग किया १३ हे ज्योति स्वरूप आत्म समुद्र १४ वज्र विरुद्ध फल दाता १५ हिंसा से १६ रक्षा करो अर्थात् हिंसा शून्य ब्रह्म यज्ञ में निष्ठा दो हे आत्माग्नि तुम १७ इन्द्रियों के १८ भले प्रकार दीपन कर्ता १९ हो प्रारब्ध समाप्ति तक ॥ २७ इससे पीछे अनु वंध्या गर्भिणी में प्रायश्चित्त को कहते हैं, तथा संस्कार हीन गर्भ अधिकारी और समर्थ नहीं है उस कारण गर्भ संस्कार को कहते हैं ॥ २७ ॥

एजतु दश मास्यो गर्भो जरायुणा सह। यथायं वायुरेजति यथा समुद्र एजति। एवा यन्दश मास्यो अस्त्वज्जरायुणा सह २८

दश मास्यः। गर्भः। जरायुणा। सह। एजतु। यथो। अयं। वायुः। एजति। यथा। समुद्रः। एजति। एव। अयम्।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दश मास्यः। जरायुणा। सह। अस्रत्॥२८॥

अथाधिदैवम् – गर्भ को अभिमंत्रन करता है उसका मंत्र १ ओं एजत्वित्यस्य (अत्रिर्ऋ० त्र्यवसाना महा पंक्तिश्छं० गर्भो दे०) १

पदार्थः – १ पूरे दश मास का २ गर्भ ३ जरायु ४ सहित ५ गति मान हो ६ जिस प्रकार ७ यह ८ वायु ९ चलता है १० और ११ समुद्र १२ कंपित होता है १३ इसही प्रकार १४ यह १५ दश महीने का अर्थात् पूर्ण अंग वाला गर्भ १६ जरायु के १७ साथ १८ उदर से बाहर निकालो।२८

यस्यै ते यज्ञियो गर्भो यस्यै योनिर्हिरण्ययी।
अङ्गान्यहृता यस्य तम्मात्रा समजीगमꣳ
स्वाहा॥२९॥

ए। यस्याः। ते। गर्भः। यज्ञियः। ए। यस्याः। योनिः। हिरण्ययी। मात्रा। तम्। यस्यै। अङ्गानि। अहृता। समजीगमꣳ। स्वाहा॥२९॥

अथाधिदैवम् – गर्भ संस्कार सम्बंधी मंत्र १ ओं यस्या इत्यस्य (अत्रिर्ऋ० भुरिगार्ष्यनुष्टुप् छं० वशा देवता) १

पदार्थः – १ हे स्त्री रूप शक्ति २ जिस ३ तुझ का ४ गर्भ ५ द्रव्य यज्ञ वा स्नान यज्ञ के करने को योग्य है ६ हे शक्ति ७ जिस तुझ का ८ कारण ९ ज्योति रूप परा शक्ति है उस १० जीव रूप शक्ति से ११ उस गर्भ को १२ जिसके १३ अंग १४ कुटिलता रहित हैं १५ संयुक्त करता हूं १६ वेद मंत्र द्वारा॥२९॥

पुरुदस्मो विषुरूप इन्दुरन्तर्म्महिमानञ्जधीरः। एकपदीन्द्विपदीन्त्रिपदीञ्च

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुष्पदी मष्टा पदी म्भुवनानु प्रथन्ता थ्ं स्वाहा ३०
जे। पुरुदस्मः। अन्तेः। विषु रूपः। धीरः। इन्दुः। भुवना।
एक पदीम्। द्वि पदीम्। त्रि पदीम्। चतुष्पदीम्। अष्टा प
दीम्। महि मानम्। अनु प्रथन्ता थ्ं। स्वाहा॥ ३०॥

अथाधिदैवम् – स्विष्ट कृत को होमता है उसका मंत्र १
ओं पुरुदस्म इत्यस्य (अत्रि ऋषिः आर्षी जगती छं० गर्भो दे०) १

पदार्थः – १ हे जय शील गर्भ तुम २ बहु दान से युक्त ३ शरीर के मध्य ४
इन्द्रियों की शक्ति दान से बहु रूप ५ मेधावी तुम ६ देवता ओं का सोम रू
प हो ७ चौदह भुवन ८ एक ज्ञान से प्राप्त होने वाली ९ कर्म उपासना से
प्राप्त होने वाली १० तीनों वेद से प्राप्त होने वाली ११ चारों आश्रम से प्रा
प्त होने वाली १२ अष्टाङ्ग योग से प्राप्त होने वाली १३ महिमा को १४ व्या
ख्यात करो १५ उसके लाभार्थ श्रेष्ठ होम हो॥ ३०॥

मरुतो यस्य हि क्षयै पाथा दिवो विम हसः।
स सुगो पातमो जनः ३१

दिवः। विम हे सः। मरुतः। यस्य। क्षयै। पाथो। स। हि। जनः
सुगो पातमः॥ ३१॥

अथाधि दैवम् – समिष्ट यजु के अन्त में शामित्र अग्नि के मध्य
होम करता है उसका मंत्र १
ओं मरुत इत्यस्य (गोतम ऋ० आर्षी गायत्री छं० मरुतो देवता) १

पदार्थः – १ हे स्वर्ग २ विशिष्ट तेज से युक्त ३ मरुत् गण अथवा ब्रह्मा
विष्णु महेश परा ब्रह्माग्नि नाम देवता ४ जिस यजमान के ५ यज्ञ गृह
में ६ रक्षक हैं ७, ८ वही ९ यजमान १० श्रेष्ठ रक्षक वाला है॥ ३१॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाध्यात्मम् - १ मन हृदय भृकुटि रूप स्वर्ग के २ विशिष्ट तेज से युक्त ३ प्राण ४ जिस योगी के ५ देह रूप गृह में ६ रक्षक हैं ७,८ वही ९ योगी १० श्रेष्ठ रक्षक वाला है ॥ ३१॥

महीद्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षतां। पिपृतां नो भरीमभिः ॥३२॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११
मही। द्यौः। च। पृथिवी। नः। इमम्। यज्ञम्। मिमिक्षतम्। भरीमभिः। नः। पिपृतम् ॥ ३१॥

अथाधिदैवम्- अंगारों से ढकने का मंत्र १

ओंमही द्यौरित्यस्य (मेधातिथिर्ऋ० आर्षी गायत्री छं० द्यावापृथिवी देवते) १

पदार्थः - १ बड़ा २ स्वर्ग लोक ३ और ४ पृथिवी ५ हमारे ६ इस ७ यज्ञ को ८ अपने २ भागों से पूर्ण करो ९ आभूषण सुवर्ण पशु धान्य आदि अपने २ भागों से १० हमारे गृह को ११ पूर्ण करो ॥ ३२॥

अथाध्यात्मम् - १,२ बड़ा स्वर्ग अर्थात् गगन मंडल ३ और ४ भृकुटि ५ हम चक्षु आदि ऋत्विजों के ६ इस ७ आत्मा रूप यजमान को ८ अमृत से सींचना चाहो ९ धर्म अर्थ काम मोक्ष साधन रूप पदार्थों से अथवा ब्रह्मा विष्णु महेश परा ब्रह्माग्नि से १० हम आत्मांशु रूप चक्षु आदि ऋत्विजों को ११ निकटस्थ करो। ३२

अग्निष्टोम यज्ञ के मंत्र समाप्त हुए॥ - अथ षोडशी

आतिष्ठ वृत्रहन्रथं युक्ता ते ब्रह्मणा हरी। अर्वाचीनं सुते मनो ग्रावा कृणोतु वग्नुना। उपयाम गृहीतोसीन्द्राय त्वा षोडशिने एष ते योनिरिन्द्राय त्वा षोडशिने ३३

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
वृत्रहन्। ते। हरी। ब्रह्मणा। युक्ता। रथम्। आतिष्ठ। ग्रावा। ते। मनः।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

११ १२ १३ १४ १५ १६
वग्नुना। अर्वाचीनं थं। सुकृणोतु। उपयाम गृहीतः। असि। षोडशि
१७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४
ने॥ इन्द्राय। त्वा। एष। ते। योनिः। षोडशिने। इन्द्राय। त्वा। ३३

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में तीन मंत्र हैं उन को कहते हैं प्रातः सवन में आग्रयण ग्रह के ग्रहण पीछे आग्नेय अतिग्राह्य को लेकर षोडशि ग्रह को ग्रहण करता है उसके मंत्र १,२,३

ओं अतिष्ठेत्यस्य (गोतमऋ० आर्ष्यनुष्टुप छं० इन्द्रो देवता) १

ओं उपयामेत्यस्य (तथा ० आसुरीगायत्रीछं० सोमो दे०) २

ओं एषत इत्यस्य (तथा ० आसुर्यनुष्टुप छं० ग्रहो दे०) ३

पदार्थः-१ हे इन्द्र वा हे पापनाशक विष्णो २ आपके ३ हरित वर्ण घोड़े ४ मंत्र द्वारा ५ रथ में संयुक्त हुए इस कारण तुम ६ रथ पर ७ चढ़ो ८ सोमाभिषव का पाषाण ९ रथारूढ़ आपके १० मन को ११ सोमाभिषव के शब्द से १२ हमारे यज्ञ के सन्मुख १३ करो हे सोम तुम १४ उपयाम पात्र से गृहीत १५ हो १६ षोडश स्तोत्र वाले अथवा षोडश कला से संयुक्त १७ इन्द्र वा विष्णु के लिये १८ तुझे ग्रहण करता हूं हे ग्रह १९ यह २० तेरा २१ स्थान है २२ षोडश स्तोत्र वाले अथवा १६ कला से संयुक्त २३ इन्द्र वा विष्णु के लिये २४ तुझे सादन करता हूं॥ ३३॥

अथाध्यात्मम्- १ हे पापनाशक योगिन् २ तेरी ३ जीव ईश्वर नाम दोनों ज्योति ४ अहं ब्रह्मास्मि इस मंत्र द्वारा ५ युक्त हुई इस कारण तुम ६ योग रथ पर ७ चढ़ो ८ प्राण ९ तेरे १० मन को ११ महा वाक द्वारा १२ ब्रह्म के सन्मुख १३ करो हे प्रति बिंब तुम १४ परा शक्ति से गृहीत १५ हो १६ षोडश कलावतार १७ विष्णु के लिये १८ तुझे ग्रहण करता हूं हे ग्रह १९ यह परा शक्ति २० तेरा २१ स्थान है २२ षोडश कलावतार २२ विष्णु के लिये २३,२४ तु

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सादन करता हूं॥ ३३॥

युक्ष्वाहि केशिना हरी वृषणा कक्ष्यप्रा। अथा न इन्द्र सोमपा गिरा मुपश्रुति ञ्चर। उपयाम गृहीतोसीन्द्रा यत्वा षोडशिन एषते योनि रिन्द्रा यत्वा षोडशिने ३४

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
इन्द्र। केशिना। वृषणा। कक्ष्यप्रा। हरी। हि। आयुक्ष्व। अथ। सोमपाः। नः। १० गिरम्। ११ उपश्रुतिम्। १२ आचर। १३॥ ३४॥

अथाधिदैवम्- दूसरे षोडशि ग्रह को ग्रहण करता है उसके मंत्र १२३

ओंउक्ष्वाहीत्यस्य (मधुच्छंदा ऋ० विराडार्ष्यनुष्टुप् छं० इन्द्रो दे०) १
ओंउपयामेत्यस्य (तथा ० आसुरी गायत्री छं० सोमो दे०) २
ओंएषत इत्यस्य (तथा ० आसुर्य्यनुष्टुप् छं० ग्रहो दे०) ३

पदार्थः- १ हे इन्द्र वा हे विष्णो २ बहुत लंबी केशर वाले ३ तरुण ४ स्थूल अवयव वाले ५ हरित वर्ण घोड़ों को ६ निश्चय ७ रथ में युक्त करो ८ तिसके पीछे ९ सोम का पान करते हुए तुम १० हमारी ११ ऋग् यजु साम लक्षण वाणी को १२ श्रवण १३ करो शेष पूर्व मंत्र की समान है॥ ३४॥

अथाध्यात्मम्- १ हे योगिन् २ गृह पति के स्वामी ३ अपनी किरणों से खींचने वाले ४ पाप जनित देह को व्याप्त करने वाले ५ जीव ईश्वर को ६ निश्चय पूर्वक ७ युक्त करो ८ इसके पीछे ९ प्रति बिंब को पान करते तुम १० हम वाक् आदि ऋत्विजों की ११ वाणी को १२ श्रवण १३ करो शेष पूर्व मंत्र की समान है॥ ३४॥

इन्द्र मिद्धरी वहतो प्रति धृष्ट शव सम। ऋषीणाञ्च स्तुती रुप यज्ञञ्च मानुषाणाम्। उप

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याम गृहीतो सीन्द्रो यत्वा षोडशिन एषते योनि
रिन्द्रो यत्वा षोडशिने ३५

१ २ ३ ४ ५ ६
हरी। अप्रति धृष्ट शव सम। इन्द्रम्। इत। ऋषीणां। स्तुतीः।
७ ८ ९ १० ११ १२ १३
उप। वहतः। च। मानुषाणाम्। यज्ञम्। उप। च। शेषं पूर्ववत्।३५

अथाधिदैवम् - तीसरे षोडशि ग्रह को ग्रहण करता है उसके मंत्र १,२,३

ओं इन्द्र मित्यस्य (गोतम ऋ० विराडाष्यनुष्टुप् छं० इन्द्रो दे०) १
ओं उपयामेत्यस्य (तथा ० आसुरी गायत्री छं० सोमो दे०) २
ओं एषत इत्यस्य (तथा ० आसुर्यनुष्टुप् छं० ग्रहो दे०) ३

पदार्थः - १ हरित वर्ण घोड़े २ उस पराभव रहित बल वाले ३ इन्द्र वा विष्णु को ४ ही ५ ऋषियों की ६ स्तुतियों के ७ समीप ८ प्राप्त करते हैं ९ और १० मनुष्यों के ११ यज्ञ के १२ समीप १३ प्राप्त करते हैं शेष पूर्व की समान है॥३५॥

अथाध्यात्मम् - १ भक्तज्ञान रूप बल २ उस पराभव रहित बल वाले ३ योग यज्ञ के यजमान को ४ ही ५ वैदिक मंत्रों की ६ स्तुतियों के ७ समीप ८ प्राप्त करते हैं ९ और १० मनुष्यों के ११,१२ यज्ञ के समीप १३ प्राप्त करते हैं शेष पूर्व की समान॥३५॥

यस्मान्न जातः परो अन्यो अस्ति य आवि
वेश भुवनानि विश्वा। प्रजा पतिः प्रजया
सꣳ रराणस्त्रीणि ज्योतीꣳषि सचते
स षोडशी।३६॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
यस्मात्। अन्यः। परः। जातः। न। अस्ति। यः। विश्वा। भुवना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नि। आविवेश। सः। षोडशी। प्रजापतिः। प्रजया। संरराणः। त्रीणि। ज्योतींषि। सचते॥३६॥

षोडशि ग्रह के उपस्थान का मंत्र १

ओं यस्मान्नित्यस्य (विवस्वान् ऋ० भुरिगार्षी त्रिष्टुप् छं० इन्द्रो देवता)१

पदार्थः – १ जिस महा पुरुष से २ दूसरा ३ श्रेष्ठ ४ प्रगट हुआ ५ नहीं ६ है ७ जो ८ सब ९ चतुर्दश भुवन और प्राणियों में १० अंतर्यामी रूप से प्रवेश हुआ ११ वह १२ षोडश कलावतार १३ महा पुरुष १४ पिंड ब्रह्मांडरूप प्रजा के साथ १५ भले प्रकार रमण करता १६ तीन १७ ज्योति पर जीव ईशरूपों को १८ सेवन करता है॥३६॥

इन्द्रश्च सम्राड्वरुणश्च राजा तौ ते भक्षञ्चक्रतुरग्र एतम्। तयोरहं मनु भक्षं भक्षयामि वागदेवी जुषाणा सोमस्य तृप्यतु सह प्राणेन स्वाहा ३७

सम्राट्। इन्द्रः। च। राजा। वरुणः। तौ। च। ते। एतम्। अग्रे। भक्षम्। चक्रतुः। तयोः। भक्षम्। अनु। अहम्। भक्षयामि। जुषाणा। वाक्। देवीः। प्राणेन। सह। सोमस्य। तृप्यतु॥३७॥

अथाधिदैवम् – इन्द्र के लिये गृहीत ग्रह को भक्षण करता है उसके मंत्र १,२

ओं इन्द्रश्चेत्यस्य (विवस्वानृषिः० साम्नी त्रिष्टुप् छं० इन्द्रवरुणौ देवते)१

ओं तयोरित्यस्य (तथा ० विराडार्ची त्रिष्टुप् छं० यजमानो दे०)२

पदार्थः – हे षोडश ग्रह १ अचिंत्य ऐश्वर्य से युक्त २ महा विष्णु ३ और ४ ऐश्वर्यमान ५ ईश जो हैं ६ उन दोनों ने ७ भी ८ तेरे ९ इस

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोम को १० प्रथम ११ भक्षण १२ किया १३ उन दोनों से सम्बंध रखने-वाले १४ सोम भक्ष को १५ पीछे १६ में १७ पान करता हूं १८ मेरे भक्ष से प्रीति मान १९, २० सरस्वती देवी २१, २२ प्राण सहित २३ सोम से २४ तृप्त हों ॥ ३७ ॥

अथाध्यात्मम् – हे प्रति विंव १ अचिंत्य ऐश्वर्य से युक्त २ महा विष्णु ३ और ४ ऐश्वर्य मान ५ ईश जो हैं ६ उन दोनों ने ७ भी ८ तेरे ९ इस स्वरूप को १० प्रथम ११ भक्षण १२ किया १३ उन दोनों के १४ भक्ष्य को १५ पीछे १६ मैं आत्मा १७ भक्षण करता हूं १८ तुझ से सेवित १९, २० महा वाक् २१, २२ प्राण सहित २३ तुझ प्रति विंव से २४ तृप्त हो ॥ ३७ ॥ षोडशि याग समाप्त हुआ ॥ द्वादशाह यज्ञ के मंत्रों को कहते हैं

अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम् ।
दधद्रयिम्मयि पोषम् । उपयाम गृहीतो
स्यग्नये त्वा वर्चसएषते योनिरग्नये त्वा
वर्चसे । अग्ने वर्चस्विन्वर्चस्वांस्त्वन्देवेष्व
सि वर्चस्वानहम्मनुष्येषु भूयासम् ॥ ३८ ॥

१ अग्ने । २ स्वपाः । ३ मयि । ४ रयिम् । ५ पोषम् । ६ दधत् । ७ अस्मे । ८ सुवीर्यम् । ९ वर्चः । १० पवस्व । ११ उपयाम गृहीतः । १२ असि । १३ वर्चसे । १४ अग्नये । १५ त्वा । १६ एष । १७ ते । १८ योनिः । १९ वर्चस्विने । २० अग्नये । २१ त्वा । २२ वर्चस्विन् । २३ अग्ने । २४ त्वम् । २५ देवेषु । २६ वर्चस्वान् । २७ असि । २८ अहम् । २९ मनुष्येषु । ३० वर्चस्वान् । ३१ भूयासम् ॥ ३८ ॥

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में ४ मंत्र हैं उनको कहते हैं, कोई एक्ष्य षडह नाम यज्ञ है वह ६ दिन में सिद्ध होता है पहले ३ दिन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समें क्रम पूर्वक (अग्ने पवस्व) इत्यादि मंत्रों से अति ग्राह्य ग्रहोंको ग्रहण करता है उसी प्रकार (अग्ने वर्चस्विन्) इत्यादि मंत्रों से उस २ ग्रहशेष को भक्षण करता है तहां प्रथम अति ग्राह्य ग्रहण के मंत्र कहे जाते हैं १,२,३,४

ओं अग्न इत्यस्य (वैरवानस ऋ० विराट त्रिपाद गायत्री छं० अग्निर्दे)१
ओं उपया मेत्यस्य (तथा ० आसुर्युष्णिक् छं० सोमोदे)२
ओं एषत इत्यस्य (तथा ० याजुषी जगती छं० तथा)३
ओं अग्न इत्यस्य (तथा ० भुरिगार्षी गायत्री छं० अग्निर्दे)४

पदार्थः – १ हे अग्नि २ श्रेष्ठ कर्म वाले तुम ३ मुझ यजमान में ४ धन ५ और पुत्र पशू आदि की पुष्टि वा वृद्धि को ६ स्थापन करते ७ हमारे लिये ८ श्रेष्ठ सामर्थ्य से युक्त ९ ब्रह्म तेज को १० प्राप्त कराइये हे सोम तुम ११ उपयाम पात्र से गृहीत १२ हो १३ तेजोमय १४ अग्नि के लिये १५ तुझे ग्रहण करता हूं हे सोम १६ यह खर प्रदेश १७ तेरा १८ स्थान है १९ तेजस्वी २० अग्नि के लिये २१ तुझे सादन करता हूं २२ हे विशिष्ट तेज से युक्त २३ अग्नि देवता २४ तुम २५ देवताओं में २६ अति दीप्तिमान २७ हो इस कारण आपकी कृपा से २८ मैं २९ मनुष्यों के मध्य ३० ब्रह्म तेज से सम्पन्न ३१ होऊं ॥ ३८ ॥

अथाध्यात्मम् – १ हे ब्रह्माग्नि २ आत्मा के रक्षक तुम ३ मुझ आत्मा में ४ योग लक्ष्मी को ५ तथा शम दम आदि की पुष्टि को ६ स्थापन करते ७ हमारे लिये ८ योग सामर्थ्य से युक्त ९ ब्रह्म तेज को १० प्राप्त कराओ हे आत्म प्रतिबिंब तुम ११ परा शक्ति से गृहीत १२ हो १३ तेजस्वी १४ ब्रह्माग्नि के लिये १५ तुझे ग्रहण करता हूं हे आत्म प्रतिबिंब १६

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह परा शक्ति १७ तेरा १८ स्थान है १९ तेजस्वी २० ब्रह्माग्नि के लिये २१ तुझे सादन करता हूं २२ हे महा तेजस्वी २३ ब्रह्माग्नि २४ तुम २५ ब्रह्मा विष्णु महेश नाम देवताओं में २६ अति दीप्ति मान २७ हो इस कारण आपकी कृपा से २८ मैं २९ प्राणों में वर्त्त मान होता ३० ब्रह्म तेज से सम्पन्न ३१ होजाऊं॥३८॥

उत्तिष्ठन्नोजसा सह पीत्वी शिप्रे अवेपयः।
सोममिन्द्रचमू सुतम्। उपयाम गृहीतोसी
न्द्रायत्त्वौजस एषते योनि रिन्द्रायत्त्वौजसे।
इन्द्रौजिष्ठौ जिष्ठस्त्वन्देवेष्वस्यो जिष्ठोहम्म
नुष्येषु भूयासम् ३९

इन्द्र। ओजसा। सह। उत्तिष्ठन्। चमूसुतं। सोमम्। पीत्वी। शिप्रे। अवेपयः। उपयाम गृहीतः। असि। ओजसे। इन्द्राय त्वा। एषः। ते। योनिः। ओजसे। इन्द्राय। त्वा। ओजिष्ठ। इन्द्र त्वा। देवेषु। ओजिष्ठः। असि। मनुष्येषु। अहम्। ओजिष्ठः। भूयासम्॥३९॥

इस कंडिका में अति ग्राह्य ग्रहण के ४ मंत्र हैं॥

ओं उत्तिष्ठन्नित्यस्य (कुरुस्तुति ऋ० आर्षी गायत्री छं० इन्द्रो दे०)१
ओं उपयामेत्यस्य (तथा ० आसुरी अनुष्टुप् छं० सोमो दे०)२
ओं एषत इत्यस्य (तथा ० याजुषी त्रिष्टुप् छं० तथा)३
ओं इन्द्रेत्येस्य (तथा ० आर्च्युष्णिक् छं० इन्द्रो दे०)४

पदार्थः—१ हे विष्णो २,३ प्रादुर्भाव सामर्थ्य से युक्त ४ योग शय्या से उठते हुए तुमने ५ पृथिवी स्वर्ग अथवा मन हृदय के मध्य अभिषुत

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६ सोम वा आत्म प्रति विंव को ७ पान कर के ८ शयन काम पान के दाता स्थूल सूक्ष्म शरीरों को ९ कंपित किया हे सोम वा हे आत्म प्रति विंव तुम १० उपयाम पात्र वा परा शक्ति से गृहीत ११ हो १२ वल वान १३ विष्णु के लिये १४ तुझे ग्रहण करता हूं १५ यह १६ तेरा १७ स्थान है १८ वल वान १९ विष्णु के लिये २० तुझे सादन करता हूं भक्षण का मंत्र २१ हे अति वली २२ विष्णो २३ तुम २४ देवता ओं में २५ अचिंत्य वल से युक्त २६ हो २७ मनुष्यों अथवा प्राणों के मध्य वर्तमान २८ मैं २९ अति वली वा योग वल से युक्त ३० होऊं ॥ ३९ ॥

अदृश्रमस्य केतवो विरश्मयो जनाँ अनु भ्राजन्तो अग्नयो यथा। उपयाम गृहीतो सि सूर्य्याय त्वा भ्राजायैष ते योनिः सूर्य्याय त्वा भ्राजाय। सूर्य्य भ्राजिष्ठ भ्राजिष्ठस्त्वन्देवेष्वसि भ्राजिष्ठोहम्मनुष्येषु भूयासम् ४०

अस्य। केतवः। रश्मयः। जनान। अनु। वि। अदृश्रम्। यथा। भ्राजन्तः। अग्नयः। उपयाम गृहीतः। असि। भ्राजाय। सूर्याय। त्वा। एषः। ते। योनिः। भ्राजाय। सूर्याय। त्वा। भ्राजिष्ठ। सूर्य्य। त्वम्। देवेषु। भ्राजिष्ठः। असि। मनुष्येषु। अहम्। भ्राजिष्ठः। भूयासम् ॥ ४० ॥

इस कंडिका में अति ग्राह्य ग्रहण के ४ मंत्र हैं॥

ओं अदृश्रमित्यस्य (प्रस्करावऋ० आर्षी गायत्री छं० सूर्यो दे०) १

ओं उपयामेत्यस्य (तथा ० आसुरी गायत्री छं० सोमो दे०) २

ओं एषत इत्यस्य (तथा ० साम्नी गायत्री छं० तथा) ३

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओंसूर्येत्यस्य (प्रस्कण्व ऋ० आर्षी गायत्री छं० ग्रहो देवता) ४

पदार्थः १ मैंने इस विराट् के आत्मा सूर्य की २ ज्ञान स्वरूप ३ जीवात्मा रूप किरणों को ४,५ सब देहों में विद्यमान ६,७ विशेष कर देखा ८ जैसे ९ प्रज्वलित १० अग्नि हों हे ग्रह वा हे आत्म प्रति बिंब तुम ११ उपयाम पात्र वा पराशक्ति से गृहीत १२ हो १३ तेजस्वी १४ सूर्य के लिये १५ तुझे ग्रहण करता हूं १६ यह खर प्रदेश वा पराशक्ति १७ तेरा १८ स्थान है १९ प्रकाशमान २० सूर्य के अर्थ २१ तुझे सादन करता हूं तीसरे अति ग्राह्य के भक्षण का मंत्र २२ हे अति दीप्त २३ सूर्य २४ तुम २५ इन्द्रादि देवताओं में २६ अत्यंत दीप्त २७ हो २८ मनुष्यों के मध्य अथवा प्राणों में वर्त्तमान २९ मैं ३० अति दीप्तिमान ३१ होऊं

इति द्वादशाहः

उदुत्यञ्जातवेदसन्देवंवहन्तिकेतवः। दृशेविश्वाय सूर्यम्। उपयाम गृहीतोसि सूर्य्यायत्वा भ्राजायैषतेयोनिः सूर्य्यायत्वा भ्राजाय ॥४१॥

केतवः। तं। जातवेदसम्। यं। देवम्। सूर्यम्। विश्वाय। दृशे। उदु। वहन्ति॥ ४१॥

इस कंडिका में ३ मंत्र हैं उनको कहते हैं, गवामयन नाम सम्वत्सर सत्र के विषुवत् नाम मध्यम दिन में सौर्य पशु के उपालंभ से पीछे अति ग्राह्य का ग्रहण करता है उसके मंत्र १,२,३

ओंउदुत्यमित्यस्य (प्रस्कण्व ऋ० निचृदार्षी गायत्री छं० सूर्यो दे०) १

ओंउपयामेत्यस्य (तथा ० आसुरी गायत्री छं० सोमो दे०) २

ओंएषतइत्यस्य (तथा ० साम्नी गायत्री छं० तथा) ३

पदार्थः—१ ब्रह्म की किरणों २ उस ३ प्रजाओं के ज्ञाता ४ ब्रह्मा विष्णु म-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हेशरूप५ ज्योतिस्वरूप६ विराट्के आत्मा सूर्यको७ विश्वरूप भावप्राप्तिके लिये८ और विश्वरूपकी विचित्रता देखनेके अर्थ९ समष्टिप्राणमेंही१० प्राप्तकरतीहै ॥४१॥

आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः पुनः
ऊर्जा निवर्त्तस्व मानः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशतादयिः ॥४२॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
महि। कलशम्। आजिघ्र। इन्दवः। त्वा। आविशन्तु। सा। ऊर्जा।
१० ११ १२ १३ १४ १५
पुनः। निवर्त्तस्व। नः। सहस्रं। धुक्ष्व। पुरुधारा पयस्वती। रयिः।
१६ १७ १८ १९
तां। पुनः। मा। आविश ॥ ४२ ॥

अथाधिदैवम्- हविर्धान और आग्नीध्र के मध्य द्रोणकलशइस गौको सुंघाता है उसका मंत्र १

ओं आजिघ्रेत्यस्य (कुसरुविन्दुऋ० स्वराड्ब्राह्म्युष्णिक्छं० गौर्देवता) १

पदार्थः- १ हे गौ तुम २ द्रोणकलशनाम पात्रको ३ सन्मुख होकर सूंघो ४ द्रोणकलश में स्थित सोम ५ तुझमें ६ प्रवेश करो ७ वह तुम ८ श्रेष्ठ रस दुग्ध के साथ ९ हमारे पास फिर १० लौटो ११ हम को १२ सहस्र संख्या वाला धन अथवा गौओं का एक सहस्र जो कि हमने दान किया उसको १३ दीजिये १४ बहुत धारवाले दुग्ध से युक्त १५ गोधन रूप तुम १६ यज्ञस्थान से १७ फिर १८ माया विकाररूप मेरे गृह में १९ प्रवेश करो ॥ ४२ ॥

अथाध्यात्मम्- १ हे बुद्धि तुम २ मानस कमल को ३ सूंघो ४ इन्द्रियों की शक्तियां ५ तुझमें ६ प्रवेश करो ७ वह तुम ८ ज्ञानरस सहित ९ फिर १० लौटो ११ हम वाक् आदि ऋत्विजों को १२ ज्योतिदाता आत्मा १३ दीजिये १४ इन्द्रियों की शक्ति से युक्त १५ योगधन रूप तुम १६ मानस सूर्य के स्थान से १७ फिर १८ माया विकाररूप देह में १९ प्रवेश कीजिये प्रारब्ध समाप्तिपर्यन्त ॥ ४२ ॥

इडे रन्ते हव्ये काम्ये चन्द्रे ज्योते दिते सरस्वति महि विश्रुति । एतानि ते अघ्न्ये नामानि देवेभ्यो मा सुकृतं ब्रूतात् ४३

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
इडे। रन्ते। हव्ये। काम्ये। चन्द्रे। ज्योते। अदिते। सरस्वति। महि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८
विश्रुति। अघ्न्ये। ते। एता। नामानि। देवेभ्यः। सुकृतं। मा। ब्रूतात् ४३

अथाधिदैवम् - यजमान पूर्वोक्त गौ के दाहिने कान में जपता है उस का मंत्र १

ओंइडेरन्त इत्यस्य (कुसुरुबिंदुऋ० आर्षी पंक्तिश्छं० गौर्देवता) १

पदार्थः - १ हे स्तुति योग्य २ रमण कारण ३ यज्ञ के अर्थ हवि रूप दुग्ध की देने वाली अथवा सब से आह्वान योग्य ४ मनुष्यों की कामना धारण करने वाली ५ आल्हाद कारक ६ तेज की दाता ७ अदीना ८ दुग्ध दाता ९ महान् १० नाना प्रकार की स्तुति के योग्य ११ अवध्य हे गौ १२ तेरे १३ इतने विशेषण कथित १४ नाम हैं तुम १५ देवताओं से १६ संस्कार किये हुए १७ मुझ को १८ कहो ॥ ४३ ॥

अथाध्यात्मम् - हे स्तुति योग्य २ ब्रह्म में रमने वाली ३ योग यज्ञों में इन्द्रिय शक्ति रूप हवि की दाता ४ कर्म उपासना और योग में चाहने योग्य ५ ब्रह्मानंद की दाता ६ ज्ञानों की प्रकाशक ७ निश्चयात्मक स्वरूप होने से अखंडित ८ अमृत की वर्षा करने वाली ९ महत्व से युक्त १० योग शास्त्रों में विख्यात ११ विषय सेवन सेवधके अयोग्य हे बुद्धि १२ तेरे १३ इतने विशेषण रूप १४ नाम हैं तुम १५ इन्द्रियों से १६ संस्कार किये हुए १७ मुझ को १८ कहो ॥ ४३ ॥

विन इन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः।
यो अस्माँ अभिदासत्यधरङ्गमया तमः।
उपयाम गृहीतो सीन्द्राय त्वा वि मृध एष
ते योनिरिन्द्राय त्वा वि मृधे ॥ ४४ ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
इन्द्र। नः। मृधः। विजहि। पृतन्यतः। नीचो। यच्छ। यः। अस्माँ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभि दासति। अधरम्। तमः। आगमया। उपयाम गृहीतः। असि विमृधे। इन्द्राय। त्वा। एषः। ते। योनिः। विमृधे। इन्द्राय। त्वा॥४४

गवान यन के उपान्त्य महा व्रत के दिन आजा पत्य पशु के उपालम्भ के पीछे ऐन्द्र ग्रहण के ३ मंत्र हैं उनमें पहिला मंत्र १ उसके गर्भित २ मंत्र

ओं विन इत्यस्य (भरद्वाज शास ऋ० भुरिगनुष्टुप् छं० इन्द्रो दे० १

ओं उपयामेत्यस्य (तथा ० आसुर्य्युष्णिक् छं० ग्रहो दे० २

ओं एषत इत्यस्य (तथा ० याजुषी जगती छं० तथा) ३

पदार्थः - १ हे परमेश्वर २ हमारे ३ काम आदि शत्रु अथवा उनके संग्रामों को ४ विवेश कर नाश करो ५ संग्राम चाहने वाले और सेना इकट्ठी करने वाले शत्रुओं को ६ नीचों की समान ७ निग्रह करो अथवा संग्राम से निवृत्त करो ८ जो शत्रु वा काम ९ हम को १० पीड़ा देता है उसको ११ निकृष्ट १२ अज्ञान में १३ प्राप्त करो हे ग्रह तुम १४ उपयाम पात्र से गृहीत १५ हो १६ विशिष्ट संग्राम वाले १७ परमेश्वर के लिये १८ तुझे ग्रहण करता हूं १९ यह २० तेरा २१ स्थान है २२ विशिष्ट संग्राम वाले २३ परमेश्वर के लिये २४ तुझे ग्रहण करता हूं॥ ४४॥

वाचस्पतिं विश्वकर्माणमूतये मनोजुवं वाजे अद्याहुवेम। सनो विश्वानि हवनानि जोषद्विश्वशम्भूरवसे साधुकर्मा। उपयाम गृहीतोसीन्द्रायत्वा विश्वकर्माण एषते योनिरिन्द्रायत्वा विश्वकर्म्मणे ४५

अद्य। वाजे। वाचस्पतिं। मनोजुवं। विश्वकर्माणं। ऊतये। आहुवेम। सः। विश्वशम्भूः। साधुकर्मा। नः। विश्वानि। हवनानि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवसे। जोषत। उपयाम गृहीतः। असि। विश्व कर्मणे। इन्द्राय। त्वा। एषः। ते। योनिः। विश्व कर्मणे। इन्द्राय। त्वा॥ ४५॥

दूसरा ग्रह ग्रहण का मंत्र जिसके गर्भित ३ मंत्र हैं

ओं वाचस्पतिमित्यस्य (शास ऋ० भुरिगार्षी त्रिष्टुप छं० इन्द्रो दे०)१

ओं उपयामेत्यस्य (तथा ० साम्न्युष्णिक छं० ग्रहो दे०)२

ओं एषत इत्यस्य (तथा ० साम्नी गायत्री छं० तथा)३

पदार्थः-१ आज के दिन २ महाव्रतीय लक्षण वाले अन्न के विषय ३ वेदों के रक्षक ४ मन की समान गति वाले ५ जगत् स्रष्टा परमेश्वर को ६ अपनी रक्षा के अर्थ ७ हम आह्वान करते हैं ८ वह ९ सब का सुख दाता १० और शुभ कर्म का कर्त्ता परमेश्वर ११ हमारे १२ सब १३ आह्वानों को १४ अन्न और अन्न की वृद्धि अथवा रक्षा करने के लिये १५ अंगीकार करो हे ग्रहतुम १६ उपयाम पात्र से गृहीत १७ हो १८ जगत स्रष्टा १९ परमेश्वर के लिये २० तुझे ग्रहण करता हूं २१ यह २२ तेरा २३ स्थान है २४ जगत् स्रष्टा २५ परमेश्वर के लिये २६ तुझे सादन करता हूं॥ ४५॥

अधाध्यात्मम्-१ समाधि अवस्था में २ योग यज्ञ के बीच ३ महा वाक के स्वामी ४ मनन शक्ति में ब्रह्मा विष्णु महेश रूप ५ अपनी ज्योति के मध्य ब्रह्मांड के स्रष्टा महा विष्णु को ६ संसार से रक्षा होने के लिये ७ हम आह्वान करते हैं ८ वह ९ सब भक्तों का सुख दाता १० मोक्ष दान आदि शुभ कर्म का कर्त्ता महा विष्णु ११ हम वाक आदि ऋत्विजो के १२ सब १३ योग यज्ञों को १४ संसार से रक्षा करने के लिये १५ सेवन करो हे आत्म प्रति बिंब १६ परा शक्ति से गृहीत १७ हो १८ विश्व स्रष्टा १९ महा विष्णु के लिये २० तुझे ग्रहण करता हूं २१ यह परा शक्ति २२ तेरा २३ स्थान है २४ विश्व

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठा २५ महा विष्णु के लिये २६ तुझे सादन करता हूं ॥ ४५॥

विश्वकर्म्मन्हविषा वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम्। तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत। उपयाम गृहीतोसीन्द्रायत्वा विश्वकर्मणे एषते योनिरिन्द्रायत्वा विश्वकर्म्मणे ४६

विश्वकर्मन्। वर्धनेन। हविषा। इन्द्रम्। त्रातारं। अवध्यम्। अकृणोः। तस्मै। पूर्वीः। विशः। समनमन्त। यथा। अयम्। उग्रः। विहव्यः। असत्। शेषं पूर्ववत् ॥ ४६॥

अथाधिदैवम् - तीसरे मंत्र के तीन गर्भित मंत्र

ओं विश्वकर्मन्नित्यस्य (शास ऋ० भुरिगार्षी त्रिष्टुप् छं० विश्वकर्मेन्द्रो दे०)१

ओं उपयामेत्यस्य (तथा ० साम्न्युष्णिक छं० ग्रहो देवता)२

ओं एषत इत्यस्य (तथा ० साम्नी गायत्री छं० तथा)३

पदार्थः - १ हे महा विष्णो २ वृद्धि युक्त वा वृद्धि देने वाले ३ हवि के द्वारा तुमने ४ ईश्वर को ५ जगत का रक्षक ६ और अवध्य ७ किया ८ उस ईश्वर के अर्थ ९, १० वशिष्ठ आदि ऋषियों ने ११ भले प्रकार नमस्कार की १२ जिस प्रकार १३ यह ईश्वर १४ शत्रुओं का भय दाता १५ नाना प्रकार के यज्ञों में आह्वान योग्य १६ हुआ शेष पूर्व की समान हैं ॥ ४६॥

अथाध्यात्मम् - १ हे महा विष्णो तुमने २ समष्टि भाव को प्राप्त ३ आत्म प्रति बिंब के द्वारा ४ आत्मा रूप यज मान को ५ योग धर्म का रक्षक ६ कामादि से अवध्य ७ किया ८ उस यज मान के अर्थ ९, १० प्राणों ने ११ भले प्रकार नमस्कार की १२ जिस प्रकार १३ यह आत्मा १४ काम आदि को

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भय देने वाला १५ और योग यज्ञों में वाक् आदि ऋत्विजों से आव्हान्यो ग्य १६ हुआ शेष पूर्व की समान है ॥ ४६ ॥

उपयाम गृहीतोस्यग्न येत्वा गायत्रच्छन्द स ङ्गृह्णा मीन्द्रा यत्वा त्रिष्टुप छन्द सङ्गृह्णामि वि श्वेभ्य स्त्वा देवेभ्योजगच्छन्द सङ्गृह्णाम्यनु ष्टुप्तेभिगरः ४७

उपयाम गृहीतः । असि । गायत्रीच्छन्दसं । त्वा । अग्नये । गृह्णामि । त्रिष्टुप्छन्दसं । त्वा । इन्द्राय । गृह्णामि । जगच्छन्दसं । त्वा । विश्वेभ्यः । देवेभ्यः । गृह्णामि । ते । अनुष्टुप् । अभिगरः । ४७

अथाधिदेवम्- इस कंडिका में ४ मंत्र हैं उनको कहते हैं, जिस औदुम्बर पात्र में अंशग्रहण किया उस पात्र में होत्रचमस स्थ निग्राभ्य नाम जल को लेकर उसमें ३ सोमलता डाल कर ३ मंत्रों से क्रम पूर्वक अ दाभ्य ग्रह को ग्रहण करता है उसके मंत्र १,२,३ सोम से कहता है उ सका मंत्र ४

ओं उपयामेत्यस्य (देवा ऋषयः स्वराडार्ची गायत्री छं० अदाभ्यो दे०) १
ओं इन्द्रायेत्यस्य (तथा ० साम्नी गायत्री छं० तथा) २
ओं विश्वेभ्य इत्यस्य (तथा ० आसुरी गायत्री छं० तथा) ३
ओं अनुष्टुपित्यस्य (तथा ० दैवी जगती छं० तथा) ४

पदार्थः - हे अदाभ्य तुम १ उपयाम पात्र से गृहीत २ हो ३ गायत्री है छंद जिस का ऐसे प्रातः सवन सम्बंधी ४ तुझ को ५ अग्न की प्रसन्नता के अर्थ ६ ग्रहण करता हूं तुम उपयाम पात्र से गृहीत हो ७ त्रिष्टुप है छंद जिस का ऐसे माध्यन्दिन सवन सम्बंधी ८ तुझ को ९ इंद्र

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अर्थ १० ग्रहण करता हूं तुम उपयाम पात्र से गृहीत हो ११ जगती है छन्द जिसका ऐसे सायं सवन सम्बन्धी १२ तुझ को १३, १४ विश्वे देवाओं के लिये १५ ग्रहण करता हूं १६ तेरा अंश १७ भक्ति ज्ञान लक्षिणा वाक् १८ सवनों से उत्कृष्ट है ॥ ४७॥

अथाध्यात्मम्- तीनों सवन के कर्म को ब्रह्मार्पण करता है, हे प्रातः सवन सम्बंधी ब्रह्म यज्ञ तुम १ वाणी से गृहीत २ हो ३ योगियों की प्रातः संध्या सम्बन्धी ४ तुझ को ५ ब्रह्माग्नि की प्रीति के अर्थ ६ ग्रहण करता हूं हे मध्यान्ह सवन सम्बंधी ब्रह्म यज्ञ ७ योगियों के मध्यान्ह संध्या संबन्धी ८ तुझ को ९ महा विष्णु के लिये १० ग्रहण करता हूं हे सायं सवन सम्बंधी ब्रह्म यज्ञ ११ योगियों के सायं संध्या सम्बंधी १२ तुझ को १३, १४ ब्रह्मा विष्णु महेश नाम साकार देवताओं के लिये १५ ग्रहण करता हूं १६ तेरा आत्मा १७ महा वाक् १८ सवनों से उत्कृष्ट है ॥ ४७॥

वेशीनान्त्वा पत्मन्नाधूनोमि कुकूननानान्त्वा पत्मन्नाधूनोमि भन्दनानान्त्वा पत्मन्नाधूनोमि मदिन्तमानान्त्वा पत्मन्नाधूनोमि मधुन्तमानान्त्वा पत्मन्नाधूनोमि शुक्रन्त्वा शुक्रश्चाधूनोम्यहोरूपे सूर्य्यस्य रश्मिषु ॥ ४८॥

वेशीनाम्। पत्मन्। त्वा। आधूनोमि। कुकूननानाम्। पत्मन्। त्वा। आधूनोमि। भन्दमानानाम्। पत्मन्। त्वा। आधूनोमि। मदिन्तमानाम्। पत्मन्। त्वा। आधूनोमि। मधुन्तमानाम्। पत्मन्। त्वा। आधूनोमि। शुक्रं। त्वा। शुक्रं। आधूनोमि। अहोः। रूपे। सूर्यस्य। रश्मिषु ॥ ४८॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाधिदैवम्- आहवनीय के समीप जाता अदाभ्य ग्रह में स्थित जलों को अंशुओं से चलित करता है उसके मंत्र १ से ६ तक ॥

ओं त्रेशीनामित्यस्य (देवा ऋषयः याजुषी पंक्तिश्छं० सोमो दे०) १
ओं कुकूननानामित्यस्य (तथा ० याजुषी जगती छं० तथा) २
ओं भन्दनानामित्यस्य (तथा ० याजुषी त्रिष्टुप् छं० तथा) ३
ओं मदिं० मधुन्तमानामित्यस्य (तथा ० याजुषी जगती छं० तथा) ४,५
ओं शुक्रन्त्वेत्यस्य (तथा ० भुरिग्साम्नी बृहती छं० तथा) ६

पदार्थः- हे सोम १ मेघ के उदर में स्थित जो जल हैं उनकी २ वर्षा के लिये ३ तुझे ४ कंपित करता हूं ५ जो मेघ शब्द करते हुए झुकते हैं उनमें स्थित जो जल हैं उनकी ६ वर्षा के लिये ७ तुझे ८ कंपित करता हूं ९ जो सुख के दाता मेघस्थ जल हैं उनकी १० वर्षा के लिये ११ तुझे १२ कंपित करता हूं १३ अत्यन्त तृप्त करने वाले जो मेघस्थ जल हैं उनकी १४ वर्षा के लिये १५ तुझे १६ कंपित करता हूं १७ मधुर स्वाद से युक्त जो जल हैं उनकी १८ वर्षा के लिये १९ तुझे २० कंपित करता हूं २१ शुद्ध २२ तुझ को २३ निग्राभ्य नाम शुद्ध जल में २४ कंपित करता हूं २५ दिन के २६ रूप में २७ सूर्य की २८ किरणों के मध्य कंपित करता हूं ॥ ४८ ॥

अथाध्यात्मम्- हे आत्म प्रतिबिंब १ गगन मेघस्थ अमृत रूप जलों की २ वर्षा के लिये ३ तुझे ४ कंपित करता हूं हे मन ५ अनाहत शब्द से युक्त जो अमृत जल हैं उनकी ६ वर्षा के लिये ७ तुझे ८ कंपित करता हूं ९ ब्रह्मानंद दाता अमृत रसों की १० वृष्टि के लिये ११ तुझे १२ कंपित करता हूं हे ज्ञान चक्षु १३ जीवन मुक्ति सुख के दाता अमृत रसों की १४ वर्षा के लिये १५ तुझे १६ कंपित करता हूं हे आत्म प्रतिबिंब १७ विज्ञान दाता अमृत रसों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की १८ वर्षों के लिये १९ तुझे २० कंपित करता हूं २१ हे मानस सूर्य २२ तुझ को २३ समष्टि सूर्य में २४ कंपित करता हूं २५ अर्चिरादि मार्ग के २६ रूप देवयान में २७ समष्टि सूर्य की २८ किरणों में तुझे कंपित करता हूं॥ ४८॥

ककुभ थ्ं रूपं वृषभस्य रोचते बृहच्छुक्रः शुक्रस्य पुरोगाः सोमः सोमस्य पुरोगाः। यत्ते सोमादाभ्यन्नाम जागृवि तस्मै त्वा गृह्णामि तस्मै ते सोमसोमाय स्वाहा॥ ४९॥

१ वृषभस्य। २ ककुभ थ्ं। ३ रूपं। ४ रोचते। ५ बृहत्। ६ शुक्रः। ७ शुक्रस्य। ८ पुरोगाः। ९ सोमः। १० सोमस्य। ११ पुरोगाः। १२ ते। १३ अदाभ्यम्। १४ जागृविः। १५ यत्। १६ नाम। १७ तस्मै। १८ त्वा। १९ गृह्णामि। २० सोम। २१ तस्मै। २२ ते। २३ सोमाय। २४ स्वाहा॥ ४९॥

अथाधिदैवम् - इस कंडिका में दो मंत्र हैं उनको कहते हैं; सोमग्रहण का मंत्र १ अदाभ्य को होमता है उसका मंत्र २

ओं ककुभमित्यस्य (देवा ऋषयः ० निचृदार्षीजगती छं० सोमो दे०) १

ओं यस्मैत इत्यस्य (तथा ० याजुषी पंक्तिश्छंदः तथा ०) २

पदार्थः - हे सोम १ तुझ श्रेष्ठ का २ सूर्य रूप बड़ा ३ रूप ४ प्रकाश करता है ५ वह महान् ६ सूर्य ७ तुझ शुद्ध सोम का ८ पुरोगामी है जिस कारण ९ सोम ही १० सोम का ११ पुरोगामी होना योग्य है हे सोम १२ तेरा १३ अनुपहिंसित १४ जागरणशील १५ जो १६ ब्रह्मा विष्णु महेश रूप सूर्य है १७ उस सूर्य के अर्थ १८ तुझे १९ ग्रहण करता हूं २० हे सूर्य २१ उस २२ तुझ २३ सूर्य के अर्थ २४ श्रेष्ठ होम हो॥ ४९॥

अथाध्यात्मम् - हे आत्म प्रतिबिंब १ तुझ श्रेष्ठ का २ मानस कमल प्रकाशक जो आत्मामय ३ रूप ४ प्रकाश करता है ५ वह महान ६ सूर्य रूप ईश

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७ तुझ शुद्ध का ८ पुरोगामी है जिस कारण ९ शक्ति सहित ईश्वर १० आत्म प्रति विंव का ११ अग्र गामी होना योग्य है क्योंकि केवल भक्ति ही से मोक्ष मार्ग की सिद्धि है हे आत्म प्रति विंव १२ तेरा १३ अनुप हिंसित १४ जागरण शील १५ जो १६ त्रिदेव रूप धारी महानारायण है १७ उस महानारायण के अर्थ १८ तुझे १९ ग्रहण करता हूं २० हे ब्रह्मा विष्णु महेश रूप धारी महानारायण २१ उस २२ तुझ २३ महानारायण के अर्थ २४ श्रेष्ठ होम हो।४९।९

९ प्रश्न, महानारायण कौन हैं और कहां उनका दर्शन होता है (उत्तर) खिल हरिवंश में-अर्जुन युधिष्ठिर से कहते हैं, सम्बन्धियों के दर्शन का इच्छा मान मैं द्वारिका को गया था वहां भोज वृष्णि और अंधक नाम यादवों से पूजित मैंने वास किया १ फिर कभी धर्मात्मा महा बाहु मधु सूदन श्री कृष्ण जी शास्त्र विधि पूर्वक एकाह नाम यज्ञ में दीक्षित हुए २ किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण ने उन दीक्षित बैठे हुए श्री कृष्ण के सन्मुख होकर कहा कि रक्षा करो २ और यह जतलाया ३ हे महा बाहु श्री कृष्ण जी जन्म लेते ही मेरा पुत्र हरण होता है तीन पुत्र हरण हुए हे निष्पाप अब तुम चौथे पुत्र की रक्षा करने को योग्य हो ४ अब ब्राह्मणी का सूति काल है वहां रक्षा कीजिये हे दुष्टों को पीड़ा देने वाले जिस प्रकार मेरा पुत्र रक्षित हो वैसा कीजिये ५ ऐसे प्रार्थित श्री कृष्ण जी ने मंद मुस्कान करके मुझ से कहा कि तुम रक्षा कर सक्ते हो इस प्रकार कहा हुआ मैं लज्जित हुआ ६ फिर श्री कृष्ण जी ने मुझ को लज्जित जान कर कहा, हे कौरव श्रेष्ठ जो रक्षा करने को समर्थ हो तो जाइये ७ सिवाय महा बाहु बलदेव जी और महा बली प्रद्युम्न के महा रथी वृष्णि और अंधक आप के साथी होकर रक्षा करो ८ फिर वृष्णियों की बड़ी सेना से परिवारित मैं सेना सहित उस ब्राह्मण को आगे करके चला ९ हम सबने एक मुहूर्त में ही उस ग्राम को पाकर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवास किया १० फिर चारों ओर वृष्णियों की बड़ी सेना से परिवारित मैं ग्राम के मध्य प्रवेश हुआ ११ वृष्णि अन्धकों के सब महारथी युयुधान आदि रथारूढ़ और कवच शस्त्र धारी हुए और मैं भी हुआ १२ भय से विह्वल ब्राह्मण ने अर्द्ध रात्रि के समय समीप आकर यह वचन कहा १३ कि मेरी ब्राह्मणी के प्रसव का यह समय समीप प्राप्त हुआ आप उस प्रकार स्थित हों जिस प्रकार वंचन न हो १४ एक मुहूर्त्त में ही उस ब्राह्मण के भुवन में रुदन पूर्वक दीन वचन सुना कि बालक हरण होता है १५ इसके पीछे ह्रियमान बालक का उंह शब्द आकाश में सुना परंतु हन्ता राक्षस को नहीं देखा १६ फिर हमने चारों ओर बाण वर्षाओं से सब दिशा रोक दी वह बालक तो हरण हुआ १७ ब्राह्मण ने कहा वृथा शब्द करने वाले अर्जुन को धिक्कार अपने धनुष की श्लाघा करने वाले को धिक्कार जो दैव से अपस्वष्ट दुर्मति मूर्खता से आया है १८ ब्राह्मण से ऐसी निंदा करने पर मैं वैषावी विद्या में स्थित होकर यम लोक को गया जहां पर वीर षट् ऐश्वर्य से सम्पन्न यम राज हैं १९ वहां ब्राह्मण के बालक को न देखना इन्द्र पुरी में गया तथा आग्नेय, नैऋत, सौम्य, उत्तर, और पश्चिम दिशा में भी गया २० तथा शस्त्र धारी मैं रसातल ब्रह्म लोक और दूसरे लोकों में गया वहां ब्राह्मण के बालक को न पाकर प्रतिज्ञा भंग मैं २१ अग्नि प्रवेश का इच्छा मान हुआ तब श्री कृष्ण जी और प्रद्युम्न ने मुझे रोका श्री कृष्ण जी ने उस ब्राह्मण को आश्वासन करके मुझ से यह कहा तुझ को ब्राह्मण का पुत्र दिखाऊंगा अपने आत्मा की अवज्ञा मत कर और दारुक से कहा रथ में घोड़े जोड़ो २३ श्री कृष्ण जी ने ब्राह्मण को और दारुक को रथ में बिठला कर मुझ से कहा कि रथ के सारथी हूजिये २४ हे युधिष्ठिर फिर श्री कृष्ण मैं और वह ब्राह्मण रथ में सवार होकर उत्तर दिशा को चले २५

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर मैंने पहाडों के जालों नदियों और वनों को उलंघन कर समुद्र को देखा २६ तदनंतर साक्षात समुद्र ने अर्घ को श्री कृष्ण के समीप ला कर और खड़ा हो हाथ जोड़ कर कहा कि कौन आज्ञा करूं २७ श्री कृष्ण जी ने उस पूजा को ले कर समुद्र से कहा हे साधु जल को स्तंभन करो फिर रथी मैं जाऊंगा २८ समुद्र से तथास्तु कहने पर मणि वर्ण प्रकाश मान स्तंभित जल मार्ग से हम चल दिये जैसे पृथिवी पर २९ तदनंतर समुद्र से पार हो कर हम ने क्षण में ही गंधमादन और उत्तर कुरुओं को भी उलंघन किया ३० तब नाना प्रकार के अद्भुत वर्ण रूप धारी सात पर्वत (रूप वान) केशव जी के समीप स्थित हुए जयंत, जयंत, रजत मय नील पर्वत महा मेरु कैलाश इन्द्र कूट, ३१, ३२ तब वे पर्वत समीप स्थित हो कर गोविंद जी से बोले हम कौन आज्ञा करें श्री कृष्ण जी ने भी उन का विधि पूर्वक सत्कार किया ३३ प्रणाम करने में झुके हुए और स्थित उन से बोले अब मुझ जाते हुए के छिद्र रथ मार्ग को दीजिये ३४ हे युधिष्ठिर उन पर्वतों ने श्री कृष्ण के वचन को सुन और अंगीकार कर के इच्छानुसार मार्ग दिया ३५ और सब उसी जगह अंतर्धान हो गये तब मुझ को बड़ा आश्चर्य हुआ और रथ अरोक जाता था जैसे मेघ जाल में सूर्य ३६ समुद्र सहित सातों द्वीप और द्वीपों के सप्त २ पर्वत तथा लोकालोक पर्वत को उलंघ कर वह तब बड़े अन्धकार में प्रवेश हुए ३७ तब घोड़ों ने दुःख से रथ को धारण किया और स्पर्श से वह अन्धकार पङ्क रूप दीखता था ३८ फिर पर्वत रूप अंधकार को पाया है महा राज तब घोड़े उस को पा कर प्रयत्न हीन खड़े हुए ३९ फिर गोविंद जी ने सुदर्शन चक्र से उस अन्धकार को दूर कर के आकाश दिखाया जो कि रथ का उत्तम मार्ग था ४० तब आकाश दीखने पर उस अन्धकार से पार हो कर मुझ को चेत हुआ जीवन की आशा हुई और मेरा भय दूर हुआ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रा४१ फिर मैंने आकाश में पुरुष रूप प्रज्वलित तेज को देखा जो कि सब लोक में प्रवेश होकर स्थित है ४२ तब श्री कृष्ण जी उस तेजो निधि ज्योति स्वरूप में प्रवेश हुए मैं और वह उत्तम ब्राह्मण रथ में ही बैठे रहे ४३ तब प्रभु श्री कृष्ण जी ब्राह्मण के चारों बालकों को लेकर एक मुहूर्त्त में ही उस ज्योति से बाहर निकले ४४ श्री कृष्ण जी ने सब पुत्र ब्राह्मण को देदिये जो तीन पहिले हरण हुए थे और चौथा जन्म लेते ही हरण होने वाला बालक ४५ हे प्रभु युधिष्ठिर फिर वह ब्राह्मण वहां पुत्रों को देख कर अत्यन्त हृष्ट हुआ और मैं भी अति प्रसन्न और आश्चर्य युक्त हुआ ४६ फिर हम सब और वे ब्राह्मण के पुत्र जैसे गये थे वैसे ही लौट आये ४७ हे नृप श्रेष्ठ फिर हम दुपहर से पहले ही द्वारिका में पहुंचे मैं बार बार आश्चर्य करता था ४८ तब बड़े यशस्वी श्री कृष्ण जी ने पुत्र सहित ब्राह्मण को भोजन करा के और बहुत धन देकर उसके घर को भेज दिया ४९ फिर मैंने श्री कृष्ण जी के सन्मुख जाकर कथा के अंत में वह वृत्तान्त जो मैंने देखा था श्री कृष्ण जी से पूछा ५० श्री कृष्ण जी ने उत्तर दिया उस महात्मा महा पुरुष ने मेरे दर्शन के अर्थ वे बालक हरण किये थे यह समझ कर कि कृष्ण ब्राह्मण की अर्थ सिद्धि के लिये आवेगा दूसरे प्रकार नहीं आवे ५१ हे भरत श्रेष्ठ तुमने जो दिव्य जैसा मय महा पुरुष रूप ब्रह्म देखा है वह मैं ही हूं वह सनातन तेज मेरा है ५२ वह मेरी परा प्रकृति है जो कि व्यक्त अव्यक्त और सनातन है उत्तम योगी उस में प्रवेश होकर मुक्त होते हैं ५३ हे अर्जुन वह परा शक्ति ज्ञानी योगी और तपस्वियों की गति है सब जगत उस प्राप्ति योग्य परब्रह्म को सेवन करता है ५४ हे भरत वंशी मुझ को ही वह घन तेज जान स्तंभित जल वाला समुद्र मैं ही हूं और मैं ही जल का स्तंभित करने वाला हूं ५५ और मैं ही वह नाना प्रकार के सम पर्वत हूं जो तुमने देखे और वह जो पंक रूप ति

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिर देखा ५६ वह घनीभूत तिमिर मैंही हूं मैंही उसका दूर करने वाला हूं प्राणियों का काल और सनातन धर्म मैंही हूं ५७ चन्द्रमा सूर्य महा शैल नदी सरोवर और चारों दिशा यह सब मेराही आत्मा है ५८ चारों वर्ण और चारों आश्रम मुझसे ही प्रकट हुए मुझ को ही चार प्रकार के धर्म का कर्त्ता जानों ५९ हे अर्जुन वेद ब्रह्मण, तप, सत्य, उग्र और वृहत्तम को मुझ से ही जानों ६० हे अर्जुन मैं तेरा प्रिय हूं और तू मेरा प्रिय है इस लिये तुझ से कहता हूं अन्यथा कहने को उत्साहन हीं करता ६१ ऋग यजु साम और अथर्व वेद के मंत्र मैंही हूं और ऋषि देवता यक्ष सब मेराही तेज है ६२ पृथिवी, वायु, आकाश, जल, अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य, दिन रात्रि, पक्ष, महीना, ऋतु ६३ मुहूर्त्त, कला, क्षण, सम्वत्सर नाना प्रकार के मंत्र और जो कोई शास्त्र हैं ६४ विद्या और जानने के योग्य यह सब मुझ से ही प्रकट होते हैं हे भरत वंशी अर्जुन सृष्टि और प्रलय को मन्मय जानों सत् असत् और जो सत् असत् से परे है वह मेरा ही आत्मा है ६५ अब अर्जुन युधिष्ठिर से कहते हैं इस प्रकार प्रसन्न श्री कृष्ण जीने मुझ को उपदेश किया और उसी प्रकार मेरा मन सदा कृष्ण जी में आसक्त हुआ ६६ मैंने केशव जी का यह माहात्म्य देखा और सुना तुम जिस को मुझ से पूछते हो परंतु श्री कृष्ण जी की महिमा इस से भी बड़ी है ६७ धर्मात्मा धर्म राज राजा युधिष्ठिर ने इस माहात्म्य को सुन कर पुरुषोत्तम गोविन्द जी का पूजन किया ६८ राजा युधिष्ठिर सब भाई और राजाओं के साथ जो वहां आये थे विस्मित हुआ- इति श्री महाभारते विलेषु हरिवंशे विष्णु पर्वणि वासुदेव माहात्म्ये शतोपरि चतुर्दशोऽध्यायः ११४— यहां पर यह सिद्धांत है कि वह प्रज्वलित तेज ब्रह्म प्रकाश रूप से परानाम है पुरुष रूप से महानारायण है माया का वस्त्र धारण करने से ब्रह्मा विष्णु महेश रूप और ब्रह्मांड स्वरूप है ॥ ४९॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उशिक्त्वन्देव सोमाग्नेः प्रियम्पाथो पीहि वशी त्वन्देव सोमेन्द्रस्य प्रियम्पाथो पीह्यस्मत्सखा त्वन्देव सोम विश्वेषान्देवानाम्प्रियम्पाथो पीहि ॥५०॥

देव। सोम। उशिक्। त्वं। अग्नेः। प्रियम्। पाथः। अपीहि। देव सोम। वशी। त्वं। इन्द्रस्य। प्रियं। पाथः। अपीहि। देव। सोम। अस्मत्। सखा। त्वं। विश्वेषां। देवानाम्। प्रियं। पाथः। अपीहि ॥५०॥

अथाधिदैवम् - अंशुओं को सोम में डालना है उसके मंत्र १ ओं उशिक्त्वमित्यस्य (देवा ऋषयः० आसुर्य्युष्णिक् छं० सोमो दे०) १
ओं वशीत्वमित्यस्य (तथा ० आसुरी गायत्री छं० तथा) २
ओं अस्मदित्यस्य (तथा ० आर्च्युष्णिक् छं० तथा) ३

पदार्थः १ हे दीप्यमान २ सोम ३ इच्छा मान ४ तुम ५ अग्नि के ६ प्रिय ७ अन्न भाव को ८ प्राप्त करो ९ हे दीप्यमान १० सोम ११ शोभा मान १२ तुम १३ ईश्वर के १४ प्रिय १५ अन्न भाव को १६ प्राप्त करो १७ हे दीप्यमान १८ सोम १९ हमारे २० मित्र २१ तुम २२ सब २३ देवताओं के २४ प्रिय २५ अन्न भाव को २६ प्राप्त करो ॥५०॥

अथाध्यात्मम् - आत्मा कहना है १ हे दीप्यमान २ आत्म प्रतिबिंब ३ भक्त ४ तुम ५ ब्रह्माग्नि के ६ प्रिय ७ अन्न भाव को ८ प्राप्त करो ९ हे दीप्यमान १० आत्म प्रतिबिंब ११ जितेन्द्रिय १२ तुम १३ महा नारायण के १४ प्रिय १५ अन्न भाव को १६ प्राप्त करो १७ हे दीप्यमान १८ आत्म प्रतिबिंब १९ हमारे २० सखा २१ तुम २२ विश्व संबन्धी २३ देवता अर्थात् ब्रह्मा विष्णु महेश के २४ प्रिय २५ अन्न भाव को २६ प्राप्त करो ॥५०॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इहरतिरिहरमध्वमिह धृतिरिहस्वधृतिः स्वाहा। उपस्रजन्धरुणम्मात्रे धरुणो मातरन्धयन्। रायस्पोषमस्मासुदीधरत्स्वाहा ॥५१॥

रतिः। इह। इह। रमध्वम्। इह। धृतिः। स्वधृतिः। इह। स्वाहा। धरुणः। मात्रे। धरुणम्। उपस्रजन्। मातरं। धयन्। अस्मासु। रायः। पोषं। दीधरत्। स्वाहा ॥५१॥

अथ सत्रोत्थान मंत्राः

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में दो मंत्र हैं उनको कहते हैं सब दीक्षितों को अध्वर्यु के स्पर्श करने पर गार्हपत्य अग्नि में घृत को होमता है उसका मंत्र १ शाला द्वार्य नाम अग्नि में दूसरी आहुति को होमता है उसका मंत्र २

ओं इहरति रित्यस्य (देवाऋषयः० प्राजापत्या बृहती छं० पशुर्दे०)

ओं उपस्रजनित्यस्य (तथा ० भुरिगार्ष्युष्णिक् छं० अग्निर्दे०)

पदार्थः हे गौओ तुम्हारा १ रमण २ यहां यजमानों में हो ३ यहां ही ४ रमण करो ५ यहां यजमानों में ही ६ सन्तोष हो ७ यजमानों का सन्तोष भी ८ यहां ही हो ९ श्रेष्ठ होम हो १० अग्नि ११ पृथिवी के १२ धारण कर्त्री को १३ समीप प्राप्त करता १४ पृथिवी अर्थात् उस में उत्पन्न हवि को १५ भक्षण करता १६ हमारे मध्य १७ धन पशु पुत्र सुवर्ण आदि की १८ पुष्टि को १९ धारण करो २० श्रेष्ठ होम हो ॥५१॥

अथाध्यात्मम् – हे इन्द्रियो तुम्हारा १ रमण २ इस योग यज्ञ में हो ३ इस योग यज्ञ में ४ रमण करो ५ इस योग यज्ञ में ६ संतोष हो ७ मानस सूर्य का संतोष भी ८ इसी योग यज्ञ में हो ९ गुरु के उपदेश से १० ब्रह्माग्नि ११ भृकुटि कमल के अर्थ १२ देह धारक आत्म प्रतिबिंब को १३ समीप प्राप्त कर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तातथा१४ भृकुटि कमल स्थ आत्म प्रति विंव को १५ पान करता १६ हम आत्मा रूप योगियों में १७ योग धन की १८ पुष्टि को १९ धारण करो २० महा वाक् के उपदेश से ॥ ५१ ॥

सन्नस्य ऋद्धिरस्य गन्म ज्योतिरमृता अभूम।
दिवम्पृथिव्या अध्यारुहामा विदाम देवांत्स्व
र्ज्योतिः ॥ ५२ ॥

सन्नस्य। ऋद्धिः। असि। ज्योतिः। अगन्म। अमृताः। अभूम। पृथिव्याः। दिवम्। अध्यारुहाम। देवान्। ज्योतिः। स्वः। अविदाम ॥ ५२ ॥

सव दीक्षित उत्तर हवि धनि की अपर कूवरी को आलंवन कर साम मंत्रों को गाते हैं उसका मंत्र १

ओं सन्नस्येत्यस्य (देवा ऋषयः भुरिगार्षी बृहती छं० सोमो दे०) १

पदार्थः – हे सोम वा हे आत्म प्रति विंव तुम १ द्रव्य यज्ञ वा योग यज्ञ की २ समृद्धि ३ हो हम आत्मा रूप यजमान ४ सूर्य वा ब्रह्म ज्योति को ५ प्राप्त हुए ६ मुक्त ७ हुए जिस कारण ८ पृथिवी से ९ ब्रह्म लोक को १० चढे ११ ब्रह्मा विष्णु महेश नाम देवताओं तथा १२ ज्योति स्वरूप १३ महानारायण को १४ जाना ॥ ५२ ॥

युवन्तमिन्द्रा पर्वता पुरो युधा योनः पृतन्या
दपतन्तमिद्धतं वज्रेण तन्तमिद्धतम्। दूरे च
त्तायच्छंत्सद्गहनं यदिनक्षत् अस्माकथ्शत्रू
न्परि भूरविष्वतो दर्म्मा दर्षीष्ट विष्वतः। भूर्भु
वः स्वः सुप्रजाः प्रजाभिः स्याम सुवीरा वीरैः सु
पोषा पोषैः ५३

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरो युधा। इन्द्रा पर्वता। युवं। तुम। तुम। तुम। इत। अपहतं। तुम। तुम। इत। वज्रेण। हतुम। यः। नः। एतन्यात। भूर। यत। दूरागहन। चत्तोय। छन्त्सेत। इनक्षेत। दुर्मा। अस्माकम। विभ्वतः। विभ्वतः। शत्रून। परि दर्षाष्ट। भूर्भुवः स्वः। प्रजाभिः सुप्रजाः। वीरैः। सुवीराः। पोषैः। सुपोषाः। स्याम। ५३॥

इस कंडिका में तीन मंत्र हैं उनको कहते हैं, सब यजमान दक्षिणा हविर्धानाक्ष के अधो मार्ग से पूर्व मुख निकलते हैं उसके मंत्र १,२ वृद्ध कामना वाले यजमानों में वाग् विसर्जन होता है उसका मंत्र ३

ओं युवमित्यस्य (परुच्छेप ऋ० आर्ष्यनुष्टुप् छं० इन्द्रा पर्वतौ देवते) १

ओं दूरे चेत्यस्य (तथा ० विराडार्षी बृहती छं० इन्द्रो देवता) २

ओं भूर्भुवरित्यस्य (तथा ० विराट् प्राजापत्या पंक्तिश्छं० विराट् पुरुषो देवता) ३

पदार्थः १ हे शत्रुओं के आगे युद्ध करने वाले २ परा सहित महानारायण ३ तुम दोनों ४ उस ५ चोर रूप ६ भ्रांति को ७ ही ८ विनाश करो ९ उस १० चोर काम को ११ ही १२ ज्ञान वज्र से १३ विनाश करो १४ जोकि १५ हमसे १६ युद्ध करे १७ हे चिदेव रूप परमेश्वर १८ जब १९ दूर वर्त्तमान २० अत्यंत गंभीर मन २१,२२ अज्ञान को पकड़ना चाहै तब २३ पकड़े तदनंतर २४ विदारण शील ज्ञान वज्र २५ हमारे २६ सब ओर स्थित २७ सब २८ शत्रु कामादि को २९ विदीर्ण करो ३०, हे विराट् पुरुष हम ३२ प्राणों से ३३ श्रेष्ठ प्राण वाले ३४ और पुत्र अथवा शम दम आदि के द्वारा ३५ श्रेष्ठ वीर वाले ३६ और भोग मोक्ष सम्बंधी पुष्टियों के द्वारा ३७ श्रेष्ठ पुष्टि वाले ३८ होवें॥ ५३

सत्रो त्थान समाप्त हुआ — अथ प्राय- श्चित्तानि॥

परमेष्ठ्यभिधीतः प्रजापतिर्वीचिव्या हृता यामन्धो अच्छैतः सविता सन्यां विश्वकर्मा दीक्षायाम्पूषा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोमक्रयणयाम् ॥ ५४ ॥

अभिधीतृः। परमेष्ठी। वाचि। व्याहृतायां। प्रजापतिः। अच्छेतः। अन्धः। सन्यां। सविता। दीक्षायां। विश्वकर्मा। सोमक्रयणयाम्। पूषा ५४

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में ६ मंत्र हैं उन को कहते हैं मिट्टी का घर्म पात्र टूट जाय तो उसको स्पर्श कर परमेष्ठिने स्वाहा इस मंत्र से लेकर सलिलाय स्वाहा इस मंत्र तक चतुर्दश आहुति को होमै धर्मदुहा नाम गौ मर जाय तो उसके स्थान पर उत्तर मुख वा पूर्व मुख स्थित पत्नी शाला के पूर्वभाग में पुच्छ से दक्षिण ओर परमेष्ठिने स्वाहा इत्यादि ३४ आहुति को होमकर दूसरी गौ को दोहै अथवा स्थाली स्थ वा स्रुक् स्थ अपदाज्य के भ्रंश होने में कोई आचार्य्य पूर्वोक्त आहुति देते हैं उनके मंत्र-

ओं परमेष्ठी + विश्वकर्म + पूषेति मंत्राणां	(वसिष्ठ ऋ० दैवी जगती छं० लिङ्गोक्त देवता)	१,५,६
ओं प्रजापतिरित्यस्य	(तथा ० याजुषी पंक्ति छं० तथा)	२
ओं अन्ध इत्यस्य सवितेत्यस्य	(तथा ० दैवी पंक्ति छं० तथा)	३,४

पदार्थः - १ मनसे संकल्पित सोम २ परमेष्ठी होता है यदि विघ्न होतो परमेष्ठिने स्वाहा इस मंत्र से आहुति देवै वह पाप से रहित होता है और यज्ञ फल को प्राप्त करता है। क्योंकि जितने मंत्रोक्त देवता हैं वे सब सोम के शरीर हैं ३ सोम से यज्ञ करूंगा ऐसा वचन ४ उच्चारण करने पर ५ प्रजापति होता है यदि विघ्न होतो प्रजापतये स्वाहा इस मंत्र से आहुति देवै वह पापसे रहित होता है और यज्ञ फल को प्राप्त करता है ६ सन्मुख प्राप्त सोम ७ अन्ध नाम होता है इस लिये प्रायश्चित में अन्ध से स्वाहा इस मंत्र से आहुति देवै वह पाप को नाश करता और यज्ञ फल को प्राप्त करता है ८ संभक्त होने पर सोम ९ सविता होता है वहां विघ्न होने पर सवित्रे स्वाहा इस मंत्र से आहु

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ति देवै वह सविता होकर पाप को नाश करता और यज्ञ फल को प्राप्त करता है १० दीक्षा होने पर सोम ११ विश्व कर्मा होता है वहां कुछ विघ्न होय तो विश्व कर्मणे स्वाहा इस मंत्र से आहुति देवै १२ सोम की मौल्य रूप गौ के लाने पर सोम १३ पूषा होता है जो वहां कोई विघ्न होतो पूषणे स्वाहा इस मंत्र से आहुति देवै॥ ५४॥

अथाध्यात्मम् – आत्म प्रति विंव की स्तुति करते हैं १ वेद द्वारा ब्रह्मांश रूप निश्चय किया हुआ आत्म प्रति विंव २ परमेष्ठी होता है ३ चक्षु ब्रह्म है श्रोत्र ब्रह्म है इत्यादि वचनों के ४ उच्चारण करने पर ५ प्रजा पति होता है ६ व्यष्टि समष्टि देह को सन्मुख होकर प्राप्त हुआ ७ विराट् रूप होता है ८ अपनी किरणों के दान में ९ सूर्य होता है संक्षेप कह कर विस्तार पूर्वक कहते हैं १० योग यज्ञकी दीक्षा में ११ विश्व कर्मा होता है १२ महा वाक के उपदेश में १३ पूषा होता है॥ ५४॥

इन्द्रश्च मरुतश्च क्रयायोपोत्थितो सुरः पण्यमानो मित्रः क्रीतो विष्णुः शिपिविष्ट ऊरावासन्नो विष्णुर्नरन्धिषः प्रोह्यमाणाः ५५

क्रयाय। उपोत्थितः। इन्द्रः। च। मरुतः। च। पण्यमानः। असुरः। क्रीतः। मित्रः। ऊरौ। आसन्नः। शिपिविष्टः। विष्णुः। प्रोह्यमाणाः। नरन्धिषः। विष्णुः॥ ५५॥

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में प्रायश्चित होम के ५ मंत्र हैं

ओं इन्द्र इत्यस्य (वसिष्ठऋ० आसुर्य्यनुष्टुप्छं० लिङ्गोक्त दे०) १
ओं असुर इत्यस्य (तथा ० दैवीजगती छं० तथा) २
ओं मित्र इत्यस्य (तथा ० दैवीबृहती छं० तथा) ३
ओं विष्णु रित्यस्य (तथा ० याजुषीत्रिष्टुप्छं० तथा) ४

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं विष्णु रित्यस्य (वसिष्ट ऋ० याजुषी पंक्तिश्छं० लिङ्गोक्त देवता)५

पदार्थः १ द्रव्य देकर अपना करने के लिये २ समीप स्थापित सोम ३ इन्द्र ४ और ५ मरुत् ६ होता है यदि वहां कुछ विघ्न हो तो इन्द्राय स्वाहा मरुद्भ्यः स्वाहा इन मंत्रों से होम करै वह इन्द्र और मरुत् होता है ७ मोल लेने के समय सोम ८ असुर नाम होता है जो वहां कुछ विघ्न होतो असुराय स्वाहा इस मंत्र से होम करै वह असुरही होता है ९ मोल लिया हुआ सोम १० मित्र होता है यदि वहां कोई विघ्न होतो मित्राय स्वाहा इस मंत्र से होम करै० वह मित्रही होता है० ११ यजमान की गोद में १२ स्थिति सोम १३ प्राणियों वा यन्त्रों में प्रविष्ट १४ विष्णु होता है यदि वहां कुछ विघ्न होतो विष्णावेशिपिविष्टाय स्वाहा इस मंत्र से होम करै० १५ शकट पर रक्खा हुआ सोम १६ जगत संहर्त्ता वा जगत पालक १७ विष्णु होता है यदि वहां कुछ विघ्न होतो विष्णावेनरन्धिषाय स्वाहा इस मंत्र से होम करै० ५

अथाध्यात्मम् – १ अपनी आत्मा के दान से अपना करने के लिये २ समीप स्थापित समष्टि प्रति विंव ३ इन्द्र ४ और ५ मरुत् ६ होता है ७ क्रीयमान समष्टि प्रति विंव ८ प्राण दाता होता है ९ मोल लिया हुआ समष्टि प्रति विंव १० सब का मित्र होता है सब का आत्मा रूप होने से ११ आत्मा के उत्संग में १२ स्थित समष्टि प्रति विंव १३ प्राणियों में प्रविष्ट १४ विष्णु होता है १५ देह से धारित समष्टि प्रति विंव १६ माया उपाधि का नाशक १७ विष्णु होता है॥ ५५॥

सोम आगतो वरुण आसन्द्यामासन्नोग्नि राग्नीध्र इन्द्रो हविर्धाने अथर्वोपावह्रियमाणः ५६

आगतः। सोमः। आसन्द्याम्। उपविष्टः। वरुणः। आग्नीध्रे अग्निः। हविर्धाने। इन्द्रः। उपावह्रियमाणः। अथर्वा। ५६

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में प्रायश्चित होम के ५ मंत्र हैं उन-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को कहते हैं

ओं सोमेत्यस्य (वसिष्ठ ऋ० दैवी पंक्तिश्छं० लिङ्गोक्त दे०) १
ओं वरुणेत्यस्य (तथा ० याजुषी बृहती छं० तथा ०) २
ओं अग्निरित्यस्य (तथा ० दैवी पंक्तिश्छं० तथा ०) ३
ओं इन्द्र इत्यस्य (तथा ० दैवी त्रिष्टुप् छं० तथा ०) ४
ओं अथर्वेत्यस्य (तथा ० याजुषी बृहती छं० तथा ०) ५

पदार्थः - १ शकट से आया हुआ २ सोम नाम होता है यदि वहां कुछ विघ्न होतो सोमाय स्वाहा इस मंत्र से होम करै० ३ मंचिका में ४ उपविष्ट सोम ५ वरुण नाम होता है यदि वहां कुछ विघ्न होतो, वरुणाय स्वाहा इस मंत्र से होम करै० ६ आग्नीध्र में वर्त्तमान सोम ७ अग्नि नाम होता है जो वहां कुछ विघ्न होतो अग्नये स्वाहा इस मंत्र से होम करै० ८ हविर्धान में वर्त्तमान सोम ९ इन्द्र नाम होता है जो वहां कुछ विघ्न होतो, इन्द्राय स्वाहा इस मंत्र से होम करै० १० मंत्र पूर्वक कंडन के लिये लिया हुआ सोम ११ अथर्वा नाम होता है जो वहां कुछ विघ्न होतो अथर्वणे स्वाहा इस मंत्र से होम करै॥ ५६॥

अथाध्यात्मम् - १ देह से मन में प्राप्त आत्म प्रति बिंब २ अमृत होता है ३ ब्रह्म पुर हृदय में ४ उपविष्ट आत्म प्रति बिंब ५ आत्मा को ईश के अर्पण करने वाला होता है ६ भृकुटि के अन्तरिक्ष में ७ रुद्र होता है ८ गगन मंडल में ९ काम वा माया को हटाने वाला विष्णु होता है, फिर कहते हैं १० विषयों से आकर्षित आत्म प्रति बिंब ११ प्राण रूप होता है। ५६

विश्वे देवा अ॒थ॑ शु॒भ्रुन्यु॒ग्रो विष्णु॒रा प्री॑तु॒ पाञ्चा॒ जन्या॒य मानो॒ यमः सू॒य मानो॒ विष्णुः सम्भ्रि॒य मा॒णो वा॒युः पू॒य मानः॒ शुक्रः॒ पूतः॒ शुक्रः॒ क्षीर श्री

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन्थी सक्तु श्रीः ५७

अंशुः। न्युप्तः। विश्वे देवाः। आप्यायमानः। आप्रीतपाः। विष्णुः। सूयमानः। यमः। सम्भ्रियमाणः। विष्णुः। पूयमानः। वायुः। पूतः। भृक्वः। क्षीरश्रीः। भृक्वः। सक्तुश्रीः। मन्थी। ५७

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में प्रायश्चित होम के ८ मंत्र हैं उनको कहते हैं

ओं विश्वे देवा इत्यस्य	(वसिष्ठ ऋ०	याजुषी बृहती ०	लिं० दे०)	१
ओं विष्णु रित्यस्य	(तथा ०	आसुरी पंक्ति ०	तथा)	२
ओं यम इत्यस्य	(तथा ०	दैवी त्रिष्टुप् छं०	तथा)	३
ओं विष्णु रित्यस्य	(तथा ०	दैवी जगती ०	तथा)	४
ओं वायु रित्यस्य	(तथा ०	दैवी त्रिष्टुप् छं०	तथा)	५
ओं भृक्व इत्यस्य	(तथा ०	दैवी बृहती ०	तथा)	६
ओं समाप्त मंत्रयोः	(तथा ०	दैवी पंक्ति०	तथा)	७,८

पदार्थः १ सोम खंडों में २ कंडन करके आरोपण किया हुआ सोम ३ विश्वे देवा होता है जो वहां कुछ विघ्न होतो, विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा इस मंत्र से होम करै० ४ वर्धमान सोम ५ अपने भक्तों का रक्षक ६ विष्णु होता है जो वहां कुछ विघ्न होतो विष्णव आप्रीत पाय स्वाहा इस मंत्र से होम करै० ७ अभिषूयमान सोम ८ यम होता है जो वहां कुछ विघ्न होतो यमाय स्वाहा इस मंत्र से होम करै० ९ पुष्यमान सोम १० विष्णु होता है जो वहां कुछ विघ्न होतो विष्णवे स्वाहा इस मंत्र से होम करै० ११ पूयमान सोम १२ वायु होता है जो वहां कुछ विघ्न होतो वायवे स्वाहा इस मंत्र से होम करै० १३ पूत सोम १४ भृक्व नाम होता है जो वहां कोई विघ्न होतो, भृक्वाय स्वाहा इस मंत्र से होम करै० १५ दुग्ध से मिला हुआ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ सोम १६ शुक्रनाम होता है जो वहां कुछ विघ्न होतो शुक्राय स्वाहा इस मंत्र से होम करै० १७ सक्तुओं से मिला हुआ सोम १८ मन्थी होता है जो वहां कुछ विघ्न होतो मन्थने स्वाहा इस मंत्र से होम करै॥ ५७॥

अथाध्यात्मम् – १ आत्म प्रति विंब के खंड इन्द्रियों में २ विषयों से शोधन करके आरोपण किया हुआ आत्म प्रति विंब ३ विश्वे देवा होता है ४ ब्रह्म के साथ एकत्व से वृद्धि पाने वाला आत्म प्रति विंब ५ भक्तों का रक्षक ६ विष्णु होता है ७ अभिषूयमान आत्म प्रति विंब ८ उपाधियों का नाशक होता है ९ पुष्यमान आत्म प्रति विंब १० विष्णु होता है फिर कहते हैं ११ प्राण उदान रूप पवित्रा से पवित्र आत्म प्रति विंब १२ प्राण होता है १३ पवित्र आत्म प्रति विंब १४ सूर्य होता है १५ इन्द्रियों से मिश्रित आत्म प्रति विंब १६ सूर्य होता है १७ इन्द्रियों के देवताओं से मिश्रित आत्म प्रति विंब १८ चंद्रमा होता है॥ ५७॥

विश्वे देवा अमसे पून्नीतो सुहो मायो द्युतो रुद्रो हूयमानो वातो भ्या वृत्तो नृचक्षाः। प्रतिख्यातो भक्षो भक्ष्यमाणः पितरो नाराशंसाः सन्नः॥ ५८॥

चमसेषु। उन्नीतः। विश्वे देवाः। होमाय। उद्यतः। असुः। हूयमानः। रुद्रः। अभ्यावृत्तः। वातः। प्रतिख्यातः। नृचक्षा भक्ष्यमाणः। भक्षः। सन्नः। नाराशंसाः। पितरः॥ ५८॥

अथाधिदैवम्– इस कंडिका में प्रायश्चित होम के ७ मंत्र हैं

ओं विश्वे देवा इत्यस्य (वसिष्ठऋ० याजुषी पंक्ति० लिङ्गोक्त देवता) १

ओं असुर इत्यस्य (तथा ० याजुष्युष्णिक० तथा) २

ओं रुद्र इत्यस्य (तथा ० याजुषी गायत्री० तथा) ३

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओंवात इत्यस्य (वसिष्ठऋ० दैवीपंक्तिश्छं० लिङ्गोक्त देवता) ४
ओंनृचक्षा इत्यस्य (तथा ० दैवी जगती ० तथा ०) ५
ओंभक्ष इत्यस्य (तथा ० दैवीत्रिष्टुप् ० तथा ०) ६
ओंपितर इत्यस्य (तथा ० याजुषी बृहती० तथा ०) ७

पदार्थः – १ ग्रह पात्रों में २ ग्रहण किया हुआ सोम ३ विश्वे देवा होता है जो वहां कुछ विघ्न होतौ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा इस मंत्र से आहुति देवै ४ होम के लिये ५ उद्यत सोम ६ प्राण होता है जो वहां कुछ विघ्न होतौ असवे स्वाहा इस मंत्र से होम करै० ७ होमा हुआ सोम ८ रुद्र होता है जो वहां कुछ विघ्न होतौ रुद्राय स्वाहा इस मंत्र से होम करै० ९ होम शेषीभूत और सद में भक्षण के लिये लाया हुआ सोम १० वायु रूप होता है जो वहां कुछ विघ्न होतौ, वाताय स्वाहा इस मंत्र से होम करै ११ हे ब्रह्मन् समीप आओ इस प्रकार भक्षण के लिये पूछा हुआ सोम १२ नृचक्षा नाम होता है जो वहां कुछ विघ्न होतौ नृचक्ष से स्वाहा इस मंत्र से होम करै० १३ पान किया हुआ सोम १४ भक्ष होता है जो वहां कुछ विघ्न होतौ भक्षाय स्वाहा इस मंत्र से होम करै० १५ भक्षण कर के स्वरों पर सादित सोम १६ नाराशंसा नाम १७ पितर होता है जो वहां कुछ विघ्न होतौ, पितृभ्यो नाराशंसेभ्यः स्वाहा इस मंत्र से होम करै ॥५८॥

अथाध्यात्मम् – फिर कहते हैं १ प्राण आदि ग्रह पात्रों में २ ग्रहण किया आत्मप्रतिबिंब ३ सर्व देव रूप होता है ४ होम के लिये ५ उद्यत आत्मप्रतिबिंब ६ समष्टि प्राण रूप होता है ७ होमा हुआ आत्म प्रतिबिंब ८ ईश होता है ९ प्रारब्ध समाप्ति के लिये होम शेषीभूत और हृदय में भक्षण के लिये लाया हुआ आत्म प्रतिबिंब १० प्राण होता है ११ भक्षण के लिये पूछा हुआ आत्म प्रतिबिंब १२ सर्वदर्शी होता है १३ भक्षण किया हुआ आत्म प्रतिबिंब १४

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राण होता है १५ इन्द्रिय गोलकों में धारण किया हुआ आत्म प्रतिबिंब १६ योग यज्ञ के योग्य १७ मनो वृत्ति रूप होता है॥ ५८॥

सिन्धुरवभृथायोद्यतः समुद्रोभ्यवह्रियमा
णः सलिलः प्रस्तुतो ययोरोजसास्कभितार
जांसि वीर्य्येभिर्वीरतमा शविष्ठा। यापत्ये
ते अप्रतीता सहोभिर्विष्णुअगन्वरुणापूर्वहू
तौ॥ ५९॥

अवभृथाय। उद्यतः। सिन्धुः। अभ्यवह्रियमाणः। समुद्रः। प्रस्तुतः। सलिलः। ययोः। ओजसा। रजांसि। स्कभितोः। वीर्यभिः। वीरतमा। शविष्ठा। सहोभिः। अप्रतीता। पत्येते। पूर्वहूतौ। विष्णुवरुणा। अगन्॥ ५९॥

अथाधिदैवम् - इस कंडिका में ४ मंत्र हैं, प्रायश्चित होम के मंत्र १ २,३ गिरे हुए रस रूप सोम को जल से सींचता है उस का मंत्र ४

ओं सिन्धुः+समुद्र इति मंत्रयोः (वसिष्ठऋ० याजुषी बृहती छं० लिङ्ग देव) १२
ओं सलिल इत्यस्य ((तथा ० याजुषी गायत्री छं० तथा) ३
ओं ययोरित्यस्य ((तथा ० निचृदार्षी त्रिष्टुप् छं० विष्णुवरुणौ) ४

पदार्थः -१ अवभृथ के लिये २ उद्यत सोम ३ सिन्धु नाम होता है जो वहां कुछ विघ्न होतो, सिन्धवे स्वाहा इस मंत्र से होम करै० ४ सन्मुख लाया हुआ सोम ५ समुद्र होता है जो वहां कुछ विघ्न होतो समुद्राय स्वाहा इस मंत्र से होम करै० वह समुद्र ही होता है० ६ जल में डूबा हुआ सोम ७ जल ही होता है जो वहां कुछ विघ्न होतो सलिलाय स्वाहा इस मंत्र से होम करै वह सलिल ही होता है पाप को नाश करता यज्ञ को प्राप्त करता है ८ जिन नर नारायण के ९ बल से १० सब लोक ११ स्तंभित हैं १२ और जो १३ अपने व

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोंसे १४ महा वीर १५ महा वली १६ वलों से १७ अपना प्रतिभटन रखने वाले नरनारायण १८ जगत् का ऐश्वर्य करते हैं १९ पहिले आव्हान के योग्य २० वे नरनारायण प्रति स्कन्न हवि को २१ प्राप्त हुए ॥ ५९॥

अथाध्यात्मम्- १ आत्म रूप नदी में स्नान के लिये २ उद्यत आत्म प्रतिविंव ३ सिन्धु होता है ४ आत्म समुद्र के सन्मुख प्राप्त किया हुआ आत्म प्रतिविंव ५ समुद्र होता है ६ ब्रह्मांभु रूप जल में निमग्न आत्म प्रतिविंव ७ ज्योतीरस रूप होता है ८ जिन नरनारायण के ९ तेज से १० लोक ११ स्तंभित हैं १२ जो १३ वलों से १४ महा वीर १५ महा वली १६ तथा वलों से १७ अप्रतिभटनरनारायण १८ जगत के ऐश्वर्य को करते हैं उन १९ प्रथम आव्हान योग्य २० नर नारायण में २१ जीव रूप हवि प्राप्त हुआ ॥ ५९॥

देवान्दिवमगन्यज्ञस्ततो मा द्रविणमष्टु मनुष्यानन्तरिक्षमगन्यज्ञस्ततो मा द्रविणमष्टु पितॄन्पृथिवीमगन्यज्ञस्ततो मा द्रविणमष्टु यङ्ङ्चलोकमगन्यज्ञस्ततो मे भद्रम् भूत् ।६०।

१ यज्ञः। २ दिवं। ३ देवान्। ४ अगन्। ५ ततः। ६ द्रविणं। ७ मा। ८ अष्टु। ९ यज्ञः। १० अन्तरिक्षं। ११ मनुष्यान्। १२ अगन्। १३ ततः। १४ द्रविणं। १५ मा। १६ अष्टु। १७ यज्ञः। १८ पृथिवीं। १९ पितॄन्। २० अगन्। २१ ततः। २२ द्रविणं। २३ मा। २४ अष्टु। २५ यज्ञः। २६ यमं। २७ कं। २८ चं। २९ लोकं। ३० अगन्। ३१ ततः। ३२ मे। ३३ भद्रं। ३४ अभूत् ॥ ६०॥

अथाधिदैवम्- स्कन्न सोम का अभिमर्शन करता है उसका मंत्र १ ओंदेवानित्यस्य (वसिष्ठऋ० अत्यष्टिछं० यज्ञो देवता) १

पदार्थः- १ यज्ञ २ स्वर्गलोक में ३ ब्रह्मा विष्णु महेश नाम देवताओं को ४ प्राप्त हुआ ५ उस स्वर्गलोक स्थ यज्ञ से ६ यज्ञ फल भूत विशिष्ट भोग साधन रूप

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन ७ मुझको ८ प्राप्त हो ९ यज्ञ १० अन्तरिक्ष में वृष्टिरूप से ११ मनुष्यों को १२ प्राप्त हुआ १३ उस अन्तरिक्षस्थ यज्ञ से १४ यज्ञ फलरूप धन १५ मुझको १६ प्राप्त हो १७ यज्ञ १८ पृथिवी पर १९ पितरों को २० पितृहविरूप से प्राप्त हुआ २१ उस यज्ञ से २२ यज्ञ फलरूप धन २३ मुझको २४ प्राप्त हो २५ यज्ञ २६, २७, २८ जिस किसी २९ लोक में ३० आहुतिरूप से इन्द्र आदि देवताओं को प्राप्त हुआ ३१ उस यज्ञ से ३२ मेरा ३३ कल्याण ३४ हो ॥ ६० ॥

अथाध्यात्मम् – उत्थान अवस्था में आत्मा प्रार्थना करता है १ आत्म प्रतिबिंब २ भृकुटि वा गगन मंडल में ब्रह्मा विष्णु महेश अथवा ब्रह्म परमात्मा नारायण को ४ प्राप्त हुआ ५ उस भृकुटि कमल अथवा गगन मंडल से ६ ऐश्वर्य रूप धन ७ मुझको ८ प्राप्त हो ९ आत्म प्रतिबिंब १० हार्दान्तरिक्ष में ११ प्राणों को १२ प्राप्त हुआ १३ उस हार्दान्तरिक्ष से १४ योग लक्ष्मी १५ मुझको १६ प्राप्त हो १७ आत्म प्रतिबिंब १८ मानस कमल में १९ मनोवृत्ति को २० प्राप्त हुआ २१ उस मानस कमल से २२ योग लक्ष्मी २३ मुझको २४ प्राप्त हो २५ आत्म प्रतिबिंबने २६, २७, २८ जिस किसी २९ इन्द्रिय गोलकरूप लोक को ३० प्राप्त किया ३१ उस इन्द्रिय गोलक से ३२ मेरी ३३ मोक्ष ३४ होवे ॥ ६० ॥

चतुस्त्रिꣳशत्तन्तवो ये वितत्निरे इमं यज्ञं स्वधया ददन्ते। तेषाञ्छिन्नꣳ सम्वेतदृधामि स्वाहा घर्म्मो अप्येतु देवान् ॥ ६१ ॥

१ ये। २ चतुस्त्रिंशत्। ३ तन्तवः। ४ इमं। ५ यज्ञं। ६ ६ वितत्निरे। ७ ये। ८ स्वधया। ९ ददन्ते। १० तेषाम्। ११ छिन्नं। १२ एतत्। १३ ऊं। १४ सन्दधामि। १५ स्वाहा। १६ घर्मः। १७ देवान्। १८ अप्येतु ॥ ६१ ॥

अथाधिदैवम् – महावीर के भेद में घृत का होम करता है उसका मंत्र

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओंचतुस्त्रिंशदित्यस्य (वसिष्ठऋ० ब्राह्म्युष्णिक छं० घर्मो दे०) १

पदार्थः – मंत्र कहता है १ जो २ चौंतीस ३ यज्ञ का विस्तार देने वाले प्रजापति आदि देवता ४ इस ५ यज्ञ को ६ विस्तार देते हैं ७ और जो इस यज्ञ को ८ अन्न से ९ धारण करते हैं १० उन देवताओं के ११ छिन्न १२ इस १३ महा वीर १४ को सन्धान करता हूं १५ श्रेष्ठ होम हो १६ महा वीर संहित होता १७ देवताओं को १८ प्राप्त हो ॥ ६१॥

अथाध्यात्मम् – १ जो २ चौंतीस ३ योग यज्ञ का विस्तार करने वाले दश प्राण चतुर्दश इन्द्रिय अष्टाङ्ग योग जीव ईश्वर ४ इस ५ योग यज्ञ को ६ विस्तार देते हैं ७ और जो ८ अपनी धारण शक्ति से ९ योग यज्ञ को धारण करते हैं १० उन प्राण आदि का ११ देहाभिमान से पृथक दृश्यमान १२, १३ जो मानस सूर्य है उस को १४ ब्रह्म में धारण करता हूं १५ ब्रह्माग्नि में श्रेष्ठ होम हो १६ मानस सूर्य १७ ब्रह्म परा महानारायण को १८ प्राप्त करो ॥ ६१॥

यज्ञस्य दोहो विततः पुरुत्रासो अष्टधा दिवमन्वाततान। सयज्ञ धुक्ष्व महि मे प्रजायै रायस्पोषं विश्वमायुरशीय स्वाहा ॥ ६२॥

यज्ञस्य[१]। दोहः[२]। सः[३]। पुरुत्रा[४]। विततः[५]। अष्टधा[६]। दिवम्[७]। अन्वाततान[८]। यज्ञ[९]। सः[१०]। मे[११]। प्रजायै[१२]। महि[१३]। धुक्ष्व[१४]। रायः[१५]। पोषं[१६]। विश्वं[१७]। आयुः[१८]। अशीय[१९]। स्वाहा[२०] ॥ ६२॥

अथाधिदैवम् – सोम याग के अंग में विघ्न होने पर चौंतीस आहुतियों के मध्य यथा काल एक २ आहुति को होम कर यजमान को कहलाता है उस का मंत्र-

ओंयज्ञस्येत्यस्य (वसिष्ठऋ० स्वराडार्षी त्रिष्टुप् छं० यज्ञो दे०) १

पदार्थः १ यज्ञ का जो २ आहुति परिणाम है ३ वह ४ बहुत प्रकार से ५

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फैलता ६ दिशा भेद से अष्टधा होना ७ स्वर्ग लोक को ८ व्याप्त करता भया ९ हे यज्ञ १० वह तुम ११ मेरी १२ संतान में १३ महिमा वा पूर्वोक्त आहुति परिणाम को १४ दीजिये मैंभी आप की कृपा से १५ धन की १६ पुष्टि १७ और पूर्ण १८ आयु को १९ प्राप्त करूं २० श्रेष्ठ होम हो॥ ६२॥

अथाध्यात्मम् – १ आत्म प्रति विंब का २ जो आत्मा रूप रस है ३,४,५ बहुत प्रकार से विस्तृत उस आत्म प्रति विंब ने ६ अष्टांग योग द्वारा ७ गगन मंडल को ८ व्याप्त किया उत्थान अवस्था में आत्म प्रति विंब कहता है ९ हे वाक १० वह तुम ११ मेरे १२ प्राण में १३ योग महिमा को १४ धारण करो में आप की कृपा से १५ योग धन की १६ पुष्टि १७ और प्रारब्ध समाप्ति करने वाली पूर्ण १८ आयु को १९ प्राप्त करूं २० उस तुझ के लिये श्रेष्ठ होम हो। ६२

आपवस्व हिरण्यवदश्ववत्सोमवीरवत्।
वाजङ्गोमन्तमाभर स्वाहा॥ ६३॥

सोमु। हिरण्यवत। अश्ववत। वीरवत। आपवस्व। गोमन्तं वाजम्। आभर। स्वाहा॥ ६३॥

अथाधिदैवम् – पशु सोम और यूप के काका रोहण में उद्गाता होम करता है उसका मंत्र १

ओं आपवस्वेत्यस्य (कश्यपऋ० स्वराडार्षी गायत्री० सोमो दे०) १

पदार्थः – १ हे सोम तुम २ सुवर्ण युक्त ३ अश्व युक्त ४ वीर्य युक्त की समान ५ आओ ६ धन युक्त ७ अन्न को ८ दो ९ श्रेष्ठ होम हो॥ ६३॥

अथाध्यात्मम् – मंत्र कहता है १ हे आत्म प्रति विंब २ ज्योति युक्त ३ वीर्य युक्त ४ और प्राण युक्त तुम ५ गगन मंडल से आओ ६ इन्द्रिय वान ७ प्राण वाजाठराग्नि को सुष्ट करो गुरु के उपदेश से॥ ६३॥

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्री नाथूराम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्म कृते शुक्ल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यजुर्वेदीय ब्रह्म भाष्ये ग्रह ग्रहान्निमित्तं तस्तथात्मप्रति विंव होमादि कथनं नामाष्टमोध्यायः ॥ ८॥

चौथी अध्याय को आरंभ कर आठवीं अध्याय तक अग्निष्टोम के मंत्र और उसके प्रासंगिक मंत्र कहे अब नवम अध्याय में चौंतीसवीं कंडिका तक वाजपेय यज्ञ के मंत्र कहते हैं॥

हरिः ओं देव सवितः प्रसुव यज्ञम्प्रसुव यज्ञप
तिम्भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः
पुनातु वाचस्पति र्वाचन्नः स्वदतु स्वाहा॥ १॥

देव। सवितः। यज्ञम्। प्रसुव। यज्ञपतिं। भगाय। प्रसुव। दिव्यः केतपूः। गन्धर्वः। नः। केतम्। पुनातु। वाचस्पतिः। नः। वाजम्। स्वदतु। स्वाहा॥ १॥

अथाधिदैवम् – वाजपेय के अंग भूत दीक्षणीय प्रायणीय आदि यजतियों में एक वार लिये हुए घृत को होमता है उसका मंत्र-

ओं देव सवित इत्यस्य (बृहस्पतीन्द्राऋ० स्वराडार्षी त्रिष्टुप्छं० सवितादेव)१

पदार्थः – १ हे दीप्यमान २ सब के प्रेरक अंतर्यामी परमेश्वर ३ वाजपेय यज्ञ को ४ प्रवृत्त करो ५ यजमान को ६ अनुष्ठान रूप ऐश्वर्य के लिये ७ प्रेरित करो आप का देह रूप ८ स्वर्ग में प्रादुर्भूत ९ अन्न का पवित्र करने वाला १० किरणों का धारण करने वाला सूर्य मंडल ११ हमारे १२ अन्न को १३ पवित्र करो १४ प्रजा पति १५ हमारे १६ अन्न को १७ स्वादिष्ट करो १८ श्रेष्ठ होमहो१

अथाध्यात्मम् – १ हे ज्योति स्वरूप २ महानारायण ३ विषय होमयाग को ४ प्रवृत्त करो ५ आत्मा रूप यजमान को ६ योगैश्वर्य के लिये ७ प्रेरित करो ८ स्वर्ग में प्रादुर्भूत ९ विराट रूप अन्न का पवित्र करने वाला १० किरणों का धारक विराट का आत्मा सूर्य ११ हमारे १२ विषय रूप अन्न को १३

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पवित्र करो१४ समष्टि प्राण१५ हमारे १६ विषय रूप अन्न को १७ स्वादिष्ट करो १८ वैदिक मंत्र द्वारा ॥२॥

ध्रुवसदन्त्वानृषदम्मनः सदमुपयामगृहीतो सीन्द्रायत्वाजुष्टङ्गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम्। अप्सुषदन्त्वा घृतसदं व्योमसदमुपयामगृहीतो सीन्द्रायत्वाजुष्टङ्गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम्। पृथिविसदन्त्वान्तरिक्षसदन्दिविसदन्देवसदन्नाकसदमुपयामगृहीतो सीन्द्रायत्वाजुष्टङ्गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्रायत्वाजुष्टतमम् २

उपयामगृहीतः। असि। ध्रुवसदम्। नृषदम्। मनः सदम्। त्वा। इन्द्राय। जुष्टम्। त्वा। गृह्णामि। एष। ते। योनिः। इन्द्राय। जुष्टतमम्। त्वा। उपयामगृहीतः। असि। अप्सुषदम्। घृतसदम्। व्योमसदम्। त्वा। इन्द्राय। जुष्टम्। त्वा। गृह्णामि। एष। ते। योनिः। इन्द्राय। जुष्टतमम्। त्वा। उपयामगृहीतः। असि। पृथिविसदम्। अन्तरिक्षसदम्। दिविसदम्। देवसदम्। नाकसदम्। त्वा। इन्द्राय। जुष्टम्। त्वा। गृह्णामि। एष। ते। योनिः। इन्द्राय। जुष्टतमम्। त्वा॥२॥

अथाधिदैवम् प्रातःसवन में आग्रयण के पीछे तीन अति ग्राह्यों और षोडशि को लेकर पांच ग्रहों में तीन को ग्रहण करता है उसके मंत्र-

ओं ध्रुवसदमित्यस्य (बृहस्पतिर्ऋ० याजुषीजगती० इन्द्रो दे०) १

ओं उपयामेत्यस्य (तथा • साम्न्यनुष्टुप्• तथा •) २,५,८

ओं एषते इत्यस्य (तथा • आसुरीनुष्टुप्• तथा •) ३,४,६,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं पृथिवि सदमित्यस्य (बृहस्पतिर्ऋ० निचृदार्षी गायत्री० इन्द्रो दे०) ७

पदार्थः – हे अन्न तुम १ ग्रह पात्र से गृहीत २ हो ३ यह पृथिवी मेरी है इस ममत्व में स्थित ४ मानुष अहंकार में स्थित ५ मन में स्थित ६ तुझ को ७ तथा विष्णु के अर्थ ८ प्रिय ९ तुझ को १० ग्रहण करता हूं ११ यह खर प्रदेश १२ तेरा १३ स्थान है १४ विष्णु के अर्थ १५ प्रियतम १६ तुझ को सादन करता हूं (अथ द्वितीय ग्रहः) हे पेय १७ तुझ उपयाम पात्र से गृहीत १८ हो १९ जल में स्थित २० घृत आदि में स्थित २१ आकाश में वृष्टि के मध्य स्थित २२ तुझ को २३ तथा परमेश्वर के लिये २४ प्रिय २५ तुझ को २६ ग्रहण करता हूं २७ यह २८ तेरा २९ स्थान है ३० परमेश्वर के लिये ३१ प्रियतम ३२ तुझ को सादन करता हूं (अथ तृतीयो ग्रहः) हे अन्न पान तुम ३३ उपयाम पात्र से गृहीत ३४ हो ३५ भूमि में स्थित ३६ अन्तरिक्ष में स्थित ३७ स्वर्ग में स्थित ३८ देवताओं में स्थित ३९ ब्रह्म लोक में स्थित ४० तुझ को ४१ तथा ईश्वर के लिये ४२ प्रिय ४३ तुझ को ४४ ग्रहण करता हूं ४५ यह ४६ तेरा ४७ स्थान है ४८ ईश्वर के लिये ४९ प्रियतम ५० तुम को सादन करता हूं ॥२॥

अथाध्यात्मम् – हे विषय तुम १ इन्द्रियों के निरोध से गृहीत २ हो ३ आत्म प्रति बिंब में स्थित ४ प्राणों में स्थित ५ मन में स्थित ६ तुझ को तथा ७ भूतात्मा के लिये ८ प्रिय ९ तुझ को १० ग्रहण करता हूं ११ यह अपरा प्रकृति १२ तेरा १३ स्थान है १४ भूतात्मा के लिये १५ प्रियतम १६ तुझ को सादन करता हूं (अथ द्वितीयः) हे विषय तुम १७ इन्द्रियों के निरोध से गृहीत १८ हो १९ कर्म रूप देहों में स्थित २० इन्द्रियों के अन्तरिक्ष में स्थित २१ मानस आदि कमलों के अन्तरिक्ष में स्थित २२ तुझ को तथा २३ जीवात्मा के लिये २४ प्रिय २५ तुझ को २६ ग्रहण करता हूं २७ यह २८ तेरा २९ स्थान है ३० जीवात्मा के लिये ३१ प्रियतम ३२ तुझे सादन करता हूं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अथतृतीयः) हे विषयेतुम। इन्द्रियों के निरोध से गृहीत ३४ हो ३५ धातु आदि रूप से भूमि में स्थित ३६ अन्न फल आदि रूप से अन्तरिक्ष में स्थित ३७ कर्म फल रूप से स्वर्ग में स्थित ३८ दिव्य भोग रूप से देवताओं में स्थित ३९ योगैश्वर्य रूप से ब्रह्म लोक में स्थित ४० तुझ को तथा ४१ यजमान के लिये ४२ प्रिय ४३ तुझ को ४४ ग्रहण करता हूं ४५ यह परा शक्ति ४६ तेरा ४७ स्थान है ४८ यजमान के लिये ४९ प्रियतम ५० तुझ को सादन करता हूं

अपा ꣳ रसमुद्वयसꣳ सूर्ये सन्तꣳ समाहितम। अपा ꣳ रसस्य योरसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयाम गृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्टङ्गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥३॥

सूर्ये। समाहितम। सन्तꣳ। उद्वयसꣳ। अपाꣳ। रसꣳ। गृह्णामि। अपां। रसस्य। यः। रसः। तम्। उत्तमम्। वः। गृह्णामि। उपयाम। गृहीतः। असि। इन्द्राय। जुष्टम्। त्वा। गृह्णामि। एषः। ते। योनिः। इन्द्राय। जुष्टतमम्। त्वा ॥३॥

अथाधिदैवम् - (अथचतुर्थः)

ओं अपामित्यस्य (बृहस्पतिर्ऋ० निचृदार्ष्यनुष्टुप् छं० रसो देवता) १

पदार्थः १ सूर्य में २ स्थापित ३ विद्यमान ४ अन्नोत्पादक ५,६ जलों के रस अर्थात् पेय को ग्रहण करता हूं ८,९ जल रस का १० जो ११ रस अर्थात् अन्न है हे देवताओ १२ उस १३ सर्वोत्कृष्ट को १४ तुम्हारे लिये १५ ग्रहण करता हूं शेष पूर्व मंत्र के समान है ॥३॥

अथाध्यात्मम् - निराहार देहाभिमानी आत्मा के विषय निवृत्त होते हैं रस निवृत्त नहीं होता इसका रस भी ब्रह्म को देख कर निवृत्त होता है इस भगवत् वाक्य के सारभूत मंत्र को कहते हैं १ मानस सूर्य में स्थापित ३ विद्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मान ४ भूतात्म रूप अन्न के उत्पादक ५,६ ब्रह्मज्योती रस रूप जलों के रस अर्थात् प्राण को ७ ग्रहण करता हूं ८,९ प्राण का १० जो ११ रस अर्थात् आत्म प्रति विंब है हे ब्रह्म परा महा नारायणो १२ उस १३ उत्कृष्ट तम रस को १४ तुम्हारे अर्थ १५ ग्रहण करता हूं हे प्राण हे आत्म प्रति विंब तुम १६ परा शक्ति से गृहीत १७ हो १८ महा नारायण के अर्थ १९ प्रिय २० तुम को २१ ग्रहण करता हूं २२ यह परा शक्ति २३ तुम्हारा २४ स्थान है २५ महानारायण के अर्थ २६ प्रिय २७ तुम को सादन करता हूं॥३॥

ग्रहा उर्ज्जाहुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम्। तेषां विशि प्रियाणां वोह मिषमूर्ज्जं समग्रभमुप यामं गृहीतो सीन्द्रायत्वा जुष्टङ्गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्रायत्वा जुष्टतमम्। सम्पृचौ स्थः सम्मा भद्रेण पृङ्क्तं विप्रचौस्थो विमा पाप्मना पृङ्क्तम्॥४॥

ग्रहाः। उर्जा। हुतयः। विप्राय। मतिं। व्यन्तः। तेषाम्। विशि। प्रियाणाम्। वः। इषम्। उर्जं। अहम्। समग्रभम्। सम्पृचौ। स्थः। मा। भद्रेण। सम्पृङ्क्तं। विप्रचौ। स्थः। मा। पाप्मना। विपृङ्क्तं॥४॥

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में पांच मंत्र हैं उन को कहते हैं, पांचवें ग्रह को ग्रहण करता है उसके मंत्र १,२,३ अध्वर्यु सोम ग्रह को अक्ष के ऊपर धारण करता है और नेष्टा सुरा ग्रह को अक्ष के नीचे धारण करता है साथही धारण और मंत्र पाठ होता है उसके मंत्र और अध्वर्यु नेष्टा अपने २ ग्रह को खर पर सादन करने के लिये अपने समीप लाते हैं उसका मंत्र ४,५

ओं ग्रहा इत्यस्य (बृहस्पतिर्ऋ० निचृदार्ष्यनुष्टुप्छं० ग्रहो देव)१

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओंसमित्यस्य+वीत्यस्य (बृहस्पति ऋ० विराडासुर्यनुष्टुप् छं० ग्रहो दे०) ४,५
ओंउपयाम+एषत इनका विनियोग पूर्व की समान है २,३

पदार्थः १ हे ग्रहो २ अन्नरस का आव्हान करने वाले अथवा अन्नरस के आव्हानके कारण तुम ३ मेधावी यजमान के लिये ४ श्रेष्ठ बुद्धि को ५ प्राप्त कराने वाले हो ६ उन ७ यजमान के प्रिय ८ आपसे सम्बंध रखने वाले ९ अन्न १० और रस को ११ मैं १२ भले प्रकार ग्रहण करता हूं हे सोम सुरा ग्रह तुम दोनों १३ युक्त १४ हो १५ मुझ को १६ कल्याण से १७ संयुक्त करो तथा तुम दोनों १८ पृथक् १९ हो २० मुझ को २१ पापसे २२ पृथक् करो ॥ ४॥

अथाध्यात्मम् - १ हे प्राण आदि ग्रहो तुम २ रसाव्हान के कारण ३ और योगी के लिये ४ अपरोक्ष ज्ञान के ५ प्राप्त कराने वाले हो ६ उन ७ आत्म प्रति बिंब के प्रिय ८ आपसे सम्बन्ध रखने वाले ९,१० अन्न रस अर्थात् दोनों प्रकार के विषय को १२ आत्मा रूप यजमान में १२ भले प्रकार ग्रहण करता हूं हे प्रकृति पुरुष तुम दोनों १३ संयुक्त १४ हो १५ मुझ को १६ मोक्ष से १७ संयुक्त करो तथा तुम दोनों १८ पृथक् पृथक् १९ हो २० मुझ को २१ पाप रूप संसार से २२ पृथक् करो ॥ ४॥

इन्द्रस्य वज्रोसि वाजसास्त्वया यं वाजं छं सेत्।
वाजस्य नु प्रसवे मातरम्महीमदितिन्नाम वचसा करामहे। यस्या मिदं विश्वम्भुवनमाविवेश तस्यान्नो देवः सविता धर्मसा विषत् ॥५॥

वाजसाः। इन्द्रस्य। वज्रः। असि। अयं। त्वया। वाजं छं। सेत्। वाजस्य। प्रसवे। नु। मातरम्। अदितिम्। महीम्। नाम। वचसा। करामहे। यस्याम्। इदं। विश्वम्। भुवनम्। आविवेश।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवः। सविता। तस्योम्। नः। धर्मः। साविषत्॥५॥

अथाधिदैवम् - अध्वर्यु रथ को उसके रथ वाहन शकट से उतारता है उस का मंत्र १ उतारे हुए रथ को धुर पर पकड़ कर चात्वाल से दक्षिण मार्ग द्वारा लाकर वेदी के मध्य स्थापन करता है उस का मंत्र २

ओं इन्द्रस्येत्यस्य (बृहस्पतिर्ऋ० आसुरी गायत्री छं० रथो दे०) १

ओं वाजस्येत्यस्य (तथा ० विराडति जगती छं० पृथिवि सवितारौ) २

पदार्थः - हे रथ १ अन्न के दाता तुम २ यजमान के ३ रथ ४ हो ५ यह यजमान ६ तेरे द्वारा ७,८ बहुत अन्न वाला होवै ९ अन्न की १० उत्पत्ति के निमित्त ११ ही १२ जगन्निर्मात्री १३ अदीना १४ पृथिवी को १५ प्रत्यक्ष में १६ वेद वाक्य द्वारा १७ अनुकूल करते हैं १८ जिस भूमि में १९ यह २० सब २१ प्राणी मात्र २२ आविष्ट हैं २३,२४ सविता देवता २५ उस पृथिवी में ही ३६ हमारे २७ अवस्थान को २८ प्रेरणा करो॥५॥

अथाध्यात्मम् - हे योग रथ १ विराट् रूप अन्न के दाता तुम २ योगी के ३ रथ ४ हो ५ यह योगी ६ तेरे द्वारा ७ विराट् रूप अन्न को ८ प्राप्त करै ९ विराट् रूप अन्न की १० उत्पत्ति के निमित्त ११ ही १२ योगिजननी १३ अखंडिता १४ योगि भूमि को १५ प्रत्यक्ष में १६ वेद वाक्य द्वारा १७ हम अनुकूल करते हैं १८ जिस योग भूमि में १९ यह २० सब २१ ब्रह्मांड २२ प्रविष्ट हुआ २३ नाना प्रकार के अवतारों से क्रीडन शील २४ महानारायण २५ उस योग भूमि में २६ हमारे २७ अवस्थान को २८ प्रेरणा करो॥५॥

अपस्वन्तरमृतमप्सु भेषजमपामुत प्रशस्तिष्व
श्वा भवत वाजिनः। देवी रापो योव ऊर्म्मिः प्रतूर्तिः
कुकुन्मान्वाजसास्तेनायं वाजं छं सेत ६

अप्सु। अन्तः। अमृतम्। उत। अप्सु। भेषजम्। अश्वाः। अपाम्

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशस्तिषु। वाजिनः। भवत। देवीः। आपः। वः। यः। प्रतूर्तिः। कक्कुन्मान्। वाजसाः। ऊर्मिः। तेन। अयम्। वाजम्। सेत॥ ६॥

अथाधिदैवम् - स्नान के लिये जल के निकट लाये वा स्नान किये हुए घोड़ों को प्रोक्षण करता है उसके मंत्र १,२

ओं अपस्वन्तरित्यस्य (बृहस्पति ऋ० विराडार्ष्युष्णिक् छं० अश्वो दे०)१

ओं देवीरित्यस्य (तथा ० निचृद्प्राजापत्यापंक्ति० आपो दे०)२

पदार्थः - १ जलों के २ मध्य ३ अमृत स्थित है ४ और ५ जलों में ६ आरोग्य पुष्टि करने वाली औषधि है ७ हे घोड़ो तुम ८ जलों की ९ प्रशंसा रूप कल्लोलों में १० वेग वान ११ हूजिये १२ हे दीप्यमान १३ जलो १४ तुम्हारी १५ जो १६ श्रेष्ठ वेग वाली १७ दीप्ति अमृत सुख पुष्टि और रत्नों से युक्त १८ यज्ञ की दाता १९ कल्लोल है २० उस से सिंचा हुआ २१ यह घोड़ा २२ यज्ञ को २३ प्राप्त करे ६

अथाध्यात्मम् - १ ज्योती रस अमृत रूप जलों के २ मध्य ३ मोक्ष विद्यमान है ४ और ५ उक्त जलों में ६ संसार रोग की औषधि है ७ हे प्राणो तुम ८ उन जलों की ९ स्तुतियों में १० वेग वान ११ हूजिये १२ हे ज्योति स्वरूप १३ ब्रह्मांशु रूप जलो १४ तुम्हारी १५ जो १६ श्रेष्ठ वेग वाली १७ सूर्य विष्णु ब्रह्मा शिव और त्रिगुणात्मिका शक्ति को धारण करने वाली १८ विराट् रूप अन्न की दाता १९ कल्लोल है २० उससे सिंचा हुआ २१ यह प्राण २२ विराट् रूप अन्न को २३ प्राप्त करे ॥ ६॥

वातो वामनो वा गन्धर्वाः सप्तविꣳशतिः। ते अग्रेऽश्वं युञ्जꣳस्तेऽस्मिञ्जवमादधुः॥ ७॥

वातः। वा। मनः। वा। सप्तविꣳशतिः। गन्धर्वाः। ते। अग्रे। अश्वम्। अयुञ्जन्। ते। अस्मिन्। जवम्। आदधुः॥ ७॥

अथाधिदैवम् - दक्षिण और के घोड़े को रथ में जोड़ता है उसका मंत्र-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं वातो वेत्यस्य (बृहस्पति ऋ॰ भुरिगार्ष्युष्णिक् छं॰ अश्वो देवता) १

पदार्थः १ समष्टि प्राण २ और ३ समष्टि मन ४ और ५,६ ब्रह्मांभु के धारण करने वाले सत्ताईस गन्धर्व अर्थात् प्रधान महत्, अहंकार, दश तत्व चतुर्दश इन्द्रिय जो हैं ७ उन्होंने ८ पहिले ९ घोड़े को १० रथ में युक्त किया ११ उन समष्टि प्राण आदि ने १२ इस घोड़े में १३ वेग को १४ स्थापन किया ॥ ७ ॥

अथाध्यात्मम् - १ समष्टि प्राण २ और ३ समष्टि मन ४ और ५,६ ज्ञान निवृत्ति तथा नारायण के धारण करने वाले भगवद् गीता में कथित सत्ताईस गुण अर्थात् अभय, चित्त शुद्धि, ज्ञान योग की व्यवस्थिति, दान, दम, यज्ञ, स्वाध्याय, तप, आर्जव, अहिंसा, सत्य, अक्रोध, त्याग, शान्ति, अपैशुन, प्राणियों पर दया, अलोलुप्त्व, मृदुता, लज्जा, अचपलता, तेज, क्षमा, धृति, शौच, अद्रोह, अभिमान त्याग जो दैवी संपति मोक्ष की दाता हैं ७ उन्होंने ८ पहिले अर्थात् साधन अवस्था में ९ प्राण को १० योग रथ में युक्त किया ११ उन गुण आदि ने ही १२ इस प्राण में १३ वेग को १४ स्थापन किया ॥ ७ ॥

वातरꣳहाभव वाजिन्युज्यमान इन्द्रस्येव दक्षिणः श्रियैधि। युञ्जन्तु त्वा मरुतो विश्ववेद स आते त्वष्टा पत्सु जवन्दधातु ॥ ८ ॥

वाजिन्। युज्यमानः। वातरंहा। भव। इन्द्रस्य। दक्षिणः। इव। श्रिया। एधि। विश्ववेदसः। मरुतः। त्वा। युञ्जन्तु। त्वष्टा। ते। पत्सु। जवम्। आदधातु ॥ ८ ॥

अथाधिदैवम् - वाम ओर के घोड़े को जोड़ता है उसका मंत्र १

ओं वातरंहेत्यस्य (बृहस्पति ऋ॰ भुरिगार्षी त्रिष्टुप् छं॰ अश्वो दे॰) १

पदार्थः - १ हे वेग वान घोड़े २ जुड़े हुए तुम ३ वायु की समान वेग वाले ४

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होजाओ ५ और यजमान के ६ दाहिने घोड़े की ७ समान ८ शोभा से युक्त ९ होजाओ १० सर्वज्ञ ११ मरुत देवता १२ तुझ को १३ रथ में युक्त करो १४ त्वष्टा देवता १५ तेरे १६ पादों पैरों में १७ वेग को १८ स्थापन करो ॥ ८ ॥

अथाध्यात्मम्- १ हे वेग वान दूसरे प्राण २ योग रथ में जोड़े हुए तुम ३ समष्टि वायु की समान वेग वाले ४ होजाओ ५ आत्मा रूप यजमान के ६ दक्षिण प्राण की ७ समान ८ योग लक्ष्मी से युक्त ९ होजाओ १० सर्वज्ञ ११ समष्टि प्राण १२ तुझे १३ योग रथ में जोड़ो १४ ईश्वर १५ तेरे १६ पैरों में १७ वेग को १८ स्थापन करो ॥ ८ ॥

जवो यस्ते वाजिन्निहितो गुहा यः श्येने परीतो अचरच्च वाते। तेन नो वाजिन्बलेन वान्बले न वाजजिच्च भव समनेच पारयिष्णुः। वाजिनो वाजजितो वाजं त्वं सरिष्यन्तो बृहस्पतेर्भागमवजिघ्रत ॥ ९ ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७

वाजिन्। यः। ते। जवः। गुहा। निहितः। यः। श्येने। परीतः। च। वाते। अचरत्। वाजिन्। तेन। बलेन। बलवान्। नः। वाजजित्। च। सम्। ने। पारयिष्णुः। वाजजितः। वाजं। त्वं। सरिष्यन्तः। वाजिनः। बृहस्पतेः। भागं। अवजिघ्रत ॥ ९ ॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में दो मंत्र हैं उनको कहते हैं दक्षिण ध्रुव में तीसरे घोड़े को जोड़ता है उसका मंत्र १ बार्हस्पत्य चरु घोड़ों को सुंघाता है उसका मंत्र २

ओं जव इत्यस्य (बृहस्पति ऋ० आर्षी जगती छं० अश्वो दे०) १

ओं वाजिन इत्यस्य (तथा ० आर्षी गायत्री छं० तथा ०) २

पदार्थः- हे तीसरे घोड़े २ जो ३ तेरा ४ वेग ५ हृदय प्रदेश में स्थापित

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है ६ और जो वेग ७ तुमने अपने आत्म प्रति विंव में ८ धारण किया ९ और १० प्राण में ११ व्याप्त हुआ १२ हे वेग वान घोड़े १३ उस १४ वल से १५ वल वान होते तुम १६ हमारे १७ अन्न को जीतने वाले १८ और १९ संग्राम में २० पार करने वाले हूजियै २१ अन्न को जीतने वाले २२ अन्न की ओर २३ चलते २४ हे घोड़ो तुम २५ वृहस्पति के २६ भाग चरु को २७ सूंघो ॥ ९ ॥

अथाध्यात्मम् - १ हे तीसरे प्राण २ जो ३ तेरा ४ वेग ५ हृदय प्रदेश में स्थापित है ६ और जो वेग तुमने ७ आत्म प्रति विंव में ८ धारण किया ९ और १० तेरे अंश प्राण समूह में ११ व्याप्त हुआ १२ हे वेग वान प्राण १३ उस १४ वल से १५ वल वान होते तुम १६ हम योगियों के १७ विराट् रूप अन्न के जेता १८ और १९ काम आदि के संग्राम में २० पार करने वाले हूजियै २१ विराट् रूप अन्न को जीतने वाले २२ विराट् रूप अन्न की ओर २३ चलने वाले २४ हे प्राणो तुम २५ ब्रह्मांड के स्वामी महानारायण के २६ अंश आत्मा को २७ आघ्राण करो ॥ ९ ॥

देवस्याह ꣳ सवितः सवे सत्यसवसो वृहस्पतेरुत्तमन्नाकꣳ रुहेयम्। देवस्याह ꣳ सवितः सवे सत्यसवस इन्द्रस्योत्तमन्नाकꣳ रुहेयम्। देवस्याह ꣳ सवितः सवे सत्यप्रसवसो वृहस्पतेरुत्तमन्नाकमरुहम्। देवस्याहं सवितः सवे सत्यप्रसवस इन्द्रस्योत्तमन्नाकमरुहम् १०

१ सत्यसवसः। २ सवितः। ३ देवस्य। ४ सवे। ५ अहम्। ६ वृहस्पतेः। ७ उत्तमम्। ८ नाकं। ९ रुहेयम्। १० सत्यसवसः। ११ सवितः। १२ देवस्य। १३ सवे। १४ अहम्। १५ इन्द्रस्य। १६ उत्तमम्। १७ नाकं। १८ रुहेयम्। १९ सत्यसवसः। २० सवितः। २१ देवस्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२२ २३ २४ २५ २६ २७ २८
सवे। अहꣳ। बृहस्पतेः। उत्तमम्। नाकम्। अरुहम्। सत्य सवसः
२९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६
सवितः। देवस्य। सवे। अहꣳ। इन्द्रस्य। उत्तमम्। नाकम्। अरुहम्॥ १०॥

इस कंडिका में ४ मंत्र हैं उनको कहते हैं उत्कर प्रदेश में गाड़े हुए नाभिमात्र काष्ठ के अग्र में स्थित रथचक्र पर ब्रह्मा आरोहण करता है उसके मंत्र १, २ यजमान आदि के सत्रह रथ सप्त दश शर प्रक्षेप प्रदेश में गाड़ी हुई औदुम्बरी शाखा को प्रदक्षिणी करके देव यजन देश में आने पर ब्रह्मा रथचक्र से उतरता है उसके मंत्र ३, ४

ओंदेवस्येत्यस्य (बृहस्पतिर्ऋ० निचृदार्ची बृहती ० लिङ्गोक्त दे०) १
ओंदेवस्येत्यस्य (तथा ० साम्नी जगती ० तथा) २
तथा (तथा ० आर्ची बृहती ० तथा) ३
तथा (तथा ० भुरिग्साम्नी जगती ० तथा) ४

पदार्थः - विप्र यज्ञ में चक्रारोहण का मंत्र १ सत्य आज्ञा वाले २ सविता ३ देवता अर्थात् ईश्वर वा गुरू की ४ आज्ञा में वर्त्तमान ५ ब्राह्मण में ६ ब्रह्मांडों के स्वामी महानारायण के ७, ८ परम धाम को ९ आरोहण करता हूं क्षात्र यज्ञ में चक्रारोहण का मंत्र १० सत्य आज्ञा वाले ११ सविता १२ देवता अर्थात् ईश्वर वा गुरु की १३ आज्ञा में वर्त्तमान १४ क्षत्री में १५ नारायण के १६, १७ वैकुंठ को १८ आरोहण करता हूं १९ सत्य आज्ञा वाले २० सविता २१ देवता अर्थात् ईश्वर वा गुरू की २२ आज्ञा में वर्त्तमान २३ ब्राह्मण में २४ ब्रह्मांडों के स्वामी महा नारायण के २५, २६ परम धाम को २७ आरोहण करता हूं २८ सत्य आज्ञा वाले २९ सविता ३० देवता अर्थात् ईश्वर वा गुरू की ३१ आज्ञा में वर्त्तमान ३२ क्षत्री में ३३ नारायण के ३४ ३५ वैकुंठ को ३६ आरोहण करता हूं॥ १०॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बृहस्पते वाजञ्जय बृहस्पतये वाचं वदत बृहस्पतिं वाजञ्ज्ञापयत। इन्द्र वाजञ्जयेन्द्राय वाचं वदतेन्द्रं वाजञ्ज्ञापयत॥११॥

बृहस्पतये। वाचं। वदत। बृहस्पते। वाजम्। जय। बृहस्पतिम्। वाजम्। ज्ञापयत। इन्द्राय। वाचं। वदते। इन्द्र। वाजम्। जय। इन्द्रं। वाजम्। ज्ञापयत॥११॥

अथाधिदैवम्- वेदी के समीप ऊंचे स्थाणु पर आरोपित सत्रह दुन्दुभियों के मध्य एक को मंत्र से बजाता है अन्य को चुपके से उनके मंत्र १२ ओं बृहस्पत इत्यस्य (बृहस्पति र्ऋ० प्राजापत्या त्रिष्टुप् छं० बृहस्पति दे०) १ ओं इन्द्र इत्यस्य (तथा ० प्राजापत्या बृहती छं० इन्द्रो दे०) २

पदार्थः विप्र यज्ञ सम्बधी मंत्र, हे दुन्दुभियो तुम १ महानारायण से २ यह वचन ३ कहो कि ४ हे महानारायण तुम ५ अन्न को ६ जीतो तथा हे दुन्दुभियो ७ महानारायण से ८ अन्न की ९ जय कराओ क्षात्र यज्ञ में दुन्दुभी बजाने का मंत्र, हे दुन्दुभियो तुम १० विष्णु के अर्थ ११ यह वचन १२ कहो १३ हे विष्णु १४ अन्न को १५ जीतो तथा हे दुन्दुभियो १६ विष्णु से १७ अन्न की १८ जय कराओ॥११॥

अथाध्यात्मम्- हे सप्त स्वर सहित दश अनाहत शब्दो तुम १ महानारायण के अर्थ २ वचन ३ कहो ४ हे महानारायण तुम ५ विराट् रूप अन्न को ६ जीतो तथा हे सप्त स्वर सहित अनाहत शब्दो ७ महानारायण से ८ विराट रूप अन्न की ९ जय कराओ हे सप्त स्वर सहित अनाहत शब्दो १० विष्णु के अर्थ ११ वचन १२ कहो १३ हे विष्णु १४ उक्त अन्न को १५ जीतो तथा हे सप्त स्वर सहित अनाहत शब्दो १६ विष्णु से १७ अन्न की १८ जय कराओ १९

एषा वः सा सत्या सं वाग्भूद्यया बृहस्पतिं वाज

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मजीजपताजीजपत बृहस्पतिं वाजं वनस्पतयो
विमुच्यध्वम्। एषा वः सा सत्या सं वाग्भूद्यया
न्द्रं वाज मजीजपताजीजपतेन्द्रं वाजं वनस्प
तयो विमुच्यध्वम् १२

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०

वः। एषा। सा। वाक्। सत्या। समभूत्। यया। बृहस्पतिम्। वाजम्। अजीजपत। बृहस्पतिम्। वाजम्। अजीजपत। वनस्पतयः। विमुच्यध्वम्। वः। एषा। सा। वाक्। सत्या। समभूत्। यया। इन्द्रं। वाजम्। अजीजपत। इन्द्रं। वाजम्। अजीजपत। वनस्पतयः। विमुच्यध्वम्॥ १२॥

सप्त दश दुन्दुभियों के मध्य मंत्र से बजाई हुई दुन्दुभी को मंत्र से ही उतारता है अन्य को चुपके से उस के मंत्र १,२

ओं एषाव इत्यस्य (बृहस्पतिर्ऋ० ब्राह्म्युष्णिक्० दुन्दुभयो दे०) १
तथा (तथा ० ब्राह्मी गायत्री० तथा ०) २

पदार्थः - हे दुन्दुभियो वा हे अनाहत शब्दो १ तुम्हारी २ यह ३ वह ४ वाणी ५ सत्य ६ हुई ७ जिस वाणी के द्वारा ८ महानारायण से ९, १० अन्न की जय कराई ११ महानारायण से १२ ब्रह्मांड रूप अन्न की १३ जय कराई १४ हे वनस्पति की विकार दुन्दुभियों अथवा प्राण निवृत्ति गगना मृत और मन के स्वामी अनाहत शब्दो तुम १५ कृत कृत्य होते मुक्त हूजिये क्षात्र यज्ञ का मंत्र, हे दुन्दुभियो वा हे अनाहत शब्दो १६ तुम्हारी १७ यह १८ वह १९ वाणी २० सत्य २१ हुई २२ जिस वाणी के द्वारा २३ विष्णु से २४ अन्न की २५ जय कराई २६ विष्णु से २७ देह रूप अन्न की २८ जय कराई २९ हे दुन्दुभियो अथवा प्राण निवृत्ति गगना मृत और मन के स्वामी अनाहत शब्दो तुम ३० मुक्त हूजिये॥ १२॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवस्याह थ्ं सवितुः सवे सत्यप्रसव सो बृहस्पते वाजजितो वाजञ्जेषम। वाजिनो वाजजितोद्धनस्कम्भुवन्तो योजनामिमानः काष्ठाङ्गच्छत १३

सत्यप्रसवसः। सवितुः। देवस्य। सवे। अहं। वाजजितः। बृहस्पतेः। वाजम्। जेषम्। वाजिनः। वाजजितः। अध्वनः। स्कम्भुवन्तः योजना। मिमानाः। काष्ठाम्। गच्छत॥ १३॥

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में दो मंत्र हैं यजमान मंत्र युक्त रथ पर चढ़ता है उसका मंत्र १ वाचन का मंत्र २

ओं देवस्येत्यस्य (बृहस्पति ऋ० आर्षी बृहती छं० लिङ्गोक्त दे०) १

ओं वाजिनइत्यस्य (तथा ० साम्नी जगती ० अश्वो दे०) २

पदार्थः – १ सत्य आज्ञा वाले २ सविता ३ देवता ४ की आज्ञा में वर्त्तमान ५ मैं ६ अन्न के जेता ७ महानारायण के ८ ब्रह्मांड रूप अन्न को ९ जीतूं १० हे घोड़े ११ अन्न के जेता १२ मार्गों को १३ रूंधते १४ योजनों को १५ अति शीघ्रता से चलते तुम १६ मार्गान्त सीमा को १७ प्राप्त करो॥ १३॥

अथाध्यात्मम् – १ सत्य आज्ञा वाले २,३ गुरु की ४ आज्ञा में वर्त्तमान ५ मैं योगी ६ विराट् रूप अन्न के जेता ७ ब्रह्मांडों के स्वामी महानारायण के ८ विराट् रूप अन्न को ९ जीतूं १० हे वेग वान प्राणो ११ ब्रह्मांड के जेता १२ कमल मार्गों को १३ रूंधते १४ योजनों को १५ चलते तुम १६ योग की अंत सीमा महानारायण को १७ प्राप्त करो॥ १३॥

एषस्य वाजी क्षिपणिन्तुरण्यति ग्रीवा योम्बद्धोऽपिकक्षासनिः। क्रतुन्दधिक्राअनु स थ्ं सनिष्यदत्पथा मङ्गा थ्ं स्य न्वायनीफणत्स्वाहा १४

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एषः। वाजी। यः। ग्रीवायाम्। कक्षे। असनि। अपि। वृद्धः। सा। दधिक्राः। क्रतुम्। अनु। संसुनिष्यदत्। पथा। थं। अङ्कोथं। सि। अन्वापनी। फणत्। क्षिपणिम्। तुरण्यति। स्वाहा॥ १४॥

अथाधिदैवम् - दो ऋचा से घृत को होमता है और दौड़ते हुए घोड़ों को अनु मंत्रण करता है उसका प्रथम मंत्र॥

ओं एषस्येत्यस्य (दधिक्रावा ऋ० आर्षी जगती छं० अम्बो दे०) १

पदार्थः - १ यह २ घोड़ा ३ प्राण रूप ४ ग्रीवा में ५ कक्ष में ६ मुख में ७ भी ८ सन्नाह आदि से बंधा है ९ वह १० मार्गावरोधक पर्वत पाषाण आदि को अतिक्रमण करने वाला ११,१२ सादि संकल्पानुसार १३ चलता १४ मार्गों के १५ नीचे ऊंचे स्थानों को १६ अति शीघ्र प्राप्त करता १७,१८ कोड़े की प्रेरणा से शीघ्र दौड़ता है १९ श्रेष्ठ होम हो॥ १४॥

अथाध्यात्मम् - १ यह २ वेग वान ३ प्राण ४ ग्रीवा ५ पार्श्व ६ मुख में ७ भी ८ प्राणायाम से निरुद्ध ९ अश्व ९ वह १० धारण करने वाले इन्द्रिय गोलकों को अतिक्रमण करने वाला प्राण ११,१२ आत्मा अभिप्राय के अनुसार १३ चलता १४ योग मार्गों के १५ कमलों को १६ अति शीघ्र प्राप्त करता १७,१८ योग विधि रूप चाबुक की प्रेरणा से शीघ्र दौड़ता है १९ गुरु के उपदेश से॥ १४

उतस्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः पर्णन्न वेरनुवाति प्रगर्धिनः। श्येनस्येव ध्रजतो अङ्कसम्परि दधिक्रावाणः सहोर्जा तरित्रतः स्वाहा १५

अस्य। दधिक्रावाणः। द्रवतः। तुरण्यतः। प्रगर्धिनः। श्येनस्य इव। ध्रजतः। ऊर्जा। सह। तरित्रतः। उत स्म। अङ्क सं। परि। अनु वाति। नः। वेः। पर्णम्। स्वाहा॥ १५॥

अथाधिदैवम् - दूसरा मंत्र,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं उतेत्यस्य (दधिक्रावा ऋ० ऋषी जगती छं० ऋग्वो दे०)१

पदार्थः - १ इस २ घोड़े के ३ चलते ४ शीघ्रता करते ५ सीमा को प्राप्त करना चाहते ६ श्येन पक्षी की ७ समान ८ वेग से चलते ९ बल के १० साथ ११ मार्ग को तरते १२ भी १३ शृंगार चिन्ह १४ वस्त्र चमर आदि सब देह में वर्त्तमान होता १५ इस प्रकार दीखता जाता है १६ जैसे १७ पक्षी का १८ पक्ष १९ श्रेष्ठ होम हो १६

अथाध्यात्मम् - १ इस २ कमलों का अतिक्रमण करने वाले प्राण के ३ चलते ४ शीघ्रता करते ५ अंत सीमा पाने की इच्छा करते ६ घोड़े की ७ समान ८ वेग से चलते ९ वेग के १० साथ ११ सुषुम्ना मार्ग को तरते १२,१३ मूलचक्र पर स्थित गणेशजी नाभि के अधः चक्र पर स्थित ब्रह्माजी, नाभिचक्र पर स्थित विष्णुजी, हृदयचक्र पर स्थित शिवजी, कंठचक्र पर स्थित देव समूह, भृकुटिचक्र पर स्थित ज्योतिस्वरूप इन सब का स्वरूप १४ सब ओर से १५ योगीजन को दृष्टिगोचर होता है १६ जैसे १७ पक्षी का १८ अंग भूत पक्ष १९ श्रुति के अनुसार ॥ १५ ॥

शन्नो भवन्तु वाजिनो हवेषु देवताता मितद्रवः स्वर्काः। जम्भयन्तो हिं वृकꣳ रक्षाꣳसि सनेम्यस्मद्युयवन्नमीवाः ॥ १६ ॥

देवताता। हवेषु। मितद्रवः। स्वर्काः। अहिं। वृकम्। रक्षांसि। जम्भयन्तः। वाजिनः। नः। शं। भवन्तु। अस्मत्। सनेमि। अमीवाः। युयवन् ॥ १६ ॥

अथाधिदैवम् - तीन ऋचा से घृत का होम वा घोड़े का अभिमंत्रण करता है उस का पहिला मंत्र

ओं शन्न इत्यस्य (वशिष्ठ ऋ० भुरिगार्षी पंक्ति छं० ऋग्वो दे०)१

पदार्थः - १ यज्ञ में २ आह्वानों के होने पर ३ परिमित चलने वाले ४ श्रेष्ठ प्रकाश वाले ५ सर्प ६ भेड़िया ७ राक्षसों को ८ नाश करने वाले ९ घोड़े १०

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे ११ सुखदाता १२ होओ १३ हमारी १४ पुरानी १५ व्याधियों को १६ पृथक् करो॥ १६॥

अथाध्यात्मम्- १ योग यज्ञ में २ आह्वानों के होने पर ३ आत्मा के अभिप्रायानुसार चलने वाले ४ विराट् रूप श्रेष्ठ अन्न वाले ५ पापद्वेषी ६ काम ७ क्रोध आदि असुर गणों को ८ नाश करने वाले ९ वेग वान प्राण १० हम योगियों के लिये ११ कल्याण रूप १२ होओ १३ हमारी १४ पुरातन १५ जन्म मरण सुख दुख आदि व्याधियों को १६ पृथक् करो॥ १६॥

तेनोऽअर्वन्तो हवनऽश्रुतोहवं विश्वेऽऋण्वन्तु वाजिनो मितद्रवः सहस्रसा मेधसाता सनिष्यवो महो ये धनꣳ समिथेषु जभ्रिरे॥ १७॥

१ ते। विश्वे। मितद्रवः। हवन्। श्रुतः। सहस्रसाः। मेधसाता। सनिष्यवः। वाजिनः। अर्वन्तः। नः। हवम्। ऋण्वन्तु। ये। समिथेषु। महः। धनꣳ। जभ्रिरे॥ १७॥

अथाधिदैवम्- दूसरा मंत्र,

ओं तेन इत्यस्य (नाभानेदिष्ट ऋ० आर्षी जगती छं० अश्वो दे०) १

पदार्थः- १ वे २ सब ३ आह्वान को सुन्ने वाले ४ यजमान के चित्तानुकूल परिमित चलने वाले ५ बहुत मनुष्यों की तृप्ति में समर्थ बड़ी अन्न राशि के देने वाले ६ यज्ञ शाला के ७ पूरक ८ वेग वान ९ घोड़े १० हमारे ११ आह्वान को १२ सुनो १३ जिन घोड़ों ने १४ संग्रामों में १५ बड़े पूज्य १६ धन को १७ आहरण किया॥ १७॥

अथाध्यात्मम्- १ वे २ सब ३ आह्वान के सुन्ने वाले ४ आत्मा के अनुकूल परिमित चलने वाले ५ महा नारायण के दाता ६ मन हृदय भृकुटि गगन मंडल रूप यज्ञ शाला के ७ पूरक ८ वेग वान ९ प्राण १० हमयो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गियों के ११ आह्वान को १२ सुनों १३ जिन प्राणों ने १४ काम आदि के संग्रामों में १५ बड़ी १६ योग लक्ष्मी को १७ आहरण किया॥ १७॥

वाजे वाजे वत वाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः अस्य मध्वः पिवत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः १८

वाजिनः। विप्राः। अमृताः। ऋतज्ञाः। वाजे। वाजे। धनेषु। नः अवत। अस्य। मध्वः। पिवत। मादयध्वं। तृप्ताः। देवयानैः। पथिभिः। यात। १८

अथाधिदैवम् तीसरा मंत्र,

ओं वाज इत्यस्य (वसिष्ठ ऋ० निचृदार्षी त्रिष्टुप् छं० अश्वो दे०) १

पदार्थः – १ हे घोड़ा २ मेधावी ३ अमरण धर्म वाले ४ सत्य वा यज्ञ के दाता तुम ५, ६ सब अन्नों के ७ और धनों के उपस्थित होने पर ८ हम को ९ रक्षा करो १० इस ११ धावन से पहले और पीछे सूंघे हुए नैवार चरु लक्षण मधुर हवि का १२ पान करो १३ और तृप्त होओ १४ तृप्त होते १५ देवयान १६ मार्गों से १७ जाओ॥ १८॥

अथाध्यात्मम्. १ हे प्राणो २ वेद के ज्ञाता ३ जीवन मुक्त ४ ब्रह्म के जानने वाले तुम ५, ६ व्यष्टि समष्टि देह रूप अन्न ७ और अष्ट सिद्धि आदि धनों के उपस्थित होने पर ८ हम योगियों को ९ रक्षा करो तथा १० इस ११ मधु ब्राह्मणोक्त ज्ञान का १२ पान करो १३ और तृप्त होओ १४ तृप्त होते १५ विद्वानों के चलने योग्य १६ सुषुम्ना मार्गों से १७ जाओ॥ १८॥

आ मा वाजस्य प्रसवो जगम्यादे मे द्यावापृथिवी विश्वरूपे। आ मा गन्ता मितरा मातरा च मा सोमो अमृतत्वेन गम्यात्। वाजिनो वाजजितो वाजं छं सस्त्वा छं सोऽवृहस्पतेर्भागमवजिघ्रत निमृजानाः १९

वाजस्य। प्रसवः। मा। आ। जगम्यात्। इमे। विश्वरूपे। द्यावापृथि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्यौ। आ। पितरा मातरा। मा। आगन्ताम्। च। सोमः। अमृतत्वेन। मा। आगम्यात्। वाजिनः। वाजजितः। वाजं त्वं। सरः वाजं सः। निमृजानः। बृहस्पतेः। भागम्। अवजिघ्रत॥१९॥

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में दो मंत्र हैं उनको कहते हैं यजमान रथ से उतर कर चात्वाल उत्कर के मध्य स्थित नैवार चरु को स्पर्श करता है उस का मंत्र १ मंत्र से युक्त घोड़ों को नैवार चरु सुंघाता है उस का मंत्र २

ओं आमा वाजस्येत्यस्य (वसिष्ठ ऋ० निच्छदार्षी त्रिष्टुप् ० प्रजापतिर्दे०)१

ओं वाजिन इत्यस्य (तथा ० प्राजापत्या त्रिष्टुप् ० अश्वो दे०)२

पदार्थः १ अन्न की २ उत्पत्ति ३ मुझ को ४ प्राप्त हो ५ ये ६ विश्व रूप ७ पृथिवी स्वर्ग ८ प्राप्त हों ९ माता पिता रूप वे दोनों १० मेरे समीप ११ आओ १२ और १३ सोम १४ अमृत भाव से १५ मुझ को १६ प्राप्त होवे १७ हे घोड़ो १८ अन्न के जेता १९ अन्न की ओर २० चलने वाले २१ उस अन्न के शोधने वाले तुम २२ बृहस्पति सम्बंधी २३ भाग को २४ आघ्राण करो॥१९॥

अथाध्यात्मम् – उत्थान में प्रार्थना करता है १ भूतात्मा की २ उत्पत्ति ३ मुझ को ४ प्राप्त होवे ५ ये ६ विश्व रूप ७ हृदय और मन ८ प्राप्त होवें ९ मन और बुद्धि की वृत्तियां १० मुझ को ११ प्राप्त होवें १२ और १३ आत्म प्रति बिंब १४ जीवन मुक्ति सहित १५ मुझ आत्मा को १६ प्राप्त होवे १७ हे प्राणो १८ समाधि में ब्रह्मांड के जेता १९ उत्थान अवस्था में ब्रह्मांड की ओर २० चलने वाले २१ देह शोधन करने वाले आप २२ ब्रह्मांडों के स्वामी महानारायण के २३ अंश आत्मा को २४ आघ्राण करो॥१९॥

आपयेस्वाहा स्वापयेस्वाहा पिजायस्वाहा क्रतवे स्वाहा वसवे स्वाहा हर्पतयेस्वाहा ह्मे मुग्धायस्वाहा मुग्धायवैनꣳ शिनायस्वाहा विनꣳ शिनऽआन्त्या

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यनाय स्वाहान्त्याय भौवनाय स्वाहा भुवनस्य पतये स्वाहाधिपतये स्वाहा २०

आपये। स्वाहा। स्वापये। स्वाहा। अपिजाय। स्वाहा। ऋतवे। स्वाहा। वसवे। स्वाहा। अहर्पतये। स्वाहा। मुग्धाय। अह्ने। स्वाहा। मुग्धाय। वैनꣳशिनाय। स्वाहा। विनꣳशिने। आन्त्यायनाय। स्वाहा। आन्त्याय। भौवनाय। स्वाहा। भुवनस्य। पतये। स्वाहा। अधिपतये। स्वाहा॥ २०॥

द्वादश स्रुवा हुति को होमता है वा केवल मंत्र को पढ़ता है उसके मंत्र १-१२

ओं १,२,४,५ मंत्राणां (वशिष्ठ ऋ० दैवी पंक्ति छं० प्रजापति र्दे०) ३-१२

ओं अपिजा येत्यस्य (तथा ० याजुषी गायत्री० तथा) ३-१२

ओं ६,७,१२ मंत्राणां (तथा ० याजुष्युष्णिक् छं० तथा)

ओं मुग्धा येत्यस्य (तथा ० याजुषी पंक्ति छं० तथा) ८

ओं विनंशिन इत्यस्य (तथा ० याजुषी त्रिष्टुप् छं० तथा) ९

ओं १०,११ मंत्रयोः (तथा ० याजुषी बृहती छं० तथा)

पदार्थः – १ धनआदि के प्रापक अग्नि स्वरूप प्रजा पति के लिये २ श्रेष्ठ होम हो ३ अपने आत्मा को प्राप्त कराने वाले ज्ञान स्वरूप प्रजा पति के लिये ४ श्रेष्ठ होम हो ५ वरुण रूप प्रजा पति के लिये ६ श्रेष्ठ होम हो ७ संकल्पात्मक समष्टि मन चंद्रमा रूप प्रजा पति के लिये ८ श्रेष्ठ होम हो ९ विराट् रूप प्रजा पति के लिये १० श्रेष्ठ होम हो ११ विराट् के आत्मा अथवा विराट् चक्षु रूप सूर्य के लिये १२ श्रेष्ठ होम हो १३ मोहक १४ प्रधान रूप प्रजा पति के लिये १५ श्रेष्ठ होम हो १६ मोहक १७ विनाश शील महत रूप के लिये १८ श्रेष्ठ होम हो १९ विनाश शील २० अहंकार रूप के लिये २१ श्रेष्ठ होम हो २२ प्रधान से उत्पन्न २३ ब्रह्मांड में प्रादुर्भूत आत्म प्रति बिंब

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप प्रजा पति के लिये २४ श्रेष्ठ होम हो २५ ब्रह्मांड के २६ स्वामी नर के लिये २७ श्रेष्ठ होम हो २८ ब्रह्मांडों के अधिपति नारायण के लिये २९ श्रेष्ठ होम हो ३०

अथाध्यात्मम् – १ शास्त्र ज्ञान प्राप्त कराने वाले वाक् इन्द्रिय के लिये २ महा वाक् जिस का अर्थ यह है कि वाक् ब्रह्म है ३ आत्मा की प्राप्ति कराने वाले ज्ञान के लिये ४ महा वाक् जिस का अर्थ यह है कि मनुष्य देवता प्राणी और ये लोक सब आत्मा हैं ५ जिह्वा के लिये ६ महा वाक् जिस का यह अर्थ है अपने भोजन के सिवाय यज्ञों में अन्न दान करना चाहिये क्योंकि केवल अपने मुखों मेंही होमना जो अति मान है वही पराभाव का कारण है ७ संकल्पात्मक मन के लिये ८ महा वाक् जिस का यह अर्थ है कि निश्चय मन ब्रह्म है ९ भूतात्मा के लिये १० महा वाक् जिस का यह अर्थ है कि जो सब प्राणियों में स्थित होता सब का अंतर्यामी है जिस को प्राणी नहीं जानते सब प्राणी जिस के शरीर हैं वही तेरा आत्मा अंतर्यामी अविनाशी है ११ चक्षु के लिये १२ महा वाक् जिस का यह अर्थ है कि निश्चय चक्षु ब्रह्म है १३ मोहक १४ अज्ञान के लिये १५ महा वाक् जिस का यह अर्थ है जो पुरुष आत्म लोक को न देख कर इस लोक से जाता है वह अज्ञानी उस को नहीं भोगता है आत्म लोक को ही उपासना करो जो उस की उपासना करता है उस का कर्म क्षय नहीं होता इस आत्मा से जो २ चाहता है वह सब सिद्ध होता है १६ मोहक १७ विनाश शील संसार के लिये १८ महा वाक् जिस का अर्थ यह है जो सब लोकों में स्थित होता सब लोकों का अंतर्यामी और शासन करता है और सर्व लोक जिस के शरीर हैं और सब लोक जिस को नहीं जानते वह तेरा आत्मा अंतर्यामी और अविनाशी है १९ विनाश शील २० अज्ञान से उत्पन्न काम के लिये २१ महा वाक्, जिस का यह अर्थ है कि जो कामना इस के हृदय में स्थित हैं वे सब जब त्यक्त हो जाती हैं तब वह मरणाधर्म वाला

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमृत होता है और इसी जन्म में ब्रह्म को प्राप्त करता है २२ अज्ञान रूप २३ देह में प्रादुर्भूत आत्म प्रति बिंब के लिये २४ महा वाक जिस का यह अर्थ है कि महा वाक रूप सरस्वती और नरनारायण देवता यजमान के शिर आत्म प्रति बिंब को ब्रह्म में लय करते हैं २५ देह के २६ स्वामी जीवात्मा के लिये २७ महा वाक २८ ईश्वर के लिये २९ महा वाक जिस का यह अर्थ है कि जो दूसरे देवता की उपासना करता है और समझता है कि मैं अन्य हूं और देवता अन्य है वह अज्ञानी है और देवताओं का पशु है क्योंकि द्वैत अवस्था में संसार का भय होता है॥ २०॥

आयुर्यज्ञेन कल्पताम्प्राणो यज्ञेन कल्पताञ्चक्षुर्यज्ञेन कल्पताꣳ श्रोत्रं यज्ञेन कल्पताम्पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्। प्रजापतेः प्रजाअभूमः स्वर्देवा अगन्मामृता अभूम २१

आयुः। यज्ञेन। कल्पताम्। प्राणः। यज्ञेन। कल्पताम्। चक्षुः। यज्ञेन। कल्पताम्। श्रोत्रं। यज्ञेन। कल्पताम्। यज्ञः। यज्ञेन। कल्पताम्। प्रजापतेः। प्रजाः। अभूम। देवाः। स्वः। अगन्म। अमृताः। अभूम॥ २१॥

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में ९ मंत्र हैं उनको कहते हैं, छै मंत्रों से होम करता है वा उन को पढ़ता है वे मंत्र १ से ६ तक, पत्नी और यजमान नसेनी से यूप पर चढ़ते हैं उसका मंत्र, गेंहूं की पिट्ठी से निर्मित चषाल को यजमान स्पर्श करता है उसका मंत्र, शिर को यूपाग्र से ऊंचा करता है उसका मंत्र-

ओं षट् मंत्राणां (वशिष्ठ ऋ० प्राजापत्या गायत्री ० प्रजापति दे०) १-६
ओं प्रजापत इत्यस्य (तथा ० याजुषी बृहती ० यजमानो दे०) ७
ओं स्वरित्यस्य (तथा ० दैवी त्रिष्टुप् ० तथा) ८

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं अमृत इत्यस्य (वशिष्ट ऋ० याजुषी गायत्री छं० तथा०) ९

पदार्थः-- १ अस्म शून्य पूर्णायु २ यज्ञ द्वारा ३ निर्मित हो ४ प्राणा याम-आदि के साधन में समर्थ प्राण ५ यज्ञ द्वारा ६ निर्मित हो ७ भगवत मूर्ति और सा धु दर्शन में समर्थ चक्षु ८ यज्ञ द्वारा ९ निर्मित हो १० भगवत कथा के श्रवण-में समर्थ श्रोत्र ११ यज्ञ द्वारा १२ निर्मित हो १३ भक्त यज्ञ और द्रव्य यज्ञ १४ वि-ष्णु के अनुग्रह से १५ निर्मित हों १६ हम ब्रह्म वाम महानारायण के १७ भक्त १८ होवें १९ हे ब्रह्मा विष्णु महेश देवता ओ हम २० स्वर्ग को २१ जावें २२ मुक्त २३ होवें॥ २१॥

अथाध्यात्मम् – प्रारब्ध समाप्ति तक फिर प्रार्थना करता है १ आयु २ विष्णु से ३ निर्मित हो ४ समर्पित प्राण ५ विष्णु से ६ निर्मित हो ७ समर्पित-चक्षु ८ विष्णु से ९ निर्मित हो १० श्रोत्र ११ विष्णु से १२ निर्मित हो १३ स-मर्पित आत्मा १४ विष्णु से १५ निर्मित हो १६ हम महानारायण के १७ अ-नन्य भक्त १८ हों १९ हे ब्रह्म परा महानारायणो हम २० परम धाम को २१ जावें २२ मुक्त २३ होवें॥ २१॥

अस्मे वो अस्त्विन्द्रियमस्मे नृम्णमुत क्रतुरस्मे वर्चांसि सन्तु वः। नमो मात्रे पृथिव्यै नमो मात्रे पृथिव्या इयन्ते राड्यन्तासि यमनो ध्रुवोसि धरुणः। कृष्यै त्वा क्षेमाय त्वा रय्यै त्वा पोषाय त्वा ३२

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०
वः। इन्द्रियम्। अस्मे। अस्तु। नृम्णं। अस्मे। उत। वः। क्रतुः। व-
११ १२ १३ १४ १५ १६ १७
र्चांसि। अस्मे। सन्तु। मात्रे। पृथिव्यै। नमः। मात्रे। पृथिव्यै।
१८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७
नमः। ते। इयं। राट्। यन्ता। असि। यमनः। ध्रुवः। धरुणः। अ-
२८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५
सि। कृष्यै। त्वा। क्षेमाय। त्वा। रय्यै। त्वा। पोषाय। त्वा॥ २२॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में ४ मंत्र हैं उनको कहते हैं, यूपारूढ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यजमान दिशाओं को देखता है उसका मंत्र १ यूपारूढ़ यजमान भूमि को देखता है उसका मंत्र २ उत्तर वेदी के ऊपर औदुम्बरी आसंदी पर वस्त्र चर्म को बिछाता है उसका मंत्र ३ आसंदी पर यजमान को बिठाता है उसका मंत्र ४

ओं अस्मेव इत्यस्य (वसिष्ठ ऋ० निचृदार्षी गायत्री० दिशो दे०) १
ओं नमो मात्र इत्यस्य (तथा० साम्न्युष्णिक् छं० पृथिवी दे०) २
ओं द्यंत इत्यस्य (तथा० दैवी बृहती० आसंदी दे०) ३
ओं यंतासीत्यस्य (तथा० निचृदार्षी बृहती० यजमानो दे०) ४

पदार्थः - हे दिशाओ १ तुम्हारा २ वीर्य ३ हम में ४ स्थापित हो ५ तुम्हारा धन ६ हम में स्थापित हो ७ और ८ तुम्हारा ९ कर्म १० और तेज ११ हम में १२ स्थापित हो १३ माता रूप १४ पृथिवी के लिये १५ नमस्कार १६ फिर माता रूप १७ पृथिवी के लिये १८ नमस्कार हे आसंदी १९ तेरा २० यह २१ राज्य है हे यजमान तुम २२ सब के नियंता २३ हो २४ स्वयं संयम करने वाले २५ स्थिर २६ और धारण करने वाले २७ हो २८ कृषि सिद्धि के लिये २९ तुझे बिठलाता हूं ३० लब्ध की रक्षा के लिये ३१ तुझे बिठलाता हूं ३२ धन के लिये ३३ तुझे बिठलाता है ३४ पुष्टि के लिये ३५ तुझे बिठलाता हूं ॥२२॥

अथाध्यात्मम् - हे इन्द्रियालयो १ तुम्हारा २ वीर्य ३ मेरे मध्य ४ होय ५ तुम्हारी सम्पति ६ मेरे पास हो ७ और ८ तुम्हारा ९ कर्म १० और तेज ११ मुझ में १२ हो १३, १४ हृदय रूप पृथिवी के लिये १५ नमस्कार १६, १७ मन रूप पृथिवी के लिये १८ नमस्कार हे हृदय वा मन १९ यह देह रूप ब्रह्मपुरी २० तेरा २१ राज्य है हे आत्म प्रतिबिंब तुम २२ इन्द्रियों के नियंता २३ हो २४ तथा संयमन कर्त्ता २५ अचल २६ और देह के धारण करने वाले २७ हो २८ भक्ति योग सम्बन्धी कर्म सिद्धि के लिये २९ तुझे बिठलाता हूं ३० लब्ध मोक्ष की रक्षा के लिये ३१ तुझे बिठलाता हूं ३२ योगैश्वर्य के लिये ३३ तुझे बि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठलाता हूं ३४ शम दम आदि पुष्टि के लिये ३५ तुझे विठलाता हूं ॥२२॥

वाजस्ये मम्प्रसवः सुषुवे ग्रे सोम ँ राजान मोषधीष्व प्सु। ता अस्मभ्यम्मधुमती र्भवन्तु वय ँ राष्ट्रे जागृयाम् पुरोहिताः स्वाहा॥२३

वाजस्य। प्रसवः। अग्रे। ओषधीषु। अप्सु। इमम्। राजानम्। सोम ँ। सुषुवे। ताः। अस्मभ्यम्। मधुमतीः। भवन्तु। पुरोहिताः। वय ँ। राष्ट्रे। जागृयाम। स्वाहा॥ २३॥

अथाधिदैवम् – औदुम्बर पात्र में मिलाये हुए दुग्ध चांवल आदि धान्य को सप्त मंत्र द्वारा स्रुवा से आहवनीय अग्नि में होमता है उन मंत्रों में पहिला मंत्र १

ओं वाजस्ये त्यस्य (वसिष्ठ ऋ० सुरा डार्षी त्रिष्टुप छं० प्रजा पति र्दे०) १

पदार्थः – १ अन्न के २ उत्पन्न करने वाले प्रजा पति ने ३ सृष्टि की आदि में ४ ओषधी ५ और जलों में ६ इस ७ दीप्ति मान ८ वल्ली रूप सोम को ९ उत्पन्न किया १० वे ओषधि और जल ११ हमारे लिये १२ रस वान और मधुरता से युक्त १३ होओ १४ हे पुरोहितो १५ हम १६ अपने देश में १७ अप्रमत्त होवें १८ श्रेष्ठ होम हो॥ २३॥

अथाध्यात्मम् – १ व्यष्टि समष्टि देह रूप अन्न के २ स्रष्टा महानारायण ने ३ सृष्टि की आदि में ४ इन्द्रियों ५ और इन्द्रियों के अंतरिक्ष में ६ इस ७, ८ आत्म प्रतिबिंब को ९ उत्पन्न किया १० वे इन्द्रियां और इन्द्रियांतरिक्ष ११ तुम आत्मा रूप योगियों के लिये १२ ब्रह्म ज्ञान सम्पन्न १३ होओ १४ हे गुरुओ १५ हम योगीजन १६ ब्रह्म पुर शरीर में १७ अप्रमत्त हों १८ गुरु के उपदेश से॥ २३॥

वाजस्ये मामप्रसवः शिश्रिये दिवि मि माच विश्वा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भुवनानि सम्राट। अदित्सन्तन्दापयति प्रजानन्स
नो रयिꣳ सर्व्ववीरन्नि यच्छतु स्वाहा ॥२४॥

वाजस्य। प्रसवः। इमाम। दिवम। इमा। विश्वा। भुवनानि। श्रि
श्रिये। सः। सम्राट। अदित्सन्तम। प्रजानन। दापयति। नः।
सर्व वीरम्। रयिꣳ। नियच्छतु। स्वाहा ॥२४॥

अथाधिदैवम् – दूसरा मंत्र-

ओं वाजस्येत्यस्य (वसिष्ठ ऋ० आर्षी जगती छं० प्रजापति र्दे०) १

पदार्थः – १,२ अन्न के उत्पन्न करने वाले प्रजापति ने ३ इस पृथिवी ४ स्वर्ग ५ इन ६ सब ७ प्राणियों को ८ अपने आत्मा से व्याप्त किया ९ वह १० सब भुवनों का राजा ११ सर्व स्वार्पण से हवि देना न चाहते मुझ को १२ जानता १३ उत्थान अवस्था में फिर हवि दान कराता है १४ वह हमारे लिये १५ पुत्र भृत्य आदि से युक्त १६ धन को १७ दान करे १८ उसके लिये श्रेष्ठ होम हो। २४

अथाध्यात्मम् – १ ब्रह्मांड रूप अन्न के २ उत्पन्न कर्त्ता महानारायण ने ३ इस मानस भूमि ४ भृकुटि ५ इन ६ सब ७ कमलों को ८ आत्मा रूप से व्याप्त किया ९ वह १० ब्रह्मांडों का स्वामी ११ पहले ही सर्वस्व दान से हवि देना न चाहते मुझ को १२ जानता उत्थान अवस्थान में दान शक्ति के देने से १३ फिर हवि दान कराता है वह महानारायण १४ हमारे लिये १५ प्राण सहित १६ जीवन मुक्ति लक्ष्मी को १७ प्रदान करे १८ तत्व मसि इस महा वाक् के उपदेश से २४॥

वाजस्यनु प्रसव आव भूवेमा च विश्वा भुवनानि सर्व
तः। सनेमि राजा परियाति विद्वान्प्रजाम्पुष्टिं वर्द्धयमा
नो अस्मे स्वाहा २५

नो। वाजस्य। प्रसवः। इमा। विश्वा। भुवनानि। सर्वतः। आवभूव

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६
च। सूनुर्मि। विद्वान्। राजा। अस्मै। प्रजा। पुष्टि। वर्धय मानः।
परि याति। स्वाहा॥ २५॥ तीसरा मंत्र-

ओं वाजस्येत्यस्य (वसिष्ठ ऋ० सुराडार्षी त्रिष्टुप् छं० प्रजापति र्दे०) १

पदार्थः - १ आश्चर्य कि २ अन्न वा ब्रह्मांड के ३ उत्पन्न कर्त्ता महानारायण ने ४ इन ५ सब ६ भुवनों को ७ सब ओर से ८ उत्पन्न किया ९ और १० पुरातन ११ विद्वान १२ जीवेश रूप १३ मुझ आत्म प्रति विंब में १४ पुत्र आदि संतति वा प्राण को १५ तथा धन पुष्टि वा योगैश्वर्य पुष्टि को १६ बढ़ाता हुआ १७ उन भुवनों को सब ओर से व्याप्त करता है १८ वैदिक प्रमाण से अथवा उसके लिये श्रेष्ठ होम हो॥ २५॥

सोम ँ राजान मवसेग्नि मन्वारभामहे। आदित्यान्विष्णु ँ सूर्यम्ब्रह्माणञ्च बृहस्पतिं स्वाहा॥ २६॥

राजानम्। सोम ँ। अग्निम्। आदित्यान्। सूर्यम्। विष्णु ँ। ब्रह्माणम्। च। बृहस्पतिम्। अवसे। अन्वारभामहे। स्वाहा २६

अथाधिदैवम्- चौथा मंत्र-

ओं सोममित्यस्य (तापस ऋ० आर्ष्यनुष्टुप् छं० सोमादयो दे०) १

पदार्थः - १,२ राजा सोम ३ अग्नि ४ द्वादशादित्य ५ सूर्य ६ विष्णु ७ ब्रह्मा ८ और ९ बृहस्पति को १० रक्षण वा तर्पण के लिये ११ आव्हान करते हैं १२ उनके लिये श्रेष्ठ होम हो॥ २६॥

अथाध्यात्मम्- समाधि में देव भाव प्राप्त करने वाले आत्म प्रति विंब आदि को आव्हान करता है १ दीप्ति मान २ प्रति विंब ३ जाठराग्नि ४ इन्द्रियां ५ जीवात्मा ६ ईश ७ मन ८ और ९ प्राण को १० संसार से रक्षा करने के लिये ११ हम आव्हान करते हैं १२ गुरु के उपदेश से॥ २६॥

अर्य्यमणम्बृहस्पति मिन्द्रन्दानाय चोदय। वाचं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विष्णुꣳ सरस्वतीꣳ सवितारञ्च वाजिनꣳ स्वाहा २७
वाजिनम्। अर्य्यमणम्। बृहस्पतिम्। इन्द्रम्। वाचं। सरस्वतीꣳ। विष्णुꣳ। च। सवितारम्। दानाय। चोदय। स्वाहा २७

अथाधिदैवम्- पांचवां मंत्र

ओं अर्य्यमणमित्यस्य (तापस ऋ० स्वराडार्ष्यनुष्टुप् अर्य्यमाद्या दे०) १

पदार्थः- हे महानारायण तुम १ इन अन्न वान २ अर्यमा ३ बृहस्पति ४ देवराज इन्द्र ५ वागाधिष्ठात्री ६ सरस्वती ७ विष्णु ८ और सूर्य को ९ धन प्रदान के लिये ११ प्रेरणा करो १२ उनके लिये श्रेष्ठ होम हो ॥२७॥

अथाध्यात्मम्- हे महानारायण तुम १ देह रूप अन्न वाले २ मन ३ प्राण ४ जीवात्मा रूप यजमान ५,६ सरस्वती रूप वाणी ७ ईश ८ और ९ प्रतिबिंब को १० अपनी शक्ति दान के लिये ११ प्रेरणा करो १२ अपने उपदेश से ॥ २७ ॥

अग्ने अच्छा वदेह नः प्रतिनः सुमना भव। प्रनो यच्छ सहस्रजित्वꣳ हि धनदा असि स्वाहा ॥२८॥

अग्ने। इह। नः। अच्छ। आवद। नः। प्रति। सुमनाः। भव। सहस्रजित्। त्वꣳ। हि। धनदाः। असि। नः। प्रयच्छ। स्वाहा। २८

अथाधिदैवम्- छठा मंत्र

ओं अग्न इत्यस्य (तापस ऋ० भुरिगार्ष्यनुष्टुप् अग्निर्दे०) १

पदार्थः- १ हे अग्ने २ इस यज्ञ में ३ हमारे हित को ४ सन्मुख आकर ५ कहो ६,७ हमारे ऊपर ८ करुणार्द्रचित्त ९ हो १० हे बहुत धन के जेता अग्ने ११,१२ तुम हीं १३ धन के दाता १४ हो १५ हमारे लिये १६ धन दीजिये १७ उस तुझ के लिये श्रेष्ठ होम हो ॥२८॥

अथाध्यात्मम्- १ हे ब्रह्माग्नि २ इस विषय होम यज्ञ में ३ हमारे ४ सन्मुख आकर ५ तत्व मसि महा वाक् को कहो ६,७ हमारे ऊपर ८

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करुणार्द्रचित्त हो १० हे अखंड ब्रह्मांडों के जेता ११,१२ तुम ही १३ योग लक्ष्मी के दाता १४ हो १५ हम योगियों के लिये १७ योग धन दीजिये १७ महा वाक् के उपदेश से॥ २८॥

प्रनो यच्छत्वर्य्यमा प्र पूषा प्र बृहस्पतिः। प्रवा
ग्देवी ददातु नः स्वाहा २९

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
अर्यमा। नः। प्रयच्छतु। पूषा। प्र। बृहस्पतिः। प्र। देवी। वाक्
१० ११ १२
नः। प्रददातु। स्वाहा॥ २९॥

अथाधिदैवम् – सातवां मंत्र-

ओं प्रन इत्यस्य (तापस ऋ० भुरिगार्षी गायत्री छं० वागादयो दे०) १

पदार्थः – १ अर्यमा देवता २ हमारे लिये ३ अभीष्ट दान करो ४ पूषा देवता ५ अभीष्ट दान करो ६ बृहस्पति ७ अभीष्ट दान करो ८ दीप्यमान ९ वाक् १० हमारे लिये ११ अभीष्ट दान करो १२ उनके लिये श्रेष्ठ होम हो॥ २९॥

अथाध्यात्मम् – १ मन २ हम योगियों के लिये ३ इन्द्रिय जय प्राप्त कराओ ४ प्रति विंब ५ इन्द्रिय जय प्राप्त कराओ ६ प्राण ७ इन्द्रिय जय प्राप्त कराओ ८ देव सम्बंधिनी ९ महा वाक् १० हमारे लिये ११ मोक्ष दान करो १२ गुरु के उपदेश से॥ २९॥

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे श्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णो
हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रियै दधा
मि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ ३०

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
सवितुः। देवस्य। प्रसवे। त्वा। अश्विनोः। बाहुभ्यां। पूष्णः
८ ९ १० ११
हस्ताभ्याम्। बृहस्पतेः। साम्राज्येन। अभिषिञ्चामि।
१२ १३ १४ १५ १६ १७ १८
त्वा। सरस्वत्यै। वाचः। यन्तुः। यन्त्रियै। दधामि। असौ॥ ३०॥

अथाधिदैवम्- हुत शेष द्रव्य से यजमान को सींचता है उसका मंत्र-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओंदेवस्येत्यस्य (तापस ऋ० आर्षीजगती छं० सम्राट् दे०) १

पदार्थः – हे यजमान १ सविता २ देवता की ३ आज्ञा में वर्त्तमान में ४ तुम को ५ अश्विनी कुमार के ६ बाहु भाव को प्राप्त अपनी भुजाओं ७ और पूषा देवता के ८ हस्त भाव को प्राप्त अपने हाथों से ९ बृहस्पति सम्बंधी १० साम्राज्य द्वारा ११ अभिषिक्त करता हूं १२ तुम को १३ भक्ति ज्ञान दाता वचन के लाभार्थ १४,१५ ध्यान के १६ ऐश्वर्यार्थ १७ आसन स्थ करता हूं हे देवताओ १८ यह सम्राट् है इस को रक्षा करो॥ ३०॥

अथाध्यात्मम् – गुरु कहता है, हे योगिन् १,२ ईश्वर की ३ आज्ञा में वर्त्तमान मैं ४ तुझे ५ हृदय मन की ६ भुजाओं ७ और मानस सूर्य के ८ हाथों से ९ प्राण के १० साम्राज्य में ही ११ अभिषिक्त करता हूं १२ तुझे १३ महा वाक् के लाभार्थ १४,१५ समाधि के १६ ऐश्वर्य में १७ स्थापन करता हूं हे ब्रह्म परा महानारायणो १८ यह वह सम्राट् है उसको रक्षा करो। ३०।

अग्निरेकाक्षरेण प्राणमुदजयत्तमुज्जेषमश्विनो द्व्यक्षरेण द्विपदो मनुष्यानुदजयतान्तानुज्जेषं विष्णुस्त्र्यक्षरेणत्रीँल्लोकानुदजयत्तानुज्जेषꣳ सोमश्चतुरक्षरेणचतुष्पदः पशूनुदजयत्तानुज्जेषम् ३१

अग्निः। एकाक्षरेण। प्राणम्। उदजयत्। तम्। उज्जेषम्। अश्विनोः। द्व्यक्षरेण। द्विपदः। मनुष्यान्। उदजयत्। तान्। उज्जेषं। विष्णुः। त्र्यक्षरेण। त्रीन्। लोकान्। उदजयत्। तान्। उज्जेषम्। सोमः। चतुरक्षरेण। चतुष्पदः। पशून्। उदजयत्। तान्। उज्जेषम्॥ ३१॥

उज्जित नाम १७ मंत्रों से होम करता है वा उन को पढ़ता है उन में चार मंत्र ओंअग्नि+विष्णुरिति मंत्रयोः (तापस ऋ० निचृदार्षीगायत्री वा साम्नीबृहती छं० लिं० दे०) १,३

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं अश्विनौ + सोमेति मंत्रयोः (तापसऋ० साम्नीत्रिष्टुप् लिं० दे०) २,४

पदार्थः – ईश्वर का कर्त्तृत्व मुख्य और अपना गौण है उस को कहते हैं १ब्रह्माग्नि ने २ परा शक्ति द्वारा ३ प्राण को ४ जय किया, परा का अंश भूत मैं भी ५ उसी जीते हुए प्राण को ६ जीतूं अर्थात् वश में करूं ७ पृथिवी और स्वर्ग ने ८ वर्षा और अन्न रूप दो अक्षर से ९ द्विपाद १० मनुष्यों को ११ जीता मैं भी १२ उन मनुष्यों को देवता के दिये हुए अन्न पान द्वारा १३ भले प्रकार जीतूं १४ विष्णु ने १५ नरपशु जलचर अवतार रूप तीन अक्षर से १६ तीन १७ लोकों को १८ जीता मैं भी १९ उन जीते हुए लोकों को २० जीतूं २१ अन्न रूप चन्द्रमा ने २२ चतुर्विध अन्न के द्वारा २३ चतुष्पद २४ पशुओं को २५ जीता मैं भी घास आदि के दान से २६ उन जीते हुए पशुओं को २७ जीतूं ॥ ३१ ॥

पूषा पञ्चाक्षरेण पञ्च दिश उदजयत्ता उज्जे
षꣳ सविता षडक्षरेण षड्ऋतूनुदजयत्तानुज्जे-
षम्मरुतः सप्ताक्षरेण सप्त ग्राम्यान्पशूनुद
जयꣳस्तानुज्जेषम्बृहस्पतिरष्टाक्षरेण गाय
त्रीमुदजयत्तामुज्जेषम् ३२

पूषा। पञ्चाक्षरेण। पञ्च दिशः। उदजयत्। ताः। दिशः। उज्जेषꣳ। सविता। षडक्षरेण। षट्। ऋतून्। उदजयत्। तान्। उज्जेषम्। मरुतः। सप्ताक्षरेण। सप्त। ग्राम्यान्। पशून्। उदजयत्। तान्। उज्जेषम्। बृहस्पतिः। अष्टाक्षरेण। गायत्रीम्। उदजयत्। ताम्। उज्जेषम् ॥ ३२ ॥

इस कंडिका में उज्जिति नाम ४ मंत्र हैं।

ओं पूषा + सवितेति मंत्रयोः (तापसऋ० निचृत्साम्नीपंक्तिश्छं० लिं० दे०) १,३

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं मरुत इत्यस्य (तापसऋ० साम्नी त्रिष्टुप् छं० लिङ्गोक्त दे०) ३
ओं बृहस्पति रित्यस्य (तथा० साम्नी पंक्ति श्छं० तथा०) ४

पदार्थः- १ सूर्य ने २ प्रकाश ताप, आकर्षण, वर्षा अन्न परिपाक नाम कर्म के द्वारा ३, ४ पूर्व आदि चार दिशा और अवांतर दिशा को ४ भले प्रकार जीता सूर्य का अंश मैं भी ५ उन ६ दिशाओं को ७ यथा शक्ति दान से जीतूं ८ सूर्य ने ९ छै प्रकार के प्रकाश से १० छै ११ ऋतुओं को १२ जीता मैं भी १३ उन ऋतुओं को १४ शीत ताप वर्षा के सहने से जीतूं १५ वायु ने १६ अव हआदि सात रूप से १७, १८ भूआदि सात लोक में उत्पन्न १९ प्राणियों को २० जीता मैं भी प्राणायाम में षट्चक्र वेध द्वारा सहस्र दल कमल के प्राप्त होने पर २१ उन प्राणियों को २२ जीतूं २३ बृहस्पति ने २४ सप्त व्याहृति सहित प्रणव द्वारा २५ गायत्री को २६ जीता २७ उस गायत्री को जप द्वारा २८ भले प्रकार जीतूं ॥ ३२ ॥

मित्रो न वाक्षरेण त्रिवृत छं स्तोम मुदजयन्त मुज्जेष छं
वरुणो दशाक्षरेण विराज मुदजयन्ता मुज्जेष मिन्द्र एकादशाक्षरेण त्रिष्टुभ मुदजयन्ता मुज्जेषं विश्वे देवा
द्वादशाक्षरेण जगती मुदजयछं स्ता मुज्जेषम् ॥ ३३ ॥

मित्रः। नवाक्षरेण। त्रिवृत छं। स्तोमम्। उदजयत। तम्। उज्जेषं। वरुणः। दशाक्षरेण। विराजं। उदजयत। ताम्। उज्जेषम्। इन्द्रः। एकादशाक्षरेण। त्रिष्टुभम्। उदजयत। ताम्। उज्जेषम्। विश्वे देवाः। द्वादशाक्षरेण। जगतीम्। उदजयन्। ताम्। उज्जेषम् ॥ ३३ ॥

इस कंडिका में उज्जित नाम ४ मंत्र हैं ॥
ओं मित्र इत्यस्य (तापसऋ० प्राजापत्या बृहती छं० लिङ्गोक्त दे०) १
ओं वरुण इत्यस्य (तथा० निचृत्साम्नी बृहती छं० तथा) २
ओं इन्द्र इत्यस्य (तथा० साम्नी पंक्ति श्छं० तथा) ३

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओंविश्वेदेवाइत्यस्य (तापस ऋ० आर्ष्युष्णिक् छं० लिङ्गोक्त दे०) ४

पदार्थः - १सूर्यने २नवधा भक्ति के दान से ३त्रिगुणमय ४ स्तोत्र को ५जीता सूर्यांश मैंभी ६उस त्रिगुणमय स्तोत्र को ७ जीतूं ८ वरुणने ९ दश अनाहत काज्ञा न देने से १० मायाविकार ब्रह्मांड को ११जीता १२उस ब्रह्मांड को १३योग शक्ति से जीतूं १४ मध्यान्ह सवन के देवता इन्द्रने १५दश इन्द्रिय और मन के आत्मत्व संपादन से १६मध्यान्ह सवन के छन्दोभिमानी देवता को १७ जीता १८ मैंभी उस देवता को १९ जीतूं २० तीसरे सवन के देवता विश्वेदेवाओंने २१ इन्द्रिय मन बुद्धि के आत्मत्व संपादन से २२तीसरे सवन के छन्दोभिमानी देवता को २३ जीता २४ मैंभी उस देवता को २५ जीतूं ॥ ३३॥

वसवस्त्रयोदशाक्षरेण त्रयोदश ꣳ स्तोम मुदजय ꣳ स्तमुज्जेष ꣳ रुद्राश्चतुर्दशाक्षरेण चतुर्दशं स्तोम मुदजय ꣳ स्तमुज्जेष मादित्याः पञ्चदशाक्षरेण पञ्चदश ꣳ स्तोम मुदजय ꣳ स्तमुज्जेषम दितिः षोडशाक्षरेण षोडश ꣳ स्तो मुदजयन्तमुज्जेषम्प्रजा पतिः सप्तदशाक्षरेण सप्तदशस्तोममुदजयन्तमुज्जेषम् ॥ ३४॥

वसवः। त्रयोदशाक्षरेण। त्रयोदश ꣳ। स्तोमम्। उदजयन्। तम्। उज्जेषम्। रुद्राः। चतुर्दशाक्षरेण। चतुर्दश ꣳ। स्तोमम्। उदजयन्। तम्। उज्जेषम्। आदित्याः। पञ्चदशाक्षरेण। पञ्चदश ꣳ। स्तोमम्। उदजयन्। तम्। उज्जेषम्। अदितिः। षोडशाक्षरेण। षोडश ꣳ। स्तोमम्। उदजयेत्। तम्। उज्जेषम्। प्रजापतिः। सप्तदशाक्षरेण। सप्तदश ꣳ। स्तोमम्। उदजयेत्। तम्। उज्जेषम्॥ ३४॥

इस कंडिका में उज्जित नाम ५ मंत्र हैं॥

ओंवसवः + आदित्या इति मंत्रयोः (तापस ऋ० आर्च्यनुष्टुप् छं० लिङ्गोक्त दे०) १,२

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं रुद्रा इत्यस्य (तापस ऋ० भुरिग्साम्नी त्रिष्टुप् छं० लिङ्गोक्त दे०) २
ओं आदित्या इत्यस्य (तथा ० साम्नी त्रिष्टुप् छं० तथा) ३
ओं प्रजापतिरित्यस्य (तथा ० भुरिगार्षी गायत्री छं० तथा) ५

पदार्थः-हे प्रातःसवन के देवता वसुओं ने २ दश इन्द्रिय मन बुद्धि और आत्म प्रतिबिंब के आत्मत्व संपादन से ३ प्रधान महत् अहंकार स्थूल सूक्ष्म तत्व के ४ समूह को ५ जीता ६ उस प्रधान आदि के समूह को ७ भले प्रकार जीतूं ८ माध्यन्दिन सवन के देवता रुद्रों ने ९ चतुर्दश इन्द्रियों के आत्मत्व सम्पादन से १० ११ चतुर्दश भुवन के समूह को १२ जीता १३ उस चतुर्दश भुवन के समूह को १४ भले प्रकार जीतूं १५ तीसरे सवन के देवता आदित्यों ने १६ चतुर्दश इन्द्रियों और आत्मप्रतिबिंब के आत्मत्व संपादन से १७,१८ चतुर्दश भुवनों के ऊपर स्थित वैकुंठ को १९ जीता २० उस वैकुंठ को २१ भले प्रकार जीतूं २२ पराशक्ति ने २३ चतुर्दश इन्द्रिय जीव ईश्वर के ब्रह्मत्व संपादन से २४,२५ षोडश कलावतार विष्णु को २६ जीता २७ उस विष्णु को २८ भले प्रकार जीतूं २९ ब्रह्म वा महानारायण ने ३० चतुर्दश इन्द्रिय जीव ईश्वर के ब्रह्मत्व संपादन से ३१,३२ सप्तदश वायव वाले लिङ्ग शरीर को ३३ जीता ३४ उस लिंग देह को ३५ भले प्रकार जीतूं अर्थात् कैवल्य मोक्ष को प्राप्त करूं जैसा श्रुति में लिखा है जो वाज पेय यज्ञ करता है वह यह सब होता है वह इस सब को जीतता है प्रजापति को ही जीतता है क्योंकि यह ब्रह्मांड प्रजापति ही है ॥ ३४ ॥ इति वाजपेय मंत्राः समाप्ताः

अथ राजसूय मंत्राः

एषते निर्ऋते भागस्तञ्जुषस्व स्वाहाग्नि नेत्रेभ्यो देवेभ्यः पुरःसद्भ्यः स्वाहा यम नेत्रेभ्यो देवेभ्यो दक्षिणासद्भ्यः स्वाहा विश्वदेव नेत्रेभ्यो देवेभ्यः पश्चात्सद्भ्यः स्वाहा मित्रावरुण नेत्रेभ्यो वाम रुन्नेत्रेभ्यो वा देवेभ्य उत्तरासद्भ्यः स्वा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हा सोमनेत्रेभ्यो देवेभ्य उपरिसद्भ्यो दुवस्वद्भ्यः स्वाहा ३५
निर्ऋते। एष। ते। भागः। तम्। जुषस्व। स्वाहा। अग्निनेत्रेभ्यः। पुरःसद्भ्यः। देवेभ्यः। स्वाहा। यमनेत्रेभ्यः। दक्षिणासद्भ्यः। देवेभ्यः। स्वाहा। विश्वदेवनेत्रेभ्यः। पश्चात्सद्भ्यः। देवेभ्यः। स्वाहा। वा। उत्तरासद्भ्यः। मित्रावरुणनेत्रेभ्यः। वा। मरुन्नेत्रेभ्यः। देवेभ्यः। स्वाहा। सोमनेत्रेभ्यः। दुवस्वद्भ्यः। उपरिसद्भ्यः। देवेभ्यः। स्वाहा॥ ३५॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में ६ मंत्र हैं उन को कहते हैं फाल्गुण कृष्णा दशमी के दिन अनुमती देवी के लिये अष्टा कपाल पुरोडाश होता है उस के लिये गृहीत हवि के पेषण समय दृषत के नीचे रक्खी हुई शम्या के पिछले भाग में जो तंडुल पिष्ट रूप हवि गिरा उस को स्रुवा में रख कर दक्षिणाग्नि से उल्मुख को लेकर दक्षिण दिशा में जाकर स्वयं स्फुटित भू भाग वा ऊषर में उल्मुकाग्नि को स्थापन कर के उस हवि को होमता है उस का मंत्र १ पंचवा तीय नाम आहवनीय को पूर्व आदि दिशा और मध्य में स्थापन कर स्रुवा से पांचों अग्नि में होम करता है उस के मंत्र २ से ६ तक

ओं एषत+अग्निनेत्रेभ्यः इति मं० (वरुण ऋ० साम्न्युष्णिक् छं० पृथिवी दे०) २
ओं यमनेत्रेभ्य इत्यस्य (तथा ० आसुरी गायत्री छं० देवा दे०) ३
ओं विश्वदेवनेत्रेभ्य इत्यस्य (तथा ० साम्न्यनुष्टुप् छं० तथा) ४
ओं मित्रावरुणनेत्रेभ्यः (तथा ० भुरिगार्षी गायत्री छं० तथा) ५
ओं सोमनेत्रेभ्यः (तथा ० भुरिक् साम्नी बृहती छं० तथा) ६

पदार्थः-- १ हे पृथिवी २ यह पिष्ट रूप ३ तेरा ४ भाग है ५ उस को ६ सेवन कर ७ श्रेष्ठ होम हो ८ अग्नि है नेता जिन का ९ जो पूर्व दिशा में रहते हैं १० उन देवताओं के लिये ११ श्रेष्ठ होम हो १२ जिन का नेता यम है १३ और जो दक्षिण दिशा में रहते हैं १४ उन देवताओं के लिये १५ श्रेष्ठ होम हो १६ जिन का

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेता सूर्य है १७ और जो पश्चिम दिशा में रहते हैं १८ उन देवताओं के लिये १९ श्रेष्ठ होम हो २० अथवा २१ जो उत्तर दिशा में रहते हैं २२ और जिन का नेता मित्रा वरुण है २३ वा २४ जिन का नेता मरुत है २५ उन देवताओं के लिये २६ श्रेष्ठ होम हो २७ जिन का नेता सोम है २८ और जो अन्नवान २९ और ऊपर स्थित हैं ३० उन देवताओं के लिये ३१ श्रेष्ठ होम हो॥ ३५॥

अथाध्यात्मम्— राज ऋषि के इन्द्रिय संस्कार को कहते हैं हे पाप पुरुष २ यह काम ३ तेरा ४ भाग है ५ उसको ६ सेवन कर ७ महा वाक् द्वारा ८ आत्मा जिन का नेता है ९ और जो पूर्व ओर स्थित हैं १० उन इन्द्रियों के लिये ११ महा वाक् १२ मन जिन का नेता है १३ और जो दक्षिण दिशा में स्थित हैं १४ उन मनो वृत्तियों के लिये १५ महा वाक् १६ विश्व प्रकाशक सूर्य जिन का नेता है १७ और जो पश्चिम ओर स्थित हैं १८ उस नेत्र वृत्तियों के लिये १९ महा वाक् २० वा २१ जो उत्तर में स्थित हैं २२ और जिन के नेता प्राण उदान हैं २३ अथवा २४ जिन का नेता समष्टि प्राण है २५ उन प्राण वृत्तियों के लिये २६ महा वाक् २७ जिन का नेता वाक् है २८ और जो भक्ति ज्ञान ब्रह्मा विष्णु महेश और महा नारायण से सम्पन्न २९ और ऊपर स्थित हैं ३० उन वाग् वृत्तियों के लिये ३१ महा वाक्॥ ३५॥

ये देवा अग्निनेत्राः पुरः सदस्तेभ्यः स्वाहा ये देवा यमनेत्रा दक्षिणा सदस्तेभ्यः स्वाहा ये देवाः विश्वदेवनेत्राः पश्चात्सदस्तेभ्यः स्वाहा ये देवा मित्रा वरुणा नेत्रा वामरुन्नेत्रा वोत्तरा सदस्तेभ्यः स्वाहा ये देवाः सोमनेत्रा उपरि सदो दुवस्वन्तस्तेभ्यः स्वाहा ३६

१ ये। देवाः। अग्निनेत्राः। पुरः सदः। तेभ्यः। स्वाहा। ये। देवाः। यम नेत्राः। दक्षिणासदः। तेभ्यः। स्वाहा। ये। देवाः। विश्वदेवनेत्राः।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चात्सदः। तेभ्यः। स्वाहा। ये। देवाः। मित्रावरुणनेत्राः। वा। मरुन्नेत्राः। वा। उत्तरा सदः। तेभ्यः। स्वाहा। ये। देवाः। सोमनेत्राः। दुवस्वन्तः। उपरि सदः। तेभ्यः। स्वाहा॥ ३६॥

पांच प्रकार से विभक्त आहवनीय अग्नि को एक करके ५ मंत्रों से होम करता है॥

ओं ये देवा इत्यस्य (वरुण ऋ० आसुरी गायत्री प्राजापत्यानुष्टुप् भुरिग् प्राजापत्यानुष्टुप् आर्च्यनुष्टुप् प्राजापत्या बृहती छं० देवा दे०) १५

पदार्थः—हवि वा इन्द्रियों को होमता है १ जो २ देवता अग्नि को नेता रखने वाले ४ और पूर्व दिशा में स्थित हैं ५ उनके लिये ६ हवि वा इन्द्रिय समूह का श्रेष्ठ होम हो ७ जो ८ देवता ९ यम को नेता रखने वाले १० दक्षिण दिशा में स्थित हैं ११ उनके अर्थ १२ हवि वा मनो वृत्ति समूह का होम हो १३ जो १४ सूर्य किरण रूप देवता १५ सूर्य को स्वामी रखने वाले १६ पश्चिम दिशा में स्थित हैं १७ उनके अर्थ १८ हवि अथवा नेत्र वृत्ति समूह का होम हो १९ जो २० देवता २१ मित्रा वरुण को नायक रखने वाले २२ अथवा २३ मरुत देवता को स्वामी रखने वाले २४ और २५ उत्तर दिशा में स्थित हैं २६ उनके लिये २७ हवि अथवा प्राण वृत्ति समूह का होम हो २८ जो २९ देवता ३० सोम को नायक रखने वाले ३१ हवि से सम्पन्न ३२ ऊपर की दिशा में स्थित हैं ३३ उनके लिये ३४ हवि अथवा वाग् वृत्ति समूह का होम हो॥ ३६॥

अग्ने सहस्व पृतना अभि मातीरपास्य। दुष्टरस्तरन्नरातीर्वर्चो धा यज्ञवाहसि॥ ३७॥

अग्ने। पृतनाः। सहस्व। अभि मातीः। अपास्य। दुष्टरः। अरातीः। तरन्। यज्ञवाहसि। वर्चः। धेहि॥ ३७॥

अथाधिदैवम्—अपा मार्गतण्डुल होम के लिये दक्षिणाग्नि से उ-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्मुक को ग्रहण करता है उसका मंत्र

ओं अग्न इत्यस्य (देव श्रवा देववात ऋ० भुरि गार्ष्यनुष्टुप छं० अग्निर्दे०) ९

पदार्थः – हे अग्नि तुम २ शत्रु सेनाओं को ३ हराओ ४ द्रोह कारक स्त्रियों को ५ हटाओ ६ अजेय तुम ७ शत्रुओं को ८ तिरस्कार वा निनाश करते ९ यज्ञ करता यज मान के पास १० अन्न को ११ धारण करो॥ ३७॥

अथाध्यात्मम् – १ हे ब्रह्माग्ने तुम २ काम सेना को ३ जय करो ४ द्रोह शील स्त्रियों को ५ निवृत्त करो ६ और अजेय तुम ७ भोगों को ८ तिरस्कार करते ९ आत्मा रूप यज मान में १० आत्म प्रति बिंब को ११ धारण करो॥ ३७

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे श्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। उपा ꣳ शोर्वीर्येण जुहोमि हत ꣳ रक्षः स्वाहा रक्षसान्त्वा वधाय वधिष्म रक्षो वधिष्मामुमसौ हतः॥ ३८॥

सवितुः। देवस्य। प्रसवे। अश्विनोः। बाहुभ्याम्। पूष्णः। हस्ताभ्याम्। त्वा। उपा ꣳ शोः। वीर्येण। जुहोमि। रक्षः। हत ꣳ। स्वाहा। रक्षसाम्। वधाय। त्वा। रक्षः। अवधिष्म। अमुम्। अवधिष्म। असौ। हतः॥ ३८॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में तीन मंत्र हैं उनको कहते हैं पूर्व वा उत्तर जाकर ग्रहण किये हुए उल्मुक को स्थापन करके स्रुवा से अपामार्ग तंडुल को होमता है उसका मंत्र १ जिस दिशा में होम करता है उसमें स्रुवा को डालता है उसका मंत्र २ अध्वर्यु आदि पीछे कोन देखते देव यजन स्थान में आते हैं उसका मंत्र ३

ओं देवस्येत्यस्य (देववात ऋ० निचृद्ब्राह्मी गायत्री छं० रक्षोघ्नो दे०) १

ओं रक्षसामित्यस्य (तथा ० यजुष्युष्णिक छं० तथा) २

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं अवधिष्मेत्यस्य (देववात ऋ० साम्न्युष्णिक् छं० रक्षोघ्नो दे०) ३

पदार्थः- हे अपा मार्ग तंडुलो १ सविता २ देवता की ३ आज्ञा में वर्त्तमान में ४ अश्विनी कुमार की ५ वाहु भाव को प्राप्त अपनी भुजाओं ६ और पूषा देवता के ७ हस्त भाव को प्राप्त अपने हाथों से ८ तुझ को ९ उपांशु नाम प्रथम ग्रह के १० सामर्थ्य से ११ होमता हूं इसी कारण १२ राक्षस जाति १३ मारी गयी १४ श्रेष्ठ होम हो हे स्रुवा १५ राक्षसों के १६ नाशार्थ १७ तुझे डालता हूं १८ राक्षस जाति को १९ हमने मारा २० अमुक नाम शत्रु २१ मारा २२ यह शत्रु २३ मारा गया॥ ३८॥

अथाध्यात्मम्- हे इन्द्रिय शक्ति समूह १ २ गुरु देवता की ३ आज्ञा में वर्त्तमान में ४ हृदय मन की ५ ग्रहण शक्तियों ६ और मानस सूर्य की ७ ग्रहण शक्तियों से ८ तुझ को ९ प्राण की १० सामर्थ्य से ११ होमता हूं इसी कारण १२ काम रूप राक्षस १३ मारा १४ मंत्र द्वारा हे प्राण १५ काम आदि के १६ नाशार्थ १७ तुझे छोड़ता हूं १८ काम को १९ मारा २० अमुक नाम वाले काम को २१ मारा २२ यह काम २३ मारा गया॥ ३८॥

सविता त्वा सवानां छं सुवतामग्निर्गृहपतीनां छं सोमो वनस्पतीनाम्। बृहस्पतिर्वाचं इन्द्रो ज्येष्ठाय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो वरुणो धर्मपतीनाम्॥ ३९॥

सविता १। सवानाम् २। छं। त्वा। सुवताम् ३। अग्निः ४। गृहपतीनाम् ५। छं। सोमः ६। वनस्पतीनाम् ७। बृहस्पतिः ८। वाचे ९। इन्द्रः १०। ज्येष्ठाय ११। रुद्रः १२। पशुभ्यः १३। मित्रः १४। सत्यः १५। वरुणः १६। धर्मपतीनाम् १७॥ ३९॥

अथाधिदैवम्- वारुणचरु के साथ चल कर और यज मान के समीप जा कर स्रुच को दाहिने हाथ में ले कर यज मान की दाहिनी वाहु को पकड़ कर दो कंडिका के मंत्र को पढ़ता है और यजमान के माता पिता और उस देश का नाम जिस का वह राजा होता है लेता है उस का मंत्र-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओं सवितेत्यस्य (देववात ऋ० अतिजगती छं० यजमानो दे०) १

पदार्थः – हे यजमान १ सूर्य देवता २ आज्ञाओं के आधिपत्य में ३ तुझ को ४ प्रेरणा करो ५ अग्नि देवता ६ गृहस्थियों के आधिपत्य में ७ चंद्रमा ८ वनस्थियों के आधिपत्य में ९ बृहस्पति १० वाणी के लिये ११ इन्द्र १२ ज्येष्ठता के लिये १३ रुद्र देवता १४ पशुओं के लिये वा पशुओं के आधिपत्य में १५ और ब्रह्मा १६ विष्णु १७ नरनाम देवता १८ धर्मेश्वर धर्मशील पुरुषों के आधिपत्य में तुझ को प्रेरणा करो ॥ ३९॥

अथाध्यात्मम् – गुरु इस मंत्र में आशीर्वाद देकर अगले मंत्र में कहै गा हे आत्मा रूप यजमान १ मन २ योग यज्ञों के आधिपत्य में ३ तुझे ४ प्रेरणा करो ५ महा वाक् ६ गृहस्थियों के आधिपत्य में ७ प्रतिबिंब ८ इन्द्रियों के आधिपत्य में ९ प्राण १० सोहं मंत्र के जपार्थ ११ और योग बल १२ महत्व के लिये १३ और ईश्वर १४ प्राणों के आधिपत्य में १५ और ब्रह्मा १६ विष्णु १७ और नर देवता १८ बुद्धि वृत्तियों के आधिपत्य में तुझ को प्रेरणा करो ॥ ३९॥

इमन्देवा असपत्नꣳसुवध्वम्महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्याय इन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳ राजा ॥ ४० ॥

देवाः। इमम्। इमम्। अमुष्य पुत्रं। अमुष्यैः। पुत्रम्। महते। क्षत्राय। महते। ज्यैष्ठ्याय। महते। जानराज्याय। इन्द्रस्य। वीर्याय। अस्यै। विशः। असपत्नꣳ। सुवध्वम्। एषः। अमी। वः। राजा। अस्माकम्। ब्राह्मणानाꣳ। राजा। सोमः ॥ ४० ॥

अथाधिदैवम्

ओं इममित्यस्य (देववात ऋ० अत्यष्टि छं० यजमानो दे०) १

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदार्थः-१ हे सूर्य्यादिदेवता ओ २ इस अमुक नाम वाले ३ विद्या बुद्धि और कीर्ति से सम्पन्न तथा ४ अमुक राजा के पुत्र ५ अमुक रानी के लिये ६ पुन्नामनरक से रक्षा करने वाले यजमान को ७ बड़ी ८ क्षत्र पदवी ९ बड़े १० महत्व ११ बड़े १२ नराधिपत्य के लिये तथा १३ देवेन्द्र के तुल्य १४ बल के लिये तथा १५ इस १६ अमुक देश अमुक जाति वाली प्रजा पालन के लिये १७ जैसे शत्रु रहित हो तैसेही १८ प्रेरणा करो हे अमुकामुक देशो १९ यह २० संसार रोग से ग्रस्त अमुक क्षत्री २१ तुम्हारा २२ राजा है २३ हम २४ ब्राह्मणों का २५ राजा तो २६ सूर्य ब्रह्मा विष्णु महेश का रूप धारण करने वाला महा विष्णु है। ४०

अथाध्यात्मम्- १ हे वाक् आदि देवता ओ २ इस ३ विद्या बुद्धि और निवृत्ति से सम्पन्न ४ अमुक गुरु के पुत्र ५ अमुक गायत्री के लिये ६ पुत्र समान लालनीय योगी को ७ बड़ी ८ राजर्षि पदवी ९ बड़े १० महत्व ११ बड़े १२ प्राणाधिपत्य के लिये तथा १३ ईश तुल्य १४ पराक्रम के लिये तथा १५ इस १६ व्यष्टि समष्टि रूप ब्रह्म पुरी के आधिपत्यार्थ १७ जैसे काम रूप शत्रु से रहित होतैसेही १८ प्रेरणा करो हे इन्द्रिय गोल को १९ यह २० संसार रोग से ग्रस्त देह २१ तुम्हारा २२ राजा है २३ हम २४ ब्रह्म ज्ञानी योगियों का २५ राजा तो २६ महानारायण है॥ ४०॥

इति श्री भृगु वंशावतंस श्री नाथू राम सूनु ज्वाला प्रसाद शर्म्म कृते शुक्ल यजुर्वेदीय ब्रह्म भाष्ये वाजपेयो राजसूयारंभो नवमोऽध्यायः॥ ९॥

नवमे अध्याय में वाजपेय यज्ञ और राजसूय सम्बंधी कितने ही कर्म कहे अब दशवें अध्याय में अभिषेक के लिये जल लाना आदि राजसूय के शेष कर्म और चरक सौत्रामणी यज्ञ को कहते हैं॥

हरिः ओं अपो देवा मधुमतीरगृभ्णन्नूर्जस्वतीराजस्वाश्चितानः। याभिर्मित्रावरुणावभ्यषिञ्चन्नयाभिरिन्द्रमनयन्नत्यरातीः १

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवाः। मधुमतीः। ऊर्जस्वतीः। राजस्वः। चितानाः। अपः। अगृभ्णन्। याभिः। मित्रा वरुणौ। अभ्यषिञ्चन्। याभिः। अरातीः। अति। इन्द्रम्। अनयन्॥ १॥

अथाधिदैवम्– औदुम्बर पात्र में सरस्वती नदी के जल को ग्रहण करता है उसका मंत्र॥

ओं अपो देवा इत्यस्य (वरुण ऋ० निचृदार्षी त्रिष्टुप् छं० आपो दे०) १

पदार्थः– १ इन्द्रादि देवताओं ने २ मधुर स्वाद से युक्त ३ विशिष्ट अन्न रस वाले ४ राज्याभिषेक करने वाले ५ चेतयमान ६ जलों को ७ ग्रहण किया ८ और जिन जलों से ९ मित्रा वरुण देवताओं ने १० अभिषेक किया ११ जिन जलों से १२ शत्रुओं को १३ अतिक्रमण करके १४ इन्द्र देवता को १५ तीनों लोक के आधिपत्य पर प्राप्त किया मैं उन जलों को ग्रहण करता हूं॥ १॥

अथाध्यात्मम्– १ वाक् आदि देवताओं ने २ ज्ञान वान ३ विराट् रूप अन्न के रस से सम्पन्न ४ राजर्षि पद देने वाले ५ ज्ञान दाता ६ महा वाक् रूप जलों को ७ ग्रहण किया ८ जिन महा वाक् रूप जलों से ९ प्राण उदान को १० अभिषेक कराया ११ और जिन जलों के द्वारा १२ काम आदि शत्रुओं को १३ अतिक्रमण करके १४ यजमान को १५ ब्रह्म में प्राप्त किया उन महा वाक् रूप जलों को ग्रहण करता हूं॥

वृषाऽऊर्म्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे देहि स्वाहा वृषाऽऊर्म्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि। वृषसेनोसि राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे देहि स्वाहा वृषसेनोसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि॥ २॥

वृषाः। राष्ट्रदाः। ऊर्मिः। असि। राष्ट्रं। मे। देहि। स्वाहा। वृषाः। राष्ट्रदाः। ऊर्मिः। असि। अमुष्मै। राष्ट्रं। देहि। वृषसेनः। राष्ट्रदाः।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९ १८ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६
असि। राष्ट्रम्। मे। देहि। स्वाहा। वृष सेनः। राष्ट्रदाः। असि। राष्ट्रम्।
२७ २८
अमुष्मै। देहि॥२॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में ४ मंत्र हैं उन को कहते हैं, सरस्वती के जल को लेकर अगले षोडश जल ग्रहण के विषय स्वाहांत पूर्व २ मंत्रों से चार वार लिये हुए घृत को होमता है और स्वाहा हीन पिछले मंत्रों से उन जलों को क्रम पूर्वक ग्रहण करता है उसके मंत्र-

ओं वृष्णऊर्मिरिति मंत्रयोः (वरुण ऋ० प्राजा पत्यानुष्टुप् छं० लिं० दे०)१-२
ओं वृष सेन इति मंत्रयोः (तथा ० आसुरी गायत्री छं० तथा०)३-४

पदार्थः- हे कल्लोल (लहर) तुम १ सींचने वाले जलाशय की देशदाता ३ कल्लोल ४ हो ५ देश को ६ मुझे ७ दीजिये ८ श्रेष्ठ होम हो इस प्रकार होम करके गृहण करता है हे कल्लोल तुम ९ सींचने वाले जलाशय की १० देशदाता ११ कल्लोल १२ हो १३ अमुक यजमान के लिये १४ देश को १५ दीजिये दूसरी ऊर्मि को ग्रहण करता है हे कल्लोल १६ सींचने में समर्थ जल राशि रूप सेना वाली तुम १७ देश की दाता १८ हो १९ देश को २० मुझे २१ दीजिये २२ श्रेष्ठ होम हो, ग्रहण करता है हे कल्लोल २३ सींचने में समर्थ जल राशि रूप सेना वाले तुम २४ देश के दाता २५ हो २६ देश को २७ अमुक यजमान के लिये २८ दीजिये॥२॥

अथाध्यात्मम्- हे आत्मा रूप कल्लोल तुम १ अपनी किरणों की वर्षा करने वाले २ योग देश दाता तथा ३ माया पुरुष देह के प्रवेश से प्रादुर्भूत कल्लोल ४ हो ५ योग देश को ६ मुझ आत्म प्रति विंव के लिये ७ दीजिये ८ महावाक द्वारा अपने अनुभव में प्राप्त करता है ९ महानारायण के १० योग देश की दाता ११ कल्लोल १२ हो १३ अमुक योगी रूप आत्म प्रति विंव के लिये १४ योग देश को १५ दीजिये दूसरी ऊर्मि को ग्रहण करता है हे इन्द्रिय शक्ति रूप कल्लोल १६

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्रिय समूह के प्रवेश से प्रादुर्भूत तथा महानारायण के सेना रूप कल्लोल तुम १७ योग देश के दाता १८ हो १९ योग देश को २० मुझे २१ दीजिये २२ महा वाक द्वारा अव ग्रहण करना है हे महानारायण की सेना रूप कल्लोल तुम २४ योग देश की दाता २५ हो २६ योग देश को २७ अमुक आत्म प्रति विंव के लिये २८ दीजिये ॥ ३ ॥

अर्थेतस्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे दत्त स्वाहा र्थेतस्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम मुष्मै दत्तौजस्वतीस्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे दत्त स्वाहौजस्वतीस्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम मुष्मै दत्तापः परिवाहिणीस्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे दत्त स्वाहापः परिवाहिणीस्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम मुष्मै दत्तापाम्पति रसि राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे देहि स्वाहापाम्पति रसि राष्ट्रदा राष्ट्रम मुष्मै देह्यपाङ्गर्भोसि राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे देहि स्वाहा पाङ्गर्भोसि राष्ट्रदा राष्ट्रम्म मुष्मै देहि ।३। १०

अर्थेतः। राष्ट्रदाः। स्थ। मे। राष्ट्रं। दत्त। स्वाहा। अर्थेतः। राष्ट्रदाः। स्थ। राष्ट्रम्। अमुष्मै। दत्त। औजस्वतीः। राष्ट्रदाः। स्थ। राष्ट्रम्। मे। दत्त। स्वाहा। औजस्वतीः। राष्ट्रदाः। स्थ। राष्ट्रम्। अमुष्मै। दत्त। आपः परिवाहिणीः। राष्ट्रदाः। स्थ। राष्ट्रम्। मे। दत्त। स्वाहा। आपः परिवाहिणीः। राष्ट्रदाः। स्थ। राष्ट्रम्। अमुष्मै। दत्त। अपाम्। पतिः। राष्ट्रदाः। असि। राष्ट्रम्। मे। देहि। स्वाहा। अपाम्। पतिः। राष्ट्रदाः। असि। राष्ट्रम्। अमुष्मै। देहि। अपाम्। गर्भः। राष्ट्रदाः। असि। राष्ट्रम्। मे। देहि। स्वाहा। अपाम्। गर्भः। राष्ट्रदाः। असि। राष्ट्रम्। अमुष्मै। देहि ॥ ३ ॥

अथाधिदैवम्- इस कंडिका में १० मंत्र हैं उनको कहते हैं, नदी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि के प्रवाह में स्थित जलों को ग्रहण करता है उसके मंत्र १,२ वहती नदियों के जो जल प्रति लोम चलते हैं उन को ग्रहण करता है उसके मंत्र ३,४ वहते जलों के मध्य से जो जल दूसरे मार्ग से जाकर फिर उसी प्रवाह में प्रवेश होते हैं उन को ग्रहण करता हैं उसके मंत्र ५,६ समुद्र के जल को ग्रहण करता है उसके मंत्र ७,८ आवर्त्त जनित जलों को ग्रहण करता है उसके मंत्र ९,१०

ओं अर्थेत इति मंत्रयोः (वरुण ऋ० साम्न्युष्णिक् छं० लिङ्गोक्त दे०) १,२

ओं ओज स्वती+अपांगर्भ (तथा ० आसुरी गायत्री छं० तथा) ३,४,९

इति मंत्राणां

ओं आप इति मंत्र योः (तथा ० साम्नी वृहती छं० तथा) ५,६

ओं अपां पति रिति मंत्र योः (तथा ० साम्न्यनुष्टुप् छं० तथा) ७,८

पदार्थः—हे नदी आदि के प्रवाह में स्थित जलो तुम १ यज्ञ प्रयोजन के लिये प्राप्त होने वाले २ और देश के दाता ३ हो ४ मुझे ५ देश ६ दीजिये ७ श्रेष्ठ होम हो, अब ग्रहण करता है हे पूर्वोक्त जलो तुम ८ यज्ञ के अर्थ प्राप्त होने वाले ९ देश के दाता १० हो ११ देश को १२ अमुक यजमान के लिये १३ दीजिये हे प्रति लोम गमन शील जलो तुम १४ बल से युक्त १५ और देश के दाता १६ हो १७ देश को १८ मुझे १९ दीजिये २० श्रेष्ठ होम हो अब ग्रहण करता है हे पूर्वोक्त जलो तुम २१ बल से युक्त २२ और देश के दाता २३ हो २४ देश को २५ अमुक यजमान के लिये २६ दीजिये २७ वहते जलों के मध्य से दूसरे मार्ग द्वारा पृथक् होकर फिर भी उसी जल में प्रवेश होने वाले हे जलो तुम २८ सब ओर वहन शील २९ और देश के दाता ३० हो ३१ देश को ३२ मुझे ३३ दीजिये ३४ श्रेष्ठ होम हो, ग्रहण करता है ३५ हे पूर्वोक्त जलो तुम ३६ सब ओर वहन शील ३७ और देश के दाता ३८ हो ३९

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश को ४० अमुक यजमान के लिये ४१ दीजियै हे समुद्र तुम ४२ जलों के ४३ स्वामी ४४ और देश के दाता ४५ हौ ४६ देश को ४७ मुझे ४८ दीजिये ४९ श्रेष्ठ होम हो, अव ग्रहण करता है हे समुद्र तुम ५० जलों के ५१ स्वामी ५२ देश के दाता ५३ हौ ५४ देश को ५५ अमुक यजमान के लिये ५६ दीजियै हे जल भ्रम तुम ५७ जलों के ५८ मध्य वर्त्ती ५९ देश के दाता ६० हौ ६१ देश को ६२ मुझे ६३ दीजियै ६४ श्रेष्ठ होम हो अव ग्रहण करता है हे जल भ्रम तुम ६५ जलों के ६६ मध्य वर्ती ६७ और देश के दाता ६८ हौ ६९ देश को ७० अमुक यजमान के लिये ७१ दीजियै ॥३॥

अथाध्यात्मम् – हे आत्मांभु रूप जलो तुम १ समाधि के लिये इन्द्रिय गोलकों से हृदय वा मन में गमन करने वाले २ और ब्रह्म देश के दाता ३ हौ ४ मुझे ५ ब्रह्म देश ६ दीजियै ७ महा वाक् द्वारा ग्रहण करता है, हे आत्मांभु रूप जलो तुम ८, ९ पूर्वोक्त गुण वाले १० हौ ११ ब्रह्म देश को १२ अमुक यजमान के लिये १३ दीजियै हे प्रतिलोम गमन शील इन्द्रिय शक्तियो तुम १४ योग वल से युक्त १५ ब्रह्म देश की दाता १६ हौ १७ ब्रह्म देश को १८ मुझे १९ दीजियै २० महा वाक् द्वारा ग्रहण करता है हे पूर्वोक्त इन्द्रिय शक्तियो तुम २१, २२ पूर्वोक्त गुण वाली २३ हौ २४ ब्रह्म देश को २५ अमुक यज मा-

* श्रुति का वचन है, जिस प्रकार यह जल दूसरी ओर जा कर फिर उसी में आ मिलते हैं इसी प्रकार दूसरे राजा का देश इस राजा के देश में मिलता है और वह उस को वश में करता है इसी लिये इस क्षत्री में भूमा को धारण करता अभिषेक करता है॥

& श्रुति का वचन है यह समुद्र जलों का स्वामी है इसी प्रकार इस क्षत्री को देशों में स्वामी करता है॥

+ यह जल गर्भ को धारण करते हैं इसी प्रकार इस क्षत्री को देशों का गर्भ अर्थात् मध्य वर्त्ती स्वामी करता है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न के लिये २६ दीजिये २७ हे आत्मांशु रूप जलो तुम २८ चक्षु आदि गोल कों से सब ओर चलने वाले २९ और ब्रह्म देश के दाता ३० हो ३१ ब्रह्म देश को ३२ मुझे ३३ दीजिये ३४ महा वाक् द्वारा ग्रहण करता है ३५ हे आत्मांशु रूप जलो ३६,३७ तुम पूर्वोक्त गुण वाले ३८ हो ३९ ब्रह्म देश को ४० अमुक यजमान के लिये ४१ दीजिये हे मन रूप समुद्र तुम ४२ आत्मांशु रूप इन्द्रियों के ४३ स्वामी ४४ ब्रह्म देश के दाता ४५ हो ४६ ब्रह्म देश को ४७ मुझे ४८ दीजिये ४९ महा वाक् सेवन द्वारा ग्रहण करता है, हे मन तुम ५०,५१ पूर्वोक्त गुण वाले ५३ हो ५४ ब्रह्म देश को ५५ आत्म प्रति बिंब के लिये ५६ दीजिये हे मन की वृत्ति तुम ५७ आत्मांशु रूप इन्द्रियों की ५८ स्वामी ५९ ब्रह्म देश की दाता ६० हो ६१ ब्रह्म देश को ६२ मुझे ६३ दीजिये ६४ महा वाक् सेवन द्वारा ग्रहण करता है हे मन की वृत्ति तुम ६५,६६,६७ पूर्वोक्त गुण वाली ६८ हो ६९ ब्रह्म देश को ७० अमुक यजमान के लिये ७१ दीजिये ॥३॥

सूर्यत्वचसस्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे दत्त स्वाहा सूर्यत्वचसस्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम मुष्मै दत्त सूर्यवर्चसस्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे दत्त स्वाहा सूर्यवर्चसस्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम मुष्मै दत्त मान्दास्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे दत्त स्वाहा मान्दास्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम मुष्मै दत्त व्रजक्षितस्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे दत्त स्वाहा व्रजक्षितस्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम मुष्मै दत्त वाशास्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे दत्त स्वाहा वाशास्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम मुष्मै दत्त शविष्ठास्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे दत्त स्वाहा शविष्ठास्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम मुष्मै दत्त शक्वरीस्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे दत्त स्वाहा शक्वरीस्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम मुष्मै दत्त जनभृतस्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे दत्त स्वाहा जन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न भृतस्य राष्ट्रदा राष्ट्रम मुष्मै दत्त विश्व भृतस्य राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे दत्त स्वाहा विश्व भृतस्य राष्ट्रदा राष्ट्रम मुष्मै दत्तापः स्वराजस्य राष्ट्रदा राष्ट्रम मुष्मै दत्त। मधुमतीर्म्मधुमतीभिः एच्यन्ताम्महि क्षत्रङ्क्षत्रियाय वन्वाना अनाधृष्टाः सीदत सहोजसा महि क्षत्रङ्क्षत्रियाय दधृतीः ४

सूर्यत्वचसः। राष्ट्रदाः। स्थ। राष्ट्रम। मे। दत्त। स्वाहा। सूर्यत्वचसः। राष्ट्रदाः। स्थ। राष्ट्रम्। अमुष्मै। दत्त। सूर्यवर्चसः। राष्ट्रदाः। स्थ। राष्ट्रम। मे। दत्त। स्वाहा। सूर्यवर्चसः। राष्ट्रदाः। स्थ। राष्ट्रम्। अमुष्मै दत्त। मान्दाः। राष्ट्रदाः। स्थ। राष्ट्रम। मे। दत्त। स्वाहा। मान्दाः। राष्ट्रदाः। स्थ। राष्ट्रम्। अमुष्मै। दत्त। व्रजक्षितः। राष्ट्रदाः। स्थ। राष्ट्रम। मे। दत्त। स्वाहा। व्रजक्षितः। राष्ट्रदाः। स्थ। राष्ट्रम। अमुष्मै। दत्त। वाशाः। राष्ट्रदाः। स्थ। राष्ट्रम। मे। दत्त। स्वाहा। वाशाः। राष्ट्रदाः। स्थ। राष्ट्रम। अमुष्मै। दत्त। शविष्ठाः। राष्ट्रदाः। स्थ। राष्ट्रम्। मे। दत्त। स्वाहा। शविष्ठाः। राष्ट्रदाः। स्थ। राष्ट्रम। अमुष्मै। दत्त। शक्करीः। राष्ट्रदाः। स्थ। राष्ट्रम। मे। दत्त। स्वाहा। शक्करीः। राष्ट्रदाः। स्थ। राष्ट्रम। अमुष्मै। दत्त। जनभृतः। राष्ट्रदाः। स्थ। राष्ट्रम। मे। दत्त। स्वाहा। जनभृतः। राष्ट्रदाः। स्थ। राष्ट्रम। अमुष्मै। दत्त। विश्वभृतः। राष्ट्रदाः। स्थ। राष्ट्रम। मे। दत्त। स्वाहा। विश्वभृतः। राष्ट्रदाः। स्थ। राष्ट्रम। अमुष्मै। दत्त। आपः। स्वराजः। राष्ट्रदाः। स्थ। राष्ट्रम। अमुष्मै। दत्त। मधुमतीः। एच्यन्ताम्। महि। क्षत्रम्। वन्वानाः। मधुमतीभिः। क्षत्रियाय। दधतीः। अनाधृष्टाः। सहोजसः। महि। क्षत्रम। क्षत्रियाय। दधतीः।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३८
सीदत॥ ४॥

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में २१ मंत्र हैं उन को कहते हैं वहते जलों के मध्य जो स्थिर और सदा घाम में वर्तमान हैं उन को ग्रहण करता है उसके मंत्र १,२ धूप निकलते हुए जो जल वरसे और पहले उन को ग्रहण कर लिया उन को यूप के उत्तर और से ग्रहण करता है उसके मंत्र ३,४ तड़ाग के जल को ग्रहण करता है उसके मंत्र ५,६ कूप जल को ग्रहण करता है उसके मंत्र ७,८ ओस के जल को जो तृणों की नोक पर स्थित थे और जिन को वस्त्र द्वारा ग्रहण किया उन को यूप के उत्तर से ग्रहण करता है उसके मंत्र ९,१० मधु जल को ग्रहण करता है उसके मंत्र ११,१२ व्यातीगो के गर्भ वेष्टन का जल जो पहले ले कर रक्खा उसको यूप के उत्तर से ग्रहण करता है उसके मंत्र १३,१४ दुग्ध को ग्रहण करता है उसके मंत्र १५,१६ घृत को ग्रहण करता है उसके मंत्र १७,१८ सूर्य किरणों से तप्त मरीचि नाम जल को जो पहिले अञ्जली से लिये थे उन को पूर्व गृहीत जलों में मिलाता है उसका मंत्र १९ जिन पूर्वोक्त जलों को एक करने के लिये उदुम्बर काष्ठ के पात्र में डालता है उसका मंत्र २० मैत्रा वरुणा धिष्णा के आगे रखता है उसका मंत्र २१

ओं सूर्यत्व + सूर्यव + आप इति मंत्राणां (वरुण ऋ० साम्न्यनुष्टुप० लिं०) १,२,३,४
ओं मान्दा + वाशा इति मंत्राणां (तथा ० आसुर्य्यनुष्टुप० तथा) ५,६,९,१०
ओं व्रज० + जन० + विश्व इति मंत्राणां (तथा ० आसुरी गायत्री० तथा) ७,८,१५,१६,१७,१८
ओं शवि० + शक्व० इति मंत्राणां (तथा ० आसुर्य्युष्णिक् तथा) ११,१२
ओं मधुमतीरित्यस्य (तथा ० निचृदार्ष्यनुष्टुप् तथा) १३,१४,१९,२०
ओं अनाधृष्टा इत्यस्य (तथा ० साम्नी त्रिष्टुप् तथा) २१

पदार्थः – हे जलो तुम सदा धूप में रहने से सूर्य की समान त्वचा रखने वाले २ और देश के दाता ३ हो ४ देश को ५ मुझे ६ दीजिये ७ श्रेष्ठ होम हो ग्रहण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता है हे जलो तुम ८,९ पूर्वोक्त गुण वाले १० हो ११ देश को १२ अमुक यजमान के लिये १३ दीजिये ✻ हे जलो तुम १४ सूर्य वत् तेजस्वी १५ और देश के दाता १६ हो १७ देश को १८ मुझे १९ दीजिये २० श्रेष्ठ होम हो, अव ग्रहण करता है, हे जलो तुम २१,२२ पूर्वोक्त गुण वाले २३ हो २४ देश को २५ अमुक यजमान के लिये २६ दीजिये हे जलो तुम २७ प्राणियों को आनंद देने वाले २८ और देश के दाता २९ हो ३० देश को ३१ मुझे ३२ दीजिये ३३ श्रेष्ठ होम हो, अव ग्रहण करता है तुम ३४,३५ पूर्वोक्त गुण वाले ३६ हो ३७,३८,३९ देश को०

हे जलो तुम ४० कूप में रहने वाले ४१ और देश के दाता ४२ हो ४३ देश को ४४ मुझे ४५ दीजिये ४६ श्रेष्ठ होम हो अव ग्रहण करता है ४७ हे कूपनिवासी जलो तुम ४८ देश दाता ४९ हो ५०,५१,५२ देश को० हे जलो तुम ५३ अन्न की उत्पत्ति के लिये ईप्सित ५४ और देश के दाता ५५ हो ५६,५७,५८,५९ देश को० अव ग्रहण करता है हे जलो तुम ६० अन्न की उत्पत्ति के लिये ईप्सित ६१ और देश दाता ६२ हो ६३,६४,६५ देश को० हे मधुरूप जलो तुम ६६ बल देने वाले ६७ और देश के दाता ६८ हो ६९,७०,७१,७२ देश को० ग्रहण करता है ७३ हे बलवान जलो तुम ७४ देश के दाता ७५ हो ७६,७७,७८ देश को अमुक ▭ हे गो गर्भ वेष्टन के जलो तुम ७९ गौ सम्बंधी ८० और देश के दाता ८१ हो ८२,८३,८४,८५ देश को० ग्रहण करता है ८६ हे गो गर्भ वेष्टन के जलो तुम गौ सम्बंधी ८७ और देश के दाता ८८ हो ८९,९०,९१ देश को० हे दुग्ध रूप जलो तुम ९२ मनुष्यों के पोषक ९३ और दे-

✻ श्रुति का प्रमाण, इस क्षत्री को तेज से अभिषेक करता है और उसके शरीर की त्वचा को तेज युक्त करता है॥

✻ श्रुति का वचन, अन्न सम्बन्धी जल से अभिषेक कर इस क्षत्री में अन्न को धारण करता है॥

▭ श्रुति० जल और औषधि के रस से क्षत्री को सींचता है॥

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श के दाता ९४ हौ ९५,९६,९७,९८ देश को० अव ग्रहण करता है हे दुग्धरूपजलो तुम ९९ जन पोषक १०० और देश दाता १०१ हौ १०२,१०३,१०४ देश को० हे घृतरूपजलो तुम १०५ सर्वजगत पालक १०६ देश के दाता १०७ हौ १०८,१०९ ११०,१११ देश को० अव ग्रहण करता है, हे घृत रूप जलो तुम ११२ विश्व पालक ११३ और देश दाता ११४ हौ ११५,११६,११७ देश को,११८ हे सूर्य किरणरूप जलो तुम ११९ स्वाधीन राज्य वाले १२० और देश के दाता १२१ हौ १२२ देश को १२३ अमुक यजमान के लिये १२४ दीजियै १२५ मधुरस वाले १२६ और क्षत्री यजमान के लिये १२७ वड़ा १२८ वल १२९ देने वाले जल १३० मधुर स्वादयुक्त जलों के साथ १३१ मिल जाओ हे जलो तुम १३२ राक्षसों से अति रस्कृत १३३ वल युक्त तथा १३४ वड़े १३५ वल को १३६ राजा मैं १३७ स्थापन करने वाले आप १३८ ठहरो॥४॥

अथाध्यात्मम्-१ मानस सूर्य की त्वगिन्द्रिय रूप हे भूतात्म रूप किरणो तुम २ ब्रह्म देश की दाता ३ हौ ४ मुझे ५ ब्रह्म देश ६ दीजियै ७ महावाक के प्रभाव से अव ग्रहण करता है, ८ हे भूतात्मा की किरणो तुम ९ ब्रह्म देश की दाता १० हौ ११ ब्रह्म देश को १२ अमुक आत्म प्रतिविंव के लिये १३ दीजिये १४ हे मानस सूर्य की किरणो तुम १५-२० ब्रह्म देश की दाता हौ० अव ग्रहण करता है २१ हे मानस सूर्य की किरणो तुम २२-२६ ब्रह्म देश की दाता हौ० ब्रह्म देश को० २७ हे ब्रह्मानंद के दाता आनंद मय कोष की किरणो तुम २८-३३ ब्रह्म देश की दाता हौ० ३४ हे ब्रह्मानंद दाता आनंद कोष की किरणो तुम ३५-३९ ब्रह्म देश की दाता हौ ब्रह्म देश को० ४० हे गगन मेघस्थ आत्मांभु रूप जलो तुम ४१-४६ ब्रह्म देश के दाता हौ० ग्रहण करता है० ४७ हे गगन मेघस्थ आत्मांभु रूप जलो तुम ४८-५२ ब्रह्म देश के दाता हौ ब्रह्म देश को० ५३ हे माया मल दूर करने के लिये ईप्सित आत्मांभु रूप जलो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम ५४-५९ ब्रह्म देश के दाता हौ० अव ग्रहण करता है ६० हे माया मल दूर करने के लिये आत्मांभु रूप जलो तुम ६१-६५ ब्रह्म देश के दाता हौ ब्रह्म देश को० ६६ हे योग वल दाता ज्ञानांभु रूप जलो तुम ६७,७२ ब्रह्म देश के दाता हौ मुझे० ग्रहण करता है ७३ हे योग वल दाता ज्ञानांभु रूप जलो तुम ७४ ब्रह्म देश के दाता ७५-७८ हौ ब्रह्म देश को अमुक० ७९ इन्द्रियों की शक्ति रूप गर्भ से उत्पन्न और यजमान के उद्धार में समर्थ हे आत्मांभु रूप जलो तुम ८० ८५ ब्रह्म देश के दाता हौ मुझे० अव ग्रहण करता है ८६ हे पूर्वोक्त आत्मांभु रूप जलो तुम ८७-९१ ब्रह्म देश के दाता हौ ब्रह्म देश को अमुक० ९२ हे यजमान के पोषक प्राणांभु रूप जलो तुम ९३-९८ ब्रह्म देश के दाता हौ मुझे० अव ग्रहण करता है ९९ हे प्राणांभु रूप जलो तुम १००-१०४ ब्रह्म देश के दाता हौ ब्रह्म-देश को अमुक० १०५ हे विश्व पोषक समष्टि वायु के अंभु रूप जलो तुम १०६ ब्रह्म देश के दाता १०७ हौ १०८ मुझे १०९ ब्रह्म देश ११० दीजिये १११ महा वाक द्वारा अव ग्रहण करता है ११२ हे पूर्वोक्त जलो तुम ११३-११७ ब्रह्म देश के दाता हौ ब्रह्म देश को अमुक० ११८ हे ब्रह्मांभु रूप जलो तुम ११९ स्वयं प्रकाश १२० ब्रह्म देश के दाता १२१ हौ १२२ ब्रह्म देश को १२३ अमुक आत्म प्रति विंव के लिये १२४ दीजिये भेदाभाव करता है १२५ मधु ब्राह्मणोक्त ज्ञान वाले १२६ और यजमान के लिये १२७ वड़े १२८ योग वल को १२९ देने वाले हे इन्द्रियादि शक्ति रूप जलो तुम १३० ब्रह्मांभु रूप जलों से १३१ संयोग को पाओ १३२ राक्षसों से अ तिरस्कृत १३३ वल युक्त तथा १३४ वड़े १३५ योग वल को १३६ राज ऋषि में १३७ स्थापन करने वाले हे ब्रह्मांभु रूप जलो तुम १३८ अपने आश्रय में ठहरो, आत्म समुद्र का संस्कार किया जैसा स्मृति कहती है, आत्मा नदी संयम जल से पूर्ण है सत्य से वहने वाली है उसका तट शील और लहर दया है उसमें अभिषेक करो क्योंकि अंतरात्मा जल से शुद्ध नहीं होता है। ४।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोमस्यत्वषिरसितवैवमेत्विषिर्भूयात। अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा सवित्रे स्वाहा सरस्वत्यै स्वाहा पूष्णे स्वाहा बृहस्पतये स्वाहेन्द्राय स्वाहा घोषाय स्वाहा श्लोकाय स्वाहा अंशाय स्वाहा भगाय स्वाहार्यम्णे स्वाहा ॥ ५ ॥

सोमस्य। त्विषिः। असि। तव। त्विषिः। मे। एव। भूयात। अग्नये। स्वाहा। सोमाय। स्वाहा। सवित्रे। स्वाहा। सरस्वत्यै। स्वाहा। पूष्णे। स्वाहा। बृहस्पतये। स्वाहा। इन्द्राय। स्वाहा। घोषाय। स्वाहा। श्लोकाय। स्वाहा। अंशाय। स्वाहा। भगाय। स्वाहा। अर्यम्णे। स्वाहा ॥ ५ ॥

अथाधिदैवम् – इस कंडिका में १३ मंत्र हैं उन को कहते हैं, मैत्रावरुणाधिषा के आगे रक्खे हुए पलाश पात्र आदि चारों पात्र के आगे व्याघ्रचर्म को बिछाता है उसका मंत्र १ पार्थनाम १२ मंत्रों के मध्य अग्नये इत्यादि छः मंत्रों से अभिषेक के आदि में होमता है और इन्द्राय इत्यादि ६ मंत्रों से अभिषेक के अंत में होम करता है उसके मंत्र २ से १३ तक॥

ओं सोमस्येत्यस्य (वरुणऋ० आसुरी गायत्री छं० चर्म दै०) १
ओं २,३,४,८,९,१०,११,१२,१३ मं० (तथा ० दैवी पंक्ति छं० लिङ्गोक्त)
ओं सरस्वत्यइत्यस्य (तथा ० दैवी त्रिष्टुप् छं० तथा) ५
ओं पूष्णइत्यस्य (तथा ० दैवी बृहती छं० तथा) ६
ओं बृहस्पतयइत्यस्य (तथा ० दैवी जगती छं० तथा) ७

पदार्थः – हे चर्म तुम १ सोम की २ दीप्ति ३ हो ४ तेरी ५ दीप्ति ६ मेरी ७ ही ८ होवे ९ अग्नि के अर्थ १० आहुति दी ११ सोम के अर्थ १२ आहुति दी १३ सविता के लिये १४ आहुति दी १५ सरस्वती के लिये १६ आहुति दी १७ पू-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूषा के लिये १८ आहुति दी १९ बृहस्पति के लिये २० आहुति दी २१ इन्द्र के लिये २२ आहुति दी २३ घोष देवता के लिये २४ आहुति दी २५ श्लोक देवता के लिये २६ आहुति दी २७ अंश देवता के लिये २८ आहुति दी २९ भग देवता के लिये ३० आहुति दी ३१ अर्यमा के लिये ३२ आहुति दी ॥५॥

अथाध्यात्मम् – हे विराट् देह की त्वचा तुम १ विराडात्मा सूर्य की २ किरण ३ हो ४ तेरी ५ किरण ६ सूर्य भाव प्राप्त करने वाले मुझ यज्ञ भान में ७ ही ८ प्राप्त होवें अभिषेक सिद्धि और विघ्न नाश के लिये होम करता हे ९ समष्टि प्राणाग्नि के लिये १० व्यष्टि प्राण समर्पण हो ११ समष्टि अन्न के लिये १२ विषय समूह समर्पण हो १३ सूर्य के लिये १४ नेत्र समर्पण हो १५ समष्टि रसने न्द्रिय के लिये १६ व्यष्टि रसने न्द्रिय का समर्पण हो १७ पृथिव्याभिमानी देवता के लिये १८ घ्राणेन्द्रिय का समर्पण हो १९ बृहत् साम मंत्रों के स्वामी विष्णु के लिये २० प्रज्ञा (बुद्धि) समर्पण हो २१ महाविष्णु के लिये २२ आत्मा समर्पण हो २३ शब्द रूप आकाश के लिये २४ श्रोत्र समर्पण हो २५ वागाभिमानी देवता के लिये २६ वागेन्द्रिय समर्पण हो २७ समष्टि प्रति विंब के लिये २८ व्यष्टि प्रति विंब समर्पण हो २९ ऐश्वर्याभिमानी देवता के लिये ३० अष्ट सिद्धि आदि का समूह समर्पण हो ३१ समष्टि मन के लिये ३२ व्यष्टि मन समर्पण हो ॥५॥

पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः अनिभृष्टमसि वाचो वन्धुस्तपोजाः सोमस्य दात्रमसि स्वाहा राजस्वः ६

वैष्णव्यौ। पवित्रे। स्थः। सवितुः। प्रसवे। अच्छिद्रेण। पवित्रेण। सूर्यस्य। रश्मिभिः। वः। उत्पुनामि। अनिभृष्टम्। सोमस्य।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दात्रम्[१४]। असि[१५]। वाचः[१६]। वन्धुः[१७]। तपोजाः[१८]। असि[१९]। स्वाहा[२०]। राजस्वः[२१]। ६

इस कंडिका में तीन मंत्र हैं, पवित्रा वना कर उन दोनों में सुवर्ण को वांधता है १ सुवर्ण सहित दर्भ पवित्रा से मैत्रा वरुणा धिषणा के आगे रकवे हुए औदुम्वर पात्र स्थ अभिषेक सम्वंधी जलों को पवित्र करता है उसके मंत्र २, ३

ओं पवित्रे स्थ इत्यस्य (वरुण ऋ० दैवी जगती छं० पवित्रे दे०) १

ओं सवितु रित्यस्य (तथा ० प्राजापत्या पंक्ति० आपो दे०) २

ओं अग्निभृष्ट मित्यस्य (तथा ० भुरिग्प्राजापत्या पं० तथा) ३

पदार्थः – हे कुश पवित्र तुम दोनों १ यज्ञ सम्वंधी २ पवित्र करने वाले ३ हो, हे जलो ४ सव के प्रेरक परमेश्वर की ५ आज्ञा में वर्त्तमान में ६ वायुरूप ७ पवित्र ८ और सूर्य की ९ किरणों से १० तुम को ११ पवित्र करता हूं हे जल-समूह तुम १२ राक्षसों से अतिरस्कृत १३ और सोम के १४ दाता १५ हो १६ वाणी के १७ वन्धु १८ अग्नि से उत्पन्न १९ हो २० स्वाहा कार से पवित्र होते २१ राज्याभिषेक के कर्त्ता हो ॥ ६ ॥

अथाध्यात्मम् – हे प्राण उदान तुम दोनों १ योग यज्ञ सम्वन्धी २ पवित्रा ३ हो हे इन्द्रिय आदि शक्ति रूप जलो ४ गुरु की ५ आज्ञा में वर्त्तमान में ६ समष्टि प्राण रूप ७ पवित्रा ८ और साकार ब्रह्म की ९ किरणों से १० तुम को ११ पवित्र करता हूं हे आत्मांशु रूप जल तुम १२ काम आदि से अतिरस्कृत १३, १४ और आत्म प्रति विंवाभिषव के कारण १५ हो १६ महा वाक के १७ वन्धु १८ आत्माग्नि से उत्पन्न १९ हो २० महा वाक द्वारा २१ साम्राज्याभिषेक के कर्त्ता हो ॥ ६ ॥

सधमादो द्युम्निनी रापएता अनाधृष्टा अपस्यो वसानाः। पस्त्या सुचक्रे वरुणः सधस्थमपाꣳ शिशुर्मातृतमा स्वन्तः ॥ ७ ॥

पुस्तकालय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

PAYMENT PROCESSED
vide Bill No. 826 Dated 10-9-96
ANIS BOOK BINDER

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar